Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भविष्य पुराण

[द्वितीय खण्ड]

(सरल हिन्दी भाष्य सहित जनोपयोगी संस्करण)

5.3

★

सम्पादक :
वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पं० श्रीराम जी शर्मा आचार्य
चारों वेद, १०८ उपनिषद्, षट्दर्शन, योग वासिष्ठ,
२० स्मृतियां, और १८ पुराणों
के भाष्यकार।

★

प्रकाशक :
संस्कृति संस्थान
ख्वाजाकुतुब, वेदनगर, बरेली–२४३००३ (उ० प्र०)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर्षि-पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान
तिथि........
पु०सं०........
पुस्तकालय
1252|8

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भविष्य पुराण

(द्वितीय खण्ड)

(मूल एवं सरल हिन्दी भावार्थ सहित
जनोपयोगी संस्करण)

★

ऋषि-पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान
तिथी..........
पु०सं०..........
भारती पुस्तकालय
1252/8

सम्पादक :
वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ
पं० श्रीराम शर्मा आचार्य
चारों वेद, १०८ उपनिषद्, षट्दर्शन, योग वासिष्ठ
२० स्मृतियाँ, और १८ पुराणों के
प्रसिद्ध भाष्यकार ।

★

प्रकाशक :
संस्कृति संस्थान
ख्वाजा कुतुब, वेदनगर, बरेली—२४३००३ (उ० प्र०)
फोन नं० ७४२४२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक :

डॉ० चमनलाल गौतम

संस्कृति संस्थान

ख्वाजा कुतुब (वेद नगर)

बरेली-२४३००३ (उ० प्र०)

फोन : ७४२४२

*

सम्पादक :

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

*

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

*

संशोधित जनोपयोगी संस्करण

सन् १९९०

*

मुद्रक :

शैलेन्द्र बी० माहेश्वरी

नव ज्योति प्रेस

सेठ भीकचन्द मार्ग,

मथुरा (उ० प्र०)

*

मूल्य : Rs 2[illegible]/-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर्षि-पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान पीठ
तिथी.........
पु०सं०.........
भारती पुस्तकालय
1252

दो शब्द !

'भविष्य पुराण' के इस द्वितीय खण्ड में अधिकांश उन मुख्य घटनाओं का वर्णन मिलता है जो पिछले एक हजार वर्ष में हमारे देश में घटित हुई हैं। उनमें पुराणकार ने प्रधान स्थान आल्हा-ऊदल और पृथ्वीराज के युद्धों को दिया है। यद्यपि आजकल भारतवर्ष के कई प्रदेशों में 'आल्हा' का काफी प्रचार है, पर ढोलक पर गाने वालों ने धीरे-धीरे उसमें परिवर्तन करके एक निराली ही चीज बना दी हैं। तो भी उसकी मूल कथा 'भविष्य पुराण' के वर्णन से अधिकांश में मिलती जुलती ही है।

'भविष्य पुराण' में इस कथा को इतना अधिक महत्व देने से हम यह अनुभव करते हैं कि वास्तव में आल्हा-ऊदल तथा पृथ्वीराज का संग्राम भारतवर्ष का भाग्य-विधायक था और उसे केवल युद्ध की एक कहानी या लोक-काव्य की तरह पढ़ लेना पर्याप्त नहीं। इसमें भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय सन्निहित है और उससे हमको देश के पतन के सम्बन्ध में एक विशेष शिक्षा प्राप्त हो सकती है।

एक अध्याय में 'कबीर, नरसी, पीपा और नानक' के पूर्व जन्मों का वर्णन देकर उनको प्राचीन युगों के प्रसिद्ध व्यक्तियों से सम्बन्धित सिद्ध किया है। किसी व्यक्ति के प्राचीन समय में होने वाले विभिन्न जन्मों का वर्णन तो सच्चे योगी ही जानने में समर्थ हो सकते हैं, पर हम इतना कह सकते हैं कि जिस प्रकार 'आल्हा-ऊदल' के संग्राम भारतवर्ष की राजनैतिक परिस्थिति में परिवर्तन उत्पन्न करने वाले थे, उसी प्रकार कबीर और नानक के प्रचार-कार्य ने भारतवर्ष के सांस्कृतिक इतिहास को एक नया मोड़ दिया। इससे देश में 'संत-मत' का प्रसार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ जिसके परिणाम स्वरूप प्राचीन ढङ्ग के कामनापूरक कर्मकाण्डों में कमी आई और ब्राह्मणों का प्रभाव एक बड़े वर्ग पर से हट गया। नरसी और पीपा जी ने विशेष रूप से गुजरात में भक्तिमार्ग को फैलाया और इसके फल स्वरूप भी कर्मकाण्ड की प्रवलता में अन्तर पड़ा।

शंकराचार्य, रामानुज और चैतन्य भी भारतीय धार्मिक-जगत की महान विभूतियाँ हैं और हम कह सकते हैं कि वर्त्तमान समय में भारत-वर्ष के अधिकांश निवासियों में जो धार्मिक प्रवृत्तियाँ दिखाई पड़ती हैं वे इन्हीं तीनों की देन हैं। 'भविष्य पुराण' में इनका जो वर्णन दिया गया है वह पौराणिक ढङ्ग का रहस्यमय होने पर भी इनके महत्व को दर्शाने वाला है। शंकराचार्य और रामानुज दोनों को भगवान शंकर के अंश से समुत्पन्न बतलाया है, और दोनों में शास्त्रार्थ होने का वर्णन भी किया है।

चैतन्य महाप्रभु 'यज्ञ-भगवान्' के अंश से थे और उनका आविर्भाव म्लेच्छों द्वारा की जाने वाली धर्म-हानि का निवारण करने के निमित्त हुआ था। चैतन्य-चरित्र में जगन्नाथ जी का वर्णन बड़ा अद्भुत है और उनको भगवान का स्वरूप मानते हुए भी बौद्ध धर्म वालों से मिला जुला दिखाया गया है। पुराणकार के मतानुसार इसी कारण जगन्नाथ जी में सब वर्णों के मनुष्य वर्ण भेद का विचार त्याग कर एक साथ खान पान करते हैं। वहाँ वैदिक कर्मों का भी प्रचार नहीं है। यह सब प्रकट करता है कि वहाँ पर किसी समय बौद्ध लोगों की अत्यन्त प्रबलता थी, इसलिये 'भविष्य पुराण' के मतानुसार उनकी सत्ता को मिटाने के उद्देश्य से भगवान ने भी वहाँ वैसा ही भेष और आचार-विचार ग्रहण किया है, जो उस देश के निवासियों को प्रभावित करके भारतीय धर्म के भीतर रख सके।

इसमें सन्देह नहीं कि शंकराचार्य, रामानुज, चैतन्य जैसी विभूतियाँ, जिन्होंने उस पैदल यात्रा अथवा बैल गाड़ी के युग में समस्त देश की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मा को हिला कर रख दिया, सामान्य श्रेणी की नहीं हो सकतीं। वे ईश्वर की विशेष दैवी शक्ति से ही संयुक्त होती हैं। भक्तिमार्ग वाले उनको 'अंशावतार' के रूप में मानते हैं और दार्शनिक विचार वाले 'महामानव—युग-पुरुष' आदि के नाम से उनका स्मरण करते हैं। इस में तनिक भी सन्देह नहीं कि भारतवर्ष पर विधर्मियों का जो भयकर राजनैतिक और सांस्कृतिक आक्रमण हुआ उनसे यहाँ के धर्म और संस्कृति की रक्षा इन 'दैवी अवतारों' ने ही की। उन्हीं के प्रभाव से फिर उत्तर भारत में रामानन्द, कबीर, नानक, दादूदयाल आदि तथा महाराष्ट्र में नामदेव, एकनाथ, तुकाराम रामदास और सन्तों की परम्परा आरम्भ हो गई। कई वैष्णव आचार्य भी कर्म क्षेत्र में आगे बढ़े। इन सब ने निःशस्त्र होते हुए भी केवल अपने आत्मबल और बुद्धिबलसे मुसलमान बादशाहों की कट्टरता और अत्याचारों तथा उनके विद्वानोंके बौद्धिक आक्षेपों का इस प्रकार मुकाबला किया कि इस्लाम का महान शक्तिशाली विजय-रथ, जिसने दो चार सौ वर्ष के भीतर ही पूर्व में ईरान, अफगानिस्तान, तुर्किस्तान, मंगोलिया आदि को पूर्व से अपना अनुयायी बना लिया और पश्चिम में मिश्र से लेकर स्पेन तक अपने धर्म का झण्डा गाढ़ दिया, यहाँ भारतवर्ष में आकर कुण्ठित हो गया। उसने इधर-उधर लूटमार और कुछ राज्यों पर सैनिक विजय अवश्य प्राप्त करली, पर वह भारतीय-धर्म को न दबा सका वरन् धीरे-धीरे स्वयं उससे प्रभावित हो गया। इसी 'पराजय' को याद करके मुसलमानों के सुप्रसिद्ध जातीय कवि 'हाली' ने लिखा है कि 'दीने हिलाली' का जो महान शक्तिशाली बेड़ा सातों समुद्रों को पार कर आया, वह गङ्गा के मुहाने में आकर डूब गया।' जिन महामानवों ने अपनी आत्मशक्ति से संसार में इतना बड़ा चमत्कार कर दिखाया उनको "लोकोत्तर दैवी शक्ति' मान कर कौन नमस्कार नहीं करेगा?

इस प्रकार वर्तमान युग का वर्णन करते-करते पुराणकार ने भारत में अंगरेजों के आगमन और कलकत्ता में उनकी राजधानी स्थापित होने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक का उल्लेख कर दिया हैं। इसके बाद उन्होंने यह भी लिख दिया है कि अँग्रेजों के पश्चात् यहाँ तिब्बत की तरफ से आने वाले चीन वालों का प्रभाव बढ़ेगा (पृष्ठ २८२)। आज परिस्थितियों के फल स्वरूप ऐसी स्थिति पैदा होती जाती है और देश के अनेक भागों में चीन के पक्ष-पातियों का जोर बढ़ता जाता है। इन सब दृष्टियों से 'भविष्य-पुराण' का महत्व स्वीकार करना पड़ता है, चाहे वह कभी और कैसे भी लिखा गया हो। पाठक इस पुराण का अध्ययन करके अनेक महत्वपूर्ण तथ्यों से अवगत हो सकेंगे इसमें सन्देह नहीं।

इस संस्करण में लम्बी कथाओं, पुनरावृत्तियों और जटिल विषयों को संक्षिप्त करके सरल और जनोपयोगी बनाने का प्रयत्न किया गया है। आशा है इस योजना से जन साधारण में पुराणों के अध्ययन की रुचि बढ़ेगी।

—प्रकाशक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

१.	पृथ्वीराज द्वारा गुर्जर राज्य-ग्रहण	९
२.	जयन्तावतार वृत्तान्त वर्णन	३०
३.	चण्डिका देवी वाक्य वर्णन	३३
४.	बलखानि विवाह वृत्तान्त वर्णन	३५
५.	ब्रह्मानन्द का विवाह वृत्तान्त	४७
६.	हंस का पद्मिनी वर्णन	५८
७.	इन्दुल-पद्मिनी का विवाह	६३
८.	चन्द्र भट्ट का भाषा ग्रन्थ	७३
९.	महावती का युद्ध वर्णन	९०
१०.	कृष्णांशस्य शोभा संवाद	१०७
११.	समस्त नृपों का संग्राम और नाश	१२०
१२.	व्यास द्वारा भविष्य कथन	१६०
१३.	अजमेर के तोमर नरेशों का वर्णन	१६८
१४.	शुक्ल वंश चरित्र	१७२
१५.	परिहार भूप वंश वर्णन	१८४
१६.	भगवदावतारादि वृत्तांत	१९०
१७.	दिल्ली के म्लेच्छ राजा	१९६
१८.	चैतन्य और शंकराचार्य उत्पत्ति	२०६
१९.	रामानुजोत्पत्ति वर्णन	२२१
२०.	कबीर-नरश्री-पीपा नानक-वृत्तांत	२४०
२१.	चैतन्त वर्णन में जगन्नाथ माहात्म्य	२५५
२२.	अकबर बादशाह वर्णन	२६९
२३.	किल्किला के शासकों का वर्णन	२८३
२४.	उत्तर पर्व-मङ्गलाचरण	२९३
२५.	ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति और वर्णन	२९८
२६.	सांसारिक जीवन के दोष	३०४
२७.	अधर्म और पापों के भेद	३२२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२८. शुभाशुभ गति और यम-यातना ३३०
२९. शंकट व्रत का माहात्म्य ३४८
३०. तिलक व्रत का माहात्म्य ३५३
३१. अशोक व्रत का माहात्म्य ३५८
३२. बृहत्तपोव्रत का माहात्म्य ३६१
३३. यमद्वितीया व्रत का माहात्म्य ३६२
३४. अशून्यशयन व्रत का माहात्म्य ३६७
३५. गोष्पद तृतीया व्रत का माहात्म्य ३७१
३६. हरियाली तृतीया व्रत का माहात्म्य ३७४
३७. ललिता तृतीया व्रत का माहाम्य ३७९
३८. अक्षय तृतीया व्रत का माहात्म्य ३८६
३९. विनायक चतुर्थी व्रत का माहात्म्य ३८९
४०. शान्ति का माहात्म्य ३९६
४१. नागपंचमी व्रत का माहात्म्य ३९८
४२. श्री पंचमी के व्रत का माहात्म्य ४०९
४३. विशोक षष्ठी व्रत का माहात्म्य ४१९
४४. कमलषष्ठी व्रत का माहात्म्य ४२२
४५. विजय सप्तमी माहात्म्य ४२४
४६. आदित्य मंडल विधान ४२९
४७. अचला सप्तमी व्रत माहात्म्य ४३१
४८. बुधाष्टमी व्रत माहात्म्य ४३९
४९. जन्माष्टमी व्रत माहात्म्य ४४९
५०. दशावतार चरित्र माहात्म्य ४६१
५१. गोवत्स द्वादशी माहात्म्य ४६७
५२. भीष्म पञ्चक व्रत माहात्म्य ४८१
५३. अनन्त चतुर्दशी व्रत माहात्म्य ४८९
५४. ग्रन्थ परिचय और समाप्ति ४९९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* ॐ *

भविष्य पुराण

(द्वितीय खण्ड)

॥पृथ्वीराज द्वारा गुर्जर राज्य-ग्रहण ॥

कस्मिन्मास्यभास्यभवद्युद्धं तयोः कतिदिनानि च ।
तत्पश्चात्स्वपुरी प्राप्य तदा किमभवन्मुने ।१
पौषमास्यभवद्युद्धं तयोः शतदिनानि च ।
ज्येष्ठे मासि गृहं प्राप्तां दध्मुर्बांद्यान्यनेकशः ।२
श्रुत्वा परिमला राजा स्वसुताज्जयिनी बलीन् ।
ददौ दानानि विप्रेभ्य सुखं जातं गृहे गृहे ।३
इति श्रुत्वा महीराजो बलखानि महाबलम् ।
तत्रागत्य नमस्कृत्य वचनं प्राह नम्रधीः ।४
अर्द्धकोटिमित द्रव्य मत्तः प्राप्त सुखी भव ।
माहिष्मत्याश्च राष्ट्रं मे देहि वीर नमोऽस्तुते ।५
वर्षे वर्षे च तद्द्रव्य गेहाण बलवन्प्रभो ।
इति श्रुत्वा तथा मत्वा बलखानिगृह ययौ ।
वयस्त्रयोदशाब्दे च कृष्णांशे वलत्तरे । .
यथा जाता हरेर्लीला भृगुश्रेष्ठ तथा श्रुणु ॥७

इस अध्याय में पृथ्वीराज के द्वारा विनिमय करके बलखानि से गुर्जर राज्य के ग्रहण के वृन्तात का वर्णन किया जाता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋषियों ने कहा—उन दोनों का किस मास में युद्ध हुआ था और कितने दिन तक हुआ था। उसके पीछे अपनी पुरी में प्राप्त होकर फिर उस समय में क्या हुआ था। हे मुने ! यह बतलाइये।१। सूतजी ने कहा—उन दोनों का युद्ध पौष मास में हुआ था और वह सो दिन-रात बराबर हाता रहा था। ज्येष्ठ मास में वे घर में पहुँचे थे और वहाँ अनेक प्रकार के वाद्य बजाये थे ।२। राजा परमिल ने अपने बलवान् पुत्रों को जप वाले श्रवण करके अनेक ब्राह्मणों को दान दिया था और उस समय में घर-घर में बड़ा सुख उत्पन्न हो गया था।३। यह सुनकर महीराज महान् बलवान् बलखानि के यहाँ आया और उसको नमस्कार करके नम्रबुद्धि वाले उसने यह वचन कहा—आधा करोड़ धन आप मुझसे प्राप्त करके सुखी हो जाइये। हे वीर महिष्मती का राष्ट्र मुझे दे दो। मैं आपको नमस्कार करता हूँ।४५। हे प्रभो ! आप वर्ष-वर्ष में वह द्रव्य ग्रहण करें। यह सुनकर और उसको उसी प्रकार से मान करके बलखानि गृह में चला गया था।६। तेरह वर्ष की आयु में अधिक बलवान् कृष्णांश के होने पर हे भृगु श्रेष्ठ ! हरि की जिस प्रकार से लीला हुई थी उसका उस प्रकार से अब श्रवण करो।७।

भाद्रे शुक्ले त्रयोदश्यां चाह्लादः सानुजो ययौ।
गयार्थे धनमादाय हस्त्यश्वरथसंकुलम् ।८
कृष्णांशो बिन्दुलारूढो वत्सजो हरिणीस्थितः।
देवः पपीहकारूढः सुखखानिः करालके ।९
चत्वारो द्विनिगात्ते च गयाक्षेत्र समाययुः।
पूर्णिमांते पुरस्कृत्य षोडशश्राद्धकारिणः ।१०
शतं शतं गजांश्चैव भूमियांश्च रथा तथा।
तदुर्हयान्सहस्रं देवमालाविभूषितान् ।११
धेनूहिरण्यरत्नानि वासांसि विविधानि च।
दत्वा ते सुफलीभूयं स्वर्गे हाय दधुमगः ।१२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्षावर्तिस्तु या वेश्या ययौ वदरिकाश्रमम् ।
प्राणांस्तत्र परित्यज्य साप्सरस्त्वमुपागता ।१३
राकां चन्द्रे तु सम्प्राप्ते राहुग्रस्ते तमोमये ।
काश्यां समागता भूपा नानादेश्याः कुलैः सह ।१४

भाद्रपद मास की त्रयोदशी तिथि के दिन आह्लाद अपने छोटे भाई के सहित हाथी-रथ और अश्वों से संयुक्त धन लेकर गया के लिये गया था ।८। कृष्णांश बिन्दुल पर आरूढ़ हुआ—वत्सज ने हरिणी पर समारोहण किया-देव ने पपीहक पर सवारी की और सुखखानि करालक पर समारूढ़ हुआ था ।९। ये चारों दो दिन के अन्त में गया के क्षेत्र में पहुँच गये थे । पूर्णिमा के अन्त में पुरस्कृत करके षोडशश्राद्ध करने लगे ।१०। सौ-सौ हाथियों को—समलंकृत रथों को—सहस्र अश्वों को जो कि हेम की मालाओं से विभूषित थे—बहुत सी धेनु-सुवर्ण-रत्न-वस्त्र जो अनेक प्रकार के थे, इन सबका वहाँ दान किया था ।११-१२। लाक्षावर्त्ति नाम धारिणी जो वेश्या थी वह वदरिकाश्रम को चली गई थी । उसने अपने प्राणों का वहाँ पर ही परित्याग कर दिया था और फिर वह अप्सरात्व को प्राप्त हो गई थी ।१३। चन्द्रमा के राका तिथि में राहु द्वारा ग्रस्त हो जाने पर तपोमय समय में वे अनेक देशों के राजा लोग अपने कुलों के सहित काशी में आ गये थे ।१४।

हिमालयगिरौ रम्ये नानाधातुविचित्रिते ।
तत्र शार्दूलवशायोनेत्रसिंहो महीपतिः ।१५
रत्नभानौ हते शूरे नेत्र सिंहा भयातुरः ।
नवतुङ्गे समासाद्य तोषयामास वासवम् ।१६
द्वादशाब्दान्तरे देवो ददौ ढक्कामृतं मुदा ।
पार्वत्या निति यत्तु वासवाय स्वसेविने ।१७
अस्य शब्देन भूपाल त्वं सैन्यं जीवयिष्यसं ।१८
क्षयं शीघ्रं गमिष्यति शत्रवस्ते महाभटाः ।
प्राप्ते ढक्कामृते तस्मिन्नेत्रसिंहो महावलः ।१९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

नगरं कारयामासर्वंजनैर्युतम् तत्रम् ।
योजनान्त चतुर्द्वार दुराधर्यं परैः सदा ।२०
नेत्रसिंहगढं नाम्ना विख्यात भारते भुवि ।
काश्मीरान्ते कृतं राज्ये तेन श्रृङ्गसमं तत् ।२१

हिमालय पर्वत में जोकि परमरमणीक और अनेक प्रकार की धातुओं से चित्रित है वहाँ पर शार्दूल वंशमें होने वाला नेत्रसिंह नाम का राजा था ।१५। रत्नभानु शूरवीर के ह्रास हो जाने पर नेत्रसिंह भय से आतुर हो गया था । वह नवतङ्ग स्थान में जाकर वहाँ उसने इन्द्र को सन्तुष्ट किया था ।१६। बारह वर्ष के अन्त में उस देव ने प्रसन्नता से ढक्कामृत दिया था जो कि पार्वतीने अपनी सेवा करने वाले वासव (इन्द्र) के लिये निर्मित्त किया था ।१७। इन्द्र से राजा को वह ढक्कामृत देकर फिर यह शुभ वचन कहा हे भूपाल ! इसमें यह विशेषता है कि इसके वादन करने पर इस के शब्द से तुम मृत सेना को जीवितकर लोगे ।१८।महान् भट भी तेरे यदि कोई शत्रु होंगे तो वे शीघ्र ही क्षय को प्राप्त हो जायेंगे । महान् बलवान् नेत्रसिंह ने उस ढक्कामृत को प्राप्त करके वहाँ पर समस्त जनों से युक्त एक नगर निर्माण कराया था जो एक योजनके अन्त तक विस्तार वाला था, जिसमें चार बड़े द्वार थे और सदा शत्रुओं को वह दुराधर्ष था ।१९-२०। भारत में इस पृथ्वी पर वह नेत्रसिंह गढ़ इस नाम से प्रसिद्ध हो गया था । उसने फिर श्रृङ्ग समान काश्मीर के अन्त तक राज्य किया था ।२१।

पालित नेत्रसिंहेन तत्पुरं पुत्रवन्मुने ।
नेत्रपाल इति ख्यातो ग्रामोऽसो दुर्गम परै ।।२२
सोऽपि राजा समायाता नेत्रसिंहो महाबलः ।
कन्या स्वर्णवती तस्य रेवत्यशसमन्विता ।
कामाक्ष्य वरदानेनं सर्वमायाविशारदा ।२३
दृष्ट्वा ता सुन्दरी कन्या बालेन्दुसदृशोननाम् ।
मूछिताश्चाभवन्भूपा रूपयौवनमोहिता: ।२४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृष्ट्वा तां च तथाह्लादः सर्वरत्नविभूषिताम् ।
षोडशाब्दवयोयुक्तां कामिनां रतिरूपिणाम् ।
मूर्छितश्चापतद्भू मौ सा दृष्ट्वा मुमोह वै ॥२५
दोलामारुह्य तत्सख्यौ नृपान्तिशमुपाययुः ।
आह्लादस्तु समुत्थाय महामोहत्वभागतः ॥२६
दृष्ट्वा तथाविध वधु कृष्णांशः प्राह दुःखितः ।
किमर्थं मोहमायातो भवांस्तत्वविशारदः ॥२७
रजो रागात्मकं विद्धि प्रमादं मोहजं तथा ।
ज्ञानासिना शिरस्तस्य छिन्धि त्वमजितः सदा ।२८ .

हे मुने ! उस पुर को नेत्रसिंह राजा ने अपने एक पुत्र के समान ही पालित किया था । यह ग्राम जोकि शत्रु के लिये बहुत ही दुर्गम था नेत्र पाल इस नाम से प्रसिद्ध हो गया था ।२२। महान् बली वह राजा नेत्रपाल भी आया था । उसकी कन्या रेवती के अंश से समन्वित स्वर्णवती नाम वाली थी । वह कामाक्षी देवी के वरदान से सब प्रकार की माया की महा पण्डिता थी ।२३। उस परम सुन्दरी कन्या को जो कि बाल चन्द्रके सदृश मुख वाली थी, देखकर उसके रूप जीवन से मोहित होकर राजा लोग मूच्छित हो गये थे ।२४। उसी प्रकार से आह्लाद भी सोलह वर्ष की अवस्था से युक्त तथा समस्त रत्नों से विभूषित रति के समान रूप लाबण्य शाली उस कामिनी को देखकर मूच्छित होकर भूमिपर गिरगया था और उस कन्या ने भी उसको देखा एवं वह भी उस पर अत्यन्त मोहित होगई थी ।२५। उसकी दो सखियों उसको दोला पर चढ़ाकर राजा के समीप में ले गई थीं और आह्लाद तो उठकर वहुत ही अधिक मोद को प्राप्त हो गया था ।२६। उस प्रकार की दशा में स्थित अपने भाई को देखकर कृष्णांश ने परम दुःखित होकर कहा—आप तो तत्वों के महा पण्डित हैं किस लिये आपको ऐसा मोह प्राप्त हो गया है, वह रागात्मक रजोगुण है—मोह से उत्पन्न होने वाले को प्रमाद ही जान लो । ज्ञान के खंग से उसका शिर काट डालो फिर आप सदा अजित हैं ।२७-२८।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इति श्रुत्वा वचो भ्रातस्युक्त्वा मोह ययौ गृहम् ।
भोजयित्वां द्विजश्रेष्ठान्सहस्रं वेदाततपरान् ।२९
दुर्गामाराधयामास जप्त्वा मध्यचरित्रकम् ।
मासान्ते च तदा देवीं दत्वभीष्टं हृदि स्थितम् ।३०
मोहयामास ता कन्यां विवाहाथमनिन्दिता ।
स्वप्ने ददर्श सा वाला रामांश देवकींसुतम् ।३१
प्रातर्बुद्धा तु संचिन्त्य महामोहमुपाययौ ।
तदा ध्यात्वा च कामाक्षी सर्वाभीष्टप्रदायिनीम् ।३२
पौषमासे तु सम्प्राप्ते शुककण्ठे सुपत्रिकाम् ।
वद्धा तं प्रेषय मास शुकं पत्रस्थित प्रियम् ।३३
स गत्वा पुष्पविपिन महावतिपुरेऽस्थितम् ।
नरशब्देन वचनं कृष्णांशय शुक्रोप्रवोत् ।३४
वीर तेऽवरजो दधुर्नाम्माह्लादो ह्यवलः ।
तस्मै हि प्रेषिता पत्री स्वर्णयक्त्या हितप्रदा ।३५
ता ज्ञात्वा च पुनस्तस्या उत्तर देहि भत्प्रियम् ।
अथ व पत्रमालिख्य तत्वं मे कुरु कण्ठके ।३६

अपने भाई कृष्णांश के यह वचन श्रवण करके, उसने उस मोह का त्याग कर दिया और फिर गृह को चला गया था। वेदों में तत्पर श्रेष्ठ एक सहस्त्र ब्राह्मणों को भोजन कराकर मध्यम चरित्र का जप करके उसने दुर्गा की आराधना की थी। एक मास के अन्त में उस समय देवी ने जो हृदय में स्थित अभीष्ट था उसे देकर उस कन्या को देवी ने जो कि आनन्दित थी विवाह करने के लिये मोहित कर दिया था। उस बाला ने स्वप्न में रामांश देवकी के पुत्र को देखा था ।२९-३०। प्रातःकाल में जानकर चिन्तन किया तो बड़ा भारी मोह हो गया था। तब समस्त अभीष्टों के प्रदान करने वाली कामाक्षी देवी का ध्यान किया और पोष मास के प्राप्त होने पर एक तोता के कण्ठ में पत्रिका को बांधकर पत्र स्थित प्रिय शुक को भेजा था ।३२-३३। वह महावती पुरी में स्थित जो एक पुष्प विपिन था वहाँ पहुँचा और मनुष्य की वाणी से कृष्णांश के लिये शुक ने वचन बोले ।३४। उस शुक ने कहा—हे वीर ! तुम्हारे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाई आह्लाद को जो कि महान् बलवान् है स्वर्णवती ने हित प्रदान करने वाली पत्रिका भेजी है। सो अब आप समझकर फिर उसका उत्तर मेरे प्रिय के लिये मुझे दे दो। अपना एक पत्र लिखकर उसे आप मेरे गले में बांध दो।३५-३६।

इति श्रुत्योदयो वीरो गृहीत्वा पत्रमुत्तमम्।
ज्ञातवांस्तत्र वृत्तान्तमाह्लादाय पुनर्ददौ।३७
जूम्बुकश्च नृपो वीरो रुद्रदत्तवरो बली।
अजेयोन्यनृपैवीर त्वया युधि निपातितः।३८
तथाविध मत्पितरदिन्द्रदत्तवर रिपुम्।
तमेव जहि संग्रामे ममपाणिग्रहं कुरु।३९
इति ज्ञात्वास आह्लादस्तामाश्वास्य हृदि स्थिताम्।४०
शुककण्ठे बबधाश लिखित्वा पत्रमुत्तमम्।४१
स शुकः पन्नगः पूर्वं पुण्डरीकेन शापितः।
रेवत्यंशस्य कार्यं च कृत्वा मोक्षत्वमागतः।४२
मृते तस्मिञ्छुके रम्ये देवीं स्वर्णवती तदा
दाहयित्वा ददौदानं विप्रभ्यस्तस्य तृप्तये।४३

यह सुनकर उदयवीर ने उस उत्तम पत्र को ग्रहण करके उसमें जो वृतान्त था उसे जान लिया और आह्लाद के लिये फिर दे दिया था।३७। जम्बुक राजा वीर था और बलवान् तथा रुद्र का दत्त वर-दात्री था जो कि अन्य नृपों के द्वारा अजेय था, हे वीर! उसे तुमने युद्ध में गिरा दिया था।३८। इसी प्रकार से मेरे पिता को जो इन्द्र का दत्त वरदानी एवं रिपु है उसे संग्राम में इसी प्रकार से मारकर मेरा पाणिग्रहण करो।३९। यह जानकर उस आह्लाद ने हृदय में स्थित उसको आश्वासन दिया था। और एक उत्तम पत्र लिखकर शीघ्र ही शुक के कण्ठ में बांध दिया।४०। वह शुक पहिले पन्नग था जो कि पुण्डरीक के द्वारा शापित था। उसने स्वेत्यंश का कार्य करके मोक्षत्व प्राप्त किया था।४१। उस रम्य शुक के मर जाने पर तब देवी स्वर्ण-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वती ने उसका दाह कराकर उसकी तृप्ति के लिये ब्राह्मणों को दान दिया था ।४२।

माघमासि च संप्राप्ते पंचम्यां कृष्णपक्षके ।
आह्लादः सप्तक्षेश्च सैन्येः सार्द्धं ययौ मुदा ।४३
तालनाद्याश्च ते शूराः स्वस्व वाहमाश्रिताः ।
अह्लादं रक्षयन्तस्ये ययुः पञ्चदशाहकम् ।४४
बंगदेशं सम्मुल्लंघ्य शीघ्रं प्राप्ता हिमालयम् ।
रूपणं पत्रकर्त्तार बलखानिरुवाच तम् ।४५
गच्छत्वं वीर कवची करालाश्व समास्थितः ।
पञ्चशस्त्रस मायुक्तो राजानं शीघ्रमावह ।४६
युद्धचिह्न तनौ कृत्वा ममागच्छ त्वरान्वितः ।
तथा मत्वा शिखडयन्शौ ययौ शीघ्रं स रूपेणः ।४७
स ददर्श सभां राज्ञो बहुशूरसमन्विताम् ।
पार्वतीयैर्नृपैः सार्द्ध सहस्रैर्बलवत्तरैः ।४८
स उवाच नृपश्रेष्ठ नेत्रसिंह महाबलम् ।
त्वसुताया विवाहाय बलखानिर्महबलः ।
सप्तलक्षबलैगुप्तः संप्राप्तस्तव राष्ट्रके ।४९

माघ मास के आने पर कृष्ण पक्ष की पञ्चमी में आल्हाद सातलाख सेना के साथ बड़े ही आनन्द से गया था ।४। और तालन आदि जो शूर थे वे भी अपने २ वाहनों पर सवार हो गये थे । वे सब आल्हाद की रक्षा करते हुये पन्द्रह दिनसे गये थे ।४४। वंगदेशको लांघकर शीघ्र ही हिमालय में पहुँच गये । उस पत्र कर्त्ता रूपण से बलखानि ने कहा—४५। हे वीर ! तू कवचधारी कराल अश्वपर समरूप होकर जा और पञ्चशस्त्र समायुक्त होकर राजा को शीघ्र बुला ले ।४६। शरीर में युद्ध का चिह्न करके शीघ्रता से युक्त होकर मेरे पास आ जा । ऐसा ही मानकर यह शिखण्डी का अंश रूपण शीघ्र चला गया था ।४७। उसने बहुत से दूर बीरों से युक्त राजाकी सभाको वहाँ देखा था । वहाँ राजा पार्वतोंसे अधिक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बलवान सहस्रों राजाओं के साथ सभामें स्थित था ।४८। वह वहाँ पहुँच कर महाबलवान् नेत्रसिंह राजा से बोला-तुम्हारी पुत्री के साथ विवाह करने के लिये महान् बालखानि सात लाख सेना के सहित तुम्हारे राज्य में आ गया है ।४६।

तस्मात्वं स्वसुतां शीघ्रमाह्लादाय समर्पय ।
शुल्कं मे देहि नृपते युद्धरूपं सुदारुणम् ।५०
वति श्रुत्वावचंस्तय स राजा क्रोधमूर्छितः ।
पट्टानाधिपमाज्ञाय भूपं पूर्णबलं रुषा ।
अषुधत्सं कपाटं च तस्य तस्य बन्धनहेतवे ।५१
पाशहस्ताच्छूरशत पट्टानाधिपरक्षिताम् ।
दृष्टया स रूपणो वीरः खड्गयुद्धमचीकरत् ।५२
हत्वा तन्मुकुटं राज्ञो गृहीत्वाकाशगो बली ।
बलखानि तु संप्राप्य चिह्नं तस्मै न्यवेवयत् ।५३
इतिश्रुत्वा प्रसन्नात्मा सप्त लक्षदलैर्युतः ।
अरुधन्नगरी सर्सां नेत्रसिंहेन रक्षिताम् ।५४
नेत्रसिंहस्तु बलवान्पर्वतैनृपैः सह ।
हिमतुंगतलं प्राप्य युद्धार्थी तन्समाह्वयत् ।५५
सहस्रं च गजा स्तस्य हया लक्षं महाबलाः ।
सहस्रं च नृपाः शूराश्चतुर्लक्ष पदातिभिः ।५६

इसलिये तुम बहुत ही शीघ्र अपनी सुता को आह्लाद के लिये समर्पित कर दो । हे नृपते ! युद्ध रूप सुदारुण शुल्क मुझे दे दो ।५०। इस प्रकार के उसके वचन को श्रवण कर राजा क्रोधसे मूर्च्छित होगया और पट्टन के अधिप राजा को जो कि पूर्ण बल वाला था क्रोध से आज्ञा दी कि उसके बन्धन के लिये किवाड़ बन्द कर दो ।५१। हाथ में पाश लेने वाले पट्टनाधिप के द्वारा रक्षित एक सौ शूरों को देखकर उस रूपण वीर ने खंग से युद्ध किया था ।५२। राजा के उस मुकुट का हनन करके और ग्रहण करके वह बली आकाश गामी होकर बलखानी के पास पहुँच गया और वह चिह्न उसे दे दिया था ।५३। वह सुन कर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

परम प्रसन्न चित्त उसने सात लाख दल से युक्त होकर नेत्रसिंह के द्वारा सुरक्षित समस्त नगरों को घेर लिया था ।५४। नेत्रसिंह भी बलवान् था उसने पर्वतीय नृपों के साथ हिमतुङ्गतल में जाकर युद्धार्थी होते हुये उनको बुलाया था ।५५। एक सहस्र उसके साथी थे एक लक्ष महाली अश्व-एक सहस्र नृप जो बड़े शूर थे और चार लाख पदति थे । इनके साथ वह आया था ।५६।

योगसिंहो गजैः सार्द्धं बलखानि समाह्वयत् ।
भोगसिंहो हयैः सार्द्धं कृष्णांशं च समाह्वयत् ।५७
विजयो नृपपुत्रश्च सर्वभूपतिभिः सह ।
देवसिंहस्तथा म्लैच्छै रूपणं च समाह्वयत् ।५८
तयोश्चासीन्महद्युद्धम् सेनयोस्तत्र दारुणम् ।
निर्भयाश्चैव ते शूराः पार्वतीयाः समन्ततः ।
जघ्नुस्ते शात्रवीं सेनां द्विलक्षां वीरपालिताम् ।५९
प्रभग्न स्वबलं दृष्टवा चत्वारो मदमकाः ।
दिव्यानश्वान्समारुह्या चक्रुः शत्रोमहावधम् ।
पुनरुज्जीवितं सर्वं ढक्कामृतरवाद्बलम् ।६०
युद्धाय समुखं प्राप भृगुश्रेष्ठ पुनः पुनः ।
अहोरात्रं रक्षश्चासीत्तेषां तत्रैव दारुणः ।६१
एवं सप्ताह्नि संजाते युद्धे भीरुभयङ्करे ।
उपायैर्बहुभिर्वीराश्चक्रुश्चैव रणं बहुम् ।६२
पुनस्ते जीवमापन्ना जघ्नुस्तानिरि पुसैन्यपान् ।
तालनाद्यास्तु ते शूरा दुःखितास्तत्र चाभवन् ।
निराशां विजये प्राप्य कृष्णांश शरणं ययुः ।६३

योगसिंह ने हाथियों के साथ बलखानि को बुलाया था । भोगसिंह ने अश्वोंके साथ होकर कृष्णांशको टेर दी थी । विजय और नृपके पुत्र समस्त भूपतियों के साथ थे । देव सिंह ने म्लेच्छों के साथ होकर रूपण को युद्ध के लिये ललकार दी थी ।५८। उन दोनों की सेनाओंका वहाँ बड़ा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ही दारुण युद्ध हुआ था। वे पर्वतीय शूर सभी ओर से बड़े निर्भय थे। उन्होंने शत्रु की वीर पालित दो लाख सेनाका हनन किया था। अपने बल को प्रसन्न देखकर चारों मदमत्तक अपने दिव्य अश्वों पर समारूढ़ होकर शत्रु का महावध करने लगे थे। किन्तु वे ढक्कामृत की ध्वनि से पुनः जीवित हो जाते थे।५९-६०। हे भृगुश्रेष्ठ ! उसका बल बार-बार युद्ध करने के लिये सम्मुखहो जाता था। इस तरह उनका एकअहोरात्र वहाँ पर ही बड़ा दारुण युद्ध हुआ।६१। इस तरह सात दिन भीरुओं को महान् भयंकर युद्ध के होने पर वीरों ने बहुत से उपायों के द्वारा बहुत युद्ध किया था।६२। जिन शत्रु के सैन्यकोंको मार देतेथे वे फिर जीवित हो जाया करते थे। यहाँ पर तालन आदि जो महाशूर थे वे बहुत ही अधिक दुःखित हो गये थे। उस युद्ध में बिजय की सर्वथा निराशा देखकर सब कृष्णांश की शरण में गये थे।६३।

नानाश्वास्य स कृष्णांखस्तत्रं दिव्यहये स्थितः।
नभोमार्गेण बलवान्स्वर्णवत्यकं ययौ।६४
हर्म्योपरि स्थितां देवीं सर्वशोभासमन्विताम्।
नत्वोवाच वचः श्लक्ष्णं किंकरोहमिहोदयः।
शरण्यां त्वामुपागच्छ कामाक्षोमिव भामिनि।६५
वृत्तान्तं कथयामास यथासीच्च महारणः।
श्रमेण कर्शिता वीरा निराशां जीवनेऽगमन्।६६
साह चोदयसिंह त्वं कामाक्ष्या मन्दिरं ब्रजं।
अहं च स्वालिभिः सार्धं नवम्यां पूजने रता।६७
ढक्कामृतस्य बाद्यै न पूजये सर्वकामदाम्।
इति श्रुत्वा स बलवान्स्वसैन्यं प्रति चागमत्।६८
अर्धशेषां रणात्सेनां पराजाप्य च दुद्रुवुः।
पटनाख्यतुरे प्राप्ता जयं प्राप्य महाबलाः।६९
पराजिते रिपौ तस्मिन्नेत्रसिंहसुतैः सह।
गृहम गत्य वलवान्विप्रेभ्यो गोधन ददौ।७०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृष्णांश ने उन सबको आश्वासन दिया और वह दिव्य अश्व पर समास्थित हुए। नभो मार्ग से वह बलवान् स्वर्णवती से समीप में गया था ।६४। अपने महल के ऊपर स्थित सब प्रकार की शोभा के समन्वित उन देवी को प्रणाम करके यहाँ मैं उदय नामक किंकर हूँ यह परम श्लक्ष्ण वचन उस देवी से कहे थे। हे भामिनी ! कामाक्षी देवीकी भाँति शरण्या आपके पास आया हूँ। उससे समस्त वृत्तान्त कह सुनाया था। जिस तरह महा युद्ध हो रहा था श्रमसे कर्शित हुये वीर अपने जीवन में निराश हो गये हैं ।६५-६६। उस देवी ने कहा हे उदयसिंह ! तुम कामाक्षी देवी के मन्दिर में चले जाओ और मैं भी अपनी सहेलियों के साथ नवमी तिथि के दिन देवी के पूजन में रत होकर ढक्कामृत के वाद्य से समस्त कामनाओं को प्रदान करने वाली कामाक्षी का पूजन करती हूँ। वह सुनकर वह बलवान् अपनी सेना में आ गया था।६७-६८। रणसे अर्ध शेष सेना को पराजित करके वे भाग गये और पट्टनाख्यपुर में महाबलवान् जय प्राप्त करके पहुँच गये थे ।६९। नेत्रसिंह के पुत्रों के साथ रिपु के पराजय हो जाने पर बलवान् ने घर में आकर ब्राह्मणों को गौ और धन का दान दिया था ।७०।

नवम्यां पितं प्राह देवी स्वर्णवती तदा।
कामाशीसेवनेनाशू कुरु यागोत्सव मम ।
यत्प्रसादाच्च विजयी दुर्जयेभ्योऽभवद्भं वाम् ।७१
इति श्रुत्वा पिता ग्राह स्वप्नो दृष्टस्तया मया।
पजनान्मंगल राज्ञां नौ चेदि विघ्नो हि शोभने ।७२
पित्रोक्तैव विशायां तु सा सुता पितुराज्ञयां ।
ढक्कामृतस्य बाद्यैन कामाक्षोमन्दिरं ययौ ।७३
कृष्णांशी मल्यकारस्य वधूश्रुत्वा समागतः ।
ढक्कामृत नारीभ्यो गृहीत्वा त्वरितो ययौ ।७४
एतस्मिन्नन्तरे वीराः पुष्टिवाहिनसंयुताः ।
ढक्कार्थं प्रययुः शीघ्रं सर्वशस्त्रैः समुद्यताः ।७५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तानागतान्स वयवान्दृष्ट्वा खगं गृहीतवान् ।
पञ्चपञ्चाशतः शूराननयद्यमसादनम् ।७६
कृष्णांशस्त्वर्ताँरो गत्वा रूपणौ यत्र तिष्ठति ।
ढक्कामृत च संम्प्राप्य हयारूढ़ो ययौ सभाम् ।७७
हृते ढक्कामृते दिव्ये नेत्रसिंहो भयातुरः ।
ऐन्द्रं यज्ञं तथा कृत्वा हवनाया पराऽभंवत् ।७८

नवमी तिथि में उस समय सुवर्णवतीने पिता से कहा था कि कामाक्षी के सेवन के द्वारा शीघ्र मेरा यागोत्सव करिये जिसके प्रसाद से आप दुर्जयों से विजयी हुये हैं ।१७। यह सुनकर पिता ने कहा कि आज मैंने इस प्रकार का स्वप्न देखा है कि पूजन से राजाओं का मंगल होता है और किसी भी शोभनकार्य में विघ्न नहीं होता है, यदि ऐसा नहीं किया जाता है तो अवश्य ही विघ्न होता है ।७२। इस प्रकार से पिता के द्वारा कही गई उस सुता ने रात्रि में पिता की आज्ञा से ढक्कामृत के वाद्य के साथ कामाक्षी के मन्दिर में गमन किया था ।७३। वहाँ कृष्णाँश मालाकारकी वधू होकर आ गया था। वह ढक्कामृत वाद्य को स्त्रियों से लेकर तुरन्त ही चला गया था ।७४। इसी अन्तर में वाहनों से संयुक्त साठ वीप ढक्का के लिये शीघ्र गये थे जो कि समस्त शस्त्रों से समुद्यत थे ।७५। उनको आते हुये देखकर उस बलवान् ने खंग ग्रहण कर लिया। पचपन शूरों को उसने यमराज के घर पहुँचा दिया था ।७६। कृष्णांश शीघ्र वहाँ गया जहाँ रूपण स्थित था और उस ढक्कामृत को प्राप्त करके हयारूढ़ होकर सभा में गया ।७७। उस दिव्य ढक्कामृत के होने पर नेत्रसिंह भय से आतुर हो गया और उसने ऐन्द्र यज्ञ किया तथा हवन करने के लिये तत्पर हो गया था ।७८।

प्रभाते समनुप्राप्ते ते वीराः स्वबलैः सह
तरसा प्रययुः सर्वे गजोष्ट्रहयसंस्थिताः ।
दिनान्ते प्राप्तवतश्च यत्राभूत्समहारणः ।७९
कृष्णांशः पूजयित्वा तं दध्मौ ढक्कामृत बली ।
तच्छब्द्वेन मृता वीराः पुनरुज्जीवितास्तदा ।८०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सप्तक्षबलं तस्य पुनः प्राप्त मदातुरम् ।
रुरोध नगरी सर्वां दध्मौ वाद्यान्यनेनशः ।८१
रुद्धे तु नगरे तस्मिन्नेत्रसिंहो भयातुरः ।
स्वत्मायनमपंचामास वह्नौ शक्राय धीमते ।८२
तदा प्रसन्नो भगवानुवाच नृपति प्रति ।
रामां शोयं कृष्णांशो भुवि जातौ कलै कया ।८३
तस्मै योग्याय सा कन्या रामांशय यशस्विने ।
योगिनीयं स्वर्णवती रेवन्त्यशावतारिणी ।८४

प्रातःकाल के समय प्राप्त होने पर वे सव वीर अपनी सेनाओं के साथ हाथी-ऊँट और अश्वों पर सवार होकर बड़े ही वेग के साथ बहाँ प्राप्त हो गये थे और दिनान्त तक वहाँ पहुँच गये जहाँ रण होरहा था ।७६। वली कृष्णाँश ने उस ढक्कामृत का पूजन करके उसे वजाया था उसके शब्द से जो सैनिक युद्ध में मृत हो गये थे वे सब पुनः उज्जीवित हो गये थे ।८०। इस तरहसे उसकी सात लाख सेना फिर मदातुर प्राप्त होगई थी । उसने उसके समस्त नगरोंको फिर घेर लिया था और वहाँ अनेक प्रकारके वाद्य बजाये गये ।८१। उस नगरके रुद्र हो जानेपर नेत्र भय से अत्यन्त आतुर हो गये थे । उसकी पूजा से प्रसन्न होकर इन्द्र देव उस राजा से बोले-ये कृष्णांश और रामांश एक कला से इस भूमण्डलमें उत्पन्न हुये हैं । उस परम योग्य यशस्वी रामांशी के लिये यह कन्या रेवती के अंश की अवतार लेने वाली योगिनी स्वर्णवती है ।८४।

इत्युक्त्वा च स्वयं देवी ढक्कामृतमुमाप्रियम् ।
हृत्वा वह्नो समाक्षिप्य दुर्गायै सैन्यवेदयत् ।८५
गते तस्मिन्सुरपतो स राजा ब्राह्मणैः सह ।
महीपति प्रति मयौ मेलनाथ समुद्यतः ।८६
तथागतं नृप दृष्ट्वा कृष्णांशश्च महीपतिः ।
आह्लादमातुलं प्राह मान्यः सर्वबलैः सदा ।८७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजन्नयं स बलवानाह्लोदः सानुजः सह।
भमपङ्क्तौ न स्थिती वीरःकुले हीनत्वमागतः।८८
भार्याभीरी स्मृता तेषा किं त्वया विदितं न हि।
यदि देया त्वया कन्या तर्हि त्वं हीनतां ब्रज।८९
अतस्त्वं वचनं चेद कुलयौग्य श्रणुष्व भोः।
चतुरो बालकान्नोचांस्तास्तालनेन समन्वितान्।९०
वञ्चयित्वा विवाहार्थे शिपांस्येषां समाहर।
मण्डपाते मखं कृत्वा चामुण्डायै समर्पय।९१

यह कहकर स्वयं देव ने उमा का परम प्रिय ढक्कामृत का हरण करके वह्नि में समाक्षिप्त करके दुर्गा की सन्निवेदित कर दिया था।८५ उस सूरों के स्वामी के चले जाने पर उस राजा ने ब्राह्मणों के साथ मेल करने के लिये वहाँ महीपति की और गमन किया था।८६। उस तरह आये हुये राजा को देखकर कृष्णांश और महीपति ने आह्लाद से कहा-सब बलों के साथ सदा मान करने के योग्य है।८७। हे राजन्! यह परम बलवान् आह्लाद अपने अनुजों के साथ कुल में हीनता को प्राप्त होकर मेरी पंक्ति में स्थित नहीं है।८८। उनकी भार्या आभीरी स्मृत हैं क्या यह आपको विदित नहीं है? यदि आपको कन्या देनी है तो तुम भी हीनता को प्राप्त हो जाओ।८९। इसलिये तुम इस बचन के योग्य ही सुनिये, चारों नीच बालकों को तालन के साथ वञ्चित करके विवाह के लिये इनके समहित करो और मण्डप के अन्त में मुख करके उन्हें चामुण्डा के लिये समर्पित कर दो।९०-९१।

त्वत्कन्या स आहूता वीरा वै रेवतो हि सा।
पश्चात्कन्यां स्वयं हत्वा कुलकल्याणमावह।९२
ना चोद्भवान्क्षयं यायात्सकुलो जंबुको यथा।
इत्युक्त्वा स ययौ सार्द्धं यत्राह्लवस्य बांधवः।९३
इति श्रुत्वा शल्यांशः सुयोधनमुखेरितम्।
तथेत्युक्त्वोत्सव कृत्वा मण्डपान्ते विधानतः।९४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आह्लादस्य समीपं स गत्वैद्वतचनाय हि ।
तमाह दन्डवत्पादौ गृहीत्वा नृपतिस्वयम् ।९४
भवन्तोशावताश्च मया ज्ञाया: सुरोत्तमात् ।
निरस्त्रान्पञ्च युष्मांश्च पूजयित्वा यथाविधि ।
रामांशाय स्वकन्यां चदास्यामि कुलरीतित: ।९५
इत्याह्लादं समादिश्य स नृपश्छलमाश्रित: ।
दुर्गोत्सवे ययीं गेहं तद्वधाय समुद्यत: ।९६
सहस्रं मण्डपे भूपान्संस्थाप्य स्वबल: सह ।
तालनाद्यांश्च षट् शूरान्मण्डपांते समाह्वयत् ।९७
विवाहप्रथमावर्ते योशसिंहोऽसिमत्तमम् ।
वरभाहत्य शिरसि जगर्ज बलवान्रुषा ।९८

तुम्हारी कन्याके द्वारा वीर समाहूत है वह कन्या रेवती है । इसके पीछे स्वयं कन्या का हनन करके अपने कुल के कल्याण को प्राप्त करो ।९२। नहीं तो आप राजा जम्बुक की भाँति सकुल क्षय को प्राप्त हो जायेंगे इतना कहकर जहाँ आह्लाद के बान्धव थे वहाँ साथ चला गया था ।९३। ऐसा ही होगा-यह कहकर वह शल्यांश सुयोधन के मुख से कथित को सुनकर मण्डपान्त में उत्सव करके वचन करने के लिये आह्लाद के समीप में गया और राजा ने स्वयं उसके चरणों में दण्ड की भाँति पड़कर उसके चरण ग्रहण करके कहा—।९४। आप सब अंशावतार हैं, यह मैंने सुरोत्तम से ज्ञान प्राप्त कर लिया है। इसलिये अब आप सबकी, जबकि आप निरस्त्र हो जावें यथाविधि पूजाकरके मैं अपनी कुल की रीति से रामाँशके लिए अपनी कन्या को दान करूँगा ।९५। वह राजा छल का आश्रय इस तरह आह्लाद को समावेश करके दुर्गाके उत्सव में उसके वक्ष के लिये समुद्यत होकर गृह को चला गया था ।९६। अपने बलों के साथ एक सहस्र भूपों को मण्डप में बिठा कर तालन आदि को वहाँ बुलाया था ।९७।विवाह प्रथमावर्त्त में योग सिंह ने अपना उत्तम खंग लेकर वर के माथे में प्रहार कर क्रोध से बलवान् ने गर्जन किया था ।९८।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तमाह तालनो धीमान्न योग्यं भवता कृतम् ।
श्रुत्वाह नेत्रसिंहस्तः कुलरीतिरियं बलिन् ।
निरायुधैः परैः सार्द्धं शस्त्रिशां संगरो हि नः ।९९
इति श्रुत्वा योगसिंह कृष्णांशस्तं समारुधत् ।
भोगसिंह तथाकृष्य बलखानिर्गहीतवान् ।१००
विजयं तृतीयावर्ते सुखखानिन्यैरुद्ध वै ।
चतुर्थावितके शत्रुं नृपं पूर्णबलं शठम् ।
रुपणस्तं गृहीत्वाशु युयुधे वद्बलैः सह ।१०१
पञ्चमे बहुराजानं तालनश्च समारुधत् ।
षष्ठावतं नेत्रसिंह तथाहलावोग होतवान् ।१०२
सम्प्राप्ते तुमले युद्धे बहुशूराः क्षय गताः ।
निरायुधाः षड्वलिनः सक्षम्य ब्रणमुत्तमम् ।
निरायुधान्रिपून्स्वांश्चक्रुः शक्तिप्रपूजयकाः ।१०३
एतस्मिनान्तरे देवः कालदर्शी जमागतः ।
नभोमार्गेण तानश्वांस्तेभ्य आगत्य सददौ ।१०४
बिन्दुल चैव कृष्णांशो देवस्तत्र मनोरथम् ।
रूपणश्च करालाश्व चाहलादस्तु पपीहकम् ।१०५
हरिणीं बलखानिश्च तद्भ्राता हरिनागरम् ।
सिंहनी तालनः शूरः समारुह्य रणोद्यतः ।१०६

उस समय धीमान तालन ने उससे कहा—आपने यह योग्य कार्य नहीं किया है। यह सुनकर नेत्रसिंह ने उससे कहा—हे बलिन्! यह तो हमारे कुल की रीति है कि निरायुध वरों के साथ शस्त्रधारियों का हमारा युद्ध होता है।९९। यह श्रवण कर कृष्णांश ने उस योग सिंह को समारुद्ध किया था और उसी प्रकार से वलखानि ने भोगसिंह को खींच कर ग्रहण कर लियाथा।१००। तृतीयावर्त्त में विजयको सुखखानिने निरुद्ध कर लिया था और चौथे आवर्त्त में पूर्ण बल वाले शत्रु शठ नृप को रूपण ने ग्रहण कर उसके बल के साथ शीघ्र ही समारुद्ध कर लिया था। पाँचवें आवर्त्त में बहुराजा को तालन ने समारुद्ध कर लिया था

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

षष्ट आवर्त्त में नेत्रसिंह को आह्लाद ने ग्रहण कर लिया था ।१०१। उस समय तुमुल संग्राम के समाप्त होने पर बहुत से शूर क्षय ।१०२। को प्राप्त होगये थे । विना आयुध वाले इन छै बलियों ने उत्तम ब्रण को सहन कर शक्ति के प्रपूजकों ने अपने-अपने शत्रुओं को विना आयुधों वाला कर दिया था ।१०३। इसी अन्तर में काल का दर्शी देव वहाँ आ गया था । सभी मार्ग से जाकर उनके लिये उन अश्वों को दे दिया था ।१०४। कृष्णांश से विन्दुल को देव ने मनोरथ नाम वाले को, रूपण ने करालाश्व को और आह्लाद ने पपीहक को प्राप्त किया था ।१०५। बल खानि ने हरिणी को और उसके भाई ने हरिनागर को, तालन ने सिंहनी को प्राप्त किया था । ये शूर समारूढ़ होकर रण के लिये उद्यत हो गये थे ।१०६।

रात्रौ तन्नृपतेः सेनां हृत्वा वद्ध्वाच दत्पतिम् ।
दौलां गेहाच्च निष्काश्य सम्भ्रमरकारिताम् ।१०७
स्वसैन्य ते सवाजग्सुनिर्भया वलवत्तराः ।
तान्सर्वांन्नेत्रसिंहदीन्दृष्ट्वा पाहीति जल्पितः ।१०८
निगडैरङ्कृतः कृत्वा पञ्च भूपान्हि वंचकान् ।
कारागारे महाघोरे तत्र तान्सैन्यवासन् ।१०९
नेत्रसिंहो वरा भ्राता सुन्दरारण्यभूमिपः ।
हेतुं ज्ञात्वाययी शीघ्रं मायावी लक्षसैन्यकः ।११०
तत्रागत्व हरानन्दो नाम्ना तानयधद्वली ।
नेत्रसिंहस्य सिन्यं च चतुर्लक्ष तदागमत् ।१११
पञ्चलक्षै रणो धीरः सप्तलक्षयुतैरभूत् ।
पञ्चहोरात्रमात्रं च तयोश्चासीत्स सकुलः ।
अर्द्धसैन्यं रिपोस्तत्र हतशेषमदुद्रवत् ।११२
विस्मितः स हरानन्दो रुद्रमायाविशारदः ।
बलाधिक्ययुताञ्ज्ञात्वा शिवध्यानपराऽभवत् ।११३
रचित्वा शावरीं माया नामारूपावधारिधीम् ।
पाषाणभूतान्सकलान्कृत्वा भूपान्समाययौ ।११४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात्रि में नृपति की सेना का हनन करके क्या उनके पति को बाँध करके तथा दोला को घर से निकलवा करके जो कि सात भांवर डारि तथा वे बलवान् निर्भय होकर अपनी सेना में आ गयेथे। उन सब नेत्रसिंहादि को देखकर 'रक्षा करो'–इस प्रकार से कहा गया था।१०७ १०८। इस पाँच वंचक भूपों को निगड़ों से एकत्रित करके महान घोर कारागार में वहाँ पर उन्हें रख दिया था।१०९। नेत्रसिंह वर-भ्राता, जो सुन्दर अरण्य भूमि का स्वामी था। इसका हेतु जानकर वहाँ वह मायावी एक लाख सेना लेकर शीघ्र ही आ गया था।११०। वहाँ आकर बलवान हरानन्द नाम वाले ने उससे युद्ध किया था और नेत्र-सिंह की चार लाख सेना उस समय वहाँ आ गई थी।१११। सात लाख संयुक्तों के साथ पांच लाख सेना के साथ घोर युद्ध हुआ था। पांच अहोरात्र पर्यन्त उन दोनो का बड़ाही घोर युद्ध वहां हुआ था। वहां पर रिपु की आधी सेना, जो हतशेष थी, वहां से भाग खड़ी हुई थी।११२ रुद्रमाया का विशारद वह हरानन्द बड़ा ही विस्मित हुआ था। अधिक बल से युक्तोंको जानकर वह शिव के ध्यान में तत्पर हो गया।११३ वहाँ नाना रूपों के विधारण करने वाली शावरी माया की रचनाकरके उन सब भूपों को पाषाण भूत बनाकर वहां आ गया था।११४

ससुतं भ्रातरं ज्येष्ठं नृपं पूर्णवलं ततः।
मोचयित्वा ययौ गेहं कृतकृत्यो महावली।११५
आह्लाद निगडैर्बद्धां मायया जडतां गमम्।
नेत्रसिंहः स बलवान्ययौ स्वं गुर्गमुद्यतः।
तं प्रशंस्यानुजं बीरो विप्रेभ्यचददौ धनम्।११६

तदा स्वर्ण दीना बद्धं ज्ञात्वा पति निजम्।
कृष्णांशाद्यान्मोहिततांश्च शंभुमायावशानुगान्।११७
रुरोद्रोच्चैस्तुमा देवी ध्यायती कामरूपिणीम्।
तदा तुष्टा जगद्धात्रीं मूर्च्छितांस्तःनवोधयत्।११८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेसर्वे चेनना प्राप्ताः प्राहुः स्वर्णवती मुदा ।
क्वस्थितो बन्धुराह्लादो देवि त्वं कारणं वद ।११९
यथा बद्धः स्वयं स्वमी कथयामास सा तथां ।
अहं शुकी भवाम्यद्य भवान्विदुयसंस्थितः ।१२०

इसके पश्चात् उसने पुत्र के सहित राजा के ज्येष्ठ भाई को, और पूर्ण वल को छुड़वा कर महावली कृतकृत्य होकर अपने घर को चला गया था ।११५। माया से जड़ता को प्राप्त हो जाने वाले आह्लाद को निगड़ोंसे बाँध कर वह बलवान् नेत्रसिंह उद्यत होकर अपने दुर्ग को चला गया था । उस वीर ने अपने छोटे भाई की बहुत प्रशंसा की और विप्रों को धन का दान दिया था ।११६। तब वह दीन स्वर्णवती अपने पति को वद्ध जान कर तथा कृष्णांशादि सवको शम्भूमाया के वशानुग्र एवं मोहित जान कर कामरूपिणी देवी ध्यान करती हुई वहुत ऊँचे स्वर से वह रोने लगी उस समय जगत् की धात्री देवी प्रसन्न हो गई थी और उससे उन सब मूर्छितों को वधित कर देने की कृपा की थी ।११८। वे सव चेतना को प्राप्त होकर वड़ी प्रसन्नता से बोले—वन्धु आह्लाद कहाँ आस्थित है ? देवि ! तू इसका कारण बतला दे ।११९। जिस प्रकार से उसका स्वयं बद्ध हो गया था, उसने वह सभी वृत्तांत कह दिया था । मैं आज शकी होती हूँ, आप बिन्दुल पर संस्थित हो जाइये ।१२०।

इत्युक्त्वा सा शुकी कृष्णांशेन समन्विता ।
यंत्रास्ते तत्पतिवद्धस्तत्र सा कामिनी ययौ ।१२१
कृष्णांशोऽपि हयारूढो नभोमार्गेण चाप्तवान् ।
आभीरीं मूर्तिमा साद्य स्वामिनं प्रति सा ययौः ।१२२
आश्वास्य तं यथायोग्यं कृष्णांश प्रत्यवर्णयत् ।
कृष्णांशस्तत्र वलवान्हत्वा दुर्ग निवासिनः ।१२३
रक्षकाञ्छतसाहस्रान्हत्वा भ्रातरमाययौ ।
पौर्णिमां मधुयुक्तां च ज्ञात्वा सर्वे त्वरान्विताः ।१२४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अयोध्यां शीघ्रमागम्य स्नात्वा वै सरयू नदीम् ।
हालिकाहसमये शीघ्रं वेण्यां समागताः ।१२५
स्नानध्यानादिका निष्णाः कृत्वा गेहमुपाययुः ।
सागरस्य तटं प्राप्य ते च महोत्सवम् ।
त्रैत्रस्य कृष्णपञ्चम्यां स्वगेहं पुनराययुः ।१२६
दूता उष्ट्रसमारूढास्तत्क्षेमकरणोत्सुकाः ।
वैशाखे शुक्लपंचम्यां स्वगेह पुनराययुः ।१२७
मलना भूपतिश्चैव गेहे गेहे महात्सवम् ।
कारयित्वा विधानेन ब्राह्मणेभ्यो ददौ धनम् ।१२८

यह कह कर वह शुकीहो गई और कृष्णांशसे समन्वित होकर जहाँ उसका पति वद्ध था वहाँ वह कामिनी चली गई थी ।१२१। कृष्णांश भी हय पर आरूढ़ होकर आकाश मार्ग से वहाँ प्राप्त हो गया । वह आभारी रूप से आश्वासन करके कृष्णांश के प्रति वर्णन किया था, यथोचित रूप से आश्वसन कर के कृष्णांश के प्रति वर्णन किया था, वलवान् कृष्णांश ने वहाँ पर दुर्ग के निवास करने वाले सौ सहस्र रक्षकों का हनन करकेभाई को लेआया था । मधुयुक्ता पूर्णिमाको जानकर सब त्वरान्तिव होकर शीघ्र अयोध्यामें आ गये और वहाँ सरयू नदीमें स्नान किया था । फिर होलिका के दाह के समय में शीघ्र वेणी में आ पहुँचे थे ।१२३-१२५। वहाँ भी स्नान ध्यान आदि समस्त निष्ठाओं को पूर्ण कर अपने घर में प्राप्त हो । सागर के तट पर जाकर उन्होंने एक महोत्सव किया था । चैत्र कृष्ण पक्ष की पंचमी में पुनःवे अपने गृह को प्राप्त हो गये थे ।१४६। दूत ऊँटों पर बैठे हुए उनके क्षेमकरण के लिये वहुत उत्सुक थे । वैशाख माया की शुक्ल पक्ष की पंचमी में पुनः अपने घर में आ गये थे ।१२७। मलना और भूपति के यहाँ तथा घर-घर में बड़ा महोत्सव हुआ था । इस तरह महान् उत्सव सम्पन्न करा-कर ब्राह्मणों को धन दान दिया था ।१२८।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

।। जयतावतारवृतान्तवर्णन ।।

चतुर्दशाब्दे कृष्णांशे यथा जात तथा शृणु ।
जयन्तः शक्रपुत्रश्च जानकीशापमोहितः ।
कलौ जन्मत्वमापन्नः स्वर्णवत्युदरेऽवसत् ।१
चैत्रशुक्ल नवम्यां च मध्याह्ने गुरुवासरे ।
स जातश्चन्द्रवदनो राजलक्षणक्षितः ।२
जाते तस्मिन्सुतश्रेष्ठे देवाः सर्पिणगरास्तदा ।
इन्दुलीयं महींजातो जयन्तो वानमात्मजः ।
इत्युचुर्वचनं तस्मादिन्दुलो नाम चामवात् ।३
आह्लादो जातकर्मादीन्कॅर यित्वां शिशोर्मुदा ।
ब्राह्मणेभ्यो ददौ स्वर्णधेतुवन्दं हयान्गजात् ।४
इन्दुले तनये जाते द्विमासाते महीतले ।
योगसिंहस्तदागत्य स्वर्णवत्यै ददौ धनम् ।५
नेत्रसिंह सुतं दृष्ट्वा मलनास्नेहसंयुता ।
पप्रच्छ कुशलप्रश्नं भोजयित्वा विधानतः ।६
शतबृन्दाश्च नर्तक्यो नानारागेण संयुताः ।
तत्रागत्यैव ननृतुर्यत्र भूपसुतः स्थितः ।७

इस अध्याय में जयन्त के अवतार के वृत्तांत का वर्णन तथा उस की इन्दुल नाम से ख्याति का और इन्दुल के चरण का वर्णन किया जाता है । सूतजी ने कहा—जब कृष्णांश की अवस्था का चौदहवाँ वर्ष हुआ था उस समय जो जिस प्रकार से हुआ उसका अब श्रवण करो । जयन्त इन्द्र का पुत्र था और वह जानकी जी के शाप से मोहित हो गया था । इसीसे उसने कलियुगमें जन्म ग्रहण किया था और वह स्वर्ण वती के उदर में आकर बस गया था अर्थात् गर्भ में आ गया था ।१। चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि और गुरुवारके दिन मध्याह्न में वह चन्द्रमाके समान मुख वाला समुत्पन्न हुआथा जोकि राजाकेसमस्त लक्षणों से लक्षित था ।२। उस श्रेष्ठ सुत के समुत्पन्न होने उस समयमें

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋषिगणों के सहित देवगण ने यह इन्द्र का पुत्र जयन्त इस नामसे यहाँ भूमि पर उत्पन्न हुआ है ऐसा कहा था इसी से उसका इन्दुल नाम हो गया था ।३। आह्लाद ने बड़ी प्रसन्नता के साथ उसका जातकर्म आदि संस्कार कराकर ब्राह्मणों को स्वर्ण धेनु, अश्व और हाथियों का दान दिया था ।४। इन्दुल पुत्र के उत्पन्न होने पर महीतल में दो मास के अन्त में योगसिंह ने आकर स्वर्णवती को धन दिया था ।५। नेत्रसिंह के पुत्र को देखकर मलना स्नेह से परिपूर्ण हो गई थी और उसे विधान पूर्वक भोजन कराकर उससे कुशल पूछा ।६। एक सौ नर्तकियों के समूह के नाना प्रकार के रागोंसे युक्त होकर वहाँ जाकर नृत्य किया था जहाँ पर यह राजा का पुत्र स्थित था ।७।

सप्तरात्रमुषित्वा स योगसिंहो ययौ गृहम् ।
षण्मासे च सुते जाते देवेन्द्रः स्नेहकातरः ।८
पुत्रस्नेहेन तं पुत्रं स जहार स्वमायया ।
संहृत्वं बालक श्रेष्ठमिन्द्राण्य च समर्पयत् ।९
स्नेहप्लुप्ता शची देवी स्वस्तनौ तमपाययत् ।
देव्या दुग्धं स वै पीत्वा षोडशाब्दासभौभवत् ।१०
इन्दु पीयूषभवन गहणाति वपुषा स्वयम् ।
अतः स इन्दुलो नाम जयन्तश्च प्रकीर्तितः ।
स लालः स्वपितुर्विद्यां पठित्वा श्रेष्ठतामगात् ।११
विनष्टे बालके तस्मिन्देवा स्वर्णवती तदा ।
रुरोदोच्चैस्तदा दीना हा पुत्र क्व सुतोऽसि शोः ।१२
ज्ञात्वाह्लादं तथा भूतं देशग्रामे तथाविधे ।
रौद्रः कोलाहलो जातो रुद्रतां च नृणां मुने ।१३
आह्लादः स्वकुलैः सार्द्धं निराहारो जितेन्द्रियः ।
शारदां शरणं प्राप्तस्त्रिरात्रं तत्र चावसत् ।१४

सात रात्रि पर्यन्त योगसिंह वहाँ पर निवास करके अपने घर को चला गया था । जब छैः मास का पुत्र हो गया तो देवेन्द्र स्नेह से कातर हो गया था और अपने पुत्र के स्नेह के कारण माया

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करके उसने उस इन्दुल का हरण कर लिया था। इस श्रेष्ठ बालक को संहृत करकें वहाँ इन्द्राणी के लिए समर्पित कर दिया था ।७-६। स्नेह से लुप्त होकर शची ने उसे अपने स्तनों को पिला दिया था। देवी शची के दुग्ध को पीकर वह बालक सोलह वर्षके बालकके समान परिपुष्टहो गया था ।१०। वह स्वयं बपु के द्वारा पीयूष के भवन इन्दु को ग्रहण करता है। इसलिए जयन्त इन्दुल इस नाम से कहा गया है। वह बालक पिता की विद्या पढ़कर श्रेष्ठता को प्राप्त हो गया था ।११। उस बालक के विनष्टी हो जाने पर वह देवी स्वर्णवती अत्यन्त हीन होकर उच्च स्वर से में रो उठी थी-हा पुत्र ! तू कहाँ गया है ।१२। उस प्रकार के दश ग्राम में ऐसा होगया--यह जानकर आह्लाद भी रोने लगा। इस तरह रोने वाले मनुष्यों वता पर अत्यन्त रौद्ररूप वाला हे मुने ! कोलाहल उत्पन्न हो गया था ।१३। आह्लाद अपने कुल के लोगों के साथ निराहार होकर यथेन्द्रिय हो गया था और वह शारदा देवी की शरण में गया तथा तीन रात्रि तक वहाँ पर ही निवास किया था ।१४।

तदा तुष्टा स्वयं देवी वागुवाचाशरीरिणा ।
हे पुत्र स्वकुलैः सार्द्ध मा शोचस्त्व सुत प्रति ।१५
इन्द्रपुत्रो जयन्तश्च स्वर्गलोकमुपागतः ।
दिव्यविद्यां पठित्वा स त्रयवर्षां ते गमिष्यति ।१६
भूयादत्त्वं भूतलेऽवात्सीस्तावत्स भूतले वसेत् ।
तत्पचात्स्वर्गति प्राप्त जयन्तो हि भविष्यन्ति ।१७
इत्युक्त्वा वचने देव्या निश्शोकास्ते तदाभवन् ।
दशग्रामपुरं प्राप्य समर्षुर्ज्ञानि तत्परः ।१८

तब देवी शारदा प्रसन्न हुई बिना शरीर वाली वाणी ने कहा--हे पुत्र ! अपने कुल वालों के साथ सुतके लिए शोक मत कर ।१५। यह इन्द्र का पुत्र जयन्त था जो इस समय में स्वर्गलोकमें प्राप्त हो गया है। वहाँ वह दिव्य विद्या को पढ़कर तीन वर्ष के अन्त में आयेगा ।१६। इसके पश्चात् जब तक तू इस भूतल में रहेगा तभी तक वह भी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूतल में वास करेगा। इसके अनन्तर वह स्वर्गति प्राप्त कर पुनःजयन्त के रूप में इन्द्र का पुत्र हो जायेगा।१७। शारदा देवी के द्वारा कहे गये इन वचनों का श्रवण कर वे सब फिर शोक से रहित हो गये थे। फिर दशग्रामपुर में जाकर सब ज्ञान में तत्पर होकर रहने लगे थे।१८।

—×—

इन्दुले स्वर्गसंप्राप्ते ते वीराः शोककातराः।
शारदां पुनयामासुः सर्वलोकनिवासिनी।१
जप्त्वा सप्तशती स्तोत्रं त्रिसन्ध्यं प्रेमभक्तितः।
ध्यानेनानन्दमापन्नस्तदा सप्तशनेहनि।२
सामन्तद्विजतुत्रश्च चामुण्डो नाम विश्रुतः।
सोऽष्टवर्षवया भूत्वा पूजयामास चण्डिकाम्।३
द्वादशाब्दे ततो जाते त्रिचरित्रस्य पाठतः।
परीक्षार्थं तु भक्तानां साक्षान्मूर्तित्वमागता।४
कुण्डकेय च भौभक्ताः पूरयामि च तामहम्।
यूयं तु मनसोपायैः कुरुध्वं पूरणे मतिम्।५
सुखखानिस्तु गलवांन्मधुपुष्पैस्तया फलैः।
कुण्डिकां पूरयासास न पूर्णत्वमुपागता।
बलखानिस्तथा मासैर्मलशर्मा तु रक्तकैः।६

इस अध्याय में चण्डिका देवी के वाक्यों का वर्णन किया जाता है। सूतजी ने कहा—इन्दुल के स्वर्ग में चले जाने पर वे समस्त वीर शोक से कातर होकर शारदा भगवती देवी की जो कि समस्त लोकों में ही निवास करने वाली हैं, पूजा करने लगे थे।१। तीनों समयों में प्रेम और भक्ति के भाव से युक्त होकर सप्तशती स्तोत्र का जप करके ध्यान से वे आनन्द को प्राप्त हो गये थे तब सप्तशत दिन में सामन्त द्विज का पुत्र चामुण्ड—इस नाम से विश्रुत था वह आठ वर्ष की अवस्था वाला होकर चण्डिका का पूजन करता था।२—३। जब

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारह वर्ष तक अवस्था हो गई तो तीनों चरित्र के पाठ से भक्तों की परीक्षा के साक्षात् मूर्त्तित्व को प्राप्त हो गई ।४। यह कुण्डिका है । हे भक्तगण ! मैं उसको पूरित करती हूँ । तुम लोग भी मनसोपायों के द्वारा इसके पूरण करने में मति करो ।४। बलवान् सुखखानि ने मधु-पुष्पों के और फलों से इसको पूरित किया था किन्तु यह पूर्णत्व को प्राप्त नहीं हुई थी बलखानि ने माँस से और मूल शर्मा ने रक्त से पूरित किया था तो भी यह पूर्णत्व को प्राप्त नहीं हुई थी ।६।

देवकी च तदा हव्यैश्चन्दकादिभिरर्चनैः ।
कुण्डिकां पूरयामास व पूर्णत्वमुपगता ।७
आह्लादश्चैव सर्वाङ्गे रुदयः शिरसा स्वयम् ।
कुण्डिकां पूरयामास तदा पूर्णत्वमागता ।८
उवाच वचनं देवी स्वभक्तान्भक्तवत्सला ।
सुखखाने भवान्वीरो भविष्यति सुरप्रियः ।९
बलखानिमहावीरो दीर्घकाले स मृत्युभाक् ।
मूलशर्मा तु बलबानरक्तबीजो भविष्यति ।१०
देवकी च भवेद्देवी चिरकालं स्वलोकगा ।
आह्लादश्चैव कृष्णांशस्तयोर्मध्ये द्वयं वरम् ।
एकस्तुते वबत्प्रोक्तौबलाधिक्यो द्वितीयकः ।११
निष्कामोऽयं देवसिंहो मृतो मोक्षत्वमाप्नुयात् ।
इत्युक्त्वान्तर्दधे सर्वे तृप्तिमागताः ।१२

देवकी ने उस समय हव्यों से-चन्दन आदि अर्चन की वस्तुओं से इस कुन्डिक को पूरित किया था किन्तु जब भी यह पूर्ण नहीं हुई थी ।७। और आह्लाद ने अपने समस्त अङ्गों से और उदयसिंह ने स्वयंशिर पूरित किया । तब वह पूर्ण हो गई थी ।८। अपने भक्तों पर प्यार करने वाली देवी ने भक्तों से कहा—हे सुखखानि ! आप सुरों के प्रिय वीर होंगे ।९। महान् वीर बलखानि दीर्घ समय में मृत्यु को प्राप्त होने वाला होगा । मूलशर्मा बलवान् रक्त बीज होगा ।१०। देवकी देवी होगी और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिरकाल तक अपने लोक में गमन करने वाली होगी। आह्लाद और कृष्णांश उन दोनोंके मध्यमें दोनोंही श्रेष्ठहैं। इसमें तो एकदेवके समान कहा गया है और दूसरा बलाधिक्य वाला थां।११। देवसिंह निष्काम था, जो मृत होकर मोक्षत्व को प्राप्त हो गया था। यह कहकर वह माता अन्तर्धान हो गई और वे सब तृप्ति को प्राप्त हो गये थे।१२।

—×—

बलखानि विवाह वृत्तान्त वर्णन

प्राप्ते सप्तदशाब्दे च कृष्णांशे तत्र चाभवत्।
शृणुत्वं मुनिशार्दूल दृष्टं दयोगदर्शनात्।१
रत्नभानौ मृते राज्ञि मरुधन्वमहीपातः।
गजसेन स्तदा विप्र पृथ्वीराजभयातुरः।२
आसाध्य पावकं देव यज्ञध्यानव्रतार्चनैः।
दादशाब्द समाचारः प्रेमभक्त्या ह्यतोषयत्।३
तदा प्रसन्नो भगबान्पावकीयं हयं शुभम्।
ददौ तस्मै सुतौ कन्यां च गजमुक्तिकाम्।४
पावकास्तै हि चत्वारः समुद्भूता महीतले।
अग्निवर्णा महावीराः सर्वलक्षणलक्षिताः।५
अष्टादवर्योभूताः सर्वे ते मुनिपुंगव।
जातामात्रा देवसमाः सर्वबिद्याविशारदाः।६
अष्टादशाव्दवयचा सा कन्या वरवर्णिनी।
दुर्गायाश्च वरं प्राप्ता धर्मांशस्त्वां वरिष्यति।७

इस अध्याय में कृष्णांश की सत्रह बर्ष की अवस्था में बलखानि के विवाह वृत्तान्त का वर्णन किया जाता है श्री सूतजी ने कहा—कृष्णांश को सत्रह वर्ष की अवस्था प्राप्त हो जाने पर यहाँ पर जो कुछ भी हुआ था उसका अब श्रवण करो। हे मुनि शार्दूल! जो योग दर्शन से देखा था।१। रत्नभानु राजा के मृत हो जाने पर केरुधन्व का राजा गजसेन उस समय हुआ था। हे विप्र पृथ्वीराज के भय से बहुत

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आतुर रहता था ।२। उसने पावक (अग्नि) देव की यज्ञ-ध्यान व्रत और अर्चनों के द्वारा आराधना की थी और बारह वर्ष पर्यन्त सदाचार से युक्त रहकर प्रेम एवं भक्ति के भाव से उस देव को प्रसन्न कर लिया था ।३। उस समय पावक भगवान् ने उस पर प्रसन्न होकर एक पावकीय शुभ अश्व को दिया था तथा दो पुत्र और एक गज मुक्तिका कन्या दी थी ।४। वे चारों ही पावक थे जो कि इस महीतल में समुत्पन्न हुये थे। ये अग्नि के समान वर्ण वाले–महान वीर और समस्त शुभ लक्षणों से लक्षित थे ।५। हे मुनिश्रेष्ठ ! ये सब अठारह वर्ष की अवस्था वाले थे और उत्पन्न होते ही देवता सदृश एवं समस्त विद्याओं के महापण्डित थे ।६। वह वर वर्णिनी कन्या अठारह वर्ष की अवस्था वाली थी। उसने दुर्गा देवी से यह वरदान प्राप्त कर लिया था कि धर्मांश तेरा बरण करेगा ।७।

शार्दूलवंशी स नृपः कृतवान्वै स्वयंवरम् ।
नानादेश्या नृपः प्राप्ताः सुताया रूपमोहितः ।८
मार्ग शीर्षे सिते पक्षे चाष्टम्यां चन्द्रबासरे ।
तस्याः स्वयंवरश्चाजीत्मानृपान्प्रति चाययौ ।९
विद्युदैव मुखं तन्यांश्चंचलायास्तथागतम् ।
इष्टा मुमोह धर्मांशो बलखानिर्महीपतिः ।१०
सोऽपि दृष्ट्वा च त वीर मुमोस गजमुक्तिका ।
बुद्धा तस्मै ददौ मालां वैजयतीं शुभांनना ११
तारकाद्याश्च भूपालाः सर्चशस्त्रांस्त्रसंयुताः ।
रुरुधुः सर्वतो वीर ते वलात्कन्याकार्थिनः ।१२
तथाविधात्नृपाद्दृष्ट्वा भूतान्पंचशतान्बली ।
स शीघ्रं खड्गमुत्सृज्य शतभूपशिरांस्यहन् ।१३
सर्वतो वध्तमानं तं वलखानिं स तारकः ।
तद्भजाभ्यां ददौ खड्गं स तदगे द्विधाभावत् ।१४

शार्दूल वंश में होने वाले उस राजा ने स्वयंवर किया था। उस समय उस सुता के रूपलावण्य से मोहित अनेक देशों के राजा वहाँ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त हुये थे ।८। मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष में अष्टमी तिथिमें चन्द्र वार के दिन उस कन्या का स्वयम्वर हुआ था और वह समस्त राजाओं की ओर वरण करने के लिये यहाँ आई थी ।९। उस चंचल का मुख विद्युत के वर्ण के समान था । उसका आगमन देखकर ही धर्मांश महीपति वलखानि मोहित हो गया ।१०। उस गजमुक्ता ने भी बलखानि को देखा और उस वीर पर वह मोहित हो गई थी । उस शुभानना ने उसे समझाकर वैजयन्ती माला जो कि वरण करने के लिये वह लेकर आई थी उनके गले में डाल दी थी ।११। तारक आदि जो भूपाल वहाँ थे जो कि समस्त शस्त्र और अस्त्रों से संयुक्त थे उन्होंने उस वीर को सभी ओर से रोक लिया था क्योंकि वे सब वलपूर्वक उस कन्या को लेने की इच्छा वाले हो रहे थे ।१२। उस बली ने जब देखा कि वे पाँच सौ राजा मुझसे इस गजमुक्ति को वलात् छीन लेने के इच्छुक हो रहे हैं तो उसने शीघ्र ही अपना खडग निकालकर एक सौ राजाओं के मस्तक काट डाले थे ।१३। सब ओर से वध्यमान उस वलखानि को उस तारक ने उसकी भुजाओं में खंग दे दिया था और वह उसके अंग में दो हो गया था ।१४।

महीराजसुतो ज्येष्ठी दृष्ट्वा खङ्ग तथा गतम् ।
अपोराह रणाच्छत्स्ततपाश्चात्ते नृपा ययुः ।१५
पराजिते नृपबले बलखानिर्महावलः ।
तां कन्यां शिबिकारूढां स्वगेहं सोऽनयद्वली ।१६
तां गच्छतीं सुतां दृष्ट्वा गजसेना महीपतिः ।
महीपत्याज्ञया प्राप्तो ज्ञात्वा त क्षत्रियाधमम् ।१७
जम्बुकघ्नं महावीरं मायया तमसोहयत् ।
जाते निद्रातुरे वीरे दुर्गायाः शापमोहिते ।१८
निगडंस्तं ववंधाशु दृढैर्लोहमयैरुषा ।
लोहदुर्गं च संम्प्राप्य ग्रामरूप महीपतिः ।१९
चांडालांश्च समाहूय कथितांस्तत्रवासिनः ।
वधालाज्ञापयामास तस्य दण्डैपनेकशः ।२०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ते रौद्रास्तं समाबध्य ताडयामासुरूर्जिताः ।
तत्ताडनात्तदा निद्रा तत्रैव विलयं गडा ।२१

महीराज के पुत्र ने जो कि ज्येष्ठ था उस प्रकार से गये हुए खंग को देखकर रण से वह शूर अपोवासित हो गया था और इसके पश्चात् राजा भी चले गये ।१५। समस्त नृपों के बल के पराजित हो जाने पर महान बलवान बलखानि उस कन्या को शिविका में आरूढ़ कराकर अपने घर में ले गया था ।१६। उस कन्या को जाती देखकर महीपति गजसेन महीपति की आज्ञा से उसे क्षत्रियों में अधम जानकर वहाँ आयाथा ।१७।जम्बुकके मारनेवाले उस महावीरको मायासे मोहित आतुर हो जाने पर क्रोध से लोहे निगड़ों से उसे शीघ्र ही बाँध दिया था। महीपति ने ग्राम लोहदुर्ग को उसे पहुँचा दिया था ।१८-१६। और वहाँ पर रहने वाले कठिन चाण्डालों को बुलाकर अनेक प्रकार के दण्डों के साथ उसके वध करने की आज्ञा दे दी थी ।२०। उन महारौद्र ऊर्जितों ने उसे अच्छी तरह से बाँधकर पीटना शुरू कर दिया था उनके उस ताड़न करने से उस समय वह निद्राविलीन हो गई थी ।२१।

दृष्ट्वा ततस्तु चंडालान्बलखानिरताडयत् ।
तलमुष्टिप्रहारेण चाण्डाल मरणं गताः ।२२

मृते पंचशते रौद्रे तच्छेषादुद्रुवुर्भयाद् ।
कपाटं सुदृढं नृपांतिकमुपायुः ।२३
स नृपः कारणं ज्ञात्वा हस्तवद्धी महाबली ।
उवाच तत्र गत्वासौ वचनं कार्यतत्परः ।२४

भवान्महाबली बीर चाण्डालैर्बंधनं गतः ।
दस्युभिर्लुठितस्तत्र निद्रावश्यो वनं गयः ।२५
मत्सुता भवने प्राप्ता विष्टया त्वं जीवितं गतः ।
उद्वाप मत्सुतां शीघ्र स्वगेहं यातुमर्हसि ।
इति श्रुत्वा प्रियं वाक्यं तं प्रशंस्य तथा करोत ।२६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मण्डपे वेदकर्माणि बिवाहार्थं चकार सः ।
जातायां मण्डपार्चायां पत्रमाहलादहेतवे ।२७

तदाज्ञया लिखित्वासौ गजसेगोऽग्निसेवक: ।
उष्ट्राअढं समाहूय शीघ्रं पत्रमचोदयद् ।२८

इसके पश्चात् वलखानि ने उन चाण्डालों को देखकर उन्हें पीटा था । मुष्टि के तल प्रहरों ने अनेक चाण्डाल मर गये थे ।२२। पाँचसौ रौद्री पर जो शेष रह गये वे सब भय से भाग गये थे किवाड़ों को दृढ़ बन्द करके राजा के पास पहुँच गए थे ।२३। इस राजा ने कारण को जान कर उस महान् वली ने हृत् बुद्ध होकर कार्य में तत्पर वहाँ जाकर यह वचन बोला—हे वीर ! आप महान बल वाले हैं, चाण्डालों के द्वारा बन्धन को प्राप्त हुए थे, दस्युओं के द्वारा लूटे भी गये थे और निद्रावश्य होकर वन में गये थे । मेरी पुत्री तो भवन में प्राप्त हो गई वड़ी प्रसन्नता की वात है कि आप जीवित हैं, अव आप मेरी पुत्री से शीघ्र विवाह करके अपने घर में जाने के योग्य होते हैं । इस प्रकार के परम प्रिय वचनों को सुनकर उसकी प्रशंसा कर वैसा ही किया था ।२४-२६। उसने एक मण्डप का निर्माण कराके उसमें विधिवत् विवाह के समस्त कर्म किये थे । मण्डप की अर्चा हो जाने पर आह्लाद के लिए एक उष्ट्रारूढ़ को वुलाकर शीघ्र ही उस पत्र को प्रेरित कर दिया था । ।२७-२८।

वलखानेविवाहोऽत्र भवासैन्यसमन्वित: ।
संम्प्राप्य योग्यद्रव्याणि भुक्त्वा त्वं तृप्तिमावह ।२९

इत्युक्ते निशि जातायां वलखानिर्महावल: ।
भोजन कृतवास्तत्र विषजुष्टं नृपार्पितम् ।३०

गरलं तेन संयुक्तं न ममार वराञ्छुभात् ।
ततः काले च संप्राप्ते दृऽष्ट्वा मोहत्वमागतम् ।
पुनर्बबंध निगडस्ताडयामास वेतसैः ।३१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषदोषमसृग्द्वारान्निस्सृतं सर्वदेहतः ।
तदा बूतोधबलवान्भूपति प्राह नम्रधीः ।३२
राजान्कीदृशं जात त्वत्सैन्यं ताडने रतम् ।
स आह भो महावीर मत्कुले रीतिरीदृशी ।
यातनां प्रथमं प्राप्य तंदनूद्वाहितो भवेत् ।३३
इत्युक्ते सति भूपाले गजमुक्ता समागता ।
पितरं प्राह वचनं कोऽयं तत्ताडने गतः ।३४
नृप प्राह सुते शीघ्रं याहि त्वं निजमंदिरे ।
कृषि करोयमायातो द्रव्यार्थं ताडने गतः ।३५

यह बलखानि का विवाह है अतः आप सैन्य से युक्त होकर यहाँ प्राप्त होवें और द्रव्यों का उपभोग करके आप तृप्तिको प्राप्त करें ।२९ इस प्रकार कहने पर रात्रि हो जाने पर बलखानि ने भोजन वहां किया था जो राजा के द्वारा समर्पित किया गया था और विष से जुष्ट था । ।३०। उसने गरल को भी खा लिया था किन्तु शुभ वर के होने के कारण से वह मरा नहीं था । इसके पश्चात् काल के आपने मोहतत्व को प्राप्त हुये उसको देखकर पुनः निगड़ों से बाँध लिया था और वेंतों से पीटा था ।३१। वह जो खिलाये हुये विष का दोष था वह रक्त के द्वारा समस्त शरीर से निकल गया था तब वह बलवान् ज्ञान वाला हो और नम्र बुद्धि वाला होकर राजा से बोला ।३२। हे राजन् ! यह इस तरह कैसा हुआ कि तुम्हारे सैनिक मुझे ताड़न में रत ही थे ? उसने कहा—हे महावीर ! कुल में इसी तरह की रीति होती है। पहिले पूर्ण यातना प्राप्त करके ही पीछे उद्वाहित हुआ करता है ।३३। भूपाल के इस प्रकार से कहने पर वहाँ गजमुक्ता आ गई थी और वह अपने पिता से बोली यह कौन था, जो उसके ताड़न करने में गया था ? राजा ने कहा-हे सुते तुम शीघ्र अपने मन्दिर में जाओ । यह कृषि कर आया था जो कि द्रव्य के लिये ताड़ना में गया था ।२४।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इति श्रुत्वा वचो घोरं वलखानिर्महावलः ।
छित्वा तद्ब धनं घोरं खड्गहस्तः समाययौ ।३६
शूरान्पचशतं तं रुद्ध्वा शस्त्रैः समन्ततः ।
प्रजघ्नरस्तु तान्सर्वान्वलखानिर्व्यनाशयत् ।३७
गजसेन सुतो ज्येष्ठः सर्यद्यु तिरुपागतः ।
वद्ध्वा पुनस्तं वसिनं गर्तमध्ये समाक्षिपत् ।३८
तथा गत पतिं दृष्ट्वा गजमुक्ता सुदुःखिता ।
निशि तत्र गता देवी दत्वा द्रव्यं तु रक्षकान् ।३९
पतिं निष्काश्य पप्रती व्यजनं पतये ददौ ।
रात्रौरात्रौ तथा प्राप्ता व्यतीतं पक्षमात्रकम् ।४०
एतस्मिन्नन्तरे वीरश्चाहलादः सप्तलकं ।
सैन्यैः सहाययौ शीघ्रं श्रुवा तत्रैव कारणम् ।४१
बलखानिर्गतो गर्ते ररोध नगरीं तदा ।
गजैः षोडशाहस्तैर्गजसेना रण ययौ ।४२

इस प्रकार के घोर वचन को महाबली वलखानि ने सुना और उसके उस घोर बन्धन को काटकर वह हाथ में खड्गलेकर वहाँ आ गया था ।२६। फिर पाँच सौ शूरों ने उसे अवरुद्ध किया जो कि चारों ओर से शस्त्रों से युक्त थे तब बलखानि ने उन्हें मारते हुये सबको विनष्ट कर दिया था ।३७। गजसेना का ज्येष्ठ पुत्र सूर्यद्यु ति आ गया था। उस बली को बाँधकर फिर एक गर्त्त के मध्य में डाल दिया था ।३८। उस प्रकार की दशा में करने वाले अपने पति को देखकर गजमुक्ता अत्यन्त दुःखित हुई थी। यह देवी रात्रि में वहाँ पहुँची और रक्षकों को द्रव्य लेकर रोती हुई उसने पति को निकाल कर उसे एक व्यंजन दिया था। इस तरह वह रात-रात में वहाँ प्राप्त हो जाया करती थी। उसे इस प्रकार से एक पक्ष व्यतीत होगया ।३९-४०। इस बीच में आह्लाद सात लाख सेना के साथ वहाँ उस कारण को सुनकर शीघ्र आ गया था ।४१। उसने यह सुना कि बलखानि गर्त्त में पड़ा है

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो उस नगरी को उसी समय घेर लिया था। सोलह सहस्र गजों की सेना को लेकर गजसेन युद्ध करने लगा।४२।

त्रिलक्षैश्च हयैः सार्द्धं सूर्यद्युतिरुपाययौ।
कांतामलस्तदा प्राप्तस्त्रिलक्षैश्च पदातिभिः।४३
तयोश्चासीन्महद्युद्धयहोरात्रं हि सैन्ययोः।
रक्षिते तालनाद्यै च गजनेनाद्यके तदा।४४
द्वितीयेऽह्नि समायाते गजसेनो महाबलः।
प्रभग्नं स्वबलं दृष्ट्वा पावकीऽयं हमारुहत्।
दाहयामास तत्सैन्य तालानाद्यैश्च पालितम्।४५
भस्मीभूतंबलं दृष्ट्वा तालनः शत्रु सम्मुखे।
गत्वा भल्लेन भूपालं ताडयामास वेगतः।४६
मूर्छितं नृपमाज्ञाय सूर्यद्युतिरुपाययौ।
पावकीय समारुह्य दाहयामास तालनम्।४७
एतस्मिन्नंतरे शूरौ देवौ चाल्हादकृष्णकौ।
बबन्धतू रुषाविष्टौ सूर्यद्युतिमरिंदमम्।४८
सुबद्धं भ्रातरं ज्ञात्वा हयं कांतामलोऽरुहत्।
देवसिंह च समोहयकृष्णाशं प्रति सोऽगमत्।
गृहीत्वा तं कृष्णांशं तस्य तेजः समाहरत्।४९

तीन लाख अश्वों के साथ वहाँ सूर्यद्युति भी आ गया था। उस समय में कान्तामल भी तीन लाख पदातियों को लेकर प्राप्त हो गया था।४३। उन दिनों सेनाओं का एक अहोरात्र तक महान् युद्ध हुआ था।४४। द्वितीय दिन के होने पर महाबलवान् गजसेन ने अपनी सेना को भग्न देखकर पावकीय पर समारोहण किया था। तालनादि के द्वारा जो रक्षित सेना थी, उसको उन्होंने जला दिया था।४५। शत्रु के सम्मुख में भस्मीभूत सेना को देखकर तालन ने जाकर भाले से भूप पर प्रहार किया था। राजा को मूच्छित जान कर वहाँ सूर्यद्युति आ गया था। इसमें पावनीय पर समारूढ़ होकर तालन को दग्ध किया

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। इसी बीच में देवशूर आह्लाद कृष्णक ने रोष से आविष्ट होकर अरिंदम सूर्यद्युति को बाँध लिया था। भाई को सुबद्ध जान कर कांता मल हय पर समारुढ़ हो गया था। उससे देवसिंह को सम्मोहित करके फिर वह कृष्णांश के प्रति गया था। उसने उस कृष्णांश को पकड़ कर उसका तेज समाहृत कर लिया।४६-४६।

सप्तलक्षबलं सर्वं वह्निभूतमभत्तदा।
आपरत्त्वात्सआह्लादस्तदा तु ममजीवयत्।५०
गजसेनस्यार्द्धं सैन्य तैश्च सर्वैर्विनाशितम्।
विजय नृपतिः प्राप्य हर्षितो गेहमाययौ।५१
वह्निभूत च कृष्णांश दृष्टवाह्लादः सुदुःखितः।
दुर्गा देवीं स तुष्टाव मनसा रणमूर्द्धनि।५२
त्तदा देवी वचः प्राह वत्स ते पुत्र एव च।
स्वर्गादागत्य सर्वाणि पुनरुज्जीवयिष्यति।५३
इत्युक्ते वचने देव्या वसावाज्ञया।
द्वादशाब्दसम रूप धृत्वा विद्याविशारदः।
वडबामृतमारुह्य हयं तत्र समागतः।५४
त्तदङ्गादुद्धृता वाहा मेघा इव समन्ततः।
पावकश्यामा सुस्त्रयस्ते देवतोपमाः।५५
शमीभूते ददा वह्नौ स्वसुखात्सहयो मुदा।
लालामुद्राहयामास तया ते जीवितास्ततः।५६

उस समय में वह जो सात लाख मेना थी वह सब बह्निभूत हो गई थी। तव अमरत्व से उसे आह्लाद ने जीवित किया।५०। गजसेन की आधी सेना उन्होंने विनासित कर दी थी। नृपति विजय पाकर, हर्षित होकर घर में आ गया था।१५। कृष्णांश को वह्निभूत देख कर आह्लाद अत्यन्त दुःखित हुआ था। उसके रण के मूर्छा में ही मन से दुर्गादेवी की स्तुति की थी।५२। तब देवी ने यह वचन कहा—हे पुत्र! तेरा पुत्र स्वर्ग से आकर इनको फिर जीवित कर देगा।५३। देवी के द्वारा इतना कहने पर इन्द्र की आज्ञा से वह इन्दुल बारह वर्ष की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवस्था वाले के समान रूप धारण कर विद्याओं में विशारद वह बड़वावृत अश्व पर सवार होकर वहाँ आ गया था ।५४। उसके अंग से वह मेघों के समान चारों ओर से उद्धृत हुए थे उन तीनों देवों के समान ने पावक को एकदम शांत कर दिया था ।५५। उस समय में पावक के शमन हो जाने पर उस अश्व ने अपने मुख से लार निकाली थी उससे वे सब मृत हुए जीवित हो गये थे ।६५।

जीविते सप्तलक्षे तु शभीभूते हि पावके ।
गजसेनः सुताभ्यां च प्रयातः सर्वतोदिशम् ।५७
लक्ष सैन्यं तु ये शिष्टास्ते सर्वेऽपि भयातुराः ।
दुदुभर्वार्गश्रेष्ठदिव्य रूपत्व धारिणः ।५८
केचिष्संन्यासिनो भूत्वा केचिद्वै ब्रह्मचारिणः ।
जीवत्वं प्राप्तवन्तस्ये तथान्ये सक्षयं गताः ।५९
बद्ध्वा तान्गजेसेनादीस्त्रींञ्छरान्स च तालनः ।
कृष्णांशेन समायुक्त इन्द्रदुर्ग समाययौ ।६०
बलखानि च निष्काश्य तालनस्तदनं तरम् ।
पृष्टवान्कारण सर्वं श्रुत्वा तन्मुखतो वच ।
तान्वीरांस्वाडयासा वेतसैः स्तभवधनैः ६१
गजमुक्ताज्ञया विप्र सेनापतिरुदारधीः ।
तालनस्तान्समुत्सृज्य विवाहार्थं समाययौ ।
बलखानिर्हयारूढो गजमुक्ताच मण्डपे ।६२
गजसेनस्तदादिव्यैर्भोजनै स्नानभोजयत् ।
निवास्य लोहबुर्गे तान्कपाटः सुदृढकृतः ।
लक्षशूरान्स संस्थाप्य स्वयं स्वयं रुद्धपुरं ययौ ।६३

पावक शान्त होने पर सात लाख सेना के जीवित हो जाने पर गजसेन सुतों के साथ सब दिशाओं की ओर चल दिया था ।५७। एक लक्ष सेनाथी उसमें जो भी वच गया था वह भी भयसे आतुर होगये थे । हे भार्गव श्रेष्ठ ! वे सब भी रूपत्वधारी भाग गये थे । इस तरहसे रूप

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धारण करके उन्होंने प्राण बचाये थे। अन्य जो थे वे सब क्षयको प्राप्त हो गये थे।५६। तब तालन ने उन गजसेन आदि शूरों को बाँधकर कृष्णांश से समायुक्त होकर इन्द्र-दुर्ग आ गये थे। बलखानि को निकाल कर उसके बाद में समस्त कारण पूछा और उसे उसके मुख से सुनकर उन वीरों को स्तम्भों से बाँधकर वेतों से पीटा था। हेविप्र ! गजमुक्ता की आज्ञा से उदाहृथी सेनापति ने उनको छोड़कर विवाह के लिये वह आ गया था। बलखानि अश्व पर समारूढ़-था और गजमुक्ता मण्डप में थी।६०-६२। गजसेन ने फिर दिव्य भोजनों से उनको भोजन कराया था और लोह-दुर्ग में उनको ठहराकर सुदृढ़ किवाड़ लगवा दियेथे। एक लाख शूरों को वहाँ संस्थापित करके स्वयं रुद्रपुरको चलागया था।६३

ते रात्रौ लोहदुर्गेषु हर्युषित्वा यत्नतोबलात् ।
प्रभाते च कपाटे न द्वार द्रष्टवा तदाब्रवीत् ।
द्वारमुद्घाटयाशु त्वं नो चेत्प्राणांस्त्यजिष्यसि ।६४
इति सेनापतिः श्रुत्वा लक्षशूरान्समादिशत् ।
नानायत्नैश्च हंतव्याः शभवो भयकारिणः ।६५
इति श्रुत्वा तु ते शूराः षतध्न्यस्तै सुरोपिताः ।
एकैकं क्रमशो जघ्नुर्वंव ते वैरतत्पराः ।६६
हते दशसहस्रे तु कृष्णांशो बिदुलं हयम् ।
समारुह्य जघानाशु स्वखड्गे महद्बलम् ।६७
हतशेषा भयार्ताश्च सहस्राशीतिसम्मिताः ।
इन्द्रदुर्गं प्रनि प्राहुर्यथा जातो बलक्षयः ।६८
श्रुत्वा भयातुरो राजा स्वसुताभ्यां समन्वितः ।
गजभुक्तां पुरस्कृत्य बहुद्रव्यसमन्विताम् ।
स्वपापं क्षालयामास दत्वा कन्या विधानतः ।६९
षोडशोष्ट्राणि स्वर्णानि गृहाग्वाल्हाद एवसः ।
ययौ स्वगेहं सहितः पुत्रभ्रातृसमन्वितः ।७०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे रात्रि में उस लोह-दुर्ग में रहकर यत्न बल से प्रभात होने पर द्वार को कपाट से रुद्ध देखकर उस समय बोले-जल्दी से द्वार को खोल दो नहीं तो प्राणों को त्याग देगा ।६४। सेनापति ने यह सुन कर एक लाख सेना को आज्ञा दी, अनेक प्रकार के यत्नों से ये भयकारी शत्रु मार देने चाहिये ।६५। यह सुनकर उन शूरों ने तोपें वहाँ लगा दी थीं । इन्होंने एक-एक वृन्द को क्रम से मार डाला था, क्योंकि वे वैर में पूर्णतया तत्पर थे ।६६। जब दस सहस्र हत हो गये तो कृष्णांश बिन्दुल अश्व पर समारूढ़ होकर उसने अपने खड्ग से उस विशाल सेना का हनन शीघ्र ही कर दिया था ।६७। जो मरने से बच गये थे, सहस्र अशीति प्रणाम वाले इन्द्र-दुर्ग के प्रति चले गये और वहाँ तब कहा कि कैसे इतनी बड़ी सेना का क्षय हो गया था ।६८। यह सुन कर राजा भय से आतुर हो गया था, अपने दोनों पुत्रों के साथ समन्वित होकर बहुत से धनसे युक्त गजमुक्ता को आगे करके विधानपूर्वक कन्या का दान करके उसने अपने किये हुये पाप का क्षालन किया था ।६९। उस आह्लाद ने सोलह ऊँट सुवर्ण ग्रहण किया था और फिर पुत्र-भाई से समन्वित होकर पूजित हो अपने घर को चला गया था ।७०।

सम्प्राप्ते गेहताल्हादे देवी स्वर्णवती स्वयम् ।
इन्दुलं स्वाकमारोप्य ललाप तरुणं बहु ।७१
मृताहंश्च त्वसा पुत्र पुनरुज्जीविता खलु ।
धन्याहं कृतकृत्यास्मि जयन्त तव दर्शनात् ।७२
इति श्रुत्वेन्द्र लो वीरो नत्वाहं जननीं मुदा ।
अनृणं नाधिगच्छामि त्वतो मातः कदाचन ।७३
संप्राप्तेगेहमाल्हादे राजा परिमलः सुधीः ।
वद्यानि वदयामास विप्रेभ्यश्च ददौ धनम् ।७४

आह्लाद के घर पहुँचने पर स्वर्णवती देवी ने स्वयं इन्दुल को अपनी गोद में बिठा कर बहुत करुणा से आलाप किया था ।७१। हे पुत्र ! मैं तो मरी हुई थी, तूने मुझे जीवित कर दिया है। मैं परम धन्य हूँ और अत्यन्त ही कृतकृत्य हूँ जयन्त ! तेरे दर्शन से मैं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज सफल हो गई हूँ ।७२। यह सुनकर वीर इन्दुल ने अपनी माता को सनातन प्रणाम किया और कहा-हे माता ! तुमसे मैं उऋण कभी भी नहीं होऊँगा ।७३। आल्हाद के घर पर आ जाने पर सुखी राजा परि-मल ने बहुत से बाद्यों को बजवाया था और ब्राह्मणों को धन का दान दिया था ।७४।

ब्रह्मानन्द का विवाह बृत्तान्त

कृष्णांशेऽष्ठादशाब्दे तु यथाजातं तथा शृणु ।
मृते कृष्णमुराहे तु भूपतौ रत्नभानुना ।१
महीराज सुदु: खार्तो लक्षचंडीपकारयत्त ।
होमान्ते तु तदा देवी वागुवच नृपं प्रति ।२
वर्षेवर्षे तु ते सप्त भविष्यत्यंगसम्भव: ।
कुमारा: कौरवंशाश्च द्रौपद्यशा सुता नृप ।३
इत्यक्ते वचने तस्मिन्नज्ञौ गर्भमथो दधौ ।
कर्णांशश्च सुतो जायस्तारको वलवत्तर: ।४
द्वितीयाब्दे तथा जाते दुश्शासनशुभांशय: ।
नृहरिरिति बिख्याततृतीयाब्दे तु चाभवत् ।५
उद्धर्षांश सरदनो दुर्मुखांशस्तु मर्दन: ।
विकर्णांश: सूर्य्यकर्मा भीमश्चाँशो त्रिविशते ।६
वर्द्धनाश्चित्रवार्णाशो वेल तददु चाभवत् ।
यथा कृष्णा तथासैव रूपचेष्टांगुणैर्मने ।७

इस अध्याय में पृथ्वीराज के सप्त कौरवांश पुत्रकी प्राप्तिके वृत्तांत का बर्णन तथा ब्रह्मानन्द के विवाह का वर्णन किया जाता है । श्रीसूत-जी ने कहा—अब उस कृष्णांश के अठारहवें वर्ष के होने पर जो कुछ हुआ था उसका श्रवण करो । रत्नभानु के द्वारा कृष्ण कुमार भूपति के मृत हो जाने पर सुदु:खार्त महीराज ने लक्ष चण्डी का अनुष्ठान कराया था । होम हो जाने के अन्त में उस समय राजा से देवी ने यह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वचन कहे थे। देवी ने कहा—वर्ष-वर्ष में सात अंग से सम्भूत कुमार होंगे। हे नृप! वे कौरवांश और द्रौपद्यांश पुत्र होंगे ।१-३। उसके इस वचन के कहने के बाद रानी ने गर्भ को धारण किया था। अधिक बलशाली कर्णांश पुत्र तारक समुत्पन्न हुआ था ।४। द्वितीय वर्षके होने पर दुश्शासन के शुभांशने नृहिर उस नामसे विख्यात हुआ था। तृतीया वर्ष के होने पर उद्धर्षान्शि सरदन, दुमखांश मर्दन-विकर्णांश सूर्य वर्मा- और भीमांश विविशत उत्पन्न हुये ।५-६। चित्रवाणांश विवर्द्धन और उसके पीछे वेला समुत्पन्न हुई थी। जैसी कृष्णाथी विल्कुल उसी तरह की। हे मुने! रूप लावण्य-चेष्टा और गुण गण से वह हुई थी ।७।

भुवि तस्यां च जातायां भूकम्पो वारुणीऽभवत्।
अट्टाटहास शिवं चामुण्डा खे चकार ह।
रक्तवृष्टिः पुरे चासीदस्थिशर्करया युता ।८
ब्राह्मणाश्च समागत्य जांतकर्मादिका क्रियाम्।
कृत्वा नाम तथा चक्रे श्रृणुभूमिप साक्षरम् ।९
इला च शशिनो माता विकल्पेनाऽभवभुवि।
तस्माद्वेलेति विख्याता कन्येयं रूपशालिनी ।१०
जातायां सुतायां स पिता विप्रेभ्य उत्तमम्।
ददौ दाने मुदा युक्तो वाताँसि विविधानि च ।११
द्वादशाब्दवयः प्राप्ते सा सुता वरवर्णिनी।
उवाच पितरं नम्राश्रृणु त्वं पृथिवीपते ।१२
मण्डपे रक्तधाराभियों मां संस्नापयिष्यति।
द्रोपद्या भूषण दाता स मे भर्ता भविष्यति ।१३
स्वर्णपत्रे तदा पद्यं वेलामखोद्भवम्।
लिखित्वा तारकं प्राह त्वमन्वेषय तत्पतिम् ।१४

इस भूमण्डल से जब उसने जन्म ग्रहण किया था उस समय में एक महादारुण भूकम्प हुआ था और चामुण्डा देवी ने आकाश में अशिव अट्टहास किया था। पुर रक्त को वृष्टि हुई थी जो कि अस्थियों की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शर्करा से युक्त थी। ब्राह्मणों ने आकर उसकी जात कर्म आदि क्रिया को सम्पन्न उसके नामकरण किया था। हे भूमिप ! इसको अक्षरों के सहित श्रवण करो। इला शशी की माता थी जो विकल्प से भूमि में हुई थी? इसलिए बेला इस नाम से विख्यात हुई हैं। यह रूप शालिनी तुम्हारी कन्या बेला नाम धारिणी है।८-१०। उस सुता के समुत्पन्न होने पर पिता ने ब्राह्मणों को बहुत उत्तमदान बड़ी प्रसन्नतासे दिया और अनेक प्रकार के वस्त्र दिये।११। जब उस वरवर्णिनी कन्या की बारह वर्ष की अवस्था हो गई थी उसने विनम्र होकर पिता से कहा हे पृथिवीपते ! सुनिये, मण्डप में रक्त की धाराओं से मुझे संस्नावक करायेगा वह द्रौपदी के वस्त्रोंको देने वाला मेरा स्वामी होगा।१२-१३। तब राजा ने सुवर्ण के पत्र पर बेला के मुख से निकला हुआ पत्र लिखवा कर तारक से कहा—इसका पति तुम ही खोजो।१४।

साद्धं लक्षत्रयं द्रव्यं ग्रहीत्वा लक्षसैन्यकः।
नृपान्तरं ययौ शीघ्रं तारकः पितुराज्ञया।१५
सिंधुस्थाने चार्यदेशे भूपभूपं ययौ बली।
न गृहीतं नृपै कैश्चित्तद्वाक्यं घोरमुल्वणम्।
महीपतिं स संप्राप्य मातुलं तद्वचोऽब्रवीत्।१६
श्रुत्वा स आह भो वीर ब्रह्मानन्दो महाबलः।
स च वाक्यं प्रगृहलादद्यैः सुरक्षितः।१७
किं त्वया विदितं नैव चरित तस्य विश्रुतम्।
भवान्षड्वंधु सहितः कृष्णाशाद्यैर्विवाहितः।१८
ते सर्वे वशगास्तस्य ब्रह्मानंदस्य धीमतः।
नास्ति भूमंडलकश्चित्तद्बलेन समो नृपः।१९
इति श्रुत्वा ययौ पूर्णं तारकः स्वबलैः सह।
तत्पद्यं कथयित्वाग्रे हस्तबद्धस्तदाभवत्।२०
कृष्णांशस्तु गृहीत्वांशु पद्यं वाक्यमुवाच ह।
अहं विवाहयिष्यामि ब्रह्मानन्द नृपोत्तमम्।२१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ में तीन लाख धन और एक लाख सेना लेकर पिता की आज्ञा से तारक दूसरे राजाओं के पास शीघ्र चला गया था। वह बली सिन्धु देशमें और आर्यदेशमें एक-एक राजाके पासगया था किन्तुराजाओं में से किसीने भी उसके परम वीर इस उल्वण वाक्यको ग्रहण नहीं किया था। वह फिर मातुल महीपतिके पास प्राप्त होकर उस वचन को बोला था।१५-१६। वह सुनकर बोला—हे वीर ब्रह्मानन्द महान् बलवान् है। वह इस वाक्य को ग्रहण कर लेगा क्योंकि वह आल्हाद महान् आदि से पूर्णतया सुरक्षित है।१७। क्या आपको उसका विश्व में प्रसिद्ध चरित विदित नहीं है?आप छह बन्धुओंकेसहित कृष्णांश आदिके द्वारा विवाहित हैं।१८। वे सब धीमान् ब्रह्मानन्द के वश में रहने वाले हैं, इस भूमण्डल में उसके बल के समान कोई भी नृप नहीं है।१९। यह श्रवण कर तारक अपनी सेना के साथ तुरन्तही गया था। उस पद्य को उसके आगे कहकर हाथ बाँधकर वहाँ उपस्थित हो गया था।२०। कृष्णांश ने ग्रहण करके पद्य को पढ़ा और शीघ्र ही यह वचन बोला—मैं नृपोत्तम ब्रह्मानन्द को विवाहूँगा।२१।

तूष्णीं भूतास्तदा सर्वे तारकः स द्विजैः सह।
अभिषेकं तदा कृत्वा स्वगेहं पुनराययौ।२२
माघमासे सिते पक्षे त्रयोदश्यां सुवासदे।
विवाहलग्नं शुभद वरकन्तार्थयोस्यदा।२३
सप्तलक्षबलै-सार्द्ध लक्षणश्च सतालनः।
महावती पुरीं प्राप्तो बली परिमलादिभिः।२४
आल्हादो लक्षसैन्याढ्यः कृष्णांशेन समन्वितः।
बलखानिर्लक्षसैन्यो संयुत सुखखानिना।२५
नेत्रसिंह लक्षसैन्यौ योगभोगसमन्वितः।
रणजिच्च बली बलो द्विलक्षबलसंयुतः।२६
एवं द्वादशलक्षाणां सैन्यानामधिपो बली।
तालनः सिंहनीसंस्थो बडवां प्रययौ सह।२७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सैन्यैर्द्वादशलक्षैश्च सहितस्तालनी वली ।
आययौ देहलीग्रामे महीरासानुपालिते ।२८

उस उसय सभी चुप हो गये थे, उस तारक ने द्विजों के साथ अभिषेक करके अपने घर को फिर वापिस लौट आया था ।२२। माघ मास के शुक्लपक्ष में त्रयोदशी तिथि सुवासर के दिन में वर और कन्या दोनों को शुभ लग्न विवाह की निश्चित हुई थी । तालन के साथ लक्षण सात लाख बल के सहित बली परिमल आदि के साथ महावती पुरी को प्राप्त हो गया था ।२३-२४। एक लाख सेना से युक्त और कृष्णांश समन्वित आल्हाद, एक लाख सेना से युक्त सुखखानि के सहित वलखानि, लाख सेना से समन्वित और योग तथा भोग से युक्त नेत्रसिंह और रण को जीतने वाला बली वाला जिसके साथ दो लक्ष सेना थी-उन सवको मिलाकर बारह लाख सेना का स्वामी बलवान तालन महाराज के द्वारा भली भाँति सुरक्षित देहली नगर में आकर प्राप्त हो गया था ।२५-२७। तालन सिंहनी नाम की वडवा पर संस्थित था और इस प्रकारसे बारह लाख सेना सहित होकर आया था ।२८।

देवो मनोरथारूथोविढ् ढलस्थः स कृष्णकः ।
वडवांमृतमासाद्य स्वर्णवत्या संतो गतः ।२९
रूपणश्च करालस्थ आल्हदश्च पपीहके ।
बलखानिः कपोतस्थो हरिणस्थोऽनुजस्ततः ।३०
रणजिन्मलनापुत्र संस्थितो हरिनागरे ।
पञ्चषब्मगजारूढो महावत्याधिपा गताः ।३१
विमानवरमारुह्य धीवरैः शतवाहिकैः ।
मणिमुक्तास्वर्ण तयं सहस्रैर्वियुतम् ।३२
अयुतैश्च पताकैश्च येत्रपाणिसुहस्रकैः ।
सहस्रै शिविकाभिश्च पञ्चसाहस्रकं रथै ।३३
शकटैर्महिषोढैस्तु तथा पंचसहस्रकैः ।
सर्वतोपस्कृत रम्यं ब्रह्मानंदं समागतः ।३४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रुत्वा कोलाहल तेषां महीराजो नृपोत्तमः ।
विस्मितः स बभवात्र शिविराणि मुदा ददौ ।३५

मनोरथ नामक अश्व पर देव समारूढ़ था और कृष्णांश अपने विन्दुल नामधारी अश्व पर समारोहण किये हुए था। स्वर्णवतीका पुत्र बढ़वामृत को प्राप्त करके वहाँ गया था ।२६। रूपण कराल नाम वाले अश्व पर सवार था और आह्लाद पपीहक पर संस्थित था—बलखानि कपोतक नाम वाले दिव्य वाहन पर था और उसका अनुज हरिण पर संस्थित था। मलनाको पुत्र रणजित् हरिनागर नामकवाहन पर स्थिततथा ।३०-३१। शतवाहिक धीवरों के सहित श्रेष्ठ विमान पर आरोहण करके जोकि मणि-मुक्ता और सुवर्ण से परिपूर्ण था तथा सहस्रों बाद्यों से युक्त था। दश सहस्र पताकाओं से एवं सहस्र नेत्र प्राणियों से और एक सहस्र शिविकओं से तथा पाँच सहस्र रथों से युक्त था । महिषों के द्वारा समूढ़ शकटी से युक्त जोकि पाँच सहस्र संख्या में थे बहुत ही सब प्रकार सुसंस्कृत एवं रमणीक था विमान उस पर ब्रह्मा आया था। उन सबका कोलाहल-सुनकर नृपोत्तम महीराज बहुत ही विस्मित हुआ था और उसने बड़ी प्रसन्नता से उनके रहनेके लिये वहाँ शिविर प्रदान किये थे ।३२-३५।

दुर्गद्वारि क्रिया रम्या कृत्वा विधिविधानतः ।
द्रौपद्या भूपणं देवेलायै स तमब्रवीत् ।३६
इन्दुलस्य ययौ स्वर्गं वासवं प्रति चाब्रवीत ।
द्रौपद्या भूषणं सर्वं देहि मह्यं सुरोत्तम् ।३७
कुवेरात्स समानीय दिव्यमाभूषणं ददौ ।
इन्दुलः प्रहरान्ते च प्राप्त. पित्रे न्यवेदयत् ।३८
आह्लादस्य स्वयं बेलायै भूषणं ददौ ।
प्राप्ते ब्राह्मे मुहूर्तेतु विवाहस्तत्र चाभवत् ।३६
सम्प्राप्ते प्रथमावर्ते तारकः खड्गमाददौ ।
आह्लादस्तं समासाद्य युयुधे बहुलीलयः ।४०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नृहरिस्तु द्वितीये च कृष्णांशं प्रति चारुधत् ।
तथा सरदनं वीरं बलखानिरूपाययौ ।४१
मदनं सुखखानिस्तु चतुर्थावर्तकेऽरुधत् ।
रणजित्सूर्यवर्माणं स भीमं रूपणो बली ।
देवस्तुवधनं वीरं सप्तावर्तकमाद्ययौ ।४२

दुर्ग के द्वार पर पूर्ण विधि-विधान के साथ परम रम्य क्रिया को सम्पन्न करके उससे कहा कि वेला के लिये द्रौपदी का भूषण दीजिए । उस समय इन्दुल स्वर्ग में गया और वहाँ इन्द्र से बोला कि हे सुरोत्तम! द्रौपदी के समस्त भूषण मुझे प्रदान कीजिए ।३६-३७। उस समय इन्द्र ने कुबेर से लाकर समस्त द्रौपदी के भूषण जो कि परम दिव्य थे प्रदान कर दिये । इन्दुल एक ही प्रहर के अन्त तक वहाँ से वापिस आ गया और समस्त आभूषण पिता को लाकर दे दिये थे ।३८। आह्लाद ने स्वयं जाकर वेलाके लिये वे भूषण दिये थे । फिर ब्रह्म मुहूर्त प्राप्त होने पर वहाँ विवाह हुआ था।३९।प्रथम आवर्त्त अर्थात् फेरासमाप्त होनेपर तारकने अपना खड्ग ग्रहण किया था । उस समय आह्लाद उनकेसमीप में पहुँच गया और बहुत प्रकार से उसने युद्ध किया था ।४०। द्वितीय आवर्त्त के होने पर नृहरि ने कृष्णांश से युद्ध आरम्भ कर दिया । फिर बलखानि वीर सरदन से युद्ध करने लगा ।४१। चतुर्थ आवर्त के समय के सुखखानि मर्दन से युद्ध कर रहा था । इस प्रकार से रणजित् सूर्यवर्मा से और बला रूपण भीमसे तथा देव वीरवर्धन से क्रम से सप्त आवर्त्त में युद्ध के लिये गये थे ।४२।

शतभूपान्नृद्यगं ध्वरागसेनाकादिकांस्तदा ।
लक्षणाद्याः समाजग्मुर्मण्डपे बहुविस्तृते ।४३
भग्नभूतं नृपबलं राजा दृष्ट्वा रुषान्वितः ।
महीराजो ययौ रूढो यज चारिभयंकरम् ।४४
जित्वा तान्नेत्रसिंहादीञ्छन्दवेधी नृपोत्तमः ।
लक्षणं प्रयतो शीघ्रं बौद्धिर्नी हस्तिनी स्थितम् ।४५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवं मनसि संस्थाप्य जित्वा बद्धाः रुषान्वितः ।
अगमत्तमुपगृह्य दर्शयामास नृपम् ।४६
श्रुत्वा परिमलो राजा कृष्णांशं भीरुको ययौ ।
वृत्तान्त कथयामास चाह्लादादिपराजयम् ।४७
अजितः स च कृष्णांशो मभोमार्गेण मंदिरम् ।
गत्वा जगर्जबलवान्योगिन्यानं पदायकः ।४८
तदा स लक्षणो वीरस्त्यक्त्वा बंधनमुत्तमम् ।
विष्णुं मनसि संस्थाप्य महीराज समाययौ ।४९

इस प्रकार से लक्षणादि ने गजसेनादिक शतखगंधारी भूपों को उस बहुत विस्तृत मण्डप में जाकर घेर लिया और युद्ध करने लगे ।४३। राजा ने अपने बल को भग्न होता हुआ देखा तो रोषयुक्त होकर वह अरियों के लिये महान् भयङ्कर हाथी पर आरूढ़ होकर महीराज स्वयं गया था ।४४। वह राजा शतभेदी था उसने नेत्रसिंह आदि को जीत कर देह बौद्धिनी नामक हस्तिनी पर स्थित लक्षण के पास शीघ्र ही पहुँच गया था ।४५। मन में भगवान शिव का ध्यान करके रोष से तन्वित हो उसे जींत कर बाँध दिया और उसे पकड़ कर उस नृप को जाकर दिखा दिया था ।४६। राजा परिमल सुनकर भीरु हो कृष्णांश के पास गया था । वहाँ आल्हादि के पराजय का समस्त वृत्तांत कह दिया था ।४७। वह अजित कृष्णांश आकाश मार्ग से मन्दिर में जाकर योगिनीयों को आनन्द देने वाला बलवान् गर्जा था ।४८। उस समय में बीर लक्षण ने उत्तम बन्धन को त्याग कर मन में विषणु को संस्थापित करके महाराज के पास गमन किया था ।४९।

गृहीत्वा चागमां दोलां स्वयं शिविरमाप्तवान् ।५०
एतस्मिन्नन्तरे सर्वे त्यक्त्वा मूर्च्छा समन्ततः ।
खगंयुद्धैन ताञ्छित्वा वद्धा तान्निगडैर्दृढैः ।५१
सान्वयाञ्चतभूपांश्च हत्वा तद्रुधिरावहैः ।
द्रोपदीं स्नापयामासुर्बलरूपां बलोत्तमाम् ।५२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाहान्ते च सर्वे शिविराणि समाययुः ।
समुत्सृज्व सुतान्सप्त सुभोज्यैस्ते ह्यभोजयन् ।५३
भुक्थवत्सु सुवीरेषु साहस्रास्तै सुतैः सह ।
रुरुधुः सर्वतो जघ्नुरस्त्रैः समन्ततः ।५४
सहस्रशूरांस्तांन्हावा पुनर्बद्धा महाबला ।
शिविराणि समाजग्मुस्तेषां हास्यविशारदाः ।५५
दक्षलक्षसु वर्णानि गृहीत्वा नृपतिर्बली ।
वेलां नवोढामादाव गत्वा नत्वा तमब्रवीत् ।५६

वहाँ उस अगम दोलाक, ग्रहण कर स्वयं शिविर में प्राप्त हो गया था ।५०। इस बीच में सब समी ओर से मूर्च्छा का त्याग करके खंग युद्ध से उन्हें जीतकर निगड़ोंसे दृढ़ता से बाँधकर वंशों के सहित वहाँ सौ भूपों को मारकर उनके रक्त को धाराओं से कला में उत्तम बेला को स्वरूप में समास्थित उस द्रौपदीका स्नपन करा दिया ।५१। विवाह हो जाने पर ही छोड़ आये जिनको कि सुभोज्यों से भोजन कराया गया था ।५३। उन सुवीरों का भोजन कर लेने पर सुतों के साथ सहस्रों ने उन्हें रोक लिया था और सब ओरसे अस्त्रों के द्वारा उन्हें मारा था । उन सहस्त्र शूरों को मारकर और फिर महावलों को बाँधकर उनके हास्य विशारद शिविरों में चले आये थे ।५४-५५। बली नृपति ने दश लाख सुवर्ण की मुद्रा ग्रहण करके और नवोढ़ा बेला को लेकर जाकर नमस्कार करके उससे कहा ।५६।

प्रद्योतसुत हे राजल्लक्षणोऽसौ महाबलः ।
मम पत्नी समादाय कर्तुं समिच्छातः ।५७
इति श्रुत्वा परिमल सर्व मूपसमन्वितः ।
वहुधा वोधिश्चैव न दुर्बोध तता नृपः ।५८
तदा मदासती वेल विललप भृश मुहुः ।
तच्छन्वास च कृष्णांशः सहितो वलखानिना ।
तामाश्वास्य तदा वेलां नभोमार्गेण चाययौ ।५९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्षणं तर्जयित्वासौ गृहीत्वा चागमन्मुदा ।
नभोमार्गेण गेहे त कृष्णांशः समपेषयत् ।६०
पुनस्त्यक्त्वा सप्त सुतान्सहितान्नृपतेज्स्तु ते ।
शपथं कारयां सासुर्दभं प्रति महाबलाः ।
उषयित्वा दशरात्राते दध्युर्गंतुमनो मुने ।६१
महीराजस्तु बलवान्गृहीत्वा भूपतेः पदौ ।
स उवाचाश्रुपूर्णाक्षस्तदः परिमलं नृपम् ।६२
महाराज बधूस्ते च बेलेवं द्वादशाब्दिका ।
पितृमातृवियोग च न क्षमतो तु वालिका ।६३

हे प्रद्योत सुत ! हे राजन् ! यह लक्षण महान बलबान हैं। मेरी पत्नी को लाकर यह दासी करना चाहता है ।५७। यह सुनकर समस्त भूपों से सम्बन्धित परिमल ने बहुत प्रकार से समझाया था किन्तु उस समय नृपति को समझ नहीं आई थी ।५८। तब महासती वेला ने वहुत ही अधिक बिलाप बार-बार किया था। यह सुनकर बलखानि के साथ कृष्णांश ने उस बेला का समाश्वासन करके वह आकाश मार्ग से आया था ।५९। इसने लक्षण को डाटकर उसे लेकर यह प्रसन्नता से नभोमार्ग से घर में आ गया था और फिर कृष्णांश ने उसे घर में भेज दिया था ।६०। फिर नृपतिके सहित सात सुतोंको त्याग करके महाबली दम्भ के शपथ कराई थी। दशरात्रि के पश्चात् वहाँ रह कर हे मुने ! उन्होंने जाने का मन किया था ।६१। बलवान् महीराज ने भूपति के चरणों को ग्रहण कर आंसुओं से आँखों को भर कर उस समय राजा परिमल से कहा ।६२। हे महाराज ! यह आपकी वधू बेला केवल बारह वर्ष की है यह बच्ची माता पिता के बियोग को सहन करने में असमर्थ है ।६३

पस्मात्तां त्वं परित्यज्य गच्छ गेह सुखी भव ।
पतियोग्या यद भूतात्तदा त्वं शुनरेष्यति ।६४
इत्युक्त्वा च वचो राजा स स्नेहादंकमस्पृशत् ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चूर्णीभूते परिमले चाल्हादस्तत्र दुःखितः ।
महीराजं स पस्पर्श स राजा चूर्णतांगतः ।६५
भग्नास्थी भवतो चीभौ पावकीयैश्चिकित्सकैः ।
सुखन्तौ गृहं प्राप्य कृतकृत्यवमागतौ ।६६
मलना स्वसुतं दृष्ट् वा प्राप्तमुद्वाहितं गृहे ।
कृत्वोत्सवं बहुविधः विप्रेभ्यंश्च ददौ धनम् ।
होमं वै कारयामास चण्डिकायाः प्रसादतः ।६७
सभायां लक्षणो वीरो यात्राकाले तमब्रवीत् ।
नभोमार्गेण संप्राप्तौ योगिनौ च शिवाज्ञाया ।६८
जहतुस्तौ च मांजित्वा तत्तीक्ष्णभयमोहितम् ।
अद्याह घात गच्छामि चिरंजीव नृपोत्तम् ।
इत्युक्तवंतं त नत्वा ययुर्भूपाः स्वमालयम् ।६९

इसलिये आप इसको यहीं छोड़कर घर पधारें और सुखी रहें । जब पति के योग्य हो जायेगी तब इसे तुम्हारे पास में भेज देगें ।६४। राजा ने यह वचन कहकर स्नेह से उसे अपनी गोद में स्पर्श किया था । परिमलके चूर्णीभूत होने पर वहाँ आह्लाद अत्यन्त दुःखित हुआ था । उसने महीराज का स्पर्श किया तो वह राजा भी चूर्णता को प्राप्त हो गया था ।६५। भग्न अस्थि वाले दोनों भूपों को पावकीय चिकित्सकों के द्वारा सुख वाले किया गया था । वे घर जाकर कृत-कृत्यत्व को प्राप्त हुये । मलना ने अपने पुत्र को उद्वाहित और घर में प्राप्त हुआ देखकर बड़ा उत्सव किया था और उसने बहुत धन विप्रों को दान में दिया था । चण्डिका के प्रसाद से उसने होम भी कराया था ।६४-६७। यात्रा काल में सभा में बीर लक्षण ने उससे कहा—जयचन्द्र के लिये अगमा मानकर हुता उसको जीतकर शिव की आज्ञा से योगीं दोनों नभो मार्ग से संप्राप्त हुये थे उसके अत्यन्त तीक्ष्ण भय से मोहित मुझ को जींतकर उन दोनों ने त्याग दिया । हे भ्रात ! आज मैं जाता हूँ हे नृपोत्तम ! आप चिर काल तक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जीवित रहें। इस प्रकार से कहने वाले उसको प्रणाम करके भूप अपने घर को चले गये थे।६८-६९।

— — —

हंस का पद्मिनी वर्णन

विंशाब्दे चैव कृष्णाशेयथा जातं तथा शृणु।
सागराख्यसरस्तीरे कदाचिन्दिदुलो बली।
जप्त्वा सप्तशतीस्तोत्रं तत्र ध्यानविन्वतोऽभवत्।१
एतस्मिन्नन्तरे हंसा आकाशद्भूमिमागताः।
तेषां च रुतशब्दैश्च स ध्यानादुत्थितोऽभवत्।२
वक्ष्यमाणं वचः प्राहुर्धन्योऽयं दिव्यविग्रहः।
पर्वतानां हिमगिरिर्वनं वृन्दावनं तथा।३
महावती पुरीणां च सागर सरसामपि।
नारीणां पद्मिनी नारी नृणां श्रेष्ठस्त्वमिन्दुलः।४
भो इन्दुल महाप्राज्ञ मानसे सरसि स्थिताः।
यवं श्रुत्वा श्रियो वाक्यं न लना सागर गताः।५
दृष्ट्वा तत्र शुभां नारी सर्वाभरणभूषिताम्।
सप्तालिभिर्युतां रम्यां गीतनाट्य विशारदाम्।६
दृष्ट्वा मोहत्वमापन्ना वयं देशान्तरं गताः।
विलोकिता नराः सर्वेऽत्रास्माभिर्जगतीतले।
त्वत्समौ न हि कोऽप्यत्रं पद्मिनी सदृशो वरः।७

इस अध्याय में इन्दुल के प्रति हंसों के द्वारा पद्मिनी का वृत्तान्त कहने के अनन्तर उसके लिये सिंहल देश में जाकर युद्ध आदि के वृत्तान्त का वर्णन किया जाता है। सूतजी बोले—जब कृष्णांश की अवस्था का बीसवाँ वर्ष हुआ तो उस समय में जिस प्रकार से जो कुछ हुआ था अब तुम लोग उसका श्रवण करो। सागर नामक सरोवर के तट पर किसी समय में बलवान् इन्दुल था। उसने वहाँपर सप्तशती के स्तोत्र का जाप किया और ध्यान से युक्त हो गया था।१। इसी बीच में कुछ हंस आकाश से उड़कर भूमिमें आ गयेथे। उनकी जो रुद ध्वनि सुनाई

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दी तो वह ध्यानसे उठ बैठा था ।२। उन्होंने यह आगे कहा जाने वाला वचन कहा-यह दिव्य शरीर वाला परम धन्य है, पर्वतों के मध्य में हिमगिरि तथा वृन्दावन वन है। पुरियों में महावती पुरी और सरो में सागर जैसे उत्तम है वैसे ही नारियों में पद्मिनी नारी है और नरों में इन्दुल ही सर्वश्रेष्ठ है।३-४। हे महाप्राज्ञ ! हे इन्दुल ! हम लोग मानस सरोवर में स्थित थे श्री के वाक्य सुनकर नलिनी सागर को गये।५। वहाँ पर हम लोगों ने समस्त आभूषणों से सुभूषित शुभ नारी को देखा था जो सात सहेलियों से युक्त थी-परम रम्य और गीत एवं नाट्यकी पण्डिता थी।६। उसे देखकर हम मोहत्वको प्राप्त हो गये थे और फिर अन्य देश को चले गये थे। इस जगती तल में हमने नर तो बहुत से देखे थे किन्तु पद्मिनी का तुल्य वर अन्य कोई भी तुम्हारे समान नहीं हैं। उस पद्मिनी के एकमात्र तुम ही योग्य वर हो।७।

तस्मात्वं नः समारुह्य तां देवी द्रष्टुमर्हसि ।
तथेत्युक्त्वा शक्रसती हंसराज समारुहत् ।८
सिंहलद्वीपके रम्ये ह्यार्यसिंहो नृपः स्थितः ।
तत्सुता पद्मिनी नाम्ना रूपयौवनशालिनीं ।
रागण्यःसप्त विख्यातास्तत्सख्यः प्रमदोत्तमाः ।९
नलिनासागरे रम्ये गिरिजाभदिदं शुभम् ।
तत्र स्थितां च तां देवीमिन्दुलः स ददर्श ह ।१०
सोऽपि त सुन्दर दृष्ट्वा हंसदेहे समास्थितम् ।
समोह्याहय त देव तेन रार्द्धमरीरमत् ।११
वर्षमेकं ययौ तव नानालीलासु मोहितः ।
नक्तं दिव न बुद्धे हममाणस्तया सह ।१२
भक्तिगर्वत्वमापन्ने चाह्लादे जगदम्बिका ।
दृष्ट्वा चान्तदधे देवी गुर्वाचरणकुण्ठिता ।१३
तस्य प्राप्तं महद्दुःखमाह्लादस्य जयैषिणः ।
स कैश्चित्पुरुषवीरः कथितोऽभूत्स्व मन्दिरे ।१४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसलिये आप हम पर समारोहण करके उस देवी के देखनेके योग्य होते हैं । ऐसा ही होगा—यह कहकर वह इन्दुल का पुत्र हँसराज पर समारूढ़ हो गया था ।८। सिंहलद्वीपमें जो अत्यन्त रमणीक है वहाँआर्य-सिंह नृप स्थित है, उसकी पुत्री पद्मिनी नाम वाली है जो रूपलावण्य से युक्त है । उसकी सात सखियाँ राग-गान करने वाली जो प्रमदाओं में अति उत्तम हैं परम विख्यात थीं ।९। परम रम्य नालिनी सागर में एक शुभ गिरिजा का मन्दिर है । वहां पर स्थित उस देवी को इन्दुल ने देखा था ।१०। उसने भी उस अति सुन्दर और हंस के शरीर पर स्थित देखा था । फिर उसने उसे सम्मोहित करके और बुलाकर उसके साथ रमण किया था ।११। अनेक प्रकार की लीलाओंमें मोहित होकर वहां एक वर्ष बीत गया था । उस पद्मिनी के साथ रमण करने वाले इनको रात दिन का कुछ भी ज्ञान नहीं रहा था ।१२। आल्हाद को भक्ति करने का जब गर्व हो गया तो उस पर जगदम्बिका यह देखकर अन्तर्धान हो गई थी क्योंकि वह देवी गर्व पूर्ण आचरण से कुण्ठित हो गई थी ।१३। उस जय की इच्छा रखने वाले आहलाद को बहुत अधिक दुःख हुआ था । उसने अपने मन्दिर में किन्हीं पुरुषों के द्वारा कहा गया था ।१४।

इन्दुलं रूपसंपन्नं लङ्कापुरनिवासिनः ।
राक्षसास्तं समाहृत्य स्वगेहं शीघ्रमाययुः ।१५
इति श्रुत्वा वचो घोरं सकलो विललापह ह ।
हाहाशब्दो महांश्चासीत्तेषा तु रुदतां मुने ।१६
कृष्णांशो रुदितं प्राहाल्लाद ज्येष्ठं श्रणुष्व भोः ।
जित्वाहं राक्षासान्सर्वास्ताशनाद्यैः समन्वितः ।
इन्दुलं त्वां समेष्यामि भयाश्वैर्यपरो भवेत् ।१७
बलखानिश्च कृष्णांशो देवसिंहश्च तालनः ।
सप्तलक्षबलैः सार्द्धं लङ्का प्रतिययुर्मुदा ।१८
मार्गप्रा ताश्च ये भूपा ग्रामपा राष्ट्रपास्तथा ।
यथायोग्यं बलि रम्य प्राप्य तस्मै न्यवेदयन ।१९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये भूपा मदमत्ताश्च जित्वा तांस्तलनो बली ।
वद्धा तैश्च समागच्छत्सेतुवन्धं शिवस्थलम् ।२०
पूजयित्वा च रमेशं रामेण स्थापितं शिवम् ।
सिंहलद्वीपमगन्षण्मासाभ्यन्तरे तदा ।२१

रूप से सम्पन्न इन्दुल को लंकापुर के निवास करने वाले राक्षस समाहृत करके अपने घर में शीघ्र आ गये हैं ।१५। इस घोर वचन को सुनकर वह समस्त कुल के सहित विलाप करने लगा था । हे मुने ! उस सबके रोने का महान हाहाकार शब्द वहाँ हो गया था ।१६। कृष्णांश ज्येष्ठ आल्हाद को रोते हुए देखकर उसने बोला-सुनो ! मैं तालन आदि से समन्वित होकर उन समस्त राक्षसों को जीतकर तुमको इन्दुल ला दूँगा । आप धीरज धारण करने वाले हो जावें ।१७। वलखानि—कृष्णांश—देवसिंह और तालन सात लाख सेना के साथ वड़ी प्रसन्नता से लंका की ओर चले गये ।१८। मार्ग में प्राप्त होने वाले जो राजा—ग्रामप और राष्ट्रप थे उन सबसे यथायोग्य वलि प्राप्त करते जा रहे थे उन्होंने उसकी वलि को निवेदन किया था ।१६। जो राजा मद से मत्त हो रहे थे उनको बली तालन ने जीत लिया था । उन्हें बाँध कर उनके साथ शिवका स्थल जो सेतुबन्ध था वहाँ आ गया था ।२०। श्री राम के द्वारा स्थापित शिव श्री रामेश्वर की पूजा करके तब छै मास के अन्दर सिंहल द्वीप में चला गया था ।२१।

नलिनीसागर प्राप्य तत्र वासमकारयत् ।
पत्रं सम्प्रैषयामास वलखानिर्नृपाय च ।२२
आर्य्यसिंह महाभाग स्वपीतान् देहि तीर्णकान् ।
भवांश्च स्ववलैः सार्द्धं लंका प्रति ब्रजधुना ।
नो चेत्वा सवलं जित्वा राष्ट्रभगं करोम्यहम् ।२३
इति श्रुत्वा पत्रवचो भूपतिर्बलबत्तरः ।
रक्षितः शक्रपुत्रेण युद्धाम जमुपागयौ ।२४
इन्दुलं स्तभनं मन्त्रं संस्थाप्यं शरं उत्तमे ।
स्तम्भयामास तत्सैन्यं तालनाद्यैः सुरक्षितम् ।२५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिवसे सुखशर्मा च त्रिलक्षैः स्वदलैः सह ।
आर्य्यसिंहस्य तनयो महद्युद्धमचीकरत् ।२६
निशामुखे च सम्प्राप्ते शक्रपुत्रौ महाबलः ।
शतपुत्रौः क्षत्रियाणां सार्द्धं युद्धाय चाययौ ।२७
तेषां हया हरिद्वर्णा योगिवेषधरा वलात् ।
महतीं ते सहस्रं च रिपोः सेनां व्यनाशयन् ।
तत्पश्चाद्गेहमासाद्य तदा तैः सुखितोऽवलत् ।२८
एवं जाताश्च षण्मासास्तयोर्युद्धं हि सेनयोः ।
क्रमेण सक्षयं प्राप्त बलखानेर्महद्बलम् ।२६

वहाँ पर नलिनी सागर पर पहुँच कर सबने अपना निवास स्थान किया था। और बलखानि ने वहाँ के राजा के लिये एक पत्र भेजा था ।२२। हे महाभाग ! आर्यसिंह ! आप अपने तोर्णक अर्थात् तैर जाने वाले जहाज को हम को दो और आप भी अपनी सेना के साथ अब लंका को चलो । नहीं तो सेना के सहित तुमको जीत कर तुम्हारे राष्ट्र को भंग कर दूँगा ।२३। यह पत्र के लिखित वचनों को सुनकर अधिक बलवान भूपति जो कि इन्द्र के द्वारा रक्षित था युद्ध के लिये आ गया ।२४। इन्दुल ने स्तम्भन मन्त्र को उत्तम शर में संस्थापित करके तालन आदि के द्वाराजो रक्षित सेना थी उसे स्तम्भित करदिया था ।२५। और सुखकर्मा ने जो कि आर्यसिंह का पुत्र था तीन लाख अपनी सेना के साथ दिन में महान युद्ध किया था ।२६। रात्रि के आरम्भमें इन्द्र का पुत्र महान बलवान क्षत्रियों के शत के साथ युद्ध धारण करने वाले थे उन्होंने शत्रु की बड़ी भारी एक सहस्र सेना को बल से विनष्ट कर दिया था। इसके पश्चात् घर में आकर उन्होंने सुख से निवास किया था ।२८। इस प्रकार से उन दोनों सेनाओं का छै मास पर्यन्त युद्ध हुआ था। क्रम से बलखानि की जो बहुत बड़ी सेना थी शनैः शनैः संक्षय को प्राप्त हो गई थी ।२६।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्दुल-पद्मिनी का विवाह

दृष्ट्वा सैन्यनिपातं च बलखानिर्महाबलः ।
संप्राप्य मानसो पीडां युद्धार्थं विमुखोऽभवत् ।१
देवसिंह सताहूय त्रिकालज्ञं महामतिम् ।
तं मन्त्रं मन्त्रयामास कार्यसिद्धिर्यथा भवेत् ।
श्रुत्वोवाच महायोगी देवसिंहो महाबलः ।२
महेन्द्रतनयः कश्चित्सर्वशस्त्रास्त्रकोविदः ।
त्वत्सैन्यं रोषयित्वा वै दिव्यास्त्रेण दिवामुखे ।
रात्रौ स्वयं समागम्य करोति वलसंक्षयम् ।३
अतस्त्व मत्सहायेन तालनेन समन्वितः ।
कृष्णांशेन समागम्य शक्रपुत्रं शुभाननम् ।
विजयी भव शीघ्रं हि नो चेद्यायां यमक्षयम् ।४
इति श्रुत्वा वचस्तस्य देवसिंहस्य भाषितम् ।
यत्नं चकार बलावांन्भ्रातृमित्रसमन्वितः ।५
एकविंशाब्दकृष्णांशे सम्प्राप्ते युद्धकोविदे । .
सेनां निवेशयामास पोतेषु सयवाहनः ।६
अर्द्धं सैन्यं च तत्रैव स्थापयित्वा महाबलः ।
अर्द्धं सैन्येन कृष्णांशो दक्षिणां दिशमागमत् ।७

इस अध्याय में पद्मिनी के जन्म और उसके साथ इन्दुल के विवाह के वृत्तान्त का वर्णन किया जाता है। सूतजी ने कहा बलखानि ने अपनी सेना का यपातन देखकर मानसी पीड़ा को प्राप्ति की थी ओर वह फिर युद्ध से विमुख हो गया ।१। तीनों काल की घातों को जानने बाले महान् मतिमान् देवसिंह को बुलाकर उस मन्त्र की मन्त्रणा की थी जिससे कार्यकी सिद्धि हो सके। महान बलवान देवसिंह यह सुनकर बोला, जो कि एक महान योगी भी था ।२। कोई महेन्द्र का पुत्र है जो समस्त शस्त्र एवं अस्त्र की विद्या का बड़ा पण्डित है । उसने तुम्हारी सेना को अवरुद्ध करके रक्खा है और दिवामुख में किसी दिव्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्त्र के द्वारा ही यह स्तवन किया गया है। वह रात्रि में स्वयं यहाँ आकर सेना का संक्षय किया करता है ।३। इसलिये तुम मेरी सहायता से तालन से मिलकर कृष्णांश के द्वारा शुभानन के द्वारा शुभानन शक्र के पुत्र के पास जाकर शीघ्र ही विजयी बनो,अन्यथा क्षय को प्राप्त हो जाओगे ।४। उस प्रकार का देवसिंह का कहा हुआ वचन सुनकर बलवान् ने भाई-मित्र आदि से समन्वित होकर यत्न किया ।५। युद्ध में परम प्रवीण पण्डित कृष्णांश के इक्कीसवें वर्षके प्राप्त हो जाने पर हय वाहन ने पोतों में सेना को निवेषित किया ।६। उस महान बलवान ने आधी सेना वहीं पर स्थापित की थी। उस आधी सेना के साथ वह कृष्णांश दक्षिण हो गया ।७।

हयरूढाश्च ते शूराः सर्वे युद्धसमन्विताः ।
कपाटं दृणमुद्घांटय नगरान्तमुपातययुः ।८
हत्वा ते रक्षिणः सर्वाल्लिठयित्वा पुल्लं शुभम् ।
रिपोर्दुर्गं समासाद्य चक्रुः शत्रोर्महाक्षयम् ।९
राज्ञोऽन्ता परमागत्य कृष्णांशो बलवत्तरः ।
ददर्श सुन्दरी बाला पद्मिज पद्मलोचनाम् ।
सप्तालिभिर्युतां रम्यां गीतनृत्यविशारदाम् ।१०
बलाद्दोलां समारोप्य लुंठयित्वा रिपोर्गृहम् ।
जगाम शिविरे तस्मिन्यत्र जातो महारणः ।११
बलखानिस्तु बलवान्देवतालनसंयुतः ।
जघान शात्रवी सेनामिन्दुलास्त्रेण पालिताम् ।१२
सुखवर्माणमागत्य सेनाध्यक्ष रिपोः सुतम् ।
सर्वतस्तं स्वकीयास्त्रैर्जघ्नुस्ते मदविह्वलाः ।१३
हते तस्मिन्महावीर्ये जयन्तः क्रोधमूर्च्छितः ।
सेनामुज्जोवयांचक्रे शक्रपुत्रः प्रतापवान् ।१४

हयों पर जो थे शूर-वीर वे सभी युद्ध समन्वित थे। उन्होंने दृढ़ कपाट को खोल कर वे फिर नगर के अंतमें प्राप्त हो गये थे ।८। उन्होंने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहाँ से समस्त रक्षियों को मार कर उस शुभ पुर को लूट कर रिपु के दुर्ग में पहुँच गये और फिर उन्होंने शत्रु का महान क्षय किया ।६। बलवान् कृष्णांश ने राजा के अन्तःपुर में पहुँच कर परम सुन्दरी पद्म के समान नेत्रों वाली पद्मिनी को देखा, जो कि अपनी सात सहेलियों से युक्त थी, अत्यन्त ही रम्य और गीत एवं नृत्य की विशारद थी ।१०। उसको बलपूर्वक दोला में समारोपित करके और शत्रु के घर को खूब अच्छी तरह लूट कर उस शिविर में चला गया जहाँ यह महायुद्ध हो रहा था ।११। बलवान बलखानि ने देवसिंह और तालन से युक्त होकर इन्दुल के अस्त्र के द्वारा जो पालित सेना थी, उस शत्रु की सेना का हनन कर दिया ।१२। सेना का अध्यक्ष शत्रु का पुत्र, जो सुखवर्मा था उसके पास जाकर सब ओर से उस नाद विह्वलों ने अपने अस्त्रों के द्वारा उसका भी हनन कर दिया । उस महान् वीर्यवाले के हत हो जाने पर जयन्त क्रोध से मूच्छित हो गया और उस प्रताप वाले शक्र के पुत्र ने सेना को उज्जीवित कर दिया ।१४।

श्यालं च सुखवर्माणं संजीव्य स्वगृहं ययौ ।
तत्र दृष्ट्वा जनान्सर्वान्विहुरीदनतपरान् ।१५
वस्मितः स ययौ गेह यथा पूर्वं तथाविधः ।
न ददर्श प्रियां तत्र मखोभिः सहितां मुने ।१६
आर्य्यसिंहगृह गत्वा पृष्ठवात्सर्भकारणम् ।
ज्ञात्वा स लठित गेहं शत्रं भिः शस्त्रकोविदैः ।१७
रुरौद सुभ्रशं वीरौ हा प्रिये मदविह्वले ।
दर्शयाद्य मुखं रम्यं त्वस्पविस्त्वां समुत्सुकः ।१८
इत्येव रोदन कृत्वा वडवोपरि संस्थितः ।
धनुस्तूणीरमादाय खड्गं शत्रुविमोहनम् ।
एकाकी स ययौ क्रुद्धो निशि यत्र स्थितो रिपुः ।१९
एतस्मिन्समये बीरो बलखानिर्महाबलः ।
दृष्ट्वा सुन्दरीं बाला विललाप भृशं मुहुः ।२०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हा इन्दुल महावीर हा मद्बन्धो प्रियं कर।
त्वद्योग्येयं शुभा नारी रूपयौवनशालिना ।२१

उसने अपने साले सुखवर्मा को संजीवित करके वह अपने गृह को चला गया। वहाँ अपने समस्तजनों को अत्यधिक रुदन से तत्पर देखा तब उसे बड़ा विस्मय हो गया और वह पूर्व की भाँति ही घर के अन्दर गया तो वहाँ उसने हे मुने! अपनी प्रिया को सखियों के सहित नहीं देखा ।१०-१६। आर्यसिंह के घर में जाकर उसने समस्त कारण पूछा और शत्रुओं के द्वारा जो कि शस्त्र चलाने के बड़े पण्डित थे, घर को लूटा हुआ जानकर वह रुदन करने लगा—हा मद्विह्वले! हा प्रिये! आज तू अपना सुरम्य सुख मुझे दिखला दे, यह तेरा पति तेरे मिलने के लिये अत्यधिक उत्सुक हो रहा है ।१७-१८। इस प्रकार से रुदन करके वह अपनी बड़वा पर संस्थित हो गया और उसने शत्रु के विमोहन करनेवाला खंगतथा धनुष और तूणीर ग्रहणकिया। वह एकाकी ही अत्यन्त क्रुद्ध होकर निशा के समय में वहाँ पहुँचा जहाँ कि शत्रु स्थित था ।१९। इसी समयमें महान बलवान वीर वलखानि उस सुन्दरी बाला को देख कर बार-बार बहुत विलाप करने लगा ।२०। हा इन्दुल! हा महावीर! हा मेरे बन्धो! हे प्रियकर तेरे योग्य यह शुभ नारी रूप-लावण्य से युक्त है ।२१।

दर्शनं देहि मे शीघ्रं गृहाणद्य शुभाननाम्।
इत्युक्त्वा मूर्च्छितो भूत्वा मानसे पूजयञ्छिवाम् ।२२
तस्मिन्काले च संप्राप्तः शक्रपुत्रो महाबलः।
जघान शात्रवी सेनां कृष्णांशेनैव पालिताम् ।२३
दृष्ट्वा सैन्यनिपातं च तालननो वाहिदीपतिः।
सिंहनाद ननादोच्चैः सिहिन्युपहि संस्थितः ।२४
न जयः सैन्यनाशेन तव वीर भविष्यति।
मां हत्वा जहि मत्सैन्वं योगिन्यालस्वरूपकः ।२५
इति श्रुत्वा वचस्तस्य शक्रपुत्रो भयङ्करः।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जघान पदये वाणन्स तु खड्गेन चाच्छिनत् ।
स्वभल्लेन पुर्वोवरो दंशयामास वक्षसि ।२६
इन्दुखे मूर्च्छिते तस्मिन्वडवा दिव्यरूपिणी ।
आकाशोपरि संप्राप्य जयन्तं समबोधयत् ।२७
तदा स वालस्त्वरितः कालासं चाप आदधे ।
तेन जातो महाञ्छब्दस्तालनः स ममार ह ।२८

तुम यहाँ आकर मुझे अपना दर्शन शीघ्र ही दो और आज शुभ मुख वाली को ग्रहण करो । यह विलाप भरे शब्दों को कह कर वह मूर्च्छित हो गया और मनमें शिवा की अर्चना भी कर रहा था।२२। उसी समय में महा बलवान शक्र (इन्द्र) का पुत्र भी वहाँ पहुँच गया था । उसने कृष्णांश के द्वारा सुरक्षित सेना का हनन कर दिया ।२३। अपनी सेना का निपात देखकर सेनापति तालन ने बड़े ऊँचे स्वर से सिंहनाद किया था जो कि उस समय में सिंहनी के ऊपर संस्थित था ।२४। उसने कहा—हे वीर ! इस सैन्य के नाश कर देने से तेरा जय कभी भी नहीं होगा-हे यौगिन ! वाल स्वरूप वाले ! मुझको पहिले मारकर तभी मेरी सेना का हनन कर ।२४। इन्द्र के पुत्र ने जो कि बहुत ही भयंकर था इस प्रकार के वचन को सुनकर हृदय में वाणों को मारा था किन्तु उसने अपने खंग से उनको काट दिया था । फिर वीर ने अपने भाले से वक्षःस्थल में चोट मारी थी ।२६। तब इन्दुल के मुर्छित हो जानेपर वह दिव्य रूप वाली वड़वा आकाश में ऊपर जाकर पहुँच गई और उसने जयन्त को सम्वोधित किया था । तब उस बालक ने शीघ्रगामी होकर चाप में कालास्त्र को धारण किया था। उससे महान शब्द समुत्पन्न हुआ और वह तालन मर गया था ।२७-२८।

मृते सेनापतौ तस्मिन्कृष्णांशो मदविह्वलः ।
नभोमार्गेण सम्प्राप्य जगर्ज्ज च मुहुर्मुहुः ।२९
इन्दुलः क्रोधाताम्राक्षस्त्वाग्नेयं शरमाददे ।
वह्निभूत नभस्तत्र स्वयोगेन महाबलः ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृत्वा शीघ्रं ययौ शत्रुं स तु वायव्यमादधे ।३०
स्वयोगेनैव कृष्णांश: पीत्वा वायव्यमुत्तमम् ।
पुनर्जगाम तत्पार्श्वं कलैक: स हरे: स्वयम् ।३१
तथाविध रिपुं दृष्टवा शक्रपुत्रो महाबल: ।
गंधर्वास्त्रं समादाय मोहनायोपचक्रमे ।३२
पुनर्योगबलेनैव तदस्त्रं संक्षयं गतम् ।
वारुण शीरमादाव तस्योपरि सदाक्षिपत् ।३३
स्वयोगेनैव कृष्णांशो जलं सर्वं मुखेऽकरोत् ।
एवं सर्वाणि चास्त्राणि पीत्वा पीत्वा पुन: ।३४
ययौ शीघ्रं प्रसन्नात्मा वाहुशालो यतेन्द्रिय: ।
इंदुलस्त तदाक्रुद्धोऽश्विनी त्यक्त्वा भुवि स्थित: ।
चर्म खगं गहीत्वाशु खंगयुद्धमचींकरत् ।३५

सेनापति उस तालन के मृत हो जाने पर कृष्णांश मद-विह्वाल हो गया और वह आकाश के मार्ग से जाकर बारम्वार गर्जने लगा था।१६। क्रोध से लाल नेत्र वाले इन्दुल ने आग्नेय अस्त्र का आधान किया था। उस महान् वलवान् ने अपने योग से वहाँ समस्त आकाश को भूत करके शीघ्र ही शत्रु के पास गया था और फिर उसने बायव्य अस्त्र का आधान किया था ।३०। कृष्णांश ने अपने योग से वायव्य का पान कर लिया था जोकि एक उत्तम अस्त्र था । तब हरि की ही एक कला का स्वरूप था स्वयं पुन: उसके पास गया था ।३१। महा बलनान् इन्द्र के पुत्र ने उस प्रकार के शत्रु को देखकर गंधर्वास्त्र लिया जो कि मोहन के लिये उपयोग किया ।३२। फिर योग बल से ही उसका अस्त्र सक्षय को प्राप्त हो गया फिर वारुण शर लेकर उसके ऊपर फैंका था ।३३। कृष्णांश ने अपने योग से ही उस सम्पूर्ण जल को मुख में कर दिया था । इस प्रकार उनके समस्त अस्त्रों को बार-बार पी-पी करके समाप्त कर दिया ।३४। फिर वह बाहुशाली प्रसन्न आत्मा वाला और मतेन्द्रिय इन्दुल उससमय क्रुद्ध होगया और उससे अश्विनीका त्यागकर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह भूमि में स्थित हो गया था। उसने शीघ्र ही चर्म और खंग ग्रहण करके युद्ध किया था।३५।

एतस्मिन्नंतरे प्राप्त देवाद्याः सर्वभूमिपाः।
दहशुस्तन्महद्युद्धं सर्वविस्मयकारणम्।३६
प्रातःकाले च संप्राप्ते बलखानिर्महाबलः।
प्रातः कालक रत्न जटाजिनसमन्वितम्।३७
श्रमेण कर्शितो वीरः शक्रपुत्रः प्रतापवान्।
बलखानेः पितुर्बन्धो शपथं कृतवान्स्वयम्।३८
स्त्रखगं नेव कृष्णांश शिरतस्तव हराम्यहम्।
नो चेमे दूषिता माता नाम्ना स्वर्णवती सती।
इत्युक्त्वा खगंमादाय ययौ शीघ्रं रुषान्वियः।३९
बलखानिस्तु तं ज्ञात्वा त्यक्त्वास्त्रं प्रेमकातरः।
पुत्रादिक मुपागम्य वचनं चेदमब्रवीत्।४०
हे इंदुभ महाभाग पितृमातृयशस्कर।
आह्लादप्राणहृश स्वर्णवत्यगमानस।४१
पूर्वं हत्या च मां वीर स्वपितृव्यं ततः पुनः।
तथैवोदयसिंहं च देवसिंह तथा कुलम्।
सुखी भव महावीर गेरे वै सुखवर्मणः।४२
इति श्रुत्वा वचस्तस्य ज्ञात्वा च स्वकुलं शिशुः।
त्यक्त्वा खगं पतित्वा च स्वपितृव्यस्य पादयो।
कृतवान्रोदनं गांयमपराधनिवृत्तये।४३

इसी बीच में देवादि समस्त भूमिपाल वहाँ प्राप्त हो गये थे। उन्होंने वह महान् सबको विस्मय का कारण स्वरूप युद्ध देखा।३६। प्रातःकाल के समाप्त होने पर महान् बली बलखानि ने जटा और अंजिन (मृगचर्म) से युक्त एक रम्य बालक को देखा था।३७। श्रम से अत्यंत कर्शित वीर एवं प्रतापवान् इन्द्र का पुत्र हो गया। उससे पिता के बंधु बलखानि की स्वयं शपथ की थी।३८। उसने कहा—हे कृष्णांश ! मैं अपने ही खंग से तेरा शिर काटूँगा नहीं तो नाम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से सती स्वर्णवती माता दूषित हो जायगी। इसतरह कहकर खंग लेकर शीघ्र ही रुषान्वित होकर चला गया था।३९। बलखानि ने उसे जान कर प्रेम से कातर होकर वस्त्र दिया और पुत्र के समीप में जाकर वह यह वचन बोला—।४०। हे इन्दुल ! हे महाभाग ! हे पिता और माता के यश को करने वाले ! तुम आल्हाद के प्राण सदृश हो और स्वर्णवती के अंग के समानहो।४१। पहिले तुम मुझे मारदो और फिर अपने पितृव्य कृष्णांश का वध करना। उसी प्रकार से उदयसिंह और देवसिंह तथा समस्त कुलका हनन करना। हे महावीर ! तुम वहाँ सुख वर्मा के घर में ही सुखमय जीवन बिताना। यह उसके वचन सुनकर उस शिशु ने अपने सम्पूर्ण कुलको समझकर अपना हाथ का खंग त्याग दिया था और वह फिर अपने चाचा के चरणों में गिर गया था। उसने अपने किये हुये अपराध की निवृत्ति के लिये बहुत अधिक रुदन किया था।४२-४३।

उवाच मधुरं वाक्यं श्रृणु तात मम प्रिय।
नारीयं दोषिता वेदैर्नृणां मोहप्रदायिनी।४४
देवो वा मानुषो वापि पन्नगो वापि दानवः।
आर्य्य नारीमयैर्बन्धनाय समुद्यतः।४५
सोहमाजमशुद्धस्य पितुराह्लदकस्य च।
गेहे जातो जयंतश्च शक्रपुत्रः स्वयं विभो।४६
पद्मिन्या जनित मोह गृहीत्वा ज्ञातवान्न हि।
क्षमस्व मम मन्दस्य शेषमज्ञानजं पितुः।४७
इत्युक्त्वा स पुनर्बालो रुरोद स्नेहकातरः।
सेनामुज्जीवयामास तालनं च महाबलम्।४८
गति श्रुत्वा वचस्तस्य कृष्णांशे वचन शिशोः।
परमानन्दमागभ्य हृदये तमरोपयत्।
उत्सव करयामास तत्र देशे जनेजने।४९

फिर वह मधुर वचन बोला—हे मेरे प्रिय तात ! मेरे वचन श्रवण कीजिये। नारी को वेदों ने दूषित बताया है। यह नरों को मोह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के प्रदान करने वाली होती है।४४। चाहे कोई देव हो या मनुष्य हो अथवा पन्नग हो किम्वा दानव हो, हे आर्य ! नारीमय जालों से तुरन्त बन्धन में आने के लिये समुद्यत हो जाया करते हैं।४५। वह मैं जन्म से लेकर परम शुद्ध पिता आह्लाद के गेह में समुत्पन्न शक्रका पुत्र जयन्त था हे विभो ! स्वयं पद्मिनी के द्वारा जनित मोह में फँसकर सब कुछ भूल गया। और मैंने यह कुछ भी नहीं जाना था पिता के विषय में जो कुछ मैंने अज्ञान वश होकर मन्द बुद्धिसे किया इन सबको अब क्षमाकर दीजियेगा ।४६-४७। इतना कहकर वह बालक फिर स्नेह से कातर होकर बड़े जोर से रो उठा। उसने सम्पूर्ण सेना को महान बलवान तालन को उज्जीवित कर दिया।४८। इन प्रकार के उस शिशु के वचन को कृष्णांश ने सुनकर परम आनन्द को प्राप्त कर उसे अपने हृदय से लगा लिया। फिर इस देश में और घर-घर तथा जन-जन में उत्सव कराया।४९।

आर्य्यसिंहस्तु तच्छ्रुत्वा नानाद्रव्यसमन्वितः।
ददौ कन्यां विधानेन पद्मिनीमिन्दुलाय वै।५०
शत हर्यास्तथा नानान्मुक्तामणि विभूषितान्।
कन्यार्थे तान्वदौ राजा जामात्रे बहूभूयणम्।५१
प्रस्थानमकरोत्तेषां स प्रेम्णा वाक्यगद्गदः।
ते तु सर्वे मवा युक्ताः स्वगेहं शीघ्रमाययुः।५२
उषित्वा मासमेकं तु तस्मिन्मार्गे भयानके।
कीर्तिसागरमासाद्य चक्रुस्ते वहुधोत्सवम्।५३
आह्लादस्तु प्रसन्नात्मा सुतं पत्नी समन्वितम्।
दृष्ट्वा विप्रान्समाहूय ददौ दानान्यनेक।५४
दशहासख्यनगरं सम्प्राप्तः स्वकुलैस्सह।
कृष्णांशस्य महाकीर्तिर्जाता लोके जने जने।५५
पृथ्वीराजस्तु तच्छ्रुत्वा विस्मयं परमं ययौ।
सा तु वै पद्मिनी नारी दुर्वासा शापमोहितः।५६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अप्सरस्त्वं स्वयं त्यक्त्वाभूमौ नारीत्वमागता।
द्वादशाब्दप्रमाणेन सोषिप्वा जगतीतले ।५७
यक्ष्मशा मरणं प्राप्य स्वर्गलोकम् पाययौ ।
नव मासान्कृतो नासस्तसाचाल्हादमन्दिरे ।५८

राजा आर्यसिंह ने समस्त वृत्तांत श्रवण करके अनेक भाँति के द्रव्यों से समन्वित होकर उस पद्मिनी कन्या का विधि-विधान कि मुक्ता और मणियों से समलङ्कृत थे राजा ने कन्या के अर्थ में उनका दान कर दिया और जामाता के लिये बहुत-से भूषण दिये थे। ।५५। फिर उसने प्रेम से गद्गद् वाक्य वाला होकर उनका प्रस्थान अर्थात् विदाई की। वे सब भी आनन्द से युक्त होकर शीघ्र अपने घर को आ गये थे ।५२। एक मास के समय तक उस परम भयानक मार्ग में निवास करते करते कीर्ति सागर में आकर उन्होंने बहुत बड़ा एक उत्सव किया ।५३। आल्हाद बहुत ही प्रसन्न मनवाला होगया जब कि उसने अपने पुत्र इन्दुलको पत्नीसे युक्त देखाथा।'फिर उसनें सुयोग्य ब्राह्मणों को बुलाकर उन्हें अनेक प्रकार के बहुत से दान दिये ।५५। इसके पश्चात् वह अपने दशहाराख्य नगर को अपने कुल के साथ प्राप्त हुआ था। तब से जो कृष्णांश था, उसकी कीर्ति बहुत अधिक लोक में जन-जन में छा गई थी ।५५। जब राजा पृथ्वीराज ने यह समाचार सुना तो उसको इसका अधिक विस्मय हुआ था। वह पद्मिनी नारी जो थी दुर्वासा के शाप से मोहित हो गई और उसने उस शाप के कारण से ही अपने अप्सरापन का स्वयं त्याग करके इस भूमण्डल में नारीत्व का रूप धारण किया था। दश वर्ष के प्रमाण पर्यन्त वह इस जगती तल में निवास करके राजयक्ष्मा रोग से मृत्यु प्राप्त करके फिर स्वर्ग लोक को चली गई थी।उसने उस आह्लाद के घर में केवल नौ ही मास पर्यन्त निवास किया ।५६-५७।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चन्द्र भट्ट का भाषा ग्रन्थ

कृष्णांशे च गृहं प्राप्ते च विवाहिते ।
महापतिस्सदा दुःखी देहलीं प्रति चागमत् ।१
वृत्तान्त च नृपस्याग्रे कथयित्वा स तारकः ।
पर विस्मतमापन्नः कृष्णांशचरितं प्रति ।२
एतस्मिन्नंतरे मन्त्रीं चन्द्रभट्ट उदारधी ।
भूमिराज वचः प्राहः श्रृणु पार्थिवसत्तम ।३
मया चाराधिता देवी वैष्णवी विश्वकारिणीः ।
त्रिवर्षान्ते च तुष्टाभूद्वरहा भवसारिणीं ।४
तया दत्तं शुभं ज्ञान कुमतिध्वसकारकम् ।
ततोऽहं ज्ञानवान्भूता कृष्णांश प्रति भूपते ।
चरिभं वर्णयामासातस्य कल्मषनाशनम् ।५
इत्युक्त्वा स च शुद्धात्मा ग्रन्थ भाषानय शुभम् ।
माहात्म्यं देविभक्तानां श्रावयामास व सभाम् ।६
तच्छ्रुत्वा भूमिराजस्तु विस्मितश्चाभवत्क्षणात् ।
महापतिस्तदां प्राह दिव्याश्वलदर्पितः ।
उदवो नातबलवांन्यस्यैवं वर्णिता कथा ।७

इस अध्याय में राजा पृथ्वीराज के समक्षमें चन्द्रभट्टके द्वारा भाषा ग्रन्थ का वर्णन किया गया है । श्री सूतजी ने कहा—कृष्णांश के घर में प्राप्त हो जाने पर इन्दुल के विवाहित हो जाने पर महापति सदा दुःखी होकर देहली के प्रति आया था ।१। उस तारक ने सब वृत्तांत नृप के आगे कहकर कृष्णाँश में चरित्र के प्रति परम विस्मय को प्राप्त हुआ था ।२। इसी बीच में मन्त्री उदार बुद्धिवाला चन्द्रभट्ट ने भूमिराज के प्रति यह यचन कहा है—पृथिवी पर परम श्रेष्ठ मुनि थे ।३। मैंने इस विश्व की रचना करने वाली देवी की आराधना है । वह देवी तीन वर्ष के अन्त में वरदान देने वाली और समस्त भयों का हरण करने वाली प्रसन्न हुई ।४। उसने मुझे कुमति के ध्वंस करने वाला

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुभ ज्ञान प्रदान किया। हे भूपते ! तभी से मैं उस कृष्णांश में ज्ञान् रखने वाला हूँ। उसने सम्पूर्ण कल्मषों का विनाश कर देने वाला उसके चरित्र का वर्णन किया था।५। इतना कहकर परम शुद्ध आत्मा वाले उसने एक भाषामय शुभ ग्रन्थ उस सभा में देवी के भक्तों का माहात्म्य सुनाया था।६। यह श्रवण करके भूमिराज क्षण भर के लिए परम विस्मय से युक्त हो गया था। उस समय महीपति ने कहा—दिव्य अश्व केवल अत्यन्त दर्प वाला, उदय नाम वाला बहुत ही बलवान था जिसकी यह इस प्रकार कथा वर्णित की गई है।७।

चत्वारो वाजिनो दिव्या जलस्थलखगाश्च ते।
शीघ्रं तांश्च समाहृत्व स्वयं भूप बली भव।८
इति श्रुत्वा स नृपतिः श्रुतवाक्यविशारदम्।
आहूय कुन्दनमल प्रेषयामास सत्वरम्।९
महावती समानत्य स दूतो भूपति प्रति।
उवाच वचनं प्रेम्णा महीराजस्य भूपतेः।१०
वाजिनस्ते हि चत्वारो दिव्यरूपाः शुभप्रभाः।
दर्शनार्थे तव वधूर्वेला नाम ममात्मजाः।११
तयाहूतान्हवान्भूप देहि मे विस्मयं त्यज।
नो चेद्वेलाग्निः सर्वे क्षयं याम्यन्ति सैन्यपाः।१२
इति श्रुत्वा वचो घोरं ज भूपो भयकातरः।
आल्हादादीन्समाहूय वचण प्राह नम्रधीः।
हयान्स्वान्मुदा देहि मदीयं वचनं कुरु।१३
इति श्रुत्वा स आल्हादोध्यात्वा सर्वमयो शिवाम्।
उवाच मधुरं वाक्यं शृणु भूप शिवप्रिय।१४

चार अश्व बहुत ही दिव्य थे जो जल-स्थल और आकाश में गमन करने वाली शक्ति रखते हैं। हे भूप ! आप शीघ्रही उनको लाकर स्वयं सबमें बलवान हो जाओ।८। इतना सुनकर उस राजा ने श्रुतवाक्य के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परम प्रवीण पण्डित कुन्दमल को बुलाकर शीघ्र ही भेज दिया ।९। महावती में पहुँचकर दूत ने श्रीपति के पति महाराज भूपति से वचन बड़े ही प्रेम के साथ कहे थे ।१०। चार अश्व दिव्य रूप वाले और शुभ कान्ति वालेहैं । उनका दर्शन करनेके लिए आपकी वधू और मेरी पुत्री वेला नाम वाली ने उन्हें बुलवाया है । उसके द्वारा आहूत उन अश्वों को हे भूप ! मुझे प्रदान कर दीजिये और इसमें कुछभी विस्मय न करें यदि आप ऐसा नहीं करेंगे तो वेला की अग्नि से समस्त सेनापति क्षय को प्राप्त हो जायेंगे ।११-१२। इस प्रकार के उस दूत के द्वारा कहे हुये वचनों को सुनकर, जो कि अत्यन्त ही घोर थे, राजा भय कातर हो गया था और आल्हाद आदि सबको बुलाकर नम्र बुद्धि वाला होकर कहा-आप लोग अपने अपने अश्वों को आनन्दपूर्वक दे दो और यह मेरा वचन इस समय मान लो ।१३। इस प्रकार के भूप के आज्ञा से युक्त वचनों को सुनकर आल्हाद ने सर्वमयी शिवा का ध्यान किया था और कहा—हे शिवप्रिय राजन ! आप यह वाक्य श्रवण कर लीजिए ।१।

यत्रः नः संस्थिताःप्राणास्तत्र ते वा जिनःस्थिताः ।
न दस्यामो वयं राजन्सत्यं सत्यं च चान्यथा ।१५
इति श्रुत्वा वचस्तस्य राजा परिमलो बली ।१६
शपथं कृतवान्घोरं शृण्वतां बलशालिनाम् ।
भोजनं ब्रह्ममांसस्य पानीयं गोसुजोपमम् ।१७
शय्या स्वमातृसदृशी ब्रह्महत्योपमा सभा ।
मम राष्ट्रे च युष्माभिर्वासः पापमयो महान् ।१८
इति श्रुत्वा तु शपथं देवकीं शोकतत्परा ।
चकार रोदनं गाढं सगेहजनविग्रहा ।१९
पंचविंशाब्दके प्राप्ते कृष्णांशे योगतत्परे ।
भाद्रशुक्लचतुर्दश्यां तत्गेहाद्धर्मतत्पराः ।२०
निर्ययुः कान्यकुब्जं ते जयचन्द्रेण पालितम् ।
स्वर्णवत्या पुष्पवत्या सहिताश्चियत्ररेखया ।२१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आल्हाद ने कहा—जहाँ पर हमारे प्राण हैं वहाँ पर ही वे अश्व भी स्थित हैं। हे राजन् ! हम उन्हें नहीं देंगे। वह बिल्कुल सत्य है और पूर्ण सत्य है इसमें अन्यथा कुछ भी नहीं होगा ।५। इस प्रकार का आल्हाद का दिया हुआ उत्तर वचनसुनकर वलवान राजा परिमल ने समस्त बलशालियों के श्रवण करते हुए एक परम घोर शपथ की थी कि आप लोगों को मेरे राष्ट्र में रहकर भोजन करना ब्राह्मण के माँस के तुल्य है और जल पान करना गौ के रक्त पान के समान है, शयन करना माता की शय्या पर शयन करने की भाँति है और सभा ब्रह्म हत्या के सदृश है, सभी प्रकार से मेरे राज्य में तुम लोगों के द्वारा किया गया वास महान पाप से परिपूर्ण होगा ।१४-१८। यह घोर परिमलके द्वारा दिलाई हुई शपथ का श्रवण करके देवकी शोक में तत्पर हो गई और गेह तथा जन विग्रह के साथ गहरा रुदन करने लगी थी ।१९। योग में तत्पर कृष्णांश के पच्चीस वर्ष की अवस्था प्राप्त होने पर भाद्र पदमासको शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी में उसके घर में अपने तत्पर ये सभी निकल गए थे और कान्य कुब्ज देश में जयचन्द्र के द्वारा रक्षा की गई थी। सुवर्णवती पुष्पवती और चित्ररेखा के सहित सब थे।२०-२१।

इन्दुलः प्राययौ शीघ्रमयुताश्ववलैस्सह ।
करालं हयमारुह्य पंचशब्दं च तत्पिता ।
कृष्णांशो बिंदुलारूढो देवकीमनुसंययौ ।२२
त्यक्त्वा ते भूपतेग्राम सर्वसंपत्समन्वितम् ।
पथि व्यहमुषित्वा ते जयचन्द्रमुपाययुः ।२३
नत्वां तं भूपति प्रेम्णा गदित्वा सर्वकारणम् ।
उषित्वा शीतलास्थाने पूजयामासुरम्बिकाम् ।२४
जयचन्द्र स्तु भूपालो देवसिंहेन वर्णितः ।
तेभ्यश्च न ददौ वृत्ति भगा परिमलाज्ञया ।२५
कुंठितो देवसिंहस्तु गत्वा कृष्णांशमुतमम् ।
उदित्वा कारणं सर्वं श्रुत्वा रोषमादधौ ।२६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वरितं बिन्दुलारूढ़ो हयपंचशतात्तवृः ।
लुंठयामास नगर पालितं लक्षणेन तत् ।२७
हृष्टवांतं लक्षणो वीरो हरितनः पृष्ठमास्थितः ।
शरेण ताडयमासकृष्णां सहृदयं दृढम् ।२८

इन्दुल भी सहस्र अश्वों के बल के साथ शीघ्र कराल नामक अश्व पर समारूढ़ होकर तथा उसके पिता पंच शब्द पर सवार होकर चले गये थे। कृष्णांश अपने विन्दुल घोड़े पर समारोहण कर देवकी के पीछे-पीछे चला गया था ।२२। उन सबने उस परिमल भूपति के ग्राम को जो सब प्रकार की सम्पत्तियों में समन्वित था त्याग करके मार्ग में तीन दिन निवास करके वे सब राजा जयचन्द्र के समीप में प्राप्त हो गये थे ।२३। उन्होंने प्रेम के साथ उस राजा को प्रणाम करके त्याग करके समस्त कारण बता दिया था । वहाँ पर शीतलादेवी के स्थान में निवास करते हुए उन्होंने अम्बिकादेवी की पूजा की थी ।२४ देवसिंह के द्वारा राजा जयचन्द्र का स्तवन किया गया था। राजा परिमल की आज्ञासे उनके लिये उसने कोई भी वृत्ति नहीं दी थी ।२५। देवसिंह वहुत ही कुण्ठित होकर कृष्णांश के समीप पहुंचा था जो कि अति उत्तम था । उसने सव कारण वताया तो सुनकर उसे बहुत ही क्रोध आ गया था शीघ्र ही वह बिन्दुल पर समारूढ़ होकर और पाँच सौ अश्वों से युक्त होकर लक्षण के द्वारा पालित नगर को उसने लूट लिया था ।२७। वीर लक्षण ने वहाँ उसे देखकर व हाथी की पीठ पर सवार होकर आया और उसने अपने शर से कृष्णांश के हृदय में दृढ़ता से ताड़न किया था ।२८।

निष्फलंत्वं गतो बाणो विष्णुमन्त्रेण प्रेरितः ।
बिस्मतः स तु भूपालो वाहनात्भूतिमागतः ।२६
नत्वा तच्चरणौ दित्यौ कुलिशांदभिरन्वितौ ।
तुष्टाव दंडबद्भावा गद्गद् गिरा ।३०
वैष्णवं विद्धि मां स्वममिन्विष्णुपूजनतत्परम् ।
जाने हं त्वां महाबाहो कृष्णशक्त्वतारकम् ।३१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वहते को हि मे वाणं निष्फलं कुरुते भुवि।
क्षमस्व मम दौरात्म्यं नाथ ते मायया कृतम् ।३२
इत्युक्त्वा तेन सहितो जयचन्द्रं महीपतिम्।
गत्वा तं कथयामास यथा प्राप्तः पराजयम् ।३३
नृपस्तयोः परीक्षार्थं यौ तु छायाविमोहितौ।
गजौ कुवलयापीडौ त्यक्तावाञ्छीतयास्थले ।३४
तदाल्हादोदयौ वीरौ गृहीत्वा तौ स्वलीलया।
चकृषतुलार्वंत्पुच्छे क्रोशमात्रं पुनः पुनः ।३५

किन्तु वह कृष्ण मन्त्र के द्वारा उसका प्रेरित किया हुआ बाण विल्कुल ही निष्फलता को प्राप्त हो गया था। तब तो यह भूपाल अत्यन्त विस्मत होकर भूमि पर वाहन से उतर आया था ।२६। फिर उसने पुलिश आदि दिव्य लक्षणों से समन्वित उसके चरणों में प्रणाम किया और भूमि में दण्ड की भाँति पड़कर अपनी गद्गद् वाणी के द्वारा लक्षण ने उसकी स्तुति की थी ।३०। लक्षण ने कहा-हे स्वामिन ! आप मुझको भी सर्वदा भगवान विष्णु की पूजा में तत्पर रहने वाला वैष्णव ही जानें। हे महाबाहुओं वाले ! मैं अब आपको पहिचान गया हूँ कि आप कृष्ण शक्ति के ही अवतार वाले देव हैं ।३१। आपके बिना इस भूमण्डल में अन्य कोई नहीं है जो मेरे इस वाण को निष्फल कर देवे। हे नाथ। मेरी इस दुरात्मा को अब आप क्षमा कर देवें जो कि मैंने आपकी ही माया से मोहित होकर आपके साथ की है ।३२। इतना कहकर वह उसी कृष्णांश के साथ राजा जयचन्द्र के पास गया और उससे सब वृत्तांत वह सुनाया था कि किससे उसकी पराजय वहाँ युद्ध में हुई थी ।३३। राजा ने उन दोनों की परीक्षा के लिए उस शीतलाके स्थल में दो कुवलय पीड़ हाथियों को जो कि छायाके विमोहित थे छोड़ दिया था ।३४। उस समय आल्हाद और उदय-आदि वीरों ने उन दोनों को अपने लीला से ही ग्रहण कर लिया था और वलपूर्वक बार-बार एक कोश पर्यन्त पूँछ पकड़कर उन्हें खींच लिया था ।३५।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृतो कुवलयांपीठो दृष्टवा राजा भयातुरः ।
ददौ राजगृह ग्रामं ययौरथे प्रसन्नधीः ।३६
इषश्ल्के तु संप्राप्ते लक्षणो नाम वै बलो ।
नृपाज्ञया ययौ शीघ्रं तैश्च दिग्विजयं प्रति ।३७
सप्तलक्षबलस्साद्धं ताखद्यैश्च संयुतः ।
वाराणसी पुरी प्राप्य रुरौध नगरी तदा ।३८
रुद्रवर्मा च भूपालौ गोढ़वंशयशस्करः ।
पंचायतैः स्वसेन्यैश्च साद्धं युद्धार्थमाप्तवान् ।३९
याममात्रेथतं जित्वा पोठशाब्दस्य वै करम् ।
कोटिमुद्रामुयं प्राप्य जयचन्द्राय चार्पयत् ।४०
मागधेशं पुर्नजित्वा नाम्ना विजयंकारिणम् ।
विश यब्दकरं प्राप्य स्वभूपाय समर्पयत् ।४१
पञ्चकोटोश्व वै मुद्रा राजतस्य पुनर्ययौ ।
अङ्ग देशपति भूप मातावर्माणमुत्तमम् ।४२
सैन्यायुतयुतं जित्वा विंशत्यब्दस्य वै करम् ।
कोटिमुद्राश्च सन्प्राप्य स्वभूपाय समर्पयत् ।४३

ये दोनों कुवलयापीड़ हाथी मर ही गये थे । इसे देखकर राजा बहुत अधिक भय आतुर हो गया था । तब तो राजा ने परम प्रसन्न होकर उन दोनों के लिये राजगृह नामक ग्राम दे दिया था । ।३६। अश्विनमास के शुक्ल पक्ष के सम्प्राप्त होने पर लक्षंण नाम धारी बलवान ने राजा की आज्ञा से उनको साथ लेकर दिग्विजय करने के लिये शीघ्र प्रस्थान किया था ।३७। सात लाख सेना के साथ और तालन आदि से संयुत होकर वे वाराणसी पुरी में पहुँचे और वहाँ जाकर समस्त पुरी को अवरुद्ध कर लिया अर्थात् घेर लिया ।३८। वहाँ पर रुद्ध वर्मा नाम वाला राजा था जोकि गौड़ वंशके यशको बढ़ाने वाला था । वह पचास हजार अपनी सेना के साथ युद्ध करने के लिए प्राप्त हुआ था ।३९। उसको एक ही प्रहर में उन्होंने जीत-कर सोलह वर्ष का कर एक करोड़ मुद्रा के रूप में प्राप्त करके राजा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जयचन्द्र के अर्पण कर दिया था ।४। फिर मगध के राजा को जीतकर बीस वर्ष का कर और पाँच करोड़ मुद्रा फिर राजा को दी थी । इसके अनन्तर अङ्ग देश के स्वामी परम श्रेष्ठ माया वर्मा भूप को जो कि दश सहस्र से युक्त था, जीतकर उससे बीस वर्ष का कर एक करोड़ मुद्राएँ प्राप्त की थी और वे सब भी अपने राजा के लिये लाकर समर्पित करदी थीं ।४२-४३।

वंगदेशपति वीरो लक्षणो वै युतश्च तैः ।
लक्षसैन्यभूतं भूपं कालीवर्माण मुत्तपम् ।
अहोरात्रेणतं जित्वा महायुद्धेन लक्षणाः ।४४
विंशत्यब्दकर प्राप्य कोटि स्वर्णमयं तदा ।
प्रेषयायास भूपाय ययचन्द्राय वै मुदा ।४५
उष्ट्रदेशं ययौ धीरः पालितं तैर्महः बलैः ।
धोयीकविस्तत्रनृपो लक्षसैन्यसमन्वितम् ।४६
जगन्नाथसञ्ज्ञायां प्राप्तस्तैश्च सार्द्धं रणोन्मुखे ।
तयोश्चासीन्महद्युद्ध तुमलं रोमहर्षणम् ।
अहोरात्रप्रमाणेन कृष्णांशेन जितो नृपः ।४७
विंशत्यब्दकरं सर्वं कोटिस्वर्णसमन्वितम् ।
सम्प्राय प्रेषयामास कान्यकुब्जाधिपाय वै ।४८
पुण्ड्रदेशं ययौ वीरो लक्षणा वलवत्तरः ।
नृपं नागपतिं नाम पंचायुतबलैर्युतम् ।
दिनमानेणत जित्वा कोटिमद्रा गृहातवान् ।४९

फिर वीर लक्षण उन सबके साथ वङ्ग देश के पति राजा काली वर्माके पास पहुँच गये जो कि एक उत्तम भूप था और एकलाख सेनासे समन्वितथा । लक्षणने उसके साथ महायुद्ध कियाथा और एक अहोरात्र में उसको जीत लिया था ।४४। उस समय वहाँ से भी बीस वर्ष का इकट्ठा कर जो एक करोड़ स्वर्ण मुद्राएँ थी प्राप्त करलीं और बड़ी प्रसन्नता से वे सभी राजा जयचन्द्रके पास भेज दी गई थी ।४५। फिर वह वीर उष्ट्रदेश अर्थात आन्ध्र या उत्कल देश में गया था जोकि महल बलवानों द्वारा सुरक्षित था । वहाँ पर धोयी कवि नाम धारी भूप था

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और एक लाख सेना से समन्वित था ।४६।वह जगन्नाथ का स्वामी की आज्ञा से उन सबके साथ युद्ध में सम्मुख प्राप्त हुआ था । दोनों का बड़ा भयानक तुमुल युद्धहुआ था जो कि अत्यन्त रोमाञ्चकारी था उस राजा को भी कृष्णांश ने सिर्फ एक अहोरात्र में जीत लिया था ।४७। उससे भी बीस वर्ष का एक-एक करोड़ स्वर्ण समन्वित धन प्राप्त किया था उसे भी कान्य कुब्ज देश के स्वामी राजा जयचन्द्र के लिये प्रेषितकर दिया था ।४८। फिर अधिक बलवान लक्षण भी पुण्ड्र देश में पहुंचा था वहाँ पर नागपति नाम वाला राजा था जो कि पचास हजार सेना की शक्ति से समन्वित था । उसे एक दिन ही में पराजित करके एके करोड़ का कर उसे भी ग्रहण किया था ।४६।

1252

महेन्द्रगिरमागत्य नत्वात भार्गवं मुनिम् ।
नतो नित्य ते सर्वे नेत्रपालपुरं ययुः ।५०
योगसिंहस्तदागत्य कृष्णांश प्रति भार्गव ।
कोटिमुद्रा ददौ तस्मै सप्तरात्रबसतत् ।५१
वीरसिंहपुरं जग्मुस्ते वीरा मदवत्तराः ।
रुरुधुर्नगरीं सर्वां हिमतुङ्गोपरि स्थिताम् ।
पालितां गोरखख्येन योगिना भक्तकारणात् ।५२
भूपानुजः प्रवीरश्च सैन्यायुतसमन्वितः ।
कृतवान्वारुण युद्धं लक्षणस्यैव सेनया ।५३
प्रत्यहं बलवान्छरी हत्वा शूरसहस्रकम् ।
सायंकाले गृहं प्राप्य योगिनं तमपूजयत् ।५४
पूजनात्स प्रसन्नत्मा सैन्यम् ज्जीव्य भूपतेः ।
दत्वा गजवलं तेभ्यः पुनर्योग करोति वै ।५५
सार्द्धं मासो गतस्तत्र युद्धयतां बलशालिनाम् ।
तदा ते तु निरुत्साह देवसिंह तमब्रुवन् ।५६
विजयो नः कथं भूप ब्रूहि मस्तभत्वमग्रतः ।
इदि श्रुत्वा सहोवाच शृण कृष्णांश मे वचः ।५७

पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान ... तिथी........ पु०सं०........ भारती पुस्तकालय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योगिन गोरखं नाम पराजित्य स्वनृत्यतः।
पुनर्युद्धं करुत्वं वै ततो जय मवास्यहि ।५८

इसके अनन्तर वे सब महेन्द्र गिरपर आ गये थे। वहाँ उन्होंने भार्गव मुनि को प्रणाम किया था और वहाँ से लौटकर वे सब नेत्रपाल के पुर को चले गये थे है ।५०। भार्गवको उस समय योगसिंह ने आकर कृष्णांश की एक करोड़ मुद्रायें दी थीं और सात रात्रि तक वहाँ उनका निवास भी कराया था ।५१। इसके पश्चात अधिक मद से पूर्ण वे सब बीर वीरसिंह पुरको चले गये थे। यहाँ हिमतुङ्गपर स्थित समस्त नगरी को उन्होंने घेर लिया था जो कि गोरखगाथ योगी के द्वारा सुरक्षित थी और उसका कारण भक्त का होना ही था ।५२। वहाँ के राजा का छोटा भाई प्रवीर था जो दश सहस्र सेना से समन्वित था। उसने लक्षण की ही सेना के साथ वहुत ही दारुण युद्ध किया। उस बलवान शूर ने प्रतिदिन एक सहस्र शूरों का हनन किया वह सायंकाल में घर पर परम प्रसन्न होकर राजा की मृत सेना को पुनः उज्जीवित कर देता था और उन्हें एक हाथी का बल भी प्रदान करता। इस तरह वह पुनर्योग किया करता ।५५। इस तरह वहाँ बलशालिनी को युद्ध करते हुए डेढ़ मास का समय व्यतीत हो गया था। तब तो वे अत्यन्त निरुत्साह होकर देवसिंह से कहने लगे ।५६। हे भूप ! आप ही वतलाई और तत्व से समझिए कि इस युद्ध में हमारी विजय कैसे हो सकती है। इसको सुनकर उससे कहा—हे कृष्णाँश ! हमारी बात सुनो, तुम अपने नृत्य की कला से योग गोरख को पराजित करो और फिर युद्ध करो तब तो तुम जय प्राप्त कर सकोगे ।५७-५८।

इत्युक्तास्ते हि कृष्णाद्याः योगमयं वपुः।
स्थापयित्वा रणे सेनां पालितां लक्षणेन वै ।५९
प्रातः काले ययुरते वै मन्दिरं तस्य योगिनः।
कृष्णांशो नर्तकश्चासोद्वेणुविशारदः ।६०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवसिंह मृदङ्गाढ्यो वीणाधारी च तालनः ।
कांस्यधारो तदाल्हादो जगौ गीतां सनातनीम् ।६१
तदर्थ हृदये कृत्वा गोरखस्सर्वयोगवान् ।
वर वृणुत तनाहं ते तच्छ्रुत्वाऽब्रू बन्वचः ।६२
नमस्यामो व्यन्तुभ्यं नदि देयो वरस्त्वया ।
देहि संजीविनीं विद्यामाल्हादाय महात्मने ।६३

इस प्रकार से वे सब कृष्णाँश आदि कहे गये थे और इस कहने के पश्चात् उस सबने योगमय वपु धारण किया था । युद्ध स्थल में सेनाको स्थापित कर दिया जो लक्षण के द्वारा पूर्णतः रक्षित की गई ।५६। प्रातःकाल में वे सब योगी के मन्दिर में गये । कृष्णाँश नृत्य करने वाला था तथा वह वेणु वाद्य का विशारद भी था अर्थात् वंशी बहुत ही अच्छी बजाने वाला था ।६०। देवसिंह मृदङ्ग से युक्त और तालन वीणा के धारण करने वाला था । आल्हाद कांस्य बजाने वाला था और उसने सनातनी गीता का गान किया था ।६१। सब प्रकार के योग का ज्ञाता जो गोरख योगी था, वह उस सनातनी गीता के अर्थ को अपने हृदय में समझता जाता था । वह परम प्रसन्न हो गया और उनसे बोला-वरदान माँग लो । यह उसका बचन सुनकर उन्होंने कहा—हम सब आपको नमस्कार करते हैं । यदि आप प्रसन्न होकर हमको वरदान देना चाहते हैं तो इस महान आत्मा वाले आल्हाद के लिए संजीवनी विद्या प्रदान कर दीजिये ।६२-६३।

इतिश्रुत्वा हृदि ध्यात्वा तानुवाच प्रसन्नधीः ।
विद्यां संजोविनी तुभ्यां वर्षमात्रं भविष्यति ।
तत्पश्चान्निफलोभूयागमिष्यति मदन्तिकम् जगत् ।६४
अद्यप्रभृति भो वीर मया त्यक्तमिदं जगत् ।
यन्त्र भर्तृहरिः शिष्यस्तत्र गत्वा शये ह्यहम् ।६५
दत्युस्त्वान्तर्हितो योगी जामुस्ते पर्णमूर्द्धनि ।
जित्वा प्रवीरसिंह च वीरसिंह तथैव च ।६६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हत्वा तस्यायुतं सैन्यंलुण्ठयित्वा च ततगृहम् ।
कृत्वा दासपयं भूपं लक्षणः प्रययौ मुदा ।६७
कोमलं देशमागत्य जित्वा तस्य महीपतिम् ।
सैन्यायुतं सूर्यधरं करयोग्यमचीकरम् ।६८
षोडशाब्दकरं प्राप्य मुद्राकोटियुतं मुदा ।
नैमिषारण्यमागम्य तत्रै षु स्नानतत्पराः ।६६
होलिकाया दिने रम्ये लक्षणो बलवत्तरः ।
दत्वा दानादि विप्रेभ्यौ महोत्सवकारयत् ।७०

यह श्रवण करके और हृदय में ध्यान करके वह प्रसन्न बुद्धि वाला गोरख उनसे बोला—यह संजीवनी विद्या तुमको एकवर्ष भर की होगी इसके पश्चात यह निष्फल हो जायगी और फिर यह मेरे पास ही लौट कर आ जायगी ।६४। हे वीर ! आज से मैंने इस जगतकात्यागकर दिया है अब जहाँ पर मेरा शिष्य भर्तृहरि है । वहाँ जाकर मैं शयन करूँगा ।६५। इतना उन सबसे कहकर वह योगी अन्तर्धान होगया और वे सब रणस्थल में आ पहुंचे थे । फिर उन्होंने प्रवीरसिंह और वीर सिंह को जीतकर उसकी दस हजार सेना का वध कर दिया और उसने सम्पूर्ण घरको लूट लिया । उस राजाको अपना पूर्णदास बनाकर लक्षण वहाँ से बड़ी प्रसन्नता के साथ रवाना होगया ।६६-६७। फिर इसके पश्चात् कौशल नामक देश में गया और यहाँ के महीपति को जीतकर एक अमृत सेना से युक्त सूर्यधर को कर देने योग्य बना दिया ।६८। वहाँ से सोलह वर्ष का इकट्ठा कर कोटि मुद्रा प्रसन्नता से प्राप्त की । फिर नैमिषारण्य में आकर वहाँ स्नान में तत्पर होकर निवास करने लग गये ।६६। होली के सुन्दर दिन बलवान लक्षण ने महोत्सव कराया और ब्राह्मणों को बहुत से दान दिये थे ।७०।

तदा वयं च मुनयः समाधिस्ताश्च भूपतिः ।
यदा स लक्षणः प्राप्तो नैमिषारण्यमुत्तमम् ।७१
स्नात्वा सर्वाणि तीर्थानि सन्तप्य द्विजदेवताः ।
कान्यकुब्जपुरं जग्मुचैत्रकृष्णाष्टमीदिने ।७२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इति ते कथितं विप्र यथा दिग्विजयोभवत् ।
श्रृणु विप्र कथा बलखानिर्यथा मृतः ।७३
मार्गकृष्णाय सप्रम्यां भूमिराजो महाबलः ।
महपतेश्च वार्भयेन सामत प्राहं निर्ययः ।७४
मयाश्रुतस्ते तनयः शारदाबरदर्पितः ।
रक्तबीजत्वमापन्नस्तं मे देहि कृपां कुरु ।७५
इत्युक्तस्स स सामन्तस्तेन राज्ञेव सत्कृतः ।
चामुंडि नाम तनयं समाहूगाब्रवीदिदम् ।७६
पुत्र त्वं नृपतेः कार्य.सदा कुरु रणप्रिय ।
इति श्रुत्वा पितुर्वाक्यं स वे राजानमब्रवीत् ।७७
देह्याज्ञां भूपते मह्यं शीघ्रं जयमवाप्स्यसि ।
इति श्रुत्वा स ह्विाच बलखानिमहाबलः ।७८
मुच्छिपोषवन छित्वा गहीत्वा राष्ट्रमुत्तमम् ।
सुस्थियो निर्भयो गेहे बहुशाली यन्द्रियः ।७९

उस समय में हम सब और मुनिगण सब समाधि में स्थित हो गये जिस समय राजा लक्षण उस उत्तम नैमिषारण्य में प्राप्त हुआ था ।७१। वहाँ पर समस्त तीर्थों में स्नान करके और द्विजों तथा देवों को सम्यक् प्रकार से तृप्त करके चैत्र मास अष्टमी तिथि में फिर वापिस कान्य-कुब्ज देश को चले गये ।७२। हे विप्र ! यह समस्त वृत्तान्त हमने तुमको सुना दिया है जैसे कि वह दिग्विजय हुआ था । हे विप्र ! अब तुम एक परम सुन्दर कथा का श्रवण करो, जिसमें यह बताया जायगा कि बलखानि की मृत्यु किस प्रकार से हुई ।७३। मार्गशीर्ष मास की कृष्ण पक्ष की सप्तमी में महान् बलवान् भूमिराज महीपति के वाक्य से निर्भय होकर सामन्त से बोला ।७४। मैंने सुना है कि आपका पुत्र शारदा देवी के वरदान पाने से बड़ा घमन्डी है और रक्त-बीजत्व को प्राप्त हो गया है, आप उसको मुझे दे दो, ऐसी कृपा अवश्य ही करिये ।७५। इस प्रकार से कहा गया वह सामन्त उसके द्वारा राजा की ही भाँति सत्कार किया गया । चामुण्ड नाम का जो पुत्र था, उसे बुला

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर उससे यह बोला—७ । हे पुत्र ! तुम नृपति का कार्य सर्वदा निडर होकर कर, क्योंकि तू तो बहुत रणप्रिय वीर है। इस प्रकार के पिता के वाक्य सुनकर वह राजा से बोला ।७७। हे भूपते ! आप मुझे आज्ञा प्रदान करें तो शीघ्र जय को प्राप्त हो जायेंगे। यह सुनकर वह बोला कि बलखानि महान बलवान है। वह मेरा शिरीष वन काटकर और उत्तम राष्ट्र ग्रहण करके वह बहुशाल एवं जितेन्द्रिय घर में निर्भय होकर सुस्थित हो रहा है ।७८-७६।

यदि त्वं वलखानि च जित्वा मे ह्यर्पयिऽयसि ।
हत्वा वा तस्य सकलं राष्ट्रं त्वयि भविष्यति ।८०
इत्युक्त्वा रक्तबीज समाहूय स्वकं वलम् ।
सस्तलक्षं ददौ तस्मै स तत्प्राप्य मृदा ययौ ।८१
उषित्वा त्रिदिनं मार्गं शिरीषाख्यमुपन्गतः ।
रुरोध नगरीं सत्रां बलखानेर्महात्मनः ।८२
चामुण्डागमनं श्रुत्वा बलखानिर्महाबलः ।
पूजतिस्वा महामायां दत्वा दानान्यनेकशः ।
लक्षसैन्येन सहितः प्रययौ नगराद्वहिः ।८३
तस्यानुजो महावीरस्सुखखानिर्बलः सह ।
हरिणीं तां समारुह्य शत्रसेन्यमचिक्षपन् ।८४

यदि तू उस महाबली बलखानि को जीतकर मुझे सौंप देगा अथवा उसे मार देगा तो उसका समस्त राष्ट्र तेरा ही हो जायगा अर्थात् तुझे दे दिया जायगा। उस रक्तबीज से यह कहकर अपनी सात लाख सेना उसको दे दी थी। वह भी उस सेना को प्राप्त करके प्रसन्नता से चल दिया था। ८०-८१। यह तीन दिन तक मार्ग में पड़ाव डालकर शिरीषाख्यपुर में पहुंच गया। उसने फिरमहात्मा बलखानि की जो पुरी थी, उसका सब ओर से घेरा डाल दिया था ।८२। चामुण्ड का आगमन सुनकर महान बल वाले बलखानि महात्मा ने देवी का पूजन किया और अनेक प्रकार के दान विप्रों को दिये थे। फिर वह एकलाख सेना लेकर नगर से बाहिर आया था ।८३। उस बलखानिका छोटा भाई सुखखानि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था, वह भी एक महान वीर था। वह सेना के साथ हरिणी पर समारूढ़ होकर वहाँ पहुंचा और शत्रु की सेना पर टूट पड़ा।८४।

बलखानिः कपोतस्यो नाशयित्वा रिपोर्बलम्।
लक्षसैन्यं मुदा युक्तश्चामूडं प्रति चागमत्।८५
तयोश्चसीन्महायुद्धं स्वस्वसैन्यक्षयकरम्।
अहोरात्रप्रमाणेन निहताः क्षत्रिणा रणे।८६
प्रातःकाले तु संप्राप्ते कृत्वा स्नानादिकाः क्रिया।
जग्मतुस्तौ रणे वीरौ धनुर्वाणविशारदा।८७
रथस्थो बलखानिश्च चामुण्डो गजपृष्ठगः।
चक्रतुस्तुमुलं घोर नरविस्मयकारकन्।८८
बाणैर्वाणाश्च संछिद्य देवी भक्तो च तौ मुदा।
अन्योन्यं वाहने हत्वा भूतयष्ट्वमुपागतौ।
खाङ्गचर्मधरौ वीरो युयुधाते परस्परम्।८९
यावन्तो रक्तबीजांगात्सं याता रक्तबिंदवः।९०
तैश्चवीरैर्मन्दौस्तत्रैर्बलघानिस्समततः।
संरुङ्गोऽभूद्भ्र सुश्रेष्ठशारदां शरणं ययौ।९१

बलखानि कपोत नामक वाहनपर समास्थितथा। उसने शत्रुकी सेना का नाश किया जो कि एक लाख थी। फिर प्रसन्नता से वह चामुण्ड की ओर आया।८५। उन दोनों का महान युद्ध हुआ, जो अपनी-अपनी सेनाओं के क्षय का करने वाला था। वह युद्ध एक अहोरात्र पर्यन्त हुआ और उस रण में क्षत्रिय बहुत से मारे गये थे।८६। प्रातःकाल के समाप्त होने पर स्नान आदि की क्रिया समाप्त करके धनुर्वाण के चलाने की विद्या के परम पण्डित वे दोनों वीर युद्ध-स्थल में गये थे।८७। बलखानि तो अपने एक रथ में बैठा हुआ था और चामुण्ड हाथी की पीठ पर समारूढ़ था। उन दोनों ने फिर ऐसा घोर तुमुल युद्ध किया कि वह मनुष्यों को एकदम विस्मय में डाल देने वाला था।८८। वे दोनों ही देवी के परम भक्त थे। उनमें बाणों से बाणों को काटकर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़े ही आनन्द से एक दूसरे केवाहनों को मार डाला और फिर वे इस भूमि पर उतर आये थे। दोनों ही वीर खङ्ग और चर्म (ढाल) के धारण करने वाले थे और दोनों आपस में युद्ध कर रहे थे।८९। रक्त बीज के देह से जो रक्त बिन्दु गिरते थे उससे जो नये वीर उत्पन्न हो जाते थे वे रक्त-बीज के तुल्य ही पराक्रम वाले थे।९०। उनमदसे उन्मत्त वीरों ने बलखानि को चारों ओर से सरुद्ध कर लिया है भृगु श्रेष्ठ ! तब वह बलखानि शारदादेवी की शरण में गया था।९१।

एतस्मिन्नन्तरे वीरः सुखखानिस्ततोऽनुजः।
आग्नेयं शरमादायरक्तबीजानदाहयत् ९२
पुरा तु सुखखानिश्च हृव्यर्देव च पावकम्।
पञ्चाब्दान्पूजयामास तदा तुष्टस्स्वयं प्रभुः।९३
पावकीयं शरं रम्यं शत्रुसंहारकारकम्।
ददौ तस्मै प्रसन्नात्मा तेनासावभवज्जयी।९४
बलखानिस्तु बलवानदष्ट्वा शत्रु विनाशनम्।
हराजित् च चामुण्डा बद्ध्वा गेहमुपागतम्।९५
कृत्वा नारीमय वेषं स भीतौ ब्रह्मान्तथया।
दौलामारोप्यं बलवान्प्रेषयावास शत्रवे।९६
हतशेष पंचलक्षं सैन्यं गत्वा च देहलीम्।
वृत्तांत कथयामास जातो महारणः।९७
नारीवेषं च चामुण्डं स दृष्ट्वा पृथिवीपतिः।
क्रोधाविष्टाश्च बलवान्महीपतिमुवाच ह।९८

इस बीच में वीर सुखखानि ने जो कि बलखानि का छोटा भाई था, आग्नेय अस्त्र ग्रहण किया और जो भी रक्त बीज वहाँ थे उनको उससे जला दिया था।९२। पहिले सुखखानि ने द्रव्यों के द्वारा पावक देव की पाँच वर्ष पर्यन्त पूजा की, तब वह देव प्रभु स्वयं प्रसन्न हुए थे।९३। उसने परम प्रसन्न होकर एक अत्यन्त सुन्दर पावकीय शर उसको प्रदान किया, जो कि शत्रुओं का संहार करने वाला था, उससे हो वह जयी हो गया।९४। बलखानि ने शत्रु के विनाश को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखकर घर में प्राप्त पराजित चामुण्ड को बाँधकर उसका नरीमय वेष करके, ब्रह्महत्या से भीत होकर उसको एक डोला में बिठाकर, बलवान् ने शत्रुके पास ही भेज दिया ।६५-६६। मरनेसे बची हुई सेनाके सैनिकों ने देहली में समस्त वृतांत कह सुनाया, जिस तरह से वह युद्ध वहाँ पर हुआ था ।६७। पृथ्वीपति ने नारी के वेष वाले चामुण्ड को देखकर बहुत ही क्रोध में आविष्ट हो गया फिर वह महीपति से बोला ।६८।

कथं जयो मे भविता सुखखानौ च जीविते ।
श्रुत्वा महीपतिः प्राहच्छद्मना कार्यमाकुरु ।६६
ब्राह्मी माता तयोर्ज्ञेया शुद्धा सैव पतिव्रता ।
दूतीभिः कारणं ज्ञात्वा पुनर्युद्ध कुरुष्व भोः ।१००
इति श्रुत्वा महीरासो दूतीस्ताश्छलकोविदाः ।
आहूय प्रेषयामास बलखानिगृहं प्रति ।१०१
ब्राह्मण्यस्तास्यदा भुत्वा वलखानिगृहं ययुः ।
ससुता तां व्रजशस्याशु पप्रच्छूर्विनयान्विता ।१०२
तव पुत्रौ मसावीरौ दिष्टया श क्षयंकरौ ।
तयोर्मृत्युः कथं भूयःज्जीवतां शारदां शतम् ।१०३
तदा ब्राह्मो वचः प्राप पावकोयः शरः शुभः ।
सुखखानेर्जीवकरो बलखानेः पदाहवकः ।१०४
इति ज्ञात्वा तु ता दूत्यः प्रययुर्देहलीं प्रति ।
कथयित्वा नृपस्याग्रे धनं प्राप्यं गृहं ययुः ।१०५
महीराकेस्ते तच्छ्रुत्वा महादेवमुपपतिम् ।
पार्थिवैः पूजनं चक्रे सहस्रादिवसान्मुदा ।१०६

सुखखानि जब तक जीवित है मेरी जय कैसे हो सकती है । महीपति ने यह सुनकर कहा—छल से कार्य करना चाहिए ।६६। उन दोनों की माता ब्राह्मी है जो परम शुद्ध पतिव्रता जाननी चाहिए । दूतियों के द्वारा कारण को जानकर फिर युद्ध करो ।१००। यह सुनकर महीराज ने उन दूतियों को, जो कि छल के कार्य करने में बहुत ही प्रवीण थी, बुलाया और उन्हें वलखानि के घर की ओर प्रेषित कर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया ।१०१। वे उस समय ब्राह्मणी बनकर ही बलखानि के घर में गयी । उन्होंने सुता के साथ उसकी प्रशंसा करके विनय से युक्त होकर पूछा था ।१०२। आपके दोनों पुत्र महान् वीर है, जोकि शत्रुओं का यक्ष करने वाले हैं, यह बड़ी प्रसन्नता की बात है । सैड़ों वर्ष तक जीवित रहते हुए दोनों की मृत्यु फिर किस तरह होगी ? तब उस ब्राह्मी ने यह वचन कहा-पावकीय बड़ा शुभ शर है, जो कि सुखखानि के जीवन का करने या रखने वाला है और बलखानि का मक्षाह्वक है ।१०४। इस प्रकार से यह सब बातें जानकर वे दूतियाँ देहली के प्रति वापिस चल दीं । उन्होंने नृप के समक्ष में सब कह दिया और बहुत-सा धन प्राप्त करके वे अपने घरों में चली गईं थी ।१०५। महीराज ने यह सुनकर उमा के पति महादेव का पार्थिवी के द्वारा एक सहस्र दिन तक प्रसन्नता से पूजन किया था अर्थात् शिव का पार्थिव पूजन किया था ।१०६।

—

महावती का युद्ध वर्णन

श्रावणे मासि संप्राप्ते देहली च महोपतिः ।
नागीत्सवाय प्रययौ सदैव कलहप्रियः ।१
दृष्ट्वा नानोत्सवं तत्र यौवनत्यसमन्वितम् ।
महीराज्यं नमस्कृत्यं वचनं प्राह नम्रधीः ।२
राजन्महावतीग्रामे कीर्तिसागरमध्यगे ।
वामनोत्सवमत्य तं यवव्रीहिसमन्वितः ।
पश्व त्वं तत्र गत्वा च ममैव वचनं कुरु ।३
इति श्रुत्वा महीराजो धुंधुकारेण संयुतः ।
सप्तलक्षवलैयुंक्तश्चामुण्डेन समन्वितः ।
प्राप्तः शिरोषविपिने तन्त्र वासमकारयत् ।४
महीपतिस्तु नृपति नत्वा व चन्द्रवंशिनम् ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उवाच वचनं दुःखो धूर्तो मायाविशारदः ।५
राजन्प्राप्तो हीराजो युद्धार्थी त्वामुपस्थितः ।
चन्द्रावली च तनया ब्रह्मानन्दं त्वामुपस्थितः ।
दिव्यलिङ्गं स पूज्य बलात्काराद्गृहीष्यति ।६
तस्मात्वं स्वबलैः सार्द्धं मया सह महामते ।
छद्मना तं पराजित्य नगरेऽस्मिन्सुखी भव ।७

इस अध्य य में महावती पुरी में युद्ध के वृत्तांत का वर्णन किया जाता है। सूतजी ने कहा—श्रावण मास के प्राप्त हो जाने पर सदा ही कलह से प्यार करने वाला महीपति नागोत्सव के देखने लिये देहली चला गया था ।१। वहाँ पर नागोत्सव को देखकर जो गीत और नृत्य से युक्त सम्पन्न हुआ, फिर उस महीपति ने महीराज को नमस्कार करके नम्रता के साथ यह वचन कहा था ।२। हे राजन! कीर्तिसागरके मध्यमें रहने वाले महावती ग्राम में जो वामनोत्सव होता है वह अत्यन्त ही अच्छा है ! यवब्रीहि समन्वित होकर आप जाकर उसे देखें। यह मेरा वचन आप अवश्य ही करे ।३। यह सुनकर महाराज धुन्धुकार से युक्त होकर सात लाख सेना लेकर और चामुण्ड से समन्वित होकर शिरीष वन में प्राप्त होगया था। वहाँ पर उसने निवास कराया था ।४। वहाँ पर भी महीपति पहुंच गया और चन्द्रवंशी राजाको प्रणाम करके उसने उससे कहा—जो बहुत ही दुःखी, धूर्त और माया का पण्डित था ।५। हे राजन् ! महीराज युद्ध करने की इच्छा लेकर यहाँ तुम्हारे पास आ गया है। यह आपकी चन्द्रावली कन्या को तथा आपके, पुत्र ब्रह्मानन्द को दिव्य लिंग की पूजा करके बलात्कार पूर्वक छीनकर ले जायेगा ।६। इसलिए हे महामते ! आप अपनी सेना के साथ मेरे सहयोग के द्वारा छल से उसे पराजित कर दो और फिर अपने इस नगर में परम सुख के साथ निवास करिएगा ।७।

इति श्रुत्वा देववशी राजा परिमलो बली ।
चतुर्लक्षबलैस्सार्द्धं निशीथे च समागतः ।८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शयितान्क्षत्रियाञ्छूरासन्हत्वा पञ्चसहस्रकान् ।
शतघ्नीं रोषिणीं चक्रे बहुशूरविनाशिनाम् ।९

तदोत्थाय महीराजः कटिमाबध्य सम्भ्रमात् ।
बैरिणं परम् मत्वा महद्युद्धमचीकरत् ।१०

युद्धय त्यो सेनयोस्यत्र मलना पुत्र गृद्धिनी ।
शारदांमादराद्गत्वा पूजयामास भक्तितः ।११

देविदेवि ममादेवि सर्वदुःखविनाशिनि ।
हर मे सकलां बाधा कृष्णांशं वोधयांशु च ।१२

जप्त्वायुतमिमं हुत्वा तर्पणमार्जने ।
कृत्वा सुष्वाप तद्रे श्मल्तदा तुष्टा प्यवं शिवा ।१३

यह सुनकर दैव के वशीभूत बली परिमल राजा अपनी चार लाख सेना के साथ आधी रात में वहाँ आ गया ।८। वहाँ सोते हुए पाँच सहस्र क्षत्रियों को मार दिया था । फिर बहुत से शत्रुओं का विनाश करने वाली शतघ्नीको रोषणी किया अर्थात् तोप चलाई । तब महीराज ने सम्भ्रम से उठकर कटि को बाँधकर उसे परम बैरी मानकर उससे महान् युद्ध किया था ।९-१०। वहाँ पर दोनों सेनाओं के युद्ध करने पर मलना विचारी पुत्र की दुखिया ने शारदाके पास जाकर बड़े ही आदर से भक्ति के भाव से उसका पूजन किया ।११। हे देवि ! हे महादेवि ! तू सबके दुःखों को बिनाश करने वाली है इस समय मेरी सम्पूर्ण बाधा का हरण करो और शीघ्र ही कृष्णांश को यह बतला दो ।१२। उसने इस मन्त्र को दस हजार तुार जप के करके फिर हवन किया लथाविधि तर्पण तथा मार्जन भी किया । वहाँ उस रात्रिमें वहीं पर सो गई । तब शिवा प्रसन्न हुई और स्वपं आकर कहा—हे मलने ! तेरी महतीं बाधा क्षत को प्राप्त हो जायगी, तू इसकी चिन्ता मत करे ।१३-१४।

इत्युक्त्वा शारदा देवी कृष्णांशशं प्रति चागमत् ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुत्र ते जननी भूमिमहीराजेन पीडिता ।
क्षयं यास्मति शीघ्रं च तस्मात्यं ताँ समुद्धर ।१५
इति श्रुत्वा वचो देव्यास्स वीरो विस्मयान्वितः ।
देवकी प्रति सम्प्राप्तं कथयामास कारणम् ।१६
सा तु श्रुत्वा वचो घोरं स्वर्णपत्या समन्विता ।
रुरोद भृशमुद्विग्ना विलप्य बहुधा सती ।१७
कृष्णांशस्तु तदा दुःखी देवसिंहमुवाच ह ।
किं कर्तव्यं मया वीर देहयाज्ञां दारुणे भये ।१८
तच्छ्रुत्वा तेन सहितो लवणेन समन्वितः ।
ययौ दिग्विजयार्थेन व्याजेन च महावतीम् ।१९
तालनो भीमसेनांशः सेनापतिरुदारधी ।
सप्तलक्षबलैस्साद्धं विनाह्लादेन संययौ ।२०
कल्पक्षेत्र मुपागम्य योगिनस्ते तदाभवन
सेनां निवेशयामास विपिने तत्र दारुणे ।२१

मलना से इतना कहकर वह शारदा देवी कृष्णांश के प्रति गई वहां उसने कृष्णांश से कहा—हे पुत्र ! तेरी जननी भूमि इस समय महीराज के द्वारा सताई हुई है । वह शीघ्र ही क्षय को प्राप्त हो जायगी । इसलिए तू शीघ्र ही उसका, उद्धार कर ।१३। देवी के इस तरह के वचनों को सुनकर वह वीर अत्यन्त ही विस्मित हो गया और देवकी के पास जाकर समस्त कारण उसने कह सुनाया ।१६। उसने इस घोर वचन को सुनकर स्वर्णवती से समन्वित होकर अत्यन्त उद्विग्न होती हुई रुदन करने लगी और सती से बहुत सा विलाप करके बड़ी ही पीड़ा प्राप्त की थी ।१७। कृष्णांश भी उस समय बहुत दुःखित हुआ और देवसिंह से बोला—हे वीर ! मुझे इस समय क्या करना चाहिए । बड़ा ही दारुण भय उपस्थित है इस विषय में मुझे आप ही आज्ञा देवें । यह सुनकर उसके साथ और लक्षण से समन्वित होकर दिग्विजय के करने के बहाने से वह महावती को गया ।१९।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीमसेनांश तालन जो कि अत्यन्त उदार बुद्धि वाला सेनापति था सात लाख सेना के साथ आल्हाद के बिना वहाँ गया।२०। कल्प क्षेत्र में पहुंचकर उस समय वे योगी हो गये थे अर्थात् योगियों का वेष धारण कर लिया। वहाँ उस दारुण विपिन में जो सेना थी उसमें निवेश किया।२१।

कृष्णांशस्तालनो देवी लक्षणो बलवत्तरः।
गृहीत्वा लास्यवस्तनि युद्धभूमिमुपागमन् ।२२
सप्ताह च तयोर्युद्धं जातं मृत्युविवर्द्धनम्।
सप्तमेऽहनि वीरासंप्राप्तां रणमूर्द्धनि ।२३
तस्मिन्दिने महाभाग महत्क्रुद्धमवर्तंतत ।२४
दृष्ट्वा परातिं सैन्यं राजा परिमलो वला।
रथस्थश्चापमादाय महोराजपाययो ।२५
यादवश्च गजारूढस्तदा चन्द्रावलीपतिः।
धुन्धुमारं समाहूय धनुर्युद्धमचोकरत् ।२६
हरिनागरमारुह्य ब्रह्मानन्दो महावलः।
तारुकं शत्रुमाहूय धनुर्युद्ध चकार ह ।२७
मर्दनं राजपुत्रं च रणजिद्गजसंस्थितः।
स्वशरैस्ताड्यामास तत्सुतं च जघान ह ।२८

कृष्णांश तालन-देवसिंह और बलवान लक्षण इन सबने लास्य की वस्तुऐं, ग्रहण कर युद्ध भूमि में फिर ये सब पहुंच गये ।२२। सात दिन तक उन दोनों का मौत को बढ़ाने वाला महान् युद्ध हुआ था सातवें दिन में वे वीर रण के माथे पर समाप्त हो गये थे ।२३। हे महाभाग ! उस दिन में महान् युद्ध हुआ ।२४। राजा परिमल सैन्य को पराजित देखकर रथ में स्थित होकर धनुष लेकर महीराज के समीप में प्राप्त हो गया ।२५। उस समय चन्द्रावली का पति यादव हाथी पर आरूढ़ था। धुन्धुकार को बुलाकर धनुर्युद्ध किया था ।२४। महान बलवान ब्रह्मानन्द ने हरि नागर पर स्थित होकर तारक शत्रु

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को बुलाकर उससे धनुर्युद्ध किया था ।२७। गज पर संस्थित रणजित् ने मर्दन राजपुत्र को बुलाकर उसके साथ धनुर्युद्ध किया। उससे अपने शरों के द्वारा प्रहार किए और उसके पुत्र का हनन कर दिया ।२८।

रूपणो वै सरदत हयारूढो जगाम ह ।
आभीरीतनयो जातो मदनोनाम वै बली ।
नृहरं रासपुत्रं च शंखापश्च जगाम ।
तेषु संग्राममेपुषु चामुण्डोऽयुतसैन्यपः ।
महीपतेश्च वचनं मत्वा नगरमाययौ ।३०
ददर्श नगरीं रम्यां चतुर्वणसमन्विताम् ।
धनधान्ययुतां वीरो देवोभक्तिपरायणः ।३१
महोपतिस्तु वै धूर्तो दुर्गद्वारि समागतः ।
चामुण्डेन युतः पादी राजगेहमुपाययौ ।३२
मलना भ्रातरं दृष्ट्वाचनं प्राह दुःखिताः ।
भाद्रकृष्णाष्टमी चाद्य तवब्रोहि गेहे स्थितम् ।३३
त प्राप्त जलसंस्थाने सुपुण्ये कीर्तिसागरे ।
महीराजौ महापापी वामनोत्सवमातः ।३४
विनाल्हाल च कृष्णांशं महद्दुःखमुपागतम् ।
इत्युक्तस्य विहस्याह ब्राह्मणोऽयं महाबली ।
कान्यकुब्जात्समायातः कृष्णांशेन प्रयोजितः ।३५

रूपण हय पर आरूढ़ होकर सरदन पर गया। अभीरी का तनय, मदन नाम बली उत्पन्न हुआ। राज पुत्र नृहरि के समीप युद्ध करने के लिए शखांश गया ।२९। इन सबके संग्राम में व्यग्र रहने पर एक अयुत सेना का स्वामी चामुण्ड महीपति के वचन मानकर नगरमें आ गया था ।३०। उसने चारों वर्णों के लोगों से समन्वित रम्य नगरी को देखा था जो कि धन-धान्य से परिपूर्ण थी। वहाँ देवी भक्ति में परायण वीर था ।३१। धूर्त्त महीपति तो दुर्ग के द्वार पर आ गया और चामुण्डा से युक्त वह पापी राज गृहमें आ गया था ।३१। मलनाने जब भाई देखा तो वह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अत्यन्त दुःखित होकर उससे बोली—आज भाद्रपद की कृष्णाष्टमी है और यव व्रीहि गृह में स्थित है ।३३। सुपुण्य जल का संस्थान कीर्ति सागर है, उनमें यह प्राप्त नहीं हुए। महान् पापी महीराज वामनोत्सव में आ गया है ।३४। आल्हाद और कृष्णांश के बिना यह महान् दुःख उपस्थित हो गया है। इस प्रकार से कहा जाने वाला वह हँसकर बोला—वह ब्राह्मण महान् बलवान् है और कान्यकुब्ज से आया है जिसे कृष्णांश ने ही भेजा है ।३५।

देवीदत्तश्च नाम्नाख्यं स ते कार्य्यं करिष्यति ।
श्रुत्वा चन्द्रावली देवी सर्वभूषणसंयुता ।३६
कामाग्निनिष्पीडितं विप्रं चामुण्डं च ददर्श ह ।
मातरं प्रति चाणक्य वचनं प्राह निर्भरम् ।३७
धूर्तोऽयं ब्राह्मणी माननिश्चय मां हरिष्यति ।
कोऽयं वीरो न जानामि कथयामि पतिव्रता ।३८
इति श्रुत्वा वचस्तस्या लज्जितस्य महीपतिः ।
चामुण्डेन युतः प्राप्तो यत्राभून्स महारणः ।३९
एतस्मिन्न्तरे ने वै ब्रह्माद्याश्तेः पराजिताः ।
त्यक्त्वा युद्धं गृहं प्राप्तस्त्रिलक्षयलसताः ।४०
कपाटं सुदृढं कृत्वा महाचितामुपाययुः ।
महीराजस्तु बलवान्महोपत्यनुमादितः ।४१
प्रमदावनमापत्य षष्ठिलक्षबलान्वितः ।
जुगोप तत्र बलवान्मानोत्सवहेतवे ।४२

इसका नाम देवी दत्त है और यह तेरा कार्य कर देगा। चन्द्रवली देवी यह सुनकर समस्त भूषणों से संयुक्त हो गई थी ।२६। उसने देखा कि वह विप्र चामुण्डा कामाग्निसे पीड़ित हो रहा है। उसने अपनी माता से कहा कि यह ब्राह्मण तो बहुत बड़ा धूर्त्त है और निश्चय ही यह मेरा हरण कर लेगा। यह वास्तव में कौन वीर है, वह भी मैं नहीं जानती हूँ। मैं पतिव्रता नारी इसके साथ कैसे जा सकती हूं ।३८। उसके इस वचन को सुनकर महीपति अत्यन्त लज्जित

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गया था और वह चामुण्डा के साथ वहाँ पर आ गया था। वहाँ पर यह महारण हुआ था।३९। इसी बीच में उनके द्वारा पराजित ब्रह्मादि युद्ध को छोड़कर तीन लाख सेना से संयुक्त घर में प्राप्त हो गये थे।४०। किवाड़ों को खूब दृढ़ता से बन्द करके वे सब महा चिन्ता को प्राप्त हुए थे। महीपति के द्वारा अनुमोदन प्राप्त कर बलवान महीराज प्रमदावन में आकर साठ लाख सेना से युक्त होकर वहाँ माननोत्सव हेतु के लिए रक्षा करता था।४१-५२।

तालनाद्याश्च चत्वारः शिरीषाख्यतुरं ययुः।
स्थलीभूतं च तं ग्रामं दृष्ट्वा ते विस्मयान्विता।
प्रययुस्ते सुखभ्रष्टा ददृशुर्हिमदं मुनिम् ४३
प्रणम्योचुः शुचाविष्टा बलखानिर्मुने वली।
क्व गतः समरश्लाघी स च कुमारगरैर्युतः।४४
श्रुत्वाह हिमदो योगी महीराजेन नाशितः।
छद्मना बलखानिश्च तस्येयं सुन्दरी चिता।४५
इसि श्रुत्वा वचो घोर कृष्णांशः शोकतत्परः।४६
विललाप भृशं तत्र हा वन्धो धर्मपालकः।
त्वदृते भूतले वासी समातीव भयङ्करः।४७
दर्शनं देहि क्षिप्रनो चेत्प्राणांस्त्यजाम्यहम्।४८
इत्युक्तः स तु तद्भ्राता बलखानि पिशाचगः।
सपत्नीकस्समायांतो रोदन कृतवान्वह।
कथित्वा सर्ववृत्तान्तं यथाजातं स्ववैशसम्।४९

तालन आदि जो चार थे वे सब शिरोषाख्यपुर को चले गये थे। उस ग्राम को स्थलीभूत देखकर वे बहुत ही अधिक विस्मय को प्राप्त हुए थे। वे सब सुख से भ्रष्ट होकर चले गये थे और उन्होंने हिमद मुनि का दर्शन किया।४३। शोक से आविष्ट वे प्रणाम करके बोले— हे मुने! बलिखान जो समरश्लाघी था, कहाँ चला गया है? क्योंकि वह कुमागरों से युक्त था।४४। यह सुनकर हिमद योगी ने कहा, बलिखानि को तो महीराज ने छल से नाशित कर दिया है और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी सुन्दरी चिता में ।४५। इस प्रकार के उसके अतिघोर वचन श्रवण कर कृष्णांश शोक से तत्पर हो गया था ।४६। कृष्णांश जहाँ बहुत अधिक विलाप करने लगा—हा बन्धो ! हे धर्मपालक ! तुम्हारे बिना तो अब इस भूतल में मेरा वास अत्यन्त ही भयङ्कर हो गया है ।४७। आप मुझे शीघ्र ही दर्शन दो अन्यथा मैं भी अपने प्राणों को त्याग देता हूँ ।४८। ऐसा कहा गया वह उसका भाई बलखानि पिशाच रूप वाला पत्नी के सहित वहां आ गया और उसने बहुत रुदन किया था। उसने अपना समस्त वृत्तान्त कह सुनाया था जिस तरह वह अपने वैभव को प्राप्त हुआ था।

दिव्य विमा नमाहृय गतौ नाकं मनोरमन् ।
युधिष्ठरे तस्य कला बलखानेर्लयं गया ।५०
तद्वा दुःखी कृष्णांशः कृत्वा भ्रातुस्तिलांजलिम् ।
महावतीं समागत्य राजगेहमुपाययौ ।५१
वेणुशब्देन कृष्णांशो ननृत जनमोहनः ।
वीणाप्रवाद्यं च जगौ तालनो यौगिकरूपधृक् ।५२
मृदङ्गध्वनिना देवो लक्षणः कांस्यवाद्यकः ।
सुस्वरं च जगौ वत्र श्रुत्वा राजा विमोहितः ।५३
तदा तु मलना राज्ञी दृष्ट्वा तद्वामनोत्सवम् ।
रुदित्वा वचनं प्राह क्व गतो मे प्रियवरः ।५४
कृष्णांशो बन्धुसहितस्त्यक्त्वा मां मन्दभागिनीम् ।
त्वया विरहितो देशो महीराजेन लुण्ठितः ।५५
दत्युक्तां मलनां दृष्ट्वा कृष्णांशः स्नेह कातरः ।
वचनं प्राह नम्रात्मा देवि त्वं वचनं कुरु ।५६
योगिनश्च वयं राज्ञि सर्वयुद्धविशारदाः ।
तवेदं सकलं कृत्वा वामो हि नैमिषम् ।५७

वह दिव्य विमान में आरूढ़ होकर मनोरम स्वर्ग को गया था और फिर उस बलखानि की कला युधिष्ठर में लय को प्राप्त हो गई थी ।५०। उस समय में अत्यन्त दुःखित कृष्णांश ने अपने भाई को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिलाञ्जलि दी थी। और फिर महावती में पहुंचकर राजगृह में प्राप्त हुआ था।५१। वहां कृष्णांश वेणु के साथ नाचने लगा जो कि समस्त जगत् को मोहन करने वाला था। वेणु प्रवाद्य को तालनने गाया था जो कि एक योगी के रूप को धारण किए था।५२। मृदङ्गकी ध्वनि में देवसिंह तत्पर था और लक्ष्मण कांस्य वाद्य को वजा रहा था। इस तरह वहाँ सुन्दर से गान किया था कि उसे सुनकर राजा विमोहित हो गया।५३। उस समय रानी मलना उस वामनोत्सव को देखकर रोदन करके यह वचन बोली—मेरा प्रियवर कहाँ चला गया है। वह कृष्णांश अपने भाई के सहित मुझ मन्द भागिनी को त्यागकर कहाँ चला गया है? हे पुत्र! आज तेरे कारा विरहित यह देश महीराज के द्वारा लूट लिया गया।५४-५५। इस प्रकार से कहने वाली मलना को देखकर कृष्णांश स्नेह से अत्यन्त कातर हो उठा और नम्रता होकर यह वचन बोला—हे देवि! तू वचन कहदे।५६। हे राज्ञि! यद्यपि हम सब योगी लोग हैं किन्तु सभी युद्ध की विद्या के महा पण्डित हैं। तेरे इस समस्त कार्य को करके ही हम नैमषारण्य को जायेंगे।५७।

ये यवब्रीहयश्चैव तव सद्मनि संस्थिता:।
गृहीत्वा योषितस्सर्वा गच्छन्तु सागरान्तिकम्।
वयं तु योगसैन्येन तव रक्षा कुर्महे।५८
इति श्रुत्वा वचस्तस्य तत्सुता च पवित्रता।
मातरं वचन प्राह कृष्णांवोऽयं न नर्तकः।५९
पुण्डरीकनिभे नेत्रे स्यामांग तस्य सुन्दरम्।
कृष्णांशेन विना मातः को रक्षार्थं क्षमो भुवि।
दुर्जयश्च महीराजः कृणांशेन विनिर्जितः।६०
इति तद्वचनं निष्काम्य योषितां स्थापिताः करे।६२
यवव्रीहयो निष्काम्य योषितां स्वापितः करे।६१
जगुस्ता योषितस्सर्वाः कृष्णाचरित् शुभम्।
लक्षणा शीघ्रमागम्य योनिवेषान्स्वसैनिकान्।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सज्जीकृत्य स्थितस्तत्र तालनाद्यैः सुरक्षितः।
कीर्तिसागरमागम्य ते वीरा बलदर्पिताः।
रुरुधु सर्वतो नारीर्दोलायुतमितस्थिताः ।६३

जो ये यव ब्रीहि तेरे घर में संस्थित है उन्हें समस्त स्त्रियां लेकर सागर के समीप में जावें। हम योगियों की सेना तुम्हारी रक्षा करती है।५८। इस तरह के उसके बचन को सुनकर उसकी पतिव्रता पुत्री अपनी माता से बोली—यह कृष्णांश ही हैं नांचने वाला नर्तक नहीं है। इसके पुण्डरीक के सदृश नेत्र हैं और श्याम अङ्ग हैं। जो कि अत्यन्त सुन्दर दिखाई दे रहा है। हे माता! कृष्णांश के बिना इस भूमण्डल में कौन है जो रक्षा करने के कार्य में समर्थ हो सके। कृष्णांश के द्वारा विसर्जित प्रेम विह्वल हो गई। उसने हव-ब्रीहि निकालकर योषितों महीराज दुर्जय है।६०। इसके इस बचन को सुनकर मलना के हाथों में स्थापित कर दिया था।११। उन समस्त स्त्रियों से कृष्णांश के शुभ चरित्र का गान करने लगी थी लक्षण ने शीघ्र आकर योगिवेश वाले सैनिकों को तैयार करके तालन आदि के द्वारा सुरक्षित होता हुआ वहां पर स्थित हो गया था। वे समस्त वीर बल से दर्पित होकर कीर्ति सागर पर आकर स्थित हो गये और उन्होंने दोलायुत मित स्थित नारियों को सब ओर से अवरुद्ध कर लिया।६३।

महीपतिस्तुन्कुलहा ज्ञात्वा कृष्णांसमागतम्।
चन्द्रवंशिनमागश्य सपुत्रश्च रुरोदह।६४
योगभिस्तैर्महाराज लुण्ठिताः सर्वयोषितः।
मलना संहृताः तत्र तथा चन्द्रावली सुताः।६५
महीराजस्य ते सैन्या योगिवेषास्समागताः।
तारकाय सुतां प्रादान्महाराजाय मत्स्वसाम्।७६
इति श्रुत्वा वचो घोरं ब्रह्मानन्दो महाबलः।
लक्षसैन्यान्वितस्तत्र ययौ रोषसमन्वितः।६७
महीराजस्तु कलही सैन्या युतमहात्मजः।
रक्षितः कामसेनैन तथा रणजिता ययौ।६८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तयोश्चासीन्मसद्युद्धं सेनयोरुभयोर्भुवि ।
तालनोयोगिवेषश्च ब्रह्मानन्दमुपाययौ । ६९
लक्षणश्चाभयं शूद्रं देवसिंहो महीपतिम् ।
जित्वा वद्ध्वा च मुदितौ कामसेनस्समागतः ।७०

कुलं के हनन करने वाले महीपति ने यह जानकर कि कृष्णांश आ गया है चन्द्रवन्शी के पास आकर वह पुत्र के सहित रोने लगा था ।६४। हे महाराज ! उन योगियों ने समस्त स्त्रियों को लूट लिया है। उनमें मलना और उसकी पुत्री चन्द्रवली भी संहृत हो गई है ।३५। वे सब महीराज के ही सैनिक हैं जो योगियों के वेश में आये हुए हैं। तारक के लिए सुता को दे दिया और मेरी बहन को महीराज के लिए दिया ।६६। इस प्रकार के घोर वचन सुनकर महान् बलवान ब्रह्मानन्द एक लाख सेना से समन्वित होकर वहां पर क्रोध में पूर्णतय भरकर गया था ।६७। महीराज तो कलही था ही एक अयुत सैन्य से कामसेन के द्वारा रक्षित और रणजित किया गया था। भूमि पर उन दोनों सेनाओं में उन दोनों का महान् युद्ध हुआ था। योगी के वेष वाला तालन ब्रह्मानन्द पर युद्ध करने के लिए आ गया था। ६८-६९। लक्षणं अभय शूर से और देवसिंह महीपति से युद्ध करके उन्हें जीत कर तथा बांधकर आनन्दित हुए थे। फिर कामसेन आ गया था ।७०।

लक्षणः कामचन्न च देवो रणजित तदा ।
वद्धा तत्र स्थितो वीरो शत्रु सैन्यक्षयंकरो ।७१
एतस्मिन्नन्तरे ब्रह्मा वद्धा वै तालन बली ।
लक्षणातमुपागम्य धनुर्युद्धमचीकरत् ।७२
लक्षणं छिन्नधन्वानं पुनर्वद्ध्वा महाबलः ।
देवसिंहमुपागम्य मूर्छितं तं चकार स ।७३
हाहाभूते योगि सैयो प्रद्रुते सर्वतो दिशम् ।
कृष्णांशो योषितस्सार्वा वचनं प्राह नम्रधीः ।७४
ब्रह्मानन्दोऽयातातौ मम सैन्य क्षयंकरः ।
तस्माद्यूयं मया सार्द्धं गच्छताशु च तं प्रति ।७५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इत्युक्त्वा तांस्समादाय ब्रह्मानन्दमुपाययौ ।
तयोश्चासीत्महयुद्धं नर नारायणांशयोः ।७६
कृष्णांशस्तत्र वलवान्नभोमार्गेण च प्रति ।
रथस्तं च समागम्य मोहयामास सोऽसिना ।७७

लक्षण ने कामसेन को और देव ने रणजीत को बाँधकर ये दोनों वीर शत्रु की सेना के क्षय करने वाले वहीं पर स्थित हो गये थे ।७१। इसी बीच में बली ब्रह्मा ने तालन को बद्धकर लिया था और फिर लक्षण के पास आकर धर्म युद्ध किया था ।७२। गहा बलवान् ने धनुष काटे हुए लक्षण को फिर बाँध लिया था । फिर देवसिंह के पास आकर उसे मूर्छित कर दिया था ।७३। उन योगियों की सेना में सभी दिशाओं में हाहाकार मचकर भगने पर नमाधी वाले कृष्णांश ने समस्त नारियों से कहा ।७४। यह मेरी सेना के क्षय को करने वाला ब्रह्मानन्द आ गया है इससे आप लोग मेरे साथ शीघ्र उसके पास चलो ।७५। यह कहकर उन सबको लेकर ब्रह्मानन्द के पास आ गया था । फिर दोनों नर और नारायणांशों का महान युद्ध हुआ ।७६। वहाँ पर बलवान् कृष्णांश नभोमार्ग से रथ पर स्थित उनको उसने पहुंच कर असि के द्वारा मोहित कर दिया था ।७७।

तदा तु मूर्छिते तस्मिन्यचयित्वा च ता मुदा ।
योगा सैन्यान्वितो युद्धात्पलायन परोऽभवत् ।७८
पराजिते योगिसैन्ये ब्रह्मानन्दो महाबलः ।
योषितस्ताः समादाय स्वगेहाय दधो मनः ।७६
महीराजस्तु संप्राप्तो महीमत्यनुमोदितः ।
रुरोध सर्वतो नारी शिवदत्तवरी बली ।८०
नहरश्चांभभयं शूरं मर्दनश्चैव रूपणम् ।
मवन वै सरदनो ब्रह्मानन्दं च तारकः ।८१
चामुण्ड शामसेनं च धनुर्युद्धमचीकरत् ।
तदाभयो महावीरो धुन्वत नृहर रिपुम् ।८२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छित्वा धनुस्तमागत्य खङ्गयुद्धमचीकरत् ।
नहरः खङ्गरहितोऽभवद्युद्धपराङ्मुखः ।
तमाह वचनं क्रुद्धोऽभयो युद्धार्थं मुद्यतः ।८३

उसके मूर्छित हो जाने पर प्रसन्नता से उन सबको छुड़ाकर सेना से अन्वित वह योगी युद्ध स्थल से पलायन हो गया था ।८४। योगिसैन्य के पराजित होने पर महाबली ब्रह्मानन्द ने उन नारियों को अपने घर की ओर चला गया था ।७६। महीपति मे अनुमोदन प्राप्त कर महीराज वहाँ आ गया था और सब ओर से स्त्रियों को घेर लिया था क्योंकि यह वली शिव का दत्तावरदानी था ।८०। नृहरने अभयको मर्दन ने शूर रूपण को सरदन ने मदन को और तारक ने ब्रह्मानन्द को तथा चामुण्डा ने कामसेन को घेर कर वहाँ धर्म युद्ध किया था । उस समय महावीर अभय ने धनुषधारी नुहर को घेर कर उसका धनुषकाट दिया था और उसके पास आकर अङ्ग युद्ध किया था । नृहर खङ्ग रहित होकर युद्ध से पराङ्मुख हो गया । तब युद्ध के लिए उद्यत अभय क्रुद्ध होकर उससे बचन बोला ।८१-८३।

भवान्वै मातृष्वस्त्रोयो महीपालस्य चात्मजः ।८४
क्षत्रियाणा पर धर्मं कथं संहर्तुमिच्छति ।
इतिश्रुत्वा तु नृहरो गृहीत्वा परिधं रुषा ।८५
जघान तं च शिरसि संहृतः स्वगमाययौ ।
स च वै कृतवर्मांशो विलीनः कृतवर्मणि ।८६
मदनं गोपजातं च हत्वा सरदनो वली ।
सयशब्दं चकारोच्चैर्पुनर्हत्वा रिपोर्वलम् ।
उत्तरांशश्च स ज्ञेयो मदनश्चोत्तरे लयः ।८७
रूपणश्च समागत्य मूर्छयित्वा च मर्दनम् ।
पुनस्सरदनं प्राप्य खङ्गयुद्धं चकार ह ।८८
ब्रह्मानन्दश्च बलवान्स्त्र वद्धां तारकं रुषा ।
महोराजान्तमागम्या धनुर्युद्धं चकार ह ।८६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नृहरं रणजित्प्राप्य स्वभल्लेन तदा रुषा ।
जघान समरश्लाधी महीराजसूत शुभम् ।९०
स वैदुश्शासनाश्च मृतस्तस्मिन्समागतः ।९१

मेरे आप मौसी के पुत्र और महीराज के आत्मज हैं। यह क्षत्रिय का परम धर्म है कि सामने डटकर युद्ध करे, इसे आप क्यों मिटाना चाहते हैं ? यह सुनकर नहुर के धसे परिघ को ग्रहण करना पड़ा था ।८४-८५। और उसने उसके मस्तक में प्रहार किया जिससे वह हत होकर स्वर्ग को चला गया था। वह कृतवर्मा का अंश था अतएव कृतवर्मा में ही विलीन हो गया था ।८६। गोप से उत्पन्न मदन को वली सरदार नें मार दिया था। और फिर रिपु के बल को मारकर बड़ी ऊँची आवाज से जय शब्द किया था। वह उत्तरांश था इसलिए मदन उत्तर में लय हो गया था ।८७। रूपण ने आकर मर्दन को मूछित करके फिर सरदन के पास जाकर उसने खड्ग युद्ध किया था ।८४। बलवान् ब्रह्मानन्द ने तारक को क्रोध से बाँध दिया और फिर उसने महीराज के समीप में आकर धनुर्युद्ध किया ।८९। रणजित ने नृहर के पास पहुंच कर क्रोध से अपने भाले द्वारा उस समरश्लीघीने महीराज के शुभ पुत्र का हनन कर दिया था ।९०। वह दुश्शासन का अंश था पर इसी में समागत हो गया था ।९१।

निहते नृहरे बन्धौ मर्दनः क्रोधतत्परः ।
स्वशरैशस्ताडयामास सात्यकेरंशमुत्तमम् ।९२
छित्वा तानच्छिरस्स वै परिमलोद्भवः ।
स्वभल्लेन शिरः कायान्मदनस्य स चाहरत् ।९३
मृतेऽस्मिन्मर्दन वीरे तदा ससदनी बली ।
ताडयामास त वीरं स्वभल्लैव वक्षसि ।९४
महत्कष्टमुपागम्य रणजिन्मलनोद्भवः ।
स्वखड्गेन थिरः कावादपाहरत वैरिणः ।९५
त्रिवधौ निहते युद्धे तारकः क्रोधमूछितः ।
रथस्थश्च स्वस्थं च ताडयामास वै शरैः ।९६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छित्वा बाणं च रणजित्तथैव च रिपोर्द्धनः ।
त्रिशरैस्ताडूयामास कर्णाशं तारक हृदि ॥९७
अमर्षवशामापन्नो ययादण्डैर्भुजङ्गमः ।
ध्यात्वा च शङ्करं देवं विषधौतं शर पुनः ॥९८
सम्भाय तर्जयित्वा च शत्रुकण्ठमत्ताड्यत् ।
तेन वाणेन रणजित्यक्त्वा देह दिवंगतः ॥९९

नृहर वन्धु के मर जाने पर मर्दन क्रोध में भरकर उस सात्यकि उत्तम अंश को अपने वाणों से ताड़ित करने लगा था ।९२। परमिल से उद्भव करने वाले शूर रणजीत ने इन सब शूरों का छेदन करके फिर अपने भाले से मर्दन के शरीर से मस्तक को अलग कर दिया था। ।९३। इस मर्दन वीर के मृत हो जाने पर उस समय बली सरदन उस वीर के वक्षस्थल में अपने माले से ही प्रहार करने लगा था ।९४। मलना के जन्म ग्रहण करने वाले रणजित ने बड़े भारी कष्ट से अपने खड्ग के द्वारा उस शत्रु के शरीर से शिर को अलग कर दिया था। ।९५। तीनों वन्धुओं के युद्ध में मर जाने पर तारक क्रोध से मूर्छित होकर रथ में स्थिर होता हुआ रथ में सवार पर शरों के द्वारा प्रहार करने लगा ।९६। रणजित ने उसके धनुष और उसी प्रकार से वाण का छेदन करके अपने तीन शरों के द्वारा कर्णांश तारक के हृदय में प्रहार किया था वह असर्पवश में प्राप्त हो गया था जैसे सर्प दण्डों के द्वारा होता है। उसने शङ्कर देव का ध्यान कर विष से धौत कर फिर संधान किया और गर्जकर शत्रु के कण्ठ में मारा था उस वाण से रणजित भी शरीर का त्याग कर दिवङ्गत हो गया था ।९७-९९।

हृते तस्मिन्महावीर्ये ब्रह्मानन्दश्च दुःखितः ।
महीराजभयाद्ब्रह्मापुरस्कृत्य च योषितः ।
संध्याकालं तु संप्राप्ते भाद्रकृष्णष्टमीदिने ।१००
कपाटं सुदृढ़ कृत्वा सैन्यैः षष्टिसहस्रकैः ।
सार्द्धं गेहमुपागम्य शारदा शरण ययौ ॥१०१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महीराजस्तु बलवान्पुत्र शोकेन दुःखिता ।
सङ्कल्पं कृतवान्घोरं शृण्वतां सर्वभूभृताम् । १०२
शिरीषाख्यपुरं रम्यं वधा शून्यं मया कृताम् ।
तथा महावती सर्वा ब्रह्मानन्दाभिस्सह ।
क्षयं यास्यन्ति मद्बाणैः सर्वे ते चन्द्रावंशिनः ॥१०३
इत्युक्त्वा धुंधुकार वै चाह्वतामास भूपतिः ।
पञ्चलक्षबलैस्सार्द्धं शीघ्रमागम्यतां प्रिय ॥१०४
इति श्रुत्वा धुंधुकारो गत्वा शीघ्रं च देहलीम् ।
उषित्वा सप्त दिवसान्युद्धभूमिमुपागतम् ॥१०५
तदाष्टलक्षणसहितो महीराजो महाबलः ।
तारकेण च संयुक्ता युद्धाय हमुपाययौ ॥१०६

उस महान् वीर के हत हो जाने पर ब्रह्मानन्द अत्यन्त दुःखित हुआ था । महीराज के भय से उसने स्त्रियों को आगे करके भाद्र कृष्णाष्टमी के दिन सन्ध्यकाल में प्राप्त होने पर कपाट को सुदृढ़ करके साठ सहस्र सेना के साथ घर में आकर शारदा के शरण में आ गया था ।१०१। बलवान् महीराज पुत्र के शोक से अत्यन्त दुखित हो कर उसने समस्त राजाओं के सुनते हुए घोर संकल्प किया था ।१०२। रम्य शिरीषाख्यपुर जैसे मैंने शून्य कर दिया था उसी भाँति ब्रह्मानन्द आदि के साथ यह समस्त महावती और वे समस्त चन्द्रवंश में होने वाले लोग मेरे ही बाणों के द्वारा क्षय को प्राप्त होंगे ।१०३। यह कह-कर उस भूपति ने धुन्धुकार बुलाया था । हे प्रिय ! पाँच लाख सेना के साथ तुम बहुत ही शीघ्र यहाँ आ जाओ ।१०४। यह सुनकर धुन्धु-कार शीघ्र ही देहली जाकर वहां सात दिन तक ठहर कर पुनः उस युद्ध स्थल पर आ गया था । उस समय अष्ट लक्षणों के सहित महान् बलवाला महीराज तारक के साथ संयुक्त होकर वहाँ युद्ध करने के लिए आ गया था ।१०६।

—=——

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृष्णांशस्य–शोभा सम्वाद

अष्टाविंशाब्देके प्राप्ते कृष्णांशे बलवत्तरे ।
कार्तिक्यामिन्दुवारे च कृतिकाव्यतिपातभे ॥१
कृष्णांशोऽयुतसेनाढ्यः स्वर्णवत्या समन्वितः ।
विवाह मुकुटस्यैव सत्यागाय ययौ मुदा ॥२
पवित्रमत्त्तलारण्यं बामीकिमुनि सेवितम् ।
गङ्गाकूले ब्रह्ममयं लोहकीलकमुत्ततम् ॥३
तत्र गत्वा स शुद्धात्मा तुष्पवत्या समन्वितः ।
गोसहस्रं च विप्रेभ्यो ददौ स्नाने प्रसन्नधीः ॥४
एतस्मिन्नतरे प्राप्ता म्लेच्छजातिसमुद्भवा ।
शोभानाम महारम्या वेश्या परमसुन्दरी ॥५
सा ददर्श परं रम्यं कृष्णांशं पुरुषोद्यमम् ।
तद्दृष्टिमोहसापन्नं व्याकुला चाभवत्क्षणात् ॥६
मच्छितां तां समालोक्य कृष्णांशः सर्वमोहनः ।
स्वनिवासमुपागम्य विप्रानाहूय पुष्टवान् ॥७

इस अध्याय में कृष्णाश का शोभा नाम वाली वेश्या के समागम में सम्वाद के साथ पुराणाचार्य और पुराणों के भेद का वर्णन किया जाता है । सूत-ी ने कहा—अधिक बलवान कृष्णांश के अट्ठाईस वर्ष के प्राप्त होने पर कार्तिक की पूर्णिमा मे इन्दुवार के दिन तथा कृत्तिका व्यतिपात नक्षत्र में कृष्णांश दशसहस्र सेना से युक्त स्वर्णवती के साथ विवाह मुकुट से सम्यक से प्रकार त्याग (विसर्जन) करने के लिए प्रसन्नता के साथ गया था ।१-२। बाल्मीकि मुनि के द्वारा सेवित परम पवित्र उत्पलारण्य था । वहां गङ्गा के तट पर उत्तम लोह कीलक स्थान था वहां पर उस शुद्ध आत्मा वाले ने पुष्पवती से समन्वित जाकर प्रसन्न बुद्धि वाले ने स्नान किया और उस स्थान के समय में ब्राह्मणों के लिए एक सहस्र गौओं के दान दिए गए थे ।२-४। इसी बीच में म्लेच्छ जाति में जन्म ग्रहण करने वाली महा सुन्दर और अत्यन्त

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रम्य शोभा नाम वाली वैश्या वहाँ पर प्राप्त हो गई थी ।२-५। उसने अत्यन्त सुन्दर पुरुषों में उत्तम कृष्णांश का दर्शन किया था उसकी दृष्टि से मोह को प्राप्त हो जाने वाली वह उसी क्षण से व्याकुल हो गई थी ।६। सबको मोहन करने वाले कृष्णांश ने उसे मूछित देखकर अपने निवास स्थान में लाकर विप्रों को बुलाकर पूछा था ।७।

अष्टादश पुराणानि केन प्रोक्तानि किं फलम् ।
व्रत विदुषां श्रेष्ठा वेदशास्त्रपरायण: ॥८
इति श्रुत्वा वचो रम्यं शास्त्रकोविदा: ।
अब्रुवन्वचनं रम्यं कृष्णांशं सर्वधर्मगम् ॥९
पराशरेश रचितं पुराणं विष्णुदैवतम् ।
शिवेन रचितस्कन्द पद्मं ब्रह्म मुखोपद्भम ॥१०
शुक्रप्रोक्तं भागवतं ब्राह्म वै ब्रह्मणा कृतम् ।
गारुड़ हरिणा प्रोक्तं षड् वं सात्विकसम्भवा: ॥११
मत्स्य: कूर्मो नृसिहश्च वामन: शिव एवं च ।
वायुरेतत्पुराणानि व्यासेन रचितानि वै ॥१२
राजसा: षट्स्मृता वीर कर्मकांडमया भुवि ।
मार्कण्डेयं च वाराहं माकण्डेयन निर्मितम् ॥१३
आग्नेयमङ्गिराश्चैव जनयामास चोत्तम् ।
लिंगब्रह्माण्डके चापि तण्डिना रचिते शुभे ।
महादेवे लोकार्थे भविष्यं रचितं शुभे ॥१४

हे विद्वानों में श्रेष्ठों ! आप सब वेद और शास्त्रों में परायण हैं आप मुझे बतलाइये । इस रम्य वचन को सुनकर वेद शास्त्र के पण्डितों एक परमाधिक विद्वानों ने समस्त धर्म ज्ञाता रम्य कृष्णांश से यह बचन कहा था ।८-९। जिसके विष्णु देवता हैं उस पुराण की पराशर मुनि ने रचना की है । शिव ने स्कन्द पुराण की रचना की है और पुराण ब्रह्मा के मुख से उत्पन्न हुआ है । भागवत महापुराण शुक मुनि ने कहा है ब्रह्मपुराण की रचना ब्रह्माजी के द्वारा हुई है । गरुड़ पुराण हरि के द्वारा कहा गया है ये छै सात्विक सम्भव पुराण है ।१०। मत्स्य कूर्म-नृसिंह-वामन-शिव और वायु ये पुराण श्री व्यास मुनि के द्वारा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विरचित हुए हैं।१२। ये छै पुराण राजस कहे जाते हैं। हे वीर ! वे भूमण्डल में कर्मक़ाण्ड से परिपूर्ण हैं। मार्कण्डेय और बाराह मार्कण्डेय के द्वारा निर्मित्त है।१३। अङ्गिरा मुनि ने आग्नेय उत्तम पुराण उत्पन्न किया था। लिंग और ब्रह्माण्डक तण्डिके द्वारा निर्मित हैं और लोक के लिए महादेव ने भविष्य पुराण की रचना की है।१४।

तामसाः षट्स्मृताः प्राज्ञैः शक्तिधर्मपरायणाः।
सर्वेषां च पुराणानां श्रेष्ठं भागवतं स्मृतम्।।१५
घोरे भुवि कलौ प्राप्ते विक्रमो नाम भूपतिः।
कैलासाद्भुवमागत्य मुनीन्सर्वान्समाह्वयत्।।१६
तदा ते मुनयःसर्वे नैमिषारण्यवासिनः।
सुतं सक्रचोदयामासुस्तेषां तच्छ्रवणाय च
प्रोक्तान्युपपुराणानि सूतेनाष्टादशैव च।।१७
इति श्रुत्वा तु वचनं कृष्णांशो धर्मतत्परः।
श्रुत्वा भागवतं शास्त्रं सप्तमेऽह्नि महोत्तमम्।।१८
ददौ दाननिविप्रेभ्यो गौसुवणमयानि च।
ब्राह्मणान्भोजयामास सहस्रं वेदतत्परान्।।१९
तदा तु भिक्षुकी भूत्वा शोभा नाम मदातुरा।
मायां कृतवती प्राप्य कृष्णांशो यत्र स्थितः।।२०
ध्यात्वा महामदं वीरं पैशाचं रुद्रकिंकरम्।
मायां सा जनयामास सर्वपाषाणकारिणीम्।।२१

विद्वानों ने छैं पुराण तामस बताये हैं जो कि शक्ति धर्म में परायण है। इन समस्त पुराणो में भागवत परमश्रेष्ठ पुराण है।१५। भूमण्डल में घोर कलियुग के प्राप्त होने पर विक्रम नाम वाला राजा कैलाश से भूमि पर आकर उसने समस्त मुनिगणों को बुलाया था।१६ उस समय वे समस्त मुनिगण थे जो कि नैमषारण्य के निवास करने वाले थे श्री सूतजी को प्रेरित किया था कि वे उनका श्रवण करावें सूतजी ने अट्ठारह ही उप पुराण भी बताये थे।१७। इस प्रकार से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनकर धर्म में तत्पर कृष्णांश ने महान् उत्तर भागवत शास्त्र सात दिन में श्रवण किया और विप्रों को गौ तथा सुवर्णमय दान किए थे। वेद तत्पर एक सहस्र ब्राह्मणों को भोजन कराया था।१८-१९। उस समय मदातुरा शोभा नाम वाली वेश्या भिक्षुकी होकर वहां आकर माया करने लगी थी जहां कृष्णांश स्थित थे।२१। उसने पैशाच वीर महामद को जो कि रुद्र का किङ्कर था। ध्यान में लाकर सबको पाषाण कारिणी माया को उत्पन्न किया था।२१।

दृष्ट्वा स्वर्णवती देवी तां शोभयोद्भवाम्।
छित्वा चाह्लाद्य वामांगीं स्वगेहं गतुमद्यता॥२२
सा वेश्या तु शुचाविष्टा तस्याः शृङ्गारमुत्तमम्।
स्वर्णयंत्रस्थित रम्यं लक्षद्रव्योपमूल्यकम्।
संहृत्य मायया धूर्ता देशं वाह्लीकमाययौ॥२३
कल्पक्षेत्रमुपागम्य नेत्रसिंहसमुद्भवा।
वेश्यया मम शृंगारं हृत ज्ञात्वा सुदुःखिताः॥२४
कृष्णांशं वचनं प्राह गच्छगच्छ महाबल।
गृहीत्वा मम शृङ्गारं शीघ्रमागच्छ मां प्रति॥२५
मुटिकेयं मया वीर रचिता तां भूखेन च।
धूर्तमायाविनाशाय तव मङ्गलहेतवे॥२६
इति श्रुत्वा ययौ कृत्वाकृष्णांशस्सर्वं मोहनः।
शूकर क्षेत्रमागम्य यत्र वेश्यां ददर्श ह॥२७
सा तु वैश्या च तं वीर दृष्ट्वा कन्दर्पकारिणाम्।
रचयित्वा पुनर्मायां तयतिकमुपागता।२८

स्वर्णवती देवी ने शोभा के द्वारा समुत्पन्न उस माया को देखकर उसका छेदन कर दिया था और प्रसन्न होकर उस वामाङ्गी को अपने घर को जाने को उद्यत हो गई थी।२२। वह वेश्या तो शोक से आष्टि हुई उस समय स्वर्णवती के स्वर्ण मन्त्र में स्थित उत्तम एवं रम्य तथा एक लक्ष द्रव्य के मूल्य वाले शृंगार का माया से ही संहरण करके वह धूर्ता वाह्लीक देश में चली आई थी।२३। जब कल्प क्षेत्र में आ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई थी तब उस नेत्रसिंह की पुत्री ने वेश्या के द्वारा मेरा शृङ्गार मृत हो गया है यह जाना था और वह अत्यन्त ही दुःखित हो गई थी।२३-२४। उसने कृष्णांश से यह वचन कहा---हे महा बलवान् ! तुम शीघ्र ही चले जाओ और मेरे शृङ्गार को लेकर शीघ्र ही वापिस मेरे पास आ जाओ।२५। हे वीर ! मैंने यह एक गुटिका की रचना की है उसे मुख में धारण कर लो जो कि तुम्हारे मङ्गल के लिए धूर्ता की माया के विनाश के हेतु बनाई गई है।२६। यह स्वर्णवती के वचन सुनकर तथा वैसा ही सर्व मोहन कृष्णाँश ने किया था। उसने शूकर क्षेत्र में आकर उस वेश्या को देखा था।२७। उस वेश्या ने कन्दर्प उत्पन्न कर देने वाले उस वीर को देखा था और फिर अपनी माया को रचना करके उसी के समीप में वह आ गई थी।२८।

तदा सा निष्फलीभूय रुरोद करुण बहु।
रुदती ता समालोक्य दयालुस्स प्रसन्नधीः।२९
गृहीत्वा सर्वशृङ्गारं वचनं निर्भयः।
किं रोदषि महाभागे सत्यं कथय मा चिरम्।।३०
साह मे सहरो नाम भ्राता प्राणसमप्रियः।
नाट्यैश्च पञ्चसाहस्रैः सहितो मरणं गतः।।३१
अतो रौद्रि महाभागसम्प्राप्ता शरणं त्वयि।
इत्युक्त्वा मायया धूर्ता कृत्वा शवमयान्त्यजात्।।३२
तस्मै प्रदर्शयामास निजकार्यपरायणा।
रुदित्वा च पुनस्तत्र प्राणास्त्यक्तुं समुद्यता।।३३
दयालुस्स कृष्णांशस्तामाह करुण वच;।
कथं त जीवयिष्यन्ति शोभेने कथायांशु मे।।३४
साह वीर तवास्ये तु संस्थिता गुटिका शुभा।
देहि मे कृपया वीर जीवयिष्यन्ति ते तया।।३५

उस समय वह निष्फल होकर करुणा के साथ बहुत रुदन करने लगी थी। उसको रोदन करती हुई देखकर दयालु वह प्रसन्न बुद्धि वाला वहाँ आया और स्वर्णवती का समस्त शृङ्गार ग्रहण करके

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्भय हो उसे वह वचन बोला—हे महाभागे ! क्योंकि तू रुदन कर रही है, मुझे सत्य-सत्य बतला दे, विलम्ब मत करो ।२९—३०। वह बोली—मेरा सहर नाम का भाई था जो कि मेरे प्राणों के समान प्रिय था पाँच सहस्र-नाट्यों के साथ वह मरण को प्राप्त हो गया था ।३१। हे महाभाग ! इसलिए मैं रुदन करती हूँ । अब मैं तेरी शरण में प्राप्त हो गई हूँ ।·यह कहकर उस धूर्ता ने माया के द्वारा शव मयान्त्वजी को करके अपने कार्य में परायण ने उस कृष्णांश को दिखला दिया था । और फिर वह रुदन करके अपने प्राणों को त्याग करने के लिए प्रस्तुत हो गई ।३२-३३। दयालु वह कृष्णांश उससे करुणा से भरे हुए वचन कहने लगा—हे शोभने मुझे शीघ्र यह बतादे कि वे सब कैसे जीवित होंगे ।३४। वह बोली-हे वीर !तुम्हारे मुख में एक शुभ गुटिका संस्थित है । हें वीर ! वह आप मुझे देवें । उसी के द्वारा यह जीवित हो जायेंगे ।

इत्युक्तस्तु तथा वीरो ददौ तस्यै च तद्वसु ।
तदा प्रसन्ना धूर्ता कृत्वा शुकमयं वपुः ।
पंचशस्थमुपाताय कृष्णांश कामविह्वला ।।३६
वाह्वलीकदेशमागस्य सारटठनगर शुभम् ।
उवाच च स्वयं गेहे कृत्वा दिव्यभयं वपुः ।।३७
निशीथे समुनुप्राप्ते कृत्वा तं नररूपिणीम् ।
आलिङ्ग हि कामार्ता कृष्णांशं धर्मकोविदम् ।।३८
दृष्टवातां स तथा भूतां कृष्णांशो जगदम्बिकाम् ।
तुष्टाव मनसा धीरो रात्रिसूक्तेन नम्रधीः ।३९
तदा सा स्वेडिनी भूत्वा त्यक्त्वो कृष्णांशमुत्तमम् ।
पुनः शुकमयं कृत्वा चिंचणीवृक्षमारुहत् ।।४०
तदा स्वर्णवती देवी बोधितः विष्णुमायया ।
कृत्वा श्यैनी मय रूपं तत्र गत्वा मुदान्विता ।
ददर्श शुकभूतं च कृष्णांश योगतत्परम् ।।४१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसा कहने पर उस वीर ने उस वैश्या के लिए वह धन दे दिया। उस समय वह परम प्रसन्न होती हुई धूर्ता ने उसको शुक बना करके एक पिंजड़े में स्थित करके उस कृष्णांश को लेकर काम से विह्वल वह वाह्लीक देश में आ गई और वहाँ शुभ मारट्ठ नगर में रहने लगी फिर उसने स्वयं ही घर अपना दिव्यमय शरीर धारण किया तथा आधी रात में उसको नर रूप वाला बनाकर काम से आर्त्त वह उस धर्म के पण्डित कृष्णांश से आलिङ्गन करने लगी।३६-३८। कृष्णांश ने उस प्रकार की कामार्त्त देखकर उसने जगदम्बिकाका स्तवन किया और मन के द्वारा विनम्र होकर उस वीर ने रात्रि सूक्त से देवी स्तुति की।३९। उस समय वह स्वेडिनी होकर उस उत्तम कृष्णांश को त्याग कर उसने फिर शुभमय शरीर बना लिया और वह चिचणी के वृक्ष पर आरूढ़ हो गई।४०। तब देवी स्वर्णवती विष्णु ही माया के द्वारा जीवित की गई और वह अपना श्येनोमय शरीर धारण करके प्रसन्नता के साथ वहाँ पहुंची। उसने योग तत्पर शुक्र के रूपमें कृष्णांश को वहाँ देखा।४१।

एतस्मिन्नन्तरे वैश्या पुनः कृत्वा शुभं वपुः।
नरभूतं च कृष्णांशं वचनं प्राह नम्रधीः।४२
अये प्राणप्रिय स्वामिन्भज मां कामविह्वलाम्।
पाहि मां रतिदानेन धर्मज्ञोऽसि भवान्सदा।४३
इत्युक्तस्सं त तामाह वचनं शृणु शोभने।
आर्यवर्त्मस्थितोहं वै वेदमार्गपरायणः।४४
विवाहितां शुभां नारीं यो भजेत ऋतौ नहि।
स पापी नरकं याति तिर्य्यग्योनिमयं स्मृतम्।
अतः परस्त्रिता भोगो ज्ञेयो भै निरयप्रदः।४५
इति श्रुत्वा तु सा प्राह विश्वामित्रेण धीमता।
शृङ्गिणा च महाप्राज्ञ वेश्यासङ्गः कृतः पुरा।
म कोऽपि नरकं प्रातस्मान्मो भज कामिनीम्।४६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनश्चाह स कृष्णांशः कृतं पापं तपोवलात् ।
ताभ्यां च मुनियुग्माभ्यामसमर्थोहिसाम्प्रतम् ।।४७
अर्द्धाङ्ग पुरुषस्य स्त्री मैथुनै च विशेषतः ।
आहमार्यश्च भवती वेश्या च बहुभोगनी ।।४८
ऋचि शब्दश्च पूर्वास्याज्जात ऋग्जस्सनातनः ।
योगजजश्चैव यः शब्दो दक्षिणास्याणेजुभवः ।।४९

इसी बीच में उस वैश्या के पुनः अपना शुभ शरीर बना लिया और नर रूपी कृष्णांश को करके उनसे नम्रता के साथ वह बोली—हे प्राण प्रिय स्वामिन् ! काम से विह्वल मेरा उपभोग करो । आप तो धर्म के ज्ञाता हैं इस समय रति दान मुझे प्रदान करके मेरी रक्षा कीजिए ।४२-४३। इस तरह से उस वैश्या के द्वारा कहा गया वह कृष्णांश उस से बोला--हे शोभने ! तू मेरा बचन श्रवण कर । मैं आर्यों के मार्गमें स्थित हूं और सदा वेद के मार्ग में परायण रहने वाला हूँ ।४। जो पुरुषअपनी विवाहित शुभ नारी का ऋतुकाल में उपभोग नहीं किया करता है वह पापी नरक में जाया करता है, जोकि तिर्यक योनिमय कहा गया हैइस लिए पराई स्त्री के साथ भोग करना नरक के देने वाला ही जानना चाहिए । यह श्रवण करके वह वैश्या बोली—श्रीमान् विश्वामित्र ऋषि ने और भृङ्गी ने हे महाप्राज्ञ ! पहिले समय में वेश्या के साथ प्रसङ्ग किया । उनमें से कोई भी नरक में प्राप्त नहीं हुआ । अतः आप मुझे कामिनी का सानन्द उपभोग करें ।४५-४६। फिर उस कृष्णांश ने उससे कहा—उन ऋषियों ने अपनीतपस्या के बल से उस पाप को काट दिया वे तो दोनों मुनिगण परम तपस्वी एवं समर्थ थे मैं तो इस समय में असमर्थ हूँ ।४७। पुरुष का आधा अङ्ग स्त्री होता है और विशेष करके मैथुन के समय में ऐसा ही माना जाता है । मैं तो आर्य हूं और तू बहुतों का भोग करने वाली वेश्या है ।४८। ऋषि शब्द पूर्वस्यसे समुत्पन्न हुआ है वह ऋग्ज सनातन है जो शब्द योगज होता है यह दक्षिणात्य से यजुर्भव है ।४९।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तदि्धतान्तश्च यश्शब्द पश्चिमास्याच्च सामजः ।
छन्दोभूताश्च ये शब्दास्तेसर्वे ब्राह्मणप्रियाः ।
केवलो वर्णमात्रश्च स शब्दोऽथर्वजः स्मृयः ॥५०
पञ्चमास्याच्च ये जातांः शब्दासंसारका रणः ।
ते सर्वे प्राकृता ज्ञेयाश्चतुर्लक्षविभिदिनः ॥५१
हित्वा तान्यो हि शुद्धात्मा चतुर्वेदपरायणः ।
स वै भवाटवीं त्यक्त्वा पद गच्छत्यनामयम् ॥५२
न वदेद्यावर्यीं भाषां प्रानैः कण्ठगतैरपि ।
गजैर्गापीड्यमानोऽपि न गच्छेज्जैन मन्दिरम् ॥५३
इत्येवं स्मृति वाक्यानि मुनिना पठितानि वै ।
कथं त्याज्यो मया धर्मस्सर्वलोक सुखप्रदः ॥५४
इति श्रुत्वा तु सा वेश्या म्लेच्छायाश्चांश्संभवा ।
शोभना नाम रंभोरूर्महाक्रोधमुपाययौ ॥५५
वेतसंस्ताडयित्वा तं पुनः पुनः कृत्वा शुकं स्वयम् ।
न ददौ भोजनं तस्मै फलाहारं शुकाय वै ॥५६

और जो शब्द तद्धितान्त है और पश्चिमास्य से अर्थात् पश्चिम मुख से समाज हैं छन्दोभूत जो शब्द होते हैं वे सब ब्राह्मणों के प्रिय हुआ करते हैं केवल जो वर्ण मात्र है वह शब्द अथर्वज होता है ।५०। पञ्चम मुख से जो शब्द उत्पन्न हुए थे वे सव संसारकारी होते हैं । वे सब प्राकृत जानने चाहिए जिनके चार लाख भेद होते हैं ।५१। जो उनको त्याग करके शुद्ध आत्मा वाला चारों वेदों में परायण होता है वह इस संसार रूपी अटवी (जङ्गल) का त्याग करके अनामय पद को प्राप्त किया करता है ।५२। यावनी भाषा को कभी भी नहीं बोलना चाहिए चाहे प्राण कण्ठगत भी क्यों न हो जावे । मदमस्त हाथियों के द्वारा सताया हुआ होकर भी रक्षा पाने के लिए जैन मन्दिर में नहीं जाना चाहिए चाहे प्राणगत ही हाथियों द्वारा क्यों न हो जावे ।५३। इस प्रकार से स्मृतियों के वाक्य मुनि के द्वारा पढ़े गये थे । सो अब मुझे अपना यह आर्य धर्म कैसे त्याग देना चाहिए । जो कि धर्म

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही एक ऐसा होता है सव लोकों में सुख के प्रदान करने वाला हुआ करता हैं ।५४। यह कृष्णांश के द्वारा कहा हुआ श्रवण करके स्वेच्छा के अंश से समुत्पन्न होने वाली वेश्या शोभना नाम वाली जिसके ऊरु-रम्भा (केला) के समान परम सुन्दर थे बहुत ही क्रोध को प्राप्त होगई ।५५। उसने उस कृष्णांश को बेंतों से पीटकर फिर तोता बना दिया और स्वयं उसने उसको खाने के लिये भोजन नहीं दिया जो कुछ भी फलों का आहार वह कराया करती थी ।५६।

तदा स्वर्णवती देवी कृत्वा नारीमयं वपुः ।
मशकीकृष्य त वीरं तत्रैवान्तर्दधे तु सा ॥५७
पुनः श्येनीवपुः कृत्वा तत्देशाद्यामतुमुद्यता ।
पृष्ठमा रोप्य मशकं मयूरनगरं ययौ ॥५८
मकरन्दस्तु तां दृष्ट्वा कृष्णांशेन समन्विताम् ।
नेत्रपालस्य तनयां नाम्ना स्वर्णवतीं वलीं ।
चरणावुपसंगृह्य स्वगेहे तामयासयत् ॥५९
शोभनापि च संबुध्य पक्षुजरान्तमुपस्थिता ।
न ददश शुकं रम्यं मूर्छिता चापतभुवि ॥६०
किंकरोमि क्व गच्छामि बिना तं रमणं परम् ।
इत्येव बहुधालप्य मदहीनपुरं ययौ ॥६१
तत्र स्थितं च मायामदविशारदम् ।
महामदं च सम्पूज्य स्वदेहं त्यक्तमुद्यता ॥६२

उस समय नारी स्वर्णवती अपना वपु नारीमय बनाकर उस वीर को एक मशक का रूप देकर यहीं पर अन्तर्हित हो गई अर्थात् छिपगई थी ।५०। फिर इसने श्येनी का वपु (शरीर) करके उस देश से जाने के लिये वह उद्यत हो गई थी । वह मशक की पीठ पर आरोपित होकर मयूर नामक नगर को चली गई थी ।५८। वहाँ पर बली मकरन्द ने कृष्णांश के सहित नेत्रपाल सिंह की पुत्री स्वर्णवती नाम वाली कोदेखा उसने दोनों चरणों का स्पर्श कर अपने घर में इनको आवास दिया था

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

।५९। शोभना वेश्या ने जपकर पींजरा के पास गमन किया तो वहाँ उसने उस रम्य शुक्र के रूप में रहने वाले कृष्णांश को देखा तो वह मूर्छित होकर भूमि में गिर गई ।६०। वह विलाप करती हुई बोली अव मैं क्या करूं और कहाँ जाऊँ। बिना उस परम रमण के मैं कैसे रहूंगी। इस प्रकार से वहुत कुछ रो-धोकर वह मदहीनपुर को चली गई थी ।६१। वहाँ पर स्थित माया के मद के परम प्रवीण पूशाल महामद की उसने अर्चा की और फिर वह अपने शरीर का त्याग करने को उद्यत हो गई थी ।६२।

महामदस्तु सन्तुष्टो गत्वा वै शिवमन्दिरम् ।
नरुस्थलेस्वरं लिंग तुष्टावाषभभाषया ॥६३
तदा प्रसन्नो भगवान्वचन प्राह सेवकम् ।
स्वर्णबत्या हृतो वीरः कृष्णांशश्चायधर्मगः ।
मया सह समागच्छ मयूरनगरं प्रति ॥६४
इत्युक्तस्तेन पैशाची वटैः पञ्चसहस्रकैः ।
तया सह ययौ तूर्णं संहरेण समन्वितः ॥६५
इन्दुलश्च तथाह्लादो बोधितो विष्णुमायया ।
त्रिलक्षवलसंयुक्तोदेवसिंहेन संयुतः ॥६६
तदा तु शोभना वैश्या सहरेण बलैस्सहु ।
चकार भैरवी माया सर्वशत्रुभयङ्करीम ॥६७
सर्वतश्चोत्थितो वातो महामेघसमन्वितः ।
पतन्ति वहुधा चोल्काः शर्करावर्षणे रताः ॥६८
दृष्ट वा तां भैरवीं मायां तमोभूतां समन्ततः ।
मकरन्दश्च वलबान्तथस्थः स्वयंययौ ॥६९
शनि भल्लन तां माया भस्म कृत्वा महाबलः ।
गृहीत्वा सहुरं धूर्तं सबलं गेहमाप्तवान ॥७०

उसकी पूजा से महामद पिशाच बहुत सन्तुष्ट हो गया था और वह शिव मन्दिर जाकर मरुस्थलेश्वर लिंग की वार्षभ भाषा में स्तुति

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करी उस समय भगवान् प्रसन्न हो गये और उस सेवक से बोले आर्य धर्म के अग्रगामी कृष्णांश का हरण स्वर्णवती के द्वारा किया गया है। मेरे साथ तू मयूर नगर की ओर आजा ।६४। इस प्रकार से उसके द्वारा कहा गया पैशाच पाँच हजार नट तथा उस शोभना के साथ शीघ्र ही सहुरेण से समन्वित वहाँ वया था ।६५। इधर विष्णु माया के द्वारा इन्दुल तथा आल्हाद बोधित किये गये थे ये तीन लाख बल से संयुक्त होकर था देवसिंह से समन्वित होकर मयूर नगर में पहुंचकर मकरन्द के पास गये थे ।६६। उस समय में शोभना नाम वाली वेश्या सहुरेण सेना के साथ वहाँ पहुंच गई और उसने शत्रुओं को भय करने वाली भैरवी माया को किया था ।६७। सब ओर से बड़ा भयानक वायु उठा था जोकि बड़े भारी मेघों से समन्वित था। बहुत से उल्काओं को पतन होता था जो शर्करा (धूल) के वर्षा करने में रत थे ।६८। उस भैरवी माया को देखकर जो सभी ओर से अन्धकारमय थी बलवान् मकरन्द स्वयं रथ में स्थित होकर वहाँ आ गया था ।६९। उस महान बलवान शनिल्ल के द्वारा उस माया को भस्म करमें उस धूर्त्ता सहूर को बल के साथ पकड़कर घर में प्राप्त हो गया ।७०।

तदा तु शोभना नारी कामयायां चकार ह।
बहुलास्संथिता वेश्या गीतानृत्यविशारदाः ॥७१
मोहिताः क्षत्रियाः सर्वे मुहुर्लास्यदर्शनात्।
देवसिंहाच्च कृष्णांशदृते जड़तां गतः ॥७२
तदा स्वर्णवती देवी कामाक्षी ध्यानतत्परा।
पुनरुत्थाप्यतान्सर्वान्गृहीत्वा शोभनां पुनः।
मयूरध्वजमागम्य निगडैस्तान्बबंध ह ॥७३
महामदस्तु तज्ज्ञात्वा तुद्रध्यानपरायणः।
चकार शम्बरीं मायां नानासत्त्वविधायिनीम् ॥७४
व्याघ्राः सिंहा वराहश्च वानरा दंशका नराः।
सर्पागथास्तथां काकाः भक्षयन्ति समन्ततः ॥७५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तदा स्वर्णवती देवी कामाक्षीध्यानतत्परा ।
संसर्ज स्मरजां मायां तन्मायाध्वंसिनी रणे ।।७६

उस समय शोभना नारी ने काममाया की थी जिसमें बहुत सी गीत और नृत्य की विशारद वैश्यायें वहाँ संस्थित हो गई थी ।७१। उनके लास्य के दर्शन से समस्त क्षत्रिय मोहित होकर मूर्छित हो गये थे । देवसिंह और कृष्णांश के बिना वे सभी जड़ता को प्राप्त हो गये ।७२। समय देवी स्वर्णवती कामाक्षी के ध्यान में तत्पर हो गई और उसने उन सबको फिर उठाकर पुन: शोभना को पकड़ लिया । मयूर-ध्वज में आकर उसको निगडों से बँध दिया ।७३। महामद यह सब समझकर वह रुद्र के ध्यान में परायण हो गया और उसने फिर शाम्बरी माया की थी जो नाना प्रकार के सत्वों की विधायिनी थी ।७४। उस माया में व्याघ्र सिंह-वराह-बानर दंशक-नर सर्प गृध्र और काक सभी ओर से थे ।७५। फिर उस समय स्वर्णवती देवी ने कामाक्षी के ध्यान में तत्परता की और उसने रण में उस भय के विध्वंस करने वाली स्मरजा माया का सृजन किया ।७६!

तया तार्क्ष्यास्तमुत्पना: शरभाश्च महावला: ।
सिंहादीन्मभक्षयामाससुघ्नंजश्चैव सहस्रश: ।।७७
हाहाभूते च तत्सैन्येदिक्षु विद्राविते सति ।
शोभना चभवद्दासी स्वर्णवन्यांश्च मायिनो ।।७८
सहरस्तैर्नटंस्साद्धं चहलादेनैव चूर्णित: ।
तेषां रुधिरकुंभाश्च भूमिमध्ये समारुहन् ।।७९
एव च मुनिशार्दूल चतुर्मास्स्नभवप्रण: ।
वैशाखे मासि संप्राप्ते ते वीरा गेहमाययु: ।
इति ते कथित चान्यत्किं श्रोतुमिच्छसि ।।८०

उस माया के प्रभाव से तार्क्ष्य और महा बलवान शरभ समुत्पन्न हो गये थे । जिन्होंने सिंह आदि सबको खा लिया तथा सहस्रों को मार दिया ।७७। उस समय सेना में हा-हाकार मच गया और सब दिशाओं में भागने लगे । तब वह मायिनी शोभना स्वर्णवती की दासी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हो गई ।७८। और वह सद्गुर समस्त नटोंके सहित आह्लाद के ही द्वारा चूर्णित कर दिया गया उनके रुधिर कुम्भ भूमि के मध्य से समारूढ़ हो गये थे ।७६। हे मुनि शार्दूल ! इस प्रकार से यह युद्ध चार मास तक हुआ । वैशाख मास के प्राप्त होने पर वे सब वीर अपने घर में आ गये हे विप्र ! यह समस्त वृतान्त हमने तुझे सुना दिया है । अब तुम इसके आगे क्या श्रवण करने की इच्छा रखते हो ? ।८०।

समस्त नृपों का संग्राम और नाश

द्वात्रिंशाब्दे च कृष्णांशे संम्प्राप्ते योगरूपिणी ।
वेला नाम शुभा नारी हरिनागरसंस्थिता ।
महावती समागम्य सभायां तत्र चविशत् ॥१
एतस्मिन्नन्तरे प्राप्ताः कृष्णासाद्मा महावलाः ।
नत्वा परिमलं भूप वेला वचनमब्रवीत् ।२
महीहृति प्रियं मत्वा कृष्ण शं नृप दुष्प्रियम् ।
त्वया मे घातिनी भर्ता ब्रह्मान्दी महाबलः । ३
महीराजसुत धूर्तस्तारकाद्यै महाबलैः ।
नारीवेष च चामुण्डी धुंधुकारेण कंरितः ॥४
स्वामिन प्रति चागम्य त जग्मुश्चद्यनाप्रियम् ।
कुरुक्षेत्रं स्थितः स्वामी महत्यां मूर्छयान्वितः ।
तस्माद्यूयं मया सार्द्धं गातुमर्हथ तं प्रति ॥५
इति घोरतम वाक्य श्रुत्वा सर्वे शुचान्विताः ।
धिग्भूपति च मलनां ताभ्यां नो घातितः सखा ॥६
इत्युक्त्वोच्चैश्च रुरुदुः कृष्णांशाद्या महाबलाः ।
पत्राणि प्रेषयामासुः स्वलीयान्पतीन्प्रति ।

इस अध्याय में चन्द्रवंश के आदि समस्त नृपों के अन्तिम महान् घोर संग्राम और उसमें प्रायः समस्त राजाओंके क्षय हो जाने का वृतान्त

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का वर्णन किया जाता है। सूतजी ने कहा-कृष्णांश के बत्तीस वर्ष-की अवस्था वाला हो जानेपर योग रूपिणी वेला नाम धारिणी शुभनारी जो कि हरि सागर में संस्थित थी महावती में आई और वहाँ उसने सभामें प्रवेश किया था।१। इसी बीच में महान् बल वाले कृष्णांश आदि वहाँ प्राप्त हो गये थे। बेला ने राजा परिभल को प्रणाम करके वचन कहे थे।२। हें नृप! आपने महीपति को अपना प्रिय समझ कर और कृष्णांश को दुष्प्रिय मान कर महान् बलवान् मेरे स्वामी ब्रह्मानन्द को मरवा दिया है।३। महीराज के पुत्र बड़े ही धूर्त थे जो कि महान् बली तारक आदि से संयुत थे धुन्धुकार के द्वारा नारी वेष को प्राप्तकर ये जाने वाला चामुण्ड इन सबने मेरे स्वामी के पास आकर के छलसे प्रिय हो गये थे मेरा स्वामी कुरुक्षेत्र में स्थित है जो कि बड़ी भारी मूर्च्छा से युक्त है। इसलिये आप मेरे साथ उसके प्रति जाने के योग्य होते हो।४-५। इस प्रकार के घोरतम वाक्य को सुनकर सब शोक से युक्त हो गये थे। इस राजा मलना को धिक्कार है जिन दोनों ने हमारा सखा मरवा डाला है।६। इस प्रकार से कह कर कृष्णांश आदि जो महान् बलवान् थे वे सब ऊँचे स्वर से उठे थे। और उन्होंने अपने भूपों के प्रति पत्रों को भेजा था।७।

क्रोधयुक्ता तदा बेला लिखित्वा पत्रमुल्वणम्।
महीराजाय सम्प्रेष्य मलनागेसमागमत्।।८
तत्पत्रं च महीराजो वाचयित्वा विधानतः।
ज्ञात्वा तत्कारणं सर्वं तन्निशम्य विशाम्पतिः।।९
चिता कलेवरं प्राप्य सुखनिद्रां व्यनाशयत्।
आहूय भूपतीन्सर्वान्घोरयुद्धान्मुखोऽभवत्।
चतुर्विंशतिलक्षैश्च शरैर्भूपसमन्वितः।
कुरुक्षेत्रं ययौ शीघ्रं धृतराष्ट्रांशसम्भवः।।११
तथा परिमलो भूपो लक्षषोडशसैन्यपा।
द्रुपदांशो ययौ शीघ्रं वेलया स्वकुलैः सह।।१२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्यमन्तपञ्चके तीर्थे शिवराणि चकारह
ब्रह्मानन्दः स्थितो यत्र सताधिध्यानयत्परः ॥१३
गङ्गाकुले च ते सर्वे कौरवांशा महाबलाः ।
शिवराणि विचित्राणि चक्रुस्ते विजयैषिणः ॥१४

उस समय क्रोध से युक्त बेला ने बहुत ही उल्वण एक पत्र लिखा था जो कि महीराज के लिये भेजा गया था और वह मलनाके घरमें आ गई थी।८। उस पत्र को महीराज ने विधान से बँधवाया था। उसका समस्त कारण जानकर और क्षत्रियों के स्वामी ने यह सब श्रवण करके चिन्ता के कलेवर को प्राप्त कर लिया था। सुखपूर्बक जो निद्रा थी उस का एकदम विनाश कर दिया था। उसने समस्त भूपतियों को बुलवाया और महावीर युद्ध करनेके लिए उन्मुख होगया था।९-१०। वह धृतराष्ट्र के अंश से समुत्पन्न चौवीस लाख शर तथा भूपतियों से समन्वित होकर। शीघ्र ही कुरुक्षेत्र में पहुंच गया था।११। उसी प्रकार राजा परिमल भी सोलह लाख सेना का स्वामी जो कि द्रुपद का अंश था बेला औप अपने कुल वालों के साथ शीघ्र ही वहाँ चला गया था १२। वहाँ स्यमन्त-पञ्ज तीर्थ में शिविर बनाये जहाँ पर कि ब्रह्मानन्द समाधि में ध्यान तत्पर स्थित थ। ।१३। गङ्गा के तट पर वे सब कौरवांश महान् बलवान् विजयकी इच्छा वाले थे और उनने वहाँ पर अपने शिविर किये थे।१४

कृत्वा ते कार्तिकीस्नानं दत्वा दानान्यनेकशः ।
मार्गकृष्णाद्वितीयां युद्धभूमिमुपाययुः ॥१५
विष्वक्सेनीवभूपालो लहरस्तत्र चागतः ।
कौरवांशाश्च तत्पुत्राः षोडशैव महाबलाः ।
पूर्वजन्मनि वन्नाम तन्नाम्ना प्रश्रिता इह ॥१६
दुस्सहो दुश्शलश्चेव जलसन्धः सम सहः ।
विदस्तथानुबिंदश्च सुबाहुर्दुष्प्रधर्षणः ॥१७
दुर्मर्षणश्वं दुष्कर्णः सोमकीर्तिरनूदरः ।
शलः सत्वो विवित्सञ्च क्रमात्ज्ञेया महाबलाः ॥१८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तोमरान्वयभूपालो वाह्लीकपतिरागतः ।
त्रिलक्षेश्च तथा सैन्येः सप्तपुत्रैश्च भूपतिः ॥१६
चित्रोपचित्रौ चित्राक्षश्चारुश्चित्रः शरासनः ।
सुलोचनः सवर्णश्च पूर्वजन्मनि कौरवाः ॥२०
तेषामन्शाः क्रमाज्जाता अभिनन्दनदेहजाः ।
महानन्दश्च नन्दश्च परोनन्दोपनन्दकौ ।
सुनन्दश्च सुरानन्दः प्रनन्दः कौरवांशकः ॥२१

उन सब ने वहाँ. कार्तिकी पूर्णिमा का स्नान किया और अनेक प्रकार के बहुत से दान दिये थे । मार्ग कृष्णपक्ष की दौज के दिन वे सब युद्ध स्थलमें उपस्थित हो गये थे :१५। विष्वक्सनीय राजा लहरभी वहाँ पर आया था । उसने कौरवांश पुत्र सोलह ही महान् बलवान् थे । इनका पूर्व जन्म में जो भी कुछ नाम था उसी नाम से यहाँ अब भी प्रसिद्ध हुये थे ।१६। उनके नाम ये हैं—दुस्सह-दुश्शल-जलसन्ध-समसह-विन्द-अनुविन्द सुवाहु-दुष्प्रधर्षण-दुर्भषण-सोमकीर्ति - अनदूर-शल-सत्व-विथत्सु—ये सब ही क्रम से महा बलवान् थे ।१७-१८। तोमर वंश का राजा वाह्लीक देश का स्वामी वहाँ आया था । वह तीन लाख सेना और सात पुत्रों से युक्त भूपति था ।१९। चित्र-उपचित्र-चित्राक्ष चारुचित्र-शरामन सुलोचन-सवर्ण ये सब पूर्व जन्म में कौरव थे ।२०। उनके अंश क्रम से समुत्पन्न हुये थे । जो कि अभिनन्दन के देहसे उत्पन्न हुये थे.। महानन्द—नन्द—परानन्द—उपनन्दक—सुनन्दक—सुरानन्द प्रनन्द ये सभी कौरवों के अंश थे ।२१।

नृपः परिहारवंशायो मायावर्मा महावली ।
लक्ष सैन्ययुतः प्राप्तो दशपुत्रसमन्वित ॥२२
दुर्मदो दुर्विगाहश्च नन्दश्च विकटाननः ।
चित्रवर्मा नुवर्मा च सुदुर्मोचन् एव च ॥२३
ऊर्णनाभः सुनाभश्च चापनन्श्च कौरवाः ।
तेषामंशाः क्रमाज्जाताः सुता अङ्गपतेः स्मृताः ॥२४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मत्तः प्रमत्तः उन्मत्तः सुमत्तो दुर्मदस्तथा ।
दुर्मुखो दुर्द्धरो वायुः सुरथो विरुथः क्रमात् ॥२५
शुक्लवन्शाभूपाली मूलवर्मा समागतः ।
लक्षसैन्यश्च वलवान्दशपुत्रसमन्वितः ॥२६
अयोवाहुर्महाबाहुश्चित्राङ्गश्चित्रकुण्डलः ।
चित्रायुधो निषङ्गी च पाशीवृन्दारकस्तथा ॥२७
दृढ़वर्मा दृढक्षतः पूर्वजन्मनि कौरवाः ।
तेषामंशा मही जाता गृहे ते मूलवर्मण ॥२८

परिहर वंश होने वाला नृप माया वर्मा महान् बली था। वह अपने दश पुत्र और अपनी एक लाख सेनाके साथ इस युद्ध स्थलमें प्राप्त हुआ था ।२३। दुर्मंद-दुर्विगाह-नन्द-विकटान—चित्र। वर्मा—सुवर्मा सुदर्मोचन-ऊर्णनाम-सुनाम-उपनन्द ये सभी कौरव तथा उनके—अंश से उत्पन्न हुये थे। और ये राजा अङ्गपति के पुत्र हुये थे ।१४। उन्मत्त-मत्त-प्रमत्त-सुनत्त-दुर्मद-दुर्मुख—दुर्धर-वायु—सुरथ—विरथ ये क्रम से हुये थे ।२५। शुक्ल वंश का भूपाल मूलवर्मा नाम वाला वहाँ युद्ध भूमि में आया था। एक लाख सेना इसके साथ थी और इसके भी दश पुत्र थे। जो बड़े बलवान् थे उनको भी साथमें लेकर आया था ।२६। उनके नाम अयोवाहु—महाबाहु-चित्रांग-चित्रकुण्डल-चित्रायुध-निषङ्गी-पाशी—वृन्दारक—दृढवर्मा—दृढक्षत्र थे। ये सब पहिले जन्म में कौरव थे। उनके अंश अब पृथ्वीपर उत्पन्न हुये थे जो कि मूलवर्मा के घर में जन्म ग्रहण किया था ।२७-२८।

वलश्च प्रवलश्चैव सुवलोवलावान्वली ।
सुमूलश्च महामूलो दुर्गौ भीमौ भयङ्कर ॥२९
कैकयश्चन्द्रवशायो लक्षसैन्यसमन्वितः ।
दशपुत्रान्वितः प्राप्तः कुरुक्षेत्रे महारणं ॥३०
भीमवेगो भीमवलो बलार्को बलवर्द्धनः ।
उग्रायुधो दण्डधरी दृडसंघो महोधर ॥३१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जरासन्ध सत्यसंघः पूर्वजन्मनि कौरवाः ।
तेषमंशाः समुद्भूताः कैकयस्य गृहे शुभे ।३२
कामः प्रकामः संकामो निष्कामो निरपत्रपः ।
जयश्च विजयश्चैव जयन्तो जयवाञ्छयाः ।।३३
नागवंशीय भूपालो नामवर्मा समागतः ।
लक्षसेनान्वितः प्राप्तो दशपुत्रसमन्वित ।।३४
पूर्वजन्मनि यन्नाम्ना तन्नाम्ना कौरवा भुवि ।
पुण्ड्रदेशपतेतः पुत्रा जातः दश शिवाज्ञया ।।३५

बल-प्रबल—सुबल-बलवान्—बली-सुमूल—महामूल- -दुर्ग—भीम भयङ्कर ये नाम थे ।२६। चन्द्रवंश का एक कैकय राजा था जो कि एक लाख सेना से समन्वित और दश पुत्रों से युक्त उस कुरुक्षेत्र महा युद्ध में प्राप्त हुआ था ।२०। भीमवेग–भीलबल-वलाको-बलवर्धन—उग्रायुल—दण्डधर-दृढ़सन्ध-महीधर-जरासन्ध-सत्यसंध ये उन के नाम हैं जो पूर्व जन्म में कौरव थे और अब उनके अंश यहाँ कैकय के घर में उत्पन्न हुये थे ।३१–३२। काम-प्रकार-संकाम-निष्काम-निरपत्रप—जय-विजय-जयन्त बलवान् जय ये उनके नाम हैं। नागवंश में उत्पन्न राजा नाम वर्मा आया था । एक लाख सेना इसकी भी थी और इसके भी दश पुत्र इसके साथ में आये थे ।३३-३४। पूर्व जन्म में उनके ये ही नाम थे वे हीं नाम इसजन्म में भी हुये । ये सब कौरव थे जो कि अंशावतार होकर भूमण्डल में फिर आये थे पुण्ड्र देश के दश पुत्र भगवान् शिव की आज्ञा से समुत्पन्न हुये थे ।३५।

उग्रश्रवा उग्रसेनः सेनाभीर्दुष्परायणः ।
अपराजितः कुण्डशायी विशालाक्षो दुराधरः ।३६
दृढ़हस्त सुहस्तश्च सुतांस्ते नागवर्मणः ।।३७
भद्रकेशः समायातस्तोमरास्वयसम्भवः ।
लक्षसैन्यैर्युतो राजा दशपुत्रसमन्वितः ।।३८
वातवेगः सुवर्चाश्च नागदन्तोग्रयाजकः ।
आदिकेतुश्च वकूशी च कवची क्राथ एव च

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुण्डश्च कुन्डधारश्च कौरवा पूर्वजन्मनि ।
तन्नाम्नाभुवि वै जाया मद्रकेशस्य मन्दिरे ।।४०
नृपः शार्दलमंशीयी लक्षसन्यसमन्वितः ।
पूर्णसलो मागधेशो दशपुत्रान्वितो ययौ ।।४१
वीरवाहुर्भीरथश्चीग्रश्चैव धनुर्धरः ।
रौद्रकर्मा दृढ़ रथोऽलुपश्चाभयस्तथा ।।४२
अनाधृद्धः कुण्डभेदी कौरवाः पूर्वजन्मनि ।
पूर्णमलस्य वै गेहे तन्नाम्ना भुवि सम्भवः ।।४३

उनके नाम—उग्रश्रवा—उग्रसेन—सेनानी—दुष्परायण—अपराजिव-कुन्डायी-विशालाक्ष-दुराधर—दृढ़हस्त—सुहस्त-ये सब नागवर्मा के पुत्र हुये थे ।२६। तोमरीमें समुत्पन्न भद्रकेश भी वहाँ आया था। इसके साथ भी एक लाख सेना थी और इसके भी दश पुत्र साथ में युद्ध स्थल आये थे ।३८। वातवेग—सुवर्चा-नागदन्त-गग्रया—याजक-आदिकेतु—बक्शी कवच—क्राथ—कुन्ड—कुन्डधार—ये सब कौरव थे। इस समय फिर उन्हीं अपने नामों से ये भूमन्डल में मद्रकेश के यहां उत्पन्न हुये थे ।४०। शार्दूल वंश में होने वाला नृप भी एक लाख सेना से युक्त था मगध देश का स्वामी पूर्णमल अपने दश पुत्रों के सहित गया था ।४१। उनके नाम—वीरबाहु—भीरथ—उग्र—धनुर्धर—रौद्रकर्मा—द्रढ़रथ—अलोलुप—अभय—अनाधृष्ट और कुण्ड भेवी थे। पूर्व जन्म से ये कौरव थे। फिर इस जन्म में इन्होंने राजा पूर्णमल के घर में अपना जन्म ग्रहण किया था और उन्हीं पूर्व के नामों से ये भूमि में प्रसिद्ध हुए थे ।४२-४३

मङ्कणत्किन्कन्नरो नाम रूपदेशे महीपतिः ।
चीन देशात्परे पारे रूपदेशः स्मृतो बुधैः ।
नरः किन्नर जातीयो वसति प्रियदर्शनः ।।४४
मङ्कणश्च तदा प्राप्तः किन्नरायुतः संयुतः ।
अष्टपुत्रान्वित प्राप्तो यत्र सर्वनृपाः स्थिताः ।।४५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विरावी प्रथमश्चैव प्रयाथी दीर्घरोमकः ।
दीर्घं बाहुर्महाबाहुर्व्यूढोराः कनकध्वजः ।।४६
पूर्वजन्मानि यन्नाम्ना तन्नाम्ना किन्नरा भुवि ।
विरजोश्च यो जातो मङ्कणो नाम किन्नरः ।४७
नेत्रसिंहः समायातो लक्षसैन्यसमन्वितः ।
शल्यांशः स तु विज्ञेया शार्दूलान्वयसम्भवः ।।४८
सदा गणपति राजा लक्षसैन्यसमन्वितः ।
सम्प्राप्तः शकुने रक्षस्त्यक्त्वा गेहे स्वपुत्रकान् ।।४९

मङ्कण किन्नर नाम नाला रूप देश में राजा था। चीन देश से परे पार में बुधों के द्वारा रूप देश कहा गया है। वहाँ किन्नर जातीय नृपति नर के रूप प्रियदर्शन निवास करता है। उस समय वह मङ्कण दश सहस्र किन्नरों के सहित आया था उसके आठ पुत्र थे उनको भी उनके नाम—विराची—प्रथम प्रमाथी—दीर्घरोमक—दीर्घबाहु—व्यूढोरा—कनकध्वज थे, पूर्वजन्म में जिनके जो नाम थे उन्हीं नामों से ये भूमण्डल में किन्नर हुए जो विरजोश था वह मङ्कण नाम वाला किन्नर उत्पन्न हुआ था ।४५-४७। एक लाख सेना से समन्वित होकर वहाँ नेत्रसिंह आया था। उसे शल्य का अंश समझना चाहिये। वह शार्दूल वंश में समुत्पन्न हुआ था ।४८। उस समय में राजा गणपति एक लाख सेना से युक्त वहाँ आया था जो कि शकुनि अंश था। इसेने अपने पुत्रों को घर में ही छोड़ दिया ।४९।

मपूरध्वज एवापि लक्षसैन्यसमन्वितः ।
मकरन्दं गृहे त्यक्त्वा विराटांश समागता ।।५०
वीरसेनः समायातः कामसेनसमन्वितः ।
लक्षसेनान्वितस्तत्र चोग्रसेनांसम्भवः ।।५१
लक्षणश्च समायातः सप्तलशवलैर्युतः ।
संत्यज्य पद्मिनी नारी महाकष्टेन भूपति ।।५२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तालनो धान्यपालश्च लल्लसिंहस्तथैव च ।
भीमस्यांशो युयुत्सोश्च कुंतिभोजस्य वै क्रमात् ।।५३
आल्हादश्च समायातः कृष्णांशेन समन्वितः ।
जलन्तेन च वौ वीरो लक्षसैन्यान्वितो वली ।।५४
जगन्नायक एवापि शूरायुतसमन्वित. ।
संम्प्राप्तो भगदत्तांशो गौतमान्वयसम्भवः ।।५५
अन्ये च क्षुद्रभूपाश्च सहस्राढ्याः पृथकपृथक् ।
कुरुक्षेत्रं परं स्थानं संयुत स्थानं संयतुमदविह्वलाः ।।५६

एक लाख सेना सहित राजा मयूरध्वज भी मकरन्द को घर छोड़ कर वहाँ आया जो कि राजा विराट का अंश था ।५०। कामसेन के सहित वीरसेन भी आया । इसके साथ भी एक लाख सेना थी । यह उग्रसेन का अंश था ।५१। लक्ष्मण भी अपनी सात लाख सेना से सज्जित होकर वहाँ आया इस राजा ने अपनी पद्मिनी रानी को महान कष्ट से वहाँ छोड़ दिया ।५२। तालन-धान्यपाल और लल्लसिंह क्रम से भीमसेन-युयुत्स और कुन्तिभोज के अंश थे । ये सभी वहाँ आये थे ।५३। कृष्णांश को साथ लेकर आल्हाद आया ।५४। जगन्नाथ का भी दससहस्र शूरोंसेअन्वित सम्प्राप्त हुआ था यह भगदत्त का अंश औरगौतम वंश में उत्पन्न होने वाला था इनके अतिरिक्त अन्य क्षुद्र (छोटे) राजा भी आये जो अलग अलग सहस्रों शूरों से युक्त थे । ये युद्ध से मद में विह्वल होकर कुरुक्षेत्र के परम स्थान में चले गये ।५६।

मूलवर्मा च नृपतिः सपुत्रो लक्षसैन्यपः ।
नृपं परिमल प्राप्य संयुक्तो देहलीपतेः ।।५७
कैकंयो लक्षसेनाढ्यः सपुत्रो नृपतिः स्वयम् ।
नृपं परिमलं प्राप्य स युद्धार्थमुपस्थितः ।।५८
नेत्रसिंहश्च नृपतिः स वीरो लक्षसैन्यपः ।
मयूरध्वज एवापि लक्षपः शशिवर्शिनम् ।।५९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वीरसेनश्च लक्षाढ्या ततुत्रश्चांद्रिपक्षगः ।
लक्षणः सप्तलक्षाढ्योः युद्धार्थं समुपस्थितः ॥६०
आल्हादो लक्षसैन्याढ्यः पक्षपचद्रवंशिनः ।
द्विलक्ष संयुतों राजा चन्द्रवंशो रणोन्मुखः ।
एवं षोडशलक्षाढ्यः स्थितः परिमलो रणे ॥६१
लहरो भूपतिश्रेष्ठो लक्षपा पुत्रसंयुतः ।
महीराजमुपागम्य युद्धार्थं समुपस्थितः ॥६२

मूलवर्मा नृप पुत्र के सहित लाख सेना का स्वामी था। देहलीपति से संयुत होकर नृप परिमल से भिड़ गया था।५७। कैकेय एक लाख सेना से पूर्ण पुत्रों के सहित स्वयं राजा परिमल को प्राप्त युद्ध के लिये उपस्थित हो गया था।५८। वीर नेत्रसिंह लाख सेना का स्वामी तथा एक लाख सेना का पति मयूरध्वज भी शशिवंशी से युद्धार्थ भिड़ गये थे।५९। लक्ष सेना से युक्त बीरसेन पुत्रों के सहित चान्द्रि के पक्ष में था। लक्षण सात लाख सैन्य से पूर्ण युद्ध के लिये यहाँ पर उपस्थित हो गया था।६०। एक लाख सेना से युक्त आल्हाद चन्द्रवंशी राजा के पक्ष में जाने वाला था। दो लाख से युक्त राजा चन्द्रवंश रणोन्मुख हो गया था। इस प्रकार राजा परिमल सोलह लाख सेना से पूर्ण रण में स्थित हुआ था।६१। लहर राजाओं में श्रेष्ठ एक लाख सेना का अधिपति और पुत्रों के सहित महीराज के पास पहुँचकर युद्ध के लिये प्रस्तुत हो गया था।६२। अभिनन्दन भी पुत्रों के सहित एकलाख सेना का मालिक था। माया वर्मा राजपुत्रों के सहित एक लाख सेना का स्वामी था।६३।

अभिनन्दन एवापि सपुत्रो लक्षसैन्यपः ।
सायामबर्मा च नृपतिः सपुत्रोलक्षसैन्यपः ॥६३
नागवर्मा समायातः सपुत्रो लक्षसैन्यपः ।
मद्रकेशः सपुत्रश्च लक्षसैन्यो रणोन्मुखः ॥६४
पूर्णमलः सपुत्रश्च लक्षपश्चैव पक्षगा ।
मंकणः किन्नो नाम सपुत्रस्तत्र संस्थितः ॥६५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गजराजः समायातो महीराज हि लक्षयः ।
धुन्धुकारः समायातः पञ्चलक्षनृतिः स्वयम् ॥६६
पुत्रःकृष्णमारस्य भगदत्तः समागतः ।
त्रिलत्रवलसंयुक्तो महीराज महीपतिम् ॥६७
दलवाहनपुत्रश्च देशगोपाल संस्थितः ।
अङ्कदस्तत्र सम्प्राप्तः सायुतो देवकी प्रियः ।
महीराजमुपागम्य युद्धार्थं समुपस्थितः ॥६८
कलिङ्गश्च नृपः प्राप्तस्त्रिकोणश्च तथैव च ।
श्रीपतिश्च तथा राजा श्रोतारश्च तथा गतः ॥ ६
मुकुन्दश्च सुकेतुश्च रुहिलो गुहिल तथा ।
इन्दुवारश्च वलवाञ्जयन्तश्च तथाविधः ।
सर्वे दशसहस्रा साढ्या महीराजमुपस्थिताः ॥७०

नागवर्मा पुत्रों के सहित लाख सैन्य से युक्त वहाँ आ गया था और मद्रकेश सपुत्र लाख सेना समन्वित होकर रण के ऊन्मुख हुआ था ।६४। पूर्णमल एक लाख सेना से सज्जित पुत्रों के सहित पक्ष में गमन करने वाला था । मङ्कण किन्नर नाम वाला पुत्रों के सहित वहाँ संस्थित था । ।६५। राजराज महीराज के पास लाख सेना का अधिप आया । धुन्धुकार पाँच लाख का पति स्वयं आया ।६६। कृष्णकुमार का पुत्र भगदत्त आया जो महीराज महीपति के पास तीन लाख सेना से सज्जित होकर आया था ।६७। गोपाल संस्थित दलवाहन का पुत्र अङ्गद देवकीका प्रिय दस हजार सेना से युक्त आया था । महीराज के पास जाकर युद्ध के लिए उपस्थित हुआ ।६८। कलिंग का राजा तथा त्रिकोण श्रीपति और श्रीतार भी यहाँ प्राप्त हो गये थे । मुकुन-सुकेतु-रुहिल गुहिल इन्दुवार तथा बलवान् जयन्त ये सब सहस्र-२ सेना से युक्त होकर महीराज के पास युद्धार्थ उपस्थित हुए थे ।६९-७०।

महीराजस्य पक्षे तु सहस्रक्षुदभूमिपाः ।
ते तु सांहस्रसेनाढ्या महीराजमुपस्थिताः ॥७१
तेषां मध्ये च वै भूपान्द्विशतान्देहली प्रति ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ससैन्यान्प्रेषयामास राष्ट्र रक्षणहेतवे ।
एवं स देहलीराजश्चतुर्विंशतिलक्षपः ॥७२
युद्धमष्टादशाहानि सञ्जात सर्वसंक्षयम् ।
शृणु युद्धकथां रम्यां भृगुवर्य सुविस्तरात् ॥७३
मार्गकृष्णद्वितीयायां महीराजो महाबल :
आहूय लहरं भूपं बचनं प्राह निर्भयः ॥७४
भवान्सपुत्रः सेनाढ्यो धुंधुकारेण रक्षितः ।
चामुण्डेन युतो युद्धो गन्तुमर्हति सत्तमः ।
इति श्रुत्वा ययौ शीघ्र कुरुक्षेत्रे महारणे ॥७५
तदा परमिलो राजा मयूरध्वज मेव हि ।
समाहूय वकः प्राह श्रुणु पार्थिवसमम ॥७६
कृष्णांशेन जयंतेन देवसिंहेन रक्षितः ।
स भवाल्लंक्षसन्ताढ्यो गन्तुमर्हति वै रणे ॥७७

महीराज के पक्ष में एक सहस्र छोटे राजा थे। वे सब २ सहस्र सेना से युक्त थे जो कि महीराज के पास उपस्थित हुए थे ।७१। उनके मध्य में दो सौ राजाओं को सेना के सहित राष्ट्र की रक्षा के लिए महीराज ने देहली को भेज दिया था। इस प्रकार से वह देहली का राजा चौबीस लाख सेना से युक्त था। यह युध्द अठारह दिन पर्यन्त हुआ जो कि सबका संक्षय करने वाला था। हे भृगुवर्य! अब इस रम्य युद्ध की कथा को तुम विस्तार के साथ श्रवण करो ।७३। मार्गशीर्ष कृष्ण द्वितीया के दिन महान् बलवान् महीराज ने लहर राजा को बुलाकर निर्भय होते हुये यह बचन कहे ।७४। आप पुत्रों के सहित सेना से पूर्णतया युक्त हैं और धुन्धुकार के द्वारा रक्षित है। आप चामुण्ड को साथ लेकर युद्धभूमि में हे सत्तम! जाने के योग्य होते हैं। यह बचन सुनकर वह शीघ्र ही कुरुक्षेत्र के महारण में चला गया ।७५। उसी समय में राजा परिमल ने मयूरध्वज को बुलाया और वह उससे यह बचन बोला—हे पार्थिव श्रेष्ठ! आप मेरे बचन श्रवण करो। आप

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृष्णांश-जयन्त और देवसिंह के द्वारा रक्षित होते हुये एक लाख सेना से युक्त होकर आप रण में जाने के योग्य होते हैं ।७६-७७।

इति श्रुत्वा तु वचनं मयूरध्वज एव हि ।
लक्षसैन्यान्वितः प्राप्तो लहरं नृपति प्रति ॥७८
तयोश्चासीन्महद्युद्धं सेनयोरुभंशो रणे ।
सेना तु लक्षवीरस्य तत्र युद्धे प्रकीर्तिता ॥७६
एको रथो गजास्तत्र ज्ञेया पञ्चशतं रणे ।
हयाश्च पञ्चसाहस्रा पत्तयस्तद्गुणा दश ।
एते सैन्या नरा ज्ञेया सैन्यपांश्च शृणुष्व भोः ॥८०
दशानां पञ्चराणां च पतिर्नाम्ना स पत्तिमः ।
पञ्चानां च हयानां च पतिर्नाम्ना स गुलमपः ॥८१
पञ्चानां च गनानां च पतिर्नाम्ना गजाधिपः ।
एतैः सार्द्धं रथी ज्ञेयो रणेऽस्मिन्वारुणे कलौ ॥८२
उष्ट्रारूढाः स्मृता दूताश्चत्वारिंशच्च तद्बले ।
शतघ्न्य स्तत्र साहस्रास्तेषां मध्ये पृथक्पृथक् ।
षट्त्रिंशद्वै पदचरास्तेषां कर्माणि मे शृणु ॥८३
दश गोलकदातारो दशतत्पुष्टिकारकाः ।
दश चार्द्रकरास्तः वै त्रयस्ते वह्निदायिन ।
त्रयो दृष्टिकरा ज्ञेयास्त्रियामेषु पृथक्पृथक् ॥८४

मयूरध्वज राजा परिमल के इस आज्ञा वचन को सुनकर एक लाख सेना से सुसज्जित होकर राजा लहर के मुकाबले में शीघ्र ही वह पहुँच गया था ।७८। रण में उन दोनों सेनाओं में उन दोनों का महान् युद्ध हुआ । लक्षबीर की सेना उस युद्ध में प्रकीत्तित हुई ।७६। एक सैनिक उसके दस गुने थे इतने तो सेना के नर थे । अब सेना के स्वामियों के विषय में श्रवण करो । दश पदचरों का पति नामी वह पत्तिप कहा जाता है ।८८। पाँच अश्वों का पति नाम से गुलमप कहलाता हैं ।८१। पाँच गजों का स्वामी गजाधिप इस नाम से प्रसिद्ध है । इतनी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के साथ इस दारुण काल में युद्ध में रथों का होना जानना चाहिये ।८२। उस सेना में उष्ट्रों पर आरूढ़ दूत चालीस थे । वह शतघ्नी (तोपें) एक सहस्रथीं और उनके मध्यमें पृथक्-२ छत्तीस पदचर थे । अब उनके कर्मों के विषय में श्रवण करो ।८३। दश तो गोलोंके देने वालेथे । दश उसकी पुष्टि के करने वाले थे । दश उनको आर्द्र करने वालेथे और तीन उनमें अग्नि लगाने वाले दग्ध करके चलाने वाले थे । तीन दृष्टिकर अर्थात निगरानी रखने वाले तीन प्रहरों में पृथक्-पृथक् होते थे ।८४।

शेषा शूद्रास्तु सेनायां शूरकृत्यपरायणाः ।
एवं च लक्षबीराणाँ सेना यत्र प्रकीर्तिता ॥८५
तत्रासीत्तुमुलं युद्ध धर्मेण च समन्ततः ।
प्रातःकालात्समारभ्य मध्याह्नं सैन्ययोर्द्वयोः ॥८६
तत्पश्चाद्याममात्रेण सैन्यपा युद्धमागताः ।
तत्पश्चाच्च महाशूरा धुंधुकारादयो बलाः ॥८७
याममात्रं च युद्धाय संस्थिता रणमूर्धनि ।
चामुण्डेन च कृष्णांशो धुन्धुकारेण चेन्दुलः ॥८८
भगदत्तेन वै देवः कृतवान्युद्धमुत्तमम् ।
सायंकाले तु सम्प्राप्ते सर्वे शूराः क्षयं गतः ॥८९
कृष्णांशस्तत्र चामुण्ड जित्वा तु लहरात्मजान ।
षोडशैव जघानाशु घटीमात्रेण वीर्यवान ।
दध्मौ शंख प्रसन्नात्मा लक्षणान्तमुपाययौ ॥९०
चामुण्डो धुन्धुकारश्च भगदत्तो युतः शतैः ।
महीराजमुहागम्य सुषुपुर्निशिनिर्भयाः ॥९१

इनके अतिरिक्त शेष लोग सेनाओं के शूरों के कृत्यों में परायण रहने वाले शूद्र लोग थे । इस प्रकार से लाख वीरों की सेना वहाँ पर कही गई हैं ।८५। वहाँ बड़ा भारी तुमल युद्ध सभी ओर से धर्म के साथ हुआ था । प्रातः काल से आरम्भ करके दोनों सेनाओं का मध्याह्न तक होता है । इसके पश्चात् फिर याम मात्र के लिये सैन्यप लोग युद्ध

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थल में आये थे। इसके पीछे एक प्रहर के लिये धुन्धुकार आदि महान् वलवान् आते थे। और रण के मस्तक पर डटकर युद्ध किया करते थे। चामुण्ड के साथ कृष्णांश ने और धुन्धुकार के साथ इन्दुल ने तथा भगदत्त के साथ देवसिंह ने उत्तम युद्ध किया। सायंकाल प्राप्त होने पर समस्त शूर क्षय को प्राप्त हो गये थे।८६-८९। यहाँ पर कृष्णांश ने चामुण्ड को जीतकर लहर के सोलहों पुत्रों को मार दिया और एक घटी मात्र में ही वीर्यशाली ने सबको खत्म कर दिया। उसने प्रसन्न होकर विजय का शङ्ख बजाया और लक्षणान्त को आ गया था।९०। चामुण्ड धुन्धुकार और भगदत्त सौ से युक्त होकर महीराज के पास जाकर निर्भय होते हुए रात्रि में सो गये थे।९१।

इन्दुलो देवसिंहश्च सहस्रैः संयुतौ मुदा।
गत्वा परिमल भूप रात्रा सुषुपतुस्तदा ॥९२
प्रातःकाले तु संप्राप्ते तृतीयायां भयङ्करे।
महीराजोस्तताहूय नृप गजपति बली ॥९३
वचनं प्राह भी राजेंस्त्वं त्रिवारै-सुरक्षितः।
स्वकीयैर्लक्षसैश्चगंतुतर्हसि वै रणे ॥९४
तदा परिमलो भूपो नेत्रसिंह महीपतिम्।
युद्धायाज्ञापयामास कृष्णांशाद्यैः सुरक्षितम् ॥९५
तयोश्च सोत्महयुद्धं सेनायारुभयो क्रमात्।
हय हयैः क्षयं जग्मुर्गजाश्चैव तथा गजैः।
पच्चरा पच्चरः सार्द्धं शतघ्न्यश्च शतघ्निभिः ॥९६
अपराह्ले मुनिश्रेष्ठ नेत्रसिंहो महाबलः।
महागजं गजपति गत्वा युमचीकरत् ॥९७
परस्परं च विरथो संजिन्नधनुषौ तदा।
खङ्गहस्तौ मही प्राप्य चक्रतू रणमुल्वणम्।
अन्योन्येन वध कृत्वा स्वर्गलोकमुपागतो ॥९८

इन्दुल-देवसिंह सहस्रों से संयुक्त होकर आनन्द के साथ राजा परिमल के साथ पहुँचकर उस समय में शयन कर गये थे।९२। प्रातःकाल के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्प्राप्त होने पर तृतीया के दिन के भयङ्कर थी, उस समय वली महीराज ने गजपति नृप को बुलाकर यह बचन कहे थे-हे राजन् ! तुम तीन वीरों में रक्षित होते हुये अपनी लाख सेना से युक्त होकर रण-स्थल में जाने के योग्य होते हो ।९३-९४। उस समय परिमल राजा ने नेत्रसिंह महीपति को युद्ध के करने।की आज्ञा दी थी जो कि कृष्णांश आदिके द्वारा सुरक्षित होकर युद्ध करे ।९५। उन दोनों का क्रम से सेनाओं में महान् युद्ध हुआ था । अश्व अश्वों के द्वारा क्षय कों प्राप्त हुए थे, तथा गज गजों के द्वारा क्षीण हो गये थे, पच्चर पच्चरों के द्वारा और तोपें तोपों के द्वारा क्षय को प्राप्त हुए । हे मुनिश्रेष्ठ ! अपराह्न में महान बलवान् नेत्रसिंह ने महाराज गजपति के पास आकर युद्ध किया ।९७। ये दोनों ही आपस में रणहीन और छिन्न धनुष वाले होकर हाथों में खड्ग लेकर भूमि में पहुँचकर उल्वण युद्ध कर रहे थे । एक-दूसरे का बध करके दोनों ही स्वर्गलोक को प्राप्त हो गये थे ।९८।

इन्दुलब्तं तु चामुण्ड देवी व धुन्धुक तथा ।
कृष्णांशो भगदत्तं च जित्वा राजानमाययु: ॥९९
शेषै: पञ्चशतै: शूरैस्तु: शार्द्ध लक्षणं प्रति ।
पराजिताश्च ते सर्वे सहस्रै : सहित ययु: ॥१००
प्रात:काल तु संप्राप्रे महीराजो महाबल: ।
मायावर्माणमाहूय वचन प्राह निर्भय: ॥१०१
भवान्दशसुतैर्वीरैलक्षसैन्यश्च संयत् ।
सर्वशत्रुविनाशाय गतुमर्हति सत्तम ।
इति श्रुत्वा स नृपर्विद्यान्सर्वाद्य चाययौ ॥१०२
दृष्ट्वा परिमला भूपो मायावर्माणमागतम् ।
जगन्नयकमाहूय वचन प्राह निर्भय: ॥१०३
भवान्दशससस्रैश्च सार्द्ध तैस्त्रिभिरन्वित: ।
गन्तुमर्हति युद्धाय शीघ्रं माद्विजयं कुरु ॥१०४
इति श्रुत्वा ययौ शीघ्र सेनयोरुभयोर्महत् ।
युद्धं चासीन्मुनिश्रेष्ठ याममात्रं भयानकम् ॥१०५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्दुल ने चामुण्ड को देवसिंह ने धुन्धुक को और कृष्णांश ने भगदत्त को जीत कर के राजा के पास आ गये थे। शेष जो पाँच सौ शूर थे उनके साथ लक्षण के प्रति चले गये। पराजित वे सब सहस्र के साथ गये थे।९९-१००। प्रातःकालके होने पर महाराज महाबली महीराज ने माया वर्मा को बुलाकर यह वचन निर्भयता पूर्वक कहे—आप अपने वीर दश पुत्रों के और एक लाख सेना के सहित सज्जित होकर हे सत्तम ! आज शत्रुओं के विनाश के लिये युद्ध स्थल में जाने के योग्य हो। यह आदेश वचन सुनकर वह राजा युद्ध के वाद्यों का वादन करा कर वहाँ आ गया।१०१;१०२। राजा परिमल ने जब देखा कि आज रणभूमि में माया वर्मा आ गया है इसने जगन्नायकका समाह्वान करके उसने कहा—आप दस सहस्र के साथ उन तीनों के द्वारा सुरक्षित होते हुये युद्ध करने के लिये जाने के योग्य हैं और बहुत ही शीघ्र मेरी विजय करिये।१०३-१०४। इस आज्ञा का श्रवणकर वह बहुत ही शीघ्र वहाँ गया ओर उन दोनों का बड़ा महान् डटकर युद्ध हुआ था। हे मुनिश्रेष्ठ ! वह केवल प्रहरतक अत्यन्त भयानक युद्ध हुआ था।१०५।

हतास्ते दशसाहस्राः कृष्णांशाद्यः सुरक्षिताः।
शङ्खान्दध्मुश्च मे सर्वे चाङ्गदेशनिवासिनः ॥१०६
एतस्मिन्नतरे धीराः कृष्णांशाद्यास्तुरीयकाः।
याममात्रेण सजध्नुर्लक्षसैन्य रिपोस्तदा ॥१०७
अपराह्णे महाराजो मायावर्मा सुतैः सह।
कृष्णांशं देवसिंह च सम्प्राप्तो जगन्नायकम् ॥१०८
अथाङ्गभूप दशपुत्रयुक्तं कृष्णांश एवाशु जगाम शीघ्रम्।
हयस्थितो वीरवरः प्रमाथी क्लैकजातो मधुसूदनस्य ॥१०९
ततो गभूस्त्रिभिरेव वाणैरताडताड़थन्मूध्नि च पार्श्वयोर्णे।
अमर्षमाणो बलवान्महीपति दंडैर्हतः काल इवाशु सर्पः।११०
हयं समुड्डीय स पुष्करान्तं ततोभ्यगात्तं नृपति रथरथम्।
हयस्थ पातैर्विरथीचकार स एव भूपोऽस्मि रादधानः ॥१११

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वेनासिना बिंदुलमंगशल्यं स कृष्णांशमुवाच वाक्यम् ।
कल्लोलमायात्त व नाशनाय त्वया जिता भूपतयः प्रधानाः ।११२

कृष्णांशादि के द्वारा सुरक्षित वे देश सहस्र वहाँ हत हों गये । उन सब अङ्ग देख के निवासियों ने विजय का शंख बजा दिया था ।१०६। इस बीच में कृष्णांशादि तुरीयक बीरों ने जो परम वीर थे केवल एक ही प्रहर में उस समय शत्रु की एक लाख सेना का हनन कर दिया था ।१०७। अपराह्न में महाराज मायावर्माने अपने पुत्रोंके साथ कृष्णांश देवसिंह और जगनायक के पास सम्प्रात हो गया था ।१०८। इसके अनन्तर दशपुत्रों से युक्त अङ्गदेश के राजा के पास वह कृष्णांश बहुत ही शीघ्र गया । यह वीरों में परम श्रेष्ठ प्रथमन करने वाला अश्व पर समारूढ़ था जो कि भगवान् मधुसूदन की एक कला का अवतार हुआ ।१०६। इसके पश्चात् उस अङ्ग देश के राजा ने अपने तीन ही बाणों के द्वारा मस्तक में और पार्श्वों में प्रहार किया । वह बलवान महीपति अमर्षमान होकर दण्डों के द्वारा काल सर्प की भाँति अति शीघ्र हो अपने अश्व को उड़ाकर वह उस रथ में बैठे हुए नृपति के पीछे पुष्कर के अन्त तक गया । उसने अश्व के पातों से उसे रथ से हीन कर दिया । उसी राजा ने खंग को धारण करते हुए अपने असि के द्वारा विन्दुल के अङ्ग में शल्य करके फिर वह कृष्णांश से यह वाक्य बोला—तेरे नाश के लिये कल्लोल में आया हूं तूने बहुत से प्रधान राजाओं को जीत लिया है ।११०-११२।

तदैव कीर्तिर्भविता ममांशु हत्वा भवत च सुखी भवामि ।
इत्युक्तवन्त नृपति महान्त स्वेनासिना तस्य शिरो जहार ।११३
हतेऽङ्गभूय दश तस्स पुत्रास्तमेव जग्मुर्युधि कौरवांशाः ।
तानागताविंदुल एव पञ्च जघात बाणैस्तु तदा समन्युः ।११४
उभौ च देवस्तु जघान तत्र भल्लेन सिद्धं न नृपात्मजौ च ।
ज्येष्ठ सुतं गौतम एव हत्वा द्वौ यो स कृष्णांश उपाजचान ।११५
शङ्खान्प्रदध्मरुचिराननास्ते प्रदोषकाले शिविराणि जग्मुः ।
श्रमान्वितास्ते सुषुपुर्निशायां प्रातः समुत्थाय स्वकर्म कृत्वा ।११६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गत्वा सभागां नृपति प्रणम्य वाक्यं सनूचुः श्रृणु चन्द्रवंशिन् ।
अद्यैव सेनापतिरस्ति को वै चाज्ञापयास्मान्नृप तस्यगुप्त्यै ।११७
श्रुत्वाह भूपोद्य तु वीरसेनः सकामसेन स्वबलैः समेतः ।
रणः करिष्यत्यचिरेण वीरास्तमात्सुरक्षध्वमरिभ्य एव ।११८
स वीरसेनो नृपति प्रणम्य लक्षैः स्वसैन्यैर्युधि संजगाम ।
तदा महीराजनृपः स नागवर्माणमुवाच तापी ।११९

मेरी कीर्ति तो उस संसार से तभी होगी जब मैं तुझे जीतकर और शीघ्र तेरा हनन करके सुखी होऊँगा । इस प्रकार से कहने वाले उस महान् अङ्गाधिपति का कृष्णांश ने अपने खंश से मस्तक को काट डाला । उस अङ्ग के भूप के मर जाने पर उसके दश पुत्र भी उसी पर टूट पड़े थे जो कि युद्ध में कौरवों के अंश रूप वहाँ आये । उन आये हुओं को पाँचों को तो बिन्दुल ने मार दिया और फिर क्रोध-युक्त ने उस समय में वाणों के द्वारा हनन किया ।११३-११४। दो को देवसिंह ने वहाँ पर मार दिया, जिन नृपो के पुत्रों पर अपने सिद्ध भाले से देवने प्रहार किया । ज्येष्ठ सुतको गोतम ने मारा और जो शेष दो रह गये उनको कृष्णांश ने हनन किया ।११५। सुप्रसन्न मुख वाले उन्हने विजय शङ्खों का वादन किया था और प्रदोष के समय में वे सब अपने शिविरों को चले गये थे । वे उस दिन अन्यन्त परिश्रम से थके हुए थे रात्रि में वहाँ सो गये थे । प्रातः काल में उठकर उन्होंने अपना दैनिक कर्म सम्पन्न किया था ।११६। फिर वे सभा में गये और राजाको प्रणाम किया । वे राजासे यह वाक्य बोले—हे चन्द्रवशी राजन् ! सुनिये, आज का सेनापति कौन होगा । हे नृप ! उसकी रक्षा करने वाले के विषयमें भी अब आप अपनी आज्ञा प्रदान कीजिये । यह सुनकर राजा ने कहा-आज वीरसेन राजा कामसेन के सहित अपनी सेना से युक्त होकर युद्ध करेंगे । इससे वीर शीघ्रही शत्रुओं से उनकी रक्षा करियेगा ।११७-११८ इसके अनन्तर तुरन्त ही बह राजा वीरसेन को प्रणाम करके अपनी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक लाख सेना से समन्वित होकर युद्ध भूमि में चला गया था। उस समय प्रतापी महीराज भूप ने नागवर्मा से कहा ११६

रणाय गच्छासु सुतः समेतो लक्षैः स्वसैन्यैरुत भूपवर्य।
हत्वा रिपु घो·तमं हि वीर पति महान्तंयुधि वीरसेनम् ।१२०
इत्युक्तवंतंनृति प्रणम्य सुवादयामास तदा हि वीर।
तयार्वभूपाशु रणो महान्व सुसेनयोः संकुलयुद्धकर्ताः ।१२१
त्रियाममात्रेण हताश्च सर्वे विमानमारुह्य ययुश्व नाकम्।
हतेषु सर्वेषु च नागवर्मा सुतेषु वै यादबभूप माह ।१२२
भवान्विसैन्यश्च तथैव च हं भवान्सपुत्रश्च तथाहमेव।
संस्मृत्य धर्म कुरु युद्धमाशु ततो रथस्थः सुधनुर्गृहीत्वा ।१२३
बाणश्च बाणान्भुवि तौ चछित्वां वभूवस्तुतौ विरथौ नृपाग्रयौ।
खगेचखड्गै च तथैव छित्वा विमानमारुह्य गतौहिनाकाम् ।१२४
स कामसेनः स्वपरिपोश्च पुत्रान्चघान बाणश्च तदाष्टख्यान्।
ज्येष्ठौ तदा कोपसमन्वितौ तं गृहीतखड्गौ च समीयतुश्च।१२५
रिपोः शिरो जह्नतुरुग्रवेगौ संकामसेतश्च कबंध एव।
हत्वारिपू तौ च तदा मिलित्वा स्वर्गययुस्ते च विमानरूढाः।१२६

आप आज युद्ध करने के लिए शीघ्र ही अपने पुत्रों के सहित जाइये। हे भूप श्रेष्ठ ! आप एक लाख सेना से सज्जित होकर जावें। अत्यन्त घोर परमवीर शत्रु वीरसेन राजा को जो कि महान् हैं युद्ध में मार डालिये। इस प्रकार से आदेश देने वाले राजा को उस वीर ने प्रणाम करके अपने युद्ध के वाद्यों को बजाया था। उन दोनों का बहुत ही शीघ्र युद्ध शुरू हो गया। वे दोनों ही अच्छी सेना वाले और संकुल युद्ध के करने वाले थे। उन दोनों का महान् युद्ध हुआ था।१२०-।१२१। केवल तीन ही प्रहर के समय में वे हत हो गए थे। नागवर्मा ने उन समस्त पुत्रों के मारे जाने पर यादव भूप से कहा।१२२। आप अब सेना रहित है और मैं वैसा ही हूं। आप सपुत्र है और वैसा ही मैं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी हूँ। अतएव अब धर्म का संस्मरण करके शीघ्र ही युद्ध करो। इसके पश्चात् रथ में स्थित धनुष को ग्रहण कर उन दोनों ने बाणों के द्वारा बाणों का छेदन किया और वे दोनों नृप श्रेष्ठ विरथ हो गए थे। खंग से खंग का छेदन करते हुए वे दोनों विमान में चढ़कर स्वर्ग को चले गए थे।१२३।१२४। उस कामसेन ने अपने शत्रु के पुत्रों को जो संख्या में आठ थे बाणों से मारा था। दो जो ज्येष्ठ थे वे क्रोध से युक्त होकर हाथों में खंग लेकर उसके-पास आये थे।१२५। उग्र वेग वाले उन्होंने शत्रु का शिर काट डाला किन्तु उस कामसेन का कवन्ध ही ने उन दोनों शत्रुओं को मार डाला था वे सब उस समय मिलकर विमानों में चढ़कर स्वर्ग को गये थे।१२६।

हतेषु सर्वेषु तदा त्रयस्ते चामुण्डकाद्या जगनायक ते।
रुद्धा समेत स्वशरैः कठोरैर्जघ्नुस्तमश्व हरिनागरं च।११७
स दिव्यवाजी च सदा स्वपक्षौ प्रसार्य्य खेनामु रितुं जगाम।
स धुन्धुकारस्य गजं निहत्य चामुण्डकस्यैव गज विमर्द्य।१२८
रथं च भूमौ भगदत्तकस्य विचूर्ण्य शीघ्र च नभो जगाम।
प्रवाद्य शंख जगनायकश्च कृष्णांशमागम्य कथां चकार।१२९
निशामुषित्वा जगनायकाद्याः प्रातः समुत्थाय रणं प्रजग्मुः।
तदा महीराज उताशुकारी स किन्नरेश कणक सपुत्रम्।१३९
उवाच राजञ्छृणु किन्नरणां महाबलास्ते रिपवो समैते।
विनशयाशु प्रबलारिघातान्देवर्न सार्द्धं युधि वै मनुष्याः।१३१
इत्युक्त्वान्मकणभूपतिस्तु ययौ सपुत्रोऽयुतसैन्यश्च।
तमागतं तत्र विलोक्य राजा वीरास्त्वकायांश्य समादिदेश।१३२
मनोरथस्थो जगनायकश्च स तालनौ वै वडवां विगृह्य।
करालसोरणश्च तदा जयन्तो विनेह्य चाप तरसा जगाम।१३३

उस समय में सबके हित हो जाने पर वे चामुण्ड आदि तीनों ने जगनायक को रुद्ध किया था और उन सबने अपने कठोर शरों के द्वारा उसको और हरि नामक अश्व को मार दिया था।१२७-१२८। उस समय उस दिव्य अश्व ने अपने पक्षों कों फैला दिया था और शीघ्र ही

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकाश के मार्ग से शत्रु के समीप में आ गया था। उसने धुन्धकार के हाथी का हनन करके और चामुण्ड के गज का विमर्दन करके तथा भूमि में भगदत्त के रथ का चूर्ण करके वह शीघ्र ही आकाश को चला गया था। जगनायक ने अपने विजय शंख को बजाकर कृष्णांश के पास गमन किया था और वहाँ सम्पूर्ण कथा उसने कही थी।१२९ जगनायक आदि रात्रि में निवास करके प्रातःकाल में उठे और रणभूमि में चले गए। उस समय में महीराज ने जो कि आंशुकारी था शीघ्र ही पुत्रों के सहित किन्नरेश कणक को बुलाकर उससे बोला—हे राजन्! सुनो, आपके किन्नरों के महा बलवान् योद्धा हैं। ये मेरे शत्रु हैं उसके प्रबल शत्रु प्रहरों को नष्ट करिए क्योंकि देवों के साथ मनुष्य युद्ध में नहीं ठहर सकते हैं।१३०।१३१। मंकण भूपति ने इस प्रकार से कहा और दश सहस्र सेना से तथा पुत्रों से युक्त होकर वह गया था। राजा ने उसको आते हुए देखकर अपने वीरों को आदेश दिया था।१३२। मनोरथ स्थित जगनाथक और बड़बा को ग्रहण करने वाला तालन तथा कराल पर संस्थित जयन्त इन सबने अपने-अपने धनुष ग्रहण किए थे और बड़े बेग से गए थे।१३३।

पापीहकस्थश्च स रूपणो वै जगाम कृष्णांशसमन्वितश्च।
स लल्लसिंहो गजमत्तसंस्थः स धान्यपाला हयमारुरोह।१३४
समन्ततः किन्नरसैन्यघोर विनाशयामासुरुपांशुखड्गैः।
विनश्यमानें त्रिसहस्रसैन्ये स किन्नरेशस्तरसा जगाम।१३५
ध्यात्वा कुबेरं च गृहीतचापो नभोगतस्तत्र बभूव सूक्ष्मः।१३६
अदृश्यमानैः स्वशरैः कठोरैर्विनर्द्य सर्वान्हि ननद गारम्।
विलध्यमाने च समस्तशूरे जयन्त एवाशु जगाम शत्रुम्।१३७
ध्यात्वा महेन्द्र कणकं च बद्ध्वा कृष्णांशमागम्य पदो ननाम।
तदा तु ते शत्रुसहस्रसैन्ये निषम्य बद्धं कणकं निजेन्द्रम्।२३८
विनर्घं घोरं रुरुधुश्च सर्वान्माया विनो गुह्यकमस्तमुहः।
दिनेपु सप्तेषु तथा निशासु बभूव युद्धं च संमंततस्तैः।१३९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रमान्वितः सप्त महाप्रवीरा हतेषु सर्वेषु सुषपुश्च वै यदा ।
तदा कुबेरं कणकश्च ध्यात्वा लब्ध्वा वरं बन्धनमाशु छित्वा ।१४०

रूपण पपीहक पर स्थित था कि कृष्णांश के साथ समन्वित होकर गया था। वह लल्लसिंह मत्तगण पर स्थित था और धन्यपाल ने अश्व पर समारोहण किया था ।१३४। सब ओर से किन्नरों की घोर सेना को उपांशु खड्गों के द्वारा विनाश कर दिया था। जब तीन सहस्र सेना का विनाश हो गया था। तब किन्नरेश बड़े वेग से गया था ।१३५।उसने कुबेर का ध्यान किया था और चाप को ग्रहण किया और वह आकाश में जाकर अत्यन्त सूक्ष्म हो गया था ।१३६। अपने कठोर शरों के सहित अहश्य होकर वहाँ से सबसे डाटकर उसने घोर गर्जना की थी। समस्त शत्रुओं के विलप्यमान हो जाने पर फिर शीघ्र जयन्त के पास गया था ।१३७। उसने महेन्द्र का ध्यान किया था और कणक को बाँध करके उसने शीघ्र ही आकर कृष्णांश के चरणों में प्रणाम किया था। उस समय शत्रु की सहस्र सेना में अपने स्वामी कणक को बद्ध सुनकर अत्यन्त घोर रूप से समस्त मायावियों ने रुद्ध करके गुह्यक का अस्त्र ग्रहण किया था। फिर सात दिन और रात्रियों में उनके साथ चारों ओर से महान् युद्ध हुआ। सातों महान् प्रवीर श्रमित होकर सबके मरने पर जब सो गए थे तब कणक ने कुबेर का ध्यान करके वर प्राप्त किया था और शीघ्र बन्धन का छेदन किया था ।१३८।१४०।

सुप्तान्समुत्थाय च सप्त शूरान्निशीथ काले स चकार युद्धम् ।
जित्वा च तान्षट् स वरप्रभावात्तादेदुंलेनैव रणं चकार ।१४१
गृहीतखड्गौ रणधीरमत्तौ हत्वा ततो व भुयि केयतुश्च ।
प्रजग्मतुर्नाकिमुन्तदेवौ सस्तूयमाना सुरसत्तमैश्च ।१४२
ततः प्रभाते विमले विजाते रुरोध रामांश उतालाप ।
पापैः कलापैः परिपीड्यमानः कुलान्वितः सर्वयुतो मुनीन्द्र ।१४३
स पञ्चशब्दं गजमारुरोह त्रिलक्षसैन्सैस्तरसा जगाम ।
तदा महीराज उताह श्रृण्वन्गच्छध्वमद्य व मया समेताः ।१४४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वपञ्चलक्षैः प्रवलैश्च शूरैः सार्द्धः रुरोधाशु रिपोश्च सेनाम् ।
तयोर्बभूवाभु रणः प्रघोरो विनर्दतोयुद्धनिमित्तमाशु १४५।
त्रियाममात्रेण हताश्च सर्वे द्वयोश्च पक्षा बलशालिनपच ।
तदा महीराज उतायथौ वै समण्डलीकश्च धनविगृह्य ।१४६
स धुन्धुकारश्च तदा जगाम रथस्थितं लक्षणमुग्रवीरम् ।
तदोदयो वै भगदत्तामेव चामुण्डकं भीष्मकराजसूनु ।१४७

शयन करते हुए सातों शूरों को उठाकर आधी रात के समय में उसने युद्ध किया था। उसने वर के प्रभाव से उन छै को जीत कर फिर उसने इन्दुल के साथ युद्ध किया था।१४१। युद्ध करते एकदम मत्त हाथों में भङ्ग लिए आपस में प्रहार करके भूमि में वे दोनों आ गए थे और फिर उपान्त देव वे दोनों देवों के द्वारा स्तुत किए स्वर्ग में चले गए थे।१४२। इसके अनन्तर प्रभात के विमल हो जाने पर रामांश ने रोध किया और अलाप किया था। हेमुनीन्द्र ! वह पापों के समुह से परिपीड़ित होता हुआ कुल से युक्त तथा सबके सहित था।१४३। वह पञ्चशब्द नामक गज पर समारूढ़ हो गया था और तीन लाख सेना से समन्वित होकर वेग के साथ गया। उस समय सुनते हुए महीराज बोला—मेरे सहित आज ही जाओ।१४४। अपने पाँच लाख प्रबल शूर वीरों के साथ शीघ्र ही उसने शत्रु की सेना को रोक दिया था अर्थात् घेर लिया था। फिर दोनों में शीघ्र ही बड़ा घोर युद्ध हुआ था। वे दोनों युद्ध के लिए विशेष रूप से दर्दन (गर्जन) कर रहे थे।१४५। केवल तीन ही प्रहर के युद्ध में दोनों पक्षों के समस्त बलशाली वीर हत हो गये थे। तब महीराज समण्डली हाथ में धनुष लेकर वहाँ आ गया था।१४६। वह धुन्धुकार उस समय में रथ में स्थित उग्रवीर लक्षण के पास पहुँचा था। उदयसिंह भगदत्त के समीप और भीष्मक राजा का पुत्र चामुण्डक के निकट युद्ध के लिए गये थे।१४७।

स पञ्चशब्द गजमास्थितो वै गतः स एवाशु जगाम भूपम् ।
धनुर्विगृह्याशुगमुल्वणं च नृपस्थितश्चाय भयङ्करैः च ।१४८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गण प्रमत्तं शिवदत्तमुग्रमाह्लादहन्तारमुवाच वाक्यम् ।
अये प्रमत्ताग्रगजेन्द्र शूरं जयं च मे देहि शिवप्रदत्त ।१४९
स मण्डलीको रणदुर्मदश्च रामांश आह्लाद इति प्रसिद्धः ।
तस्माच्च मां रक्ष जवेन हस्तिन्महाबलात्कालरसाच्च वारात् ।१५०
इत्येवमुक्तो नृपति स हस्ती वचस्तमाहाशु शृणुष्व राजन् ।
यावदहं वै तनू जोवधारीतावद्भवाञ्छत्रु भयङ्करश्च ।१५१
इत्युक्तगतं गज प्रमत्त स पञ्चशब्दश्च तदा स्वदतैः ।
मुखं चतुर्भिश्च विदार्य शत्रोर्ननर्द घोरं स महेन्द्रदत्तः ।१५२
स रुद्रदत्तश्च गजः प्रमत्तो रुषावन्धावत्तरसा गजेन्द्रम् ।
रिपुं स्वपद्भ्यां च चखान कुम्भैः स्वतुण्डदण्डेत तुदं प्रकुर्वन् ।१५३
अवाप मूर्च्छां च स पञ्चशब्दस्तदाशु भूपं प्रति मण्डलीकः ।
स्वतोमरेणांगव्रणं प्रदाय खंगेन हत्वा गजराजमुग्रम् ।
अगाम पदभ्यां रिपुप्रगाथी यत्र स्थितश्चेन्दुल उग्रधन्वा ।१५४

यह पञ्चशब्द गज पर बैठा हुआ शीघ्र ही राजा के पास गया था और धनुष ग्रहण करके जो कि शीघ्र गमन करने वाला, बल्वण और बहुत ही भयंकर था वहाँ पर उपस्थित था ।१४८। अत्यन्त प्रसन्न और महाउग्र तथा आह्लाद के हनन करने वाले शिवदत्त नाम के गजसे यह वचन बोला—अरे प्रमत्त गजों में शिरोमणे ! हे शिवदत्त ! हे शूर ! मुझे अब जय प्रदान कराओ ।१४९। वह मण्डलीका रण में दुर्मद रामांश था जो आह्लाद नाम से प्रसिद्ध हुआ था। हे हस्तिन् ! वेग के द्वारा उससे मेरी रक्षा कर। वह महान् बल वाला है—काल रस और परम वीर है, उससे त्राण करो ।१५०। इस प्रकार से जब उस हाथी से राजा ने कहा तो उस हाथी ने राजा से यह वचन कहा—हे राजन् ! सुनो, जब तक मैं तनु जीवधारी हूं तब तक आप शत्रु के लिए महान भयंकर रहेंगे ।१५१। इस रीति से कहने वाले उस प्रमत्त गज की उस समय में उस पञ्चशब्द ने अपने चारों दांतों से शत्रु के मुख को फाड़कर वह महेन्द्रदत्त अत्यन्त घोर रूप से सर्दन करने लगा था ।१५२। वह प्रमत्त रुद्रदत्त गज बड़ा क्रोध से वेग पूर्वक गजेन्द्र पर दौड़ा था। उसको अपने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुण्ड दण्ड से पीड़ा करते हुए कुम्भस्थल से अपने पैरों से शत्रु को पछाड़ दिया था। वह पञ्चशब्द मूर्छा को प्राप्त हो गया था। मण्डलीक अपने तोमर से अङ्ग में व्रण करके और खड्ग से उग्र गजराज का हनन करके शीघ्र भूप के प्रति चला गया था।जहाँ शत्रुओं का पैरों से प्रमथन करने वाला वहां गया था उग्रधन्वा इन्दुल स्थित था।१५३।

उत्थाप्य पुत्रं च विलप्यमानां पत्नीं स्वकीयां प्रति चाजगाम।
तदा प्रमत्तौ च गजौ सुमूर्छां त्यक्त्वा पुनश्चक्रतुरेव युद्धम्।१५५
स लक्षणः खंगवरेण बाणान् रिपोश्छित्त्वा विजवैष्णवास्त्रम्।
दधार चापे च सुमन्त्र यित्वा सधुंधुकारं च गजं ददाह।१५६
हते च तस्मिन्नि जमुख्यबंधो सभूमिराजश्च गृहीतचापः।
शरेण रौद्रेण च लक्षणं तजधान तत्रादिभयंकरस्थः। ५७
सःमूर्छितः शुक्ल कुलेष सूर्यस्तदोदयो वै भगदत्तमेव।
सुमूर्छयित्वा च जगाम शीघ्रं यत्रस्थितो लक्षण एकवीरः।१५८
भयान्वितस्तं च विलोक्य राजा जवेन दुद्राव च रक्तबीजम्।
तदा सुदेवं च स रक्तबीजो जित्वा तु कृष्णांशयुत जगाम १५९
बाणेन शीघ्रं स च मच्छंयित्वा पुनश्च देवं च स मूर्छयित्वा।
तद्बन्धनायोद्यत आशुकारी स लक्षणस्तत्र तदा जगाम।१६०
प्रधाय चापे च स वैष्णवास्त्रं प्रचोदयामास च रक्तबीजे।
तदा स सामन्तसुतो बलीयानृणं विहायाशु विलोक्य संख्याम।
भयान्वितः स्वैश्चयुतो ययौ वै यत्र स्थिता नृपतयः सकोणः।१६१

अपने पुत्र को उठाकर विलाप करती हुई अपनी पत्नी के प्रति आ गया था। उस समय दोनों प्रमत्त गजों ने अपनी मूर्छा का त्याग किया और वे फिर युद्ध करने लगे थे।१५५। उस लक्षण ने अपने श्रेष्ठ खड्ग से शत्रु के बाणों का छेदन करके अपने चाप पर निज के वैष्णवअस्त्र को समन्त्रि करके धारण किया था और उसने धुन्धुकार के सहित गज का दाह कर दिया था ।१५६। उस मुख्य अपने बन्धु के हत हो जाने पर उस भूमिराज ने चाप को ग्रहण किया और रौद्र शर के द्वारा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के द्वारा वहां पर आदि भयंकरस्थ ने लक्षण को मार दिया था। वह शुक्ल कुलों का सूर्य मूर्छित हो गया था। तब उदय ने भगदत्त को भी मूर्छित कर वह शीघ्र वहां चला गया था जहां पर एक वीर लक्षण मूर्च्छितावस्था में पड़ा था।१५७।१५८। भय थे अन्वित राजा ने उसे देखकर बड़ी ही शीघ्रता से वह रक्तबीज के पीछे दौड़ा था। उस समय रक्तबीज ने सुदेव को कृष्णांश से युत जीत कर गमन कर दिया।१५९। उसने बाणों के द्वारा फिर शीघ्र ही देव को मूर्छित करके वह शीघ्रता से कार्य करने वाला उसके बन्धन के लिए उद्यत हो गया था। उस समय वह लक्षण वहां चला गया था।१६०। उसने चाप पर वैष्णवास्त्र को चढ़ाकर रक्तबीज पर प्रेरित किया था। उस समय में बलवान वह सामन्त पुत्र सन्ध्या को देखकर रणभूमि का त्याग कर और शीघ्र ही भय से अन्वित होकर अपने लोगों के साथ चला गया था जहाँ पर क्रोध से युक्त राजा लोग स्थित थे।१६१।

विलोक्य शत्रु च स रत्नभानोः सुतौ ययौ वै शिविराणि युक्तः।
निशाम्य भूपः स च चंद्रवन्शी जय स्वकीय सुषुपुस्तु ते वै।
प्रातश्च काले स च चंद्रवंशी विलोक्य शुक्लान्वयमाह भूपम्१६२
अये गुर्जरदेशीय मूलवर्मन्सुतैः सह।
लक्षसैन्या न्वतो भूत्वा गन्तुमर्हंतु वै भवान्।१६३
इत्युक्तः स तु भूपालो युद्धभमिमुपाययौ।
महीराजाज्ञया प्राप्तो नाम्ना पूर्णमलो बली।१६४
दशपुत्रान्वितो युद्धे सैन्य लक्षेण संयुतः।
तयोश्चसोन्महद्द्युद्धं यामद्वयमुपस्थितम्।१६५
हतेषु तेषु सर्वेषु तौ नृपौ ससुतैर्वलौ।
अनोन्योन रणं कृत्वा यमलोकमुपागतौ।१६६
मार्गकृष्णचतुर्दश्यां प्रभाते विमले रवौ।
कैकयो लक्षसेनादयो दशपुत्रसमन्वितः।
लक्षणानुज्ञया प्राप्तस्मिन्युधि भयानके।१६७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मद्रकेस्तदा राजा दशपुत्रसमन्वितः।
लक्षसैन्यान्वितस्तत्र यत्र युद्धं समन्वभूत।
परस्परं हताः सर्वे दिनान्ते क्षत्रिया रणे।१६८

वह रत्नभानु का सुत शत्रु को देखकर शिविरों को चला गया था और चन्द्रवंशी भूप अपनी जय सुनाकर सोने की इच्छा वाला हो गया। प्रातःकाल में उस चन्द्रवंशी राजा ने शुक्ल वंश वाले भूप को देखकर उससे कहा—।१६२। गुर्जर देश के वासी मूल वर्मन ! आप अपने पुत्रों के साथ एक लाख सेना से सज्जित होकर युद्ध-स्थल में जाने के योग्य होते हैं।१६३। इस तरह मे कहा गया वह राजा युद्ध-भूमि में चला गया था। इधर महीराज की आज्ञा से बलवान् पूर्णामल नाम वाला वहाँ प्राप्त हुआ था।१६४। यह पूर्णामल एक लाख सेना से तथा अपने दस पुत्रों से समन्वित होकर वहां उपस्थित हुआ था। उन दोनों का बड़ा भारी युद्ध दो प्रहर पर्यन्त उपस्थित हुआ था।१६५। उस सेना के समस्त सैनिकों तथा शूरों के मर जाने के पश्चात् वे दोनों बली राजा पुत्रोंके सहित आपस में रण करते हुए यमलोक को प्राप्त हो गए थे।१६६। मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष की चतुर्दशी के दिन प्रभात में विमल रविके उदय होने पर लाख सेना से युक्त दश पुत्र से समन्वित होकर कैकयराजा लक्षण की अनुज्ञा पाकर उस महाभयानक युद्ध क्षेत्र में पहुंचा था।१६७। उस सयम में मद्रकेश राजा दस पुत्रों के सहित एक लाख सेना लेकर वहाँ आ गया था जहाँ कि यह युद्ध हुआ था। वे समस्त क्षत्रिय भी उस युद्ध में दिन के अन्त तक लड़ते हुए आपस में हत हो गए थे।१६८।

पुनः प्रभाते विमले भगदत्तो महाबलौ
त्रिलक्षबलसंयुक्तो गर्ज्जरणमूर्द्धनि।१६९
दृष्ट्वा तं लक्षणो वीरस्त्रिलक्ष महाबलाः।
चकार तुमुल घोरं सेनया च स्वकीयया।१७०
अपराह्ने हताः सर्वे सैनिका नृपयोस्तदा।
भगदत्तः स्वयं क्रुद्धा रथस्थो लवण ययौ।१७१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्ष्मण रथमारुह्य स्वपितुः शत्रु ज नृपम् ।
त्रिभिर्बाणैश्च संतोड्य भल्लेन समताड्यत् ।१७२
भगदत्तस्तदा क्रुद्धो विरथं तं चकार ह ।
क्रुद्धवन्त रिपुं घोरं लक्षणः खड्गपाणिकः ।
हत्वा हयांस्तथा सूतं भगदत्तमुपाययौः ।१७३
मर्दयित्वा च तच्चर्मच्छित्वा वर्मं तदुद्भदम् ।
त्रिधा चक्रार बलवान्भदत्तं रिपोस्सुतम् ।१७४
संध्याकाले हते मस्मिल्लक्षणस्त्वरयान्वितः ।
एकाकी शिविरं प्राप्तो हस्तिन्युपरि संस्थितः ।१७५

फिर विमल प्रातःकाल में महान् बलवान भगदत्त तीन लाख सेना से समन्वित होकर युद्ध क्षेत्र में गर्जने लगा ।१६९। उसे गर्जन करते हुये देखकर तीन लाख महान् बलवानों की सेना से युक्त लक्षण ने अपनी सेना द्वारा अत्यन्त घोर तुमुल युद्ध किया । दोपहर के बाद तब उन दोनों राजाओं के सैनिक हत हो गए ।१७०। भगदत्त रथ पर बैठकर स्वयं अत्यन्त क्रोध में भरा हुआ लक्षण की ओर गया ।१७१। लक्षण ने रथ पर समारूढ़ होकर अपने पिता के शत्रु नृप को तीन बाणों से पीड़ित करके भाले से ताड़ित किया था ।१७२। फिर भगदत्त ने अत्यन्त क्रोधित होकर उसे रथहीन कर दिया । इस तरह क्रोध युक्त उस घोर शत्रु को हाथ में खंग ग्रहण करके लक्षण ने घोड़ों को तथा सारथि को मार कर वह भगदत्त के ऊपर चढ़ कर आया ।१७३। उसके चर्म का मर्दन करके उसके उद्भव वर्म का छेदन करके फिर रिपु के पुत्र भगदत्त के उस बलवान ने तीन टुकड़े कर दिये ।१७४। सन्ध्या के समय में उसके मर जाने पर लक्षण बड़ी शीघ्रता से युक्त होकर एकाकी हथिनी के ऊपर सवार होकर शिविर में प्राप्त हो गया ।१७५।

भगदत्तो हते तस्मिन्स राजा क्रोधमूर्छितः ।
स्वकीयन्सर्वभूपाश्च चामुण्डेन समन्वितान् ।
प्रेषयामास युद्धाय मार्गे च प्रतिपद्दिने ।१७६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अङ्गदश्च कलिंगश्च त्रिकोणः श्रीपतिस्तथा ।
श्रीतारश्च मुकुन्दच रुहिलो गुहिलस्तथा ।१७७
सुकेतुर्नव भपास्ते नवायतबलैर्युताः ।
वाद्यानि वादयामासुस्तस्मिन्युद्धमहोत्सवे ।१७८
दृष्ट्वा ताल्लेक्षणो वीरो राजभिश्च स्वकीयकैः ।
सार्द्धं जगाम युद्धाय तथा व्यूह्यायुधद्रिपून् ।१७९
रुद्रवर्मा च नृपति शूरैर्दशस हस्रकैः ।
अङ्गदं वैरिणं मत्वा तेन साद्ध्र्धमयुध्यत् ।१८०
कालीवर्माऽयुतैस्सार्धंकलिगं प्रत्ययुध्यत् ।
वीरसिंहोऽयुतैस्साध त्रिकोणं प्रत्ययुध्यत् ।१८१
ततोनुजाः प्रवीरश्च श्रीपतिं सोऽयुतैस्सह ।
नृपः सूर्यो धरो वीरोऽयुताढ्यो बलदानृणे ।
श्रीतारं नृपमासाध्य महद्युद्धमचीकरत् ।१८२

उस भगदत्त के मरने पर राजा ने चामुण्डा सहित सब भूपों को युद्ध करने के लिए भेजा ।१७२। अंगद-कलिंग-त्रिकोण श्रीपति-श्रीतार मुकुन्द-रुहिल और सुकेतु ये नौ राजा थे जो नब्बे हजार सेना से युक्त थे । इन सबने उस युद्ध के महोत्सव में वाद्यों कोबजवाया ।१७६।१७८ तव वीर लक्ष्मण ने उन सबको देखकर अपने राजाओं के साथ युद्ध करने के लिए गया और व्यूह बनाकर शत्रुओं से युद्ध किया था ।१७९। रुद्र वर्मा ने दश सहस्र शूरों के साथ अंगद को बैरी मानकर उसके साथ युद्ध किया था ।१८०। काली वर्मा ने दश सहस्र सेना के साथ कलिंग से युद्ध किया । वीरसिंह ने दश हजार सेना लेकर त्रिकोण युद्ध किया था ।१८१। उसके छोटे भाई प्रवीरन ने दश सहस्र सेना से समन्वित होकर श्रीपति से युद्ध किया था । सूर्यधर वीर एक अयुत सेना लेकर रण में आया और उस बलवान् राजा ने श्रीतार राजा के के साथ महान् युद्ध किया था ।१८२।

वामनोयुसंयुक्तो मुकुन्द प्रति सोऽगमत्ः ।
गगासिंहश्च बलवान्महिल प्रति सायुतः ।१८३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लल्लसिंहोयुतैस्सार्धं गुहिलं प्रति सोऽगमत् ।
त्रिशतानि ततो भूपाः सहस्राढ्याः पृथक्पृथक ।१८४
क्षुद्रभूपाः क्षुद्रभूपांस्त्रिशतानि समाययुः ।
अन्योन्यन हताः सर्वे कृत्वा युद्धं भयानकम् ।१८५
चामुण्डस्तुतदा दृष्ट्वा मृतकान्सर्वभूपतान् ।
लक्षणान्तमुपागम्य महद्युद्धं चकार ह ।१८६
लक्षणो रक्तबीजं तंज्ञात्वा ब्राह्मणसंमतम् ।
वैष्णवास्त्रं तदा तस्मै ददौ तेन पीड़ितः ।१८७
सायंकाले तु संप्राप्ते लक्षणो हस्तिनौस्थितः ।
एकाकी शिवरं प्राप्तश्चामुण्ड नृपामाययौ ।१८८
द्वितीयायां प्रभाते च कृष्णांशो देवसंयुतः ।
शूरैर्दशसस्त्रैश्च युद्धभूमिमुपाययौ ।१८९

वामन दश सहस्र सेना से युक्त होकर मुकुन्द से युद्ध करने लगा। बलवान् गंगासिंह अयुत सेना से समन्वित होकर महल के साथ लड़ने लगा। लल्लनसिंह एक अयुत सेना से सज्जित होकर गुहिल के प्रति गया था। इस तरह उस समय तीन सौ राजा थे जो पृथक्-पृथक एक-एक सहस्र सेना से युक्त थे ।१८३-१८४। छोटे राजा छोटे तीन सौ राजाओं के संग युद्ध कर रहे थे और वे सब एक दूसरे के द्वारा हत हो गये थे जो कि बड़ा भयानक युद्ध करने वाले वहाँ पर उपस्थित थे।१८५ उस समय चामुण्ड ने समस्त राजाओं को मृत हुए देखा और फिर वह स्वयं लक्षण के पास उपस्थित होकर महान् युद्ध करने लगा था ।१८६ लक्षण ब्राह्मण समझ उसे रक्तबीज जानकर उसके द्वारा पीड़ित होकर उसने वैष्णवास्त्र उसके लिए नहीं दिया था ।१८७। सायंकाल के हो जाने पर लक्षण हस्थिनी पर समास्थित होकर अकेला शिविर में प्राप्त हो गया था और चामुण्ड नृप के पास आ गया था ।१८८। द्वितीया के दिन प्रभात में देवयुक्त कृष्णांश दश सहस्र शूरों के साथ उस युद्ध भूमि में आ गया था ।१८९।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तारकश्च सचामुण्डो द्विलक्षव्रजसंयुतः ।
द्विशतैश्च तथा भूपैः सार्द्धं युद्धमुपस्थितौ ।१९०
पुरस्कृत्य नृपान्सर्वान्स सैन्यौ इलवत्तरौ ।
तेषामनु स्थितौ युद्धे तत्र त्तातो महारणः ।१९१
यामनात्रण तौ वोरौ हत्वा सर्वमहापतीन् ।
लक्षसैन्यांस्तथा हत्वा संस्थितो श्रमकर्षितौ ।१९२
चामुण्डस्तारको धूर्तः संप्राप्तो छिद्रदर्शिनी :
ताभ्यां श्रमान्विताभ्यां च चक्रतुस्तो समं रणम् ।१९३
तेषां त्रियाममात्रेण सम्भू व महानृणः ।
सायंकाले तु सम्प्राते कृष्णाशश्च निरायुधः ।
तलप्रहारेण रिपुं मूर्च्छयामास वीर्यवान् ।१९४
एतस्मिन्नन्तरे वीरस्तारको देवसिंहकम् ।
हयं मनोरथं हत्वा शङ्खशब्दमधाकरोत् ।१९५
तच्छब्दात्स च चामुण्डस्त्यक्त्वा मूर्छां महावलः ।
कृष्णांशस्य शिरः कायादपहृत्य च वेगवान ।
तयोगृहीत्वा शिरसी महीराजमुपाययौ ।१९६

तारक चामुण्ड के साथ दो लाख सेना से युक्त होकर और दो सौ भूपों के साथ लेकर युद्ध के लिए उपस्थित हुए थे ।१९०। समस्त नृपों को आगे करके सेना के साथ ये दोनों अधिक बलवान उनके पीछे स्थित रहे थे । उस समय रण भूमि में बड़ा घोर युद्ध हुआ था ।१९१। एक प्रहर भर में ही उन दोनों ने समस्त भूपों को मारकर तथा एक लाख सैनिकों को मारकर वे दोनों वीर श्रम से कर्षित होते हुए संक्षिप्त हो गये । चामुंण्ड और तारक ये दोनों बड़े धूर्त थे और छिद्रदर्शी भीथे । उन्होंने उन श्रम से युक्तों के साथ युक्त किया ।१९२-१९३। उनका तीन प्रहर महान् युद्ध हुआ । सायंकाल के होने पर कृष्णांश निरायुध वीर्यवान् ने तल प्रहार से शत्रु को मूर्छित कर दिया ।१९४। इस बीच में वीर तारक ने देवसिंह के मनोरथ हय को मारकर शंख की ध्वनि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करदी ।१६५। उस शब्द से महा बलवान चामुण्ड ने मूर्छा का त्याग कर दिया और वेगवान् ने कृष्णांश का शिर शरीर से अपहृत करके उन दोनों के मस्तकों को लेकर महीराज के पास उपस्थित हो गया १६६।

महीराजस्तुते दृष्ट्वा परमानन्दनिर्भरः ।
दत्त्वा दानं द्विजातिभ्यो महोत्सवमकारयत् ।१६७
लक्षणस्य तदा सैन्ये हाहाशब्दो महानभूत ।
श्रुत्वा कोलाहलं तेषां ज्ञात्वा तौ च हतौ नृपः ।
ब्रह्मानन्दस्तदा मूर्च्छां त्यक्त्वा बेलामुवाच ह ।१६८
प्रिये गच्छ रण शीघ्रं हरिनागरमास्थिता ।
मम वेष कृत्वा तारकं जहि मा चिरम् ।१६६
इति श्रुत्वा तु सा वेलां रामांशेन समन्विता ।
सहस्रशूरसहिता युद्ध भूमिमुपाययौ ।२००
श्रुत्वा स लक्षणो वीरस्तालनेन समन्वितेः ।
सैन्यैश्च दशाहस्रमहीराजमुपाययौ ।२०१
तृतीयायां प्रभाते च तारको वलवत्ततः ।
ब्रह्मानन्द चत मत्वा महयुद्धमचकरत् ।२०२
रक्तबीजश्च चायुण्डो रामांशो बलवत्तरः ।
चकार दारुणं युद्धं तस्मिन्वीरसमागमे ।२०३

महीराज ने उन शिरों को देखा और परम आनन्द से निर्भर हो गया । ब्राह्मणों को दान देकर उसने महान् उत्सव कराया ।१६७। उस समय लक्षण की सेना में महान् हा-हाकार की ध्वनि छा गई । उनके कोलाहल को सुनकर राजा ने वे दोनों हस्त हो गये यह जानकर ब्रह्मानन्द ने मूर्छा का त्याग कर वेला से कहा ।१६८। हे प्रिये ! अब हरिनगर पर स्थित होकर शीघ्र ही रण में जाओ और मेरा वेश धारण करके तारक को मार डालो और बिलम्ब मत करो ।१६६। यह श्रवण कर वह वेला जो रामांश से समन्वित थी एक सहस्र शूरों को साथ लेकर युद्ध भूमि में आ गई ।२००। उस लक्षण वीर ने तालन से सम-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्वित होकर श्रवण किया और दश सहस्र सेना लेकर वह महीराज के पास उपस्थित हो गया ।२०१। तृतीया के दिन वलवान् तारकने उसको ब्रह्मानन्द ही मानकर महान युद्ध किया ।२०२। और रक्तबीज चामुण्ड जो रामांश सेअधिक बलवान् था, उसने उस वीर समागम में बड़ा ही दारुण युद्ध किया ।२०३।

याममात्रेण रामांशो हत्वा तस्य महागजम् ।
तच्छस्त्राणि तथा च्छित्वा मल्लयुद्धमचीकरत् ।२०४
त्रियाममात्रेण तदा सायंकाले समागते ।
मन्मथ भ्रातृहन्तारं सच वीरो ममार ह ।२०५
तदा वेला महाशत्रु तारकं वलवत्तरम् ।
छित्वास्त्राणि स्वखड्गेन शिरः कायादपाहरत् ।२०६
चितां कृत्वा विधानेन सा देवी द्रुपदात्मजा ।
ब्रह्मानन्द नमस्कृत्य तच्चितायां समारुहत् ।२०७
तेन सार्द्धं व सा शुद्धा श्वसुरस्याज्ञया ।
सप्तजन्मकथां कृत्वा स्वपतेस्सु ददाह वै ।२०८
तच्चितायां च भर्तारमिंदुल बलत्तरम् ।२०९
रात्रौ परिमलो राजा लक्षणेन समन्वितः ।
महीराजमुपागम्य महद्युद्धमकारयत ।२१०

केवल एक ही प्रहर से उस रामांश ने उसके महागज को मारकर और उसके शस्त्रों का छेदन करके फिर मल्ल युद्ध किया ।२०४। वह युद्ध प्रहर तक हुआ फिर सायंकाल का समय हो जाने पर उस वीर ने भाई के हनन करने वाले का मन्थन किया और मार दिया । उस समय में बलवान् महान् शत्रु तारक के शस्त्रों का छेदन करके उसका सिर काया से अलग कर दिया ।२०५-२०६। फिर उस द्रुपदात्मजा देवी ने विधि-विधान से चिता की याचना करके ब्रह्मानन्द को प्रणाम किया और फिर स्वयं वह उसको लेकर चिता में समारूढ़ हो गई ।२०७। उसके साथ शुद्धा उसने श्वसुर की आज्ञा पाकर प्रसन्नता से अपने पति

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के सात जन्म की कथा कहकर दाह किया ।२०८। और उस चिता में बलवान् इन्दुल भर्त्ता को संस्थापित करके उसके साथ कलेवर को दाह कर दिया ।२०९। फिर रात्रि में राजा परिमल लक्षण से समन्वित होकर महीराज के पास गया और महान् युद्ध कराया ।२१०।

सपादलक्षाश्च तदा हतशेषा महाबला: ।
त्रिलक्षैर्हतशेषैश्च सार्द्धं योद्धुमुपस्थिता ।२११
धान्यपाल: शतं भूपांल्लक्षणश्च तथा शतम् ।
तालनश्च शतं भूपान्हत्वा राजानमाययौ ।२१२
महीराजस्तदा दु:खी ध्यात्वा रुद्रं महेश्वरम् ।
निशीथे समनुप्राप्ते हतशेषस्समागत: ।
एकाको गजमारुह्य ययौ चादिभयंकरम् ।२१३
द्रदत्तेन वाणन हत्वा परिमलं नृपम् ।
धान्यपालं तथा हत्वा तालनं बलवत्तारम् ।
लक्षणान्तमुपागम्य महद्युद्धमचींकरत् ।२१४
महीराजस्य रौद्रास्त्रैस्सैन्यन्सर्वे क्षयं गता: ।
लक्षणं प्रति रौद्रास्त्रं महराय: समादण ।
तेनस्त्रेण क्षयं जातो महीराजस्य सायक: ।
तेनास्त्रतेजसा राजा सहासतापमाप्तवान् ।२१६
ध्यात्वारुद्रं महादेवं त्यक्त्वा विद्यां वैष्णवीम ।
स्वभल्लेन शिर: कायादपाहरत भूमिप: ।२१७

उस समय सवा लाख महाबल वाले शूर मरने से बचे हुए थेउन्होंने तीन लाख उसके हतशेषों के साथ युद्ध करने के लिए वहाँ उपस्थिति की थी ।२११। धान्यपाल ने सौ राजाओं को तथा लक्षण ने सौ को और तालन ने सौ नृपों को मारकर राजा के पास आये थे ।२१२'तब महीराज बहुत ही दुखित हुआ और उसने रुद्र महेश्वर का ध्यान किया था । आधी रात के समय मरने से बचे हुए वीरों के साथ भाग आया था । एकाकी गज बैठकर चादिभयङ्कर को गया था ।२१३। रुद्रदत्त

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाण के द्वारा राजा परिमल को मारकर और बलवान धान्यपाल तथा तालन का वध करके लक्षण के पास पहुंचकर उसने महान युद्ध किया था ।२१४। महीराज के रौद्र अस्त्र से सभी वीर क्षय को प्राप्त हो गये थे । फिर लक्ष्मण के प्रति महीराज ने रौद्र अस्त्र को चढ़ाया था ।२१५। तब लक्षण ने वैष्णवास्त्र का समाधान किया था ।उस वैष्णवास्त्र के द्वारा महीराज का सायक क्षयक क्षय को प्राप्त हो गया था और उस अस्त्र के तेज से राजा को महान सन्तापकों किया था ।२१६। फिर महादेव रुद्र का ध्यान करके और वैष्णवी विद्या का त्याग करके भूमिप ने अपने भाले से लक्षण के सिर को शरीर से अलग कर दिया था ।२१७।

हस्तिनी च तदा रुष्टा गजनादिभयंकरम् ।
गत्वा युद्धं मुहूर्तेन कृत्वा स्वर्गमुपाययौ ।२१८
उषःकाले च संप्राप्ते मलना पतिमुत्तमम् ।
त्तच्चितायां समारोप्य ददाह स्वकलेवरम् ।२१९
त्तदा तु देवकी शुद्धं लक्षण बलवत्तरम् ।
त्तालनार्दीस्तथा हत्वा दद हस्व कलेवरम् ।२२०
प्रभाते विमले जाते चतुर्थे भौमवासरे ।
तथा हुत्वा स्वर्णवतो कृत्वा तेषां तिलाँजलिम् ।
ध्यात्वा सर्वमवीं देवीं स्थिरीभूयं स्वयं स्थितः ।२२१
एतस्मिन्नन्तरे तत्र कलिभार्यासमन्विताः ।
वांछितं फलमागम्य तुष्टवा श्लक्षणया गिरा ।२२२

उस समय हस्तिनी ने बहुत ही रुष्ट होकर आदि भयंकर गज के पास जाकर मुहूर्त भर युद्ध किया और स्वर्ग की प्राप्ति की थी ।२१८। उषाकाल के प्राप्त होने पर मलना ने अपने उत्तम पति की चिता बनवा कर उसमें समारोपित किया और उसके साथ अपना शरीर भी दाह कर लिया था ।२१९। उस समय में शुद्धा देवकी ने वलवान् लक्षण तथा तालन आदि को हुत करके अपना कलेवर भी दाह कर दिया था ।२२० चौथे सोमवार के दिन विमल प्रभात के होने पर स्वर्णवती को हुत करके उन सबको तिलांजलि देकर सर्वमयी देवी को अपने ध्यान लाकर स्थित होकर स्वयं स्थित हो गया था ।२२१। इसी बीच

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में भार्या के सहित कलि वहाँ मनवाँछित फल प्राप्त कर बड़ी श्लक्षण वाणी के द्वारा स्तुति करने लगा था ।२२२।

नमः आह्लाद महते सर्वानन्दप्रदायिने ।
योगेश्वराय शुद्धाय महावतीनिवासिने ।२२३
रामांशस्त्वं महाबाहो मम पालनतत्परः ।
कलैकया समागम्य भुवो भारस्त्वया हृतः २२४
राजानः पावकीयाश्च तपोबलसमन्विताः ।
हत्वा तान्पञ्चसहस्रान्क्षुद्रभूपानानेकशः ।
योगमध्ये समासीनो नमस्तस्मै महात्मने ।२२५
तेषां सैन्याः षष्टियक्षाः क्रमाद्वीर त्वया हताः ।
वरं ब्रूहि महाभाग यत्ते मनसि वर्तते २२६
इति श्रुत्वा स आह्लादो वजन प्राह निर्भयः ।
मम कीर्तिस्त्वया देव कर्त्तव्या च जनेजने ।२२७
पुमस्ते कार्यमतुल करिष्यामि श्रृणुत्व भोः ।
महीराजश्च धर्मात्मा शिवभक्तिपरायणः
तस्या नेत्रे मया शुद्धे कर्तव्ये नीलरूपके ।२२८
तव प्रिय सदा नीलस्तथैव च मम प्रियः ।
देवानां दुःखदो देव दैत्यानां हर्षवर्द्धनः ।२२९

कलि ने ने कहा—हे आह्लाद ! सबको आनन्द के प्रदान करने वाले-योगेश्वर-शुद्ध-महान और महावती के निवासी आपके लिए मेरा नमस्कार है ।२२३। हे महान बाहुओं वाले ! आप राम के अंशावतार हैं, मेरे पालन करने में सर्वदा तत्पर रहते हैं । इस काल में यहाँ आकर आपने इस भूमण्डल का भार हरण किया ।२२४। पावकीय राजा लोग जो तपस्या के बल से समन्वित थे उन अनेक क्षुद्र पाँच सहस्र राजाओं का वध करके आप योग के मध्य में समासीन हो गये हैं उन महान आत्मा वाले आपके लिए मेरा नमस्कार है ।२२५। उन नृपों की सेना भी साठ लाख थी । हे वीर ! आपके क्रम से उन सबका हनन किया

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। हे महाभाग ! आपके मन में जो भी हो उसका वरदान माँग लो।२२६। कलियुग द्वारा कहे हुए इन वचनों का श्रवण करके आह्लाद ने निर्भय होकर कहा—हे देव ! आपको मेरी यह कीर्ति जन-जन में कर देनी चाहिए।२२७। मैं फिर तेरा अनुपम कार्य करूँगा उसे श्रवण कर लो। शिव की भक्ति में परायण धर्मात्मा महीराज है उसके नील रूप वाले नेत्र मुझे शुद्ध करने हैं।२२८। आपका नील रूप है और उसी तरह से मेरा भी वह रंग प्रिय होता है। देवों को वह वर्ण दुःख देने वाला है और दैत्यों के हर्ष को बढ़ाने वाला है।२२९।

इत्युक्त्वा स तु रामांशो गजमारुह्य वेगतः।
महीराजमुपागम्य महद्युद्धं चकार ह २३०
रुद्रदत्तो गजस्तूर्णं पञ्चशब्दमुपस्थितः।
पद्मदन्तान्समारुह्य युयुधाते परस्परम् ॥२३१
अन्योन्येन तथा हत्वा गजौ स्वर्गमुपेयतुः ॥२३२
तदा भयातुरो राजाजा त्यक्त्वा युद्धं भयङ्करम्।
स तु दुद्राव वेगेन रामांशोऽनुययौ ततः ।२३३
केशेषु च महीराजं गृहीत्वा तरसा बली।
कलिदत्तं महीनालं नेत्रयोस्तेन तत्कृतम् ॥२३४
तदा प्रभृति वै शम्भुरशुद्धं नृपति प्रियम्।
मत्वा त्यक्त्वा ययौ स्थाने कैलासे गुह्यकालये ॥२३५
आह्लादः कलिना सार्द्धं कदलीवनमुत्तमम्।
गत्वा योगं चकारांशु पर्वते गन्धमादने ॥२३६

इस तरह से कहकर वह रामांश गज पर समारोहण करके वेग से महीराज के समीप में जाकर उसने महान् युद्ध किया था।२३०। रुद्र दत्त गज शीघ्र ही पञ्चशब्द के पास उपस्थित हुआ था। पद्मदन्तीपर चढ़कर परस्पर एक दूसरे का हनन करके वे दोनों गज स्वर्ग को गये थे।२३१।२३२। उस समय राजा ने भयातुर होकर उस भयंकर युद्ध का त्याग कर दिया था और वेग से दौड़ा था फिर रामांश भी उसी के पीछे चल दिया था।२३३। उस बलवान के केशों को पकड़ कर वेग

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से महीराज का ग्रहण कर लिया था। कलिदस महीनाल को उसने राजा के नेत्रों में डाल दिया था।२३४। तब से लेकर शम्भु ने उस अशुद्ध नृपति को यद्यपि वह प्रिय था तो भी बुरा समझकर उसका त्याग कर दिया और गुह्यकों के स्थान को जो कैलाश पर्वत है वे वहाँ चले गये।२३५। आह्लाद ने कलि के साथ उत्तम कदली वन में जाकर गन्धमादन पर्वत पर शीघ्र योग किया था।२३६।

तदा भूतं च रामांशं कलिर्दृष्ट्वा मुदान्वितः।
बलिपार्श्वमुपागम्य वर्णयामास सर्वशः।२३७
स वै बलिर्दैत्यराजोऽयुतैः सह विनिर्गतः।
गौर देशमुपागम्य सहोड्डीनमुवाच ह।२३८
गच्छ वीर बलैसार्द्धं निशायां रक्षितो मया।
हत्वा भूतं महीराजं विद्युन्मालां गृहाण भोः।२३९
इति श्रुत्वा वचस्तस्य षोडशाब्दांतरे गते।
मही जिसुतान्जित्वा समाहूय महावतीम्।
महीपतिं प्रेषयित्वा लुण्ठयित्वा च तद्वसु।२४१
लिंगार्थे कृतवान्यत्न स नृपः कीर्तिसागरे।
न प्राप्तस्सनृपस्त वै स्वगेहाय तदा ययौ।२४२
लक्षचण्डो कारयित्वा परमानन्दमाप्यवान्।
जयचंद्रस्तु तच्छ्रुत्वा पुत्रशोकसमन्वितः।२४३

उस प्रकार से उस रामांश को देखकर आनन्द से युक्त कलि ने देखा था और बलि के पास जाकर सब प्रकार से वर्णन अर्थात् स्तवन करने लगा था।२३७। वहां दैत्यों का राजा बलि दश सहस्र सेना के साथ निकल गया और देश में पहुंचकर सहोड्डीन से बोला।२३८। हे वीर ! मेरे साथ चलो और सेना को भी मेरे साथ में ले चलो, निशा में मेरे द्वारा आप सुरक्षित रहेंगे। राजा महीराज का हनन करके विद्युन्माला को ग्रहण करो।२३९। इस तरह के उसके वचन श्रवण

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर सोलह वर्ष के अन्तर होने पर सवा लाख सेना के सहित कुरुक्षेत्र में आ गया था ।२४०। महीराज के पुत्रों को बुलाकर उन्हें जीतकर महावती में महीपति को भेजकर उसका समस्त धन लूटकर उस राजा ने कीर्ति सागर में लिंग के लिए यत्न किया था। उस राजा ने उसे नहीं प्राप्त किया था तब वह अपने घर को चला गया था ।२४१। ।२४२। वहाँ पर एक लाख चण्डी कराकर वह परम आनन्द को प्राप्त हुआ था। पुत्र के शोक से समन्वित ने इसका श्रवण किया था ।२४३।

निराहारो यतिर्भूत्वा मृतः स्वर्गपुरं ययौ ।
सहोड्डीन स नृपः कृत्वा युद्धं भयंकरम् ।२४४
सप्ताहोरात्रमात्रेण म्लेच्छराजवशं गतः ।
मारितो बहुयत्नेन महीराजो न वै मृतः ।२४५
तदा म्लेच्छस्सहोड्डीन निर्बंधनमथाकरोत् ।
ज्योतिरूपस्थितं तत्र चन्द्रभट्टो नृपाज्ञया ।
क्षुरप्रेण च वाणेन हत्वा वह्नौ ददाह वै ।२४६
विद्युन्मालां स च म्लेच्छो गृहीत्वा च धन बहु ।
तत्रास्थाप्य स्वदासं च कुतुकोड्डीनमागतः ।२४७

महीराज उस दुःख से निराहार, रहकर यति हो गया और मर गया था और स्वर्गपुर में प्राप्त हो गया था। मरने के पूर्व उसने सहोड्डीन के साथ भयङ्कर युद्ध किया ।२४४। सात अहोरात्र में ही म्लेच्छराज के वश में हुए महीराज को बहुत मारा था किंतु वह मरा नहीं था ।२४५ उस समय सहोड्डीन म्लेच्छ निर्बंद्ध करा दिया था। वहाँ पर चन्द्रभट्ट ने नृप की आज्ञा से ज्योति रूप स्थित को क्षुरप्र बाण के द्वारा मार कर अग्नि में दाह कर दिया था ।२४६। उस म्लेच्छ ने विद्युन्माली को और बहुत सा धन करके वहाँ अपने दास को स्थित करके वह कुतुकोड्डीन में आ गया था ।२४७।

—o—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

।। व्यास द्वारा भविष्य कथन ।।

एवं द्वापरसंध्याया अन्ते सूतेन वर्णितम् ।
सूर्यचन्द्रान्व्याख्या न तन्मया कथितं तव ।१
विशालायां पुनर्गत्वा वैतालेन विनिर्मितम् ।
कथयिष्यति सूतस्तमिमिहासमुच्चयम् ।
तन्मया कथितं सर्वं हृषीकोत्तमपुण्यदम् ।
पुनर्विक्रमभूपेन भविष्यति समाह्वयः ।३
नैमिषारण्यमासाद्य श्रावयिष्यति वै कथाम् ।
पुनरुक्तानियांन्येषु पुराणाष्टदशानि वै ।४
तानि चोपपुराणानि भविष्यन्ति कलौ युगे ।
तेषां चोपपुराणानां द्वादशाध्यमुत्तसम् ।५
सारभूतश्च कथित इतिहाससमुच्चयः ।
यस्ते मया च कथितो हृषीशोत्तम ते मुदा ।६
विक्रमाख्यानकालांतेऽवतार कलया हरेः ।
स च शक्त्यावताःगे हि राधाकृष्णस्य भूतलेः ।७

इस अध्याय में महर्षि व्यास के द्वारा अपने ही मन के प्रति उद्देश्य करके भविष्यत्कथा का वर्णन किया जाता है । श्री महर्षि वेद व्यासजी ने कहा—इस प्रकार से द्वापर की सन्ध्या के अन्त में सूतजी के द्वारा वर्णन किया हुआ सूर्यवंश और चन्द्रवंश का आख्यान मैंने कहा है ।१। विशाला में फिर जाकर वैताल के द्वारा विनिर्मित उस इतिहास को सूत कहेंगे ।२। वह मैंने विषयेन्द्रियों को उत्तम पुण्य प्रदान करने वाला सब कह दिया है फिर विक्रम भूप से समाह्वय (नाम) होगा ।३। नैमषारण्य में पहुंचकर निश्चय ही कथा को सुनावेंगे । जो भी अष्टादश पुराण हैं वे पुनुरुक्त हैं, अर्थात् फिर से कहे गये हैं ।४। वे इस कलियुग में उप पुराण होंगे । उन पुराणों के बारह अध्याय उत्तम हैं ।५। यह इतिहासों का समुच्चय सारभूत है जो कि मैंने तुमसे कहा है । तुम्हारे आनन्द के लिए इन्द्रियों को सर्वोत्तम है ।६। विक्रमाख्यान के काल के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

अन्त में हरि का कला से अवतार है। वह भूतल में राधा कृष्ण का शक्त्यावतार है।७।

तत्कथां भगवान्सूतो नैमिषारण्यमास्थितः।
अष्टाशीतिसहस्राणि श्रावयिष्यति वै मुनीन्। ८
यत्तन्मया च कथितं हृषीकोत्तम ते मुदा।
पुनस्ते शौनकाद्याश्च कृत्वा स्नानादिकाः क्रियाः ॥९
सूतपार्श्वं गमष्यन्ति नैमिषारण्यवासिनः।
तत्पृष्ठनैव सूतेन यदुक्तं तच्छृणुष्व भो ॥१०
श्रुतं कृष्णस्य चरितं भगवन्वर्तोदितम्।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि राज्ञां तेषां क्रमाष्कुलम् ॥११
चतुर्णां वह्निजातानां परं कौतूहलं हिनः।
स हरिस्त्रियुगी प्रोक्तः कथं जातः कलौ युगे ॥१२

उस कथा को भगवान सूतजी नैमिषारण्य में आस्थित होकर अट्ठासी हजार शौनक आदि मुनियों को सुनावेंगे।८। जो कुछ मैंने आपसे कहा हैं वह हे हृषीकोत्तम ! तुम्हारे सुख के लिए है। फिर उन शौनकआदि मुनियों ने वहां स्नान आदि क्रिया करके नैमिसारण्य वासी लोग सूतजी के पास में जायेंगे। उनके द्वारा पूछे गये सूतजी ने जो कुछ भी कहा था उसे अब आप हे शौनकादि मुनिगण ! श्रवण कीजिए।९-१०। ऋषियों ने कहा—हे भगवन् आपने जो वर्णन किया था वह कृष्ण का चरित्र सुन लिया है। अब मैं उन राजाओं का कुल क्रम से श्रवण करने की इच्छा रखता हूँ।११। जो कि राजा वह्निजात चार हुए थे उनके कुल को क्रमशः बताइये। हमको इसका अत्यन्त कौतूहल होता है उस हरि को आपने त्रिगुणी बताया है फिर वह कलियुग चौथे युग में कैसे उत्पन्न होकर यहाँ आये।१२।

कथयामि मुनिश्रेष्ठा युष्माकं प्रश्नमुत्तमम्।
अग्निवंशनृपाणां च चरितं शृणु विस्तरात् ॥१३
प्रमरश्च महीपालो दक्षिणां दिशमास्थितः।
अम्बया रचितां दिव्यां प्रमराय पुरीं शुभाम् ॥१४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निवासं कृतवान्राजा सामवेदपरो वली ।
षड्वर्षाणि कृत राज्यं तस्मज्जातो महामरः ।१५
त्रिवर्षं च कृतं राज्यं देवापिस्तनयोऽभवत् ।
पितुस्तेल्यं कृतं राज्यं देवदूतस्ततोऽभवत् ।
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं शृणु तत्कारणाम् मुने ।१६
अशोक निहिते तस्मिन्बौद्धभूपे महाबले ।
कलिर्भास्करमाराध्य तपसा ध्यानतत्परः ।१७
पंचवर्षान्तरे सूर्यस्तस्मै च कलये मुदा ।
शकाख्यं नमि पुरुषं ददौ तद्भक्तितोषितः ।१८
तदा प्रसन्नः स कलिशकाय च महात्मने ।
तैत्तिरं नगरं प्रेम्णा ददौ र्षितमानसः ।१९
तत्र गोपान्दस्युगणान्वशीकृत्य महाबली ।
हतवान्भूपतीम्बाणैस्तमार्त्तो स्वल्पजीविनः ।२०
गन्धर्वसेनश्च नृपो देवदूतास्मजो वली ।
शताद्धाब्दं पद कृत्वा तपसे पुनरागतः ।२१

सूतजी ने कहा—हे मुनि श्रेष्ठो ! आपका यह प्रश्न तो बहुत ही उत्तम हुआ है, मैं इसको बताता हूं, अब अग्नि वंश के राजाओं का चरित्र विस्तार के साथ आप लोग श्रवण करें ।१३। प्रमर नामक एक राजा दक्षिण दिशा में आस्थित था । अम्बा के द्वारा वसा एक रचित शुभ और दिव्य पुरी प्रमरको दी गई थी ।१४। वहां वलवान और साम वेद में परायण वह राजा निवास करता था । उस राजा ने छैः वर्ष तक राज्य का शासन किया था उससे फिर महामर ने जन्म ग्रहण किया था ।१५। इसने भी तीन वर्ष पर्यन्त राज्य किया था इसका पुत्र देवापि नामधारी उत्पन्न हुआ था । इसने भी अपने पिता के तुल्य राज्य किया था । उससे फिर देवदूत पुत्र हुआ । इसने पिता के बरावर ही राज्यशासन किया था । हे मुने! इसका कारण सुनो।१६।महान बलवान् बौद्ध धर्म के मानने वाले महाराज अशोक के मृत हो जाने पर कलि ने भगवान भास्कर की आराधना करके तप द्वारा वह ध्यान में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तत्पर हो गया था ।१७। पाँच वर्ष के अन्तर में भगवान् भास्कर ने प्रसन्न होकर उस कलि के लिए शकाख्य नाम वाला पुरुष को उसकी अत्यन्त भक्ति से सन्तुष्ट होकर दिया था ।१८। उस समय बहुत ही प्रसन्न हुआ और महात्मा शक के लिए हर्षित मन वाला होकर प्रेम से तैत्तिरनगर दे दिया था ।१९। वहाँ पर उस महान् बलवान ने गोपों को अपने वश में करके फिर उसने आर्यों के देश का विनाश करने के लिए बार-बार उद्योग किया था और भूपों को बाणों से मार दिया था। इस कारण से वे फिर स्वल्पजीवी हो गये थे ।२०। देवदूत का पुत्र बलवान गन्धर्वसेन राजा पचास वर्ष तक पद का उपभोग करके फिर वह तपस्या करने के लिए आ गया था ।२१।

शिवाज्ञया च नृपतिर्विक्रमस्तनयस्ततः ।
शतवर्षं कृतं राज्यं देवभक्तस्ततोऽभवत् ।
दशवर्षं कृतं राज्यं शकैर्दुष्टैर्लयं गतः ।२२
शालिवाहन एवापि देवक्तस्य चात्मजः ।
जित्वा शकान्सषष्टचशब्दं राज्यं कृत्वा दिवंगतः ।२३
शालिहोत्रस्तस्य सुतो राज्यं कृत्वा शतार्द्धकम् ।
स्वर्गलोकं ततः प्राप्तस्तत्सुता शालिवर्द्धनः ।२४
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं शकहन्ता ततोऽभवत् ।
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं सुहोत्रस्ततोऽभवत् ।२५
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं हविर्होत्रस्ततोऽभवत् ।
पितुस्तुल्यं कृतं रायं मिद्रपालस्वतोऽभवत् ।२६
रीमिन्द्रावतीं कृत्वा तत्र राज्यमकारयत् ।
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं माल्यवान्नामतत्सुतः ।
दशहीनं कृतं राज्यं पितुस्तुल्यं कृतं पदम् ।२७
अनावृष्टिस्ततश्चासीन्महती चतुरब्दिका ।
ततः क्षुधातुरो राजा श्वविष्ठाधान्यगर्हितम् ।२८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान शिव की आज्ञा से राजा विक्रम इसका पुत्र था। इसने सौ वर्ष तक राज्य किया था। इससे फिर देवदत्त उत्पन्न हुआ। इसने केवल दश वर्ष तक ही राज्य किया था। फिर यह दुष्ट शकों के द्वारा लय को प्राप्त हो गया था।२२। शालिवाहन भी देवभक्त का पुत्र था उसने शकों को जीतकर साठ वर्ष तक राज्य का शासन किया और फिर वह स्वर्गवासी हुआ था।२३। उसका पुत्र शालिहोत्र हुआ। इसने पचास वर्ष पर्यन्त राज्य का शासन किया था और इसके पश्चात वह स्वर्गलोक को गया था। इस शालिहोत्र के राजा शालिवर्द्धन ने पुत्रके रूप में जन्म ग्रहण किया था।२४। इस शालिवर्द्धन ने भी अपने पिता के समान राज्य का उपभोग किया और इसके लिए शकहन्ता नामक पुत्र समुत्पन्न हुआ था। अपने पिता के बराबर समय तक ही इसने राज्य सुख सम्प्राप्त किया था इसके पश्चात इसका पुत्र सुहोत्र नामधारी ने जन्म ग्रहण किया था। पिता के तुल्य इसने राज्य किया। फिर हविहोद उत्पन्न हुआ। यह भी पितृतुल्य राज्यसुख का भोगी रहा था। इसके पीछे इसका पुत्र इन्द्रपाल हुआ था ।२५-२६ इसने इन्द्रावती नाम की परम रम्य पुरी की रचना कराकर वहां राज्य शासन चलाया था। इन्द्रपाल ने भी अपने पिता के बराबर समय तक राज्य किया था। उसके यहाँ माल्यवान् नामक पुत्र हुआ, इसने अपने नाम से माल्यवती नाम की पुरी बनाई थी और वहाँ आपने पिता के समान राज्य पद के सुख का उपभोग किया था।२७। उस समय वहाँ चार वर्ष तक बड़ी भारी अनावृष्टि हो गई थी। तब तो राजा भूख से अत्यन्त आतुर हो गया था। उस समय उस राजा ने श्वविष्ठा से गर्हित धान्य का संस्कार करके मन्दिर में शालग्राम के समर्पित किया था।२८।

संस्कृत्य मन्दिरे राजा शालग्रामाय चर्पयत्।
तदा प्रसन्नो भगवान्चचनं नभसेरितम् ॥२९
कृत्वाददौ वरं तस्मै शृणू तन्मुनिसत्तम।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुले यावन्नृपा भाव्याश्तव भूपतिसत्तम् ।
अनावृष्टिर्न भविता तवत्तो राष्ट्र उत्तमे ।३०
सुतो माल्यवतश्चासीच्छ भुदत्तो हर प्रियः ।
पितुस्तुल्यं कृतंराज्यभौमराजस्ततोऽभवत् ।३१
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं वत्सराजस्ततोभवत् ।
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यंभोजराजस्ततो भवत् ।३२
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं शम्भुदत्तास्ततोऽभवत् ।
दशहीनं कृतं राज्यं भोजराजपितुस्समम् ।३३
शम्भुदत्तस्य तनयो विन्दुपालस्ततेऽभवत् ।
विदुखण्डं च राष्ट्रं वै कृत्वा स सुखिलोऽभवत् ।
तेन राज्यं पितुस्तुल्यं कृतं वेदविदा मुने ।३४
विंदुपालस्य तनयो राजपालस्ततोऽभवत् ।
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं तस्माज्जातो महीनरः ।३५
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं सोदवर्मा नृपोऽभवत् ।
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं कामवर्मा सुतोऽभवत् ।३६
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं भूमिपासुस्ततोऽभवत् ।
भूसरस्तेन खनितं पुरं तत्र शुभुं कृतम् ।३७

उस समय भगवान प्रसन्न हो गये और आकाश के द्वारा कहे हुए वचन से उसे वर दिया था । हे मुनिश्रेष्ठ ! उसे श्रवण करो । भगवान ने आकाशवाणी के द्वारा कहा था—हे श्रेष्ठ भूप ! तेरे कुल में जितने भी राजा जब तक होंगे तब तक कभी तेरे राष्ट्र में अनावृष्टि नहीं होगी ।२९-३०। माल्यवान राजा का पुत्र हर का प्यारा शम्भुदत्त उत्पन्न हुआ था । इसने भी पिता के बराबर ही राज्य किया था । इसके पश्चात इसका पुत्र भौमराज वाला उत्पन्न हुआ था । पिता के तुल्य राज्य इसने किया था । फिर वत्सराज हुआ था इसने भी पिता के समान राज्य किया था । वत्सराज का पुत्र भोमराज हुआ जिसने कि अपने पिता के ही समान राज्य का सुख अनुभव किया था, भोजराज पुत्र शम्भूदत्त समुत्पन्न हुआ था । इसने भोजराज के तुल्य तो सभी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
काम किए थे किन्तु राज्य शासन उससे दश वर्ष ही कम किया था।३१।३३। शम्भु दत्त का पुत्र बिन्दुपाल हुआ था। जिसने बिन्दुखण्ड राष्ट्र बनाकर वहाँ सुख पूर्वक निवास किया था। हे मुने! उस वेद के ज्ञाता ने राज्य-सुख का उपभोग अपने पिता के समान ही किया था।३४। बिन्दुपाल का तनय राज्यपाल का नाम वाला उत्पन्न हुआ उसने पिता के समान राज्य किया था। इससे महीनर पुत्र और महीनर के सोम वर्मा तथा सोमवर्मा के कामवर्मा पुत्र उत्पन्न हुए थे। इन सबने अपने-अपने पिताओं के समान सब प्रकार से राज्य किया था। कामवर्मा के भूमिपाल पुत्र हुआ था, जिसने भूसर का खनन किया और वहाँ पर एक अति रमणीक शुभपुर की रचना की थी।३५-३७।

पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं रङ्गपालस्ततोऽभवत्।
भूमिपालस्तु नृपतिर्जित्वा भूपाननेकशः।३८
वीरसिंहस्ततो विख्यातोऽभून्महीतले।
स्वराज्ये रङ्गपाल स चाभिषिच्य वनं ययौ।
तपः कृत्वा दिवं यातो देवदेवप्रसादतः।३९
कल्पसिंहस्ततो रङ्गपालन्नृपोत्तमात्।
अनपत्यो हि नृपतिः पितुस्स्तुल्यं कृतं पदम्।४०
एकदा जाह्नवीतोये स्नानार्थं मुदितो ययौ।
दानं दत्वा द्विजातिभ्यः कल्पक्षेत्रमवाप्तवान्।४१
पुण्यभूमि समालोक्य शून्यभूतां स्थलीमपि।
नगरं कारयामास तत्र स्थाने मुदान्वितः।४२

इस भूमिपाल ने पिता के समान राज्य किया फिर रङ्गपाल हुआ भूमिपाल राजा ने राजाओं को जीतकर यश प्राप्त किया।३८। तब से वह वीरसिंह इस नाम से भू-मण्डल में विख्यात हो गया था। उसने अपने राज्यासन पर रङ्गपाल का अभिषेक कर दिया था और स्वयं वन को चला गया था। वहाँ उसने कठोर तपस्या की और देव-देव प्रसाद से वहाँ स्वर्ग को चला गया था।३९। फिर रंगपाल नृप श्रेष्ठ से कल्पसिंह सुत की समुत्पत्ति हुई थी। यह राजा सन्तान से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हीन था। इसने अपने पिता के बराबर राज्य शासन किया था।४०। एक बार यह प्रसन्न होकर भागीरथी गङ्गा के जल में स्नान करने के लिए गया था। द्विजों को दान देकर कल्पक्षेत्र को प्राप्त किया था।४१ उस पुण्य भूमि को देखा कि वह बिल्कुल शून्य पड़ी हुई हैं। फिर उसने वहाँ एक नूतन नगर का निर्माण कराया था। और उस स्थान में बहुत अधिक आनन्द से युक्त रहता था।४२।

कलापनगर नाम्ना प्रसिद्धमभवेद्भुवि।
तत्र राज्यं कृतं गङ्गासिंहस्ततोऽभवत्।४३
नवत्यब्दवपुभुत्वा सोऽनपत्यौ रणं गतः।
त्यक्त्वा प्राणान्कुरुक्षेत्र स्वर्गलोकमवाप्तान्।
समाप्तिमगमद्विप्र प्रमरस्य कुलं शुभम्।४४
तदयन्ये च शेषाः क्षत्रियस्तदनंतरम्।
तन्नारौष्वमितौ विप्र वभूव वर्णसंकरः।४५
वैश्यवृत्तिकराः सर्वे म्लेच्छतुल्या महीतले।
इति ते कथितं विप्रकुलं दक्षिणभूपतेः।४६

वह नगर इस भू-मण्डल में कलाप नगर के नाम से प्रसिद्ध हुआ था। वहाँ पर उसने समास्थित होकर राज्य का शासनसुखपूर्वक किया था। उसके गंगासिंह सुत हुआ। वह नब्बे वर्ष के शरीर वाला होकर रण में गया था और सन्तान हीन था। कुरुक्षेत्र में उसने प्रिय प्राणों का त्याग किया और फिर सीधा स्वर्ग लोक को चला गया था। हे विप्र ! प्रमर राजा का यह शुभ कुल समाप्ति को प्राप्त हो गया था।४३-४४ उसके वंश में शेष जो क्षत्रिय थे वे उसके पश्चात उसकी स्त्रियों में अनुरक्त होकर वर्णसंकर हो गये थे।४५। ये समस्त वैश्यों की वृत्ति को करने वाले इस भू-मण्डल में म्लेच्छों के तुल्य ही हो गये थे। हे विप्र ! यह मैंने दक्षिण दिशा में होने वाले राजा का कुल वर्णित कर दिया है।४६।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

। अजमेर के तोमर नरेशों का वर्णन ।

वयहानिमहीपालो मध्यदेशे त्वकं पद्म ।
गृहीत्वा ब्रह्मरचितमजमेरमवासयत् ।१
अजस्य ब्रह्मणो मा च लक्ष्मीस्तत्र रमा गता।
तया च नगरं रम्यमजमेरमज स्मृतम् ।२
दशवर्षं कृतं राज्यं तोमरस्तस्सुतोऽभवत् ।
पार्थिवः पूजयामास वर्षमात्रं महेश्वरम् ।३
इन्द्रप्रस्थं ददौ तस्मै प्रसन्नो नगरं शिवः ।
तदन्वये च ये जातास्तोमराः क्षत्रियाः स्मृताः ।४
तोमरवरजश्चैव चयहानिसुतः शुभः ।
नाम्ना सामलदेवश्च प्रश्रिताऽभून्महीतले ।५
सप्तवर्षं कृतं राज्यं महादेवस्तत्तोऽभवम् ।
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यंसंजयश्च ततो भवत् ।६
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं वीरसिंहस्ततोऽभवत् ।
शताद्धाब्दं कृतं ततोबिसुरोऽभवत् ।७

इस अध्याय में अजमेर नगर के वृतान्त का तथा तोमर के वंश के वृतांत का वर्णन किया जाता है । सूतजी बोले—वयहानि नाम के महीपाल ने मध्य देश में अपना पद ग्रहण करके ब्रह्मरचित अजमेर नगर को बसाया था ।१। आज यह ब्रह्मा का नाम है, और 'माँ' लक्ष्मी का नाम है । यह वहां रम गई थी । उससे ही यह रम्य अजमेर नगर कहा गया है ।२। इस राजा ने वहाँ दश वर्ष तक राज्य सुख का अनुभव किया था फिर इसका पुत्र तोमर उत्पन्न हुआ था । उसने पार्थिवों के द्वारा एक वर्ष पर्यन्त महेश्वर का अभ्यर्चन किया था अर्थात् शिव का शास्त्रोक्त पार्थिव पूजन सविधि किया था ।३। भगवान शिव नेपरम प्रसन्न होकर उसके लिए इन्द्रप्रस्थ दे दिया था । उसके वंश में जो भी क्षत्रिय समुत्पन्न हुए थे वे सब उस प्रतापी के नाम से ही तोमर क्षत्रिय कहलाये थे ।४। राजा तोमर का छोटा पुत्र चयहानिशुभ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ था। इस नाम से उस भूमितल में सामल देव प्रसिद्ध हुआ था। ।५। इसने सात वर्ष पर्यन्त राज्य किया था। इसका पुत्र फिर महादेव उत्पन्न हुआ। इस महादेव ने अपने पिता के समान ही राज्य किया था। इसके पश्चात् अजय ने उसके यहाँ जन्म धारण किया था। यह भी पिता के बराबर ही राज्य शासन करने वाला हुआ था। इसका पुत्र वीरसिंह हुआ। इस वीरसिंह ने आधी शताब्दी तक राज्य किया था। इसके पश्चात् अजय ने उसके यहाँ जन्म धारण किया था। यह भी पिता के बराबर ही राज्य शासन करने वाला हुआ था। इसका पुत्र वीरसिंह हुआ। इस वीरसिंह ने आधी शताब्दी तक राज्य किया था। इसका पुत्र विंदुसार नामधारी हुआ था।६।७।

पितुरर्द्धं कृतं राज्यं मध्यदेशे महात्मना।
तस्माच्चं मिथुन जात वीरा वीरविहास्तक: ।८
विक्रमाय ददौ वीरां पिता वेदविधानात: ।
स्वपुत्राय स्वकं राज्यं मध्यदेशान्तरं मुदा ।६
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यंमाणिक्यस्तत्सुतोभवत् ।
शताद्र्धाब्दं कृतं राज्यं महासिंहस्ततोऽभवन् ।१०
पितुस्तुल्यं राज्यं चन्द्रगुप्स्ततोऽभवत् ।
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं वत्सुतश्च प्रतापवान् ।११
पितुस्तुल्यं कृतां राज्यं मोहनस्यत्सुतोऽभवत् ।
त्रिशब्दं कृतां राज्यं श्वेतरायस्ततोऽभवत् ।१२
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं नागवाहहस्तोऽभवत् ।
पितुस्तुल्यं कृत राज्यं लोहधारऽततोऽभवत् ।१३
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं वीरसिंहहस्ततोभवत् ।
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं विबुधस्तत्ऽसुतोभवत् ।१४

इस महान् आत्मा वाले ने मध्य देश में पिता का आधा राज्य किया था। उसके दो जोड़ला पुत्र हुए थे उन दोनों में एक कन्या और एक पुत्र था। कन्या का नाम वीरा था और पुत्र का नाम वीर विहास्तक था।८। राजा ने विक्रम के लिए वीरा दान कर दिया था। जो कि पिता के द्वारा वेद की विधि से किया था। और अपने पुत्र को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परम प्रसन्नता से मध्य देशान्तर अपना राज्य दे दिया था ।६। इसके माणिक्य पुत्र हुआ—माणिक्य ने पचास वर्ष तक राज्य किया था। फिर महासिंह के चन्द्रगुप्त पुत्र हुआ था जिसने अपने पिता से आधे समय तक ही राज्य किया था। चन्द्रगुप्त का पुत्र प्रतापवान हुआ था। इसने पिता के तुल्य राज्य किया था। इसका पुत्र मोहन नाम का राजा हुआ। इसने तीन वर्ष तक राज्य किया। इसका पुत्र श्वेतरायहुआ था।१०।१२। श्वेतराय का पुत्र नागवाह और नागवाह का पुत्र लोहधार हुआ एवं इसका पुत्र वीरसिंह हुआ था। इन सबने अपने पिताओं के समान ही राज्य किया। वीरसिंह के पुत्र का नाम विबुध था।१३।१४

पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं चंद्ररायस्ततोऽभवत् ।
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं ततो हरिहरोऽभवत् ।१५
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं वसंतस्तस्य चात्मजः ।
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं वलांगस्तनयोऽभवत् ।१६
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं प्रथमस्तत्सुतोऽभवत् ।
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं मंगरायस्ततोऽभवत् ।१७
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं विशालस्तस्य मात्मजः ।
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं शार्ंग देवस्ततोऽभवत् ।१८
पितुस्तु कृतं राज्यं जयसिंहस्तोऽभवत् ।१६
आर्यदेशाश्च सकला जितास्तेन महात्मना ।
तद्धनैः कारयामास यज्ञं बहुफलप्रदम् ।२०
ततश्चनन्द देवो हि जातः पुत्रः शुभाननः ।
शताद्धब्दं कृतं राज्यं जयसिंहेन धीमता ।२१

विबुध ने पचास वर्ष राज्य किया। इसका पुत्र चन्द्रराय, उसका हरिसर, उसका बसन्त, उसका बलांग, उसका प्रथम, उसका मंगराय और उसका विशाल तथा उसका मन्त्र देव और उसका पुत्र जयसिंह हुआ।१५-१६। इन सबने पिता के समान ही राज्य शासन किया था। जयसिंह ने समस्त आर्य देशों की विजय करली थी। उस जीत के धन से महात्मा ने बहुत फल का प्रदान करने वाला यज्ञ कराया।२०।उससे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर आनन्द देव नामक शुभ मुख वाले पुत्र नृप की उत्पत्ति हुई थी। श्रीमान जयसिंह ने पचास वर्ष तक राज्य किया था।२१।

तत्सुतेन पितुस्तुल्य कृतं राज्यं महीतले।
सोमेश्वस्तस्य सुतो महाशूरो बभूव ह।२२
अनंगपालस्य सुतो ज्येष्ठां व कीर्तिमालिनीम्।
तामुगाह्य विधानेन तस्यां पुत्रानजीजनत्।२३
धुंधुकारश्च वै ज्येष्ठो मथुराराष्ट्रसंस्थितः।
मध्यः कुमाराख्यसुतः पितुः सदमास्थतः।२४
महीराजस्तु बलवांस्तृतीयो देहलीपतिः।
सहोद्दीनस्य नृपतेर्वशमाप्य मृतिं गतः।२५
चयहानैश्च स कुलं छायायित्वा दिवं ययौ।
तस्य वंशेत राजन्यास्तेषां पत्न्यः पिशाचकैः।२६
म्लेच्छैश्च भुक्तवत्यस्यां वभूवुर्वर्णसंकराः।
न वै आर्या न वै म्लेच्छा जट्टा जात्या च मेहनाः।२७
मेहना म्लेच्छजानीता जट्टा आर्यमया स्मृताः।
क्वचित्क्वचिच्च ये शेषाः क्षत्रियाश्चपहानिजाः।२८

उसके पुत्र ने अपने पिता के समान ही इस भूतल पर राज्य किया था। उसका पुत्र सोमेश्वर हुआ था जो महान शूरवीर था।२२। अनंग पाल के पुत्र ने ज्येष्ठा कीर्ति मालिनी के साथ विधान के साथ विवाह किया था और उसमें पुत्रों को समुत्पन्न किया था।२३। धुन्धुकार ज्येष्ठ था जो मथुराराष्ट्र में संस्थित था। मध्य पुत्र कुमाराख्य था जो पिता के पद पर समास्थित हुआ था।२४। महीराज बलवान उसका तृतीय पुत्र था जो देहली का स्वामी हुआ था। वह सहोद्दीन राजा के वश में आकर मृत्यु को प्राप्त हुआ था।२५। उसने चयहानि के कुल को फैला दिया था और फिर स्वर्ग को चला गया था। उसके वंश के जो राजा (क्षत्रिय) थे उनकी पत्नियाँ म्लेच्छों के द्वारा भोगी गईं थी और वे सब वर्ण संकर हो गये थे न तो वे आर्य ही थे और न म्लेच्छ ही रहे थे। वे जाति से जट्ट और मेहन हो गये थे। मेहन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो म्लेच्छ जाति वाले होते हैं और जट्ट आर्यमय माने गए हैं। यहाँ मेहन से मेव और जट्ट से जाट होता है; और कहीं-कहीं पर शेष चयहानि से उत्पन्न क्षत्रिय रहे हैं।२६-२८।

—०—

।। शुक्ल वंश चरित्र ।।

शुक्लवंश प्रवक्ष्यामि शृणु विप्रवरादितः।
यदा कृष्णः स्वयं ब्रह्मा त्यक्त्वा भूमि स्वकं पदम्।१
दिव्यं बृन्दावनं रम्यं प्रययौ भूतले तदा।
कलेरागमनं ज्ञात्वा म्लेच्छपा द्वीपमध्यगे।२
स्थिता द्वीपेषु वै नाना मनुजा वेदतत्परा.।
कलिनामित्रधर्मेण दूषितास्ते बभूविरे।३
अष्टषष्टिसहस्राणां वर्षाणां मुनिसत्तम्।
अद्य प्रभूति वै जातः कालः कलिसमागमे।४
षष्टिवर्षसहस्राणि द्वीपराज्यमचीकरेत्।
स कलिम्लेच्छया सार्धं सूर्यपूजनतत्परः।५
तत्पश्चाद्भारते वर्षे म्लेच्छ्या कलिराययौ।
दृष्ट्वा तद्भारतं वर्षं लोकपालश्च पालितम्।६
भयभीतस्त्वराविष्टो गन्धर्वाणां यशस्करः।
स कलिः सूर्यमाराध्य समाधिस्थो बभूवह।७

इस अध्याय में शुक्ल पक्ष नामक अग्निवंश में होने वालों तथा भूपाल वंश में होने वालों के चरित्र का वर्णन है श्री सूतजी ने कहा—हे प्रियवर! अब मैं शुक्ल वंश का वर्णन करता हूँ उसे तुम आदि से ही श्रवण करो। जिस समय भगवान कृष्ण स्वयं ब्रह्म अपने भूमि पद का त्याग करके दिव्य एवं रम्य बृन्दावन में भूतल में चले गये। उन्होंने द्वीप के मध्य म्लेच्छ और कलि का आगमन जान लिया था।१-२। द्वीपों के अनेक मनुष्य वेदों में तत्पर जो थे वे धर्म के शत्रु कलि के द्वारा दूषित हो गये थे।३। हे मुनिसत्तम्! आज से लेकर अड़सठ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हजार वर्षों का समय कलि के समागम में हो गया है ।४। उस कलि ने म्लेच्छों के साथ सूर्य के पूजन में तत्पर रहते हुए साठ हजार वर्ष तक द्वीप राज्य किया था ।५। इसके पीछे भारत को लोकपालों के द्वारा पालित देखकर म्लेच्छा के साथ भारत वर्ष में वह कलि आया था ।६। त्वरा (शीघ्रता) से अभीष्ट और भय में डरा हुआ गन्धर्वों के यश को करने वाला वह कलि सूर्य देव की समराधना करके समाधि में स्थित हो गया था ।७।

ततो वर्षशताब्दांते सन्तुष्टो रविरागतः ।
सोंशुभिर्लोकमांतव्य मसावृष्टिमकारयत् च ।८
चत्वर्षसहस्राणि चतुर्वर्षशतानि च ।
व्यतीतानि मुनिश्रेष्ठ चाद्य प्रभृति संलपे ।९
सम्पन्नं भारतं वर्षं तदा जातं समततः ।
व्यूहाख्तो यवनौ नामं तेन वं पुरितं जंगत ।१०
सहस्राब्दकलौ प्राप्ते महेन्द्रो देवराट् स्वयम् ।
काश्यपं प्रेषयामास ब्रह्मावर्तें महोत्तमे ।११
आर्यावतो देवशक्तिस्तत्करं चाग्रहीन्मुदा ।
दशपुत्रान्सभुत्पाद्य स द्विजो मिश्रमागमत् ।१२
मिश्रदेशोद्भवान्म्लेच्छान्शींकत्यायुत मुदा ।
स्वदेशं पुनरात्य शिष्यांस्तान्सचकार स ।१३
नष्टायां सप्तपुर्यां च ब्रह्मावर्तं महोत्तमम् ।
सरस्वतीदृषक्त्योर्मध्यर्गं तत्र चावसत् ।१४

इसके अनन्तर एक सौ वर्ष के अन्त में रवि सन्तुष्ट होकर आया था उसने अपनी किरणों के द्वारा लोक को आतप्त करके फिर महा वृष्टि कराई थी ।८। हे मुनि श्रेष्ठ ! आज से लेकर चार हजार चार सौ वर्ष व्यतीत हुए हैं ।९। उस समय सभी ओर से यह भारत वर्ष पूर्णतया सम्पन्न हो गया था । एक व्यूह नाम वाला यवन था उसने सम्पूर्ण जगत को पूरित कर दिया था ।१०। एक सहस्र वर्ष कलि के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त हो जाने पर देवों के राजा महेन्द्र ने स्वयं महान उत्तमब्रह्मावर्त में काश्यप को भेजा था।११। आर्यावती देव शक्ति ने प्रसन्नता सेउसके कर को ग्रहण किया था। उसने दश पुत्रों को समुत्पन्न किया था और फिर वह मिश्र में आ गया था।१२। वहाँ मिश्र देश में होने वाले म्लेच्छों को जो संख्या में दश सहस्र थे अपने वश में किया था। इसके पश्चात अपने देश में आकर उनको शिष्य बनाया था।१३। सप्तपुरी के नष्ट हो जाने पर महान् उत्तम ब्रह्मावर्त सरस्वती और दृषद्वती के मध्य में रहने वाला वहाँ पर बस गया था।१४।

स्वपुत्रं शुक्लमाहूय द्विजश्रेष्ठ तपोधनम् ।
आज्ञाप्य रैवतं शृगं तपसे तु पुनः स्वयम् ।१५
नवपुत्रांस्तथा शिष्यान्मनुधर्मं सनातनम् ।
स्रावयामास धर्मात्मा स राजा मनुधर्मगः ।१६
शुक्लोऽपि रैवतं प्राप्य सच्चिदानन्दविग्रहम् ।
वासुदेव जगन्नाथं तपसा समतोषयत् ।१७
तदा प्रसन्नोभगवान्द्वारकानायको बली ।
करे गृहीत्वा त विप्रं समुदांनमुपाययौ ।१८
द्वारकां दर्शयामास दिव्यशोभासमन्विताम् ।
व्यतीते द्विजसहस्राब्दे किंचिज्जाते भगूत्तम ।१९
अग्निद्वारेण प्रययौ स शुक्लोऽर्बुदपर्वते ।
जित्वा बौद्धान्द्विजैः सार्धं त्रिभिरन्यैश्च बंधुभिः ।२०
द्वारकां कारयामास हरेश्च कृपया हि सः ।
तत्रोष्य मुदितो राजा कृष्णध्यानपरोभवत् ।२१

तप के धन वाले द्विजों में श्रेष्ठ अपने पुत्र शुक्ल को उसने बुलाकर आज्ञा दी थी और पुन स्वयं तप के लिए रैवत शृङ्ग चला गया था ।१५। वहाँ शिष्य उन नौ पुत्रों को मनु के धर्म के अनुगामी धर्मात्मा उस राजा ने सनातन मनु का श्रवण कराया था।१६। शुक्ल की रैवत पर्वत पर पहुंचकर उसने सच्चिदानन्द विग्रह वाले जगत् के स्वामी वासुदेव को अपने तप के द्वारा पूर्णतया सन्तुष्ट किया था।१७। उस

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय में बलवान द्वारका के स्वामी भगवान् परम प्रसन्न हुए और उस ब्राह्मण को हाथ से पकड़ कर समुद्रान्त पर आ गये थे।१८। हे भृगूत्तम ! वहाँ उन्होंने दिव्य शोभा से समन्वित द्वारिका को दिखाया था। बत्तीस हजार वर्ष व्यतीत हो जाने पर वह शुभ अग्निद्वार से अर्बुद पर्वत पर चला गया था। वहां अपने तीन अन्य द्विज बन्धुओं को साथ लेकर बौद्धों को विजय किया था।१९-२०। उसने हरि की कृपा से उस द्वारका को कराया था। वह राजा परम प्रसन्नता से निवास कर कृष्ण के ध्यान में तत्पर हो गया था।२१।

पश्चिमे भारते वर्षे दशाब्दं कृतवान्पदम्।
नारायणस्य कृपया विष्वक्सेनः सुतोऽभवत्।२२
विंशदब्दं कृतं राज्यं जयसेनस्ततोऽभवत्।
त्रिंशदब्दं कृतं राज्यं विसेनस्तस्य चात्मजः।२३
शतार्धाब्दं कृतं राज्यं मिथुनं तस्य चाभवत्।
प्रमोदो मोदसिंहश्च विक्रमाय निजां सुताम्।२४
विनेनश्च ददौ प्रीत्या राष्ट्रं पुत्राय चोत्तमम्।
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं सिंधुवर्मा सुतोऽभवत्।२५
सिंधुकूले कृतं राज्यं त्यक्त्वा तत्पैतृकं पदम्।
सिंधुदेशस्ततो नाम्ना प्रसिद्धोभून्महीतले।२६
पितुस्तुल्यं राज्ञा वै सिंधुवर्मणा।
सिंधुद्वीपस्तस्य सुतः पितुस्तुल्यं कृतं पदम्।२७
श्रीपतिस्तस्य तनयो गौतमान्वयसम्भवाम्।
काच्छपीं महिषीं प्राप्त कच्छदशमुपाययौ।२८

पश्चिम भारत वर्ष में दश वर्ष तक पद किया था। फिर नारायण की कृपा से विष्वक्सेन नामक सुत हुआ था।२२। उसने यहाँ बीस वर्ष तक राज्य का शासन किया था। उसका पुत्र जयसेन समुत्पन्न हुआ था। इसने तीन वर्ष पर्यन्त राज्य किया था। फिर इसका पुत्र विसेन नामधारी उत्पन्न हुआ था।२३। इसने पचास वर्ष तक राज्य शासन की बागडोर अपने हाथ में रखी थी। इसके एक मिथुन (जोड़ला) पैदा हुए थे जिनके नाम प्रमोद और मोदसिंह थे। विसेन ने अपनी कन्या विक्रम को दी थी और प्रीति से उत्तक-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्र पुत्र को दिया था। इसने राज्य का शासन अपने पिता के समान ही किया था। इसका पुत्र सिंधु वर्मा नामधारी समुत्पन्न हुआ था।२४-२५। इसने उस अपने पैतृक पद का त्याग करके सिंधु नदी के तट पर अपना राज्य बनाया था। तभी से वह सिन्धु देश इस नाम से उसकी प्रसिद्धि हो गई थी।२६। इस राजा सिन्धु वर्मा ने अपने पिता के समान ही राज्य का शासन किया था उसके पुत्र का नाम सिन्धुद्वीप था। इसने भी अपने पिता के समान ही अपने पद का कार्य संभाला था।२७। इसके पुत्र का नाम श्रीपति था जिसने गौतम वंश में समुत्पन्न काच्छपी रानी को प्राप्त करके वह फिर कच्छ देश में आ गया था।२८।

पुलिन्दान्यवनाञ्जित्वा तत्र देशमकारयत् ।
देशो वै श्रीपतिर्नाम्ना सिंधूकूले बभूव ह ।२६
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं भुजवर्मा तयोऽभवत् ।
जित्वा स शवरान्भिल्लांस्तत्र राष्ट्रमकारयत् ।३०
भूजदेशस्ततो जातः प्रसिद्धोऽभून्महीतले ।
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं रणवर्मा सुतोऽभवत् ।३१
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं चित्रवर्मा सुतोऽभवत् ।
कृत्वा स चित्रनगरी वनमध्ये नृपोत्तमः ।३२
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं धर्मवर्मा सुतोऽभवत् ।
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं कृष्णवर्मा सुतोऽभवत् ।३३
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यमुदयस्सुतोऽभवत् ।
कृत्वोदयपुरं रम्य वनमध्ये नृपोत्तम ।३४
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं वाप्यकर्मा सुतोऽभवत् ।
वापीकूपतडागानि नानाहर्म्याणि तेन वै ।३५
धर्मार्थे कारयामास धर्मात्मा स च वै पुरम् ।
एतस्मिन्नन्तरे प्राप्तो बलदी नाम भूपतिः ।३६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहाँ उसने पुलिन्द और यवनों को जीतकर अपना देश बनाया था। इसलिये वह देश सिन्धु के तट पर श्रीपति के नाम से ही हो गया था।२६। इस श्रीपति ने अपने पिता के समान ही राज्य शासन चलाया था, इसके पश्चात् इसका पुत्र मुज वर्मा हुआ था। इसने वहाँ पर श्वरों और भीलों को जीतकर अपने एक राष्ट्र का निर्माण किया था।३०। तभी से इस महीतल में भुज साम के देश की प्रसिद्धि हुई थी। इसने अपने पिता की रीति नीति के अनुसार ही उतने ही समय तक राज्य-शासन का काम संभाला था। इसके पीछे इसका पुत्र रण वर्मा हुआ था।३१। इस रण वर्मा ने पितृ तुल्य राज्य किया और इसके पुत्र का नाम चित्रवर्मा हुआ था। इस उत्तम नृप ने घोर बन के मध्य में चित्र नगरी की रचना कराई थी।३२। इसका राज्य-शासन भी इसके पिताके समान ही रहा था। इसके पुत्र का नाम धर्म वर्मा था। धर्मवर्मा ने तथा इसके पुत्र कृष्णवर्मा ने पिताओं के समान ही राज्य किया था।३३। फिर इसका पुत्र उदय नामधारी हुआ था। इस उत्तम. नृप ने घोर वन के मध्य में रम्य उदयपुर बसाया इसके राज्य की शासन-व्यवस्था भी विल्कुल अपने पिता के समान ही थी। इसके पुत्र का नाम वाप्यवर्मा हुआ था। इसने अनेक प्रकार के बहुत से वापी (वावड़ी)—कूप और तडाग (तालाब) तथा विविध प्रकार के हर्म्यों (उत्तम भवनों) की रचना कराई थी।३४-३५। इसने इन सबका निर्माण धमार्थ ही कराया था क्यों कि वह बहुत धर्मात्मा उस पुर में हुआ था। इसी अन्तर में बलदी नाम का राजा वहाँ प्राप्त हो गया था।३६।

लक्षसैन्ययूतो वीरो महामदमते स्थितः।
तेन सार्धमभूद्यद्धमं राज्ञो वे वाप्यवर्मणः।३७
जित्वा पैशाचकान्म्लेच्छान्कृष्णोत्सवमकारयत्।
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं गुहिलस्तत्सुतोऽभवत्।३८
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं कालभोजः सुतोऽभवत्।
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं राष्ट्रपालस्ततोऽभवत्।३९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स त्यक्त्व पैतृकं स्थान वैष्णवीं शक्तिमागमत् ।
तपसाराधयामास शारदां सर्वमङ्गलाम् ।४०
प्रसन्ना सा तदा देवी कारयामास व पुरीम् ।
महावती महारम्यां मणिदेवेन रक्षताम् ।४१
तत्रोष्य नृपतिर्धीमान्दशाव्दं राज्यमाप्तवान् ।
तस्योभौ तनयौ जातौ जातौ विजयः प्रजयस्तथा ।४२

यह वीर एक लाख सेना से समन्वित होकर आया था और महामद के मद में स्थित था अर्थात् मुसलमान धर्म वाला था। उसके साथ वाघ्रवर्मा राजा का बड़ा भारी युद्ध हुआ था ।३७। इसने उन पैशाचिक म्लेच्छों को जीतकर कृष्णोत्सव कराया था। इसने अपने राज्य का शासन बिल्कुल अपने पिता के ही समान किया था। इसके पुत्र का नाम गुहिल हुआ था ।३८। गुहिल के पुत्र का नाम कालभोज था। इन दोनों ने अपने पिताओं के समान ही राज्य का पद सम्भाला था। कालभोज के पुत्र का नाम राष्ट्रपाल था। इनने अपने पिता के स्थान का त्याग कर दिया था और वह वैष्णवी शक्ति में चला आया था। इसने तप के द्वारा सर्वमंगला शारदा की आराधना की थी ।३९-४०। तब वह शारदा देवी इस पर प्रसन्न हो गई थी और पुरी की रचना कराई थी। यह पुरी महा रम्य महावती नामवाली थी और कि मणिदेव के द्वारा रक्षित थी ।४१। वहाँ पर यह धीमान् नृप निवास करते हुए दश वर्ष पर्यन्त इसने राज्यपद की प्राप्ति की थी। इसके दो पुत्र समुत्पन्न हुए थे। एक का नाम विजय था और दूसरे का नाम प्रजय था ।४२।

प्रजयः पितरौ त्यक्त्वा गंगाकूलमुपाययौ ।
द्वादशाब्दं च तपसा पूजयामास शारदाम् ।४३
कन्यामूर्तिमयी देवी वेणुवादनतत्परा ।
हयमारुह्य सम्प्राप्ता विहस्याह महीपतिम् ।४४
शिन्निमित्तं भूपसुत त्वया चाराधिता शिवा ।
तत्फलं त्वं हि तपसा मत्तः शीघ्रमवाप्स्यसि ।४५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इयि श्रुत्वा सहोवाच कुमारि मधुरस्वरे।
नवीन नगरं मह्यं कुरु देवि नमोऽस्तु ते ।४६
इति श्रुत्वा तु सा देवी ददौ तस्मै हयं शुभम् ।
पुरो भूत्वा वाद्यकरी दक्षिणां दिशमागता ।४७
स भूपो हयमारुह्य नेत्र आच्छाद्य चाययौ ।
पुनः स भूपति पश्चात्पश्चिमां दिशमागता ।४८
ततोनुप्रययौ पूर्वमकणो यत्र पक्षिराट ।
भयभीतो नृपस्तेन समुन्मील्य स चक्षुषी ।४९

प्रजय ने अपने माता-पिता का त्याग करके गंगा के तट पर प्रस्थान कर दिया था। वहाँ पर स्थित होकर इसने बारह वर्ष पर्यन्त तपस्या करके शारदा देवी का अर्चन किया था ।४३। कन्या की मूर्ति वाली अपने वेणु को बजाती हुई देवी अश्व पर समारूढ होकर वहाँ प्राप्त हुई थी और उसने हँसकर राजा से कहा था ।४४। हे भूप के पुत्र ! तूने किस कारण से शिवा का समाराधन किया हैं। इस तपस्या का फल मुझसे तू बहुत ही शीघ्र प्राप्त कर लेगा ।४५। इतना श्रवण करके उस राजा ने कहा—हे मधुर स्वर वाली कुमारी ! मेरे लिए आप एक नूतन नगर की रचना कर दो। हे देवि ! आपके लिए मेरा प्रणाम है। ।४६। यह राजा का वचन श्रवण करके उस देवी ने उस राजा को वह शुभ अश्व दे दिया था और आगे होकर वाद्य का वादन करने वाली वह दक्षिण दिशा में आ गई थी ।४७। वह राजा भी अश्व पर सवार होकर अपने नेत्रों को आच्छादित करके आ गया था। फिर वह राजा पश्चिम दिशा में आ गया था ।४८। इसके बाद पूर्व में गया था जहाँ पर अकर्मण पक्षियों का राजा था। उससे भयभीत हो गया और उसने अपनी आखें मींच ली थीं ।४९।

ददर्श नगर रम्यं कन्याया रचितं शुभम् ।
उत्तरे तस्य वै गङ्गा दक्षिणेनास पाण्डुरा ।५०
पश्चिमे ईशसरिता पूर्वे पक्षी च मकणः ।
कुब्जभूतभद्ग्राम कान्यकुब्ज इति स्मृतः ।५१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दशवर्ष च तेनैव जयपालेन व पदम् ।
कृतं तस्य सुतो जातो वेणवाद्याच्च वेणुकः ।५२
स वेणुश्च महीपालो देवीदत्तां मनोहराम् ।
पत्नीं कन्यावती नाम्नां समुद्राह्य रराज ह ।५३
तस्यां सप्ता जाता मातृणां मङ्गलाः कलाः ।
शीतला पार्वती कन्या तथा पुष्पवती स्मृता ।५४
गोवर्धनी च सिंदूरा काली नाम्ना प्रकीर्तिताः ।
ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा ।५५
वाराही च तथेन्द्राणी चामुण्डाः क्रमतोऽभवत् ।
एकदा भूपतेः पत्नी तन्तुना मृत्तिकाघटम् ।५६
कूपे कृतवती प्रेम्णा यथा पूर्वं तथाद्य सा ।
ददर्श वहुला नारीर्नानाभूषिताः ।५७

फिर कन्या का निमित्त बहुत सुन्दर एवं शुभ नगर देखा था जिसके उत्तर में गंगा थी और दक्षिण में पाण्डुरा थी ।५०। पश्चिम दिशामें ईश सरिता थी और पूर्व में वह मर्कण पक्षी था । वह ग्राम इस तरह कुब्ज भूत अर्थात् तिरछा झुका हुआ था । इसलिए वह कान्य कुब्ज इस नाम से कहा गया है ।५१। उस जयपाल ने दश वर्ष पर्यन्त अपने पदको संभाला था । उसका पुत्र वेणु के वाद्य से वेणुक नाम वाला उत्पन्न हुआ था । उस वेणु राजाने मनोहर देवी दत्ता कन्यावती नामवाली के साथ विवाह करके अपनी पत्नी बनाया था । इससे वह दीप्तितान हुआ था ।५२-५३। उस पत्नीके सात पुत्रियाँ समुत्पन्न हुई थी जो मातृकाओं की मंगला कन्याऐं थीं । उनके नाम-शतला-पार्वती-कन्या-पुष्पवती-गोवर्द्धनी सिन्दूरा और काली थे । इन्हीं नामों से वे प्रसिद्ध थीं । ब्राह्मी-माहेश्वरी-कौमारी-वैष्णवी-वाराही-इन्द्राणी और चामुण्डा ये क्रम से हुई थीं । एक बार राजा की पत्नी ने तन्तु से मृत्तिका के घट को कूप में प्रेम से किया था । जैसे वह पहिले थी वैसे ही आज भी है । नाना प्रकार के भूविणों से भूषित बहुत सी नारियों को देखा था ।५४-५५।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वयंमेकैव वसना मनोग्लानिमुपाययौ ।
तदैव स घटो भूमौ न प्राप्तः सप्रबृत्तिकाम् ।५८
दृष्टवा कन्यावती देवी घटहीना गृहीना ययौ ।
तदा तु सप्त कन्याश्च शिलाभूता गृहे स्थिताः ।५९
श्रुत्वा वेणुस्तदागत्य भर्त्सयित्वा स्वकां प्रियाम् ।
ब्रह्मचर्यं वृतं त्यक्त्वा रमयामास योषिताम् ।६०
नृपाद्वै वीरवत्यां च यशोविग्रह आत्मजः ।
वभूव बगान्धर्मी चार्यदेशपतः स्वयम् ।६१
विंशद्वर्यं कृतं राज्यं तेन राजा महीतले ।
महीचन्द्रतस्य सुतः पितृस्तुल्यं कृतं पदम् ।६२
चन्द्रदेवस्तस्य सुतो राज्यं तेन पितुः समम् ।
कृतं तस्मात्सुतो जातो मदपालो महीपतिः ।६३

वह स्वयं एक ही वस्त्र वाली मनोंग्लानि को प्राप्त हुई थी। उस समय ही वह घट भूमि में प्राप्त नहीं हुआ था संप्रबृत्तिकों को देखकर कन्यावती देवी घट से रहित गृह को चली गई थी। उस समय सात कन्यायें शिलाभूता होकर घर में स्थित हो गई थी। ।५८-५९। वेणु ने जब यह सुना तो वहाँ उस समय उसने आकर अपनी प्रिया को भर्त्सना दी और ब्रह्मचर्य वृत का त्याग करके योषित के साथ रमण किया था ।६०। तब राजा से वीरवती में यशोनिग्रह नाम वाला पुत्र उत्पन्न हुआ था। वह बलवान्-धर्मात्मा और स्वयं आर्यदेश का स्वामी था ।६१। उस राजा ने बीस वर्ष तक इस भूमितल पर राज्य का शासन किया था। फिर इसके महीचन्द्र नाम वाला पुत्र उत्पन्न हुआ जिसने पिता के तुल्य राज्य किया था ।६२। महीचन्द्र का पुत्र चन्द्रदेव हुआ था। इसने भी पिता के समान ही राज्य किया था। इसके जो पुत्र समुत्पन्न हुआ था उसका नाम मन्दपाल महीपति था ।६३।

तस्य भूपस्य समये सर्वे भूपाः समन्ततः ।
त्यक्त्वा तं मन्दपाल च तद्गृदत्ते संस्थिता गृहे ।६४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पितुरर्द्धं कृतं राज्यं कुम्भपालस्ततोऽभवत् ।
राजनीया च नगरी पिशाच विषये स्थिता ।६५
तत्पतिश्च महामोदो म्लेच्छपैशाचधर्मगः ।
स जित्वा बहुधा देशांल्लुंठयित्वा धनं बहु ।६६
म्लेच्छधर्मकरः प्राप्तः कुम्भपालो यतः स्थितः ।
कुम्भपालस्तु तं द्रष्टवा कलिना निर्मितं नृपः ।६७
महमोदं समागम्य प्रणनाम स बुद्धिमान् ।
तदा म्लेच्छपतिः शूरो दत्त्वा तस्मै धनं बहु ।६८
राजनीयां च नगरीं प्राप्तवान्मूर्तिखंडकम् ।
विंशदब्दं कृतं राज्यं कुम्भपालेन धीमता ।६९
तत्पुत्रो देवपालश्चानंगभूपस्यकन्यकाम् ।
समुद्वाह्य विधानेन चन्द्रकान्ति तया सह ।७०

उस राजा के समय में सभी और समस्त राजाओं ने उस मन्दपात को त्याग दिया था और तद्दत्त गृह में संल्थित हो गये थे ।६४। इसने पिता का आधा राज्य किया था । इसके बाद इसका पुत्र कुम्भपाल हुआ था । राजनीय नगरी पिशाचों के देश में स्थित थी ।६५। उस नगरी का स्वामी महामोद था जो कि म्लेच्छ पैशाच धर्म का अनुयायी था । उसने बहुधा देशों को जीत लिया था और बहुत सा धन वहाँ से लूट लिया था । उसने म्लेच्छ धर्म प्राप्त कर लिया था जहाँ कुम्भपाल स्थित था । हे नृप ! कुम्भपाल ने कलि के द्वारा निर्मित उसको देखकर उस बुद्धिमान ने महामोद के समीप में जाकर उसको प्रणाम किया था । तब म्लेच्छों के स्वामी ने उसको बहुत-सा धन दिया था ।६६-६८। फिर वह अपनी राजनीया नगरी को चला गया था । और श्रीमान् कुम्भपाल बीस वर्ष तक मूर्ति खण्डन कर राज्य किया था । इसका पुत्र देवपाल हुआ था इसने अनंग राजा की कन्या चन्द्रकान्ति के साथ विवाह विधि के साथ किया था और उसके साथ आनन्द से रहने लगा ।६९-७०।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कान्यकुब्जगृहं प्राप्य जित्वा भूपानवेंकशः ।
पितस्तुल्यं कृतं राज्यं तस्याभौ तनयौ स्मृतौ ।
जयचन्द्रो रत्नभानुर्दिशं पूर्वा तथोत्तराम् ।
आर्यं देशस्य वं जित्वा वैष्णवो राज्यमाप्तवान् ।७२
रत्नभानोशतनयो लक्षणा नाम विश्रुतः ।
कुरुक्षेत्रे रण प्राप्य त्यक्त्वा प्राणन्दिवं गतः ।७३
समाप्तिमद्वशो वश्यपालस्य धीमतः ।
कुम्भपालस्य शौक्लस्य वश्यनां रक्षकस्य च ।७४
विप्वक्सेनान्वये जाता विष्वक्सेना नृपाः स्मृताः ।
विसेनस्व कुले जाता विसेनाः क्षत्रियाः स्मृताः ।७५
गुहिलस्य कुले जाता गौहिलाः क्षत्रिया हि ते ।
राष्ट्रपालान्वये जात पाष्ट्रपाला नृपाः स्मृता ।७६
वैश्यपालस्य वै वंशे कुम्भपालस्य धीमतः ।
वैश्यपालाश्च राजन्य वभबुर्बहुधा हि मे ।७७
लक्षणे मरणं प्राप्ते शुक्ल वंशघुरन्धुरे ।
सर्वे ते क्षत्रिया मुख्याः कुरुक्षेत्रे लयं गतः ७८
शेषास्तु क्षुद्रभूपाला वर्णसम्भवाः ।
म्लेच्छैश्च दूषिया जाता म्लेच्छराज्ये भयानके ।७९

यह देवपाल चन्द्रकान्ति को साथ लेकर कान्य कुब्ज गृह में पहुँचा और वहाँ अनेक भूपों को जीत कर इसने अपने पिता के तुल्य राज्य किया था उसके दो पुत्र कहे गए हैं ।७१। उसके नाम जयचन्द्र और रत्नभान थे । इन्होंने पूर्व तथा उत्तर दिशा आर्य देश को जीतकर वैष्णव ने राज्य प्राप्त हुआ था ।७२। रत्नभानु का पुत्र लक्षण इस नाम से प्रसिद्ध किया था । उसने कुरुक्षेत्र में युद्ध करके प्राणों का त्याग किया था और स्वर्ग लोक को चला गया था ।७३। श्रीमान् वैश्यपाल का वंश फिर समाप्ति को प्राप्त हो गया था । कुम्भपाल का तथा वैश्यों के रक्षक शौक्य का वंश भी समाप्त हो गया था ।७४। विष्वक्सेन के वंश में उत्पन्न होने वाले विष्वक्सेन नृप कहे गये थे ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो विसेन के कुल में समुत्पन्न हुए थे वे विसेन क्षत्रिय कहलाये हैं।७५। गुहिल के कुल में समुत्पन्न गोहिल क्षत्रिय कहे गए हैं और राष्ट्रपाल के वंश जो समुत्पन्न थे वे राष्ट्रपाल नाम से ही प्रसिद्ध हुए हैं।७६। वैश्यपाल और श्रीमान् कुम्भपाल के वंश में वैश्यपाल क्षत्रिय बहुधा हुए थे। शुक्ल वंश के धुरन्धर लक्षण के मरण प्राप्त हो जाने पर समस्त वे क्षत्रिय उस कुरुक्षेत्रके मैदानमें लय को प्राप्त हो गए थे।७७।७८। शेष जो क्षुद्र राजा थे वे वर्णशङ्कर से उत्पत्ति वाले हैं और म्लेच्छों के द्वारा उस अति भयानक म्लेच्छों के राज्य में दूषित हो गए थे।७६।

।। परिहर भूप वंश वर्णन ।।

भृगुवर्यंश्रुणु त्वं वंश परिहरस्य च।
जित्वा बौद्धान्परिहरोऽथर्ववेदपरायण: ।१
शक्ति सर्वमयी नित्यां ध्यात्वा प्रेमपरोऽभवत्।
प्रसन्ना स तदा देवी साधयोजनमायतम् ।२
नगरं चित्रकूटाद्रौ चकार कलिनिर्जरम्।
कलिर्यत्र भवेद्वधौ नगरेऽस्मिन्सुरप्रिये ।३
अत: कलिञ्जरो नाम्ना प्रसिद्धोऽभून्महीतले।
द्वादशाब्दं कृतं राज्यं तेन पूर्वप्रदेशके ।४
गौरवर्मा तस्य सुत: कृतं राज्यं पितु: समम्।
स्वानुजं घोरवर्माणं तत्रास्थाप्य मुदान्वित: ।५
गौंडदेशं समागस्य तत्र राज्यमकारयत्।
सुपर्णो नाम नृपतिस्तोऽभूद्गौरवर्मण: ।६
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं रूपस्ततसुतोऽभवत्।
पितुस्तुल्सं कृतं राज्यं कारवर्मा सुतोऽभवत् ।७

इस अध्याय में परिहर भूपति के वंश में होने वाले नृपतियों के वृत्तान्त का वर्णन किया जाता है। सूतजी ने कहा—हे भृगुवर्य! अब आप परिहर राजा के वंश का श्रवण करो। अथर्व वेद में परायण राजा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिहरने बौद्धोंको जीत लिया था ।१। इसके पश्चात्‌नित्य सर्वमयी शक्ति का ध्यानकर वह प्रेम में परायण हो गया। राजाके ध्यान से देवी परम प्रसन्न हो गईथी ओर उसने चित्रकूट पर्वत पर डेढ़ योजनके विस्तार वाला कलिनिर्जर नामक नगरका निर्माण किया था जहाँ पर इस सुर प्रिय नगर में कलिवद्ध हो गया था ।२-३। इसीलिए यह नगर कलिंजर नाम से भूतल में प्रसिद्ध हुआ था। उसने वहाँ पर पूर्व प्रदेश में दस वर्ष तक राज्य किया था।४। इसके गौर वर्मा नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। इसने भी अपने पिता के समान ही राज्य का शासन किया था। फिर यह अपने छोटे भाईको जिसका नाम गौर वर्मा था प्रसन्नता पूर्वक उस राज्यासन पर स्थापित करके गौडदेश में आगया था और वहाँ राज्य किया था। उस गौरवर्मा का पुत्र सुपर्ण नामक राजा हुआ था ।५-६। इसने अपने पिता के समान राज्य किया था। इसका पुत्र रूपण नामधारी नृप हुआ था। इसका राज्य भी पिता के समान रहा था इसके पुत्र का नाम कारवर्मा था ।७।

शंको नाम ततो राजा महालक्ष्मीं सनातनीम् ।
पिवपति च सा देवी कामाक्षीरूपधारिणी ।८
स्वभक्तपालना चैव तत्र वा मकारयत् ।
शताद्धाब्दं कृतं राज्यं तेन वै कावर्मणा ।९
मिथुनं जनयामास भोगो भोगवती हि स ।
विक्रयायैव नृपतिः सुतां भोगवतीं ददौ ।१०।
स्यराज्यं च स्वपुत्राय प्रददौ भोगवर्मणे ।
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं कालिवर्मा सुतोऽभवत् ।११
महोत्सवं महाकाल्याः कृतवान्स स भूपति ।
तस्मै प्रसन्ना वरदौ कालीं भूत्वा स्वयंस्थिता ।१२
कलिका बहुपुष्पाणां सा चकार स्वहर्षत, ।
ताभिर्मू मं च नगर सजातं च मनोहरम् ।१३
कलिकाता पुरी नाम्नां प्रसिद्धभून्महीतले ।
कौशिकस्तस्य तनयः पितुस्तुल्यं कृतं पदम् ।१४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारवर्मा के पश्चात् शंक नाम वाला राजा हुआ था जिसने सनातनी महालक्ष्मी की आराधना की थी। तीन वर्ष के अन्त के कामाक्षी रूप के धारण करने वाली उस देवी ने जो अपने भक्तों के पालन करने वाली थी उस राजा का वहाँ वास कर दिया। उस कामरवर्मा ने पचास वर्ष पर्यन्त राज्य किया था।८-९। उसने एक जोड़ा भोग और भोगवती उत्पन्न किया था। वह जो भोगवती सुता थी उसका दान राजा ने विक्रम के लिए कर दिया था और अपने पुत्र भोगवर्मा को अपना राज्य दे दिया था। इसने पिता के समान ही राज्य का शासन किया था। इसका पुत्र कलिवर्मा नाम वाला हुआ था ।१०-११। इस राजा ने महाकाली देवी का एक महोत्सव किया था। इससे प्रसन्न हुई देवी उसके लिए वरदान देने वाली काली होकर वही स्वयं स्थित होगई थी।१२। उसने अपने हर्ष से बहुत से पुष्पों की कलिका करदी थी। उन कलिकाओं से होने वाला नगर-अत्यन्त हीं मनोहर हो गया था ।१३। तब से वह इस भूमण्डलमें कलिकातापुरी के नाम से प्रसिद्ध होगया है। इस राजा के कौशिक नामधारी पुत्र समुत्पन्न हुआ था जिसने अपने पिता के तुल्य ही राज्य के सुख का उपभोग किया था।१४।

कात्यायनस्तस्य सुतः पितुस्तुल्यं कृतं पदम् ।
तस्य पुत्रो हेमवतः पितुस्तुल्य कृतं पदम् ।१५
शिवबर्मा च तत्पुत्रः पितुस्तुल्यं कृतं पदम् ।
भव्रवर्मा च तत्पुत्रः तत्तुल्यं कृतं पदम् ।१६
रुद्रवर्मा च तत्पुत्रः कृत राज्यं पितुः समम् ।
भोजवर्मा व तत्पुत्रस्त्यक्त्वा वै पैतृकपदम् ।१७
भोजराष्ट्रं वनोद्देशे कारयामास वीर्यवान् ।
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं नववर्मा नृपोभवत् ।१८
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं विंध्यंवर्मा नृपोऽभवत् ।
त्वानुजाय स्वकं राज्यं दत्वा वङ्गमुपाययौ ।१९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं सुखसेनस्तोऽभवत् ।
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं वलाकस्तस्य चात्मजः ।२०
दशवर्षम् कृतं लक्ष्मणस्तुत्सुतोऽभवत् ।
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं माधवस्तत्सुतोऽभवत् ।२१

इस कौशिक का पुत्र कात्यायन और कात्यायन का पुत्र हेमवत, उसका पुत्र शिवकर्मा और शिववर्माका पुत्र भववर्मा हुआ था। इनसभी ने अपने-अपने पिता के समान ही राज्य के शासन का कार्य सुचारुतया किया ।१५-१६। भववर्मा राजा के यहाँ रुद्रवर्मा नृप ने पुत्र रूप में आकर जन्म ग्रहण किया था और अपने पिता की भाँति ही राज्य किया था। इसके फिर भोजवर्मा पुत्र समुत्पन्न हुआ था जिसने अपने पैतृक पद का त्याग कर दिया था और वीर्यवान् नृप ने वनोद्देशमें भोजराज बनाया था इसके पश्चात् नृपवर्मा नृप हुआ जिसने पिता के समान राज्य किया था ।१७-१८। फिर विन्ध्य वर्मा नृप हुआ जिसने पिता के तुल्य राज्य किया था। इस अपने छोटे भाई को राज्य सौंप कर अङ्ग-देश मे आ गया था ।१६। फिर सुखसेन नृप हुआ था जिसने पिता की भाँति राज्य किया था। इसके पुत्र का नाम बालक हुआ था ।२०। इस बालक ने दस वर्ष ही राज्य किया था। बालक के पुत्र का नाम लक्षण था। इसने भी पिता के समान राज्य किया था। इसके यहाँ माधव ने पुत्र रूप में जन्म धारण किया था ।२१।

पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं केशवस्तष्सुतोऽभवत् ।
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं सुरसेनस्ततोभवत् ।२२
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं नारायणोऽभवत् ।
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं शांतिवर्मासुतोऽभवत् ।२३
गङ्गाकूले शान्तिपुरं रचितं तेन धीमता ।
निबासं कृतावान्भूपः पितुस्तुल्यं कृतं पदम् ।२४
नदीवर्मा तस्य सुतो गङ्गादत्तवरो बली ।
चकार नगरीं रम्यां नदीहां गौडराष्ट्रगाम् ।२५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गङ्गाया च तदाहूतोभिज्ञो विद्याधरः स्वयम् ।
तेनैव रक्षिता चासीत्पुरी वेदपरायणा ।२६
विंशद्वर्षं कृत राज्यं तेन राज्ञा महात्मना ।
गङ्गावंशस्ततो जातो विद्युतोऽभून्महीतले ।२७
शार्ङ्ग देवतस्तस्य सुतो बलवान्हरिपूजकः ।
गौडदेशमुपागम्य हरिध्यानपरोभवत् ।२८

माधव ने पिता के समान ही राज्य किया था। इसके पुत्र का नाम केशव था, केशव के पुत्र का नाम सुरसेना था। दोनों ने पिता की ही भाँति राज्य शासन चलाया था। इसके पश्चात् नारायण हुआथा। इसने पिता के समान राज्य किया था। नारायण का पुत्र शान्ति वर्मा हुआ था। इस बुद्धिमान् ने भागीरथी गङ्गा के पवित्र तट पर शांतिपुर नामक नगर की रचना की थी। वहाँ जाकर राजा ने पिता की भाँति राज्य करते हुए अपना निवास किया था।२२-२४। इसके पुत्र नदीवर्मा जो गङ्गा के द्वारा दत्त वरदानी और वली था। इसने गौडराष्ट्र में रहने वाली नदीहा नाम की एक रम्य नगरी की रचना की थी।२५। उस समय में वह गङ्गा के द्वारा बुलाया गया था जो स्वयं अभिज्ञ विद्या विद्याधर था उसीके द्वारा यह वेद परायण पुरी सुरक्षित हुई थी।२६। उस महान् आत्मा वाले राजा ने बीस वर्ष तक राज्य किया था। तबसे यह गङ्गवंश इस महीतलमें प्रसिद्ध हो गया था।२७। इसके पुत्र शार्ङ्ग देव समुत्पन्न हुआ था जो बहुतअधिक बलवान् हरिकी पूजा करनेवाला था यह इस गौड़ देशमें आकर हरि के ध्यानमें परायण हो गया था२८

दशवर्षं कृतं राज्यं गङ्गादेवस्त तत्सुतः ।
विंशवर्षं कृतं राज्यं चाननस्तस्य भूपतिः ।२९
तनयो बलदांश्चासीद्गौडदेशमहीपतिः ।
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं ततो राजेश्वरोऽभवत् ।२०
पितुस्तुल्यं कृत राज्यं नृसिंहस्तनयोऽभवत् ।
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं कलिवर्मा सुतोऽभवत् ।३१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रदेशमुपागम्य जित्वा तस्य नृपम् बली ।
महावती पुरीं रम्यामध्यास्य सुखितोऽभवत् ।३२
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं धृतिवर्मा सुतोऽभवत् ।
पितुस्तुल्यं कृतं राज्यं तस्य पुत्रो महीपतिः ।३३
जयचन्द्राज्ञया भूप उर्वीमायामिति स्मृताम् ।
गगरीं कारयामास तत्र वासमकारयत् ।३४
कुरुक्षेत्रे हताः सर्वे क्षत्रियाश्चन्द्रवंशिनः ।
तदा महीपती राजा महावत्यधिपोऽभवत् ।३५

उसके पुत्र गङ्गदेव हुआ था जिसने दसवर्ष तक राज्य किया था । इसके पश्चात् अनङ्ग भूपति हुआ था । जिसने बीस वर्ष तक राज्य का सुखोपभोग किया था ।२६। इसका तनय बलवान था, जो कि गौड़ देश का महीपति हुआ था । इसने अपने पिता के समान ही राज्य किया था इसके पश्चात् राजेश्वर नाम वाला हुआ था । इसने पितातुल्य राज्य किया था । इसका पुत्र नृसिंह हुआ था । इसने पिता के समान राज्य किया था इसका पुत्र नृसिंह हुआ था । इसने पिता के समान राज्य किया था इसका पुत्र कलिवर्मा हुआ था ।३०-३१। इस बलवान् के राष्ट्रदेश में पहुंचकर वहाँ के राजा को जीत लिया था और फिर महावती रम्य पुरी में रहकर सुखित हुआ था ।३२। इसका राज्य शासन अपने पिता के समान ही था । इसका पुत्र धृतिवर्मा हुआ । इसने पितृतुल्य राज्य पद को भोगा था । इसका पुत्र महीपति हुआ था ।३३। इस राजा ने जयचन्द्र की आज्ञा से उर्वीमाया कही जाने वाली नगरी की रचना कराई और अपना निवास किया था।३४। चन्द्रवंश में होने वाले समस्त क्षत्रिय नृप कुरुक्षेत्र के युद्ध में हत हो गये थे । उस समय में राजा महीपति उस नगरी का स्वामी हुआ था ।३५।

त्रिंशद्वर्षं कृतं राज्यं सहोद्दीनेन वै ततः ।
कुरुक्षेत्रे मृतिं प्राप्ताः सुयोधनकलांशकाः ।३६
घोरवर्मा तु नृपतिः सुतः परिहरस्य वै ।
कलिंजरे कृतं राज्यं शार्दूलस्तत्सुतोऽभवत् ।३७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तदन्वये च ये भूपाः शार्दूलीयाः प्रकीर्तिताः ।
भूपाना बहुधा राष्ट्रं शार्दूलान्वयसम्भवम् ।३८
बभूप सर्वता भूमौ महामायाप्रसादत्तः ।
इति ते कथितं विप्र पावकीवमहीभुजाम् ।३६
कुलं सकलपापघ्नं यथैव शशिसूर्ययोः ।
पुनरुत्प्रवक्ष्यामि यथा जातः स्वयं हरिः ।४०

इस महीपति ने बीस वर्ष तक राज्य किया था और इसके अनन्तर सहोद्दीन द्वारा सुयोधन के कलांश वाले मृत्यु को प्राप्त हो गये थे ।३६। घोरवर्मा परिहर का पुत्र था। इसने कलिंजर में राज्य किया था। इसके यहाँ शार्दूल ने पुत्र रूप में जन्म धारण किया था ।३७। उसके वंश में जो राजा हुए हैं वे सब शार्दूलीय नाम से प्रसिद्ध थे। शार्दूल के वंश में उत्पन्न बहुधा राजाओं का राष्ट्र है ।३८। जो कि महामाया के प्रभाव से भूमि पर सब ओर हुआ। हे विप्र! यह तुमको हमने प्रावकीय राजाओं का कुल कह सुनाया है, जो शशि सूर्य के वंश की भाँति ही समस्त पापों का नाशक है। अब फिर अन्य भी बताता हूँ। जिस तरह हरि स्वयं समुत्पन्न हुए थे ।३६-४०।

—*—

भगवद्वतारादिवृतान्त

मध्याह्नकाले संप्राप्ते ब्रह्मणोऽव्यक्तजन्मनः ।
चाक्षुषांमेवापि महावायुर्वभूव ह ।१
तत्प्रभा वेन हेमाद्रिः कम्पमानः पुनः पुन, ।
यथा वृक्षस्तथैवासौ तत्कम्पादेव मण्डलः ।२
नभसो भूतले प्राप्तस्तदा भूमिः प्रकम्पिता ।
बभूव मुनिशार्दूल सर्वलोकविनाशिनी ।३
सप्तद्वीपाः समुद्राश्च जलभूता बभूविरे ।
लोकालोकस्तदा शेषोऽभवत्सोत्तरपर्वतः ।४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेषा भूमिर्लयं प्राप्या मुने मन्वन्तरे लये ।
सहस्राब्दांतरे भूर्बभूव जलमध्यगा ।५
तदा स भगवान्विष्णुर्भवेन विधिना सह ।
शिशुमारं शुभं चक्रं चकार नभः स्थितम् ।६
गृहीत्वा सबलास्तारा ग्रहान्सर्वान्यथाविधि ।
स्थापयामास भगवान्यथायोग्यं पितामहः ।७

इस अध्याय में ब्रह्माजी के मध्याह्न काल की प्राप्ति होने पर भगवान के अवतार आदि के वृतान्त का वर्णन किया जाता है । श्रीसूतजी बोले अव्यक्त जन्मा ब्रह्मा के मध्याह्न काल के समाप्त होने पर चक्षुषान्तर भी था उस समय महावायु हूआ ।१। उस महावायु का यह प्रभाव हूआ था कि हेमाद्रि बार-बार कम्पायमान हो गया, जिस तरह कोई वृक्ष कम्पायमान हुआ करता है उसी तरह यह गिरि कांपने लगा था । उसके कम्पन से मण्डल भी नभ से भूतल में प्राप्त हो गया था और उस समय यह भूमि भी प्रकम्पित हो गई थी । हे मुनि शार्दूल ! उस समय यह सर्व लोकों के विनाश करने वाली हो गई थी ।२-३। सातों द्वीप और समस्त समुद्र जलाशय हो गए थे । उस समय में केवल उत्तर पर्वत लोकालोक शेष रह गया था ।४। हे मुने ! शेष सभी भूमिलय को प्राप्त हो गई थी और मन्वन्तर का भी लय हो गया था । एक सहस्र वर्ष के अन्तर में यह भूमि जल के मध्य में गमन करने वाली हो गई थी ।५। उस समय भगवान् विष्णु ने भव (महादेव) और विधि (ब्रह्मा) के साथ नभमें स्थित शिशुमार शुभ चक्र को किया था ।६। भगवान् पितामह ने सम्पूर्ण ताराओं को ग्रहण करके तथा समस्त ग्रहों को गृहीत करके यथाविधि यथायोग्य रीति से स्थापित किया था ।७।

पुनर्वै ज्योतिषां चक्रैः शोषिता सकला मही ।
स्थलीभूयायुताब्दान्ते दृश्यमाना बभूव ह ।८
तदा स भगवान्ब्रह्मा मुखात्सोमं चकार ह ।
द्विजराजं महाप्राज्ञं सर्ववेदविशारदम् ।९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भुजाभ्यां भगवान्ब्रह्मा क्षत्रराजं महाबलम् ।
सूर्यं च जनयामास राजनीतिपरायणम् ।१०
उरुभ्यां वैश्यराजं स समुद्रं सरितापतिम् ।
रत्नाकरं च कृतवात्परमेष्ठी पितामहः ।११
पद्भ्यां च जनयामास विश्वकर्माणमुत्तमम् ।
दक्ष नाम कलाभिज्ञं शूद्रराजं सुकृत्यकम् ।१२
सोमाद्वै ब्राह्मणा जाताः सूर्याद्राजंन्यवंशजा ।
समुद्रात्सकला वैश्या दक्षाच्छूद्रा बभूभिरे ।१३
सूर्यमण्डलतो जातो मनुर्वैवस्वतः स्वयम् ।
तस्यराज्यमभूत्सर्वा प्राणिनां लोकवासिनीम् ।१४

फिर ज्योतियों के चक्रों के द्वारा समस्त भूमि शोषित हुई थी। दस हजार वर्षों के अन्त में यह भूमि स्थल के रूप में बनकर दिखाई देने वाली हुई थी ।८। तब भगवान् ब्रह्मा ने अपने मुख से चन्द्रमा को उत्पन्न किया था। जो द्विजराज-महापण्डित वेदों के विशारद हैं ।९। ब्रह्माजी ने अपनी भुजाओं से महान् बल वाले क्षेत्रराज को और राजनीति में परायण सूर्य को उत्पन्न किया था ।१०। अपने उरुवों से वैश्य राज को और नदियों के स्वामी समुद्र को जन्म दिया था। परमेष्ठी पितामह ने रत्नाकरको किया था।११। ब्रह्माजी ने अपने पैरों से उत्तम विश्वकर्मा को जन्म दिया था। जो शूद्रराज कलाओं से अभिज्ञ परमदक्ष नाम और अच्छे कृत्यके करने वाले थे।१२। सोमसे ब्राह्मण हुए थे और सूर्य से क्षत्रिय वंश में होने वाले समुत्पन्न हुए थे। समुद्रसे समस्त वैश्य उत्पन्न हुए और दक्ष से शूद्रों की उत्पत्ति हुई ।१३। सूर्य मण्डल से वैवस्वत मनु स्वयं समुत्पन्न हुए थे। यह समस्त उसका राज्य हुआ था जो लोक बीसी प्राणियों का था ।१४।

दिव्यानां च युगानां च तज्ज्ञेय चैकसंप्ततिः ।
तदा स भगवान्विष्णुविश्वरूपाऽवतारकः ।१५
विष्णुः पूर्वार्द्धतौ जातः परार्द्धाद्धमनः स्वयम् ।
बालः सत्ययुगे देवो विश्वरूपः सनातनः ।१६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुश्चतानि वर्षाणि परमायुर्नृणां तदा ।
त्रेतायांयौवनं प्राप्तः पूर्वार्द्धात्सम्भवो हरे.।१७
वर्षाणां त्रिशतनां च नृणामायुः प्रकीर्तितम् ।
द्वापरे वार्द्धिको देवी नृणामायुः शतद्वयम् ।१८
कलौ तु मरणं प्राप्तो विश्वरूपो हरिः स्वयम् ।
नृणामायुः शताब्दं च केषांचिद्धर्मशालिनाम् ।१६
परार्द्धाद्वामनो देवी महेन्द्रावरजो हरिः ।
चतुर्भुजो महाश्यामो गरुडोपरि संस्थितः ।२०
विश्वरूपहितार्थाय त्रियुगी संवभूव ह ।
वामनार्द्धाच्च त्रियुगी जातो नारायणः स्वयम् ।२१

अति दिव्य गुणों की वह एक सप्तति जाननी चाहिए। उस समय वह भगवान विष्णु विश्वरूपावतार वाले हुए थे ।१५। पूर्वार्द्ध में विष्णु उत्पन्न हुए थे और परार्द्ध से स्वयं वामन हुए थे । सत्ययुगमें विश्वरूप सनातन बालक देव थे ।१६। उस समय में अर्थात् सत्ययुग में मनुष्यों की परमायु चार सौ वर्ष हुआ करती थी । हरि का पूर्वार्द्ध से सम्भव त्रेता में यौवन को प्राप्त हुआ था ।१८। त्रेता में मानवों की परमायु तीन सौ वर्ष होती थी । द्वापर में देवादिक हो गए और मुनियों की आयु दो सौ वर्ष की रह गई थी ।१८। कलियुग में विश्वरूप हरि स्वयं मरण को प्राप्त हो गए थे और कुछ धर्मशाली मानवों की परमायु केवल एकसौ वर्ष की हो गई ।१६। परार्द्ध से वामदेवजी महेन्द्र के अवरज हरि थे यह चार भुजा वाले महान् श्याम वर्ण से युक्त और गरुड़ पर संस्थित थे ।२०। विश्वरूप के हत के लिए इस तरह त्रिगुणी हुए थे । वामनार्द्ध से नारायण स्वयं समुत्पन्न हुए थे ।२१।

श्वेतरूपो हरिः सत्ये हंसाख्यो भगवान्स्वयम् ।
त्रेतायां रक्तरूपश्च यज्ञाख्यो भगवान्स्वयम् ।
द्वापरे पीतरूपश्च स्वर्णगर्भो हरिः स्वयम् ।२२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलिकाले तु संप्राप्ते संध्यायां द्वापरे युगे ।
कला तु सकला विष्णोर्वामिनस्य तथा कला ।
एकीभूता च देवक्यां जातो विष्णुस्तदा स्वयम् ।२३
बसुदेवगृहे रम्ये मथुरायां च देवता: ।
ब्रह्माद्यास्तुष्टुवुर्देवं परम् ब्रह्म सनातनम् ।२४
तदा प्रसन्नो भगवान्देवानाहं शुभं वच: ।
देवानां च हितार्थाय दैत्यानां विधनाय च ।
अहं कलौ च बहुधा भवामि सुरसत्तमा: ।२५
दिव्यं वृन्दावन रम्यं सूक्ष्मं भूतलसंस्थतम् ।
तत्र ह च रहक्रीड़ाँ करिष्यामि कलौ युगे ।२६
सर्वे वेदा: कलौं घोरे गोपीभूता: समन्तत: ।
रम्यन्ते हि मया सार्द्धं त्यात्वा भूमण्डलं तदा ।२७
राधया प्रार्थितोऽहं वै यदा कलियुगांतके ।
समाप्य च रहस्य क्रीडां कल्की च भविताक्ष्यहम् ।२८

सतयुग में हरि घंसाख्य अर्थात् हंस नाम वाले स्वयं भगवान श्वेत रूप वाले थे । त्रेता में रक्त रूप वाले भगवान स्वयं यज्ञ नाम वाले हुए थे । द्वापर में पीत रूप वाले अर्थात् पीत वर्ण से युक्त स्वयं हरि स्वर्ण-मर्म थे ।२२। कलिकाल के सम्प्राप्त होने पर द्वापर युग की सन्ध्या में विष्णु की समस्त कला तथा वामन की कला ये समस्त देवकी में एकीभूत होगई थी उस समय भगवान विष्णु ने जन्म धारण किया था ।२३। वसुदेव के रम्य गृह में मथुरा नगरी में ब्रह्मा आदि समस्त देवता एकत्रित हुए और इन सबने सनातन परब्रह्म देव की स्तुति की थी ।२४। उस समय परम प्रसन्न भगवान देव ने देवों से यह वचन कहा था कि देवों के हित सम्पादन करने के लिए तथा दैत्यों के विनाश करने के लिए हे सुरश्रेष्ठो । मैं बहुधा कलियुग में होता हूँ ।२५। बृन्दावन परम f ब्य रम्य एवं सूक्ष्म है और भूमण्डलमें संस्थित है । वहाँ पर मैं कलियुग में रहस्य की क्रीड़ा करूंगी ।१६। समस्त वेद इस घोर कलियुग में सब और से गोपियों के स्वरूप में होकर मेरे साथ वहाँ रमण करेंगे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और भू-मण्डल का त्याग कर देंगे ।२१। इस कलियुग के अन्त में राधा के द्वारा जिस समय में प्रार्थित होऊँगा तो उस रहस्य क्रीड़ा को समाप्त करके फिर मैं कल्की होऊँगा ।२८।

युगांतप्रलये कृत्वा पुनर्भूत्वा द्विधातनुः ।
सत्यधर्मं करिष्यामि सत्ये प्राप्ते सुरोत्तमः ।२९
इति श्रुत्वा तु देवास्तत्रैवास्तर्लयं गताः ।
एवं युगेय गे क्रीड़ा हरेरद्भुयकर्मणः ।३०
ये तु वै विष्णुभक्ताश्च ते हि जानन्ति विश्वगम् ।३१
यथैव नृपतेर्दासाः स्वराज्ञः नार्यं गौरवम् ।
जानाति नापरे विप्रे तथा दासा हरेः स्वयम् ।३२
विष्णुवांछानुसारेण विष्णुमाया सनातनी ।
रचित्वा विवधांल्लोकमात्महाकालो बभूव ह ।३३
कृत्वा कालमयं सर्वं जगदेच्चराचरम् ।
पश्चात्तु भक्षत्वा मान्महागौरा भविष्यति ।३४
नमस्तस्मै महाकाल्यै विष्णुमाये नमोनमः ।
महागौरि नमस्तुभ्यमस्मान्पाहि भयान्वितान् । ३५

युगान्त का प्रलय करकें फिर द्विधा तनु होकर हे सुरोत्तमो ! मैं सत्य के प्राप्त होने पर सत्य धर्म को करूँगा ।२९। इस प्रकार के भगवा न के वचनों को श्रवण करके वे देवगण वहाँ पर ही अन्तर्हित हो गये थे । इस प्रकार से युग-युगमें अद्भुत कर्म वाले हरि की क्रीड़ा होती हैं ।३०। जो भगवान विष्णु के भक्त होते हैं वे ही विश्वग को जानते हैं । जिस तरह से राजा के समीपस्थ जो दास होते हैं वे ही उस अपने राजा के कार्यों के गौरव को भली-भाँति जाना करते हैं । हे विप्र ! दूसरे इस रहस्य को नहीं जानते हैं जैसीं कि हरि के दास स्वयं जानते हैं ।३०। भगवान् वि णु की इच्छा के अनुसार सनातनी विष्णु माया ने अनेक लोकों की रचना करके वह महाकाली हो गई थी ।३२। इस चर और अचर समस्त जगत् को कालमय करके और पीछे उनका भक्षण करके वह महागौरी हो जायगी ।३३। हे विष्णुमाये ! महाकाली आपके

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए नमस्कार है तथा बार-बार नमस्कार है। हे महागौरि ! आपके लिए नमस्कार है। भय से युक्त हमारी रक्षा करो।३४।

दिल्ली के म्लेच्छ राजा

महीराजान्मुनिश्रेष्ठ के राजानो वभूविरे ।
तान्नो वद महाभाग सर्वज्ञोऽस्ति भवेत्सदा ।१
पैशाचः कुतकोद्दीनो देहलीराजमास्थिता ।
बलोगढ़ महारम्य यादवं रक्षित पुरम् ।
ययौ तत्र स पैशाचः शरायुतसतन्वितः ।२
वीरसेनस्य वै पौत्रं भूपसेनं नृपोत्तमम् ।
स जित्वा कुतृकोद्दीनो देहलीग्रामसंस्थितेः ।३
एतस्मिन्नन्तरे भूपा नानदेशश्याः समागताः ।
जित्वा स कुतुकोद्दीनः स्वदेशार्त्तनिराकृतः ।४
सहोद्दीनस्तु यच्छ्रुत्वा पुनरागत्य देहलीम् ।
जित्वा भूपान्दैत्यवरो मूर्तिखण्डमथाकरोत् ।५
तत्पाश्चद्बहुधा म्लेच्छा इहागत्य समन्ततः ।
पञ्चषट्सप्तवर्षाणि राजं लय गताः ।६
अद्यप्रभृति देशऽस्मिञ्छतवर्षान्तरे हि ते ।
भूत्वा चाल्यायुषो मन्दो देवीतीर्थविनाशकाः ।७

इस अध्याय में देहली में स्थित म्लेच्छ राजाओं के बृत्तान्त का वर्णन आरम्भ तथा सहीद्दीन के द्वारा देवताओं और तीर्थों के खण्डन करने का वर्णन किया जाता है। ऋषि बोले—हे मुनिश्रेष्ठ ! महीराज से फिर कौन राजा हुए थे ? हे महाभाग ! उन सबको बताइये,आप तो सर्वज्ञ हैं और सदा ही सब कुछ की बात जानते हैं ।२। श्री सूतजी ने कहा —इसके पश्चात् कुतुकोद्दीन राजा देहली के राज्य पर समास्थित हुआ था। महान् सुन्दर बलीगढ पुर था जिसका यादवों के द्वारा रक्षा की गई थी। वहाँ पर वह पैशाच भूप दश सहस्र शूरों के सहित गया

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था ।२। नृपों में अति उत्तम वीरसेनका पौत्र भूपसेन वहाँ पर था उसको जीतकर कुतुकोद्दीन देहली में संस्थित हो गया था ।३। इस अन्तर में अनेक देशों में रहने वाले भूप वहाँ पर आए थे। कुतुकोद्दीन ने उन सबको जीत लिया था और वह अपने देश से उनके द्वारा निराकृत हो गया था ।४। यह सुनकर फिर सहोद्दीन पुनः देहली में आ गया था। और उस दैत्यंवर ने उन भूपों को जीतकर भर्तियों का खण्डन किया था ।५। इसके पश्चात् बहुधा सब ओर से म्लेच्छ यहाँ आये थे और पाँच-छैः-सात वर्षों तक राज्य करके लय को प्राप्त हो गये ।६। आज तक इस देश में सौ वर्ष से वे यहाँ रह रहे हैं जो अल्पायु वाले, मन्द और देवों तथा तीर्थों के विनाश करने वाले हैं ।३।

म्लेच्छभूपा मुनिश्रेष्ठास्तमाद्युयं मया सह ।
गन्तुमर्हथ वै शीघ्रं विशालं नगरीं शुभाम् ।८
इति श्रुत्वा तु वचनं दुखात्संत्यज्य नैमिषम् ।
ययुः सर्वे समाधिस्था ध्यात्वा सर्वमयं हरिः
शतवर्षान्तरे सर्वे ध्यानाद्ब्रह्मागृहं ययुः ।१०
इत्येव सकलं भाव्यं योगाभ्यासवशात्द्रुतम् ।
वाणितं च मया तुभ्यं किमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि ।११
भगवन्वेदतत्वज्ञ सर्वलोकशिवशत्तर ।
अहं मायाभवो जातो भवान्वेदभवभो भुवि ।१२
अविद्यया च सकलं मम ज्ञानं समाहृतम् ।
अतोऽहं विवधा योनीर्गृहीत्वा लोकमागतः ।१३
परं ब्रह्मैव कृपया दृष्टाव मां मन्दभागिनम् ।
व्यासरूपं स्वयं कृत्वा समुद्धत मुपागतः ।१४

हे मुनिश्रेष्ठो ! इस कारण से आप सब लोग मेरे साथ शीघ्र ही इस विशाल शुभ नगरी को जाने के योग्य होते हो ।७। इस वचन का श्रवण करके वे सब बड़े ही दुःख के साथ नैमिष का परित्याग करके

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिरियों में श्रेष्ठ हिमाद्रि में विशाला में चले गये थे ।९। वहाँ पर सब समाधि स्थित हो गये थे और सर्वमय हरि का ध्यान करके शत वर्ष के अन्तर में ध्यान से वे ब्रह्म गृह को चले गये ।१०। व्यासजी ने कहा—इस प्रकार से यह सब होने वाला जो कुछ था वह योगाभ्यास से शीघ्र ही मैंने तुमको वर्णन करके सुना दिया है। अब आगे और तुम क्या श्रवण करना चाहते हो ? ।११। मनु ने कहा—हे भगवन् ! आप समस्त वेदों के तत्वों को जानने वाले हैं और सब लोगों के कल्याण के करने वाले हैं । मैं तो यहाँ मायासे होने वाला उत्पन्न हुआहूँ और आप भूमि पर वेदों से उत्पन्न होने वाले हैं ।१२। अविद्या से मेरा सम्पूर्ण ज्ञान समाहृत हो गया है । इसलिए मैं अनेक प्रकार की नीतियों को प्राप्त करके इस लोक में आया हूँ ।१३। मुझ मन्द भाग्य वाले को देख कर ब्रह्म ही कृपा कर स्वयं व्यास के रूप को धारण करके मेरा उद्धार करने के लिए यहाँ सन्यास हुए हैं ।१४।

नमस्तस्मै मुनीन्द्राय वेदव्यासाय साक्षिणे ।
अविद्यामोहमावेभ्यो रक्षणाय नमोनमः ।१५
पुन निरन्यच्च में ब्रूहि सूताद्यैः किं कृतं मुने ।
तत्सर्वं कृपया स्वामिन्वक्तुमर्हसि सांम्प्रतम् ।१६
ब्रह्माण्डे वेस्थिता लोकास्ते सर्वेस्मिन्कलेवरे ।
अहंकारो हि जीवात्मा सर्वः स्यात्कोटिहीनकः ।१७
पुराणोऽजोरणीयांश्च षोडशात्मा सनातनः ।
इन्द्रियाणि मनश्चैव पञ्च चेन्द्रियगोचराः ।१८
ज्ञेयोजीवः शरीरेऽस्मिन्स ईशगुणबन्धितः ।
ईशो ह्यष्टादशात्मा वै शङ्करो जीवशङ्कर ।१९
बुद्धिर्मनश्च विषया इन्द्रियाणि यथैव च ।
अहंकारस्सं चेशो वै महादेवः सनातनः ।२०
जीवा नारायणस्साक्षाच्छं द्करेण बिमोहितः ।
स बद्धस्त्रिगुणैः पाशैरेकश्य बहुधाभवत् ।२१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुनियों में परम श्रेष्ठ शिरोमणि साक्षी स्वरूप उन वेद व्यास के लिए मेरा नमस्कार है। अविद्या और मोह के भावों से रक्षा करने वाले आपके लिये मेरा बार-बार नमस्कार है।१५। हे मुने! फिर मुझे आप बताइये कि सूत आदि से क्या किया था। हे मुने! फिर वह तभी आप कृपा करके मुझे बताने योग्य होते हैं।१६। व्यासजी ने कहा—ब्रह्माण्ड में जो लोक स्थित हैं वे सब इस कलेवर में हैं। अहंङ्कार यह सब जीवात्मा है जो कोटिहीन है।१७। पुराण और अणु से भी छोटा यह सनातन जीवात्मा षोडश स्वरूप वाला है पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और पाँच कर्मेन्द्रियाँ और एक मन तथा पाँच इन्द्रियों के गोचर विषय है। इस तरह वे सोलह रूप वाला है ।१८। वह ईश गुण से बन्धित इस शरीर में जीव जानना चाहिए। इस अष्टादशात्मा जीवों के कल्याण करने वाला शङ्कर है।१६। बुद्धि-मन:विषय-इन्द्रियाँ और अहङ्कार और सनातन ईश महादेव हैं ।२०। जीव साक्षात् नारायण है वह शङ्कर के द्वारा विमोहित हो रहा है। ;वह त्रिगुण पाशों के द्वारा बद्ध हो रहा है और एक तो बहुधा होता था।२१।

कालात्ता भगवानीशो महाकल्पस्रूपक: ।
शिवकल्पो ब्रह्मकल्पो विष्णु कल्पस्तृतीयकः ।
ईशनेत्राणि तान्येत्र बन्धकल्पश्चत र्थकः ।२२
वायुकल्पो वह्निनकल्पो ब्रह्माण्डो लिंगकल्पकः ।
ईशनेक्राणि पञ्चैव तत्वज्ञ कथितानि वै ।२३
भविष्यकल्पश्च तथा गरुड़कल्पकः ।
कल्पो भाग तश्चैव मार्कण्डेयश्च कल्पकः ।२४
वामनश्च नृसिंहश्च वराहो मत्स्कूर्मको ।
ज्ञानात्मनो महेशस्य ज्ञेया दश भुजा बुधैः ।२५
अष्टादशदिनेष्वेव ब्रह्मणोऽव्यक्तजन्मनः ।
कल्पाश्चाष्टदशास्सवबरोर्ज्ञेया विलोमतः ।२६
कूर्मकल्पश्च तत्राद्यो मत्स्यकल्पो द्वितीयकः ।
तृतीयः श्वेतवाराहः कल्पो ज्ञेय पुरातनै ।२७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्विधा च भगवान्ब्रह्मा स्थूलोऽगुणो गुणी ।
सगुणः स विराट्नाम्ना विष्णु नाभिसमुद्भवः ।२८

भगवान ईश कालात्मा मराकल्प स्वरूप वाले हैं । तीन कल्प हैं—शिव कल्प, ब्रह्मकल्प और तीसरा विष्णु कल्प है । वे तीनों ही ईश के नेत्र होते हैं । चौथा वन्ध कल्प होता है ।२२। वायु कल्प-वह्निकल्प-ब्रह्माण्ड कल्प—लिंग कल्प इन पाँचों को ही ईश के तत्वज्ञों के द्वारा मुख कहे गए हैं ।२३। भविष्य कल्प-गरुड कल्प—भागवत कल्प—मार्कण्डेय कल्प—वामन नृसिंह, मत्स्य और कूर्म ये ज्ञानात्मा महेश की बुधों के द्वारा दश भुजा जानी गई है ।२४।२५। अव्यक्त जन्मा ब्रह्म में अठारह दिनों में ही ये सब अष्टादश कल्प विलोम से विद्वानों के द्वारा जानने चाहिए ।२६। उनमें आद्य अर्थात् सबसे प्रथम होने वाला कूर्म कल्प है और दूसरा मत्स्य कल्प होता है । तृतीय कल्प को नाम श्वेत बाराह कल्प है जो कि पुरातनों से द्वारा जानने के योग्य होता है ।२७। भगवान ब्रह्मा दो प्रकार के रूप वाले हैं—सूक्ष्म और स्थूल तथा अगुण और गुणी ये दो रूप हैं । सगुण विराट् नाम वाले विष्णु की नाभि से उत्पन्न पोने वाले हैं ।२८।

निर्गुणोव्ययरूपश्चाव्यक्तजन्मा स्वभूः स्वयम् ;
ब्रह्मणः सगुथस्यैव शतायुः कालानिर्मितम् ।२९
ऊर्नविशसहस्राणि लक्षकों मानुषान्दकैः ।
एभिर्वर्षैदिनं ज्ञेय विराजो ब्रह्मणः स्वयम् ।३०
निर्गुणोऽव्यक्तजन्मा च कालात्सर्वेश्वरः परः ।
अव्यक्त प्रकृतिर्ज्ञेया द्वादशागानि वै ततः ।३१
इन्द्रियाणि मनो बुद्धिरव्यक्तस्य स्मृतानि वै ।
अव्यक्ताच्च पर ब्रह्म सूक्ष्मज्योतिस्तदव्ययम् ।३२
यदा व्यक्तं स्वयं प्राप्तोऽव्यक्तजन्मा हि संस्मृतः ।
शतवर्षसमाधिस्थो यस्तिष्ठेच्च निरन्तरम् ।३३
सूक्ष्मो मनोलिनो भूत्वा गच्छद्वै ब्राह्मणः पदम् ।
सत्यं लोकमितिज्ञेययोग यम्यं सनातनम् ।३४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तत्र स्थाने मुनयो गतः सर्वे नमाधिना ।
तत्रोषित्वा च लक्षाब्दं भूर्लोकात्क्षणमात्रकम् ।३५

जो निर्गुण है वह अव्यय रूहैं वाले—अव्यक्त जन्म वाले स्वयं स्वयंभू हैं । सगुण ब्रह्म की ही काल से निर्मित्त शतायु होती है ।२६। मनुष्य के वर्षों से एक लाख उन्नीस हजार वर्ष विराट् ब्रह्म का एकदिन होता है ।३०। जो निर्गुण ब्रह्मा का स्वरूप हैं वह तो अव्यक्त जन्म वाला है और काल से परे है तथा सबका ईश्वर है । अव्युक्त प्रकृति जाननी चाहिए अर्थात् प्रकृति को ही अव्यक्त कहा जाता है । उसके बारह अङ्ग होते हैं ।वे अव्यक्त के बारह अङ्ग पाँच ज्ञानेन्द्रिय, पाँच कर्मेन्द्रिय, मन और बुद्धि ये होते हैं । ब्रह्म अव्यक्त से परे हैं, वह सूक्ष्म ज्योति और अव्यय होता है ।३२। जिस समय में व्यक्त में स्वयं प्राप्त होता हैं तो अव्यक्त अजन्मा संस्मृत होता है । शत पर्यन्त समाधि में जो निरन्तर स्थित होता है वह सूक्ष्म मनोऽनिल होकर ब्रह्मा के पद को प्राप्त होता है । वह सत्यलोक जाने के योग्य होता है । जो सनातन अर्थात् सर्वदा रहने वाला और योग्य के द्वारा गम्य होता ।३३-३४। उस स्थान पर समाधि के द्वारा समस्त मुनिगण गये थे । भूलोक से क्षणमात्र के लिये वहाँ एक लक्ष वर्प तक निवास करते हैं ।३५।

सच्चिदानन्दघनकं ततः प्राप्ताः कलेवरे ।
नेत्राणि च समुन्मील्य संप्राप्ते द्वितीयाह्नके ।३६
ददृशुर्मनुजान्सर्वान्पशुतुल्यान्हि सूक्ष्ममान् ।
षष्टयब्दायुर्युतान्घोरान्सार्द्धं किष्कुद्वयोन्नतान् ।३७
क्वचित्क्वचित्स्थिता वर्णा वर्णं वर्णसंकरन्निभाः ।
सर्वे म्लेच्छाश्च पाखण्डा बहुरूपो स्थिताः ।३८
तीर्थानि सकला वेदास्त्यक्त्वा भूमण्डल तदा ।
नोप्यो भूत्वा च हरिणा सार्द्धं चक्रुमहोत्सवम् ।३९
पाखण्ड बहुजातीया नानामार्गप्रदर्शकाः ।
कलिना निर्मितान्वर्णात्विश्चयित्वा स्थिता भुवि ।४०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इति-दृष्टवा तु मुनयो रोमहर्षणभंति के ।
गत्वा तत्र भविष्यन्ति तता प्राञ्जलयो हितै ते ।४१
तैश्च तत्र स्तुतः सूतो योगनिद्रा सनातनीम् ।
कथयिष्यति संत्यज्य कल्पाख्यान मुनीन्प्रतिम् ।
तच्छृणुस्व नृपश्रेष्ठ यथा सूतेन वर्णितम् ।४२

इसके पश्चात् कलेवर में सच्चिदानन्दघन को प्राप्त हुए थे । द्वितीय दिन के प्राप्त होने पर आँखों को खोलकर समस्त सूक्ष्म मनुओं को पशु के तुल्य उन्होंने देखा था । जिनकी साठ वर्ष की आयु थी, और वे और ढाई किष्कु के समान ऊँचे थे ।३६-३७। उन्होंने देखा था कि यहाँ कहीं कहीं पर वर्ण थे जो कि वर्णशङ्कर के ही तुल्य थे । सभी लोग म्लेच्छ पाखण्ड से भरे हुहे और बहुत प्रकार के मतों एवं रूपों में स्थित थे । ।३८। समस्त तीर्थ और वेद उस समय में भूमण्डल का त्याग कर गये थे । वे सब गोपियाँ होकर हरि के साथ महोत्सव करते थे ।३९। पाखण्ड से पूर्ण बहुत सी जातियों वाले तथा अनेक मार्गों के प्रदर्शन करने वाले थे । सब भूतल पर कलि के द्वारा निर्मित वर्णों को वञ्चित करके स्थित होने वाले थे ।४०। इस प्रकार की भूमण्डल की दिशा को देख कर मुनिगण रोमहर्षणके समीप में जाकर वहाँ पर होंगे । इसके पश्चात् वे सब प्राञ्जलि वाले होंगे । उन सबके द्वारा स्तुति किये सूत सनातमजी योग निद्राको कहेंगे और मुनियों से जो कल्पाख्यान कहते उसका त्याग करेंगे । हे नृप श्रेष्ठ ! अब उसका श्रवण करो जैसा सूतजी ने वर्णन किया था था ।४१-४२।

कल्पाख्यानं प्रवक्ष्यामि यद्दृष्टं योगनिद्रया ।
तच्छ्रुणश्वं-मुनिश्रेष्ठा लक्षाब्दांते यथाभवत् ।४३
मुकुलान्यसम्भूतो म्लेच्छभूपः पिंशाचकः ।
नाम्ना तिसिरलिंगश्च मध्यवेशमुपाययौ ।४४
अयान्म्लेच्छांस्तदा भूपाञ्जित्वा कालस्वरूपकः ।
देहलीनगरीमध्ये महावधमकारयत् ।४५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आहूय सकलान्विप्राचार्यदेशनिवासिनः ।
उवाच वचनं धीमान्यूयं मूर्तिग्रपूजकाः ।४६
निर्मिता येन या मूर्तिस्तस्य पुत्रीसमा स्मृता ।
तस्याः किं पूजनं शुद्धं शालग्रामशिलामयम् ।
विष्णुदेवश्च यष्माभिः प्रोक्ताः स तु न वै हरिः ।४७
अतो वः शकला वेदाः शास्त्राणि बिविधानि च ।
वृथा कृतानि मुनिभिर्लोकवञ्चनहेतवे ।
इत्युक्त्वा ताम्बूलद्गृह्य ज्वलदग्नौ सगाक्षिपत् ।४८
शालिग्रामशिलाः सर्वा वलात्तेषां सुपूज्यकाः ।
गृहीत्वा चोष्ट्रपृष्ठेयु समारोप्य गृहं ययौ ।४९

सूतजी ने कहा—मैं कल्पाख्यान का बर्णन करूँगा जो योग निद्रा के द्वारा देखा गया है। हे मुनिश्रेष्ठो ! आप अब उसका श्रवण करो। एक लक्ष वर्ष के अन्त में जिस तरह से हुआ था।४३। मुकुल नाम बाले वंश में उत्पन्न म्लेच्छ राजा पिशाचक जिसका नाम तिमिर लिंग (तैमूर लिंग) था मध्य देश में आया था।४४। काल के समान स्वरूप वाले उसने आर्य भूप और म्लेच्छ भूप इन सबको जीत लिया था और देहली नगरी के मध्य में महान् वध उसने कराया।४५। उसने आर्य देश के निवास करने वाले समस्त ब्राह्मणों को बुलाकर कहा—आप बुद्धिमान हैं और मूर्ति का पूजन करने वाले हैं।४६। जिसने जिस मूर्ति का निर्माण किया है यह तो उसकी पुत्री के समान होती है क्योंकि उसे उसने पुत्रों के समान बनाकर तैयार किया है। क्या उसका यजन करना शुद्ध है अथवा शिलामय शालग्रामका पूजन शुद्ध है। आप लोगों ने विष्णु को देव कहा है किन्तु वह तो हरि नहीं है। इसलिए आपके समस्त देवता सम्पूर्ण वेद और सब शास्त्र जो कि अनेक प्रकार के हैं, इन सबकी रचना मुनियों ने व्यर्थ की है और केवल लोकों की वंचना करने के लिए ही इनका निर्माण किया गया है। इनमें कुछ भी तथ्यांश नहीं है। प्रकार से कहकर उकको बलात् ग्रहण करके जलती हुई अग्नि में फेंक दिया था।४८। समस्त शालग्रामों की

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिलाओं को जो कि सुपूज्य थी उन्हें जबर्दस्ती से छीनकर ऊँटों की पीठ पर लदवा कर गृह को चला गया था ।३६।

तैत्तिरं देशमागम्य दुर्गं तत्र चकार सः ।
शालिग्रामशिलानां च स्वासनारोहणं कृतम् ।५०
तदा तु सकला देवा दुःखिता वासवं प्रभुम् ।
समूचुर्बहुधालप्य देवदेवं शचीपतिम् ।५१
वयं तु भगवन्सर्गे शालग्रामशिलास्थिता ।
त्यक्त्वा मूर्तींश्च सकलाः कृष्णांशेन प्रबोधिताः ।
शालग्रामशिलामध्ये वासमो मुदिता वयम् ।५२
शिलास्सर्वाश्च नो देव शालदेशसमुद्भवाः ।
ताश्च वै म्लेच्छराजेन स्वपदारोहणीकृताः ।५३
इति श्रुत्वा तु वचनं देवनां भगवान्स्वराट् ।
ज्ञात्वा वलिकृत सम देवपूजानिराकृतम् ।५४
चुकोप भगवानिन्द्रो दैत्वान्प्रत्यभ्रबाहनः ।
गृहीत्वा वज्रवतुल स्वायुधं दैत्यनाशनम् ।
तैत्तिरे प्रेषयामास देशे म्लेच्छनिवासके ।५५
तस्य शब्देन सकला देशाश्च बहुभिन्नकाः ।
स म्लेच्छो मरणं प्राप्तस्तदा सर्वसभाजनैः ५६
शालाग्रामशिलाः सर्वा गृहीत्वा विबुधास्तदा ।
गण्डक्यां च समाक्षिप्य स्वर्गलोकमुपाययुः ।५७

यहाँ से चलकर फिर तैतिर देश में आया था और वहाँ उसने एक दुर्ग का निर्माण किया था। और वहाँ अपने आसन के नीचे शालग्राम शिलाओं को चुनवा कर उस पर स्वयं आरोहण किया था ।५०। उस समय में सब देव बहुत दुःखित हुए थे और शचीके पति देवों के देव प्रभु वासव (इन्द्र) से जाकर बहुत रो-धोकर कहा ५१। हे भगवान् ! हम सब शालग्राम की शिलाओं में स्थित थे। कृष्णांश के द्वारा प्रबोधित हम समस्त मूर्तियों का त्याग करके शालग्राम शिला के मध्य में बड़े ही प्रसन्न होकर वास किया करते हैं ।५२। हे देव ! शाल देश

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में उत्पन्न होने वाली हमारी सम्पूर्ण शिलायें जो थी जिनमें हम लोग निवास किया करते थे उनको ले जाकर म्लेच्छ राज ने अपने पैरों के नीचे लगाकर उन पर आरोहण कर लिया है।५३। इस प्रकारके स्वराट् भगवान इन्द्र ने देवों के वचनों को सुनकर उस बलिके द्वारा किया हुआ यह देवपूजा का निरादर सब जानकर भगवान् इन्द्र जो अभ्र वाहन थे दैत्यों के प्रति बहुत अधिक क्रोधित हुए थे। उन्हीं दैत्यों के नाश करने वाला अतुल वज्र आयुध ग्रहण किया था और उसे म्लेच्छ के निवास स्थान तैत्तिर देश में प्रेरित कर दिया था।५४-५५। उसके शब्द से ही समस्त देश बहुत टुकड़ों में छिन्न-भिन्न हो गये थे और वह म्लेच्छ मृत्यु को प्राप्त हो गता था। तब समस्त सभासद् मनुष्यों ने वे सम्पूर्ण शाल-ग्राम की शिलाओं को जो खण्डित थे उन्होंने लेकर गण्डकी नदी में विर्सजित कर दिया था और वे सब स्वर्गलोक को चले गये।५६-५७।

महेन्द्रस्तु सुरैः सार्द्धं देवपूज्यमुवाच ह।
महीतले कलौ प्राप्ते भगवन्दानवेत्तमाः।५८
वेदधर्मं समुल्लंघ्य मम नाशनतत्पराः।
अनो मां रक्ष भगवन्देवैः सार्द्धं कलौ युगे।५९
महेन्द्र तव या पत्नी शची नाम्ना महोत्तमा।
ददौ तस्यै वरं विष्णुर्भवितास्मि सुतः कलौ।६०
त्वदाज्ञय च सा देवीं पुरी शान्तिमयीं शुभाम्।
गौडदेशे च गङ्गायाः कूले लोकनिवासिनीम्।६१
प्रत्यागत्यष्टिजो भूत्वा कार्यसिद्धि करिष्यति।
भवान्वै ब्राह्मणो भूत्वा देवकार्यं प्रसाधय।६२
इति श्रुति गुरोर्वाक्य रुद्रैरेकादशैः सह।
अष्टभिर्वसुभि सार्धमश्विभ्यां स च वासवः।६३
तीर्थराजमुपागम्य प्रयागं च रविप्रियम्।
माघे तु मकरे सूर्ये सूर्यदेवमतोषयत्।६४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बृहस्पतिस्तदागत्य सूर्यमाहात्म्यमुत्तमम् ।
इन्द्रादीन्कथयामास द्वादशाध्यायमापठनन् ।६५

तब महेन्द्र ने देवों के साथ जाकर देव पूज्य से कहा था महीतल में कलियुग के प्राप्त होने पर हे भगवान् ! दानवोत्तम वेद के धर्म का उल्लंघन करके मेरे नाश करने में तत्पर होंगे । इसलिए हे भगवन् ! देवों के साथ इस कलियुग में मेरी रक्षा करना ।५६। जीव ने कहा—हे महेन्द्र ! आपकी जो महान् उत्तम शची नाम वाली पत्नी है उसको विष्णु भगवान ने वरदान दिया था कि मैं कलियुग में तेरा पुत्र होऊँगा ।६०। आपकी आज्ञा से वह देवी गौड़ देश में भागीरथी गङ्गा के तट पर लोक निवासिनी शुभ शान्तिमयीं पुरी में आकर द्विज होकर कार्य की सिद्धि करेगी । आप ब्राह्मण होकर वेदों के कार्य का प्रसाधन करिये ।६१-६२। यह गुरु का वाक्य सुनकर एकादश रुद्र और आठ वसुओं के साथ तथा अश्विनी कुमारों को साथ लेकर उस बासव (इन्द्र) ने रवि-देव के परम प्रिय तथा समस्त तीर्थों के राजा प्रयाग में आकर माघ मास में जब मकर राशि पर सूर्य देव स्थित हुए थे उस समय में वहाँ इन्द्र ने सूर्यदेव को सन्तुष्ट किया ।६३-६४। उस समय देवों के गुरु बृह-स्पति ने वहाँ आकर परम उत्तम सूर्यदेव के माहात्म्य के बारह अध्याय इन्द्रादि देवों के आगे कहे थे और उन्होंने उस माहात्म्य के बारह अध्यायों को पढ़ा था ।६५।

चैतन्य और शंकराचार्य उत्पत्ति

विष्णुशर्मा पुरा कश्चिद्विप्रोभूद्वेदपारगः ।
सर्वमवमयं विष्णुं पूजयित्वा प्रसन्नधीः ।१
अन्यैस्सुरैश्च सम्पूज्यो बभूव हरिपूजनात् ।
भिक्षावृत्तिपरो नित्यं पत्नीमान्पुत्रवर्जितः ।२
कदाचित्तस्य गेहे वै व्रती कश्चित्समागतः ।
द्विजपत्नीं तदेकाकीं भक्तिनम्रां दरिद्रिणीम् ।
दृष्टवोच महाभागः स स्पर्शाढयो दयापरः ।३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनेन स्पर्शमणिना लोहधातुश्च काञ्चनम् ।
भवेत्तस्मान्महासाध्वि त्रिदिनन्तं गृहाण तम् ।४
स्नात्वा तावत्सरय्वां चायास्यामितैतिक मुदा ।
इत्युक्त्वा स ययौ विप्रो ब्राह्मणी बहु काञ्चनम् ।
कृत्वा लक्ष्मी समाप्सोद्विष्णुशर्मा तदागमत् ।५
बहुस्वर्णयुतां पत्नीं दृष्टोवाच हरिप्रियः ।
गच्छ नारि मदाघूर्णे यत्र नौ रसिको जनः ।६
अहं विष्णुपरौ दीनश्शोरभीतः सदैव हि ।
मधुमत्तां कथं त्वां नौ गृहीतुं भुवि च क्षमः ।७

इस अध्याय में कृष्ण चैतन्य भगवान की उत्पत्ति के वृत्तान्त का वर्णन तथा भगवान शंकराचार्य की उत्पत्ति के वृत्तान्त का वर्णन किया जाता है। जीव (बृहस्पति ने कहा—पहिले समय में समस्त वेदों का पारगामी अर्थात् पूर्ण विद्वान विष्णु शर्मा नामक कोई ब्राह्मण हुआ था यह समस्त देवों से परिपूर्ण भगवान विष्णु का पूजन करके प्रसन्न बुद्धि वाला रहा करता था ।१। भगवान हरि के पूजन करने के प्रभाव से अन्य सुरों के द्वारा भी यह सम्पूज्य हो गया था। यह शिक्षा वृत्ति में नित्य तत्पर रहता था और पत्नी वाला तो था किन्तु पुत्र, से रहित था ।२। किसी समय में उसके घर में कोई यती आया था। उसने उसकी पत्नी को उस समय अकेली भक्ति भाव से परम विनम्र और दरिद्रिणी देखी थी। ऐसा देखकर स्पर्शमणि रखने वाला दया परायण यह महाभाग उस द्विज पत्नी से बोला—।३। इस स्पर्श मणि से स्पर्श कराते ही लोहा सुवर्ण हो जाता है। इसलिए हे महासाध्वि ! इसे तू तीन दिन तक ग्रहण कर अपने पास रखले ।४। मैं तब तक सरयू में स्नान करके तेरे पास आनन्द पूर्वक आऊँगा। यह कहकर वह विप्र चला गया था। उस ब्राह्मणी ने बहुत सा सुवर्ण बनाकर लक्ष्मी को समाप्ति करके बैठी थी। उस समय विष्णु शर्मा आ गया था ।५। उस हरि के प्रिय ने बहुत सुवर्ण से युक्त पत्नी को देखकर उनसे कहा-हे महापूर्णे नारि ! तू कहीं चली जा जहाँ वह रसिक व्यक्ति रहते हों ।६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं तो विष्णु परायण देव हूँ और सदा ही चोरों से भयभीत रहता हूँ। तुझ मधुमता को इस भूमितल में कैसे ग्रहण करने में समर्थ हो सकूँगा।७।

इति श्रुत्वा वचो घोरं पतिभीता पतिव्रता ।
सस्वर्णं स्वर्शकं तस्मै दत्वा सेनापराभवत् ।८
द्विजांऽपि घर्घरामध्ये तद्द्रव्यं बलतोऽक्षिपत् ।
उवाच ब्राह्मणीं दीनां स्वर्णं किन कृतं त्वया ।९
साहं भो मत्पतिश्शुद्धो गृहीत्वा स्पर्शकं रुषा ।
घर्घरे च निचिक्षेप ततोहं वह्निपाकिनी ।
निर्लोहो वर्तते विप्रस्ततः प्रभृति हे गुरो ।१०
इति श्रुत्वा वचनं स यतिर्विस्मयान्वितः ।
स्थित्वा दिनान्ते तं विप्रमुवाच बहु भर्त्संयन् ।११
दरिद्रा भिक्षु शश्वास्ति धवान्दैवेन मोहितः ।
देहि मे स्पर्शकं शीघ्रं नो चेत्प्राणांस्त्यजाम्यहन् ।१२
इत्युक्तर्गतं यतिनं विष्णु शर्मा तदाब्रवीत् ।
गच्छ त्वं घर्घराकूले तत्र वै स्पर्शकस्तव ।१३
इत्युक्त्वा यतिना सार्द्धं गृहीत्वा कंटकानबहून् ।
यतिनै दर्शयामास स्पर्शकानिव कंटकान् ।१४

उस पति की परम भक्त पतिव्रता तथा पति से भीत रहने वाली के जब यह वचन घोर रूप वाले सुनें तो तुरन्त ही उसने इस समस्त सुवर्ण के सहित उस स्पर्श मणि को अपने पति को समर्पित करके पति की सेवा में तत्पर हो गई थी।८। उस ब्राह्मण ने भी वह द्रव्य घर्घरा के मध्य में बलपूर्वक डाल दिया था, तीन दिन के अन्त में आनन्दयुक्त वह यति वहाँ से आ आया और उस दीना, ब्राह्मणी से बोला—क्या तूने स्वर्ण बनाया है ?।९। वह बोली—मेरा पति शुद्ध है उसने उस स्पर्श-मणि को ग्रहण करके क्रोध से घर्घर में उसे फेंक दिया था तब से मैं वह्निपाकिनी हूँ। विप्र बिना लोहे वाला है। हे गुरो ! तभी से यह ऐसा है।१०। यह सुनकर यति विस्मय से अन्वित होकर वहाँ स्थित

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गया था। जब दिन का अन्त हुआ तो उस समय में उस यति ने ब्राह्मण को बहुत ही फटकारा और उसने कहा था।११। आप दरिद्र और भिक्षुक हैं। आपको दैव के द्वारा वैभव प्राप्त हो गया है। अब मुझे वह स्पर्श मणि शीघ्र वापिस दे नहीं मैं यहाँ प्राणोंका त्याग करता हूँ।१२। इस प्रकार से कहने वाले यति से उस समय विष्णुशर्मा ने कहा—तुम घर्घरा के तट पर जाओ वहाँ पर आपकी वह स्पर्शमणि उपस्थित है।१३। विष्णु शर्माने उस यतिके साथ जाकर बहुतमे कण्टकों को उसने ग्रहण कर लिया था और उस यति को उन काँटों को स्पर्श मणि के समान कार्य करने वाले दिखा दिए थे।१४।

तदा तु स यतो विप्रं नत्वा प्रोवाच नम्रधीः।
मया वै द्वादशाब्दांत सम्यगाराधितः शिवः।
ततः प्राप्तं शुभं रत्नं तत्तु त्वद्दर्शनेन वै।१५
स्पर्शको बहुधा प्राप्तो मया लोभात्मना द्विज।
इत्याभाष्य शुभं ज्ञानं प्राप्तो मोक्षमवाप्तवान्।१६
विष्णुशर्मा सहृश्राब्दमुषित्वा जगतीतले।
सूर्यमाराध्य विधिवद्विष्णोर्मोक्षमवाप्तवान्।१७
स द्विजो वैष्णवं तेजो धृत्वा वै मासि फाल्गुने।
त्रैलोक्यमततत्स्वामी देवकार्यपरायणः।१८
इत्युक्त्वा भगवाञ्जीवः पुनः प्राह शचीपतिम्।
फाल्गुने मासि तं सूर्यं समाराध्य सुखी भव।१९
इत्युक्तो गुरुणा देवा ध्यात्वा सर्वमयं हरिम्।
पजनैर्बहु धाकारै र्देवमपूजयत्।२०
तदा प्रसन्नो भगवान्समभुत्सूर्यमण्डलात्।
चतुर्भुजो हि रक्तांगो यथा यक्षस्तथैव सः।
पश्यतां सर्वदेवानां शक्रदेहमुपागमत्।२१

उस समय में वह यति बहुत ही विनम्र होकर विप्र को प्रणाम करके बोला—मैंने तो बारह वर्ष तक शिव की अराधना की थी और बहुत ही अच्छी तरह से शिव को समाराधित किया था। तब मैंने यह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तम रत्न प्राप्त किया था और वही आपके दर्शन से ही बहुत सी स्पर्शमणियां लोभाक्त में हे द्विज ! प्राप्ति करली हैं। यह कहकर उसने शुभ ज्ञान को प्राप्त किया और मोक्ष को प्राप्त किया था ।१५-१६। विष्णुशर्मा ने एक सहस्र वर्ष तक इस जगती तल में निवास करके सूर्य की आराधना की और विधिवत् विष्णु से वह मोक्ष को प्राप्त हुआ था ।१७। उस ब्राह्मण ने वैष्णव तेज को धारण करके फाल्गुन मास में देव के कार्य परायण उस स्वामी ने त्रैलोक्य को तप्त कर दिया था ।१८। सूतजी ने कहा—भगवान जीव ने यह कहकर शचीके पति इन्द्र से फिर कहा—तुम भी फाल्गुन मास में उस सूर्य देव की आराधना करके सुखी हो जाओ ।१९। गुरु के द्वारा इस प्रकार से कहे गये देव ने सर्वमय हरि का ध्यान करके और अनेक प्रकार पूजनों के द्वारा देव-देव का यजन किया था।२०। तव भगवान प्रसन्न होकर सूर्य मण्डल से उत्पन्न हुए थे। उनकी चार भुजायें थीं, रक्त वर्ण का अङ्ग था और जिस तरह यक्ष होता है उसी प्रकार के वह थे। समस्त देवों को देखते हुए वह इन्द्र के देह में प्राप्त हो गये थे ।२१।

तत्तेजसा तदा शक्रः स्वान्तलीय स्वकं वपुः।
अयोनिस्स द्विजो भूत्वा शची देवी तथैव सा ।२२
तदा सौ मिथुनीभूतौ वैष्णवाग्निप्रपीडितौ।
रेमाते वर्षपर्यन्तं गङ्गाकूले महावने ।२३
अधाद्गर्भं तदा देवी शची तु द्विजरूपिणी।
भाद्रशुक्ले गुरौ वारे द्वादश्यां ग्राह्यमण्डले ।२४
प्रादुरासीत्स्वयं विष्णर्धृत्वा सर्वं कलां हरिः।
चतुर्भुजश्च रक्ताङ्गो रविकुम्भसमप्रभः ।२५
तदा रुद्राश्च वसवो विश्वेदेवा मरुद्गणाः।
साध्याश्च भास्कराः सिद्धास्तुष्टुववुस्तं सनातनम् ।२६
कुलिशध्वजयद्मपदांकुशाभ चरण तव नाथ महाभरणम्
रमणं मुनिभिर्विधिशंभुयुतं प्रणमाम वयं भयभीतिहरम् ।२७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दरचक्रगदाम्बुजमानधरः सुरशत्रु कठोरशरीहरः ।
सचराचरलोकभरश्चपलः खलनाशकरस्सुरकार्यं करः ।२८

उस समय में उसके तेज से अपने वपु में अन्तर्लीन करके वह द्विज अयौनि होकर स्थित हुआ था और उसी प्रकार से वह शची देवी भी थी ।२२। उस समय में वे दोनों मिथुनी भूत वैष्णव अग्नि से प्रपीड़ित गङ्गा के तट पर उम महा वन में एक वर्ष पर्यन्त रमण करते रहे थे । ।२३। तब द्विज के रूप वाली उस शची ने गर्भ को धारण किया था । भाद्रपद माम के शुक्ल पक्ष में गुरुवार के दिन द्वादशी तिथि में ब्राह्म-मण्डल में विष्णु भगवान स्वयं हरि समस्त कलाओं को धारण कर प्रादुर्भूत हुए थे । इनकी चार भुजायें थीं, रक्त वर्ण वाला अङ्ग था और रवि के कुम्भ के समान प्रभा से संयुक्त थे ।२४-२५। उस समय में रुद्र-वसुगण-विश्वे-देवा-मरुद्गण-साध्य-भास्कर और सिद्ध इन सबने उस सनातन देव का स्तवन किया था ।२६। देवों ने कहा—हे नाथ ! कुलिश ध्वज-पद्म-गदा और अंकुश की आभा वाले तथा महान् आभरण से युक्त आपके चरण हैं जो विधि (ब्रह्मा) और शम्भु से युक्त हैं और मुनियों रमण कराने वाले हैं एवं इस संसार के भय का हरण करने वाले हैं ऐसे आपके चरणों में हम प्रणाम करते हैं ।२७। शंख-चक्र-गदा और अम्बुज मान के धारण करने वाले तथा देवों के शत्रुओं के कठोर शरीर का हरण करने वाले एवं समस्त चराचर लोक का भरण करने वाले चपल और खलोंके नाश करने वाले तथा सुरोंके कार्य को करने वाले आपके कर हैं ।२८।

नमस्ते शचीनन्दनानन्दकारिन्महापापसन्तापदुर्लाहारिन् ।
सुरारीन्निहत्याशुलोकाधिधारिन्स्वभक्त्याघजाताङ्गोटिप्रहारिन्।
त्वया हंसरूपेण सत्यं प्रपाल्यं त्वया यज्ञरूपेण वेदःप्ररक्ष्यः ।
स वै यज्ञरूपो भवाल्लोकधारी शचीनन्दनः शक्रशर्मप्रसक्त ।३०

अनर्पित चरोचिरात्करुणयावती कलौ ।
समपयितुमुन्नतोज्वलरसां स्वभक्तिश्रियम् ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरेः पुनरसुन्दरद्यु तिकदंबसन्दीपितः सदा।
स्फुरतुनो हृदयकन्दरे शचीनन्दनः ।३१
विसर्जति नरान्भवान्करुणया प्रपाल्य क्षितौ।
निवेदयितुमुद्भवः परात्परं स्वकीयं पदम्।
कलौ दिति जसंभवाधिव्यथाब्धिसुरमग्नमान्समु-
द्धर महाप्रभो कृष्णचैतन्य शचीसुतः ।३२
माधुर्य्यमंधुभिस्सुगन्धमदनः स्वर्णा बुजानां वनं
कारुण्यामृतनिर्झरेरुपचितः सत्प्रेमहेमाचलः।
भक्तामभोधारिणी विजयिनी निष्कंपसम्भावली
देवो नः कुलदैवतं विजयते चैतन्यकृष्णो हरिः ।३३
देवारातिजनैरधर्मजनितैस्संपीडिलेयं मही।
संकुन्लाशु कलौ कलेवरमिदं बीजाय हा वर्तते।
त्वन्नम्नैव सुरारयो विदलिताः पातलिगाः
पीड़िता म्लेच्छा धर्मपुरा सुरेश-
नमनास्तस्मै नमो व्यापिने ।३४
इत्यमिष्ट्रथ पुरुषं यज्ञेश च शचीपतिम्।
बृहस्पतिमुपागम्य देवा वचनामब्रु वन् ।३५
वयं रुद्रा महाभाग इमे च बसुवोऽश्विनौ।
केन केनांशकेनैव जनिष्यामी महीतले।
तत्सर्वं कृपया देव वक्तुमर्हति नो भवान् ।३६

हे शची नन्दन ! हे आनन्द करने वाले ! आप महान् पापों के सन्ताप के दुर्लाप के हरण करने वाले हैं। सुरों के शत्रुओं को मारकर शीघ्र ही लोकों के अधिकारी हैं। आपकी अपनी भक्ति से करोड़ों पाप मात्र के ऊपर प्रहार करने वाले हैं।१६। आपने हंसरूप से अर्थात् हंसावतार धारण करके सत्य का प्रतिपालन किया था। आपके द्वारा यज्ञ रूप वेद प्रकृष्ट रक्षा करने के योग्य हैं। वही आर यज्ञरूप लोकों को धारण करने वाले इन्द्र के कल्याण करने में प्रयुक्त शची नन्दन हैं।३०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप अनर्पितचर बहुत समय में इस घोर कलियुग में करुणा करके अवतीर्ण हुए हैं और आपका यह अवतार उन्नत एवं उज्ज्वल रस वाली अपनी भक्ति की श्री को समर्पित करनेके लिए ही हुआ है। हम प्रार्थना करते हैं कि हरि के सुन्दर द्यु ति कदम्ब (समूह) से सन्दीपित शचीनन्दन हम लोगों के हृदय कन्दरा में सर्वदा स्फुरण करते रहें।३१आप करुणा से नरों का प्रतिपालन करके भूमि में विसर्जन करते हैं। आपका उद्भव परात्पर अपना पद प्रदान करनेके लिए ही होता है। हे महाप्रभो! हे शची सुत! कलियुग में दितिजो (दैत्यों) से उत्पन्न आधि की व्यथा का जो समुद्र है उसमें मग्नों को हे कृष्ण चैतन्य! उद्धार करियेगा।३२ माधुर्यों से और मधुओं से सुन्दर गन्धयुक्त वदन वाले–स्वर्णिम अम्बुजों ने वन स्वरूप-कारुण्य रूपी अमृत के निर्झरों से उपार्जित (सम्बर्द्धित)–सत्प्रेम के हेम गिरिभक्त रूपी अम्भोधरों को धारण करने वाली—विजयवाली निष्पक सप्तावली हमारे कुल के देवता देव कृष्ण चैतन्य हरि की विजय हो।३३। देवों के शत्रुजनों से जोकि अधम से जनित है यह मही अत्यन्त सम्पीड़ित हो रही है और इस कलियुग में शीघ्र कलेवर को संकुचित करके हा! वीज के लिए वर्त्तमान है आपके नाम से ही सुरों के शत्रु विददलित हो गए हैं और पीड़ित होकर पाताल में ये म्लेच्छ गमन कर गये हैं। तथा धर्म पर एवं सुरेशको गमन करने वाले हैं उन व्यापी आपके लिए नमस्कार है।३४। सूतजी ने कहा—इस प्रकार से शची पति यज्ञेश पुरुष की स्तुति करके फिर देवगण देव गुरु बृहस्पति के पास आकर यह वचन बोले–हम रुद्र हैं हे महाभाग! ये बसुगण हैं और ये अश्विनीकुमार हैं। आप कृपा कर यह बताइये किस किस अंश से हम महीतल में जन्म ग्रहण करेंगे। हे देव! यह सब आप हमको बताने के लिए योग्य होते हैं।१६।

अहं वः कथयिष्यामि शृणुध्वं सुरसत्तमाः।
पुरा पूर्वभवे चासीन्मृगव्याधो द्विजाधमः।
धनुर्वाणधरा नित्य मार्गे विप्रविहिंसकः।३७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हत्वा द्विजान्महामूढ़स्तेषां यज्ञोपवीतकम् ।
गृहीत्वा हेलया दुष्टो महाक्रोशस्तु तत्कृतः ।३८
ब्राह्मणस्य च यद्द्रव्यं सुधोपयनुत्तमम् ।
मधुरं क्षत्रियस्यैव वैश्यस्यान्नसमं स्मृतम् ।३९
शूद्रस्य वस्तु रुधिरमिति ज्ञात्वाद्विजाधमः ।
स जघान त्रिवर्णाश्च ब्राह्मणान्वहुलान्खलः ।४०
द्विजनाशात्सुरास्सर्वे भयभीतास्समंततः ।
परमेष्ठिनमागम्य कथांश्चक्रुश्च कारणम् ।४१
श्रुत्वा च दुःखतो ब्रह्मा सप्तर्षीन्प्राह लोकगान् ।
उद्देशं कुरु तत्रैव गत्वा तस्य द्विजोत्तम ।४२

बृहस्पति ने कहा—हे सुरसत्तमो ! मैं आपको बताता हूँ, अब आप श्रवण करिये । पहिले समय में पूर्वजन्म में एक अधम द्विज मृग व्याध था । वह धनुष और बाण धारण करने वाला नित्य ही मार्ग में विप्रों की हिंसा किया करता था ।३७। वह महा मूढ़ द्विजों का हनन करके उनका यज्ञोपवीत लेकर हेला से दुष्टता करता था और महान् आक्रोश (निन्दा) किया करता था ।३८। ब्राह्मण का जो द्रव्य है वह सर्वोत्तम सुधा के समान होता है, क्षत्रिय का धन मधुर होता है और वैश्य का धन अन्न के समान कहा गया है ।३९। शूद्र की वस्तु रुधिर होती है— यह जानकर वह द्विजों में अधम तीन वर्ण वालों को ही मारता था और वह खल ब्राह्मणोंको अधिकतया मारता था ।४०। द्विजों के नाश होने से सभी देवता सब प्रकार से भयभीत हो गये थे । वे सब परमेष्ठी के पास आकर पहुँचे और यह सब कथा कारण सुनाए थे ।४१। यह सब सुनकर ब्रह्माजी को बहुत दुःख हुआ था और उन्होंने सप्तर्षियों से लोक में जाने के लिये कहा था हे द्विजोत्तम वहाँ जाकर उसका उद्देश करो ।४२।

इति श्रुत्वा मरीचिस्तु वशिष्ठादि भिरन्वितः ।
तत्र गत्वा स्थितास्सर्वे मृगव्याधस्य वै वने ।४३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृगव्याधस्तु तान्दृष्टवा धनुर्बाणधरो बली ।
उवाच वचनं घोरं हनिष्येहं च वोद्य वै ।४४
मरीचाद्या विहस्याहुः किमर्थं हन्तुमुद्यतः ।
कुलार्थं वात्मनोऽर्थं वा शीघ्रं वद महाबल ।४५
इत्युक्तस्तान्द्विजः प्राहः कुलार्थं चात्मनो हिते ।
हन्मि युष्मान्धनैयुक्तन्ब्राह्मणांश्च विशेषतः ।४६
श्रुत्वा तमोहुस्ते विप्रागच्छ शीघ्रं धनुर्धर ।
विप्रहत्याकृतं पापं भुञ्जीयात्को विचारय ।४७
इति श्रुत्वा त घोरात्मा तेषां दृष्टचा सुनिर्मलः ।
गत्वा वंशजनानाहं भूरि पापं मयार्जितम् ।४८
तत्पापक भवद्भिश्च ग्रहीणीयं धनं यथा ।
ते तु श्रुत्वा द्विज प्राहुर्न वयं पापभोगिनः ।४९

यह सुनकर वसिष्ठादि से समन्वित मरीचि प्रभृति तब वहाँ पहुँच कर सब स्थित हो गये थे जहाँ मृगों के व्याध का वन था ।४३। मृग व्याध उनको देखकर धनुर्वाण धर कर वह बलवान् उनसे घोर वचन बोला—आज मैं तुम को निश्चय ही मार दूंगा ।४४। मरीचि आदि ऋषिगण उससे हँसकर बोले हमको किस के लिये तू मारने को उद्यत हो गया है । हे महा बलवान् ! क्या कुल के लिये अथवा अपनी आत्मा के लिये ही ऐसा करना चाहता है ? हमको बहुत शीघ्र बतला दे ।४५। यह श्रवण कर वह द्विज बोला—कुल के लिए और आत्मा के लिए तुमको मारूँगा क्योंकि आप धनों से युक्त हैं । मैं विशेष करके ब्राह्मणों को ही मारा करता हूँ ।४६। यह सुनकर वे विप्र बोले—हे धनुर्धर ! शीघ्र जाओ विप्रों की हत्या का किया पाप कौन भोगेगा-यह विचार करो ।४७। यह सुनकर वह चोरात्मा उनकी दृष्टि से सुनिर्मल होता हुआ घर पर गया और अपने वंशजों से उसने कहा—मैंने बहुत भारी पाप अर्जित किया है ।४८। उस पाप को आप सबको भी धन की भाँति ग्रहण करना चाहिए । यह सुनकर वे सब उस द्विज से बोले कि हममें कोई भी पाप के भोगी नहीं होंगे ।४९।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साक्षीयं भूमिरचला साक्षी सूर्योऽयमुत्तमः ।
इति श्रुत्वा मृगव्याधा मुनीनाह कृतञ्जलिः ।५०
यथा पातं क्षयं याति तथा माज्ञातुमर्हम ।
इत्युक्तास्तेन ते प्राहुःश्रृणु मन्त्रमुत्तमम् ।५१
राम नाम हि तज्ज्ञेय सर्वाघोघविनाशनम् ।
यावत्वत्पार्श्वमायामस्तावत्व जप चोत्तमम् ।५२
इत्युक्त्वा ते गता विप्रास्तीर्थात्तीर्थान्तिरं प्रति ।
मरामरामरेत्येव सहस्राब्द जजाप ह ।५३
जपप्रभावादभवद्वनमुत्पलसंकुलम् ।
तत्स्थानमुत्पलारण्यं प्रसिद्धमभवद्भुवि ।५४
ततः सप्तर्षयः प्राप्ता बल्मीकात्त निराकृतम् ।
दृष्ट्वाशु तदा विप्रमूचुस्ते विस्मयान्विताः ।५५
वल्मीकान्निस्सतो वस्मात्तस्मन्द्वाल्मीकिरुत्तमम् ।
तव नाम भवेद्वियत्रिकल्पज्ञ महासते ।५६

यह अचला भूमि इस बात की साक्षी है और यह उत्तम सूर्य भी साक्षी है । वह उन अपने समस्त वंशजों की बात सुनकर उन मृगों के व्याध ने कृताञ्जलि होकर मुनियों से आकर कहा था ।५०। जिसप्रकार से भी यह मेरा किया हुआ पाप क्षय को प्राप्त हो वही साधन अब आप मुझे आज्ञा देकर बताइए । इस प्रकार से उस मृग व्याघ्र के द्वारा कहे जाने पर वे मुनिगण उससे बोले—अब एक परम उत्तम मन्त्र का श्रवण कर ।५१। राम का नाम ही एक समस्त प्रकार के पापों के समूह का नाश करने वाला जानना चाहिए । जब तक हम तेरे पास आते हैं तब तक तू इसके उत्तम जप को कर ।५२। यह कहकर वे विप्र तीर्थों से अन्य तीर्थों को चले गये थे । उस मृग व्याघ्र ने राम-राम के स्थान में मरा-मरा इसका एक सहस्र वर्ष तक जाप किया था ।५३। इसके इस जप के प्रभाव से वह वन कमलों के संकुल हो गया था । तब से वह स्थान इस भूतल में उत्पलारण्य के नाम से प्रसिद्ध हो गया था ।५४। इसके पश्चात वे ही सातों ऋषि फिर उस निराकृत वाल्मीक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के पास आये थे। तब उन विप्रों ने उसको परम शुद्ध देखा और वे सब विस्मय में भरकर उससे बोले—तू बाल्मीक से निकला है इसलिये तेरा नाम परम उत्तम वाल्मीकि ही है और यही नाम है विप्र ! अब चलेगा हे त्रिकाल के ज्ञाता ! हे महान मति वाले ।५५।५६

एवमुक्त्वा ययुर्लोकं स तु रामायणं मुनिः।
कल्पाष्टादशयुक्तं हि शतकोटिप्रविस्तरम् ।५७
चकार निर्मलं पद्यैः सर्वाघौघविनाशनम्।
तत्पश्चात्स शिवो भूत्वा तत्र वासमकारयत् ।५८
अद्यापि संस्थितः स्वामी मृगव्याधः सनातनः।
शृणुध्वं च सुराः सर्वे तच्चरित्रं हरिप्रियम् ।५९
वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्ते चाद्ये सत्ययुगे शुभे।
ब्रह्मागत्योत्पलारण्य तत्रा यज्ञं चकार ह ।६०
तदा सरस्वती देवी नदी भत्वा समागता।
तद्दर्शनात्स्वयं ब्रह्मा मुखता ब्राह्मण शुभम् ।६१
बाहुभ्यां क्षत्रियं चैव चोरभ्यां वैश्यमुत्तमम्।
पद्भ्यां शुभाचरं जनयामास वीर्यमान ।६२
द्विजराजस्तथा सोमश्चंद्रमा नामतो द्विज।
लोके सर्वातपः सूर्यः कश्यपो वीर्य हि पाति यः ।६३

इस प्रकार से कह कर सप्तर्षि अपने लोक को चले गए थे और उस मुनि ने फिर अठारह कल्प युक्त शतकोटि प्रकृष्ट विस्तार वाली रामायण की रचना की थी जो कि अति निर्मल पद्यों में थी और सभी पापों के समूह का नाश करने वाली थी। इसके पश्चात् वह शिव होकर वहाँ पर अपना निवास करता था ।५७।-५८। आज भी वह सनातन मृग व्याघ्र स्वामी संस्थित है। हे सुरो ! अब आप सब लोग उसका हरि भगवान को प्रिय लगने वाला उत्तम चरित्र का श्रवण करो मैं उसे आपको बतलाता हूँ ।५९। आज शुभ सत्ययुग में वैवस्वत मनु का अन्तर प्राप्त हो जाने पर ब्रह्माजी ने आकर उस उत्पलारण्य में यज्ञ किया था ।६२। तब सरस्वती देवी नदी का रूप धारण करके वहाँ आई

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी उसके दर्शन से ब्रह्मा अपने मुख से शुभ ब्राह्मण को बाहुओं से क्षत्रिय को ऊरुओं से उत्तम वैश्य को और अपने पैरों में शुभ आचार वाले शूद्र को वीर्यवान ने जन्मदिया था।६१-६२। द्विजराज सोमचन्द्रमा नामसे द्विजथा। लोकोंके सर्वातप सूर्य जो कश्यपवीर्यकी रक्षा करताहै।६३

कश्यपो हि द्वितीयोऽसौ मरीचिस्तु ततोऽभवत् ।
रत्नामकारो यो वै स हि रत्नाकरः स्मृतः ।६४
लोकान्धरति द्रव्यैः स तु धर्मो हि नामतः ।
गम्भीरश्चास्ति सद्दशः कोशो यस्य सरित्पतिः ।६५
लोकान्दक्षति यः कृत्यैः स तु दक्षः प्रजापतिः ।
ब्रह्मयोगाच्च ते जातास्तस्माद्वै ब्राह्मणाःस्मृताः ।६६
वर्णधर्मेण ते सर्वे वर्णात्मानश्च वै क्रमात् ।
दक्षस्य मनसो जाताः कन्या पञ्चशतं ततः ।
विष्णु मायाप्रभावेन कालभूताः स्थिता भुवि ।६७
तदा तु भगवान्ब्रह्मा सोमायाश्विनिमण्डलम् ।
सप्तविंशद्गणं श्रेष्ठं ददौ लोकविवृद्धये ।६८
कश्यपपायादितिगण क्षत्ररूपं त्रयोदशम् ।
धर्माय कीर्तिप्रभृतीर्ददौ स च महामुनि ।६९
नानाविधानि सृष्टानि चासन्वैवस्वतेऽन्तरे ।
तेषां पतिस्त्वयं दक्षोऽभूद्विधेराज्ञया भुवि ।७०

यह द्वितीय कश्यप है और मरीचि फिर उसके पश्चात् हुए थे। जो रत्नों की खान थी वह रत्नाकर इस नाम से कहा गया था ।६४। जो द्रव्यों के द्वारा लोकों को धरता है वह नाम से धर्म हुआ था । जिसका अत्यन्त गम्भीर सरितों का पति जैसा कोश है ।६५। जो अपने कृत्यों से लोकों का रक्षण करता है वह प्रजापति दक्ष हुआ । जो ब्रह्मा के योग से उत्पन्न हुए थे इसी से वे ब्राह्मण कहे गए हैं ।६६। वर्णों के धर्म से वे सब वर्णात्मा क्रम से हुये थे । प्रजापति दक्ष के मन से पाँच सौ कन्यायें उत्पन्न हुई थीं । वे सब भगवान विष्णु की माया के प्रभाव से भूतल में कलाभूत हो गयीं थीं और यहाँ वे स्थित हो गई थीं ।६७।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस समय भगवान ब्रह्मां ने चन्द्र के लिए अश्विनी-मण्डल जोकि सत्ताईस का एक गण है, इस लोक की वृद्धि के लिए दे दिया था ।६८। कश्यप के लिए क्षत्ररूप तेरह अदितिगण दिये थे और धर्म के लिए कीर्ति प्रभृति को उस महामुनि ने दिया था ।६९। उस वैवस्वत अन्तर में अनेक प्रकार की सृष्टि का सृजन किया गया था । उस सबका पति ब्रह्मा आज्ञा से इस भू-मण्डल में दक्ष ही हुए थे ।७०।

तत्रं वास स्वयं दक्षः क्रमवान्यज्ञतत्परः ।
सर्वे देवगणा दक्षं नमस्कृत्य चरन्ति हि ।७१
भूतनाथो महादेवो न ननाम कदाचन ।
तदा क्रुद्धः स्वयं दक्षः शिवभागं न दत्तवान् ।७२
मृगव्याधः शिवः क्रुद्धो वीरोभद्रो बभूव ह ।
त्रिशिराश्च त्रिनेश्च त्रिपदस्तत्र चागतः ।७३
तेनैव पीड़िता देवा मुनयः पितरोऽभवन् ।
तदावै यज्ञपुरुषो भयभीतः समन्ततः ।७४
मृगभूतो ययौ तूर्ण दृष्ट्वा व्याधः शिवोभवत् ।
रुद्रव्याधेन स मृगौ विभिन्नाङ्गो बभूव ह ।७५
तदा तु भयवान्ब्रह्मा तुष्टाव मधुरस्वरैः ।
संतुष्टश्च मृगव्याधो यज्ञं पूर्णमकारयत् ।७६
तुलाराशिस्थिते भानौ त रुद्रं चन्द्रमण्डले ।
स्थापयित्वा स्वयं ब्रह्मा सप्तविंशद्दिनात्मके ।
प्रययौ सप्तलोकं वै स रुद्रश्चन्द्ररूपवान् ।७७

वहाँ पर दक्ष यज्ञोंके करनेमें तत्पर होते हुए स्वयं वास करते और समस्त देवों के समूह दक्ष को प्रणाम करके ही विचरण किया करते थे ।७१। किन्तु भूतों के स्वामी महादेव ने कभी भी दक्ष को प्रणाम नहीं किया था। तब तो दक्ष बहुत क्रुद्ध हो गये थे और उन्होंने यज्ञ में जो शिव का भाग होता है उसे नहीं दिया था ।७२। मृग, व्याध शिव क्रुद्ध होकर वीरभद्र हो गया था । उस समय में त्रिशिरा-त्रिनेत्र और त्रिपद भी वहाँ आ गये ।७३। उसके द्वारा पीड़ित देव—मुनि गण

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और पितर सब हो गए थे। तब तो यज्ञ पुरुष सभी ओर से भयभीत हो गए थे ।७४। मृग भूत होकर शीघ्र चला गया था। यह देखकर व्याघ्र शिव हो गया था। रुद्र व्याघ्र के द्वारा वह मृग विभिन्न अंगों वाला हो गया था ।७५। उस समय भगवान् ब्रह्मा ने मधुर स्वरों से स्तवन किया था। फिर मृग व्याघ्र सन्तुष्ट हो गया और उसने यज्ञ को पूर्ण करा दिया था ।७६। तुला राशि पर सूर्य के स्थित होने पर चन्द्र-मण्डल में उस रुद्र को स्थापित करके जो चन्द्रमण्डल सप्तविंशति (२७) दिन के रूप वाला था ब्रह्माजी स्वयं सप्त लोक को चले गये थे। वह रुद्र चन्द्र के रूप वाले हैं ।७७।

इति श्रुत्वा वीरभद्रो रुद्रः संहृष्टमानसः ।
स्वांश देहात्समुत्पाद्य द्विजगेहमचोदयत् ।७८
विप्रभैरव दत्तस्य गेहं गत्वा स वै शिवः ।
तत्पुत्रोऽभूत्कालौ घोरे शंकरो नाम विश्रुतः ।७९
स बालश्च गुणी वेत्त ब्रह्मचारी वभूव ह ।
कृत्वा शंकरभाष्यं च शैवमार्गमदर्शयत् ।८०
त्रिपुण्ड्रश्चक्षमाला च मंत्रः पञ्चाक्षरः शुभः ।
शैवानां मङ्गलकरः शंकराचार्यनिर्मितः ।८१

यह श्रवण करके वीरभद्र रुद्रने सन्तुष्ट मन वाले होकर अपने अंश को देह से समुत्पन्न करके द्विज के ग्रह में प्रेरित कर दिया था ।७८। भैरव दत्त विप्र के घर में जाकर वह शिव इस घोर कलियुग मे उसका पुत्र हुआ जो शंकर इस नाम से प्रसिद्ध है ।७९। वह बालक परमगुणी-ज्ञाता और ब्रह्मचारी हुआ था। इसने शंकर भाष्य की रचना करके अर्थात् बेद व्यास के वेदान्त सूत्र ग्रन्थ पर शाँकर भाष्य वना कर शैव मार्ग को दिखालाया था ।८०। त्रिपुण्ड्र—अक्षमाला और परम शुभ पञ्चाक्षार (ॐ नमः शिवाय) मन्त्र ये शैवों का मंगल करने वाला है जिसकी कि शंकराचार्य भगवान् ने रचना की है ।८१।

—०—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

।। रामानुजोत्पत्तिवर्णन ।।

इदं दृश्यं यदा नासीत्सदसदात्मकं च यत् ।
तदाक्षरमयं तेजो व्याप्तरूपमचिंत्यकम् ।१
न च स्थलं न सूक्ष्मं शीत नोष्णं चतत्पम् ।
आदिमध्यांतरहितं मनागाकारर्जितम् ।२
योगिदृश्य पर नित्यं शून्यभूतं परात्परम् ।
एका वै प्रकृतिर्माया रेखा या तदधः स्मृता ।३
महत्तत्त्वमयी ज्ञया तदधश्चोर्ध्वरेखिकाः ।
रजस्सत्त्वतमोभूता ओमित्येवसुलक्षणम् ।४
तत्सद्ब्रह्म परं ज्ञेयं यत्र प्राप्य पुनर्भवः ।
कियता चैव कालेन तस्येच्छा समापद्यत् ।५
अहंकारस्तमो जातस्ततस्तन्मात्रिकाः पराः ।
पञ्चभूतान्यतोप्यासञ्ज्ञानविज्ञानकान्यतः ।६
द्वाविंशज्जड़भूतांश्च दृष्ट्वा स्वेच्छामयो विभुः ।
द्वन्द्व भूतश्च सगुणो बुद्धिजीवस्समागतः ।७

इस अध्याय में रुद्र के माहात्म्य का वर्णन तथा श्री रामानुज की उत्पत्ति का वर्णन किया जाता है । वृहस्पति जी ने कहा–जो यह सत और असत् स्वरूप वाला जिस समय में दृश्य नहीं था अर्थात् दिखलाई देने के योग्य नहीं था । उस समय अक्षरमय न चिन्तन करने के योग्य तेज व्यास रूप वाला था ।१। वह न तो स्थूल था—न सूक्ष्म ही था–न वह शीत था और न उष्ण ही था–न तत्पर था–आदि—मध्य और अन्त के रहित था और मनाक आकारसे वर्जित था, वह केवल योगियों के द्वारा ही दृश्य था—पर—नित्य–शून्य भूत और परात्पर था । एक प्रकृति माया जो रेखा थी वह उसके नीचे बताई गई है ।२।३। एक तपोभूमि थी । ओम् ही सुलक्षण है ।४। वह पर सत् ब्रह्म जानना चाहिए जहाँ प्राप्त होकर पुनर्भव होता है । कुछ ही काल में उसकी इच्छा समुत्पन्न हुई थी ।५। उससे अहङ्कार की उत्पत्ति हुई और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर उस अहंकार से पञ्च तन्मात्रिकायें उत्पन्न हुई थीं। इनसे फिर पाँच भूत ज्ञान विज्ञानक हुए थे। इन पाँच बाईस जड़भूतों को देखकर वह स्वेच्छामय विभु द्वन्द्वभूत होकर सगुण हो गया और बुद्धि और जीव समागत हुआ था।६-७।

पूर्वार्द्धात्सगुणः सोसौ निर्गुणश्च परार्द्धतः।
ताभ्यां गृहीतं तत्सर्वं चैतन्यमभवत्ततः।८
सविराडितिसंज्ञो वै जीवो जातस्सनातनः।
विराजो नाभितो जातं पद्मं तच्छतयोजनम्।६
पद्माच्च कुसुमं जातं योजनायाममुत्तमम्।
तत्पद्मकुसुमाज्जातो विरंचिः कमलासनः।१०
द्विभुजस्स चतुर्वक्रो द्विपादो भगवान्विधिः।
ज्ञेयः सप्तवितत्यंगो महाचितामवाप्तवान्।११
कोऽहं कस्मात्कुत आयातः कामे जाननी को मे तातः।
इत्यधिचिंतय तं हृदि देवं शब्दमहत्त्वमथेन स आह।१२
तपश्चैव तु कर्तव्यं संशयस्यापनुत्तये।
तदाकर्ण्य विधिस्साक्षात्तवस्तेपे महत्तरम्।१३
सहस्राब्दं प्रयत्नेन ध्यात्वा विष्णु सनातनम्।
चतुर्भुजं योगगम्यं निर्गुणं गुणविस्तरम्।१४

वह यह पूर्वार्द्ध से सगुण था और परार्द्ध से निर्गुण था। उन दोनों से वह सब ग्रहण किया गया था और फिर चैतन्य हो गया था।।८। स्वराट्-इस संज्ञा वाला जीव सनातन हो गया था। उस विराट् की नाभि से एक पद्म उत्पन्न हुआ था जो सौ योजन के बिस्तार वाला था।६। उस पद्म के एक योजन आयाम वाला अति उत्तम कुसुम उत्पन्न हुआ था। उस पद्म के कुसुम से कमलासन ब्रह्मा उत्पन्न हुआ था।१०। उस ब्रह्मा के दो भुजाऐं थीं। चार मुख थे—दो चरण थे ऐसे स्वरूप वाले भगवान विधि (ब्रह्मा) थे। उसका अंग सात विलस्त वाला जानना चाहिए। उसने महान् चिन्ता प्राप्त की थी अर्थात् वह अत्यन्त चिन्ता करने लगे थे।११। उसे यह चिन्ता हृदय में हुई कि मैं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौन हूँ—कहाँ से मैं आया हूँ ? मेरी माता कौन और पिता कौन हैं ? उसने उस देव का हृदय में चिन्तन करके वह शब्द महत्त्वमय के द्वारा बोला ।१२। अपने संशय की अपनुत्ति (दूरीकरण) के लिए तुमको तप ही करना चाहिए । यह सुनकर विधि (ब्रह्मा) ने साक्षात् तपस्या की थी जो कि अधिक महान् थी ।१३। एक सहस्र वर्ष पर्यन्त सनातन भगवान विष्णु का उसने ध्यान किया था जिनका स्वरूप चतुर्भुज है और निर्गुण तथा गुणों का विस्तार स्वरूप योग के द्वारा ही जानने के योग्य है ।१४।

समाधिनिष्ठो भगवान्वभूव कमलासनः ।
एतस्मिन्नंतरे विष्णुर्वालो भूत्वा चतुर्भुज ।१५
श्यामांगो बलवानस्त्री दिव्यभूषणभूषितः ।
ब्रह्मणोऽङ्के हरिस्तस्थौ यथा वालः पितुस्वयम् ।१६
तदा प्रबुद्धश्च विधिस्त दृष्ट्वा मोहमागतः ।
वत्सवत्सेति वचनं विधिः प्राह प्रसन्नधीः ।१७
विहस्याह तदा विष्णुरह ब्रह्मन्पिता तव ।
तयोर्विवदतोरेवं रुद्रा जातस्तमामयः ।१८
ज्योतिर्लिङ्गश्च भयदो योजनानंन्तविस्तरः ।
हंसरूप तदा ब्रह्मा वराहो भगवान्प्रभुः ।१९
शताब्दं तो प्रयत्नेन जातौ चोर्ध्वमधःक्रमात् ।
लज्जितौ पुनरागत्य तदा तुष्टुवतुर्मुदा ।२०
ताभ्यां स्तुतो हरः साक्षद्भवो नाम्ना समागतः ।
कैलासनिलयं कृत्वा समाधिस्थो बभूव ह ।२१

भगवान् कमलासन समाधि में निष्ठ हो गए थे । इसी बीच में चतुर्भुज विष्णु बालक रूप में होकर जिनका श्याम तो अंग था और बलवान् दिव्य आभूषणों से भूषित थे । ऐसा बाल स्वरूप वाले हरि पिता की गोद में उसके पुत्र वालक की भाँति आकर ब्रह्मा की गोद में स्थित हो गए थे ।१५-१६। उस समय ब्रह्मा को ज्ञान हुआ और उस बाल रूप हरि को देखकर वह स्नेह को प्राप्त हो गये थे । प्रसन्न

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धि वाले ब्रह्माजी ने उस बाल स्वरूप को वत्स-वत्स ऐसा वचन कहा था ।१७। तब तो भगवान् विष्णु ने हँसकर कहा हे ब्रह्मन् ! मैं तो तुम्हारा पिता हूँ । उन दोनों का ऐसा विचार विवाद चलता रहा तो उस समय तमोमय रुद्र उत्पन्न हो गया था ।१८। और ज्योतिर्लिंग भय देने वाला जिसका अनन्त योजना का विस्तार था उत्पन्न हुआ । तब ब्रह्मा ने हंस रूप को देखा था । ब्रह्मा और भगवान् प्रभु वराह इन दोनों को ऊर्ध्व और अधोभाग के क्रम से एक सौ वर्ष हो गये थे । फिर आकर लज्जित होते हुए उन दोनों ने प्रसन्नता से स्तुति की थी ।१९-।२०। उन दोनों के द्वारा स्तुति किये गए साक्षात् हर भव इस नाम से आये थे फिर अपना स्थान कैलास को बनाकर समाधि में स्थित हो गये थे ।२१।

जातं पंचयुगं तत्र दिव्यं रुद्रस्य योगिनः ।
एतस्मिन्नंतरे घोरो दानवस्तारकासुरः ।२२
सहस्राब्दं तपः कृत्वा ब्रह्मणो वरमाप्तवान् ।
भववीर्योद्भवतः पुत्रः स ते मृत्युं करिष्यति ।२३
इति मत्वा सुराजित्वा महेन्द्रश्च तदा भवत् ।
ते सुराश्चैत्र कैलासं गत्वा रुद्रं प्रतुष्टुवुः ।२४
वरं ब्रूहीति वचनं सुरान्प्राह तदा शिवः ।
ते तु श्रुत्वा प्रशम्योचुर्बचनं नम्रकन्धराः ।२५
भगवन्ब्रह्मणा दत्तो वरो वै तारकाय च ।
शिववीर्योद्भव. पुत्रः स ते मृत्युर्भविष्यति ।
अतोऽस्मान्रक्ष भगवन्विवाह कुरु शङ्करः ।२६
स्वायंभुवेऽन्तरे पूर्वं दक्षश्चासीत्प्रजापतिः ।
षष्ठिकन्यास्ततो जातस्तासां मध्ये सती वरा ।२७
वर्षमात्रं भवन्तं सा पार्थिवैः समपूजयत् ।
यस्यै त्वया वरो दत्तः सा बभूव तव प्रियाः ।२८

योगी रुद्र को वहाँ पर दिव्य पाँच युग हो गये थे । इस बीच में परम घोर दानव तारकासुर हुआ, जिसने एक सहस्र वर्ष पर्यन्त तपस्या

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करके ब्रह्मा से वरदान प्राप्त किया था कि भव वीर्य से उत्पन्न होने वाला पुत्र तेरी मृत्यु करेगा।२२-२३। ऐसा मानकर उसने देवों को जीत लिया था और स्वयं महेन्द्र के आसन पर स्थित हो गया था। वे देवगण तब कैलास में पहुँचे और भगवान रुद्र की स्तुति करने लगे थे।२४। तब प्रसन्न होकर शिव ने देवों से कहा—वरदान माँग लो जो कुछ भी चाहते हो। उन सुरों ने सुन कर प्रणाम किया और नम्र कन्धरों वाले होकर यह वचन बोले।२५। हे भगवन्! ब्रह्मा ने असुर तारक को यह वरदान दिया है कि तेरी मृत्यु शिव के वीर्य से उत्पन्न होने वाला पुत्र ही करेगा अर्थात् तू उससे ही मारा जायगा। हे भगवान्! इसलिए अब आप हम सब की रक्षा कीजिये। हे शंकर! आप पुत्रोत्पादन करने के लिए अपना विवाह करिये।२६। पहिले स्वायम्भुव अन्तर में दक्ष प्रजापति था। उस दक्षसे साठ कन्यायें समुत्पन्न हुई थी उन समस्त कन्याओं में सती सब में श्रेष्ठ हैं।२७। उसने एक वर्ष तक आपका पार्थिव पूजन किया था। आपने उसको वरदान दिया था और वह आपकी प्रिया हुई थी।२८।

तत्पित्रा या कृता निंदा भवतोऽज्ञानचक्षुषा।
तस्य दोषात्सती देवी तत्याज स्वं कलेवरम्।२९
सतीतेजस्तदा दिव्यं हिमाद्रौ घोरमागमत्।
पीड़ितस्तेन गिरिराड् बभूव स्मरविह्वलः।३०

पित्रीश्वरं स तुष्टाव कामव्याकुलचेतनः।
अर्यमा तु तदा तुष्टो ददौ तस्मै सुतां निजाम्।
मेनां मनोहरा शुद्धां स दृष्ट्वा हर्षितोऽभवत्।३१

नररूपं शुभं कृत्वा देवतुल्यं च तत्प्रियम्।
स रेमे च तया सार्द्धं चिर कालं महावने।३२
गर्भो जातस्तदा रम्यो नववर्षातमुत्तमः।
कन्या जाता तदा सुभ्रु गौरी गौरमयी सती।३३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जातामात्रा च सा कन्या बभूव नवहायिनी ।
तुष्टाव शंकरं देव भवन्तं तपसा चिरम् ।३४
शताब्दं चले मग्नाशताब्द वह्निसंस्थिता ।
ताब्दे च स्थिता वायो शता नभसि स्थिता ।३५

उसके पिता अज्ञान चक्षु वाले ने आपकी जो निन्दा की थी उसके दोष से सतीदेवी ने अपने शरीर का त्याग कर दिया था ।२६। उस समय वह सती का घोर एवं दिव्य तेज हिमाद्रि में आ गया था उससे पीड़ित होकर वह गिरियों का राजा हिमवान् काम से विह्वल हो उठा था ।३०। कामदेव से व्याकुल बुद्धि वाले उसने पित्रीश्वर की स्तुति की थी । उस समय अर्यमा ने प्रसन्न होकर अपनी पुत्री उसको दान करके दे दी थी । परम शुद्ध एवं अत्यन्त सुन्दरी मेना को देखकर हिमवान बहुत ही हर्षित हुआ ।३१। फिर हिमाचल ने अपना नर रूप धारण किया जो देव के समान शुभ और पत्नी का प्रिय था । यह हिमवान नररूपधारी होकर महावन में चिरकाल पर्यन्त उस मेना के साथ रमण करता रहा था ।३२। नौ वर्ष के अन्त में तत्र उत्तम तथा रम्य गर्भधारण हुआ था । तब सुभ्र गौरमयी सती कन्या के रूप में उसके समुत्पन्न हुई थी ।३३। जात मात्र ही अर्थात् उत्पन्न होते ही वह कन्या नौ वर्ष की जैसी हो गई थी । फिर उस गौरी ने चिरकाल तक आप शंकर की तपस्या के द्वारा स्तुति की थी ।३४। सौ वर्ष तक तो वह तपस्या में जल में मग्न रही थी और एक सौ वर्ष तक अग्निमें संस्थित रही थी । सौ वर्ष तक वायु में और एक शताब्दी पर्यन्त आकाश में स्थित रही थी ।३५

शताब्दं च स्थिता चन्द्रे शताब्दं रविमण्डले ।
शताब्दं गर्भभूम्यां च स्थिता सा गिरिजा सती ।३६
शताब्दं च महत्तत्वे गत्वा योगबलेन सा ।
भवन्तं शंकर शुद्धं तत्र दृष्ट्वा स्थिताद्य वै ।३७
त्रिशताब्दमतो जातं तस्मात्त्वं पार्वतीं शिवाम् ।
वरं देहि प्रसन्नात्मा महादेव नमोऽस्तु ते ।३८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतिश्रुत्वा वचो रम्यं शंकरो लोकशंकरः ।
देवानाह तदा वाक्यमयोग्यं वचनं हि वः ।३९

मत्तो ज्येष्ठाश्च ये रुद्राः कुमारव्रताधारिणः ।
मृगव्याधादयो मुख्या दश ज्योतिस्समुद्भवाः ।४०

अहं तेषामवरजोभवो नामैव योगराट् ।
मायारूपां शुभां नारी कथं गृह्णामि लोकदाम् ।४१
नारी भगवती साक्षात्तया सर्वमिदं ततम् ।
मातृरूपा तु सा ज्ञेया योगिनां लोकवासिनाम् ।४२

एक शताब्दी तक चन्द्र में और एक सौ वर्ष पर्यन्त रविमण्डल में स्थित रही थी । वह सती गिरिजा एक सौ वर्ष तक गर्भ भूमिमें स्थित रही थीं ।३६। वह फिर योग के बल से सौ वर्ष तक महात्तत्व में जाकर स्थित हुई और वह शुद्ध शंकर आपका दर्शन करके आज भी स्थित है । ।३७। इस तरह तीन सौ वर्ष उसे यहाँ हो गये हैं । इसलिए आप उस शिवा पार्वती को प्रसन्न आत्मा वाले होकर अब वरदान देवें । हे महादेव ! हम सबका आपको नमस्कार है।३८। इस प्रकार के परम रमणीक वचन सुनकर लोकों का कल्याण करने वाले भगवान् शंकर उस समयमें देवों से बोले—आपका वचन अयोग्य है।३९। मुझसे बड़े जो रुद्र हैं वे कुमार व्रत के धारण करने वाले हैं । मृग व्याध आदि ज्योति समुद्भव दश मुख्य हैं ।४०। मैं तो उन सबमें सबसे छोटा हूँ, नाम से ही योगराट् हूँ । मैं अब उस मायारूप वाली शुभ नारी को जो कि लोकदा हैं, कैसे ग्रहण करूँ ? ।४१। नारी साक्षात् भगवती है । उसके द्वारा ही यह समस्त विश्व विस्तृत हुआ है । उस नारी को मातृरूपा ही जानना चाहिए वह लोकवासी योगियों की भगवती माता के समान हैं ।४२।

अहं योगी कथं नारीं मातरं वरितुं क्षमः ।
तस्मादहं भवदर्थे स्ववीर्यमाददाम्यहम् ।४३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तद्वीर्यं भगवान्वह्निः प्राप्य कार्यं करिष्यति।
इत्युक्त्वा वाह्ने देवो ददौ वीर्यमनुत्तमम्।
स्वयं तत्र समाधिस्थो बभूव भगवान्हरेः।४४
तदा शक्रादयो देव वह्निना सह निर्युयुः।
सत्यलोकं समागत्याव्रवन्सर्वं प्रजापतिम्।४५
श्रुत्वा तत्कारणं सर्वं स्वयंभूश्चतुराननः।
नमस्कृत्य परं ब्रह्मा कृष्णध्यानपरोऽभवत्।४६
ध्यानमार्गेण भगवान्गत्वा ब्रह्मा परं पदम्।
हेतुं तद्वर्णयामास यथा शंकरभाषितम्।४७
श्रुत्वा विहस्य भगवान्स्वमुखात्तेज उत्तमम्।
समुत्पाद्य ततो जात पुरुषो रुजिराननः।४८
ब्रह्माण्डस्याच्छविर्या वै स्थिता तस्य कलेवरे।
प्रद्युम्नो नाम विख्यातं तस्य जातं महात्मनः।४९

मैं तो एक योगी हूँ, उस माता स्वरूपिणी भगवती नारी को कैसे वरने में समर्थ हो सकता हूँ। इसलिए मैं आप लोगों के कार्य के लिए अपना वीर्य तुमको देताहूँ।४२। उस वीर्यको भगवान वह्नि प्राप्त करके आपका कार्य कर देगा। यह कहकर देव ने वह्नि को उत्तमवीर्य दे दिया था और आप स्वयं समाधिस्थ होकर भगवान हर स्थित हो गए थे।४४ उस समय इन्द्र आदि देवगण अग्नि के साथ वहाँ से निकल आये थे। सत्यलोक में जाकर उन्होंने यह समस्त वृत्तान्त प्रजापति से कहा था।।४५। स्वयंभू चतुरानन ने उन सम्पूर्ण कारण को सुन कर परब्रह्म को नमस्कार करके कृष्ण के ध्यान में परायण हो गए थे।४६। ध्यान के मार्ग के द्वारा भगवान् ब्रह्मा परमपद को प्राप्त हुए थे। वहाँ उन्होंने जैसा कि शंकर ने कहा था वह समस्त हेतु वर्णित कर दिया था।४०। भगवान उसे सुनकर और हँसकर अपने मुख से एक अति उत्तम तेज समुत्पन्न करके एक परम सुन्दर मुख वाले पुरुष को जन्म दिया था।।४८। समस्त ब्रह्माण्ड की जो भी छवि थी वह उसके कलेवर में स्थित

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। उसका नाम प्रद्युम्न विख्यात हुआ था जो कि महान् आत्मा वाला वहाँ समुत्पन्न हुआ था।४६।

तेन सार्द्धं तदा ब्रह्मा संप्राप्य स्वं कलेवरम्।
ददौ तेभ्यस्स पुरुष प्रद्युम्न शंवरर्तिदम्।५०
तेजसा तस्य देवस्य नरानार्यस्समन्ततः।
एकीभूतास्त्रिलोकेषु बभवुः स्मरपीडिताः।५१
स्थावराः सौम्यभूता वै तु कामाग्निपीडिताः।
सरिद्भिश्चा लताभिश्च मिलितास्संबभूविरे।५२
ब्रह्माण्डदेशः शिवः साक्षाद्रुद्रः कालाग्निसन्निभः।
त्रिनेत्रात्तेज उत्पाद्य शमयामास तद्व्यथाम्।५३
तदा क्रुद्धःस कृष्णांगो गृहीत्वा कौसुमं धनुः।
दिव्यान्पञ्च शरान्घोरान्महादेवाय बान्धवे।५४
उच्चाटनेन वाणेन गन्तामूल्लोकङ्करः।
वशीकरणवाणेन नारीवश्यः शिवोऽभवत्।५५
स्तंभनेन महादेवः शिवापार्श्वे स्थिरोऽभवत्।
आकर्षणेन भगवञ्छिवाकर्षणतत्परः।
मारणेनैन बाणेन मूर्छितोऽभून्महेश्वरः।५६

उस समय उनके साथ ब्रह्मा ने अपने कलेबर को सम्प्राप्त करके उसने उनके लिये शवरार्त्तिद प्रद्युम्न पुरुष को दे दिया था।५०। उस देव के तेज से सभी ओर में नर और नारी तीनों लोकों में एकीभूत होकर काम से पीड़ित हो गये थे।५१। सौम्य भूत जो स्थावर थे वे भी काम की अग्नि से उत्पीडित हो उठे थे। सरिताऐं और लताऐं भी मिलित होकर काम तप्त हो गई थीं।५२। इस ब्रह्माण्ड के स्वामी साक्षात् रुद्र शिव कालाग्नि के तुल्य ने तीसरे नेत्र से तेज समुत्पन्न करके उसकी व्यथा का शासन किया था।५३। उस समय वह कृष्णागं क्रुद्ध हुआ और उसने पुष्पों का धनुष ग्रहण किया था और दिव्य पाँच घोर शरों को बन्धु महादेव के लिए प्रयोग किया था। उच्चाटन बाण से लोक शंकर ग्रस्त हो गया था। और वशीकरण बाण से शिव नारी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैश्य हो गए थे ।४५।५५। स्तम्भन वाण के द्वारा महादेव शिवाके पास जाकर स्थिर होगये थे । आकर्षक वाण से भगवान् शिवाके आकर्षण में तत्पर हो गए थे । मारण वाण के द्वारा महेश्वर मूर्च्छित होगये थे ।५६

एतस्मिन्नन्तरे देवीं महत्तत्त्वे स्थिता शिवा ।
मूर्छितं शिवमालोक्य तत्रै वान्तर्द्धिमागतम् ।५७
तदोत्थाय महादेवो विललाप भृश मुहुः ।
हा प्रिये चन्द्रवदने हा शिवे च घटस्तनिः ।५८
हा उमे सुन्दराभे च पाहि मां स्मरविह्वलम् ।
दर्शनं देहि रम्भीरु दासभूतोऽस्मिसांप्रतम् ।५९
एवं विलपदानं तं गिरिजा योगिनी स्वयम् ।
समागत्य वचः प्राह नत्वा तं शंकरं प्रियम् ।६०
कन्याहं भगवन्देव मातृपित्रानुसारिणी ।
तयोस्सकाशाद्भगवन्मम पाणि गृहाण भोः ।६१
तथेति मत्वा स शिवः प्रद्युम्नशरपीड़ितः ।
सप्तर्षीन्प्रेषयामास ते तु गत्वा हिमाचलम् ।
संवोध्य च विवाहस्य विधिं चक्रुर्मुदान्विता ।६२
ब्रह्माण्डे ये स्थिता देवास्तेषां स्वामी महेश्वरः ।
विवाहे तस्य सम्प्राप्ते सर्वे देवास्समाययुः ।६३

इसी बीच में महत्तत्व में स्थिता देवी शिवा ने शिव को मूर्च्छित देखकर वह वहीं पर अन्तर्द्धि में आ गई थी ।५७। उस समय फिर महादेव उठकर बार-बार अत्यन्त विलाप करने लगे । हा प्रिये ! हा चन्द्रवदने ; हा शिवे ! हे घट के समान स्तनों वाली ! इस प्रकार से शिवने पुकार-२ कर विलाप किया था ।५८। हे उमे ! हे सुन्दर आभा वाली ! कामदेव से अत्यन्त विह्वल मेरी आकर रक्षा करो । हे रम्भा के तुल्य उरुओं वाली । आप अपना दर्शन मुझे दो । अब मैं तुम्हारा दासभूत हो गया हूँ ।५९। इस प्रकार से विलाप करते हुए उस शिव के पास योगिनी गिरिजा स्वयं समागत होकर उन प्रिय शङ्कर को नमस्कार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करके यह वचन बोली ।६०। हे देव । मैं अपने माता-पिता के अनुसरण करने वाली कन्या हूँ । आप उनके ही सकाश से मेरा पाणिग्रहण करें ।६१। प्रद्युम्न के द्वारा पीड़ित वह शिव 'ऐसा ही करूँगा' यह कहकर उसने फिर सप्तर्षियों को हिमवान के पास भेजा था और वे हिमाचल के पास पहुँच गये । वहाँ उन्होंने हिमवान को भली-भाँति समझाकर प्रसन्नता से युक्त होकर विवाह की विधि का सम्पादन किया ।६२। ब्रह्माण्ड में जो देवता हैं उन सबका स्वामी महेश्वर है । अतएव उनके विवाह के प्राप्त होने पर समस्त देवगण विवाह में सम्मिलित होने को आये थे ।६३।

अनन्तांश्च गणांश्चैव सुरांन्दृष्ट्वा हिमाचलः ।
गिरिजां शरणां प्राप्त तस्थौ पर्वतराट् स्वयम् ।६४
तदा तु पार्वती देवी निधीन्सिद्धीः समन्ततः ।
चकार कोटिशस्तत्र बहुरूपा सनातनी ।६५
दृष्ट्वा तद्विस्मिता देवा ब्राह्मणा सह हर्षिताः ।
तुष्टुवुः पार्वती देवी नारीरत्नं सनातनीम् ।६६
उ वितर्के च णा लक्ष्मीर्बहुरूपा विदृश्यत् ।
उमा तस्माच्च ते नभस्तस्यै नमोनमः ।६७
कतिचिदयनान्येव ब्रह्माण्डेऽस्मिञ्छिवे तव ।
कात्यायनी विज्ञेया नमस्तस्यै नमोनमः ।६८
गौरवर्णाच्च वै गौरी श्यामवर्णाच्च कालिका ।
रक्तवर्णाद्धि भवती नमस्तस्यै नमोनमः ।६९
भवस्य दयिता त्वं वै भवानी रुद्रसंयुता ।
दुर्गा त्वं दुष्प्राप्या नमस्तस्यै नमोनमः ।७०

हिमाचल ने अनन्तों को—गणों को और सुरों को देखकर पर्वतराज स्वयं गिरिजा के शरण में पहुँच कर स्थित हो गया था ।६४। उस समय में पार्वती देवी ने सब ओर से निधियों और सिद्धियों को वहाँपर बहुत रूपों वाली और सनातनी करोड़ों कर दी थीं ।६५। यह देखकर समस्त देव बड़े ही विस्मित हुए तथा देव और ब्राह्मण बहुत हर्षित भी हुए

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे। उन्होंने नारी रत्न सनातनी पार्वती देवी की स्तुति की थी।३६। देवों ने कहा—'उ' वह तो वितर्क में आता है और मा' यह बहु-रूपा लक्ष्मी दिखाई देती है। इसी से तेरा यह नाम है। उस उमा देवी के लिए हम सबका बार-बार नमस्कार है।६७। हे शिवे ! इस ब्रह्माण्ड में तुम्हारे कितने ही अयन हैं। आप कात्यायनी इसी लिए जानने के योग्य हैं। कात्यायनी देवी के लिए हमारा सबका बार-बार नमस्कार है।६८। आपका अत्यन्त गौर वर्ण है इसीलिए आप 'गौरी' यह शुभ नाम है। आपका श्याम वर्ण भी दिखाई देता है इसी लिए आपको 'कालका' भी कहा जाता है। आपका कभी रक्तवर्ण भी होताहै इसी से 'हेमवती' यह शुभ नाम पड़ गया है। ऐसी तीनों वर्णों वाली देवी आपके लिए हमारा बार-बार नमस्कार है।६६। आप भव की पत्नी हैं इसी लिए रुद्र से संयुक्त आपका 'भवानी' नाम होता है। आप योगियों के द्वारा भी बहुत दुष्प्राय हैं, अतएव आपका नाम दुर्गा देवी हैं। आपके लिए हम सब का बार-बार नमस्कार है।७०।

नान्तं जग्नुर्वयं ते वै 'चण्डिका' नाम विश्रुता ।
अम्बा त्वं मातृभूता नो नमस्तस्यै नमोनमः ।७१
इति श्रुत्वा स्तव तेषां वरदा सर्वमंगला ।
देवानुवाच मुदिता दैत्यभीतिं हरामि वः ।७२
स्तोत्रेणानेन सप्रीता भवामि जगतीतले ।७३
इत्युक्त्वा शंभुसहिमा कैलासं गुह्यकालयम् ।
गुहायां मिथुनीभूय सहस्राब्दं मुमोद वै ।७४
एतस्मिन्न तरे देवा भीरुका लोकनाशनात् ।
ब्रह्माणं च पुरस्कृत्य तुष्टुवर्गिरिजापतिम् ।७५
लज्जितौ तौ तदा तत्र पश्चात्तातं हि चक्रतुः ।
महान्क्रोधस्तयोश्चासींत्तत वै दुद्रुवः सुरा ।७६
प्रद्युम्नो बलवांस्तत्र सवल्थे गौरिवाचलः ।
रुद्रकोपाग्निना दग्धो बभूव बलवत्तरः ।७७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब हम सब आपके अनन्त नाम होने के कारण अन्त तक नहीं प्राप्त हुये हैं। आपका चण्डिका यह नाम परम प्रसिद्ध है। आप हम सबकी मातृभूता अम्बा हैं ऐसी आप अम्बा देवी के लिये हमारा बार-बार नमस्कार है।७। इस प्रकार की स्तुति को सुनकर सर्वमंगला वरदा परम प्रसन्न होकर देवों से कहने लगी—मैं आपको जो दैत्यों से भय उत्पन्न हो गया है उसका हरण कर दूंगी।७२। इस स्तोत्र से परम प्रसन्न मैं जगतीतल में होती रहूँगी।७३। यह कहकर भगवान् शम्भु के सहित गुह्यको का आलय कैलाश में चली गई थी। वहाँ गुहा में दोनों ने एकत्र होकर एक सहस्र वर्षतक आनन्दोपभोग किया।७४ इसी अन्तर में लोगों के नाश से भयभीत देवगण ब्रह्मा को आगे करके गिरिजा के पति की स्तुति करने लगे थे।७५। तब वे दोनों ने अत्यन्त लज्जित होकर बड़ा पश्चात्ताप किया था। उन दोनों का महान् क्रोध हुआ था उससे देवगण भाग गये थे।६७। प्रद्युम्न अत्यन्त बलवान् था अचल गौ की भाँति वहाँ पर ही संस्थित रहा था। वह अधिक बलवान् भी रुद्र की अग्नि से दग्ध हो गया था।७७।

प्रद्युम्नः स्थूलरूपं च त्यक्त्वा भस्ममयं तदा।
सूक्ष्मदेहमुपागम्य विश्रुतोऽमुदनगकः।
यथा पूर्वं तथैवासीत्काय कृत्वा स्मरो विभुः।७८
स्थूल रूपा रतिदेवी शताब्द शङ्करः परम्।
ध्यायेनराधया मास गिरिजावल्लभ व्रतैः।
तदा ददौ वरं देवस्तस्यै रत्यै सनातनः।७९
रतिदेवि शृणु त्वं वै लोकानां हृस्सु जायसे।
यौवने वयसि प्राप्ते नृणां देहः पात्र स्यकम्
भविष्यति मदर्धेन प्रद्युम्न कृष्णसाभवम्।८०
स्वारो चषान्तरः काला वर्तते चाद्य सुप्रियः।
वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्ते ह्यष्टाविंशतमे युगे।
द्वापरान्ते च भगवान्कृष्णः साक्षज्जनिष्यति।८१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तदा तस्य सुतं देव प्रद्युम्न मेरुमूर्द्धनि ।
भविष्यति सुखं रम्ये विपने नन्दने चिरम् ।८२
अन्येषु द्वापहान्तेषु स्वर्णगर्भो ह्युतत्पतिः ।
जन्मवान्वर्तते भूमौ यथा कृष्णस्तथैव सः ।८३
मध्याह्ने चैव संध्यायां ब्रह्मणोऽव्यक्तजन्मनः ।
कल्पेकल्पे हरिस्साक्षत्करोति जनमङ्गलम् ।८४

प्रद्युम्न ने स्थूल रूप का त्याग करके उस समय वह भस्ममय हो गया और फिर सूक्ष्म स्वरूप को प्राप्तकर अनगं-इस नाम से संसार में प्रसिद्ध होगया था। जैसे यह पहिले था वैसेही कायाको बनाकर स्मर अत्र भीविभु है ।७८। स्थूल रूप वाली रति देवी ने सौ वर्ष तक परम शंकर को ध्यान से आराधन किया था और व्रतों के द्वारा गिरिजा के वल्लभ की पूर्ण उपासना की थी, तब सनातन देव ने रति को वरदान दिया था ।७९। हे देवि ! तुम श्रवण करो, मेरा तुमको यह वरदान है कि तुम लोगों के हृदयोंमें उत्पन्न होओगी यौवन अवस्था के प्राप्त होने पर नरों के देहों द्वारा अपने पति का सेवन करोगी । मेरे आधे भाग से कृष्ण स सम्भूत प्रद्युम्न का सेवन अवश्य ही उस समय करती रहोगी ।८०। इस समय आज स्वारोचिष के अन्तर को सुप्रिय काल वर्तमान है, जब वैवस्वतका अन्तर प्राप्त होगा उस समयमें अट्ठाइसवें युग में द्वापर युग से अन्त से भगवान कृष्ण इस भूमण्डल में जन्म ग्रहण करेंगे ।८१। उस समय उसके पुत्र देव प्रद्युम्न को मेरु के शिखर में सेवन करोगी । और रम्य नन्दन विपिन में चिरकाल तक सुख पूर्वक रमण करोगी ।८२। अन्य द्वीपरान्तोंमें स्वर्णगर्भ उसका पति जन्म वान भूमि वर्त्तमान होता है और जिस प्रकार कृष्ण हैं वैसे ही वह भी है ।८३। अव्यक्त जन्म वाले ब्रह्मा के मध्याह्नमें और संध्यामें कल्प-कल्प में हरि साक्षात् जनमंगल करते हैं ।८४।

इत्युक्त्वा भगवाञ्चछं भुस्तत्रै वान्तर्द्धिमागमत् ।
राजा बभूव रुद्राणी गिरिजावल्लभो भवः ।८५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इति श्रुत्वा भवः साक्षात्स्वमुखात्स्वांशमुत्तमम् ।
समुत्पाद्य तदा भूमौ गोदावर्या वभूव ह ।८६
आचार्यशर्मणो गेत् पुत्रो जातो भवांशकः ।
रामानुजस्स वै नानाभ्नुजोऽभूदामशर्मणः ।८७
एकदा रामशर्मा वै पतंजलिमते स्थितः ।
तीर्थात्तीर्थान्तरं प्राप्तः पुरी काशीं शिवप्रियाम् ।८८
शङ्कराचार्य मागम्य शतशिष्य समन्वितः ।
शास्त्रार्थं कृतावानुम्यं कृष्णपक्षो हरिप्रियः ।८९
शङ्कराचार्यविजितो यज्जितो निशि भीरुकाः ।
स्वगेह पुनरायातः शांकरैर्वा शरैर्हतः ।९०
रामानुजस्तु तच्छ्रुत्वा तर्कशास्त्रविशारदः ।
भ्रातृशिष्यैश्च सहितः पुरी काशी समाययौ ।९१

इतना रति से कहकर भगवान् शम्भु वहीं पर अन्तर्धान हो गये थे । रुद्राणी गिरिजा का वल्लभ भव राजा हुआ था ।८५। सूतजी ने कहा-इस प्रकार से सुनकर भव ने साक्षात् अपने मुख से उत्तम अपने अंश को समुत्पाहित करके भूमितल में गोदावरी में वह हुये थे ।८६। वहाँ पर आचार्य शर्मा के घर में भव का पुत्र के स्वरूप में समुत्पन्न भाई थे ।८७। एक बार राम शर्मा जो कि पतञ्जलि के मत में स्थित थे, वह तीर्थाटन करते हुये तीर्थों से दूसरे तीर्थों में चलते हुए शिव की प्रिय काशीपुरी में प्राप्त हुए थे ।८८। यह अपने सौ शिष्यों से समन्वित होकर शंकराचार्य के पास गये थे । वहाँ हरि प्रिय कृष्ण पक्ष वाले ने बड़ा सुन्दर शास्त्रार्थ उनके साथ किया था उस शास्त्रार्थ में शंकराचार्य से विजित होकर परम लज्जा को प्राप्त हुए रात्रि में भीरु होकर फिर अपने घर में आ गये थे, क्योंकि शास्त्रार्थ में शंकर शरों से हत हो रहे थे ।९०। रामनुज ने यह सुना तो वह समस्त शास्त्रों के महामनीषी अपने भाई शिष्यों को साथ में लेकर काशीपुरी में आ गये थे ।९१।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वादो वेदान्तशास्त्रेचतयोश्चाजीन्महात्मनोः ।
शङ्करः शिवपक्षस्य कृष्णपक्षस्य वै द्विजः ।६२
मासमात्रेंण वेदान्ते दर्शितस्तेन वै हरिः ।
वायुदेवस्य नाम सच्चिदानन्दविग्रहः ।६३
वसुदेवस्य वै ज्ञेयो वसुष्वंशेन दीव्यति ।
वसुदेवस्य वै ब्रह्मा तस्य सारो हि यः स्मृतः ।६४
वासुदेवो हरिस्साक्षच्छिवपूज्यः सनातनः ।
शङ्करो लज्जितस्तत्र भाष्यशास्त्रे समागतः ।६५
पक्षमात्रं शिवैस्सूत्रैवर्णयामास वै शिवम् ।
रामानुजेन यत्रैव भाष्ये संदर्शितों हरिः ।६६
गोविन्दो नाम विख्यातो वैय्याकरणदेवता ।
मां परां विन्दते यस्माद्गोबिन्दो नाम वै हरिः ।६७
गिरीशस्तु न गोविन्दो गिरीणाश्वरो हि सः ।
गोपालस्तु नवै रुद्रोगवारूढः प्रकीर्तितः ।६८

वहाँ पर वेदान्त शास्त्र में उन दोनों महान् आत्मा वालों का बाद हुआ था । भगवान् शङ्कराचार्य का पक्ष तो शिव का था और द्विज रामानुज का पक्ष कृष्ण था ।६२। एक मास भर समय में ही उसने वेदान्त में हरि को दिखा दिया था । उस सच्चिदानन्द विग्रह वाले का बासुदेव नाम है ।६६। वह वसुदेव का ही जानना चाहिये । वसुओं में अंश से वह प्रकाशित होता है । बह ब्रह्मा बसुदेव है जो उसका सार ही कहा गया है ।६४। बासुदेव ही साक्षात् हरि हैं और सनातन तथा शिव के परम पूज्य भी हैं । भगवान शंकराचार्य इससे बहुतही लज्जित हो गये थे और फिर भाष्य शास्त्र में आ गये थे ।६५। उन्होंने एक लक्ष पर्यन्त शिव सूत्रों के द्वारा शिव का वर्णन किया था । रामानुज ने वहाँ भाष्य में हरि को दिखा दिया था ।६६। वैयाकरणों का देवता गोविन्द इस नाम से बिख्यात था । गौ को परा को जो प्राप्त करता है वह गोविन्द है और वह हरि ही । इसलिये उनका नाम गोविन्द हुआ है । ।६७। गिरीश तो कभी गोविन्द हो ही नहीं सकते हैं । वह तो गिरियों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के ईश्वर हैं। रुद्र कभी गोपाल भी नहीं हो सकके हैं क्योंकि गौओं के पालन करने वाले नहीं हैं प्रत्युत गोके ऊपर आरूढ़ होने वाले हैं। इस लिये वे गवारूढ़ भी कहे जाते हैं।६८।

ज्ञेय: पशु पति श्शंभुर्गोपतिर्नैव विश्रुत:।
लज्जित: शकंराचार्यो मीमांसाशास्त्रमागत: ।६६
यस्त वै यज्ञपुरुषो रामानुजमतप्रिय: ।१००
विच्छिन्न: शकंरणैव मृगभूत: पराजित:।
आचारप्रभवो धर्मो यज्ञदेवेनं निर्मित: ।१०१
श्रष्टाचारस्तदा जातो यज्ञें दक्षप्रजापते।
इति रामानुज: श्रुत्वा वचनं प्राह नम्रधी: ।१०२
कर्मणो जनितो यज्ञा विश्वमालनहेतवे।
कर्मब्रह्मोद्भव सिद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम् ।१०३
अक्षरोऽयं शिव साक्षच्छब्दब्रह्माणि संस्थित:।
पुराणपुरुषोयं यज्ञोऽक्षरकरो भुवि।
अक्षरात्स तु वै श्रेष्ठ: परमात्मा सनातना ।१०४
अक्षरेण न नं तृप्तातृप्तौ भूद्यज्ञकर्मणि।
नाम्ना स यज्ञपुरुषो वेदे लोके हि विश्रुत: ।१०५

शम्भु का नाम पशुपति ही जाना जाता है। कहीं भी गोपति उनका नाम प्रसिद्ध नहीं है। इस प्रकार से इस प्रवलतर अकाट्य युक्तियोंसे शकंराचार्य बहुत ही लज्जित हुये और फिर उन्होंने मीमांसा शास्त्र में वाद का आरम्भ कर दिया था।८६। उन दोनों का दस दिन तक महान विवाद हुआ था। जो भी यज्ञ पुरुष हैं वह तो रामानुज के मत का ही प्रिय था। शंकर के द्वारा ही विभिन्न हुआ मृग भूत होकर पराजित हो गया था। आचार से प्रभव धर्म यज्ञ देव के द्वारा ही निर्मित्त है।१००-१०१। वह दक्ष प्रजापति के यज्ञ में उस समय भ्रष्टाचार हो गया था। यह रामानुज सुनकर नम्र बुद्धि वाला बोला—यह कर्म के लिये जनित है और वह विश्व के पालन के हेतु के लिये ही है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह कर्म ब्रह्मोद्भव होता है और ब्रह्मा अक्षर समुद्भव होता है।१०३ यह अक्षर साक्षात् शिव हैं जो शब्द ब्रह्मा में संस्थित है। पुराण पुरुष यज्ञ है जो भूतल में अक्षर कर जानना चाहिए। अक्षर से वह सनातन परमात्मा श्रेष्ठ हैं।१०४। अक्षर से तृप्त से यज्ञ पुरुष में नहीं होता है नाम के द्वारा वह यज्ञ पुरुष वेद और लोक में विश्रुत है।१०५।

प्रपौत्रस्य तदा वृद्धि दृष्ट्वा स्पर्द्धातुर शिवः।
मृगभतश्च रुद्रौऽसौ दिव्यवाणैरतर्पयत्।१०६
समर्थौ यज्ञपुरुषौ ज्ञात्वा गुरुमयं शिवम्।
पलायनपरो भूतो धर्मस्तेन महान्कृतः।१०७
लज्जितः शङ्कराचार्यो न्यायशास्त्रे समागतः।
भवतीति भवो ज्ञेयो मृडतीति स वै मृडः।१०८
लोकान्भरति यो देवः सा कर्ता भर्ग एव हि।
हरतीति हरो ज्ञेयः स रुद्रः पापरावणः।१०९
स्वयं कर्मा स्वयं भर्ता हर्त्ता शिवः स्वयम्।
शिवाद्विष्णुर्मही यातो विष्णोर्ब्रह्मा च पद्मभुः।११०
इति श्रुत्वा तु वचनं प्राह रामाद्रजत्तदा।
धन्योऽयं भगवाञ्छंभुर्यस्यायं महिमा परः।१११
सत्यसत्यं ममाज्ञैयं कर्ता कारयिता शिवः।
रामनाम परं नित्यं कथं शंभुर्जपेद्धरिम्।११२

स्पर्धातुर शिव उस समय में प्रपौत्र की वृद्धि को देखकर मृगभूत रुद्र ने दिव्य वाणों के द्वारा तृप्त किया था।१०६। समर्थ यज्ञ पुरुष ने गुरुमय शिव को जानकर उसने महान् कृत धर्म पलायन परायण होकर गयाथा इस समय मीमांसा शास्त्रमें भी लज्जित होकर शंकराचार्य फिर न्याय शास्त्रमें आ गए थे शंकराचार्य ने कहा—भयभीत भव अर्थात् जो होता है वही भव जानने के योग्य होता है और जो मृडन करता है वह 'मृडतीति'—इस व्युत्पत्ति के द्वारा मृड कहा जाता है।१०७-१०८। जो देव लोकोंका भरण करताहै वह कर्त्ताहै भर्ग है। जो हरण करताहै उसे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही हर जानना चाहिए। यह रुद्र है जो पापों का रावण करने वाला है ।१०९। शिव स्वयं कर्त्ता—भर्त्ता और हर्त्ता है। शिव से विष्णु मही को प्राप्त हुआ और विष्णु से पद्मभू मही को गया था ।११०। शंकर भगवान् के इस वचनों को सुनकर तव फिर रामानुज ने कहा—यह आपका भगवान् शम्भु धन्य है जिसकी ऐसी महिमा है ।१११। सत्य और ध्रुव सत्य है कि यह शिव मेरी आज्ञा है जिसका वह कर्त्ता और कारायिता अर्थात् करने वाला है। राम का नाम पर और नित्य है उस उस हरि की शम्भु सदा जय किया करते हैं ।१२।

अनन्ता सृष्टय सर्वां उद्भूता यस्य तेजसा।
अनन्तः शेषतः शेषार मन्ते योगिनो हि तम् ।११३
स च वै मण्प्रभाधीम सच्चिदानन्दविग्रहः।
इति श्रुत्वा तदावाक्यं लज्जितः शङ्करोऽभत् ।११४
योगशास्त्रपरो देवः कृष्णस्तेनैव दर्शितः।
कालात्मा भगवान्कृष्णा योगेशो योगतत्परा ।११५
सांख्यशास्त्र च कपिलस्तस्मै तेसैव दर्शितः।
स वीर्य पति यो वै स कपिस्तं चैव लाति यः।
कपिलस्स तु विज्ञ या कपो रुद्रः प्रकीर्तितः ।११६
कपिलो भगवान्विष्णुः सर्वज्ञः सर्वरूपवान्।
तदा तु शंकराचार्यो लज्जितो नम्रकन्धरः ।११७
शुक्लांबरधरो भत्वा गोविन्दो निर्मलम्।
जजापहृदि शुद्धात्मा शिष्यो रामानुजस्य वै ।११८
इति ते रुद्रयाहात्म्यां प्रसंगेनापि वर्णितम्।
धनवान्पुत्रवान्वाग्मी भवेद्य श्रृणयादितम् ।११९

ये समस्त सृष्टियाँ अनन्त हैं। ये सब जिनके तेज अद्भुत से हुई हैं, वह शेष से भी अनन्त है। शेष योगिगण उसका रमण किया करते हैं ।११३। वह मेरे प्रभु का धाम है जो कि सच्चिदानन्द विग्रह वाले हैं। इस रामानुज का वाक्य श्रवण करके शंकराचार्य बहुत ही लज्जित हुए थे ।११४। योग शास्त्र में परमदेव कृष्ण ही है उसने ही दिखाया

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है । भगवान् कृष्ण कालात्मा—योगेश और योग में तत्पर है ।११५। और सांख्यशास्त्र में कपिल ने उसके लिये उसी ने दिखाया है । कपि नाम वीर्य की जो रक्षा करता है वह कपि है उस कपि को जो लाता है वह कपिल होता है । वह कपिल है और कपि रुद्र कहा गया है ।११६। अखिल भगवान् विष्णु हैं जो सर्वज्ञ और सर्व रूप वाले हैं । तब तो भगवान् शंकराचार्य परम लज्जित होकर नीचे को कन्धरा करने वाले हो गये थे ।११७। गोविन्दा शुक्ल वस्त्र धारण करने वाला होकर निर्मल नाम का जाप करने लगा । हृदय में शुद्धात्मा रामानुज का शिष्य था ।११८। यह रुद्र का माहात्म्य प्रसंग से तुम्हारे समक्ष में वर्णन कर दिया गया है । जो माहात्म्य का श्रवण करता है वह धन वाला और पुत्र वाला तथा वाग्मी हो जाता है ।११९।

—०—

कबीर-नरश्री पीपा-नानक वृत्तान्त

दितिपुत्रो महाघोरो विष्णुना प्रभविष्णुना ।
सहसौ तु दितिर्ज्ञात्वा कश्यप समपूजयत् ।१
द्वादशाब्दांतरे स्वामी कश्यपो भगवानृषि ।
उवाच पत्नीं ज हि तां वरं ब्रूहि वरानने ।
सा तु श्रुत्वा नमस्कृत्य वचनं प्राह हर्षिता ।२
अदितिर्मेश या देवी सपत्नी पुत्रसंयुतां ।
द्वादशततयास्तनस्या मम द्वौ तनयो स्मृतौ ।३
तदवर्यसुते नैव विष्णुना सुरपालिना ।
विनाशितौ सुतौ चोरौ ततोऽहं भृशदुःखिता ।४
देहि मे तनय स्वामिन्द्वादशादित्यनाशनम् ।
इति श्रुत्वा वचौ घोरं दिति प्राह सुदुःखितः ।५
ब्रह्मणा निर्मितो लोके धर्ताधर्मो परांपरौ ।
धर्मपक्षस्तु ये लोके नरास्ते ब्रह्मणाः प्रियाः ।६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधर्मपक्षास्तु नरा वैरिणस्तस्य धीमतः ।
अधर्मपक्षौ तनयौ तस्मन्मृत्युमुपागतौ ।७

इस अध्याय में कबीर-नरश्री-पीपा-नानक और नित्यानंद साधुओं को समुत्पत्ति के वृत्तान्त का वर्णन किया जाता है । सुर गुरु वृहस्पतिजी ने कहा—दिति के पुत्र दोनों महान् घोर थे वे दोनों विष्णु के द्वारा प्रभ विष्णु होकर मारे गये थे अर्थात् विष्णु ने अवतार धारण कर उन्हें मार दिया था । यह जानकर दितिने कश्यप की भली-भाँति पूजा की थी ।१। जब यजन करते हुए दिति को बारह वर्ष हो गये तो भगवान् कश्यप ऋषि जो उस दिति के स्वामी थे अपनी उस पत्नी से बोले-हे वरानने! तू अपना मनोवाञ्छित वर माँग ले । उस दिति ने यह श्रवणकर बड़ा हर्ष प्राप्त किया और पति को नमस्कार करके उनसे कहने लगी थी।२। हे भगवान् ! अदिति देवी जो मेरी सपत्नी हैं वह पुत्रों से संयुत हैं । उसके बारह पुत्र हैं और मेरे दो ही पुत्र थे ।३। वे दो पुत्र भी आर्यसुत सुरों के पालन करने वाले विष्णु ने विनाशित कर दिये है जो कि पुत्र अत्यन्त घोर थे । इससे बहुत ही अधिक दुःखित हूँ । हे स्वामिन ! मुझे ऐसा पुत्र प्रदान करें जो इन अदिति के पुत्रों का नाश करने वाला हो । इस घोर वचन को सुनकर कश्यप बहुत अधिक दुःखी होकर दिति से बोले ।४-५। लोक में ब्रह्मा ने पर और अपर धर्म तथा अधर्म इन दोनों का निर्माण किया है । धर्म पक्ष को ग्रहण करने वाले नर होते हैं वे ब्रह्मा के प्रिय हुआ करते हैं । अधर्म के पक्ष को ग्रहण करने वाले नर उस श्रीमान् के शत्रु होते हैं । तेरे पुत्र तो अधर्म के ग्रहण करने वाले थे । इसी से वे मृत्यु को प्राप्त हुए ।५-७।

अतो धर्मंप्रिये शुद्धं कुरु तस्मान्महाबलः ।
भविष्यति सुतो धीमांश्चिरजीवो तव प्रियः ।८
इति श्रुत्वा दितिर्देवी कश्यपादगर्भ मुत्तमम् ।
संप्राप्य सा शुभाचारा वभूव व्रतधारिणी ।९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मस्यागर्भगते पुत्र महेन्द्रश्च भयान्वितः।
दासभूतः स्थितो गेहे स दितेराज्ञया गुरोः।१०
सप्तमासि स्थिते गर्भे शक्रमायाविमोहिता।
अशुचिश्च दितिर्देवी सुष्वाप निजमन्दिरे।११
अंगुष्ठमात्रो भगवान्महेंन्द्री वज्रसंयुतः।
कुक्षिमध्ये समागम्य चक्रे गर्भं स सप्तधा।१२
जींवभूता निनबिलांन्दृष्ट्वा सप्त महारिपून।
एकैकः सप्तधा तेन महेन्द्रेण तदा कृतः।१३
नम्रींभूतश्च तान्दृष्ट्वा महेन्द्रस्तैः समन्वितः।
योनिद्वारेण चागम्य द्रणनाम तदा दितिम्।१४

इसलिए हे धर्म प्रिय ! शुद्ध मन करो। इससे महान् बलवान्—धीमान् और चिर कालतक जीवित रहने वाला तेरा प्रिय पुत्र समुत्पन्न होगा।८। यह श्रवण कर दिति देवी ने कश्यप ऋषि से उत्तम गर्भ धारण किया और वह फिर शुभ आचारों वाली वृत्तों को धारण करने वालीहो गई।९। उसके गर्भ में पुत्र के आ जाने पर मन्हेन्द्र देव अत्यन्त भय से आतुर हो गए थे और गुरु की आज्ञा से वह दास बनकर दिति के घर में ही स्थित होकर रहने लगा था।१०। जब उस गर्भको स्थित हुए सात मास हो गए थे तब यह दिति इन्द्र की मायासे विमोहित होकर अशुचि दशा में ही अपने मन्दिर में सो गई थी।११। इसी छिद्र को प्राप्त कर महेन्द्र देव अंगुष्ठ मात्र होकर वज्र से उस गर्भ के सात टुकड़े कर दिए थे।१२। फिर भी जीवभूत अत्यन्त बलवान् था। उनसातों महारिपुओं को देखकर उस समय महेन्द्र ने एक एक खण्ड के फिर सात-सात टुकड़े कर दिए।१३। उनको नमो भूत जब इन्द्र ने देखा तो उनके साथ ही योनि के द्वार से बाहिर निकलकर महेन्द्र ने दिति को प्रणाम किया था।१४।

प्रसन्ना सा दितिर्देवान्महेन्द्राय च तान्ददौ।
मरुद्गणाश्च ते सर्वे विख्याताः शक्रसेवकाः।१५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स तु पूर्वभवे जातो ब्राह्मणो लोकविश्रुतः ।
इलो नाम न वेदज्ञो यथेलो नृपतिस्तदा ।१६
एकदा बलवानराजा मनुतन्त्र इलः स्वयम् ।
एकाकी ह्वमारुह्य मेरोर्विपिनमाययौ ।१७
मेरोरधः स्थितः खण्डः स्वर्णगर्भो हरिप्रियः ।
निवासं कृतयाँस्तत्र कृत्वा राष्ट्र महोत्तमम् ।१८
इलेनावृतमेवापि कृत तत्र स्थले सुराः ।
इलावृतमितिः खण्डोभुद्विबुधप्रियः ।१९
भारते ते स्थिता लोका इलावृतमुपागताः ।
मेरुर्गिरिवृक्षमयो विधात्रा निर्मितो हि सः ।२०
आरोहण नरैस्तिस्मिन्कृत स्वर्णमयं शुभम् ।
तमारुह्य क्रमा ल्लोकः स्वर्ग लोकमुपागतः ।२१

तब दिति देवी ने प्रसन्न होकर उन देवों को महेन्द्र के लिए ही दे दिया था। वे सब इन्द्र के सेवक मरुःगण इल नाम से विख्यात हुए थे ।१५। वह पूर्व जन्म में लोक में प्रसिद्ध ब्राह्मण हुआ था। वहां वेदों का ज्ञाता इल नामवाला था जैसाकि उस समय में इस नामका राजा था।१६ एक बार बलवान् मनु का पुत्र राजा इल स्वयं अकेला ही अश्व पर समारूढ़ होकर मेरु के वन में आगया था ।१७। मेरुगिरि के निश्चल भाग में हरि का प्रिय स्वर्ण गर्भ खण्ड स्थित था। वसाँपर इलने उत्तम राष्ट्र का निर्माण करके अपना निवास किया था ।१८। उस स्थल में देवों ने इसके द्वारा आवृन भी किया था। अतःदेवों का प्रिय यह खण्ड इलावृत इस नाम से प्रसिद्ध हुआ था ।१९। भारत में जो लोक स्थितहैं वे इलावृत में उपागत हो गये थे। यह मेरु गिरि वृक्षों से परिपूर्ण विधाता के द्वारा निर्मित हुआ था ।२०। उस पर नरों ने स्वर्णमय शुभ आरोह किया था। उस पर आरोहण करके क्रम से शोक में उपागत हो गया था ।२१।

तान्दृष्ट्वा मनुजान्प्राप्तान्संदेहा स्वर्गमण्डले ।
विस्मिताश्च सुरास्सर्वे महेश शरण ययुः ।२२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञात्वा स भगवान्रुद्रो भवान्या सह शङ्करः ।
इलावृतवने रम्ये स रेमे च तथा सह ।२३
एतस्मिन्नन्तरे प्राप्तौ वैवस्वतसुतो महान् ।
इलो नाम महा प्राज्ञौ मृगयार्थी सदाशिवम् ।२४
नग्नभत समालोक्य नेत्रे समील्य संस्थितः ।
लज्जितां गिरिजां दृष्ट्वा शशाप भगवान्हरः ।२५
अस्मिन्खण्डे सदा नार्यों भविष्यन्ति च माँ विना ।
इत्युक्ता वचनं तस्मिन्नार्यस्सर्वा बभूविरे ।२६
इला बभूत नृपतेः कन्या जनमनोहरा ।
बहुकालः मेरुश्रृगं महत्तपमचीकरत् ।२७
इलासमाधिभूतायाः सप्तविंशच्चतुर्युगम् ।
जातं तत इला कन्या त्रेतामध्ये तु चन्द्रजम् ।
बुधं देवं पति कृत्वा चन्द्रवंशमजीजनत् ।२८

इस देह सहित उन मनुष्यों को वहाँ पर स्वर्ग मण्डल में प्राप्त हुए देखकर समस्त देवगण बड़े ही आश्चर्य युक्त हो गये थे और फिर वे महेश के शरण में पहुँचे थे ।२२। भगवान् रुद्र ने भवानी के साथ इस बात को जानकर फिर भवानी को साथ में लेकर इस तथ्य इलावृत वन में रमण किया करते थे ।२३। इसी बीच में महान् वैवस्वत का पुत्र वहाँ प्राप्त हो गया था इसका नाम इल था और महान् पण्डित था तथा मृगया के लिए वहाँ गया था । इसने नग्न रूप वाले सदाशिवको देखा तो अपनी आँख मूँदकर वहाँ स्थित हो गया था । जब भगवान हर ने गिरिजा को लज्जित देखा तो उन्होंने शाप दे दिया था ।२३-२५। शिव ने यह शाप दिया था कि इस खण्ड में मुझे छोड़कर सदा सब नारियाँ हो जायेंगी । इस प्रकार से यह वचन कहकर चुप होते ही वहाँ सभी नारियाँ हो गई थीं ।२६। राजा जनों को मनोहर लगने वाली इला कन्या हो गई थी । इसने बहुत समय तक मेरु के शिखर पर बड़ा भारी तप किया था ।२७। समाधि भूत इलाको सत्ताइस चतुर्युग

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगये थे। इसके पश्चात् उस इला कन्या ने त्रेता से मध्य में चन्द्रके पुत्र बुधदेव को अपना पति बनाकर चद्रवंश को समुत्पन्न किया था।२८।

अयोध्याधिपतिः श्रीमान्यदेलावृतमागतः।
तस्य राज्ञी मदवती नाम्ना तुष्टाव पार्वतीम्।२९
तवा प्राप्त इला विप्रस्तस्या रूपेण मोहितः।
स्पर्शं तां मदवती राज्ञी कामविमोहित।३०।
एतस्मिन्नतरे तत्र वागुवाचशिरोरिणी।
इलो नाय द्विजश्चाय तव रूपविमोहितः।३१
अनिलो नाम यत्रैव विख्यातोऽभूद्विजस्य वै।
कामाग्निपीड़ितो विप्रस्य तुष्टाव च पावकम्।३२
छित्वाछित्वा शिरो रम्यं तस्मै जातं पुनःपुनः।
दत्वा तुष्टाव त देवं प्रसन्नोद्भवद्धनञ्जयः।३३
प्राह त्वमूनपचाशद्भिभेदाञ्जनयिष्यसि।
तदाह मित्रवान्भूत्वा तत्सख्यस्तव कामदः।३४
यथा कुबेरो भगवान्षडविंशद्वरुणप्रियः।
तथाहमूनपंचाद्विधेदस्व वै सखां।३५
इत्युक्ते वचने तस्मिन्दितिकुक्षौ द्विजोत्तमः।
वायुर्नाम स वै जांतः पावकस्य प्रियस्सखा।३६

अयोध्या का स्वामी श्रीमान् जिस समय में इलावृत में आया था उस समय में उस राजा की रानी मदंवती नाम वाली ने वहाँ पार्वतीकी स्तुति की थी।२९। उस समय इल विप्र वहाँ आ गया और वह उस मदवती के रूप से मोहित हो गया। काम से विशेष मोहित होकर उस विप्र ने उस मदवती राज्ञी का स्पर्श किया था।२०। इसी अन्तर में बिना शरीर वाली वाणी ने कहा अर्थात् आकाश में वाणी हुई थी यह इल नहीं है और यह द्विज इल है जो तुम्हारे रूप से मोहित होगया है।३१। वहाँ पर ही द्विज का अनिल यह नाम विख्यात हो गया था। कामाग्नि से अत्यन्त पीड़ित उस ब्राह्मण ने पावक की स्तुति की थी।३२। उसने अपने रम्य शिर को काट-काटकर उसे समर्पित किये

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे किन्तु पुनः पुनः उत्पन्न हो गया था। इस तरह से उस देव का जब स्तवन किया था। तब धनञ्जय प्रसन्न हो गया था।३३। वह सन्तुष्ट होकर बोला—तू उनचास विवेदों को उत्पन्न करेगा। तब मैं मित्रवान् होकर उतनी ही संख्या वाला तेरी कामनाओं का देने वाला होऊँगा।३५। जिस तरह भगवान् कुवेर छब्बीस वरुणों का प्रिय है, उसी प्रकार से मैं उनचास दिति की कुक्षि में वायु नाम वाला पावक का सखा उत्पन्न हुआ था।३६।

इति श्रुत्वा गुरोर्वाक्यं वैश्यजात्यां समुद्भवः।
धान्यपालस्य वै गेहे मूलगडांतजः सुतः।३७
अलिको नाम वै म्लेच्छस्तत्र स्थाने समागतः।३८
अनपत्यो वस्त्रकारी सुत प्राप्य गृहं ययौ।
कबीर इति विख्यातः स पुत्रो मधुराननः।३९
स सम्प्राब्दवपुभुत्वा गोदुग्धापानतत्परः।
रामानन्द गुरुं मत्वा रामध्यानपरोऽभवत्।४०
स्वहस्तेनैव संस्कृत्य भोजनं हरयेऽपर्यत्।
तत्प्रियार्थं हरिस्साक्षास्सर्वकामप्रदोऽभत्।४१
उत्तानपादतनयोध्रू वोभूत्क्षत्रियाः पुरा।
पितृमातृपरित्यक्तः स बालः पंचहायनः।४२

सूतजी ने कहा—गुरु के इस वाक्य का श्रवण कर वैश्य जाति में समुत्पन्न धान्यपाल के घर में मूलगन्डान्त में जन्म लेने वाला पुत्र हुआ था जोकि माता और पिताके द्वारा परित्यक्त कर दिया गया था। उस समय काशी में विन्ध्य वन में अलिक नाम वाला म्लेच्छ था बस उस स्थान में आ गया था।३७-३८। वह म्लेच्छ सन्तान से हीन था और वस्त्रकारी था, वह उस सुतको प्राप्त करके गृह को चला गया था। वह कबीर इस नाम से मधुर मुख वाला पुत्र संसार में प्रसिद्ध हो गया था।३९। वह सात वर्ष की अवस्था वाला होकर गाय के दूध का पान करने में तत्पर रहता था फिर इसने स्वामी रामानन्द को अपना गुरु

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मान लिया था और श्रीराम के ध्यान में परायण होगया था ।४७। अपने हाथ से ही संस्कार करके यह हरि को भोजन अर्पण किया करता था। उसके प्रिय के लिये हरि साक्षात समस्त कामनाओं के प्रदान करने वाले हो गये थे ।४१। बृहस्पतिजी ने कहा—पहिले राजा उत्तानपाद का पुत्र क्षत्रिय ध्रुव हुआ था। यह पाँच वर्ष का बालक माता-पिता के द्वारा परित्यक्त कर दिया गया था ।४२।

गोवर्द्धनगिरौ प्राप्ता नारदस्योपदेशतः ।
स चक्रे भगवद्ध्यानं मासांषट् च महाव्रती ।४३
तदा प्रसन्नो भगवान्विष्णुर्नारायणः प्रभुः ।
खमण्डले पद तस्मैं ददौ प्रीत्या नयमोम् ।४४
दृष्ट्वा तद्वदनं रम्यं मायाशक्त्या दिशो दश ।
स्वामिनं च ध्रुवं मत्वा भक्तिनम्रा वभूविरे ।४५
ध्रुवोऽपि भगवांसाक्षत्सर्वंपूज्यो बभूव ह ।
दिवपतिः तं तु विज्ञेयो भगवानां पति स्वयम् ।४६
नभः पति कालकरः शिशूमारपतिस्स वै ।
पंचतत्वा हि वै माता प्रकृतिस्तत्पतिः स्वयम् ।४७
तस्माद्धरायां संभूतो भोमौ नाम महाग्रहः ।
जलदेव्यास्ततो जातः सेक्रा नाम महाग्रहः ।४८
वह्निदेव्यां ततो जातश्चाहं तत्र महाग्रहः ।
वासुदेव्यां ध्रुवाज्जातः केतुर्नाभः महाग्रहः ।४९

यह गोवर्द्धन पर्वत पर जाकर नारद के उपदेश से छहः मास पर्यन्त महान व्रत करने वाले ने भगवान का ध्यान किया था। तब भगवान विष्णु नारायण प्रभु परम प्रसन्न हो गये थे और उन्होंने उसके लिये आकाश मण्डल में प्रीति से नभोमय पद दे दिया था ।५४। माया शक्ति से उसके परम रम्य मुख को देखकर दशों दिशायें ध्रुव को स्वामी मानकर भक्ति से विनम्र हो गई थीं ।४५। ध्रुव भी साक्षात् भगवान सब का पूज्य हो गया था। वह स्वयं भगणों का पति, दिक्पति

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानने के योग्य है ।४६। नभ का पति कालकर और वह शिशुमा पति था। पाँच तत्वों वाली माया प्रकृति थी उसका पति वह स्वयं था ।४७। इसलिये धरा में भौम वाला महाग्रह उत्पन्न हो गया था। इसके अनन्तर जलदेवी शुक नामवाला वहाँ पर महाग्रह उत्पन्न हुआ था ।४८। इसके पश्चात् वह्नि देवी में .वहाँ महाग्रह समुत्पन्न हुआ। बासुदेव में ध्रुव से केतु नाम वाले महाग्रहने जन्म धारण किया था।४६

ग्रहभूतः स्थितस्तत्र नभोदेव्यां तदुद्भवः ।
राहुर्नाम तथा घोरो महाग्रहः उपग्रह ।५०
पूर्वस्यां दिशि वै तस्माज्जातश्चैरावतो गजः ।
आग्नेय्यां दिशि वै तस्मात्पुण्डरीको गजोऽभवत् ।५१
वामनः कुमुदश्चैव पुष्पदन्तः क्रमाद्गजाः ।
सार्वभौमः सुप्रयीको नभोदिक्षु तु तत्सुताः ।५२
अभ्रकमु कपिला चैव पिंगलाख्या इमाः क्रमात् ।
ताम्रकर्णो शुभ्रदन्तीं चांगना चांजनावती ।५३
भूमिकिक्षु करिण्यश्च जातास्तस्मात् तत्प्रिया: ।
भगिनी च सथा माता सुता चैव स्नुषा तथा ।५४
पशु शान्युदभवाना च नृणां ता योषितस्सदा ।
देवयोन्युदभवानां च नृणां पत्नी स्मृता स्वसा ।५५
मनुवंशोद्भवानां च नृणां चान्योद्भवाः स्त्रियः ।
इति धर्मो विधांत्रोक्तो मया प्रोक्तः सुरा हि वः ।५६

वहाँ पर ग्रह भूत होकर वह स्थित हो गया था। उसका उद्भव नभोदेवी में हुआ था। राहु नाम का महाग्रह अभिघोर उपग्रह हैं। ।५०। पूर्वदिशा में उससे ऐरावत नाम वाला हाथी समुत्पन्न हुआ था। आग्नेयी दिशा में उससे पुण्डरीक नामधारी गज की उत्पत्ति हुई थी ।५१। वामन कुमुद और पुष्प दन्त गज तथा सार्वभौम सुप्रतीक क्रम से गज हुये थे जो नभो दिशाओं में थे। उनके पुत्र अभ्रकमु-कपिला और पिंगल नाम वाले क्रम से हुये थे। ताम्रकर्णी-शुभ्रवन्ती-चांगना और चांजनावती भूमि की दिशाओं में कारिणयाँ उसमें उत्पन्न हुई थी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनकी प्रिया भागिनी-माता-सुता और स्नुया हुई थी। पशुयोनि में जन्म लेने वाले मनुष्यों की वे सब स्त्रियाँ थीं। जो देवयोनि में उद्भव वाले नर थे उनकी पत्नी स्वसा थी। मनुवंश में जन्म ग्रहण करने वालों की अन्योद्भव स्त्रियाँ थी। हे देवगण! विधाता ने यह धर्म कहा है और मैंने आपको कह कर सुना दिया है।५२-५६।

द्विधा ध्रुवस्स विज्ञेयो भूमेरुर्द्धमधस्तथा।
सद्गुणः स दिवारूपो रात्रिरूपस्तमोगुणः।५७
अधोध्रुवे सदा रात्रिर्नारकास्तत्र वै स्थिताः।
उर्ध्वध्रुवे दिवा नित्यं तपोमध्ये निशा दिवा।५८
महो जनस्तपस्सत्य तेषु नित्य दिनं स्मृतम्।
रौरवश्चांधकूपश्च तामिस्र च तमोमयम्।
तेषुनित्यं स्मृता रात्रिः कल्पमानं च कोविदः।५९
स तु पूर्वभवे चासीद्व्राह्मणो माधवप्रियः।
षष्टयुद्धं सर्वतीर्थेषु प्रातःस्नान चकार ह।६०
तीर्थं पुण्यात्स वै विप्रो माधवप्रियः।
सुनीत्यां गर्भमासाद्य ध्रुवो भूत्वा रराज ह।
षट्त्रिंशच्च सहस्रब्दं राज्यं कृत्वा ध्रुवोऽभवत्।६१
इति श्रुत्वा गुरोर्वाक्यं स ध्रुवः पञ्चमी बसुः।
गुर्जरे देश आगम्य वैश्यजात्यां समुद्भवः।
नरश्रीनाम विख्यातो गुणवैश्यस्य वैसुतः।६२
कुसीदगथगुप्तश्च नरश्रीः पुत्रवत्सलः।
त्यक्त्वा प्राणान्ययौ स्वर्गं स वैश्यतनयो ध्रुवः।६३

वह ध्रुव भूमि के ऊर्ध्व भाग में और अधोभाग में दो प्रकार का जानना चाहिये। दिवारूप वह सत्त्व गुण वाला है और रात्रि रूप वह तमोगुण वाला है।५७। अधोभाग के ध्रुव में सदा ही रात्रि रहा करती है। वहाँ पर नरक वाले लोग स्थित करते हैं। ऊर्ध्वभाग के ध्रुव में नित्य ही दिव रहता है। उन दोनों के दिन और निशा दोनों रहा करते हैं।५८। महलोक—जन—लोक—तपो—लोक और सत्य—लोक, इस

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चारों में नित्य ही दिन रहता है। गौरव-अन्ध कूप-तामिस्र ये अन्धकार मय और तमोगुण वाले हैं। उनमें सर्वथाही रात्रि कही गई है। कोविद लोगों के द्वारा एक कल्प तक उसका मान बताया गया है ।५९। वह पहिले जन्म में माधव का प्रिय ब्राह्मण था। साठ वर्ष तक समस्त तीर्थों में उसने प्रातःकाल का स्नान किया था ।६०। तीर्थों के पुण्यों के प्रभाव से वह विप्र राघव का प्रिय हो गया था। फिर सुनीति के गर्भ प्राप्त करके ध्रुव हुआ था और दीप्तिमान हो गया था। छत्तीस सहस्र वर्ष तक राज्य सुख का अनुभव करके वह ध्रुव होगया था ।६१। सूतजी ने कहा-गुरु के इस वाक्य का श्रवण करके पञ्चम वसु वह ध्रुव (गुजरात) देश में आकर वैश्य आदि में समुद्भूत हुआ था। इसका नरश्री यह काम प्रसिद्ध था और वह गुण वैश्य नाम वाले वैश्य का पुत्र था ।६२। इसका पुत्र कुसीद गुणगुप्त था। पुत्र का वत्सल नरश्री अपने प्राणों का त्याग करके स्वर्ग लोक को चला गया था। ध्रुव वैश्य तनय था ।६३।

प्रत्यहं हरि क्रीडां वृन्दाबनमहोत्तमे।
शिवप्रसादात्प्रत्यक्षां दृष्ट्वा हर्षमवाप्तवान् ।६४
यस्य पुत्रविवाहे च भगवान्भक्तवत्सलः।
यादवैस्सह संप्राप्तस्तय वांछितदायकः ।६५
पुरीं काशीं समागम्य गरश्रीभक्तराट् स्वयम्।
रामानन्दस्य शिष्योऽभूद्विष्णुधर्म विशारदः ।६६
कदाचिद्भूगावनत्रिगङ्गाकूलेनसूयया।
सार्द्धं तपो महत्कुर्वन् ब्रह्मध्यानपरोऽभवत् ।६७
तदा ब्रह्मा हरिवशंभु स्वस्ववाहनमास्थिताः।
वरं ब्रूहीति वचनं वचन तमाहुस्ते सनातनाः ।६८
इति श्रुत्वा वचस्तेषां स्वयंभूतनयो मुनिः।
नैव किञ्चिद्वचः प्राह संस्थितः परमात्मनि ।६९
तस्य भावं समालोक्य त्रयो देवाः सनातनाः।
अनसूयां तस्य पत्नीं समागम्य वचोऽब्रुवन् ।७०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृन्दावन महोत्सव में प्रतिदिन उसने भगवान् को हरि की क्रीडा को शिव के प्रदान से प्रत्यक्ष रूप से देखकर बड़ा ही अधिक हर्ष प्राप्त किया था ।६४। जिसके पुत्र के विवाह में भक्तों पर अधिक प्यार करने वाले भगवान् यादवों के साथ सम्प्राप्त हुए थे जो कि उसके वाञ्छित के देवे वाले थे ।६५। काशीपुरीमें आकर भक्तोंके राजा नर श्री स्वयं स्वामी रामानन्द के शिष्य हो गये थे जो विष्णु धर्म के महापण्डित थे ।६६। सुर गुरु बृहस्पतिजी ने कहा—किसी समय भगवान् अत्रि मुनि गङ्गा के तट पर अनुसूया के साथ महान् तप करते हुये ब्रह्म के ध्यान में तत्पर हो गये थे ।६७। उस समय में ब्रह्मा, हरि और शम्भु ये तीनों अपने-अपने वाहनों पर समारूढ़ होकर वे सनातन वरदान की याचना करो जो कुछ भी तुमको अभीष्ट हो'-यह वचन उस अत्रि मुनि से बोले थे ।६८। उनके इस वचन का श्रवण करके स्वयम्भू के पुत्र मुनि ने कुछ भी बचन नहीं कहा था क्योंकि वह उस समय परमात्मा से हीं संलग्न होकर स्थित थे ।६८। वे सनातन तीनों देवीं ने उसके भाव को देखकर उसकी पत्नी जो अनसूया थी उसके पास जाकर कहा था ।७०।

लिंगहस्त: स्वयं रुद्रो विष्णुस्द्रसावर्द्धन: ।
ब्रह्मा कामब्रह्मलोप: स्थितस्तस्यावशं गत: ।
रतिं देहि मदाघूर्णेनो चेत्प्राणाँस्त्यजांस्त्यहम् ।७१
पतिव्रताऽनसूया श्रुत्वा तेषां वचोऽशुभम् ।
नैव किंचिद्वच: प्राह कोपभीता सुरान्प्रति ।७२
मोहितास्तत्र ते देवा गृहीत्व तां बलात्तदा ।
मैथुनाय समुद्योग चक्रुर्मायाविमोहित: ।७३
तदा क्रुद्धा सती सा वै ताञ्छशाप मुनिप्रिया ।
महं पुत्रा भविष्यंत यूयं कामविमोहिता: ।७४
महादेवस्य वै लिंग ब्रह्मणोऽयं महाशिर: ।
चरणौ वासुदेवस्य पूजनीय सर्वदा ।
भविष्यति सुरश्रेष्ठा बपहासोऽयमुत्तम: ।७५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इति श्रुत्वा वचो घोरं नमस्कृत्य मुनिप्रियाम् ।
तष्टुवुभक्तिनम्रश्च वेदपाठैश्च ऋण मयैः ॥७६
अनसूया तदा प्राह भवन्तो मम पुत्रकाः ।
भत्वा शापं मदीपं च त्यक्त्वा तृप्तिमवाप्स्यथ ।७७

रुद्र स्वयं लिंग को हाथ में लिये हुए हैं—विष्णु उसके रस का वर्द्धन करने वाले हैं और काम ब्रह्मलोक ब्रह्मा भी वहाँ पर स्थित है जो कि उसके अवश में प्राप्त हुये हैं। हे महाघूर्ण ! अब तू रति का दान दे नहीं तो मैं प्राणों का त्याग करता हूँ ।७१। पतिव्रता धर्मका पूर्ण पालन करने वाली अनसूया ने इस उनके अशुभ वचन को सुनकर देवोंके प्रति अत्यन्त क्रुद्ध होने के भय से डरी हुई होकर उससे कुछभी उनको उत्तर नहीं दिया था ।७२। वहाँ पर देवगण मोहित होगये थे और उस अनसूया को बल पूर्वक उस समय पकड़ लिया था तथा मायासे अत्यन्त विमोहित होते हुए उसके साथ मैथुन करने का उद्योग किया था ।७३। जब इसको देखा तो मुनि की प्रिया को बड़ा क्रोध उत्पन्न हो गया था और उस सती ने उसको शाप दे दिया था—तुम काम से विमोहित हो गये हो अब तुम सब मेरे पुत्र होकर जन्म लोगे ।७४। महादेव के इस लिंग को ब्रह्मा के महाशिर की और वासुदेव विष्णु के चरणोंको ही सदा मनुष्यों के द्वारा पूजा हुआ करेगी। हे सुरश्रेष्ठो ! आप इसी प्रकार से पूजा के योग्य होओगे और वह एक उत्तम उपहास होगा ।७५। उस प्रकार का परम घोर वचन सुनकर मुनि प्रिया को नमस्कार किया था और अत्यन्त विनम्र होकर वेद पाठ की ऋचाओं के द्वारा उसकी स्तुति करने लगे थे ।७६। इसके पश्चात् अनसूया ने कहा—आप सब तीनों मेरे पुत्र बन कर मेरे शाप का त्याग करके फिर परम तृप्ति करेंगे ।७७।

इत्युक्ते वचने ब्रह्मा चन्द्रमाश्च तदा ह्यभूत् ।
दत्तात्रयो हरिः साक्षाद् दुर्वासा भगवान्हरः ।
तत्पापरिहारार्थं योगवती बभूविरे ।७८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एतस्मिन्न ंतरेदेवी प्रकृतिस्सर्व धार्मिणो ।
विधिं विष्णु ं हरं चान्यं चक्रेसा गुणरूपिणो ।७६।
मन्वंतरमतो जातं तेषां योगं प्रकुर्वताम् ।
हर्षिताश्च त्रयो देवास्मागम्य च तान्प्रति ।।८०
उवाच वचन रम्यं तेषाँ मंगलहेतवे ।
चन्द्रमाश्च भगेत्सोमो वसुः षष्टः सुरप्रियः ।८१
रुद्राशश्चैव दुर्वासाः प्रत्यूषः सप्तो वसुः ।
दत्तात्रेयमयो योगी प्रभासश्चाष्टमो वसुः ।
तेषां वाक्यं समाकर्ण्यं वसवस्ते त्रयोऽभवन ।८२
इति श्रु त्वा गुरोर्वाक्यं वहवो हर्षितास्त्रयः ।
स्वांशेन भूतलं जग्मुः कलिमुद्धाय दारुणे ।
दाक्षिणात्ये राजगृहे वैश्यजात्यां समुद्भवः ।८३
पीपा नाम सुतः सोम देवस्य तदा ह्यभूत् ।
कृतं राज्यपदं तेन यथा भूपेन यत्पुरे ।८४

इस प्रकार से वचन कहे जाने पर उस समय ब्रह्मा चन्द्रमा हुए थे। हरि दत्तात्रेय हुए और भगवान् हर साक्षात् दुर्वासा हुए थे। उस पापके परिहार के लिए,में योग वाले हुये थे ।७८। इस बीच में सर्व धर्म वाली प्रकृति देवी ने जो कि गुणों के रूप वाली थी विधि-विष्णु और हर को अन्य बनाकर स्थितकर दिया ।७६। उनको योग करते हुए मन्वन्तर हो गया था। परम प्रसन्न तीनों देव उनके मंगल के लिए अति रम्य वचन कहने लगे थे। चन्द्रमा सोम हो जाये और सुरप्रिय छठा वसुहो जावेगा ।८०-८१। रुद्र का अ ंश दुर्वासा योगी प्रभास आठवाँ वसु होगा। और दत्तात्रेय आठवें वसु हो जायेंगे। उनके वाक्य का श्रवण करके वे तीनों बसु हो गये थे ।८२। सूतजी ने कहा—यह गुरु के वचन सुनकर तीनों वसु परम हर्षित होते हुए अपने अ ंश कलिशुद्ध के लिए भूतल चले गये थे। वहाँ दारुण कालि में दाक्षिणात्य राजगृह में वैश्य जाति में उनका समुद्भव हुआ था ।८३। उस समय में देव का सुत सोम पीपा नामधारी हुआ उसने उस पुर में भूपकी भाँति ही राज्य पदका उपभोगकिया था।८४।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामानन्दस्य शिष्योऽभूद्वारकां स समागता ।
हरेर्मुदां स्वर्णमयीं प्राप्यं कृष्णात्स वै नृपः ।
वैष्णवेभ्यो ददौ तत्र प्रेमतत्त्वविनाशिनीम् ।८५
प्रत्यूषश्चैव पञ्चाले वैश्याजात्यां समुद्भवः ।
मार्गपालनस्व तनयो नानको नाम विश्रुतः ।८६
रामानन्दं सदागम्य शिष्यो भूत्वा स नानका ।
स वै म्लेच्छान्वशीकृत्य सूक्ष्ममार्गयदर्शयत् ।८७
प्रभासौ वै शांतिपुरे ब्रह्मजांत्या समुद्भवः ।
शुक्लदत्तस्य तनयो नित्यानंद इति स्मृतः ।
इति ते वसुगांहात्म्य मया शौनक वर्णितम् ।८८

वह स्वामी रामानन्द का शिष्य हुआ था और वह द्वारका में आ गया था । उस राजा ने हरिकृष्ण से स्वर्णमयी मुद्रायें प्राप्त करके जो प्रेत तत्व की विनाश करने वाली थी उसने वैष्णवों को दे दी थी ।८५। प्रत्यूष पाञ्चाल अर्थात् पंजाब देश में वैश्य जाति में समुद्भव हुआ था । यह मार्ग पालक का पुत्र था और इसका नाम नानक प्रसिद्ध था ।८६। यह नानक भी स्वामी रामानन्द के समीप में अस्थित होकर उन का शिष्य हो गया । उस नानक ने म्लेच्छों को वश में करके उन्हें सूक्ष्म मार्ग दिखलाया था ।८७। प्रभास जो था वह शान्तिपुर में ब्रह्म-जाति में समुत्पन्न हुआ था । यह शुक्लदत्त का और नित्यानन्द इस नाम से प्रसिद्ध था । हे शौनक ! यह बसुओं का माहात्म्य मैंने तुमको वर्णन करके सुना दिया है ।८८

चैतन्य वर्णन में जगन्नाथ माहात्म्य

भट्टोजिस्स च शुद्धात्मा शिवभक्तिपरायणः ।
कृष्णचैतन्यमायम्य नमस्कृत्य वचोऽब्रवीत् ।१
महादेवो गुरुः स वै शिवात्मा शरीरिणाम् ।
विष्णुर्ब्रह्माच्च तद्दासौ तर्हितत्पूजानेनविम् ।२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इति श्रुत्वा स यज्ञांशो विशदव्दवयोवृतः।
विहस्याह स भट्टोजि नायं शंभुर्महेश्वरः।
समर्थो भगवान् शम्भु कर्ता किन्न शरीरिणाम्ः।
न भर्त्ता च विना विष्णुं सहर्ताय सदा शिवः।४
एकमूर्तिस्त्रिथा जाता ब्रह्मा विष्णुर्महेश्वरः।
शक्तिमार्गेण भगवान्ब्रह्मा मोक्षप्रदायकः।५
विष्णुर्वैष्णवमार्गेण जीवानां मोक्षदायकः।
शम्भुर्वै शर्वमार्गेण मोक्षदाता शरीरिणाम्।६
शाक्त सदाश्रमो गेही यज्ञभुक्पितृदेवगः।
वानप्रस्थाश्रमी यो वै वैष्णव कन्दमूलभुक।७

इस अध्याय में कृष्ण चैतन्य के चरित्र के वर्णन में जगन्नाथ के माहात्म्य का वर्णन किया जाता है। सूतजी ने कहा—वह भट्टो जी शुद्ध आत्मा वाला और शिव की भक्ति में परायण था। कृष्ण चैतन्य महाप्रभू के पास आकर उसने नमस्कार करके यह वचन बोला—।१। महादेव गुरु हैं और शरीर धारियों के शिव आत्मा हैं। विष्णु और ब्रह्म तो उनके दोनों दास हैं फिर इनके पूजन करने से क्या लाभ हैं।२। यह सुनकर बीस वर्ष की अवस्था वाला यज्ञांश हँसकर भट्टोजी से बोला—यह महेश्वर शम्भु नहीं है।६। समर्थ भगवान् शम्भु शरीर धारियों का क्या नहीं करने वाला है। यह विष्णु के बिना वरण करने वाला नहीं है। यह शिव तो सदा संहार करने वाले होते हैं।४। एक ही मूर्ति है जो ब्रह्मा-विष्णु और महेश्वर इन तीन रूपों में हो गई है। भगवान् ब्रह्मा शक्ति मार्ग के द्वारा मोक्ष के प्रदान करने वाले हैं।५। विष्णु वैष्णव मार्ग से शरीर धारियों के मोक्ष दाता है।६। शक्ति सदा श्रम गेही और यज्ञ भुक् तथा पितृ देवों का अनुगमन वाला होता है। जो वानप्रस्थ आश्रम में रहने वाला वैष्णव है वह कन्द मूल का उपभोक्ता होता है।७।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यत्वाश्रमः सदा रौद्रो निर्गुणः शुद्धविग्रहः ।
ब्रह्मचर्याश्रमस्तेषामनुगामी महाश्रमः ।८
इति श्रुत्वा गुरोर्वाक्यं शिष्यो भूत्वा स वै द्विजः ।
तृतीयागं च वेदानां व्याचख्यो पाणिनिकृतम् ।९
यदाज्ञया च सिद्धान्तकौमुद्यास्स चकार ह ।
तत्रोष्य दीक्षितो धीमान्कृष्णचैतन्यसेवकः ।१०
वराहमिहिरो धीमन्स च सूर्यपरायणः ।
द्वाविंशाब्दे च यज्ञांशे तमागत्य वचोऽब्रवीत् ।११
सूर्योऽयं भगवान्साक्षात्त्रयो देवा यतोऽभयत् ।
प्रातर्ब्रह्मा च मध्याह्ने विष्णु सायं सदाशिवः ।१२
अतो रवेः शुभा पूजा त्रिदेवयजनेन किम् ।
इति श्रुत्वा स यज्ञांशो विहस्याह शुभ वचः।१३
द्विधा वभूव प्रकृतिरपरा च परा तथा ।
नाममात्रा तथा पुष्पमात्रा तन्मात्रिका तथा ।१४
शब्दमात्रा स्पर्श मात्रा रूपमा रसा तथा ।
गंधमात्रा तथा ज्ञेया परा प्रकृतिरष्टधा ।१५

सन्यस्त सदा रौद्र होता है जो निर्गुण और शुद्ध विग्रह वाला है उनका ब्रह्मचर्य आश्रम अनुगामी होता है और यह महान् आश्रम है । ।८। यह गुरु का वचन सुनकर वह द्विज शिष्य हो गया था और उसने वेदों का तीसरा अङ्ग पाणिनि कृत व्याकरण है उसकी व्यवस्था की थी ।९। उसकी आज्ञा से ही उस भट्टोजि दीक्षित ने सिद्धान्त कौमुदीकी रचना की थी । परम धीमान्कृष्ण चैतन्य के शिष्य दीक्षित ने यह रचना वहाँ पर रहकर ही की थी ।१०। सूतजी ने कहा श्रीमान् वराह मिहिर जो था वह सूर्यदेव की उपासना में परायण रहता था । जब यज्ञांशबाईस वर्ष की अवस्था वाला होगया था तब उसके पास आकर यहवचन बोला कि यह सूर्य भगवान् हैं । तीनों वड़े देव उसी से उत्पन्न हुए हैं । प्रातः काल में ब्रह्मा हुए मध्याह्न में विष्णुकी उत्पत्ति हुई और सायंकालमें सदा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिव समुत्पन्न हुए हैं ।११-१२। इसलिए सूर्यदेव की ही पूजा शुभ है इस ब्रह्मा-विष्णु और महेश्वर तीन की पूजार्चा से क्या लाभ है ? यज्ञांश ने यह सुनकर हँसकर यह शुभ वचन बोला था ।१३। यह प्रकृति परा और अपरा दो प्रकार की हुई थी । नाम मात्रा तथा पुष्पमात्रा तथा तन्मात्रिका और शब्दमात्रा-स्पर्शमात्रा-रूपमात्रा-रस और गन्धमात्रा इस प्रकार से परा प्रकृत्ति आठ प्रकार की है ।१४-१५।

अपरायां जीवभूता नित्यशुद्धा जगन्मयी ।
भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनोबुद्धिरेव च ।
अहङ्कार इति ज्ञेया प्रकृतिश्चापराष्टधा ॥१६
विष्णुर्ब्रह्मा महादेवो गणेशो यमसडगृहः ।
कुवेरो विश्वकर्मा च परा प्रकृतिदेवता ॥१७
सुमेरुर्वरुणो बह्निर्वायुश्चैवध्रुवस्तथा
सोमो रविस्तथा शेषोऽपरा शेषोऽपरा प्रकृतिदेवता ॥१८
अतः सोमवती रुद्रौ रविः स्तापि विधिः स्वयम् ।
शेषस्वाती हरिः साक्षान्नमस्तेनम्भो नमोनमः ॥१९
इति श्रुत्वा तदा विप्रा शिष्यो भूत्वा च तद्गुरोः ।
तदाज्ञया चतुर्थागं ज्योतिः शास्त्र चकार ह ॥२०
वराहसंहिता नाम बृज्जातकमेव हि ।
क्षुद्रतंस्तधान्यान्वै कृत्वा तत्र च चावसत् ॥२१

अपरा प्रकृति में जीवभूता नित्यशुद्धा जगन्मयी—भूमि—जल—तेज वायु—आकाश—मन—बुद्धि और अहंकार ये सब हैं आठ प्रकार की ही यमराट्-गुह्य-कुवेर और विश्वकर्मा ये सब पराप्रकृति के देवता हैं ।१७। सुमेरु—वरुण—वह्नि—वायू—ध्रुव—सोम—रवि तथा शेष ये सब अपरा प्रकृति देव हैं ।१८। इसलिए सोम का स्वामी रुद्र है और रवि का स्वामी स्वयं ब्रह्मा है शेष के स्वामी हरि साक्षात् हैं उन सबके लिए बार-बार नमस्कार है ।१९। यह सब श्रवण करके वह विप्र शिष्य होकर उस गुरु की आज्ञा प्राप्त कर चौथा जो वेदों का अङ्ग ज्योतिष

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शास्त्र है उसकी रचना बराह मिहिर ने की थी ।२०। बराह संहिता नामक और वृहज्जातक छोटे तथा अन्य ग्रन्थ समूहों की रचना करके वह वहाँ पर बस गया था ।२१।

वाणी भूषण एवापि शिवभक्ति परायणः ।
कृष्णचैतन्यमागम्य बचः प्राह विनम्रधीः ।।२२
विष्णुमांया जगद्धात्री सका प्रकृतिरुत्कृता ।
तया जातमिदं विश्वं विश्वद्देमसनुद्भवः ।।२३
विश्वेदेवस्स पुरुषश्शक्ति बहुधाभवत् ।
ब्रह्मा विष्णुर्हरश्चैव देवाः प्रकृति संभवाः ।
अतो भगवती पूज्या तर्हि तत्पूजनेन किम् ।।२४
इति श्रुत्वा स यज्ञांशो विहस्याह द्विजोत्तमम् ।
न वै भगवती श्रेष्ठा जड़रूपा गुणात्मिका ।।२५
एका सा प्रकृतिर्माया रचितुजगतां क्षमो ।
पुरुषस्य सहायेन योषितेव नरस्य च ।।२६
देवीभागवते शास्त्रे प्रसिद्धेयं कथां द्विज ।
कदाचितप्रकृतिर्देवी स्वेच्छयेदं जगत्खलु ।।२७
निर्मितं जड़भूतं तद्बहुधा बोधित तया ।
न चैतन्यमभूद्विप्रा विस्मिता प्रकृतिस्तदा ।।२८

सूतजी ने कहा—वाणी भूषण भी शिव की भक्ति में परम परायण था । यह भी कृष्ण चैतन्य महाप्रभु के पास आकर विनम्र भाव से यह बचन बोला—।२२। विष्णु माया जगत की पात्री है । वह एक प्रकृति उत्कृत है । उससे यह जगत उत्पन्न हुआ है और विश्वदेव से इस विश्व का उद्भव हुआ हैं । विश्वदेव वह पुरुष वहुधा शक्ति से उत्पन्न हुआ था । ब्रह्मा-विष्णु और हर ये सब देव प्रकृति से ही सम्भूत होने वाले हैं । इसलिए भगवती का ही भजन करना चाहिये । इस सबके पूजन करने से क्या लाभ है ? ।२३-२४। उस ब्राह्मण की यह बात सुनकर वह यज्ञांश हँसकर द्विजोत्तम से बोला—भगवती श्रेष्ठ नहीं है । वह तो जड़ रूप वाली और गुणात्मिका अर्थात् सत्वादि तीन गुणों के स्वरूप

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाली है वह प्रकृति—माया जगतों की रचना करने को क्षम पुरुष की सहायता से ही हुई है। जिस तरह कोई स्त्री पुरुप की सहायता से शिशु का सृजन किया करती है द्विज ! यह कथा तो देवी भगवान् नामक शास्त्र में प्रसिद्ध है। कदाचित प्रकृति देवी ने अपनी ही इच्छा से इस जगत का निर्माण किया था तो यह जड़ भून था। उसने बहुधा इसे बोधित किया था किन्तु यह चैतन्य नहीं हुआ था। हे विप्र तब यह प्रकृति बहुत ही विस्मित हुई थी।२५-२८।

शून्यभूतं च पुरुषं चैतन्य सन्तोषयत् ।
प्रविष्टो भगवान्देवीमायाजनितगोलके ॥२९
स्वप्नवद्वा स्वयं जातश्चैतन्यमभवज्जगत् ।
अत: श्रेष्ठ: स भगवान्पुरुषो निर्गुण: पर: ॥३०
प्रकृत्यां स्वेच्छया जातो लिंगरूपस्तदाऽभवत् ।
पुंल्लिङ्ग प्रकृतौ जात पुंलिङ्गोऽयं सनातन: ॥३१
स्त्रीलिङ्गप्रकृतौ जात: स्त्रीलिङ्गोऽयं सनातन: ।
नपुंस्कचृतौ जात: क्लीवरूप: स वै: वै प्रभ: ॥३२
अव्ययप्रकतौ जातो निर्गुणोऽव्मधोक्षज: ।
नमस्तस्मै भगवते शून्य रूपाय साक्षिणे ॥३३
इति श्रुत्वा तु तद्वाक्यं शिष्यो भूत्वा स वै द्विज: ।
त्रिविशाब्दे च यज्ञांशे तत्र वासमकारयत् ॥३४
छन्दोग्रन्थं तु वेदांगं स्वानाम्ना तेन निर्मितम् ।
राधाकृष्णपरं नाम जप्त्वा हर्षमवाप्तवान् ॥३५

तब शून्यभूत चैतन्य पुरुष को भली भाँति उसने सन्तुष्ट किया था अर्थात् उसका स्तवन किया था। तब भगवान् ने इस देवी माया के द्वारा जनित गोलक में प्रवेश किया था।२९। तब स्वप्न हुआ यह समस्त जगत् चैतन्य हो गया था अतएव वह भगवान् पुरुष ही श्रेष्ठ है जो निर्गुण और पर है ।३०। प्रकृति में स्वयं उत्पन्न हुआ तो उस समय वह लिंगरूप हो गया था। पुल्लिङ्ग प्रकृति में उत्पन्न हुआ यह सनातन पुल्लिङ्ग होता है।३१। जब स्त्री लिंग में प्रकृति में उत्पन्न

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है तो यह सनातन स्त्रीलिङ्ग होता है नपुंसक प्रकृति में जब होता है तो यह प्रभु क्लीव रूप वाला होता है ।३२। अव्यय प्रकृति में जात होने पर यह निर्गुण मधोक्षज होता है। उस शून्य रूप वाले साक्षी स्वरूप में स्थित भगवान् के लिए नमस्कार है।३३। इस यज्ञांश के वचन को सुनकर वह द्विज भी उनका शिष्य हो गया था और तेईस वर्ष वाले यज्ञांश के होने पर इसने वहाँ पर अपना निवास किया था।३४। इसने वेदों का अङ्ग स्वरूप जो छन्दों का ग्रन्थ है वह अपने नाम से उसने रचित किया था। और श्री राधा कृष्ण के नाम का जप करके वह परम हर्ष को प्राप्त हुआ था।३५।

धन्वन्तरिर्द्विजो नाम ब्राह्मभक्तिपरायणः।
कृष्णचैतन्यामागस्य नत्वा वचनमब्रवीत् ।।३६
भबास्तु पुरुषः श्रेष्ठो नित्यशुद्धस्सनातनः।
जड़भूता च तन्मया समर्थो भगवान्स्वयम् ।।३७
नित्योऽव्यक्तः परः सूक्ष्मस्तस्मात्प्रकृतिरुद्भवः।
अतः पूज्यस्य भगवान्प्रकृत्याः पूजनेन किम् ।।३८
इति श्रुत्वा वहिस्याह यज्ञांशस्सर्वशास्त्रगः।
नाय श्रेष्ठस्य पुरुषो न क्षेमः प्रकृति विना ।।३९
कदाचित्पुरुषो नित्यो नाममात्रः स्वकेच्छया।
बभूव वहुधा तत्र यथा प्रेतस्तथा स्त्रतम् ।।४०
असमर्थो विरचितुं जगन्ति पुरुषः परः।
तुष्टाव प्रकृति देवीं चिरकालं सनातनीम् ।।४१
तदा देवी च त प्राप्य महत्तत्वं चकार ह।
सोऽहंकारश्च महतो जातस्तन्मात्रिकास्ततः ।।४२

सूतजी ने कहा—धन्वन्तरि नाम वाला एक ब्राह्मण था जो ब्रह्मा की भक्ति में परायण रहता था। उसने महाप्रभु कृष्ण चैतन्य के पास उपस्थित होकर यह बचन कहा—।३६। आप तो श्रेष्ठ पुरुष हैं नित्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुद्ध और सनातन है। उसकी माया है वह तो जड़भूत है। भगवान् ही स्वयं सब प्रकार से समर्थ होते हैं ।३७। नित्य-अव्यक्त-पर-सूक्ष्म हैं उससे ही प्रकृति का उद्भव होता है। इसलिए वह भगवान् पूजने के योग्य हैं। इस प्रकृति के यजन से क्या लाभ है ? ।३८। यह उस धन्वन्तरि द्विज की बात का श्रवण करके समस्त शास्त्रों के ज्ञाता यज्ञांश हँसकर बोले—यह पुरुष श्रेष्ठ नहीं है। यह भी प्रकृति के बिना कुछ भी करने के लिए समर्थ नहीं होता है ।३९। वाराह पुराण में यह शुभ कथा अत्यन्त सुप्रसिद्ध है। किसी समय में नित्य नाभमात्र पुरुष स्वेच्छा से स्वयं ही बहुत प्रकार का हो गया था कोई प्रेत होता है ।२०। यहां पर पुरुष जगतों की रचना करने के कार्य में असमर्थ हो गया था। तब उस प्रकृति देवी को सनातनी थी चिरकाल तक तुष्ट किया था वह अहङ्कार महत् से उत्पन्न हुआ और उस पाँच तन्मात्रिकाऐं उत्पन्न हुईं थीं ।३१।

महाभूतान्यतोऽप्वासंस्तैः संजातमिदं जगत् ।।४३
अतस्सनातनौ चोभौ पुरुषात्कृतिः परा ।
प्रकृतेः पुरुषश्चैव तस्मात्ताभ्यां नमोनमः ।।४४
इति धन्वन्तरिः श्रुत्वा शिष्यो भूत्वा च तद्गुरोः ।
तत्रोष्यचैव वेदांग कल्पवेदं चकार ह ।
सुश्रुतादपरे चापि शिष्या धन्वन्तरेः स्मृताः ।।४५
जयदेवस्स व विप्रो बौद्धमार्गपरायणः ।
कृष्णचैतन्यमागम्य पञ्चविंशवयोवृत्तम् ।
नत्वोवाच वचो रम्य स श्रेष्ठ उषापतिः ।।४६
यस्य नाभेपभूत्पद्म ब्रह्मणा सह निर्गमम् ।
अतस्स ब्रह्मसूर्नाम सामवेदेषु गीयते ।।४७
विश्वो नारायणस्साद्याकृस्य के तौ समास्थित ।
विश्वकेतुरतो नाम न निरुद्धाऽकरुद्धकः ।।४८
ब्रह्मवेला च पत्नी निस्या चोषा महोत्तता ।
स वै लोकहितार्थाय स्वयमर्चावतारकः ।।४९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर उन पञ्च तन्मात्राओं से पाँच महाभूत की उत्पत्ति हुई थी। उन महाभूतों के द्वारा यह जगत् समुत्पन्न हुआ है ।४३। इसलिए ये दोनों ही सनातन हैं। पुरुष से प्रकृति पर है और प्रकृति पुरुष भी पर है। इसलिए उन दोनों प्रकृति और पुरुष के लिए बार-बार नमस्कार है ।४४। धन्वन्तरि ने यह यज्ञाश के बचन श्रवण करके उस गुरु का वह शिष्य हो गया था। वहाँ पर निवास करके उस वेदों का अङ्ग स्वरूप कल्प वेद की रचना की थी। सुश्रुत में दूसरे भी धन्वन्तरि के शिष्य बताये हैं ।४५। सूतजी ने कहा— एक जयदेव नाम वाला ब्राह्मण था जो कि बौद्ध धर्म के मार्ग में परायण था। जब महाप्रभु कृष्ण चैतन्य पच्चीस वर्ष की अवस्था वाले थे तब उनके पास वह जय देव आया था। उसने यज्ञांश को नमस्कार करके उस उषा पति श्रेष्ठ द्विज ने यह परम सुन्दर वचन बोला था ।४६। जिसकी नाभि से ब्रह्मा के साथ ही पद्म प्रकट हुआ था इसलिए वह ब्रह्मसु इस नाम से सांम-वेदों में गाया जाता है ।४७। विश्व साक्षात् नारायण जिसका केतु में समास्थित है जिस कारण से विश्व केतु यह नाम है न तो उसका नाम निरुद्ध हैं और अनिरुद्धक ही है ।४८। ब्रह्म वेला उसकी पत्नी है जो नित्या और महोत्तमा उषा है। और वह लोकों के हित के लिये स्वयं अर्चावतारक है ।४९।

इति श्रुत्वा विहस्याह यज्ञांशस्तं द्विजोत्तमम् ।
वेदोनारायणः साक्षात्पूजनीयो परै सदा ।।५०
ततः कालस्ततः कर्म तातो धर्म प्रवर्तते ।
धर्मात्कामः समुद्भूत कामपत्नी रति स्वयम् ।।५१
रत्यां कामात्समुद्भूतोऽनिरुद्धो नाम देवता ।
उषा सा तस्य भगिनी तेन सार्द्धं हमुद्भवा ।।५२
कालो नाम स वै कृष्णो राधा तस्य सहोदरा ।
कर्मरूपः स वै ब्रह्मा नियतिस्तत्सहोदरा ।।५३
धर्मरूपो महादेवः श्रद्धा तस्त सहोदरा ।
अनिरुद्धः कथं चेशो भवतोक्तः सनातनः ।।५४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिधा सृष्टिश्च ब्रह्माण्डे स्थूला सूक्ष्मा व कारण ।
स्थूलसृष्टयै समुद्भूतो देवो नारायणः स्वयम् ।।५५
नारायणा च तच्छक्तिस्तयोर्जलसमुद्भवः ।
जलाज्जातस्स वै शेषस्तस्योपरि समास्थितौ ।।५६

यह उस जयदेव की बात सुनकर यज्ञांश हँस पड़े और उस द्विजों में उत्तम से बोले—वेद ही साक्षात् नारायण हैं अतएव नरों के द्वारा वह सदा ही पूजन करने के योग्य होते हैं ।५०। इसके पश्चात् ही काल, कर्म और क्रम से प्रवृत हुआ करते हैं । धर्म से काम समुद्भूत हुआ है और काम पत्नी स्वयं रति है ।५१। रति में काम से अनिरुद्ध नामधारी देवता ने जन्म धारण किया है । वह उसकी भगिनी है जो उसके साथ ही साथ समुद्भूत हुई है ।५२। काल नाम वाला ही कृष्ण है और राधा उसकी सहोदरा है । कर्म रूप व ब्रह्मा है जिसकी नियति बहिन है । अनिरुद्ध आपने किस तरह सनातन ईश बताया है ।५४। इस ब्रह्माण्ड में तीन प्रकार की सृष्टि है—एक स्थूला सृष्टि है दूसरी स्थूल सूक्ष्मा और तीसरी कारणा है । स्थूल सृष्टि के लिए देव नारायण स्वयं समुद्भूत हुए हैं । और उनकी शक्ति नारायणी । उन दोनों से जल का जन्म हुआ है । जल से वह शेष समुत्पन्न हुआ । उसके ऊपर ये समास्थित हैं ।५५-५६।

सुप्ते नारायणे देवे नाभेः पङ्कजमुतमम् ।
ननतयोजनायामसूद्भूच्च ततो विधिः ।।५७
विधेः स्थूलमती सृष्टि र्हेवतिर्य्यंडनरादिका ।
सूक्ष्मसृष्टयै समुद्भूतः सोऽनिरुद्ध उषापतिः ।।५८
ततो वीर्यममं तोय जात ब्रह्माण्डमस्यके ।
वीर्याज्जातस्स वै शेषस्तस्योपरि स चास्थिथ. ।।५९
तस्य नाभिस्समुद्भूतो ब्रह्मा लोकपितामहः ।
सूक्ष्मसृष्टिस्ततो जाता यथा स्वप्नेपि दृश्यते ।।६०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हेतु भूतस्समुद्भूतो देवो नारायणः स्वयम् ।
वेदात्कालस्ततः कर्म ततो धर्मादयः स्मृताः ॥६१
त्वदगुरु जगन्नाथ उड्रदेशनिवासकः ।
मया तत्रैव गन्तव्यं सशिष्येणाद्य भो द्विजाः ॥६२
इति श्रुत्वा तु वचनं कृष्णचैतन्यकिंकराः ।
स्वान्स्वाञ्छिष्यान्समाहूय तत्पश्चात्प्रययुश्च ते ॥६३

नारायण देव के सुप्त होने पर उनकी नाभि में उत्तम पंकज हुआ था, जिसका आयाम अनन्त योजन था फिर उससे ब्रह्मा हुए ।५७। उस ब्रह्मा की यह देव तिर्यक् और नर आदि की स्थूलमयी सृष्टि हुई थी । सूक्ष्म सृष्टि के लिए वह उषा पति अनिरुद्ध उत्पन्न हुए थे ।५८। उससे ब्रह्माण्ड के मस्तक में वीर्यमय तोय उत्पन्न हुआ था । उस वीर्य से वह शेष उत्पन्न हुआ । उसके ऊपर वह आस्थित है ।५९। उसकी नाभि से लोक पितामह ब्रह्मा उत्पन्न हुआ । उस ब्रह्मा से वह सूक्ष्म सृष्टि उत्पन्न हुई थी जैसे कि स्वप्न में भी दिखलाई देती हैं ।६०। हेतु सृष्टि के लिए वेद स्वयं ही नारायण उत्पन्न हुए थे । वेद से काल-काल से कर्म और कर्म से धर्म आदि की उत्पत्ति कही गई है ।१६। आपका गुरु जगन्नाथ है जो उड्र देश का निवास करने वाला है । हे द्विजगण ! मुझे शिष्यों के सहित आज वहाँ पर ही जाना चाहिए । इस प्रकार के वचन को महा प्रभु कृष्ण चैतन्य के किंकरों ने श्रवण किया था और सब ने अपने-२ शिष्यों को बुलाकर इसके पश्चात् वे चले गये थे ।६३।

शांकरा द्वादशगणा रामानुजमुपाययः ।
नामदेवादवस्तत्र गणास्सप्त समागताः ॥६४
रामानन्दं नमस्कृत्य संस्थियास्तस्य सेवकाः ।
रोपणश्च तदागत्य स्वशिष्यैर्बहुभिर्वृतः ॥६५
कृष्णचैतन्यमागम्य नमस्कृत्य स्थितः स्वयम् ।
जगन्नाथपुरी ते वै प्रयवुर्भक्ति तत्पराः ॥६६
निधयः सिद्धयस्तत्र तेषां सेवार्थमागताः ।
सर्वे च दशसाहस्रा वैष्णवाः शैवशाक्तकैः ॥६७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यज्ञांश च पुरस्कृत्य जगन्नाथपुरी युयुः ।
अर्चावतारां भगवाननिरुद्ध उषापतिः ।।६८
तदापमनमालोक्य द्विजरूपधरो मुनिः ।
जगन्नाथः स्वयं प्राप्तो यत्र यज्ञांशकादयः ।।६९
यभांशस्त समालोक्य नत्वा वचनब्रवीत् ।
किं मतं भवतां ज्ञात कलौ प्राप्ते भयानके ।।७०

भगवान् शङ्कराचार्य के बारहगण रामानुज के समीप में आये थे वहाँ पर नामदेव आदि सात गण आ गये ।६४। उसके सेवक स्वामी रामानन्द को नमस्कार करके वहाँ संस्थित हो गये थे । और रोपण उस समय वहाँ आया था जो बहुत से अपने शिष्यों के सहित था ।६५। वह महाप्रभु कृष्ण चैतन्य को नमस्कार करके स्वयं वहाँ स्थित हो गया था। वे सब भक्ति भाव में तत्पर होते हुये जगन्नाथपुरी को चले गये थे ।६६। समस्त निधियाँ और समग्र सिद्धियाँ वहाँ पर उनकी सेवा करने के लिए उपस्थित हो गई थीं । वे शैव और शाक्तों के सहित संख्या में दस सहस्र थे । वे सब यज्ञांश को अपने सबके आगे करके जगन्नाथपुरी को गये थे । अर्चावचार भगवान् उषापति अनिरुद्ध ने उन सबका आगमन देखकर द्विज के रूप को धारण कर मुनि जगन्नाथ स्वयं वहाँ प्राप्त हो गये थे,जहाँ पर यज्ञांश आदि सब लोग उपस्थित थे ।६०-६८। यज्ञांश ने उनको देखकर उन्हें प्रणाम किया और यह वचन बोले-इस भयानक कलियुग के आने पर आपने क्या मत जाना है ? ।७०।

तत्सर्वं कृपया ब्रूहि श्रोतुमिच्छामि तावतः ।
इत श्रुत्वा तु वचन जगनाथो हरिः स्वयम् ।
उवाच वचनं रम्य लोकमङ्गलहेतवे ।।७१
मिश्रदेशोद्भाम्लेच्छाः काश्यपेनैव शासिताः ।
संस्कृता. शूद्रवर्णेन ब्रह्मवर्णमुपागताः ।।७२
शिखासूत्रं समाधाय पठित्वा वेदमुत्तमम् ।
यज्ञैश्च पूजयामासुर्देयदेव शचीपतिम् ।।७३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुःखितो भगवानन्निन्द्र श्वेतद्वीपमुपागतः ।
स्तुत्या मां बोधयामास देवमङ्गलहेतवे ।।७४
प्रबुद्धं मा वचः प्राह शृणु देव दयानिधे ।
शूद्रसंस्कृतमन्नं च खादितुं न द्विजोऽर्हति ।।७५
तथा च शूद्रजनितैयज्ञैस्तृप्तिं न चाप्नुयाम् ।
काश्यते स्वर्गते प्राप्ते मागधे राज्ञि शासति ।।७६
प्रम शत्रुर्बलिदैत्यः कलिपक्षमुपागतः ।
निस्तेजाश्च यथाहं स्यां तथा वै कर्तुमुद्यतः ।।७७

यह सब कृपा करके हमको बताइये । मैं तत्व रूप से इसे श्रवण करने की इच्छा रखता हूँ । यह वचन सुनकर जगन्नाथ हरि स्वयं परम रम्य वचन लोक के मंगल के लिए बोले ।७१। मिश्र देश में उत्पन्न होने वाले म्लेच्छ तो कश्यप ने ही शासित कर दिये थे । शूद्र वर्ण से संस्कृत होते हुए वे ब्रह्मचर्य को उपगत हो गये हैं ।७२। अब शिखा और सूत्र को धारण करके उत्तम वेद को पढ़ाते और यज्ञों के द्वारा देवों के देव शची के पति को पूजते थे । ।७३। दुःखित भगवान् इन्द्र श्वेत रूप में आ गये थे । और स्तुति के द्वारा देवों के मङ्गल के लिये मुझको बोधित कराया था । जब मैं प्रबुद्ध हो गया तो मुझसे वचन कहे थे—हे देव ! हे दयानिधे ! सुनिये, शूद्र के द्वारा साधित अन्न द्विज खाने को योग्य नहीं होता ।७४-७५। और शूद्रों के द्वारा किये गये यज्ञों से मैं तृप्ति को प्राप्त नहीं होता हूँ । काश्यप के स्वर्गगत हो जाने पर मागध राजा को शासन करने पर मेरा शत्रु दैत्य बलि कलियुग के पक्ष में आ गया है । वह ऐसा कार्य करने के लिये ही उद्यत हो गया है कि जिससे मैं बिल्कुल ही तेज से हीन हो जाऊँ ।७६-७७।

मिश्रदेशोद्भवे म्लेच्छ सांस्कृता तेन संस्कृता ।
भाषा देवविनाशाय दैत्यानांवर्द्धनाय च ।।७८
आर्येषु प्राकृती भाषा दूषिता तेन वै चृता ।
अतौ मां रक्ष भगवन्भवन्त शरणागतम् ।।७९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इति श्रुत्वा तदाह देवराजमुवाच ह ।
भवन्तो द्वादशादित्या गन्तुमर्हसि भूतले ।।८०
अहं लोकहितार्थाय जनिष्याम कलौ युगे ।
प्रवीणो निपुणोऽभिज्ञः कुशलश्च कृती सुखी ।।८१
निष्णातः शिक्षितश्चैव सर्वज्ञः सुगत स्तथा ।
प्रबुद्धश्च तथा बुद्ध आदित्याः क्रमतो भवाः ।।८२
धाता मित्रोऽर्यमा शक्रो मेधः प्रांशुभर्गस्तथा ।
विवस्वांश्च तया पूषा सविता त्वाष्ट्रविष्णुकौ ।
कीकटे देश आगत्य ते सुरा जज्ञिरे क्रमात् ।।८३
वेदनिन्दां पुरस्कृत्व बौद्धशास्त्रमचीकरन् ।
तेभ्यो वेदान्समादाय मुनिभ्यः प्रददुस्सुराः ।।८४

मिश्र देश में जन्म लेने वाले म्लेच्छों में जो संस्कृत थी वह उसने संस्कृत कर दी है। वह भाषा देवों के विनाश के लिये और दैत्यों का वर्द्धन करने के लिये ही उसने की है ।७८। आर्यों में प्राकृती भाषा उसने दूषित कर दी है। इसलिये हे भगवन् ! आप मेरी रक्षा कीजिये। मैं अब आपकी शरण में प्राप्त हो गया हूँ ।७९। वह श्रवण करके उस समय मैंने देवराज से कहा था—आप बारह आदित्य भूतल में जाने के योग्य होते हैं ।८०। और मैं लोक के हित के लिये कलियुग में जन्म ग्रहण करूँगा। प्रवीण-निपुण-अभिज्ञ-कुशल-कृती-सुखी-निष्णात-शिक्षित-सर्वज्ञ और सुगत-प्रबुद्ध और बुध ये आदित्य क्रम से हुय ।८१-८२। धाता मित्र-अर्यमा शक्र-मेध-प्रांशुगभर्ग-विवस्वान्-पूसा-संविता-त्वाराष्ट्र-विष्णुक ये कीकट देश में आकर क्रम से वे सुर उत्पन्न हुए थे ।८३। इन्होंने सबने वेदों की निन्दा पहिले की और फिर वौद्ध शास्त्रों की रचना की थी। सुरों ने उन सब वेदों को लाकर मुनियों के लिये दिये थे ।८४।

वेदनिन्दाप्रभावेण ते सुरा. कुष्ठिनोऽभवन् ।
विष्णुदवमुपागम्य तुष्ट वृद्धवौद्धरूपिणम् ।।८५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिर्योगबलेनैव तेषां कुष्ठमनाशयत् ।
तद्दोषान्नग्नभूतश्च बोधस्य तेजसाभवत् ॥८६
पूर्वार्द्धान्नेमिनाथश्च परार्द्धं द्बौद्ध एव च ।
बौद्धराज्यविनाशाव दारुपाषाण रूपवान् ॥८७
अहं सिंधुतटे जातो लोकमंगलहेतवे ।
इन्द्रद्युम्नश्च नृपतिः स्वर्गलोकादुपागतः ।
मन्दिरं रचितं तेन तत्राहं समुपागत ॥८८
अत्र स्थितश्च यज्ञांशप्रसादमहिमां महान् ।
सववांछितद लोका स्थापयामास मोक्षदम् ॥८९
वर्णधर्मश्च नैवात्र वेदधर्मस्तथा नहि ।
व्रतं चात्र न यज्ञांशमण्डले योजनान्तर ॥९०
येनौक्तो यावनी भाषा बौद्ध विलोकितः ।
तस्य प्राप्तं महत्पाप स्थितोऽहं तदघापहः ।
मां विलोक्य नरः शुद्धः कलिकाले भविष्यति ॥९१

वेदों की निन्दा करने के प्रभाव से वे देव कुष्टी हो गये थे वे विष्णु देव के पास आकर बौद्ध रूपी विष्णु देव की स्तुति करने लगे थे ।८२। हरि ने योग के बल से ही उनके कुष्ट कर दिया था । उसके दोष से नग्न भूत वह तेज से बौद्ध हो गया था ।८३। पूर्वार्द्ध में तो नामनाथ हो गया था और परार्द्ध से बौद्ध ही हुआ था । बौद्धों के राज्य के विनाश करने के लिये दारुपाषाण रूप वाला हो गया था ।८७। मैं सिन्धु के तट पर लोक के मङ्गल हेतु उत्पन्न हुआ था । और इन्द्रद्युम्न राजा स्वर्ग लोक से उपागत हुआ था । उसने मन्दिर की रचना की थी वहाँ पर मैं आ गया था ।८८। यहाँ पर स्थित होते हुए यज्ञांश के प्रसाद की महान् महिमा लोक में समस्त वाञ्छा को देने वाली तथा मोक्ष का प्रदान करने वाली स्थापित की थी ।८९। यहाँ पर कोई भी वर्णों का धर्म नहीं है और न कोई वेद का ही धर्म है । इस योजनान्तर यज्ञांश मण्डल में न कोई व्रत ही है ।९०। जिसने यावनी भाषा को कहा और जिसने बौद्ध को देखा उसको जो महान् पाप प्राप्त हुआ;

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं उसके पाप का अपहरण करने वाला वहाँ स्थित हूँ। इस कलि के समय में मेरा दर्शन करके ही नर शुद्ध हो जायगा ।६१।

—×—

अकबर बादशाह वर्णन

इति श्रुत्वा बलिर्दैत्यो देवानां विजय महत् ।
रोषणं नाम देत्येन्द्रं समाहूय वचोऽब्रवीत् ।।१
सुतन्तिमिरलिङ्गस्य सरुषो नाम विश्रुतः ।
त्वं सि तत्र समागम्य दैत्यकार्यं महत्कुरु ।।२
इति श्रुत्वा म वै दैत्यो हृदि विप्राप्तरोषणः ।
ननाश वेदमार्गस्थदेहली देशमास्थितः ।।३
पञ्चवर्षं कृतं राज्यं तत्सुतो वावरोभवत् ।
विशदब्दं कृतं राज्यं होमायुस्तत्सुतोऽभवत् ।।४
होमायषा मन्दाधेन देवताश्च निराकृताः ।
ते सुराः कृष्णचेतन्य नदीहोपवने स्थितम् ।।५
तुष्टुबहुधा तत्र श्रुत्वा क्रुद्धो हरिः स्वम् ।
स्वतेजसा च तद्राज्यं विघ्नभूतं चकार ह ।।६
सत्सेन्यजनित लोकहोमायुश्च निराकृतः ।
महाराष्ट्रैस्तदा तत्र शेषशाकः समास्थितः ।।७

इस अध्याय में तिमिर लिंग के पुत्र सरुषादि का देहली में राज्य के वृत्तांत का वर्णन तथा अकबर के राज्य के वृत्तान्त का वर्णन किया जाता है। सूतजी ने कहा—यह सुनकर दैत्य बलि ने कि देवों की महान् विजय हुई है रोषण नाम वाले दैत्येन्द्र को बुलाकर उसने यह वचन बोला था-।१। तिमिरलिंग (तैमूरलङ्ग) का पुत्र सुरुष नाम वाला प्रसिद्ध था। तू वहाँ पर जाकर दैत्यों के महान् कार्य का सम्पादन कर ।२। वह श्रवण कर दैत्य हृदय में विशेष रूप से रोष प्राप्त करके देहली में आस्थित होकर वेद मार्ग पर चलने वालों का उसने नाश कर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया था।३। पाँच वर्ष पर्यन्त उसने वहाँ पर राज्य का शासन किया। फिर उसका पुत्र वाहर हुआ इसने वीसवर्ष तक राज्यके सुखका उपभोग किया इसके हुमायु नाम वाले पुत्र ने जन्म ग्रहण किया था।४। मद से अन्धे हुमायु ने देवनाओं का निरादर किया था वे देवता कृष्ण चैतन्य की जो कि नदी होने (नदियाँ) के उपवन में स्थित थे, स्तुति करने लगे थे। बहुधा इसको सुनकर हरि स्वयं बहुत क्रुद्ध हुए थे। उन्होंने अपने तेज के प्रभाव से ही उसके राज्य का विघ्न भूत कर दिया।६। उसकी सेना के जनित लोगों ने ही हुमायु को निराकृत कर दिया था। उस समय में महाराष्ट्रों के द्वारा शेष शोक समास्थित हुआ था।७।

देहलीनगरे रम्ये म्लेच्छो राज्यं चकार ह।
धर्मकार्यं कृत तेन तद्राज्यं पंचहायनम् ॥८
ब्रह्मचारी मुकुन्दश्च शङ्कराचार्यगोत्रजः।
प्रयागे च तपः कुर्वन्विशाच्छष्यैर्युतः स्थितः ॥९
वावरेण च धूर्तेन म्लेच्छराजेन देवताः।
भ्रंशिताः स यदा ज्ञात्वा वह्नौ जुहाव वै ॥१०
तस्य शिष्या गता वह्नौ म्लेच्छनाशहेतुना।
गोदुग्धे च स्थिते रोम पीत्वा स पयसा मुनि ॥११
मुकुन्दस्तस्य दोषेण म्लेच्छयोनो वभूव ह।
होमायुषश्च काश्मीरे संस्थितस्यैव पुत्रकः ॥१२
जातमात्रे सुते तस्मिन्वागुवाचाशरीरिणी।
अस्याच्च वरो जातः पुत्रोऽयं सर्वभाग्यवान् ॥१३
पैशाचे दारुणे मार्गे न भूतो न भविष्यति।
अतः सोकवरी नाम होमायुस्तनयस्तव ॥१४

रम्य देहली नगर म्लेच्छ ने राज्य किया था उसने धर्म का कार्य किया। पाँच वर्ष तक उसका राज्य रहा था।८। ब्रह्मचारी मुकुन्द जो कि शङ्कराचार्य के गोत्र में जन्मा था प्रयाग में अपने बीस शिष्यों के सहित तप करता हुआ स्थित था। अत्यन्त धूर्त म्लेच्छों के राजा बाबर ने देवताओं को भ्रंशित किया था। उसने यह जानकर अपना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरीर अग्नि में हवन कर दिया था ।१०। उसके जो शिष्य थे म्लेच्छों के नाश करने के लिये बह्नि में चले गये । गो दुग्ध में स्थित रोम को मुनि ने पय के साथ पीं लिया था । उसके दोष से मुकुन्द म्लेच्छ योनि में हुआ था । होमायु काश्मीर में स्थित था वहाँ पर संस्थित रहते ही पुत्र हुआ था ।११-१२। उस पुत्र के उत्पन्न होते ही आकाशवाणी ने कहा था—यह अकस्मात वर पुत्र उत्पन्न हुआ है जो कि सब प्रकार से भाग्यवान हैं । यह दारुण पैशाच मार्ग में न कभी रहा और न आगे रहेगा । इसीलिए होमायु तेरा यह पुत्र अकबर नाम वाला है ।१३-१४।

श्रीधरः श्रीपतिः शंभुर्वरेण्यश्च मधुव्रती ।
विमलो देववान्सोमो वर्द्धनो वर्तको रुचिः ।।१५
माधाना मानकारी च केशवो माधवो मधुः ।
वेदापि सोमपा शूरा मदनो यस्य शिष्यकाः ।।१६
स मुकुन्दो द्विजः श्रीमान्दैवतात्वद् गेहेमागतः ।
इत्यावकाशी श्रुत्वा होमायुश्च प्रसन्नधीः ।।१७
ददौ दान क्षुधार्तेभ्यः प्रेम्णा पुत्रपालतः ।
दशाब्दे तनये जात देहलीदेशमागयः ।।१८
शेषशाक पराजित्य स राजा बभूव ह ।
शब्दं तेन कृतं राज्यं तत्पुत्रश्च नृपोभवत् ।।१९
सम्प्राप्ते राज्यं सप्तशिष्य तत्प्रियाः ।
पूर्वजन्मनिये मुख्याते प्राप्ता भूपति प्रति ।।२०
केशवो तानसेनश्च बैजवाक्स तु माधवः ।
म्लेच्छास्ते च स्मृतान्तत्र हरिदासो मधुस्तथा ।।२१
मध्वाचार्यकुले जातो वैष्णवः सर्वरागवित ।
पूर्वजन्मनि देवापिः च स बीरवलोऽभवत् ।।२२

श्रीधर-श्रीपति-शम्भु-वरेण्य-मधुव्रती-बिमल-देववान्-सोम-बर्द्धन वर्त्तक-रुचि-मान्धाता मानकारी-केशव-माधव-मधु-देवापि-सोमपा-शूर—सूदन ये इतने नामधारी जिसके शिष्य थे श्रीमान् वह मुकुन्द देव वंश से तेरे घर में आ गया है । इस प्रकार की आकाश वाणी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का श्रवण करके होमायु अत्यन्त प्रसन्न हुआ था ।१५-१७। उस होमायु ने भूख से पीड़ितों को दान दिया था और अपने पुत्र का बड़े प्रेम से पालन किया था । जब वह पुत्र दस वर्षका हो गयाथा तब देहलीमें आ गया था ।१८। उसने शेष शोक को पराजित करके वह वहाँ का राजा हो गया था एक वर्ष पर्यन्त वहाँ पर उसने राज्य किया था इसके पश्चात् उसका पुत्र राजा हुआ था ।१९। अकबर को राज्य प्राप्त होने पर जो प्रिय शिष्य पहिले जन्म में परम मुख्य थे इस समय राजा के पास उपस्थित हुए थे ।२०। केशव-तानसेन-बैंजवाक्स-माधव वे म्लेच्छ कहे गये हैं । वहाँ ही हरिदास तथा मधु मध्वाचार्य के कुल में उत्पन्न हुए जो वैष्णव थे तथा समस्त रागों के ज्ञाता थे । पूर्व जन्म में जो देवापि नाम वाला वह बीरबल नामवाली होकर समुत्पन्न हुआ था ।२१-२२।

ब्राह्मणः पश्चिमात्यो वै वाग्देवीवरदर्पितः ।
सोमपा मानसिंहश्च गोतमान्वयसंभवः ।।२३
सेनापतिश्च नृपतेरार्यभूपशिरोमणेः ।
सुरश्चैव द्विजो जातो दक्षिणश्चैव व पण्डितः ।।२४
विल्वमंगल एवापि नाम्ना तन्नृपतेः सखा ।
नायिकाभेदनिपुणो वेश्यानां स च पारगः ।।२५
मदनो ब्राह्मणो जातः पार्वात्वः स च नर्तकः ।
चन्दनो नाम विख्यातो रह क्रीडाविशारद ।।२६
अन्यदेशं गताः शिष्यास्तेषां पविस्त्रयोदश ।
अनुपस्य सुतो जातः श्रीधरः शत्रुवेदितः ।।२७
विख्यातस्तुलसीशर्मा पुराणनिपुणः कविः ।
नारीशिक्षां समादाय राघवानन्दमागतः ।।२८

यह पश्चिमात्य ब्राह्मण था और वाग्देवी के वरदान से दर्पयुक्त था । सोमपा और मानसिंह गौतम वंश में उत्पन्न होने वाले थे ।२३। यह आर्य भूपों के शिरोमणि नृपति का सेना का स्वामी हुआ था जो शूर था वह द्विज ही उत्पन्न हुआ था और दक्षिणात्य पण्डित था ।२४।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्विल्वमंगब नाम वाला भी उस राजा का सखा था। यह नायिका भेद का बड़ा पण्डित तथा वेश्याओं का परिगामी था।२५। मदन नाम वाला जो था वह भी इस जन्म में ब्राह्मण ही होकर उत्पन्न हुआ था। यह पौर्वात्य था और नर्तक था। चन्दन नाम से सो विख्यात था वह रहस्य क्रीडा का महान् पण्डित था।२६। अन्य देश में जो शिष्य गए थे उनके पूर्व ये तरह थे अनूप का पुत्र उत्पन्न हुआ था जो शत्रु वेदित श्रीधर था २७। तुलसी शर्मा इस नामसे विख्यात हुआ था जो पुराणों में परम निपुण और कवि था। नारी की शिक्षा को ग्रहण कर राघवानन्द के पास आ गया था।२८।

शिष्यो भूत्वा स्थितः काश्यां रामानन्दमतेस्थितः।
श्रीपतिः स भूवान्धो मध्वाचार्यमते स्थितः।।२९
सूरदास इति ज्ञेय कृष्णलोलाकरः कविः।
शशुवे चन्दभट्टस्य कुले जातौ हरिप्रियः।।३०
रामानन्दमते संस्थो भक्तकीर्तिपरायणः।
वरेण्यः सोग्रभुजनामा रामानन्दमते स्थितः।।३१
ज्ञानध्यानप ो नित्यं भाषाछन्दकरः कविः।
मधुव्रती स वे जातो कीलको नाम विश्रुतः।।३२
रामलीलाकरो धीमानमनन्दमते स्थितः।
विमलश्च स वै जातः स नाम्नव दिवाकरः।।३३
सीतालीलाकरो धीमानामनन्दमते स्थितः।
येववान्कृशरो जातो विष्णुस्वामिमते स्थितः।।३४
कविप्रियादिरचना कृत्वा प्रेतत्वमागतः।
रामज्योत्स्नामयं कृत्वा स्वर्गमुपाययौ।।-५

यह रामानन्द का शिष्य हो गया और काशी में रामानन्द के मत का अनुयायी बनकर रहने लगा। वह श्रीपति अन्धा हो गया था और मध्वाचार्य के मत में स्थित हो गया था।२९। यह सूरदास के इस नाम से जाना गया था और यह कवि था जिसने कृष्ण लीला के पदों की रचना की थी। शम्भू जो था वह चन्द्रभट्ट के कुल में उत्पन्न हुआ था जो कि

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरि प्रिय था ।३०। अग्रभुज नाम वाला रामानन्द के मत का अनुयायी था वह भक्तों की कीर्त्ति का वर्णन करने में परायण रहता था । यह व्ररेण्य ज्ञान के ध्यान में तत्पर रहता हुआ नित्य भाषा के छन्दों की रचना करने वाला कवि था । यह मधुमति समुत्पन्न हुआ जो कीलक इस नाम से प्रसिद्ध था ।३१-३२। यह बुद्धिमान रामानन्द के मतमें स्थित होकर राम लीला किया करता था । विमल उत्पन्न हुआ यह दिवाकर नाम से प्रसिद्ध हुआ था ।३३। यह भी स्वामी रामानन्द मत का अनुयायी था और सीता की लीला किया करता । देववान् केशव उत्पन्न हुआ था जो कि विष्णु स्वामी के मत का अनुयायी हुआ था ।३४। इस केशव कवि ने कवि प्रिया आदि ग्रन्थों की रचना की थी और अन्त में यह प्रेतत्व को प्राप्त हो गया था । इसके पश्चात् राम ज्योत्स्ना मय ग्रन्थ की रचना की थी जिससे इसे स्वर्ग की प्राप्ति हुई थी ।

सौमो जातः स वै व्यासो निम्बादित्यमते स्थितः ।
रस क्रीडामयं ग्रन्थं कृत्वा स्वर्गमुपाययौ ॥३६
वर्द्धनश्च स वै जातो नाम्ना चरणदासकः ।
ज्ञानमालामयं कृत्वा ग्रन्थं रेदासमागमः ॥३७
वर्तकः स च वै जातो ोपणस्य मते स्थिता ।
रत्नभानुरिति ज्ञेयो भाषाकर्ता च जैमिनेः ॥३८
रुचिश्च रोचनी जाता मध्वाचार्य मते स्थितः ।
नानाज्ञानमयी लीला कृत्वा स्वर्गमुपाययौ ॥३९
मान्धाता भूपतिर्नाम कायस्थः स बभूव ह ।
मध्वाचार्यो भागवतं चक्रे भाषामयं शुभम् ॥४०
मानकारो नारिभावान्नारीदेहमुपागतः ।
मीरानामेति विख्याता भूपयेस्तनया शुभा ॥४१
मा शोभा च तनौ यस्या गतिर्गजसमा किल ।
सा मीरा च बुधैः प्रोक्ता मध्वाचार्यमते स्थिता ॥४२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोम व्यास होकर उत्पन्न हुआ था यह निम्बार्काचार्य के मत का अनुयायी था। इसने रहस्य की क्रीड़ा से परिपूर्ण ग्रन्थ की रचना की थी और स्वर्गलोक को चला गया था।३६। वर्द्धन चरणदास के नाम वाला समुत्पन्न हुआ था इसने ज्ञान माला मय ग्रन्थ की रचना की थी और यह दान के मार्ग का अनुयायी था।३७। वर्त्तक उत्पन्न हुआ था जोकि रोषण के मतका अनुयायी हुआ था। यह रत्नाभूषण इस नासेसे जानने के योग्य हुआ था इसने जैमिनीकी भाषाकी रचना की थी अर्थात् भाषा भाष्य जैमिनी के ग्रन्थ का किया था।३८। रुचि रोचन नाम से समुत्पन्न हुआ था जो कि मध्वाचार्य के मत के अनुसार करने वाला था। इसने अनेक प्रकार की ज्ञानमयी लीलाओं की रचना की थी और अन्तमें यह स्वर्गलोक में चला गया।३९। मान्धाता जो था वह भूपति नाम वाला कायस्थ हुआ था। मध्वाचार्य ने भागवत की थी। जो भाषामय शुभ थी।४०। मान कर नारी भाव में रहा करता था इसलिए वह नारी के देह को प्राप्त हुआ था। यह नारी मीरा इस नामसे विख्यात हुई थी जो कि एक राजा की शुभ पुत्री थी।४१। जिसने तनु में माँ अर्थात् शोभा थी और जिसकी गति गज के समान थी। वह विद्वानों के द्वारा मीरा कही गई थी जो कि मध्वाचार्य के मत में स्थित हुई थी।४२।

एवं ते कथित विप्र भाषाग्रन्थ प्रकारणम्।
प्रबन्ध मङ्गलकरं कलिकाले भयङ्करे ।।४३
स भूपोऽकवरा नाम कृत्वा राज्यमकन्टकम्।
शताद्धेन च शिष्येश्च वैकुण्ठभवनं ययौ।४४
सलोमा तनयस्तस्य कृतं राज्यं पितः समम्।
खुर्दकस्तनयास्तस्य दशाव्दं च कृतं पदम्।।४५
चत्वांरस्तनयास्तस्य नवरङ्गौ हि मध्यमः।
पितरं च तथा मातृञ्जित्वाराज्यचीकरत्।।४६
पूर्वजन्मनि दैत्योऽयमन्धका नाम विश्रुता।
कर्म भव्या तद्दशेन दैत्यराजाज्ञया ययौ।।४७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तनैव व धा भूतीभ्रंशिताक्च समन्ततः ।
दृष्ट् वा देवास्तदात्य कृष्णचैनन्यमब्रुवन् ॥४८
भगवन्दैत्यराजांशः स जातश्च महीपतिः ।
भूशयित्वा सुरान्वेदैत्यपक्ष विवर्द्धते ॥४९

हे विप्र ! यह भाषा ग्रन्थों का समस्त प्रकरण हमने तुम्हारे सामने वर्णन कर दिया है । यह भयङ्कर कलियुग के समय में मङ्गल करने वाला प्रवन्ध है।४३। वह भूप अकवर नामधारी जो था उसने निष्कंटक राज्य किया था और पचास वर्ष तक राज्य सुखका उपभोगकरके शिष्यों के सहित यह वैकुन्ठ भवन को गया ।४४। उसके पुत्र के नाम सलोमा था । इसने भी अपने पिता के समान ही राज्य किया था । इसका पुत्र खुर्दक नाम वाला उत्पन्न हुआ था । इसने केवल दस वर्ष ही राज्य का शासन किया था । इसके चार पुत्र थे इस नवरंगने अपने पिताको और (औरंगजेव) मध्यम पुत्र थे । इस नवरंग ने अपने पिता को और भाइयों को पराजित करके स्वयं राज्य किया था ।४५-४६। पूर्व जन्म में यह अन्धक नाम वाला दैत्य था । यह कर्मभूमि मनुष्य जन्म में दैत्यराज की आज्ञा से ही आया था ।४७। इसने सब ओर वहुत सी देव मूर्त्तियों का खन्डन किया था । तब देवों ने इस अत्याचार को देखकर वे कृष्ण चैतन्य के पास जाकर बोले ।४८। हें भगवान् । यह दैत्यराज का अङ्ग महीपति उत्पन्न हो गया है । यह देव का भ्रंश कराकर दैत्यों के पक्ष को बढ़ा रहा ४९।

इति श्रुत्वा श यज्ञांशा नदीहोपवने स्थितः ।
शशाप तं दुराचार यथा वशक्षया भवेत् ॥५०
राज्यनफोनयंचाशत्कृतं तेन तेन दुरात्माना ।
मेवाजयो नाम नृपा देवपक्षविवर्द्धनः ॥५१
महाराष्ट्रद्विजास्यश्च युद्धविद्याविशायपूः ।
हत्वा त च दुराचरं तत्पुत्राय च तत्पदम् ॥५२
दत्वा ययौ दाक्षिणात्ये देशे देवविवर्द्धनः ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलोमानामतनयः पचाब्दं तत्पदं कृतम् ॥५३
तत्पश्चान्मरणं प्राप्तो विद्रधेन रुजा मुने ।
विक्रमस्य गते राज्यं सत्तयुत्तारकं शतम् ॥५४
ज्ञ य सप्तदशं विप्रदालोमा मृनि ग: ।
तालनस्य कुले जातो म्लेच्छः फलरुषावली ॥५५
मुकलस्य कुलं हत्वा स्वयं राज्यं चकार ह ।
दशाब्दं च कृतं राज्यं तेन भूपेन भूतल ।५६

नदीहोप वन में स्थित उस यज्ञांश ने यह सुनकर दुराचारी का शाप दे दिया था कि तेरे वंश का क्षय हो जायगा ।५०। उस दुरात्मा ने उनचास वर्ष तक राज्य किया था सेवाजय नाम वाला था जोकि देवों के पक्ष की बृद्धि करने वाला था ।५१। उनका एक महाराष्ट्रद्विज था जो युद्ध की विद्या का बड़ा कुशल पंडित था। उसने उस दुराचाचारीका हनन किया था और उसके युद्ध के लिए उसका पद दे दिया था ।५२।वह उसे राज्य देकर दक्षिणात्य देश की बृद्धि करने वाला चला गया था। उसके पुत्र का नाम आलोम था उसने पाँच वर्ष पर्यन्त उसके पद का उपभोग किया था ।५३।इसके पश्चात् हे मुने ! विद्रध रोग से मृत्यु को प्राप्प हो गया था। राजा विक्रम के एक सौ सत्तर वर्ष राज्य के हो जाने पर हे विप्र ! सवह जानने चाहिए जिस समय में आलोमा मृत्यु को प्राप्त हुआ था। तालन के कुल में बलवान फलरूप म्लेच्छ उत्पन्न हुआ था ।५४-५५। इसने मुगल के कुल का हनन करके स्वयं राज्य शासन किया था इसने दश वर्ष तक भूतल में राज्य किया था ।५६।

शत्रुभिमरण प्राप्तो दैत्यलोकमुपागत् ।
महामस्तत्तनयो बिंशत्यब्दं कृत पदम् ।५७
तद्राष्ट्रे तादरो नाम दैत्यो देश उपागमत् ।
हत्वार्याश्च सुराञ्जित्वा देशं खुरजमाययौ ॥५८
महामत्स्यो हि मदस्य तनयस्तत्पितुः परम् ।
गृहीत्वा पंचवर्षान्ते स च राज्यं चकार ह ॥५६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराष्ट्रै हतो दुष्टस्तालनान्वसंभवः ।
देहलीनगर राज्यं दशाब्दं माधवेन वै ।६०
कृत मन्त्र तदा म्लेच्छ आलोमा राज्यमाप्तवान् ।
तद्राष्ट्रे बहवो जातः राजानो निजदेशजाः ।।६१
ग्रामपा वहवा भूपा देशेदेशे बभुविरे ।
मण्डलीक पदं तत्रक्षयं जातं महीतले ।।६२
त्रिशब्दमतो जात ग्रामेग्रामे नृपेनृपे ।
तदा तु सकला देवाः कृष्णचैतन्यमाययुः ।।६३

यह फिर शत्रुओं के द्वारा मरण को प्राप्त होकर दैत्यों के लोक में चला गया था महामद उसका पुत्र था जिसने बीस वर्ष तक पद का उपभोग किया था ।५७। उसके राष्ट्र में एक नादर नाम वाला (नादिर शाह) दैत्य देश में आया था । उसने सुरों को जीतकर तथा आर्यों का हनन करके बड़ा ही अत्याचार किया था और वह खुरज देश में आ गया था महामत्स्य नाम वाला मद का पुत्र हुआ था । उसने अपने के पद को ग्रहण करके पाँच वर्ष के अन्त तक राज्य किया था ।५९। यह दुष्ट तालन के वंश में होंने वाला महाराष्ट्रों (मरहठा) के द्वारा मारा गया । फिर देहली नगर में माधव ने दस वर्ष तक राज्य प्राप्त कर लिया था उसके राष्ट्र में निज देश में उत्पन्न होने वाले बहुत राजा हुए थे ।६०-६१ ग्रामों के पालन करने वाले स्वामी भूप-देश-देश हुए थे । इस महीतल में रहकर अक्षय मण्डलीक पद हो गया था ।६२। ग्राम-ग्राम में और नृप-नृप में तीस वर्ष व्यतीत हो गये थे । उस समय देवगण महाप्रभु कृष्ण चैतन्य के पास आए थे ।६३।

यज्ञांशश्च हरिः साक्षाज्ज्ञात्वा दुःख महीतले ।
मुहूर्तं ध्यानमागभ्य देवान्वचनमब्रवीत् ।।६४
पुरी तु रघिवो धीमान्जित्वा रावण राक्षसम् ।
कयीणुज्जीवयास सुधावर्षेस्समतताः ।।६५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विकटो बृजिलो जालो बरलो हि सिंहलः ।
जवस्तुमात्रश्च तथा नाम्ना ते क्षुद्रबावराः ॥६६
रामचन्द्रं वच प्र दुर्दहिनो वाँछित प्रभो ।
रामो दशरथिः श्रीमाञ्ज्ञात्वा तेषां मनोरथम् ॥६७
देवाङ्गनोद्भवाः कन्या रावणाल्लोकरावणात् ।
दत्वा तेभ्यो हरिस्साक्षाद्वचनं प्राह हर्षितः ॥६८
भगन्नाम्ना च ये द्वीपा जालन्धरबिनिर्मिताः ।
तेषु राज्ञो भविष्यति भवन्तो हितकारिणा ।६९
नन्दिन्या गौश्चरुण्डाद्वै जाता म्लेच्छा भयानका ।
गुरुण्डा तातयास्तेषां तास्तु तेषु सदा स्थिताः ॥७०

यज्ञांश साक्षात् हरि ने महीतल में जो दुःख था उसको जानकर एक मुहूर्त तक ध्यान करके फिर वे देवों ≈ यह वचन बोले ।६४। पहिले श्रीमान राघब ने राक्षस रावण को जीतकर सब अ.र जो मृत बानर पड़े हुए थे उनको सुधा की वृष्टि के द्वारा उज्जीवित कर दिया था ।६५ उन बन्दनों के नाम-विकट-वृजिल-जाल-वरनील सिंघल-जब सुमात्र ये नाम थे और ये क्षुद्र वानर थे ।६६। उन्होंने भगवान रामचन्द्र से यह वचन कहे थे—हे भगवन् ! हे प्रभो ! आप हमको हमारा वाँछित वरदान प्रदान करें दशरथ के पुत्र राम ने उनके मनोरथ को जान लिया था ।६७। लोकों के रावण अर्थात् भयानक रावण ने एक देवांगना में जन्म ग्रहण करने वाली कन्या थी । भगवान् श्रीराम ने उनको उसे देकर फिर परम हर्षित होते हुए साक्षात् हरिने यह बचन कहा ।६८। आपके नामों से जो जालन्धर के द्वार निर्मित द्वीप में आप सब हितकारी राजा होंगे ।६९। नन्दिन गौ के रुण्ड से भयानक म्लेच्छ उत्पन्न हुए थे उनकी गुरुण्ड जाति थी । वे उन द्वीपों में सदा से स्थित है ।७०।

जित्वा तांश्च गुरुण्डान्वै कुरुध्व राज्यमुत्तमम् ।
इति श्रुत्वा हरि नत्वा दीपेषु प्रययुर्मुदा ॥७१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विकटान्वसंभूता गुरुन्डा बानराननाः ।
वाणिज्यार्थमिहापाता गौरण्डा बौद्धमार्गिण; ।।७२
ईशपुत्रमते संस्थास्तेषाँ हृदयमुत्तामम् ।
सत्यव्रत कामजितक्रोध सूर्यतत्परम् । ७३
सूर्यं तत्रोष्य कार्यं च नृणां कुरुत मा चिरम् ।
इति श्रुत्वा तु देवा कुर्यु राचिकमादरात् ।।७४
नगर्य्यां कलिकातायां स्थापयामासुद्यताः ।
विकटे पश्चिमे द्वीपे तत्पत्नी विकटावती ।।७५
अष्टकौशलमार्गेण राजमन्त्रं चकार ह ।
तत्पतिस्तु तुलोमाचिः कालिकातां पुरी स्थितः ।।७६
विक्रमस्य गते राष्ट्ये शतमष्टादश कलौ युगे ।
चत्वारिंश तथाब्दं च तदा राजा वभूव ह ।।७७

आप लोग उन गुरुण्डों पर विजय प्राप्त करके वहाँ उत्तम राज्य करो । यह श्रीराम का कहा हुआ वचन श्रवण करके वे सब हरि को नमस्कार करके वहाँ बड़ी प्रसन्नता से चले गये थें ।७१। विकट के वश में उत्पन्न गरुण्ड वानर के समान मुख वाले थे । वे वाणिज्य करने के लिए यहाँ आये थे और वे गोरुण्ड बौद्धधर्म के मानने वाले थे ।७२। फिर ये ईशा के मत में संस्थित हो गये थे अर्थात् ईसाई हो गये थे । उनका हृदय अत्यन्त उत्तम है । सत्य व्रत वाला-काम को जीतने वाला-क्रोध से रहित और सूर्य में तत्पर हैं ।७३। आपको वहाँ निवास करके मनुष्यों का कार्य करना चाहिए । अब विलम्ब मत करो । यह सुनकर वे देव आदर से आचिकम् करने लगे ।७४। कलिकाता नगरी में उद्यत होते हुए स्थापना की थी । विकट पश्चिम द्वीप में उसकी पत्नी विकटावती थी । ।७५। उसने अष्ट कौशल मार्ग में राजतन्त्र को किया था । उसका पति तुलोमाचि कलिकाता पुरी में स्थित था ।७६। कलियुग में विक्रम के राज्यके अष्टादश शत और चालीस वर्ष हुए थे तब यह राजा हुआ ।७७।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तदन्वये सप्तनृपा गुरुण्डाश्च बभुविरे ।
चतुष्पष्ठिमितं वर्षं राज्यं कृत्वा लयां गतं ।७८
गरुन्डे चाष्टमे भूपे प्राप्ते न्यायेन शासति ।
कलिपक्षो बलिर्दैत्यो मुरं नाम महासुरम् ।७९
आरुह्य प्रेषयामास देवदेशे महोत्तमे ।
स मुरो बार्डिलं भूप वशीकृत्य हृदि स्थितः ।८०
आर्यधर्मविनाशय तस्य बुद्धि चकार ह ।
मूर्तिसंस्थास्तदा देवा गत्वा यज्ञांशयोगिनम् ।८१
नमस्कृत्याब्रुवन्सर्वे यथा प्राप्तो मुरोऽसुरः ।
ज्ञात्वा शशाप कृष्णाँशो गुरुण्डान्बौद्धमार्गिणः ।८२
क्षयं यास्यति ते सर्वे मुरस्य वशंगता ।
इत्युक्ते वचने तस्मिन्गुरुण्डाः कालनोदिताः ।८३
स्वसन्यैश्च क्षयं जग्मुर्वर्षमात्रा त रे खलाः ।
सर्वे त्रिशत्सहस्रांश्च प्रययुर्यायुमन्दिरे ।८४

उस वंश में सात गुरुण्ड नृप हुए थे। चौसठ वर्ष परिणाम तक राज्य करके वे सब लय को प्राप्त हो गये थे।७८। गुरुण्ड के आठवें राजा के होने पर जो कि न्याय के साथ शासन कर रहा था कलि के पक्ष वाले बलि दैत्य ने मुर नाम वाले महान् असुर को आरूढ़ करके महान् उत्तम इस देवों के देश भेजा था।७६। वह मुर बार्डिल भूप को अपने वश में करके उसके हृदय में स्थित हो गया।८०। आर्यों के धर्म को विशेष रूप से नष्ट करने के लिए उसकी वैसी ही बुद्धि उसने कर दी। उस समय में मूर्तियों में संस्थान रखने वाले देवगण यज्ञांश योगी के पास पहुँचे थे।८१। उन सब ने यज्ञांश को नमस्कार किया और जिस तरह मुर असुर वहाँ प्राप्त हुआ था वह कह सुनाया था। कृष्णाँश ने यह सब वृत्तांत जानकर बौद्ध मार्ग के अनुयायी गुरुण्डों को शाप दे दिया था।८२। जो भी मुर असुर के वंश में प्राप्त हो गये हैं वे सब क्षय को प्राप्त हो जायेंगे। उसके इस वचन के कहने पर काल के द्वारा प्रेरित सब गुरुण्ड अपनी सेनाओं के साथ एक ही वर्ष के अन्दर क्षय को प्राप्त

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गये थे। वे सब तीस सहस्र यमराज के मन्दिर में चले गये थे ।८३-८४।

वाग्दण्डैश्च भूपालो वार्डिलो नाशमाप्तवान् ।
गुरुण्डो नवमः प्राप्तो भेकलो नाम वीर्यवान् ।८५
न्यायेन कृतवान्राज्यं द्वादशाब्दं प्रयत्नतः ।
आर्यदेशे च तद्राज्य बभूव न्यायशासति ।८६
लार्डलो नाम विख्यातो गुरुण्डो दशमोहितः ।
द्वात्रिंशाब्दं च तद्राज्यं कृत तेनैव धार्मिणा ।८७
लार्डले स्वर्गते प्राप्तं करदकुलोद्भवाः ।
आर्याः प्राप्तस्तदा मोना हिमतुंगनिवासिनः ।८८
बभ्रुवर्णाः सूक्ष्मनसो वर्तुला दीर्घमस्तकाः ।
एवं लक्षश्च संप्राप्ता देहल्यां बोद्धमार्गिणः ८९
आर्जिको नाग वै राजा तेषां तत्र बभूव ह ।
तस्य पुत्रो देवकर्णो गंगोत्रगिरि मूर्द्धनि ।९०
द्वादशाब्द तपो घोरं तेपे राज्यविवृद्धय ।
तदा भगवती गङ्गा तपसा तस्य धीमतः ।९१

वह वार्डिल राजा वागदण्डों के द्वारा ही नाश को प्राप्त हो गया था। इसके पश्चात् नवम गुरुण्ड जिसका नाम भेकल था और बड़ा ही वीर्यवान् था प्राप्त हुआ था ।८५। इसने न्याय के साथ बारह वर्ष तक प्रयत्न पूर्वक राज्य का शासन किया था। आर्य देश में वह न्याय का शासन वाला राजा हुआ था ।८६। दशम गुरुण्ड परम हितकारी लार्डल नाम वाला विख्यात हुआ था। उस धर्मात्मा ने भी बत्तीस वर्ष पर्यन्त यहाँ राज्य का शासन किया था ।८७। लार्डल के स्वर्ग में प्राप्त हो जाने पर मकरन्द के कुल में जन्म ग्रहण करने वाले उस समय यहाँ प्राप्त हुये थे जो मौन हिमतुङ्ग के निवास करने वाले थे ।८८। ये बभ्रु वर्ण वाले, छोटी नाक वाले, वर्त्तुल आकार वाले और बड़े मस्तक वाले थे। इस प्रकार से ये लाखों बौद्ध मार्ग में अनुयायी देहली में प्राप्त हो गये ।८९।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहाँ पर उनका आर्जिक नाम वाला राजा हुआ था । उसका पुत्र देव-कर्ण नामधारी था जो गङ्गोत्री गिरि के शिखर पर था इस लिये बारह वर्ष तक उसने घोर तपस्या की थी । तब उस बुद्धिमान की तपस्या से सन्तुष्ट भगवती गङ्गा हुई थी ।९१।

स्वरूपं स्वेच्छया प्राप्य ब्रह्मलोकं जगाम ह ।
कुवेरश्च यदागत्य दत्वा तस्मै महत्पदम् ।९२
आर्याणां मण्डलीकं च तत्रैवान्तरधीयत ।
मण्डलीको देवकर्णो वभूव जनपालकः ।९३
षष्टयष्ठं च कृत राज्यं तेनराज्ञा महीतले ।
तदन्वयऽष्टं भूपाश्च वभुवुर्देवपूजकाः ।९४
दिशाताब्दं पद कृत्वा स्वर्ग लोकमुपाययुः ।
एकादशश्च यो मौनः पन्नग रिति श्रुतः ।९५
चत्वारिंशच्चवर्षाणि राज्यं कृत्वा प्रयत्नतः ।
स्वर्ग लोकं गतो राजा पन्नगैर्मरणं गतः ।९६
लवं च मौनजातोयः कृत राज्यं महोतले ।९७

तब वह अपनी इच्छा से स्वरूप प्राप्त करके ब्रह्मलोक को चला गया था । और उस समय वहाँ कुवेर ने जाकर उसे महत्पद प्रदान किया था ।९२। आर्यों का मण्ड़लीक बहाँ पर अन्तर्धान हो गया था । तब मण्डलीक देवकर्म जनों का पालन हुआ था ।९३। उस राजा ने सात वर्ष तक इस महीतल पर राज्य किया था । उसके वंश में आठ राजा बहुत ही देवों की पूजार्चा करने वाले हुए थे ।९४। वे सब दो शताब्दी तक अपना पद प्राप्त करते हुए फिर स्वर्ग लोकको चले गये थे । एका-दश जो मौन था वह पन्नगरि नाम से प्रसिद्ध था ।९५। उसने यहाँ चालीस वर्ष तक राज्य के सुख का उपभोग किया था और प्रयत्न के साथ राज्य शासन करके फिर वह पन्नगों के साथ मर कर स्वर्गलोक को चला गया था ।९६। इस प्रकार से मौनजाति वालों ने इस महीतल पर राज्य किया था ।९७।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किलिकला के शासकों का वर्णन

वक्रमे राज्यविगते चतुष्षष्टयुत्तर मुने ।
द्वाविंशदब्दशतकं भूतनन्दिस्तदा: ।१
कुबेरयक्षकान्मौनान्धनधान्यसमन्वितान् ।
सार्द्धलक्षान्कलैघोरैर्जित्वा तान्ययद्धकारिण ।२
किल्कियायां स्वयं राज्यं नागवंशश्चकार ह ।
आग्नेय्यां दिशि विख्याता पुण्डरीकेश निर्मिता ।३
पुरी किलकिला नाम तत्र राजा वभूव ह ।
पुण्डरीकादयो नागास्तस्मिन्राज्यं प्रशासति ।४
गेहेगेहे जनैस्सर्वो पूजनीया वभूविरे ।
स्वाहा स्वधा वषट्कारो देवपूजा महीतले ।५
त्यक्त्वा देवानुपागम्य संस्थिता मेरुमूर्द्धनि ।
शक्राज्ञया कुवेरस्तु शूकधान्यं समन्ततः ।६
यक्षैः षडशानादाय देवेभ्यः प्रददौ प्रभूः ।
मणिस्वर्णादिवस्तूनि मौनराज्येषु यानि वै ।७

इस अध्याय में वैक्रमीय द्वाविंशत शताब्दी में किलकिला में नन्दि शिशु नन्द्युत्पात्तित हृदयोत्पत्ति वर्णन किया जाता है। श्रीसूतजी ने कहा हे मुने ! विक्रव राज्य के बाईस सौ चौंसठ वर्ष हो जाने पर उस समय भूतनन्दि नृप हुआ था ।१। कुबेर-यक्ष-मौनो को जो धन धान्य से समन्वित थे, संख्या में डेढ़ लाखों घोर कलोंके द्वारा जीतकर उन्हें अयुद्ध कारी कर दिया था और उस राजा ने नागवंशों के साथ किलकिला में स्वयं राज्य किया था। आग्नेयी दिशा में पुण्डरीक के द्वारा निर्मित किलकिला पुरी के नाम से यह विख्यात थी, वहाँ पर यह राजा हुआ था। उसके राज्य का शासन करने पर पुण्डरीक आदि नाग घर-घर में और जन-जन में सबके द्वारा पूजा करने के योग्य हो गये थे। महीतल में स्वहा स्वधा और वषट्कार देवपूजा होती थी ।२-५। उसका त्याग करके मेरु के शिखर पर स्थित देवों के पास जाकर इन्द्र की आज्ञा से कुवेर ने सब ओर से शक धान्य को यक्षों के द्वारा षडंश लेकर दोनों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को दे दिया था और मणि स्वर्ण आदि वस्तुएँ जो भी मौन राज्य में थी उनका षडंश भी दिया था ।६-७।

दत्तानि तानि कोशेषु पुनर्देवश्चकार ह ।
मण्डलीकं पदं तेन संस्कृत भूतनन्दिना ।८
शतर्द्धं तु ततो राजा शिशु नन्दिवभत्र ह ।
नागपूजा पुरस्कृत्य तिरस्कृत्य सुरान्भुवि ।९
चकार राज्यं विंशाब्द यशीनन्दिस्ततोऽनुजः ।
भ्रात्रासनं स्वयं प्राप्तो नागपूजापरायणः ।१०
पंचविंशतिवर्षाणि स च राज्यमचीकरत् ।
ततस्तत्तनयो राजा स वभूव प्रवीरकः । ११
एकादशाब्दं तद्राज्यं कर्मभूम्यां प्रकीर्तितम् ।
कदाचित्स च वाह्लीके सेनया सादर्धमागतः ।१२
तत्र तरभवद्युद्ध पैशाचैर्म्लेच्छदारुणैः ।
मन्समात्रान्तरे म्लेच्छा लक्षसंख्या मृतिं गताः ।१३
तथा षष्टिमहस्राश्च नागभक्ता लयं गताः ।
वादजो नाम तद्राजा रोमजस्थो महाबलः ।१४

उन सभी को कोशों में फिर देव ने कर दिया था । उस भूतनन्दी ने मन्डलीक पद को सत्कृत किया था ।८। इसने आधी शताब्दी तक राज्य का शासन किया था । इसके पश्चात् शिशुनन्दि वहाँ का राजा हुआ था । इसने नागपूजा को ही प्रधानता दी थी और-और देवों का भूमि में तिरस्कार कर दिया था ।९। फिर इसके छोटे भाई यशोनन्दि ने बीस वर्ष तक राज्य शासन को किया था । नाग-पूजा में परायण इसने अपने भाई का आसन स्वयं प्राप्त कर लिया था । इसने भी पच्चीस वर्ष तक राज्य सुख का उपभोग किया था । इसके पश्चात् उसका पुत्र प्रवीरक नाम वाला वहाँ का राजा हुआ था ।१०-११। ग्यारह वर्ष तक भूमि ने उसका शासन काल बताया गया है । किसी समय वह वाह्य-लोक देश में सेना के साथ आया था ।१२। वहाँ पर दारुण पैशाच म्लेच्छों के साथ उसका युद्ध हुआ था । एक मास के अन्तर में ही एक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाख संख्या वाले म्लेच्छ मृत्युगत हो गये थे ।१३। तथा साठ हजार नाग भक्त भी लय को प्राप्त हुए थे । उनका राजा बादल वाला रोमजस्थ महान् बलवान् था ।१४।

यशोनन्दिनमाहूय ददौ जालवतीं सुताम्
गृहीत्वा म्लेच्छराजस्य सुता गृहमुपागतः ।१५
गर्भो जातस्ततस्यां बभूव तनयो बली ।
ब्राह्मलीको नाम विख्यातो नागपूजनतत्परः ।१६
तदन्वते नृपा जाता वाह्ललीकाश्च त्रयोदश ।
चतुश्शतानि वर्षाणि कृत्वा राज्यं मृति गता ।१७
अयोमुखे च वाह्लीके राज्यमन्त्र प्रशंसति ।
तदा पिपृगणास्सर्वे कृष्णचैतन्यमाययुः ।१८
नत्वोचवचनं तत्र भगवञ्छृणु मे वचः ।
वयं पितृगणा भूपननागवं निराकृताः ।१९
श्राद्धतर्पणकर्माणि तैर्वय वर्द्धितास्सदा ।
पितृवृद्धात्सोमवृद्धिस्ततो देवाश्च बर्द्धनाः ।२०
देववृद्धाल्लोकवृद्धिस्तस्माद्ब्रह्मा प्रजापतिः ।
ब्रह्मवृद्धात्परं हर्षं गेहेगेहे जनेजने ।२१
अतोऽस्मान्नक्ष भगवन्प्रजाः प्राहि सनातनी ।
इति श्रुत्वा वचस्तेषां यज्ञाशो भगवान्हरिः ।२२

उसके बादल ने यशोनन्दी को बुलाकर जालवती पुत्री का दान उसे करके दे दिया था । यह उस म्लेच्छ राज की पुत्री का दान अपने घर में आ गया था ।१५। उसमें फिर गर्भ उत्पन्न हुआ और बली पुत्र की उत्पत्ति उसमें हुई थी । यह भी बाह्लीक नामसे विख्यात हुआ था और यह नाग पूजन में परायण रहा करता था ।१६। उस वंश में तेरह बाह्लीक राजा हुए थे । इन्होंने चार सौ वर्ष तक राज्य शासन किया था और फिर वे सब मृत्युगत हो गये थे ।१७। अयोमुख नामक बाह्लीक के यहाँ पर राज्य का शासन करने के समय समस्त पितृगण कृष्ण चैतन्य के पास आये थे ।१८। उन्होंने कृष्ण चैतन्य को प्रणाम करके यह बचन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहे -हे भगवन् ! हमारे वचनों का श्रवण कीजिए। हम समस्त पितृगण नागवंश में होने वाले भूपों के द्वारा निराकृत कर दिये गये हैं ।१९। श्राद्ध-तर्पण कर्मों के द्वारा हम सदा वर्धित होते हैं। पितृगण की वृद्धि से सोम की वृद्धि होती है और फिर उससे देवगण वर्धित हुआ करते हैं ।२०। देवों की वृद्धि से ही लोकों की वृद्धि है और उससे प्रजापति ब्रह्मा वृद्धिशील होते हैं। ब्रह्मा की वृद्धि से घर-घर और जन-जन में परमहर्ष हुआ करता है ।२१। हे भगवन् ! इसलिए हमारी रक्षा करो और सनातनी प्रजा का पालन करो। उनके इन वचनों का श्रवण करके भगवान् यज्ञांश हरि ने कहा—।२२।

पुष्यमित्रं धर्मपरमार्यवंशाविवर्द्धनम् ।
जातमत्रः स वै बालः षोडशाब्दवयोभवत् ।
अयोनिर्योमतांस्तानयोमुख पुरस्सरान् ।२४
जित्वा देशान्निराकृत्य स्वयं राज्य गृहीतवान् ।
यथा शिवाशतो जातो विक्रमो नाम भूपतिः ।२५
शकांगन्धर्वपक्षोयञ्जित्वा युज्यो बभूव ह ।
नागपक्षांस्तथा भूपान्गोलकास्यान्भयकरान् ।२६
पुष्यमित्रस्तदा जित्तां सर्वपूज्योऽवद्भुवि ।
सप्तविंशच्छतं वर्षं द्विसप्तत्युत्तरं तथा २७
राज्यं विक्रमतो जात समाप्तिमगमत्तदा ।
पुष्यमित्रे राम्यपदं प्राप्ते समभवत्तदा २८
शतवर्षं राज्यपद तेन धर्मात्मना वृतम् ।
अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची ह्यवन्तिका ।२९
पुरी द्वारावती तेन राज्ञा च पुनरुधृताः ।
कुरुसूकरपद्मानि क्षेत्राणि विविधानि च ।३०

कर्म परायण आर्य वंश का विवर्धन करने वाला पुष्य मित्र हुआ ।२३। यह बालक उत्पन्न होने के साथ ही आठ वर्ष की अवस्था वाला हो गया था। वह अयोनि था और उसने योनि भूत अयोमुख पुरस्सरों को जीतकर उन्हें देश से निकाल कर स्वयं राज्य को ग्रहण कर लिया

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। शिवांश से विक्रम नाम वाला राजा समुत्पन्न हुआ था ।२४-२५। यह गन्धर्व पक्ष वाले शकों पर विजय प्राप्त करके स्वयं पूज्य होगया था उसी प्रकार से नाग पक्ष वाले राजाओं को तथा भयङ्कर गोलकस्यों को उस समय जीतकर पुष्यमित्र भूतल में सर्व पूज्य हो गया था। सप्तविंशत् शत और बहत्तर वर्ष पर्यन्त विक्रम से राज्य हुआ था। इसके पश्चात् वह समाप्ति को प्राप्त होगया था। पुष्पमित्र के राज्य पद प्राप्त होने पर उस समय में हुआ था ।२६-२७। उस धर्मात्मा ने सौ वर्ष तक राज्य पद का उपभोग किया । अयोध्या—मथुरा—माया काशी—काञ्ची-अवन्तिका और द्वारावती पुरियों का इसी राजा के द्वारा पुनः उद्धार हुआ था। इसके अतिरिक्त कुरु-सूकर पद्मों के क्षेत्रों का जोकि अनेक हैं पुनरुद्धार किया ।२६-३०।

नैमिषत्पलवृन्दानां वनक्षेत्राणि भूतले ।
नानातीर्थानि तेनैव स्यापितानि समन्ततः ।३१
तदा कलिः स गन्धर्वों देवता पितृदूषकः ।
ब्राह्मणं वपुरास्थाय पुष्पमित्रमुपागमत् ।३२
नत्वोवाच प्रियं वाक्यं शृणु भूप दयापरः ।
आर्यदेशे पितृगणाः पूर्जाहाः श्रद्धतपणेः ।३३
अज्ञानमिति तज्ज्ञेयं भुवि यत्पितपूजनम् ।
मृता ये तु नरा भूमौ पूर्वकर्मकुशानुगाः ।३४
भवन्ति देहवन्तहस्तं चतुराशीतिलक्षधा ।
छद्मना मयदेवेन पितृपूजा विनिर्मिता ।३५
वृथा श्रमं वृथा कर्म नृणां च पितृपूजनम् ।
इति श्रुत्वा वचो घोरं विपस्याह महीपति ।३६
भवान्मूर्खो महामूढो न जानीषे परं फलम् ।
भुवर्लोके न ये दृष्टाः शून्यभूताश्च भास्वराः ।३७
ये तु त वै पितृगणाः पिण्डरूपविमानगाः ।
जत्तुत्रश्च विधानेन पिण्डदानं च यत्कृतम् ।३८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तद्विमानं नभोजात सर्वानन्दप्रदायकम् ।
अब्दमात्रं स्थितिस्तेषां पिण्डपायसरूपिणाम् ।३६
गीताष्टादशकाध्यायैः सप्तशत्याश्चरित्रकः ।
पावित यत्तु वै पिण्ड त्रिशताब्द च तुत्स्थिति ।४०

इस भूतल में नैमिषोत्पल वृन्दा के वन क्षेत्रों को तथा अनेक तीर्थों को सब ओर उसने ही स्थापित किया था।३१। उस समय में वह गन्धर्व देव और पितृगण को दूषित करने वाला कलि ब्राह्मण का शरीर धारण करके पुष्यमित्र के पास आया था।३२। उसको नमस्कार करके वह प्रिय वचन बोला-हे दया परायण भूप ! सुनिये, आर्यदेशमें पितृगण श्राद्धओर तर्पणों के द्वारा पूजा के योग्य हैं ।३३। भूमण्डल में जो यह पितृगण का पूजन है वह अज्ञान है ऐसा जानना चाहिए । भूमि में पूर्व कर्मों के वंश के अनुगामी जो मनुष्य मृत हो गये वे चौरासी लाख योनियों के भेद से देहधारी हो जाते हैं । मयदेव के द्वारा छय से यह पितृगण की पूजा का निर्माण किया है ।३४-३५। मनुष्यों के द्वारा यह पितृगण का पूजन करना वृथा श्रम और कर्म हैं । इस तरह से इस घोर वचन को सुनकर वह राजा हँसकर बोला ।३६। आप महामूढ़ हैं और अत्यन्त मूर्ख हैं । इनके परम फल को आप नहीं जानते है । भुवलोकमें जो शून्यभुत और भास्वर नहीं देखे गये हे, जो पितृगण हैं, वे पिन्ड रूप विमानों से गमन करने वाले हैं जो कि सत्पुत्रों के द्वारा पूर्ण विधि-विधान से पिण्ड दान किया गया है ।३७-३८। वह विमान नभ में गया हुआ सब प्रकार के आनन्द को प्रदान करने वाला है। पिण्ड पायस रूपी उनकी एक वर्ष पर्यन्त वहाँ स्थिति होती है ।३९। गीता के अठारह अध्यायों के द्वारा तथा दुर्गा सप्तशती के चारित्र से पावित किया हुआ जो पिण्ड होता है उसकी अवधिह तीन सौ वर्ष तक हुआ करती है ।४०।

पुण्यमित्रगते राज्ये दशोत्तरशतत्रयम् ।
तस्मिन्काले लयं जग्मुश्चांध्रदेशनिवासिनः ।४१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शताद्धाब्दं ततो भूमिविना राज्ञा बभूव ह ।
तदा क्षुदा नर लुब्धा लुण्डिताश्चोरदारुणैः ।४२
दरिद्रमगमन्घोरं विना स्वर्णं च भूरभूत ।
पुनर्देवश्च भगवान्प्रार्थितस्त्वानुवाच ह ।४३
देशे कौशलके जातः सूर्य्या शाच्च महीपतिः ।
राक्षसारिति ख्यातो देवमार्गपरायणः ।४४
ममाज्ञया स वै राजा भविष्यति महीतले ।
इत्युक्त्वान्तदधे विष्णुर्देवलोकानुपांगतम् ।४५
राक्षसारिमयोध्ययां स्थापयामासुरेव तम् ।
आंध्रराष्ट्रे च यद्द्र राक्षसैश्च समाहृतम् ।४६
तद्द्रव्यं राक्षासाञ्जित्वा ग्रामग्रामे चकार सः ।
तारधातीः पञ्चमूल्यं सुवर्णं भुवि तत्कृतम् ।४७

पुष्यमित्र के राज्य के चले जाने पर तीन दश बर्ष तक उस समय में आन्ध्र देश के निवासी लोग लय को प्राप्त हो गये थे ।४१। उस समय यह भूमि पचास वर्ष तक बिना ही राजा के रही थी । उस समय में क्षुद्र नर दारुण चोरों के द्वारा सताये और लूटे गये थे ।४२। सब लोग बहुत ही अधिक दरिद्रता को प्राप्त हो गये थे और यह भूतल बिना ही सुवर्ण के हो गया था । फिर देवों के द्वारा भगवान्की प्रार्थना की गई थी तव भगघन् से उससे कहा था ।४३। कौशल देश में सूर्य वंश से एक राजा उत्पन्न हुआ हैं वह राक्षसारि—इस नाम से प्रसिद्ध है और देबों के मार्ग का परायण हैं ।४४। मेरी आज्ञा से वह राजा महीतल में होगा । इतना कहकर भगवान् विष्णु अन्तर्धान हो गये थे और देव लोकों को चल गये थे ।४५। उस राक्षसारि को अयोध्या में ही स्थापित कर दिया था और अन्ध्र राष्ट्र में जो द्रव्य था उसको राक्षसों ने संमाहृत कर दिया था ।४६। उसने उस द्रव्य को राक्षसों से जीतकर ग्राम-ग्राम में कर दिया था । उसने भूतल में ताप द्रव्य से अर्थात् चाँदी स पञ्चगुना मूल्य सुवर्ण का कर दिया था ।४७।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रथधातोः णतं मूल्यं पालनं तेन वै कृतम् ।
ताम्रधातोः पञ्चामूल्यमारधातोश्च तत्कृतम् ।४८
नागधातोः पञ्चमूल्यं भुवि तेनैव निर्मितम् ।
ताम्रं पवित्रमधिकं नागो वंगस्तथोत्तमः ।४६
लौहधातोः शतं मूल्यं वगोऽसो तेन संस्कृतः ।
शताद्धाब्दं मही भुक्त्वा सूर्यलोकमुपाययौ ।५०
तदन्वये षष्टिनृपा जाता वेदपरायणाः ।
पुष्यमित्रगते राज्ये चाब्दे शप्तशत गते ।५१
कौशलान्वयमभना भूपाः स्वर्गमुपाययुः ।
शताद्धाब्दं ततो भूमिर्मण्लीक नृपं विना ।५२
क्षुद्रभू पांश्च वुभुजे देशेदेशे च भार्गवः ।
ततो बैनरदेशीया नाम्ना भूपो विशारदः ।५३
आर्यदेशमुपागम्य लक्षसैन्यसमन्वितः ।
क्षुद्रभू पान्वशीकृत्य मण्डलीको वभूव ह ।५४
नानाकलैश्च कर्माणि विचित्राणि महीतले ।
ग्रामेग्रामेनराश्चक वर्णसंकराः ५५
ब्रह्मक्षत्रमयोवर्णो नाममात्रेण दृश्यते ।
वैश्यमाया नरा आर्याः शूद्रप्रायाश्च कारिणः ।५६
तद्राष्ट्र मनुजाश्चासन्नाममात्रं सुरार्चकाः ।
षष्ट्रिवर्षवर्ष पदं तेन कर्मभूम्यां च सत्कृतम् ।५७

ताम्रधातु से पञ्च मूल्य और धातु से सौ गुना मूल्य राजस धातु तत्कृत था ।४८। नाग धातु से पञ्चगुना मूल्य भूतल में उसके ही द्वारा निर्मित्त किया गया था । ताम्र अधिक पवित्र है, नाग और बङ्ग भी उसी प्रकार से उत्तम है ।४६। यह बङ्ग लौह धातु से शतगुना मूल्य वाला उसी ने किया था । यह पचास वर्ष तक इस भूमि के सुख का उपभोग करके फिर सूर्य लोक को चला गया था ।५०। उसके वंश में साठ राजा वेदों में परम परायण हुए थे । पुष्यमित्र के राज्य को सात सौ वर्ष व्यतीत हो चुके थे ।५१। इस प्रकार से कौशल वंश में होने वाले

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समस्त भूप स्वर्ग को प्राप्त हो गये वे। फिर पचास वर्ष तक यह भूमि मण्डलीक नृप के बिना रही थी।५२। हे भार्गव ! छोटे-छोटे राजा लोग देश-देश में इस भूमि का उपभोग कर रहे थे। इसके अनन्तर वैंदर देश में समुत्पन्न तथा वैंदर देशीय नाम वाला एक विशारद भूप इस आर्य देश में आया था जो कि एक लाख सेना से समन्वित था। उसने क्षुद्र राजाओं को जीतकर अपने वश में कर लिया था और वहाँ पर मण्डलीक राजा हो गया था। फिर वर्णसंकर कारक नरों ने नाना प्रकार की कलों के द्वारा इस महीतल में कर्मों को, जो कि परम विचित्र थे, ग्राम-ग्राम में किया था।५५। ब्राह्मण-क्षत्रिय मय वर्ण यहाँ उस समय में केवल नाम मात्र के लिये ही दिखलाई देता था। प्राय: नर वैश्य जैसे हो गये थे और शूद्र प्राय: कार्य करने वाले बन गये थे।५६। उसके राष्ट्र में मनुष्य नाम मात्र के देवों की अर्चना करने वाले थे। इस प्रकार से साठ वर्ष तक उस राजा ने इस भूमि तल में जो कि कर्मों के करने की भूमि है आपने राजा के पद के सुखों का उपभोग किया था अर्थात् राज्यशासन चलाया था।५७।

==

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर पर्व

।। मंगलाचरण ।।

कल्याणि ददातु वो गणपतिर्यस्मिन्नतुष्टे सति
क्षोदीयस्यपि कर्मणि प्रभवितुं ब्रह्मापि जिह्मायते ।
भेजे यच्चरणारविन्दमसकृत्सौभाग्यभाग्योदयैस्ते
नैषा जवति प्रसिद्ध मगगद्देवेन्द्रलक्ष्मीरपि ।१
शश्वत्पुण्यहिरण्यगर्भरसनासिंहासनाध्यासिनी ।
सेयं यागधिदेवता वितरतु श्रेयांसि भूयांसि वः ।
यत्पादामलकामलांगुलिनखज्योत्स्नाभिरुद्वेल्लितः ।
शब्दब्रह्मसुधांबुधिर्बुधमनस्युच्छृङ्खल खेलति ।२
नमस्तस्मै विश्वोदयविलयरक्षाद्रकृतये शिवाय
क्लैशौघच्छिदुरपद पद्मप्रणतये ।
अमन्दस्वच्छन्दप्रथितपृथुलीलाननुभृते
त्रिवेदीवाचामप्यपथनिजतत्वस्थितिकृते ।३
यस्य गण्डतले भाति विमला षट् पदावली ।
अक्षमालेव विमला स नः पायद्गणाविदः ।४
ॐ नमो वासुदेवाय सशार्ङ्गाय संकेतवे ।
सगदाय सचक्राय शशंखाय नमो नमः ।५
नम शिवाय सोमाय सगणाय ससूनवे ।
सवृषाय सशूलाय जकपालाय सेन्दवे ।६
शिवं ध्यात्वा हरिं स्तुत्वा प्रणम्व परमेष्ठिनम् ।
'चित्रभानुं च भानुं च गत्वा ग्रन्थमुदीरयेत् ।७

·मङ्गलाचरणम्—गणपति आपको समस्त कल्याणों को देवे । जिस गणेश के अतुष्ट होने पर छोटे से छोटे कर्म को ब्रह्मा भी करने को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं होते हैं ओर हिचकिचाते हैं। और जिससे चरणारविन्द का बार बार सेवन ब्रह्मा ने किया था, देवेन्द्र लक्ष्मी भी उसके द्वारा ही सौभाग्य भाग्योदयों से जगत् में प्रसिद्धि को प्राप्त हुई है।१। सर्वदा परम पवित्र हिरण्यागर्भ की रतना रूपी सिंहासन पर अभ्यास करने वाली वह वाग्देवी आपको बहुत अधिक क्षेत्रों का वितरण करें। जिसके चरणों की अमल और कोमल अंगुलियों के नखों की ज्योत्सना के उद्वेल्लित शब्द ब्रह्म रूपी सुधा के समुद्र बुधों के मन में उच्छृंखलता पूर्व खेला करता है २। विश्व के उदय-विलय और रक्षा की प्रकृति वाले उस शिव के लिये नमस्कार है जो क्लेशों के समूह के दिन करने वाले पाद पद्म की प्रणति वाले हैं। वे शिव आनन्द और स्वच्छन्द प्रथितसी बहुत लीलाओं के करने के लिये शरीर को धारण करने वाले हैं और त्रिदेवी वाचाओं के भी आपको तत्व से स्थिति के करने वाले हैं।३। जिसके गण्ड तल पर विमल भ्रमरों की पंक्ति शोभा दिया करती है और वह अक्षों की माला की भांति विमला है वह गणों के स्वामी हमारी रक्षा करें।४। भगवान वासुदेव के लिए जो शार्ङ्ग धनुप-केतु गदाचक्र और शंख से युक्त है बार-बार नमस्कार है। शिवके लिये जो सोम-गण-सुनु वृक्ष-शूल-कपाल और इन्दु के सहित है बार-बार हमारा नमस्कार है।६। सदा शिव का ध्यान करके हरि की स्मृति करके और परमेष्ठी को प्रणाम करके तथा चित्रभानु और भानु को नमस्कार करके ग्रन्थ को उदीरित करते हैं।७।

छत्राभिषिक्तं धर्मपुत्रं युधिष्ठिरम्।
द्रष्टुमभ्यागता हृष्टांव्यासाद्याः वरमर्षयः।८
मार्कण्डयः समाण्जज्यः शण्डिल्यः शाकटायनः।
गौतमो मालवो गार्ग्यः शातातपराशरो।९
जामदग्न्यो भरद्वाजा भृगु भागुरिरेव च।
उत्तंकः शंखलिखितौ शौनकः शाकटायनिः।१०
पुलस्त्यः पुलहो दाल्भ्यो बहदश्वः सलोमशः।
नारदः पर्वतो जह्न रपावसुपरावसू।११

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तावन्तषीनागतान्दृष्ट्वा वेददेदाङ्गपानगान् ।
भक्तिमान्मतृभिः सार्द्धं कृष्णधौम्यपुरः सरः ।१२
युधिष्ठिरः संप्रहृष्टः समुत्थायाभिवाद्य च ।
अर्घ्यमाचमनं पाद्यमासनानि स्वयं ददौ ।१३
उपविष्टेषु तेष्वेव तपस्विषु युधिष्ठिरः ।
विनयावनतो भूत्वा व्यास वचनमब्रवीत् ।१४

एक समय छत्रामिषक्त-धर्म के पूर्ण ज्ञाता-धर्म के पुत्र युधिष्ठिर का दर्शन करने के लिए परम हर्षित होकर व्यास आदि परमर्षिगण आये थे ।८। उन महर्षियों में मार्कण्डेय-माण्व्य-शान्डिल्य--शकटायन गौतम--गालव-गार्ग्य--शातातप--पराशर---जामदग्नव---भरद्वाज--भृगु--भागुरि---उत्तंक---शंख---लिखित-शौनक---शाक्टायनि-पुलस्त्य-पुलह-दाल्भ्य-वृहदश्व--जलोमश-नारद--पर्वत-जह्नु---अयावसु-परावसु ये सभी थे । इन ऋषियों का दर्शनकर जोकि ब्रह्मा आये हुए थे और वेदों तथा वेदाङ्गों के पारगामी महा मनीषी थे राजा युधिष्ठिर अपने भाइयों को साथ लेकर तथा कृष्ण धौम्य आगे करके परम प्रहृष्ट होत्ता हुआ समुत्थित हुए और उन सब का अभिवादन किय तथा स्वयं अर्घ्य-आचमन-पाद्य और सब के लिए आसन राजा ने दिये थे ।९-१३। वे समस्त तपस्वी गण जब वहाँ स्थान उपविष्ट हो गये तो विनय से विनम्र होकर युधिष्ठिर व्यासजी से यह बचन बोले—।१४।

भगवंस्त्प्रसादेन प्राप्त राज्यं महन्मया ।
विक्रम्य निहतः सख्येः सानुबन्धः सुयोधनः ।१५
सरोगस्य यथा भोगः प्राप्तोऽपि मखावहः ।
हत्वा ज्ञातींस्तया राज्यं न सुखं प्रतिभाति मे ।१६
यत्सुख पावनं पोतिर्वनमूलफलाशिनाम् ।
प्राप्य गा च हताराति न तदस्ति पितामह ।१७
यो नौ बन्धुर्गुरुर्गोप्ता सदा शर्म च वर्म च ।
स मया राज्यलोभेन भीष्म पापेन घातितः ।१८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अविवेकमहं दास्ये मनो मे पापङ्किलम् ।
क्षालयित्वा तव गिरा बहुदर्शितवारिणा ।१९
सम्भृतानि पुराणानि वेदास्साँगा मया विभो ।
ममाद्य धर्मसर्वस्वं प्रज्ञादीपेन दर्शय ।२०
एते सधर्मगोप्तारो मुनयः समुपागताः ।
पिवंतो नेत्रभ्रमरैर्भवतोमुखपकजम् ।२१
अर्थशास्त्राणि यावति धर्मशास्त्राणि यानि वै ।
श्रुतानि सर्वशास्त्राणि भीष्माद्भागीरथीसुतात् ।२२

हे भगवन् ! आपके ही प्रसाद से मैंने यह महान् राज्य प्राप्त किया है । विक्रम करके अपने अनुबन्ध के सहित सुयोधन युद्धमें निहत होगया हैं ।११। जो रोग से युक्त होता है उसको यदि भोग प्राप्त भी हो जाता है तो वह जिस तरह सुख प्रदान करने वाला नहीं होता है, उसीं भांति अपने समस्त ज्ञाति के जनों का हनन करके यह प्राप्त राज्य भी मुझेसुख देने वाला नहीं मालूम होता है ।१६। हे पितामह ! जो पावन सुख और प्रीति वन के मूल और फलों के खाने वालों की होती है वह इस विशाल भूमिको प्राप्त करके और शत्रुओंका हनन करके भी वैसी इस समय नहीं है ।१७। जो हम सबका बन्धु-गुरु और रक्षक था तथा सदा कल्याण समस्त एवं धर्म रूप था वह भीष्म मैंने राज्य के ही लोभ से महापापी ने मरवा दिया है ।१८। मैंने बहुत बड़ा अविवेक धारण कर लिया है और मेरा मन पाप के बीच से युक्त है । उसे आपकी वाणी से क्षालित करिये जिसने बहुत वारि का दर्शन किया है । हे विभो ! मैंने पुराणों का श्रवण किया है और साङ्गवेद भी सुने हैं । आज आप मुझे अपनी प्रज्ञा के दीप से धर्म के सर्वस्व को दिखा देवें ।१९-२०। ये सभी धर्म की रक्षा करने वाले मुनि मण्डल यहाँ आगये हैं जो आपके मुखरूपी पङ्कज का नेत्ररूपी भ्रमरों के द्वारा पान कर रहे हैं ।२१। जितने भी अर्थ शास्त्र हैं और जो भी बताने वाले शास्त्र हैं वे सभी शास्त्र भागीरथ के पुत्र भीष्म प्रपितामह के मुख से श्रवण किये हैं ।२२।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्गं गते शान्तनदे भवान्कृष्णोऽथ यादवः ।
सुहृत्वाद्बन्धुभावाच्च नान्यः शिक्षयिता मम ॥२३
सत्यं सत्यवतीसुनुर्द्धर्माजाय व्रक्ष्यति ।
विशेषधर्मानखिलान्मुनी नामं विशेषतः ।२४
यवाख्येयं तदाख्यातं मया भीष्मेण तेऽनघ ।
मार्कण्डेयेन धौम्येन लोमशेन महर्षिणा ।२५
धर्मज्ञो ह्यसि मेधावी गुणवान्द्राज्ञसत्तमः ।
न तेऽस्त्यविदितं किञ्चिद्धर्माधर्मविनिश्चये ।२६
न तेऽर्वस्थिते हृषीकेशे केशवे केशिसूदने ।
कस्यचित्कथने जिव्हा तत्र सपरिबर्तते ।२७
कर्तापालयिता हर्त्ता जगतां या जगन्मयः ।
प्रत्यक्षदर्शी हर्वस्य धर्मान्वक्ष्यत्यसौ तव ।२८
समादिश्येतिकर्तव्यं भगवान्वादरायणः ।
पूजितः पाण्डुतनयंसगाम स्वतवोवनम् ।२९
स्वाभाव्य भारतविधातरि संप्रयन्ते ते कौतु-
दाकुलधियो मुनयः प्रशान्ताः ।
किं पच्छति क्षपितभारतलोकशोकः ।
किं वक्ष्यतीह भगवान्यदुवंशीरः ॥३०

महाराज शान्तनु के पुत्र के स्वर्ग में चले जाने पर भगवन् यादव कृष्ण ही सुहृद होने के नाते सोने से और बन्धु भाव के होम से मेरे शिक्षा देने वाले हैं, अन्य कोई भी नहीं है ।२३। सत्यवती के पुत्र धर्म-राज के लिये सत्य कहेंगे जो कि समस्त विशेष धर्म हैं और विशेष करके मुनियों के हैं ।२४। श्री व्यासजी ने कहा—हे अनघ ! जो कुछ मुझे अब कहना चाहिये या कहना है वह सब तो भीष्म से तुमको कह ही दिया है मार्कण्डेय-धौम्य और महर्षि लोमश के द्वारा भी कहा गया है ।२५। आप तो धर्म के ज्ञाता है और मेधा से भी समन्वित हैं तथा गुणवान् एवं प्राज्ञों में श्रेष्ठतम है । धर्म 'और अधर्म का क्या स्वरूप होता है—इसके विशेष निश्चय करने के विषय में आपको कुछ भी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अविदित नहीं है ।२६। हृषीकेश भगवान् के पास में स्थित होने पर जो कि केशि दैत्य के सूदन और केशव है किसकी जिव्हा कुछ भी कहने के लिए वहाँ सपरिवर्त्तित होती है ? ।२६। जो जगत्‌की रचना करने वाला पालन करने वाला और संहरण करने वाला एवं जगन्मय है। यह तो सबका प्रत्यक्षदर्शी है यही आपको धर्मों को बतायेंगे ।२८। भगवान् बादरायण इत्पिवर्त्तान्य का समावेश करके पाण्डु के पुत्रों द्वारा पूजित होते हुए अपनी तपस्या करने वाले, वन में चले गये थे ।२९। भारत की रचना करने वाले के अपना कथन करके चले जाने पर वे समस्त मुनिगण कोतुक से आकुल बुद्धि वाले प्रशान्त हो गये थे। वे सब यही कोतुक अपने हृदयों में रख रहे थे कि अब भारत महायुद्ध के शोक को क्षपित करने वाले धर्म राज युधिष्ठिर क्या पूछेंगे और यदुवंशके वीर भगवान् यहाँ पर क्या उत्तर के रूप में कहेंगे ।३०।

— —

ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति और वर्णन

कास्य प्रतिष्ठा निर्दिष्टा को हेतुः किं परायणम् ।
कस्मिन्नैतल्लयं जाति कस्मादुत्पद्यते जगत् ।१
कति द्वीपाः समुद्राश्च कियतो हि कुलाचलाः ।
कियत्प्रमाणवनेभुवनानि कियंति च ।२
पौराणश्चैव विषयो यष्पृष्टोऽहं त्वयानघ ।
श्रुतोऽनुभूतश्च मया संसारे सरतां चिरम् ।३
अजाय विश्वरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने ।
नमस्तस्मै भगवते वासुदेवाय वेधसे ४
अत्र ते वर्णयिष्यामि शृणु पार्थ पुरातनम् ।
याज्ञबक्येन मुनिना भविष्यं भास्वतापतिः ।
पृष्टो यदुत्तार प्रादादृषिभ्यस्तन्मया श्रुतम् ।५
धन्यं यशस्यमायुष्यं सर्वाशुभविनाशनम् ।
भविष्यौत्तरमेतत्तो कथयामि युधिष्ठिर ।६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकात्मक त्रिदैवत्य चतुष्पञ्चसुलक्षणम् ।
गुणकालादिभेदेन सदासत्सम्प्रदर्शितम् ।७

इस अध्याय में श्रीकृष्ण और युधिष्ठिरका सम्वाद और श्रीकृष्ण के द्वारा युधिष्ठिर के समस्त ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति के वृत्तांत कथन का वर्णन किया जाता है । राजा युधिष्ठि ने कहा—हे भगवाम् ! किसकी प्रतिष्ठा निर्दिष्ट की गई है ? इसका क्या हेतु है और क्या परायण है । यह जगत् किस में लय को प्राप्त होता है और किससे यह उत्पन्न होता है ? ।१। इस विश्व में कितने द्वीप हे—कितने समुद्र हैं और कितने कुलाचल हैं ? इस भूमि का कितना प्रमाण है और कुल भवन कितने होते हैं ।२। श्रीकृष्ण ने कहा—हेअनघ ! तुमने यह पुराणों का विषय मुझ से पूछा है । यह मैंने इस संसार में सरण करते हुए सुना हैं और इसका अनुमव भी चिरकार तक किया है ।३। उस अजन्मा विश्वरूप-निर्गुण स्वरूप और गुणात्मा बधा भगवन् वासुदेवके लिए नमस्कार है । अब वहाँ पर हे पार्थ ! तुमको पुर तन का वर्णन करूँगा । आप इसको श्रवण करिये ।४। याज्ञवल्क्य मुनिने भास्वतांपति से भविष्य पूछा था । उस समय में उनसे ऋषियों के लिए उत्तर दिया था वह मैंने श्रवण किया था ।५। हे युधिष्ठिर ! यह भविष्य परम धन्य—यज्ञ का देने वाला आयु की वृद्धि करने वाला और सम्पूर्ण अशुभों के नाश करनेवाला है अब मैं इसे ही तुमसे कहता हूं ।६। तीनों देवताओं की एकात्मता चार-पाँच सुलक्षण और गुण तथा काल आदि के भेदसे सत् और असत भली-भाँति प्रदर्शित किये हैं ।७।

एक एव जगद्योनि प्रतियोनिषु संस्थितः ।
एकधा बहुधा चैव दृश्यते चलचन्द्रवत् ।८
ब्रह्मा विष्णुर्वृषांकश्च त्रयो देवाः सतां मताः ।
नामभेदैः क्रियाभेदैर्भिद्यते स्वयम् ।९
प्रक्रिया चानुषांगश्च उपोद्धातस्तथैव च ।
उपसंहार इष्येतचतुष्पादं प्रकीर्तितम् ।१०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समता प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वतराणि च ।
वंशानुचरितं चैक पुराणं पञ्चलक्षणम् ।११
एष वक्तव्यविषयः सुमहान्प्रतिभाति मा ।
तथाप्युद्देशतो वच्मि सर्गं प्रति तवानघ ।१२
महदादिविशेषान्त सवैरूप्य संलक्षणम् ।
पञ्चप्रमाण षट्कक्षं पुरुषाधिष्ठतं जगत् ।१३
अव्यक्ताज्जायते बुद्धिमहानिति च सा स्मृता ।
अहंकारास्तु महतस्त्रि गुणः स च पठ्यते ।१४

इस समस्त जगत का एक ही योनि अर्थात् उत्पत्ति स्थान हैं जोकि प्रतियोनियों में संस्थित हो रहा है । वही एक प्रकारसे और बहुतप्रकार से जल में चन्द्रमा की भाँति दिखलाई दिया करता हैं ।८। ब्रह्मा विष्ण और वृषांक ये तीन देवता सत्पुरुषों के माने हुए कहे जाते हैं । ये नामो के भेदों के द्वारा तथा कर्म करने के भेदों से भिन्न होते हैं स्वरूप से स्वयं ये भिन्न नहीं हैं ।९। प्रक्रिया–अनुशांग उपोद्घात और उपसंहार ये चार पाद कहे गये हैं ।१०। समत-प्रतिसर्ग-वं-मन्वन्तर और वंशानुचरित ये ही पांच पुराणों के लक्षण हुआ करने हैं ।११। यही कहने योग्य विषय बहुत बड़ा मुझे प्रतीत होता हैं । हे अनघ ! तुम्हारे प्रति तथापि उद्देश्य से सर्ग को बताता हूं ।१२। महद् आदि के विशेषान्त वाला, वैरूप्य के सहित, लक्षण से युक्त, पाँच प्रमाण वाला तथा षट्कक्ष पुरुष से अधिष्ठित यह जगत् है ।१३। अव्यक्त से बुद्धि उत्पन्न होती है वह महान् इस नाम से कही गई है । फिर अहङ्कार महान्से समुत्पन्न होता है और वह त्रिगुण वाला पढ़ा जाया करता है ।१४।

तन्मात्राणि च पञ्चाहुरहुङ्काराच्च सात्त्विकात् ।
जातानि तेभ्यो भूतानि भूतेभ्यः सचराचरम् ।१५
जलमूर्तिमये विष्णौ नष्टे स्थावरजडम् ।
भूतात्मकभूदण्डं महात्क्तदुङ्गकेशयम् ।१६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सृष्टयां शक्त्या च निर्भिन्न तदण्डमभवद्द्विधा ।
भुकपालमथैकं तद्तितीयभदन्नभः ।१७
उल्ब तस्याभवन्मेरुजरायुः पर्वताः स्मृताः ।
नद्यो धमन्यः सञ्जाताः क्लेदः सर्वत्रगं पयः ।१८
योजनानां सहस्राणि षोडशाधः प्रतिष्ठित् ।
उत्सेधे चतुराशीतिर्द्वात्रिंशद्ध्र्वं विस्तृतः ।
भूमिपङ्कजविस्तीर्णा कर्णिका मरुच्यते ।१९
आदित्यश्चादिदेवत्वा त्त्राभूत्रिगुणात्मकः ।
आतः प्रजापतिरसौ मध्याह्ने विष्णुरिष्यते ।
रुद्रोऽस्पराह्नसमये स एवकस्त्रिधाभतः ।२०

तन्मात्रा पाँच कही गई हैं जो सात्विक अहङ्कार से उत्पन्न हुई है। उस पाँच तन्मात्राओं से पाँच भूत होते हैं। और फिर इन पाँच महाभूतों से चराचर जगत् की समुत्पत्ति हुआ करती है जो वह सब दिखाई दे रहा हैं ।१५। जल की मूर्ति वाले भगवान् विष्णु में समग्र स्थावर और जङ्गम जगत् के विनष्ट हो जाने पर भूतात्मक महत्त अणु उसी उद्रक में शयन करने वाला हो गया था ।१६। सृष्टि शक्ति से निमित्त वह दो भागों में हो गया था। उसका एक भाग भू कपाल था और दूसरा भाग नभ था ।१७। उसका उल्व मेरु जरायु हो गया जो पर्वत कहे हैं। नदियाँ जो थीं वे धमनियाँ हो गई थीं और सर्वत्र गमनशील पय क्लेद हो गया था ।१८। सोलह सहस्र योजन नीचे का भाग था। ऊँचाई चौरासी सहस्र और ऊर्ध्व विस्तार तीस सहस्र था। भूमि पङ्कज की विस्तीर्ण कर्णिका मेरु कहा जाता है ।१९। आदित्य आदि देव होने के कारण वहाँ पर त्रिगुणात्मक था। यह प्रातःकाल में प्रजापति मध्याह्न में विष्णु और दोपहर के बाद रुद्र रूप वह एक ही तीन स्वरूपात्मक हुआ ।२०।

स्वायम्भुवो मनुः पूर्वं ततः स्वारोचिष्योऽभवत् ।
उत्तमस्तामसश्चैव रैवतश्चाक्षुषेति षट् ।२१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैवस्वतोऽयमधुना वर्तते मनुरुत्तमः ।
यस्य पुत्रैः प्रपोत्रैश्च विभक्तेयं वसुन्धरा ।२२
आदित्या वसवो रुद्रा एकादश तथाश्विनौ ।
उषस्त्रयः समाख्याता देव वैवस्वतेऽन्तरे ।२३
विप्रचित्तिहिरण्याख्यौ दैत्यदानवसत्तमौ ।
तयार्वंशे तु वहवो दैत्यदानवसत्तमाः ।२४
पञ्चाशद्गुणितकोटियोजनाया महत्तया ।
सप्तद्वीपसमुदायाः प्रमाणभुवनेः स्मृतम् ।२५
पिण्डेन च सहस्राणि सप्ततिर्जलमध्यतः ।
गौरिवैषा सुमहती भ्राजते न च लीयते ।२६
लोका लोकः परतरः पर्वतोऽग्रमहोच्छ्रयः ।
द्वैतमर्थं स नियमो योऽसौ रविरुचामपि ।२७
नैमित्तिकः प्राकृतिकस्तथैवात्यन्यिवो लयः ।
नित्यश्चतुर्थो विज्ञेयः कालौ नित्योपहारकः ।२८

सबसे पूर्व स्वायम्भुव मनु हुए उसके पश्चात् स्वारोचिष हुए थे । फिर क्रम से उत्तम - तामस-रैवत और चाक्षुष ये छै मनु हुए हैं । जो यह इस समय वर्तमान है वह वैवस्वत् मनु है जोकि सबसे उत्तम कहा जाता है । जिसके पुत्र और पौत्रों से यह वसुन्धरा विभक्त है ।२१-२२। आदित्य-वसुगण एकादश रुद्र-अश्विनी कुमार और तीन उषा वैवस्वत मन्वन्तर ये देव कहे गये हैं ।२३। विप्रचित्त और हिरण्यक्षि श्रेष्ठ दैत्य दानव थे । उन दोनों के वंश में बहुत से दैत्यदानव हुए थे ।२४। पचास गुणित करोड़ योजना की महत्ता से सात द्वीप और सात समुद्र वाली भूमिका प्रणमाण कहा गया है ।२५। और पिण्ड से सत्तर हजार जल के मध्य यह गौ की भाँति विराजमान हुआ करती है और लीन नहीं होती ।२६। अग्रभाग में महान् उच्छ्रय वाला लोका लोक पर्वत परतर है । द्वैत अर्थ में वह नियत है जो यह रवि की किरणों में भी है

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

।२७। लय नैमित्तिक-प्राकृतिक और आत्यन्तिके और चौथा नित्य जानना चाहिये। काल नित्य का अपहारक है ।२८।

उत्पद्यते स्वयं यस्मात्तत्तस्मिन्नेव लीयते।
रक्षति च परे पुंसि भूतानामेष निश्चयः ।।२९
यथर्तावृतुलिङ्गानि नानारूपाणि पर्यये।
दृश्यते तानि तान्येव तथा भावा युगादिषु ।।३०
प्रतिलीनेषु भूतेषु विबुद्धः सकलं जगत्।
वेदशब्देभ्य एवादौ निर्ममे स महेश्वरः ।।३१
हिंस्राहिंस्रे मृदुक्रूरे धर्माधर्मावृमानुते।
ते तं विना प्रपद्यतं पुनस्तैष्वेव कर्मसु ।।३२
भूर्दशगुणेन पयसा संवृता तच्च तेजसा।
तेजोऽनिलेन नभसा तद्गुणेनानिलो वृतः ।।३३
भूतादिरा तथाकांश भूतादिर्महतावृतः।
महान्परिवृतस्तेन पुरुषेण विनाशिना ।।३४
एवं विधानामन्डानां सहस्राणि शतानि च।
उपत्पन्नानि विनष्टानि भावितानि महात्मन ।।३५
बैकुण्ठकोष्ठगतमेतदशेषतायां ख्यातं।
जगत्सरमरोरगसिद्धनम्
पश्यानि शुद्धमुमयो वह्निरंतरे च माया
चराचरपुरोरपरे वाकाचित् ।।३६

जिससे स्वयं उत्पन्न होता है उसमें ही बिलीन हो जाता है और पर पुरुष में रक्षा करता है भूतों का यह निश्चय है ।२९। जिस तरह ऋतु में ऋतु के लिङ्ग अर्थात् चिन्ह होते हैं और वे पर्यय में नाना रूप वाले हुआ करते हैं तथा वे ही समय-समय पर दिखाई दिया करते हैं ठीक उसी भाँति गुण आदि में भाव भी दिखाई दिया करते हैं ।३०। भूतों के प्रतीलीन हो जाने पर बिशुद्ध वह परमेश्वर ही आदि में इस समस्त जगत् को वेद के शब्दों से ही निर्माण करता है ।३१। हिंस्र

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अहिंस्र मृदु और क्रूर-कर्म और अधर्म-आवृत और अनृत ये सब फिर उन्हीं कर्मों में प्राप्त होते हैं ।३२। यह भूमि दशगुने जलसे संवृत है, वह जल तेज से और तेज वायु से और वह अनिल आकाश से संवृत है ।३३। तथा भूतादि आकाश और भूतादि महत्तत्व से आवृत्त होता है । वह महान् उम अविनाशी पुरुष के द्वारा परिवृत्त होता है ।३४। इस प्रकार के अण्ड सैकड़ों और सहस्रों होते हैं । महान् आत्मा वाले के द्वारा उत्पन्न हुए हैं --विनष्ट हुये हैं और आगे होंगे ।३५। यह वैकुण्ठ कोष्ठगत अशेषता में ख्यात है और यह जगत् सुर-नर-उरग और सिद्धों ने नद्ध है । जो युद्ध मुनिगण हैं वे वही और अन्तर में देखते हैं । यह चराचर गुरु कोई अपरा ही माया है ।३६।

सांसारिक जीवन के दोष

देवत्वं मानुषत्वं च तिर्यक्त्व केन कर्मणा ।
प्राप्नोती पुरुषः केन गर्भवासं सुदारुणम् ॥१
गर्भस्थश्च किमश्नाति कथमुत्पद्यते पुनः ।
दत्तोत्थानादिकान्दोषान्कथ तरति दुस्तरान् ॥२
वालभावे कथ पुष्टिः स्याद्यु वाकेन कर्मणा ।
कुलीनः केन भवति सुरूपः सुधन कथम् ॥३
कथ दारानवाप्नोति गृहं सर्वगुणैर्युतम् ।
पण्डितः पुत्रवांस्त्यागी स्यादामयविवर्जितः ।।४
कथं सुखेन म्रियते कथं भुक्ते शुभशुभम् ।
सर्वमेवामलमते गहनं प्रतिभति मे ॥५

इस अध्याय में संसार दोषों के आख्यायन का वर्णन किया जाता है । युधिष्ठिर ने कहा—यह पुरुष देवत्व— मानुष्य और तिर्यक्त्व किस कर्म से प्राप्त किया करता है और किस कर्म के द्वारा सुदारुणगर्भ में आवास पाया करता है ? ।१। जिस समय यह प्राणी गर्भ में स्थित होकर रहा करता है वहाँ यह क्या खाता है और फिर यह कैसे उत्पन्न होता है ? दत्त और उत्थानक आदि दोषों को जो कि बहुत ही दुस्तर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कैसे पार किया करता है ? ।२। बाल-भाव में उसकी पुष्टि कैसे होती है और यह किस काम के द्वारा युवा होता ? यह कुलीन-सुन्दर रूप वाला सुधन से युक्त कैसे हुआ करता है ? ।३। यह स्त्रियों की प्राप्ति कैसे किया करता है और समस्त गुण-गण से समन्वित घर इसे किस प्रकार प्राप्त होता है ? पण्डित, पुत्रों वाला, त्यागी और रोगों से रहित किस तरह होता है ? ।४। किस तरह यह जीवात्मा सुख से मरता है और शुभ तथा अशुभ के भोगों को कैसे भोगता है ? इस अमल में सभी कुछ मुझे बहुत गहन प्रतीत होता है ।५।

शुभै दैवत्वमाप्नोति मिश्रै र्मानुषतां व्रजेत् ।
अशुभैः कर्मभिज्जन्तुस्तिर्यग्योनिषु जायते ।।६
प्रमाणं श्रुतिरेवात्र धर्माधर्मविनिश्चते ।
पापं पापेन भवति पुण्य पुण्येन कर्मणां ।।७
ऋतुकाले तदा भुक्तः निर्दोष येन संस्थितम् ।
तदा तद्वायना स्पृष्टं स्त्रीरक्तेनैकतां व्रजेत् ।।८
विसर्गकाले शुक्रस्य जीवः करणसंयतः ।
भृत्य प्रविशते योनिं कर्मभिः स्वैर्न्नियोजितः ।।९
तच्छुक्ररमेत्तकास्थमेकाहलत्कलल भवेद् ।
पञ्चरात्रेण कलल बृद्बुदा कारतां व्रजेत् ।।१०
बुद्बुदं सप्यरात्रेण माँसपेशो भवेत्तमः ।
द्विसप्ताहाद्भवेत्पेशी रक्तमाँसदृढांचितः ।।११
बीजस्नेवांकुराः पेश्याः पञ्चविश तिरात्रतः ।
भवति मासमात्रण पञ्चधा जायते पुनः ।।१२

श्री कृष्ण ने कहा—शुभ कर्मों से यह प्राणी देवत्व की प्राप्ति किया करता है और जो कर्म शुभ तथा अशुभ से मिश्रित होते हैं उनमें मानुषत्व को प्राप्त किया करता है । जब बिल्कुल अशुभ हीं कर्म होते हैं तो यह तिर्यक् योनियों में उत्पन्न होता हैं ।६। धर्म और अधर्म विशेष निश्चय करने में श्रुति ही यहाँ पर प्रमाण होता है । पाप (बुरे) कर्म से पाप होता है और शुभ कर्म से पुण्य हुआ करता है ।७। ऋतुकाल में उस

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय जो मुक्त है वह निर्दोष है जिसके द्वारा संस्थित उसकी वायु से स्पष्ट होकर स्त्री के रक्त से एकता को प्राप्त हो जाता है ।८। शुक्र में (वीर्य के) विसर्ग के समय में करणों (इन्द्रियों) से संयुत जीव भृत्य अपने कर्मों से नियोजित होकर योनि में प्रवेश करता है ।९। वह शुक्र और रक्त एकस्थ होकर एक दिन में कलल हो जाता है । वह कलल पाँच रात्रि में बुदबुदाकार को प्राप्त हो जाता है ।१०। वह बुद्बुद सात रात्रि में माँस पेशी के रूप में होता है । फिर दो सप्ताह में रक्त माँस से दृढ़चित्त पेशी होती है ।११। पच्चीस रात्रि में बीज के अंकुरों की भाँति पेशी के गात्र मात्र समय में पाँच खण्ड हो जाते हैं ।१२।

ग्रीवा शिरश्च स्कन्दश्च पृष्ठभंशस्तथोदरम् ।
मांसद्वयेन तु सर्वाणि क्रमशः संभवति च ।।१३
त्रिभिर्मासैः प्रजायते सद्रव्यांकुरसंघयः ।
मासैश्चर्भिरगुल्यः प्रजायते यथाक्रमम् ।।१४
मुखं नासा च कर्णौ च जायन्ते पञ्च मार्जकैः ।
दुतपंक्तिस्तदा गृह्य जायते च नखाः पुनः ।।१५
कर्णौ च रंध्रसहितौ षण्मासाभ्यतरेण तु ।
पायुर्मेणुमुपस्थश्चप्युपजायते ।।१६
सधयोये च गात्रेषु मासैजायति सप्तभिः ।
अङ्गप्रत्यंगसम्पूर्णः शिरः केशसमन्वितः ।।१७
विभक्तादेयवः पुष्टः पुनर्मासाष्टकेन च ।
पंचात्मकसमायुक्तः परिपक्वः स तिष्ठति ।।१८
मातुहारवीर्येण षड्विधेन स तिष्ठति ।
रसेन प्रत्यहं वालो वर्धते भरतर्षभ् ।।१९
तत्तोऽहं प्रवक्ष्यामि यथाश्रु तमरिदम ।
नाभिसूत्रनिवन्धेन वर्द्धते स दिनेदिने ।।२०
ततः स्मृति लभेज्जीवः सम्पूर्णेऽस्विञ्छरीरके ।
सुख दुःख विजानाति निंद्रास्वप्नं पुरा कृतम् ।।२१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर दो मास में ग्रींवा-शिर-स्कन्ध-पृष्ठ वंश और उदर सब क्रम से उत्पन्न हो जाते हैं।१३। फिर तीन मास में द्रव्यांकुल संधियों के सहित उत्पन्न हो जाते हैं। चार मासों में यथाक्रम अंगुलियाँ उत्पन्न हो जाती हैं।१४। जो इस शरीर में संधियाँ होती हैं वे सात मासों में बन जाती हैं। पाँच मास में मुख–नासिका–दो कान, दाँतों की पंक्त गुह्य और नख उत्पन्न हो जाते हैं।१५। छिद्र के सहित कान छह मास के अन्दर पैदा होते हैं। पायु (गुदा) मेढ़ (मूत्रेन्द्रिय) नाभि भी उत्पन्न हो जाया करती हैं और अङ्ग तथा प्रत्यङ्ग से सम्पूर्ण तथा केशों से समन्वित विभत्त अवयवों वाला पूर्ण पुष्ट आठ मास में उदरस्थ शिशु हो जाया करता है और फिर वह पञ्चात्मक समायुक्त होकर गर्भ में स्थित रहा करता है, जो कि पूर्णतया परिपक्व होता है।१६-१६। छः प्रकार के माता के आहार के वीर्य से वह वहाँ स्थित रहता है। हे भरतर्षभ! प्रतिदिन रस के द्वारा बालक वृद्धि को प्राप्त होता है।१८। हे अरिन्दम्! यह सब मैं तुमको यथाश्रुत बतला दूँगा। नाभि के सूत्र (नाल) के निबन्धसे वह दिनों दिन बढ़ा करता है।२०। इसके पश्चात् वह जीवात्मा स्मृति को प्राप्ति किया करता है क्योंकि उसका यह शरीर सांग सम्पूर्ण हो जाता है। उस समय वह सुख और दुःख को भी जानने लगता है और पुराकृत निद्रा स्वप्न का भी ज्ञान हो जाता है।२१।

मृतश्चाहं पुनर्जातो जातश्चाहं पुनर्मृतः।
नानायोनि सहस्राणि मया दृष्टानि तानि वै ॥२२
अधुना जातमात्रोऽहं प्राप्तसंस्कार एव च।
एतच्छ्रेयः का रक्तामि येन गर्भेन संश्रयः ॥२३
गर्भस्थ श्चिन्तयै देवमहं गर्भाद्विनिः सृतः।
अध्येष्ये चतुरो वेदान्संसार विनिवर्तकान् ॥२४
एवं स गर्मदुःखेनः महता परिपीडितः।
जीवः कर्मवशा दास्ते मोक्षोपायं विचिंतयन् ॥२५
यथा गिरिवराक्रांतः कश्चिद्दुःखेन तिष्ठित।
तथा जरायुजा देही दुःखे तष्ठित चेष्टितः ॥२६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पतितः सागरे यद्वद्दुःखैरास्ते स्माकुलः ।
गर्भोदकेन सिक्तांगस्तथास्ते व्याकुलः पुमान ।।२७
लोहकुम्भे यथा न्यस्तः पच्यते कश्चिदग्निना ।
तथा स पच्यते जन्तुगर्भस्थः पीड़ितोदरः ।।२८

उसे उस दशा में यह ज्ञान भी हो सकता है कि मैं मर गया था और मैंने जन्म धारण किया था और उत्पन्न होकर भी फिर मेरी मृत्यु हो गई थी। मैंने इस तरह अनेक प्रकार की सहस्रों योनियाँ देखी हैं ।२२। इस बार मैं उत्पन्न होते ही संस्कार प्राप्त करके ही ऐसा कल्याण के मार्ग कार्य करूँगा कि जिससे फिर मुझे गर्भवास का कष्ट न भोगना पड़े ।२३। इस तरह जीवात्मा गर्भ में स्थित होता हुआ देव का चिन्तन करता है कि मैं इस घोर गर्भ से निकल कर संसार से विशेष निवृत्ति कराने वाले चारों वेदों का अध्ययन करूँगा ।२४। इस तरह से महान् गर्भ के दुःख से दुःख परिपीड़ित जीव कर्म वश से मोक्ष-प्राप्ति के उपायों को सोचता हुआ रहा करता है ।२५। जैसे कोई गिरिवर से आक्रान्त हुआ बड़े दुःख से स्थित रहा करता है, उसी तरह यह देही जरायु से वेष्टित होता हुआ दुःख में स्थिति रखता है ।२६। सागर में पतित जिन दुःखों से समाकुल अर्थात् पूरा वेचैन होता है उसी तरह से गर्भोदक से सिक्त अङ्गों वाला पुरुष अत्यन्त व्याकुल रहा करता है ।२७। जैसे कोई लोहे के घड़े में रखा हुआ अग्नि के द्वारा पकाया जाता हो ठीक उसी भाँति गर्भ में स्थित जन्तु पीडितोदर होकर वहाँ पकाया जाया करता है ।२८।

सूचीभिरग्निवर्णाभिविभिन्नस्य निरन्तरम् ।
यद्दुःखमुपजायेत तद्गर्भेष्टगुणं भवेत् ।।२९
गर्भवासात्परो वासः कष्टो नैवास्ति कुत्रचित् ।
देहिनां दुःखवद्राजन्सुघोर ह्यतिसंकटः ।।३०
इत्येतद्गर्भदुःखं हि प्राणिनां परिकीर्तितम् ।
चरस्थिराणांसर्वेषात्मामगर्भानुरुतः ।।३१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गर्भात्कोटिगुणं दुःख योनियंत्रप्रपीडनात् ।
समूच्छितस्त जायेत् जायमानस्य देहिनः ॥३२
शरवत्पीड्यमानस्य यत्रेणैव समंततः ।
शिरसि ताड्यंमास्य पापमुद्गरकेण च ॥३३
गर्भान्निष्क्रमयमाणस्य प्रबलैः सूतिमारुतैः ।
जायते सुमाहद्दुःख हरित्राणमतिन्द्रः ॥३४
यन्त्रैण पीड़िता यद्वन्निः सवाः स्युस्तिलक्षवः ।
तथा शरीर निःसार योनिपत्रप्रपीडितम् ॥३५

अग्नि वर्ष वाला सुइयों से निरन्तर विभिन्न होने वाले अर्थात् छिद्र हुए को जो दुःख होता है उससे आठ गुना दुःख गर्भ में रहने की हालत में जीव को हुआ करता है ।२६। गर्भ के आवाज से पर कष्ट देने वाला दूसरा कोई भी कहीं आवास नहीं है। राजन् ! यह गर्भ का निवास देहधारियों को अत्यधिक दुःख देने दाला–सुधार और अत्यन्त सङ्कट से युक्त होता है ।३०। इस तरह से यह गर्भ का दुःख तो अत्यन्त संङ्कट से युक्त होता है ।३१। इस तरह से यह गर्भ का दुःख जो प्राणियों को हुआ करता है वह मैंने कह दिया है। यह चर और स्थिर सभी को आता है गर्भ के निवास में जो दुःख होता है उससे करोड़ गुना दुःख तब होता है जब वह उत्पन्न होता है और उस समय योनि के यन्त्र से बाहिर निकलने में प्रपीड़त होता है। स्वर्णकार की तन्त्री से तार की सिचाई की भांति उसके शरीर को बड़ी पीड़ा होती है और जायमान देहीमूर्च्छित होकर गिर पड़ता है उस समय शर की भांति वह पीड़ित उस यन्त्र से निकलने में हुआ करता है। ऐसी पीड़ा होती है मानो उसके शिर में पाप रूपी मुद्गर से ताड़न किया गया हो ।३१-३३। जब वह जीव गर्भ से निकलने वाला होता है तो उस समय में प्रसव की वायु से जो कि अत्यन्त प्रबल होती है उसको महान दुःख होता है और अपने परिणाम के लिये बुद्धि किया करता है ।३४। यन्त्र के द्वारा जैसे तिल और ईख निस्सार होकर निकला करते हैं उसी तरह से जीवात्मा का यह शरीर भी एक प्रकार से सार रहित-सा योनि-यन्त्र से प्रपीडित होकर हो जाता है ।३५।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहो मोहस्य माहात्म्यं येन व्यामोहितः जगत् ।
जिघ्रन्नयश्यन्स्वकं दोष कायस्य न विरज्जते ॥३६
एवमेतच्छरीरं हि निसर्गादशुचि ध्रुवम् ।
त्वङ्मात्रसारं निःसारं कदलीसारस निभम् ॥३७
गर्भस्य स्मृतर्यासीत्सा जातस्य प्रणश्यति ।
ममूर्च्छितस्य दुःखेन योनियंत्रप्रपीडनात् ॥३८
वाद्येन वायुनां चास्य मोहसज्ञेन देहिनः ।
स्पष्टमात्रै घोरेण ज्वरः जमुपशायते ॥३९
तेन ज्वरेणमसता महामोहः प्रजायये ।
समूढस्य स्मृतिभ्रशः शीघ्रं संजायते पुनः ॥४०
स्मृति भ्रंशात्तु तस्यह पूर्वकर्मवशेन च ।
रतिः सजायते तूर्णं जतोन्तस्तत्रैव जन्मनि ॥४१
रक्तो मूढस्य लोकोऽयमकार्ये प्रवर्तते ।
न चात्मानं विजानि न परं विन्दते च सः ॥४२

अहो ! बड़ा आश्चर्य है कि मोह का कैसा अद्भुत यह माहात्म्य है कि जिसने इस समस्त जगत् को अपने प्रभाव से व्यामोहित बना रक्खा है। अपने दोष को सूंघता हुआ और देखता हुआ भी जोकि इस शरीर का होता है फिर भी इससे विरक्त नहीं होता ।३६। इस प्रकार से यह शरीर स्वभाव से ही निश्चय ही अपवित्र है। त्वचा भाव ही इसका स्तर है और कदली सार के समान विस्तार होता है ।३६। गर्भ में स्थित रहते हुए जो इसकी स्मृति होती है वह जैसे ही उत्पन्न होता है सब विनष्ट हो जाती है क्योंकि योनियन्त्र के प्रकृष्ट पीड़न से जो दुःख का भार होता है उससे मूर्च्छा आने के कारण ही वह भूल जाया करता है ।३८। मोह नाम वाला बाहिर की वायु से जो कि अत्यन्त घोर है स्पर्श होते ही एक प्रकार का ज्वर उत्पन्न हो जाता है ।३९। उस महान् ज्वर से महामोह हो जाया करता है। जब महामोह से समूढ़ता होती है तो उस समूढ़ की स्मृति का शीघ्र ही भ्रंश हो जाता है ।४०। स्मृति जो कि दशा में जो जब भ्रष्ट हो जाता है तो उसको वहाँ पूर्वजन्म में किये

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए कर्मों से वशीभूत होकर फिर उस जन्तु को उस जन्म में ही शीघ्र रति उत्पन्न हो जाया करती है ।३१। वह लोक तो रागारक्त होता ही है फिर इस मूढ़ को यह अकार्यों में प्रवृति करा देते हैं । यह फिर अपने आपके स्वरूप को नहीं पहिचानता है और न यह पर को ही प्राप्त कर पाता है ।४२।

न श्रूयन परं ज्ञेयः सति चक्षुषि नेक्षते ।
समे पति शनै गच्छन्स्वलतीव पदेपदे ।।४३
सत्यां बुद्धौ न जानाति बोध्यमानौ पुनैरपि ।
संसारे क्लिश्यते तेन रागलोभवशानुगः ।।४४
गर्भस्मृतेरभावेन शास्त्रमुक्तं महर्षिभिः ।
तद्दुःखमथनार्थाय स्वर्गमोक्षप्रसाधकम् ।।४५
ये सत्यस्मिन्परे ज्ञाने सर्वकामार्थसाधके ।
न कुर्वत्यामनः श्रेयस्तदत्र महद्भुतम् ।।४६
अव्यक्तेन्द्रियवृत्तित्वाद्बाल्ये दुःखं महत्पुनः ।
च्छन्नपि न शक्नोति कर्तुं वक्तुं च सत्क्रियाम् ।।४७
दंतोत्थाने महद्दुःख मोलेन व्याधिना तथा ।
बालरोगश्च विवधै पीडा बालग्रहैरपि ।।४८
तृड्बुक्षापरोतांगः कश्चित्तिष्ठति रारटन् ।
विण्मूत्रभक्षणमपि मोहाद्बालः समाचरेत् ।।४९

वह ऐसा मूढ मोह में अन्धा तथा बाधिर होता है कि परम श्रेय की बात को सुनता ही नहीं है और नेत्रों के होते हुए भी वह कुछ भी नहीं देखा करता है । सम मार्ग में धीरे-धीरे जाता हुआ पैर-पैर पर गिरता रहता है ।४३। बुद्धि के होने पर भी बड़े-बड़े विद्वानों के द्वारा बोध्यमान होता हुआ भी नहीं समझ पाता हैं। इसी कारण से फिर वह इस संसार में राग और लोभ के वशीभूत होता हुआ क्लेश पाया करता है।। ४४। गर्भ में जो स्मृति रहती है उसका अभाव हो जाने के ही कारण से महर्षि महानुभावों ने शास्त्र का कथन किया है जो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस दुःख के मञ्जन करने के लिए है और स्वग तथा मोक्ष दोनों का प्रदान करने वाला भी होता है।४५। इस परज्ञान के होने पर भी जो समस्त काम और अर्थों का नामक होता है जो इस दुःखपूर्ण संसार में मोह के वशीभूत है और अपनी आत्मा के श्रेय का सम्पादन नहीं किया करते हैं यही एक यहाँ बड़ी अद्भुत बात हैं।४६। इन्द्रियाँ की वृत्ति अव्यक्त होने के कारण बचपन में महान् दुःख तो हैं किन्तु उसे भोगने पर भी हटाने की इच्छा रखता हुआ भी सत्क्रिया के कहने तथा उसे करने की सामर्थ्य नहीं रखता हैं।४७। दांतों के निकलने में बड़ा दुःख होता है शिर की व्याधि से कष्ट असह्य भोगता है। अनेक प्रकार के अन्य बहुत से बाल रोगों से जो कि बाल ग्रह होते हैं पीड़ा सहन करता है। भूख तथा प्यास से परीत अङ्ग वाला कोई रटन करता हुआ स्थित रहता है। मोह से बालक विष्ठा और मूत्र का भक्षण भी कर लेता है।४८-४९।

कौमारे कर्णवेधेन मात्रापित्रोश्च ताडनात् ।
अक्षराध्ययनात्पुंसं दुःख स्याद्गुरुशासनात् । ५०
प्रसन्नोन्द्रियवृत्तिश्च कामरायप्रपीडनात् ।
रोगोद्धतस्य सततं कुतः सौख्य च यौवन ।।५१
ईर्ष्यया च महद्दुःख माहाद्रक्तस्य जायते ।
नेत्रस्य कुपितस्यैव रागो दुःखायं केवलम् ।।५२
न रात्रौ विंदते निदां कोपाग्निपरिपीडितः ।
दिवा वापि कुतः सौख्यमर्थोपार्जचितया ।।५३
जराभिभूतः पुरुष पत्नीपुत्रादि बान्धवैः ।
याशक्तत्वात्दुराचारैर्भृत्यैश्च परिभूयते ।।५४
धर्ममर्थं च कामं च मोक्षं च न जरो यतः ।
शक्तः साधयितुं तस्माच्छरीरमिदापात्मनः ।।५५
बातपित्तकफादीनां वैषम्यं व्याधिरुच्यते ।
तस्मोद्व्याधिमयज्ञेयं शरीरमिदमात्मनः ।५६

जब कौमार अवस्था आ जाती है तो कर्ण वेध से तथा-माता-पिता के ताड़न से घोर शाता में अक्षरों के अध्ययन से एवं गुरु के शासन से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी पुरुषों को दु ख होता है ।५८। मनुष्य प्रसन्न इन्द्रियों की वृत्ति वाला है किन्तु काम राग के प्रपीड़न से सतत रोगी द्धत पुरुष की यौवन में भी सुख कहाँ है ? अर्थात् कोई सुख युवावस्था में नहीं होता है ।५१। मोह से युक्त को ईर्ष्या होने से महान् दुःख हुआ करता है। कुपित नेत्र का राग भी केवल दुःख के लिये ही होता है ।५२। कोप की अग्नि पीड़ित पुरुष रात्रि में भी निद्रा प्राप्त नहीं किया करता हैं और दिन में भी उसे धन के उपार्जन की बराबर चिन्ता रहने से सुख कहाँ है ? अर्थात् धनार्जन की सतत चिन्ता बनी रहने के कारण सुख नहीं होता है ।५३। अब मनुष्य वृद्धावस्था से घिर जाता है जो पत्नी-पुत्र आदि बान्धवों से तथा दुराचार वाले भृत्यों से आसक्त होने के कारण परिभव (तिरस्कार) को प्राप्त होता ।५४। बुड्ढा पुरुष धर्म अर्थ-काम और मोक्ष की साधना करने में असक्त हो जाता है। इसमें वह शरीर ऐसा है जिससे आत्मं-कल्याण नहीं हो पाता है ।५५। वात-कफ और पित्त आदि की जो विषमता है वही व्याधि के नाम से कही जाती है। इसलिये अपना यह शरीर व्याधिमय ही जानना चाहिये ।५६।

वाताद्यव्यतिरिक्तत्वाद्व्यधोना पञ्चरस्य च ।
रोगैर्नानाविधैर्यानि देहदुःखान्यनेकधा ।
तानि च स्वात्ममेद्यानि किमन्यत्कथयाम्यहम् ॥५७
एकोत्तरं मृत्युशतमस्मिन्देहे प्रतिष्ठितम् ।
तत्रैकः कालसंयुतः शेषाश्चागन्तवः स्मृताः ॥५८
येत्विहागतः प्रोक्तास्ते प्रशाम्यति भेषजैः ।
जपहोमप्रदायैश्च कालमृत्युर्न शाम्यति ॥५९
यदि चापि नः मृत्यु स्वाद्विषमद्यादशकितः ।
न सति पुरुषे तस्मादपमृत्युविभीतयः ॥६०
बिविधा व्याधयः शस्त्र सर्पाद्याः प्राणिनस्तथा ।
विंशाणि जगमाद्यानि मृत्योर्द्धाराणि देहिनाम् ॥६१
पीड़ितं सर्वरोगाद्यपि धन्वन्तरिः स्वयंम् ।
स्वस्थीं कर्तुं न शक्नोति प्राप्तमृत्युं च देहिनाम् ॥६२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौषध न तपो दानं न मन्त्रां च वान्धवा ।
शक्नुवन्त परित्रातुं नरं कालेन पीडितम् ।।६३

वाताद्य व्यतिरिक्तत्व होने से हे व्याधियों के पंजर के नाना प्रकार के रोगों से जो देह दुःख है वे अनेक प्रकार के होते हैं और वे अपनी ही आत्मा के द्वारा जानने एवं अनुभव करने के योग्य होते हैं। मैं अन्य क्या बताऊँ।६७। इस देह में एक सौ एक मृत्यु प्रतिष्ठित हैं। उनमें एक काल से संयुक्त होता है और आगन्तुक होते हैं ऐसा कहा गया है ।५८। जो आगन्तुक मृत्यु होते हैं वे भेषजों के द्वारा प्रशान्त हो जाया करते हैं जाप-होम तथा दान आदि से भी उनका प्रशमन होता है किन्तु जो काल मृत्यु होता है वह किसी भी प्रकार से शान्त नहीं होता है ।५९। यदि काल मृत्यु नहीं है तो अशंकित होकर विष भी खा लेवे उससे अपमृायु के भय पुरुष में नहीं होते हैं ।६०। देहधारियों की मृत्यु के अनेक द्वार होते हैं—बहुत प्रकार के रोग—शास्त्र—सर्प आदि विषैले प्राणी वर्ग—विष—जङ्गम आदि ये भी मृत्यु प्राप्त होने के साधन हैं ।६१। समस्त रोगों से पीड़ित देह धारी को जिसकी कि काल मृत्यु प्राप्त हो गया हो धन्वन्तरि स्वयं भी स्वस्थ नहीं कर सकते ।६२। काल के द्वारा पीड़ित पुरुष की रक्षा करने की सामर्थ्य औषध तप-दान-मन्त्र और बान्धव में किसी भी नहीं होती है ।६३।

रसायनतपोजप्यैर्योगसद्धिर्महात्मभिः ।
कालमृत्युरपि प्राज्ञैस्तीर्यंते नालसेन्नंरैः ।।६४
नास्ति मृत्युसमं दुःखं नास्ति मृत्युसमं भयम् ।
नास्ति मृत्युससस्त्रासः सर्वेषामेव देहिनाम् ।।६५
सद्भार्यापुत्र मित्राणि राज्यैश्वर्यधनानि च ।
अवद्धानि च वैराणि मृत्युः सर्वाणि कृन्तति ।।६६
हे जनाः किं न पश्यव्व सहस्रास्यापि मध्यतः ।
जनाः शतायुषः पञ्चभव न भवन्ति च ।।६७
अशोतिका विपद्यन्ते केचित्सप्ततिका नराः ।
परमायुषं षष्ठिस्तच्चैत्रानिश्चित पुनः ।।६८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यस्य यावद्भवेदायुदाहिना पूर्वकर्मभिः ।
तस्यार्द्धमायुषो रात्रिर्हरते मृत्युरूपिणी ।।६९
बाकभावेन मोहेन वार्द्धक्ये जरया तथा ।
वर्षाणां विंशतिर्याति धर्मकामार्थवर्जिताः ।।७०

रसायन—तप—जनों के द्वारा योग सिद्ध महात्माओं से जो परम प्राप्य है कालमृत्यु का भी तरण किया जाता है किन्तु आलस्य युक्त नरों के द्वारा नहीं किया जाता है ।६४। इस संसार में मृत्यु के समान कोई दुःख नहीं है और मृत्यु के तुल्य अन्य कोई भय भी नहीं होता है। मृत्यु के बराबर कोई त्रास भी समस्त देह धारियों को अन्य कोई नहीं हुआ करता है ।६४। सुन्दर सती आर्या, पुत्र, मित्र, राज्य, वैभव, ऐश्वर्य, धन और अवद्ध वर इन सबको एक मृत्यु ही ऐसा है जो काट दिया करता है ।६६। हे जनों ! क्या तुम नहीं देखा करते हो ? हजारों मनुष्यों के बीच में सौ वर्ष की आयु वाले पुरुष पाँच ही होते हैं और नहीं भी हुआ करते हैं ।६७। कुछ तो अस्सी वर्ष की आयु में ही विपन्न हो जाया करते हैं, कुछ सत्तर वर्ष की उम्र में समाप्त हो जाते हैं। आजकल तो परमायु साठ वर्ष की ही मानी जाती है। वह भी कोई निश्चित नहीं है ।६८। जिस पुरुष की देहधारियों के पूर्व कर्मों के अनुसार जितनी आयु है उस आयु का आधा भाग तो मृत्यु रूप वाली रात्रि ही हरण कर लिया करती है ।६९। बाल भाव को मोह से और बुढ़ापे में वृद्धावस्था से वर्षों के बीस तो वैसे ही धर्म, काम और अर्थ से अर्जित हो जाते हैं अर्थात् बीस वर्ष तक वह कुछ धर्मादि का साधन नहीं कर पाता है ।७०।

आगन्तुकैर्भयैः पुंसां व्याधिशोककैरनेकधा ।
भक्ष्यतेऽर्द्धं च तत्रापि यच्छेष तच्च जीवति ।।७१
जीवितांत च तरणं महाघोरमवाप्नुयात् ।
जायते जन्मकोटेषु मृतः कर्मवशात्पुनः ।।७२
देहभेदेन यः पुंसा वियोगः कर्मसक्षयात् ।
मरण तद्विनिर्दिष्ट नान्यथा परमार्थतः ।।७३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महातपंप्रविष्टस्यच्छिद्यमानेषु मर्मसु ।
येद्दु:ख मरणं जन्तोर्न तस्येहोपमा क्वचित् ।।७४
हा तात: कांतेतिरुद्रन्नेव हि दु:खित: ।
मण्डूक इव सर्पेणं ग्रस्यते युत्मुना जन: ।।७५
बांधवै: संपरिष्वक्त: प्रियै: स परिवारित: ।
नि:श्चन्दीर्घमुष्ण च मुकेन परिशुष्यति ।।७६
क्रन्दते चैव खट्टवायां परिजर्तन्मुंहु: ।
मनुढ: क्षिपपेऽयर्थं हस्तपादावितस्तत: ।।७७

आगन्तुक भयों से जो कि पुरुषों की व्याधि और शोक स्वरूप हुआ करते हैं और अनेक होते हैं आधा भाग आयु का खा लिया जाता है उसमें भी जो कुछ शेष रहता है उतनी आयु तक वह जीवित रहा करता है ।७१। जीवन के अन्त में यह महान् घोर कष्ट को प्राप्त किया करता है और मृत होकर भी पुन: कर्मों के वश यह करोड़ों जन्मों को धारण कर उत्पन्न हुआ करता है ।७२। जो देह के भेद होने के, पुरुषों का कर्मों के संक्षय होने से वियोग होता है उसका ही मरण इस नाम से कहा जाता है अन्यथा परमार्थं में यह कुछ भी नहीं है क्योंकि आत्मा तो नित्य है उसकी मृत्यु कभी नहीं होती है ।७३। महातल में शविष्ट पुरुष के विद्यमान मर्मों में जन्तु को भी दु:ख मरण में होता है उसकी यहाँ कहीं भी कोई उपमा नहीं है अर्थात् समानता बताने वाली वस्तु नहीं है ।७४। हा तात् ! हा मात ! हा कान्त ! इस प्रकार से अत्यन्त दु:खित होकर रुदन करता हुआ जन्तु मेंढक को सर्प की भाँति मृत्यु के द्वारा ग्रस लिया जाता है ।७५। बांधवों के द्वारा संपरिष्वक होता हुआ और प्रियजनों के द्वारा चारों ओर से घेरा हुआ दीर्घगर्म श्वांस लेता हुआ मुख से परिशुष्यमाण हो जाता है ।७६। खाट में पड़ा हुआ मरने वाला प्राणी रोता है और बार-बार करवटें बदला करता है । यह समूढ़ अपने हाथ और पैरों को बहुत अधिक इधर-उधर फेंकता रहता है ।७७।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खट्वांतो कांक्षते भूमि भूमेः खट्वां पुनर्महोम् ।
विवशस्त्यक्तलज्जश्च मूत्रविष्टानुलेपितः ॥७८
याचमानश्च सलिल शुष्ककण्ठष्ठतालुकः ।
चितयानश्च वित्तानि कस्यतानि मृते मयि ॥७९
पञ्चावटान्खन्यमानः कालपाशेन कर्षितः ।
म्रियते पश्यतामेव जनानां घुघरस्वनः ॥८०
जीवस्तृणजलौकेव देहाद्देह विशेत्क्रमात् ।
संप्राप्योत्तरकालं देहं त्यजति मौवकम् ॥८१
मरणात्प्रार्थनाद्दुःखमधिकं पि विवेकनि ।
क्षणिकं मरणाद्दुःखमनन्त प्रार्थनाकृतम् ॥८२
जगतां पतिरर्थित्वाद्विष्ण्वामिनतां गतः ।
अधिकः कोऽपरस्तस्माद्यो नया स्यति लाघवम् ॥८३

कभी खाट से भूमि पर पड़ने की इच्छा करता है तो फिर भूमि से खाट पर जाकर पड़ने की चाहना होती है। यह मृत्यु के निकट समय में विवश सा होकर ज्यादा हो जाया करता है तथा मूत्र और विष्टा से भी लिथड़ा हुआ हो जाता है।७८। कभी पानी की याचना का संकेत किया करता है और निकटतम मृत्यु वाले प्राणी के कण्ठ—ओष्ठ और तालु शुष्क हो जाते हैं। वह यह सोचता रहता है कि मेरे मर जाने पर ये धन के वैभव किसके होंगे।७९। इस तरह पञ्चावटों को खोदता हुआ अर्थात् कान, नाक, मुख को हाथ से चलाता हुआ जन्तु काल के पाश के द्वारा कर्षित हो जाता है और घुर्राटे की ध्वनि कण्ठ से करता हुआ समस्त मनुष्यों के देखते हुए ही मर जाता है।८०। यह जीव, तृणजलों की भाँति क्रम से दूसरे देह में प्रवेश किया करता है। उत्तर काल की सम्प्राप्त करके पावके देह का त्याग करता है।८१। विवेकी को मरण से प्रार्थना का दुःख अधिक होता है क्योंकि मरण का दुःख तो क्षणिक ही होता है और प्रार्थना कृत दुःख अनन्त हुआ करता है।८२। संसार का सर्वेश्वर भी अर्थी होने के कारण

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान् विष्णु वामनारूप को (बौना) प्राप्त हो गया था उससे अधिक अन्य कौन है जो लाघव को प्राप्त नहीं होता ।८३।

ज्ञात मयेदमधुना मतं भवति यद्गुरु ।
न पर प्रार्थयेद्भूयस्तृष्णा लाघवकारणम् ।।८४
आदौ दुःखं तथा मध्ये दुःखमपे च दारुणम् ।
निसर्गात्सवंभूतानामिति दुःखपरम्परा ।।८५
वर्तमानांन्यतीतानि दुःखान्येतानि यानि तु ।
नरा न भावयंत्यज्ञा न निरज्यति तेन ते ।।८६
अत्याहारान्तंहद्दुद खमनाहारान्महततम् ।
तलित जीवित कष्टं मन्येऽप्येव कुता सुखम् ।।८७
वुभुजा सर्वरोगाणा व्यधिः श्रेष्ठतमः स्मृतः ।
स चान्नौषधिलेपेन शुणमात्रं प्रशाम्यतिः ।।८८
क्षुद्वयाधिवेदनातुल्या निःशेषव्रलकर्तना ।
तत्राभिवृतो म्रियते यथान्यैर्व्याधिभिर्न हि ।।८९
तद्रसोऽपि हि कामाद्वा जिह्वाग्रः परिवर्तत ।
तत्क्षणाद्वाद्धं कालेन कण्ठ प्राप्य निवर्तते ।।९०

मैंने अब यह गुरु जान लिया है कि पुनः दूसरे से प्रार्थना नहीं करनी चाहिए क्योंकि यह तृष्णा ही लाघव करने का कारण होती है ।८४। आदि में दुःख, मध्य में दुःख और अन्त में दारुण दुःख होता है समस्त प्राणियों की स्वभाव से ही यह दुःखों की परम्परा होती है ।८५। वर्तमान—बीते हुए जो ये दुःख है उनकी अज्ञ नर नहीं ध्यान में रखते हैं और इसी कारण से वे विरक्त भी नहीं होते हैं ।८६। अत्यन्त आहार से महान् दुःख होता है और अनाहार से भी महान् कष्ट होता है। तुलित जीवन भी कष्टमय हो जाता है। अतः यह जानते हैं कि सुख कहाँ है अर्थात् किसी प्रकार से भी कहीं सुख है ही नहीं ।८७। भूख समस्त रोगों में श्रेष्ठतम व्याधि है— ऐसा कहा गया है और अन्न की औषधि के लेप से क्षणमात्र के लिये ही प्रशम को प्राप्त हुआ करते

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है सभी क्षुधा की व्याधि देवता के समान होती है। यह पूर्ण बल को समाप्त कर देने वाली है। इससे अभिभूत प्राणी नर ही जाया करता जैसा कि अन्य व्याधियों से नहीं होता।८९। उसका रस भी अथवा काम से जिह्वा के अग्रभाग में ही परिवर्तित होता है। वह भी क्षणमात्र में बाद्धं काल से कण्ठ को प्राप्त करके निवृत्त हो जाता है।९०।

इति क्षुद्व्याधितप्तावामन्नमाषधवस्मृतम् ।
न तत्सुखाय मन्तव्यं परमार्थेन पण्डितैः ॥९१
मृतोपमो यश्चेक्षेत सर्वकार्यविवर्जितः ।
तत्रापि च कुतः सौख्य ततसा च्छादितात्मनः ॥९२
कृषिगोरक्षवाणिज्यसेवाध्वादिपरिश्रमै ॥९३
प्रतिमूत्रं पुरीषाभ्यां मध्याह्ने ते बुभुक्षया ।
तृप्ताः कामेन जंतवोऽपि विनिद्रया ॥९४
अर्थस्योपार्जने दुःखमर्जितस्यापि रक्षणे ।
आये दुःखं व्यये दुःखमर्थेभ्यश्च कुतः सुखम् ॥९५
चौरेभ्यः सलिलादग्नेः स्वजनात्पार्थिवादपि ।
भयमथंवतां नित्यं नृत्योः प्राणमृतामिव ॥९६
खे यात पाक्षिभिर्मान्सि भक्ष्यते श्वापदै र्भुवि ।
जले च भक्ष्यते मत्स्यस्तथा सर्वत्र वित्तवान् ॥९७

इस प्रकार से क्षुधा की व्याधि से तप्त होने वालों के लिए यह अन्न ही औषधि के समान कहा गया है। उसे भी पण्डितों के द्वारा सुख के लिए नहीं मानना चाहिए, जैसाकि परमार्थ रूप से होता है, ।९१। समस्त कार्यों से रहित होकर जो एक मृत के समान देखता है वहाँ पर भी तप से आच्छादित आत्मा वाले का सुख कहाँ है? अर्थात् सुख नहीं होता है।९२। कृषि—गोपालन—वाणिज्य—सेवा और मार्ग गमन आदि परिश्रम के कार्यों से उपपत आत्मा वाले को प्रबोध हो जाने पर भी कहीं सुख नहीं होता है? ।९३। प्रातःकाल में मूत्र और पुरीष से तथा मध्याह्न में मुख का अभाव होता है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि काम से तृप्त भी हो तो भी जन्तु विनिद्रा से बाधित होते हैं और उन्हें सुख नहीं होता है ।९४। धन से भी कोई सुख नहीं होता है पहले तो अर्थ के उपार्जन में महान कष्ट होता है और अर्जित की रक्षा करने में दुःख होता है । अतः इसके आय और व्यय दोनों में ही दुःख होता है । अर्थ से भी इस संसार में सुख कहीं भी वस्तुतः नहीं होता है ।९५। अर्थ वालों को चोरों से, जल से, अग्नि से, अपने जनों से और राजा से नित्य ही भय रहा करता है जैसे प्राणियों को मृत्यु का भय हुआ करता है, वे सभी धनी के धन के प्राप्त करने वाले हुआ करते हैं ।९६। आकाश में गये हुए के माल का पक्षियों के द्वारा भक्षण किया जाता है भूमि में श्वापदों के द्वारा उसका माँस खाया जाता है, जल में मत्स्यों के द्वारा भक्षण किया जाता है तात्पर्य यह है कि वित्त वाला सभी जगह खाया ही जाया करता है ।९७।

विमोहयति सर्पत्सु तापयन्ति विपत्तिषु ।
खेदयंत्यर्जनाकाले कदा ह्यर्था सुखावहाः ।।९८
यथार्थपतिरुद्विग्नो यश्च सर्वार्थनि स्पृहः ।
यतश्चार्थपतिर्दुःखी सुखी सर्वार्थनिःस्पृहः ।।९९
शीतेन दुःखे हेमते ग्रीष्मे तापेन दारुणम् ।
वर्षासु वातवर्षाभ्यां कालेऽप्येवं कुतः सुखम् ।।१००
विवाह विस्तरे दुःखं तदगर्भोद्वहने पुनः ।
प्रसवेऽपत्यदोषैश्च दुःखं दुःखादिपर्मभिः ।।१०१
दन्ताक्षिरौगैः पुत्रस्य हा कष्टं किं करोम्यहम् ।
गावो नष्टाः कृषिर्भग्ना वृषाः तवापि पलायिता ।।१०२
अमी प्राधर्णकाः प्राप्ता भक्तच्छेदे च मे गृहे ।
वालापत्या च मे भार्या कुः करिष्यति रन्धनम् ।।१०३
प्रदानकाले कन्यायाः कीदृशश्च वरो भवेत् ।
इति चिन्ताभिभूतानां कुता सौख्यंकुटुम्बिनाम् ।।१०४

जब सम्पत्ति की खूब वृद्धि होती है उस दशा में सम्पत्तियाँ प्राणों को विमोहित कर देती हैं । विपत्ति की दशा में संताप किया करती

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है और अर्जुन कर लेने के समय में खेद करती है। ये अर्थ प्राणी को कब सुखावह हुए है ? अर्थात् कभी नहीं होते हैं।९८। अर्थ पति जो होता है वह उद्विग्न रहता है और सदा दुःखी ही बना रहा है। जो सर्वार्थ से स्पृह होता वह सुखी होता है। हेमन्त में शीत से और ग्रीष्म में ताप में दारुण दुःख होता तथा वर्षा में वात और वर्षा से दुःख है इस तरह किसी भी काल में सुख नहीं है। विवाह के विस्तर में दुःख तथा उसके गर्भ के उद्वहन में और प्रसव में दुःख होता है। सन्तानकें द्वारा दुःखादि कर्मो से दुःख होता है। गार्हस्थ्य में दाँत और नेत्रों के रोगों से,पुत्र को कष्ट है। हाय क्या करूँ ? गायें नष्टहो गई-कृषि मारी गई है, वृष कहीं चले गये हैं-ये मेहमान आगयेहैं मेरेगृह में बच्चों वाली स्त्रीहै कौन इनके लिए रन्धन करेगा। ऐसी अनेक चिन्ताओं का दुःख होता है। कन्या के प्रदान काल में वर कैसा होना चाहिये—इस प्रकार की चिन्ताओं में अभिभूत कुटुम्बियों को सुख कभी नहीं होता है।९६-१०६।

कुटुंबचिंयाकुलितस्य तुमः। श्रुत च शीलं च गुणाश्चसर्वे।
अहक्वकुंभे निहिता इवापः प्रयांतिदेहेनसमं विनाशम्।१०५
राज्येपि च महद्दुःख सन्धिविग्रहचिन्तया।
पुत्रादपि भयं यत्र तत्र सौख्यं हि कीदृशम्।१०६
सजातीयाद्भयः प्रायः मलेषामेव देहिनाम्।
एकद्रव्याभिलाषियत्वाच्छुवामिव परस्परम्।१०७
नांप्रधुष्यवलः कश्चिन्नृपः ख्यातोस्ति भूतले।
निखिलं यास्तिरकृत्य सुखं तिष्ठति निर्भयः।१०८
आ जन्मनः प्रभृति दुःखभयं शरीरं।
कर्मात्मकं तव माया कथितं नरेन्द्र।
दानोपवासनियमैश्च कृतैस्तदेव।
सर्वोपभोगसुखभाग्भवतोह पुंसाम्।१०९

कुटुम्ब की चिन्ता के आकुलित पुरुष के श्रुत शील और समस्त गुण कच्चे घड़े में रक्खे हुए पानी की भाँति देह के साथ ही विनाश को

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त हो जाते हैं ।१०५। सन्धि और विग्रह की चिन्ता से राज्य में भी महान् दुःख होता है । जहाँ पुत्र से भय होता है वहाँ किस प्रकार से सुख की प्राप्ति हो सकती है ।१०६। एक मात्र द्रव्यकी प्राप्ति की अभिलाषा रखने वाले होने से आपस में कुत्तों की तरह प्रायः देहधारियोंका सवका सजातीय व्यक्ति से वध हुआ करता है ।१०७। प्रदर्षित न करने के योग्य वल वाला कोई नृप भूतल में ख्यात नहीं हुआ है । जो इन मत्र का तिरस्कार कर देता है वह ही निर्भय होता सुख पूर्वक रहा करता है ।१०८। जन्म से आरम्भ करके यह शरीर दुःखों से परिपूर्ण है । हे नरेन्द्र ! यह शरीर कर्मात्मक है जो मैंने आपको वता दिया है । यहाँ पर दान-उपवास और किये हुए नियमों के द्वारा पुरुषों में वही समस्त उपभोग और सुख का भजने वाला होता है ।१०९।

अधर्म और पापों के भेद

अधोधः पतन पुंसाम धःकर्म प्रकीर्तितम् ।
नरकार्णवघोरेषु यातना पापमुच्यते ।१
अधर्मभेदा विज्ञेयाश्चित्तवृत्तिभेदता ।
स्थूलाः सूक्ष्माः सुसूक्ष्माश्च कोटि भेदैरनेकधा ।२
तत्रयेसापनिचयाः स्थूला नरकहेतवः ।
ते समासेन कथ्यते मनोवाक्कायसः धनाः ।३
परस्त्रीष्वथ संकल्पश्चेतसानिष्टचिंतनम् ।
अकार्याविनिवेशश्च चतुर्धा कर्म मानसम् ।४
अनिबद्धप्रलापिवनत्यं चाप्रिय च यत् ।
परापवादतैशून्यं चतुर्धा कर्म वाचिकम् ।५
अभक्ष्यभक्षणम् हिंसा मिथ्या कामस्य सेवनम् ।
परस्वानामुयादान चतुर्धा कर्म कायिकम् ।६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसमें अधर्म एवं पाप भेदों का वर्णन किया जाता है। श्रीकृष्ण ने कहा—पुरुषों का अधः कर्म अर्थात् नीच कर्म से ही अधः पतन होता है। नरकों के समुद्रमें जो महान् घोर होते हैं यातना पाना ही पाप कहा जाता है।२। अधर्म भेद चित्त वृत्ति के प्रतिभेद से जानने के योग्य होते स्थूल सूक्ष्म और सुसूक्ष्म अनेक प्रकार के करोडों ही भेद होते हैं।२ उनमें जो पापों के समूह स्थूल होते हैं वे नरक प्राप्त करने के हेतु हुआ करते हैं। उन्हें अब संक्षेप से कहा जाता है वे मनवाणी और शरीर के साधन स्वरूप होते है।३। पराई स्त्रियोंमें संकल्प करना—चित्तमें अनिष्ट का चिन्तन करना—न करने योग्य कार्य में अभिनिवेश यह चार प्रकार का मानस कर्म होता है।४। अनिबद्ध अर्थात् सम्बन्ध रहित प्रलापकरना —असत्य बोलना—अप्रिय कथन और दूसरों के अपवाद का पैशुन्य अर्थात् दूसरों की बुराई करना यह चार तरह का वाचिक कर्म होताहै।५। जो भक्षण करनेके अयोग्य वस्तु है उनका भक्षण करना-हिंसा करना मिथ्या काम का सेवन करना और दूसरों का धन-सम्पत्ति का लेना यह चार प्रकार का कायिक कर्म होता है।६।

ये द्विषन्त महादेवं संसारार्णवतारणम् ।
समस्तपातकोपेतास्ते यान्ति नरकान्निह ।७
ब्रह्मघ्नश्च सुराहश्च स्तेयी च गुरुतल्पगः ।
महापातकिनश्चते तत्सं सर्गी च पंचमः ।८
क्रोधाद्द्वेषांत्क्याल्लोभाद्ब्राह्मण विशसंति ये ।
द्राणांतिको महादोषो ब्रह्मघ्नास्ते प्रकीर्तिताः ।९
ब्राह्मणं च समाहूय याचमानमकिञ्चनम् ।
पश्चान्नास्तीति तं ब्रूयात्स चैव ब्रह्महा स्मृतः ।१०
यस्तु विद्याभिमानेन नित्यं जयति वै द्विजान् ।
समासीनः सभामध्ये ब्रह्महा सोऽपि कीर्तित ।११
मिथ्यागुणै स्वमात्मानं नयत्युत्कर्षण बलात् ।
गुरुणां च विरुद्धो यः चैव ब्रह्महा स्मृतः ।१२

पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान केन्द्र तिथी........ पु०सं०........ भारती पुस्तकालय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षुत्तृष्णसंततदेहनां द्विजानां भोक्तुमिच्छताम् ।
समाचरति यो विघ्नं तमाव्र ह्मघातकम् ।१३

जो पुरुष इस संसार रूपी सागर से तारण करने वाले महादेवहैंउनसे द्वेष किया करते हैं वे सब प्रकार के पातकों से युक्त नरकों के अग्नियों में आकर गिरा करते हैं ।७। ब्राह्मण का हनन करने वाला--सुरा का पान करने वाला--चोरी करने वाला और गुरु पत्नी से प्रसंग करने वाला ये चार महापातकी होते हैं और इनका संसर्ग करने वाला पाँचवा भी महा पातकी माना जाता है ।८। क्रोध से—द्वेष और लोभ से जो ब्राह्मण का विशसन (ताड़न) किया करते हैं प्राणान्तिक महान् दोष होता है वे सब ब्रह्मघ्न कहे गयेहैं ।९। ब्राह्मणको बुलाकर कहे जो अकिञ्चनऔर याचना करने वाला हो, पीछे उनसे यह कह देते हैं कि देने को कुछ भी नहीं है वह ऐसा कहने वालाभी ब्राह्मण हन्ता कहा गयाहै ।१०। जो कोई अपने विद्या के अभिमान से नित्य ही ब्राह्मणों को पराजित किया करता है और सभा के मध्यमें बैठकर ऐसा करता है वह भी ब्रह्मा अर्थात् ब्राह्मण का हनन करने वाला कहा गया है ।११। मिथ्या गुणों के द्वारा अपने आपको जो बलपूर्वक उत्कृष्टता दिया करता है और जो गुरुजनों के विरुद्ध रहताहै वह पुरुषभी ब्राह्मणकाघातकही बताया गयाहै।१२। भूख-प्यास से तप्त देहों वाले—ब्राह्मणों को दिलाने की जो इच्छा करने वाले हों उस उनके कार्य में जो विघ्न डाल देता है उसे भी ब्रह्मघातक कहते हैं ।१३।

पिशुनः सर्वलोकानां छिद्रान्वेषणतत्परः ।
उद्वेगजननः क्रूरः स चैव ब्रह्महा स्मृतः ।१४
गवां तृष्णाभिभूतानां जलार्थमुपसर्पताम् ।
समाचरति यो विघ्नं स चैव ब्रह्महा स्मृतः ।१५
परदोषमभिज्ञाय नृपकर्णे करोति यः ।
पापीयान्पशुनः क्षुद्रः स चैव ब्रह्महा स्मृतः ।१६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवद्विजगवां भूमि पूर्वभूक्ता हरेत्तु यः।
प्रनष्टामपि कालेनातमाहुर्ब्रह्मघातकाम् ।।१७
द्विजवित्तापहरणे न्यायतः समुपार्जिते।
ब्रह्महत्यासम ज्ञेयं नात्र संशयः ।।१८
अग्निहोत्रपरित्यागो यस्तु याज्ञिकर्मणाम्।
मातापितृपरित्यागः कूटसाक्ष्यं सुहृद्वधः ।।१९
गवां मार्ग वने चाग्नि पुरे ग्रामे च दीपरेत्।
इति पापानि घोराणि सुरापानसमानि तु ।।२०

समस्त लोगों की बुराई करने वाला—लोगों के छिद्रों (छिपी हुई बुराईयों) की खोजबीन करने के कार्य में परायण रहने वाला—लोगों को उद्वेग उत्पन्न कर देने वाला—क्रूर (निर्दयी) भी पुरुष ब्रह्महा कहा गया है ।१३। प्यास बेचैन, जल के लिये जाने वाली गौओं के जलपान करने के कार्य में जो विघ्न उत्पन्न कर देता है अर्थात् किसी प्रकार की रुकावट डालता है वह व्यक्ति भी ब्रह्महा बताया गया है ।१५। दूसरे के दोष को भलीभाँति न जानकर भी जो राजा के कानों में दोष बताकर डाल देता है वह बड़ा पापी पिशून और क्षुद्रहै तथा वह भी ब्रह्महा कहा गया है ।१६। ब्राह्मण-देवता और गौ इनकी पूर्वमें भोगमें लाई हुई भूमि का जो हरण कर लेता है चाहे वह समय से अनष्ट भी हो गईहो उसको भी ब्राह्मण का घातक कहते हैं ।१७। जो न्याय से भलीभाँति उपार्जित किया गया है जैसे ब्राह्मण के वित्त का अपहरण करने पर ब्रह्महत्या के तुल्य ही पातक होता है यह जान लेना चाहिये। इसमें तनिक भी संशय नहीं है ।१८। याज्ञिक कर्म करने वालों को अग्निहोत्र का परित्याग कर देना; माता-पिता को त्याग देना, झूँठी गवाही देना, मित्र का वध कर डालना, गौओं के मार्ग में और वन में अग्नि लगा देना तथा नगर और ग्राम को जला देना इन कर्मों को जो कोई भी करता है ये सब उसके महा घोर पाप होते हैं और सुराँ (मदिरा) के पान करने के समान ही माने जाते हैं ।१९-२०।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बृषाणां वृषणान्येव पापिष्ठा गालयन्ति ये ।
वाहयन्ति च गां वंध्या ते महानारकीः स्मृताः ।२१
आश्रम समनुप्राप्तं क्षुतृष्णाश्रमपीडितम् ।
येऽतिथि नाभिमन्यते वे निरयगामिनः ।२२
अनाथ विकल दीनं बाल बृद्ध कृशातुरम् ।
नानुकम्पति य मूढास्तें यान्ति निरयार्णं वम् ।३३
अजाविको माहिषकः सामुद्री वृषलीपतिः ।
शूद्रविट्क्षत्रवृतिश्च नारकी स्यांद्द्विजाधमः ।२४
शिल्पिन. कारुका वैद्या हेमकारा नटा द्विताः ।
कृतकौक्षेयः संयुक्तास्तथान्यें नारकाः स्मृताः ।२५
यश्चोदिंतमतिक्रस्य स्वेच्छ्या वा हृरेत्करम् ।
नरके तु स पच्येत यश्च दण्डरुचिर्भवेत् ।२६
उत्कोचकरधिकृतैतस्स्करश्च प्रपीड्यते ।
यस्य राज्ञः प्रजा रुद्रा पच्यते नरकेपु सः ।२७
ये द्विजाः प्रतिगृहृणांति नृपस्यान्यामवर्तिनः ।
प्रजांति तेपि धोराणि नरकाणि न संशयः ।२८

दैलोंके बृषणोंको जमहापापी गला दिया करतेहैं और वध्य(वधिया) गौ को बाहित किया करते हैं वे महानारकी होते हैं ऐसा कहा गया है ।२१। अपने आश्रम में प्राप्त हो गया और भूख—प्यास और श्रम से पीड़ित है, ऐसे अतिथि का जो पालन नहीं करते हैं अर्थात् सत्कार नहीं करते वे मनुष्य नरक गामी हुआ करते हैं ।२२। जिसका कोई नाथ अर्थात् देख-रेख रखने वाला स्वामी न हो ऐसे अनाथ की-विकल अर्थात् किसी भी कारण से बेचैन को-दीन अर्थात् जिसके पास कुछ भी न हो बालक-वृद्ध, कृश को अर्थात् अत्यन्त दुर्बल एक क्षीण आतुर अर्थात् रोग से पीड़ित को पाकर जो उन पर दया नहीं करते हैं वे महामूढ़ नरकके समुद्र में जाया करते ।२३। भेड़ बकरी रखने वाला या भैंसों के पालने वाला समुद्र की यात्रा करने वाला, वृषली का पति तथा शूद्र, वैश्य व

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षत्रियों की बृत्ति को करने वाला अधम द्विज नारकी होता है ।२४। शिल्पी कारुक-वैद्य हेमकार और नट जो द्विज होते हैं तथा कृत कौक्षेय से संयुक्त होते हैं उस प्रकारसे अन्य नारकीय कहे गये हैं।२५। जो किसी भी उदित पर अतिक्रमण करने अपनी इच्छा से कर का हरण किया करता है और जो दण्ड देनेकी रुचि वाला होता है वह नरकमें पच्यमान होता है। अधिक उत्कोचों के द्वारा अर्थात् अपना अधिकार कहकर रिश्वत लेने से तथा तस्करों के द्वारा जिस राजा द्वारा पीड़ित (सताई) की जाती है और इन पीड़ितोंसे अधिक वह प्रजा रुष्टरहा करती है वह राजा नरक में जाकर वेदना को सहन किया करता है ।२७। अन्याय से शासनका व्यवहार करने वाले राजाका जो द्विज दान ग्रहण किया करते हैं, वे ब्राह्मण भी घोर नरकों में जाया करते हैं—इसमें कुछ भी संशय नहीं है ।२७।

पारदारिकचौराणां यत्पाप पार्थिवस्य तत् ।
भवेदरक्षतस्तस्माद्धोरस्तस्य प्रतिग्रहः ।२६
अचौरवत्पश्येच्चोरं वाऽचौररूपवत् ।
अविचर्यनृपस्तस्माद्घातयन्नरक व्रजेत् ।३०
घृततैलान्नपानानि मधुमांससुरावसम् ।
गुडेक्षुक्षरकानि दधिमूलफलानि च ।३१
तृणं काष्ठं पुष्पपत्रमौषधं कांस्यभाजनम् ।
उपानच्छत्रशकटमासनं शयनाम्बरम् ।३२
ताम्रं सीस त्रपुं काचं शङ्खाद्यं च जलाद्भवम् ।
वाक्षवा वैणवाद्यं गेहेषुपस्कराणि च ।३३
ऊर्णाकार्पासकौशेयभङ्गट्टोद्भवानि च ।
स्थूलसूक्ष्माणि वस्त्राणि ये चं लोभाद्धरति च ।३४
एवमादोनि चान्यानि प्रत्याणि विविधानि च ।
नरकाणि ध्रुवं यांति नरा वा नात्र संशयः। ३५
यद्वा तद्वा परद्रव्यमपि सर्षप मात्रकम् ।
अपहृत्य नरो याति नरकं नात्र संशयः ।३६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एव माद्यैर्नरः पापैरुत्क्रतेः समन्तरम् ।
शरीर यातनार्थाय पूर्याकारमवाप्नुयात् ।३७

पराई स्त्री की चोरी करने वालों को जो पाप होता है वही पाप उस राजा को भी होता है जो रक्षा करने वाले नहीं होते हैं । इसीलिये उसका जो प्रतिग्रह होता है वह भी महान घोर हुआ करता है ।२६। जो राजा विना चोरी करने वाले को चोर की भाँति समझता है और जो वास्तव में चोर होता है उसे चोर की भाँति नहीं देखता है और इसका ठीक विचार न करके घात किया करता है वह राजा नरक का गामी होता है ।३०। घृत तैल, अन्नपा (मधु, माँस, सुरासव, गुड़, ईख, क्षार, शाक, दधि, मूल, फल, तृण, काष्ठ, पुष्प, पत्र, औषध, काँसे का पात्र, उपानह, छत्र, शकट, आसन, शयन के वस्त्र अर्थात् विस्तर, ताम्र सीसा, त्रयु, काँच शङ्ख आदि जल से उत्पन्न, वाक्ष, वैणव आदि गृह के उपस्कर, ऊन कपास के बने हुए वस्त्र, कोशेय (रेशमी वस्त्र) भङ्ग पट्ट से उद्भव होने वाले स्थूल और सूक्ष्म वस्त्र, इनका जो लोभ से हरण किया करते हैं ।१३-३४। और इसी प्रकार के अन्य विविध प्रकार के द्रव्यों को हरण करते हैं वे मनुष्य निश्चय ही नरकों में जाया करते हैं, इसमें कुछ भी संशय नहीं है ।३५। जो कुछ भी हो वह एक सरसों के बराबर भी पराये द्रव्य को अपहरण करने से मनुष्य नरकों को प्राप्त होता है—इसमें बिल्कुल भी संशय नहीं है ।३६। इस प्रकार के अन्य पापों से उत्क्रान्ति के अनन्तर मनुष्य यातना भोगने के लिये ही पहिले आकार वाले शरीर को प्राप्त किया करता है ।३७।

यमलोकं व्रजेत्तेन शरीरेण यमाज्ञया ।
यमदूतर्महाघोरैर्नीयमानः सुदुःखितः ।३८
तियङ्मानुषदेहानामफर्मनिरतात्मनाम् ।
धर्मराजः स्मृतः शारता सुघोरैर्विविधैर्वधैः ।३६
विनयाचारयुक्तानां प्रमादात्सखिलात्मनाम् ।
प्रायश्चित्तैर्गुरुः शारदा न च तैर्हश्यते यमः ।४०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पारदारिक चौराणामन्यायव्यवहारिणाम् ।
नृपतिः शासकस्तेषां प्रच्छन्नाना च धर्मराट् ।४१
तस्मात्कृतस्य पापस्य प्रायश्चित्त समाचरेत् ।
नाभुक्तस्यथा नाशः कल्पकोटिशतैरपि ।४२
यः करोपि स्वयं कर्म कारयेद्वापि मोदयेत् ।
कायेन मनसा वाचा तस्य चाधोगतिः फलम् ।४३
इति संक्षेपतः प्रोक्ताः पापभेदाः संसाधनाः ।
कथ्यते गतयश्चित्रा नराणां पापकर्मणाम् ।४४
वाक्ययचित्तजनितैर्दहुभेदभिन्नैः
कार्यैः शुभाशुभफलोदयहेतुभूतैः ।
भास्वदसुरेशभुवनं नरकाननेक्तम् ।
संप्राप्नुवति मनुजा मनुजेन्द्रचन्द्र ।४५

यमराज की आज्ञा से उस शरीर से वह पापी यमलोक को जाता है और महान् घोर यमराज के दूतों के द्वारा ले जाया जाने वाला अत्यन्त दुःखित होता हुआ जाया करता है ।३८। अधर्म में निरत रहने वाले तिर्यक और मानुष देहों का सुधार अनेक प्रकार के वधों के द्वारा धर्मराज शासन करने वाला कहा गया है ।३९। जो विनय और आचार से युक्त है और प्रमाद वश स्खलित आत्मा वाले हो जाते हैं अर्थात् किसी भूल से आचार स्खलन जिनका हो गया है उनका रास्ता परु प्रायश्चित्तों के द्वारा पापों की निवृति करने वाला शासक होता है फिर उनको यमराज का दर्शन नहीं करना होता है ।४०। पर दारा की चोरी करने वालों का तथा अन्याय-पूर्ण व्यवहार करने वालों का शासक राजा हुआ करता है। यदि ऐसे कर्म करने वाले लुक छिपकर किया करते हैं और भूपति की दृष्टि में नहीं आते हैं तो फिर उनका शासन एवं दण्ड विधान धर्मराज ही किया करता है ।४१। अतएव जो भी कोई पाप किये गये हैं उनका प्रायश्चित अवश्य ही करना चाहिए। नहीं तो पापों का फल बिना भोगे हूए सैकड़ों करोड़ कल्पों में भी नष्ट नहीं होता है और वह तो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवश्य भोगना ही पड़ता है ।४२। जो स्वयं पाप का कर्म करता है या किसी से कराता है अथवा उसका समर्थन करता है चांहे शरीर से या मन से अथवा वचन से किसी भी प्रकारसे ऐसा करे उसका फल अवश्य ही अद्योपति होता है ।४३। इस तरहसे साधन सहित पापोंके भेद संक्षेप में बता दिये गये हैं । पाप कर्म करने वाले मनुष्यों की विचित्र गतियाँ कहीं जाती हैं ।४४। मनुजेन्द्र चन्द्र ! वाणी शरीर और चित्त से उत्पन्न होने वाले वहुत से भेदों से विभिन्न शुभ और अशुभ फलके उदय के हेतु स्वरूप कर्मों से मनुष्य देदीप्यमान सुर रज के भवन (स्वयं) जो तथा अनेक प्रकार के नरकों को प्राप्त हुआ करते हैं ।४५।

———

शुभाशुभ गति और यम यातना

अर्थाभिः पातकैयति यमलोक चतुर्विधैः ।
सत्रः सजननं घोरं विवशाः सवदेहिनः ।१
गर्भस्थर्जायमानैश्च बालस्तरुणमध्यमैः ।
पुंस्त्री नपुंसकैर्बृद्धै ज्ञातव्यं सर्वजन्तुभिः ।२
शुभाशुभफलं तत्र देहिनो प्रविचायेते ।
चित्रगुप्तादिभिः सभ्यैर्मध्यस्थै सर्वदर्शिभिः ।३
न तेऽत्र प्राणिनः सन्ति ये न यांति यमक्षयम् ।
अवश्यैहि कृत भोक्तव्य तद्विधारितम् ।४
तत्र ये शुभकर्माणः सोम्यचित्ता दयान्विता ।
ते नरा यांति सौम्येन पन्था यमनिकेतनम् ।५
यः प्रदद्याद्द्विजेन्द्राणामुपानहकाष्ठापादुकाम् ।
स वराश्वेन महता सुख याति यमालयम् ।५
अन्नदानं विशेषेण धर्मं राजपुरे नराः ।
यस्माद्यांति सुखेनैव तस्माद्धर्मं समाचरेत् ।७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अध्याय में शुभ और अशुभ पति के फलों की प्राप्ति के वर्णन में यम की यातना के प्रकारों का वर्णन किया जाता है। श्रीकृष्णने कहा मृत्युकी प्राप्ति के पश्चात् विवश होकर समस्त देहधारी लोग इन चार प्रकार के संपातकों से घासके उत्पन्न करने वाले घोर यमलोक को जाना करते हैं।१। गर्भ में स्थित-जायमान अर्थात् उत्पन्न होने वाले-बालक-तरुण-प्रौढ़ वृद्ध, पुरुष, स्त्री तथा नपुंसक समस्त जन्तुओं के द्वारां जान लेना चाहिए।२। वहाँ पर सब कुछ देखने और जानने वाले मध्यस्थ सम्य चित्रगुप्त आदि के द्वारा देहधारियों के अशुभ कर्मों का फल का विचार किया जाता है।३। वहाँ पर ऐसे कोई भी प्राणी नहीं हैं जो यमराज के घर में नहीं जाते हैं अर्थात् एक बार तो वहाँ सभी प्राणियों को जाना ही पड़ता है। उनका जो कुछ भी किया हुआ कर्म है वह अवश्य ही उन्हें भोगना ही पड़ता है।४। वहाँ पर जो शुभ कर्म करने वाले सौम्य चित्त से युक्त और दया से समन्वित प्राणी होते हैं वे नर सौम्य मार्ग के द्वारा ही यमराज निकेतन में जाया करते हैं।५। जो पुरुष श्रेष्ठ ब्राह्मणोंको उपानह या काष्ठ पादुकाओं का दान करते हैं वे बहुत अच्छे अश्व के द्वारा यमालय मे सुख पूर्वक जाते हैं।६। विशेषता से अन्न का दान मनुष्यों के लिए यमराज के पुर में महान रखता है जिससे कि वे सुख के साथ वहाँ जाया करते हैं। इससे धर्म का आचरण अवश्य करना चाहिये।७।

ये पुनः क्रूरकर्मणः पापा दानविवर्जिताः।
ते घोरेण यथा यांति दक्षिणेन यमालयम्।८
षडशीतिसहस्राणि योजनानामतीत्य यत्।
शैवस्वापुरं ज्ञेयं नानारूपव्यवस्थितम्।९
समीपस्थामिवाभाति नराणां शुभकर्मणाम्।
पापानामतिदूरस्थं यथा रौद्रेण गच्छताम्।१०
तीव्रकंटकयुक्तेन शर्करानिचितेन च।
क्षुरधारनिभैस्तत्र: पाषाणैर्निचैन च।११

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्वाचित्पंकेन महता दुरुत्तारैश्च शातकैः ।
लोहासचीनिर्धदंर्भे सछन्नेन यथा क्वाचित् ।१२
तटप्रतापविष्टभैः सर्वतैवृक्षसंकलैः ।
प्रतप्ताङ्गारयुक्तेन यांति मार्गेण दुःखिता ।१३
क्वचिद्विषमगर्तेश्च क्वचिलोष्टैः सुपिच्छिलैः ।
प्रतप्रवालुक्वभिश्च तथा तीक्ष्णश्च शंकुभिः ।१४

जो क्रूर कर्म करने वाले पापी दानादि शुभ कर्मों से रहित होते हैं वे वहाँ पर घोर मार्ग से जो कि दक्षिण मार्ग है वहाँ पर यमालयमें जाया करने हैं ।८। छयासी हजार योजन के मार्ग को पार करके नाना रूपों में व्यस्थित वैवस्तपुर है। ऐसा जानने के योग्य है ।९। जो शुभ कर्म करने वाले नर होते हैं उन्हें वही वैवस्वतपुर ऐसाप्रतीत होताहैकि बहुत ही समीप में है। पापियों को वही अत्यन्त दूरस्थ प्रतीत होता है क्योंकि वे रौद्र मार्ग से वहाँ जाया करते हैं ।१०। वह पापियों को जाने के मार्ग बड़े पैने काँटों से युक्त होता है और शर्करा (बालू) से भरा हुआ रहता है। वह मार्ग छुरा की धार के समान तीखे पाषाणों से भरा हुआ होता है तो कहीं पर ऐसे विशाल गड्ढे हैं जो पार करके जाना पड़ता है। लोहे की सुईयों के समान पेनी डांम से सछन्न मार्ग वहीं पर मिलता है ।१२। तट प्रताप से यिष्टम्भ वृक्षों से घिरे हुए पर्वतों के समूह कहीं पर इस मार्ग में होते हैं। ऐसे प्रतप्त अङ्गार से युक्त मार्गसे बहुत दुःखित होकर विचारे पापी प्राणी वहाँ जाया करते हैं ।१३। कहीं पर तो बहुत ही विषम गर्त्त है तो कहीं पर सुपिच्छल ढेले ही रहा करते हैं। किसी जगह एकदम गर्म बालू के ढेर हैं किसी जगह तीक्ष्ण शंकु मिला करते हैं ।१४।

अनेक तापैर्विततैर्व्याप्तं वंशवनं क्वचित् ।
क्वचिद्वालुकया व्याप्तं कष्टेनैव प्रवेशनम् ।१५
क्वचिदुष्णांदुना व्याप्तं क्वचित्कारीषवह्निना ।
क्वचित्जहैर्वृकव्याप्त दुशैः कीटंश्च दारुणैः ।१६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्वचिन्महाजलोकाभिः क्वचिच्चागरैः पुनः ।
मक्षिकाभिश्च रौद्राभिः क्वचित्सर्पैं विषाल्वणैः ।१७
मत्तमातं गयूर्थस्च गयूथैस्च बलौम्मतैः प्रमाथिभिः ।
पंथानमुल्लिखद्भिश्च तीक्ष्णशृङ्गैर्महावृषैः ।१८
महाविषाणै महिषैरुष्टैर्म्मत्तैश्च खादकैः ।
डाकिनोभिश्च रौद्राभिर्विकरालैश्च राक्षसैः ।१९
व्याधिभिश्च महाघोरैः पीड्यमाना व्रजाति च ।
महाधूलोविमिश्रेण महाचण्डे न बायुना ।२०
मपाहाषाणवर्षैण हन्यमाना निराश्रयाः ।
क्वचिद्विद्युत्प्रपातेन दीर्घमाणा व्रजतिच ।२१

कहीं पर इस मार्ग में फैले हुए विविध प्रकार के तापों से व्याप्त होता है ऐसा साँसों का वन है । किसी जगह बालू से परिपूर्ण होता है । बड़े ही कष्ट से प्रवेश किया जाता है ।१५। कहीं पर यह मार्ग गर्म पानी से व्याप्त है तथा कहीं पर कारीष की अग्नि भरी हुई है । कहीं २ पर सिंह और बृकों से समाकीर्ण मार्ग होता है तथा दश और दारुण कीटों से परिपूर्ण रहता है ।१६। कहीं पर बड़े २ जलों का और कहीं महान् अजगरों से घिरा हुआ यह मार्ग होता है । कहीं पर भयानक मक्खियों से भरा हुआ रहता है तो किसी जगह अत्यन्त विषधर सर्पों से परिपूर्ण होता है । किसी जगह बल से अत्यन्त उन्मत्त और प्रमथनशील मत्त हाथियों से घिरा हुआ यह मार्ग मिला करता है । किसी जगह ऐसे विशाल भैंसे भरे हुए हैं जो मार्गको अपने तीक्ष्ण सींगों से खोद रहे हैं ।१७-१८। बड़े २ विषाणों वाले भैंसे-मदोन्मत्त ऊँट जो खाजाया करते हैं उनसे मार्ग परिपूर्ण वहीं पर रहा करता है । भयानक डाकिनी और विकराल राक्षस तथा महाघोर व्याधियाँ इन सबसे पीड़ित होते हुए पापी लोग यमपुरको जाया करते हैं । बड़ी भारी धूल से मिली हुई महान् प्रचण्ड वायु और महान् पाषाणों की वर्षा से हन्यमान होते हुए बिना किसी आश्रय वाले पापी कहीं पर बिजली प्रपात में जो बहुत ही बड़ा होता है वहाँ जाते हैं ।१९-२०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महता बाणवर्षेण निध्यानिश्च सर्वशः ।
पतद्भिर्वज्रसंघातरुल्कापातैश्च दारुणः ।२२
प्रतप्तांगारुवषण दह्यमाना व्रजन्ति च ।
तप्तेन पांशुवषण पूर्यमाणा रुदन्ति च ।२३
महामेघरवघोरैर्विास्यन्ते मुहुर्मुहुः ।
निशितायुधवर्णे चूर्यमाणा नरैर्वृताः ।
महाक्षाराम्बूधाराभिः सिच्यमानि द्रवति च ।२४
महाशीतेमन मरुता तीक्ष्णेन परुषेण च ।
समतीत्पन्तडशियमानस्ते शुष्यन्ते संकुचित च ।२५
इत्थं मार्गेण रौद्रेण पांथैर्विरसितेन च ।
निरालबेन दुर्गेण निर्जलेन समन्ततः ।२६
अविश्रामेण महता निर्गतापाश्रयेण च ।
तमोरूपेण कष्टेन सर्वदुःखाश्रयेण च ।२७
नीर्यते गृहिनः सर्वे ये मूढाः पापकर्मिण ।
यमदूतैर्महीघोरैस्तदाज्ञारिभिर्बलात् ।२८

कहीं पर मार्ग में महान् वाणों की वर्षा होती है उसमें विधे हुए होकर और सब ओर से गिरते हुए वज्र के सघातों तथा उल्कापातों एवं प्रतप्त अंगारों की वर्षा से जलते हुए यमपुर को पापात्मा प्राणी जाया करते हैं। तपी हुई धूल की वर्षा पूरित होते हुए मार्ग में पापी नर रुदन करते हैं ।२१-२३। बड़ेभारी विशाल मेघों की कड़कदार ध्वनि से बार-बार डराये जाया करते हैं। तीक्ष्ण आयुधों की वर्षा से चूर्णमाण और तरों से वृत वहाँ जाते हैं। महाक्षार जल की धाराओं से भीगे हुए द्रवित होते हैं ।२४-२५। बहुत ठण्डी हवा से जो तीखी और कठोर हीती है सभी ओर से पीड्यमान होते हुए सूख जाते हैं और सिकुड़ जाते हैं ।२६। इस प्रकार से यमपुर का पापियों के जाने वाला मार्ग रौद्र होता है जिसमें कोई भी अन्य राहगीर नहीं रहता है। यह अवलम्बसे हीन-दुर्ग और सभी ओर से जलरहित होता है ।२७। विश्राय से शून्य एवं जल के आश्रय से वर्जित-ह्वन्धकारमय-कष्टप्रद और समस्त

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुःखों के परिपूर्ण यह मार्ग है। उस से मूढ़ पाप कर्म करने वाले देह धारी सब ले आये जाया करते हैं। इनको महान् घोर यमराज की आज्ञा पालन करने वाले यमदूत बलात् (जबर्दस्ती) ले जाते हैं ।२७-२८।

एकाकिनः पराधीना मित्रवन्धुविवर्जिताः।
शोचन्तः स्वानि कर्माणि रुदतश्च मुहुर्मुहु ।२९
प्रेतभूता विवस्त्राश्च शुष्ककण्ठोतालुकाः।
कृशाङ्गा भीतभीताश्च दह्यमानाः क्षुधाग्निना ।३०
वद्धाः शृङ्खलया केचिदुत्ताना पादयोर्नरा.।
आकृष्यते घृष्यमाणा यमदूतैवलोत्कटैः ।३१
पुनश्याधोमुखाद्रचान्ये धृष्यमाणाःसुदुःखिताः।
केशपाशनिवद्धाश्च कृष्यन्ते रज्जुभिर्नराः ।३२
ललाटे चाँकुशस्तीक्ष्णैभिन्नाः कृष्यति देहिनः।
उत्ताना रटमानश्च क्वरिदङ्गारवर्त्मना ।३३
पाश्चाद्वाह्व सबद्धाश्च जठरे च प्रपीडिताः।
पूरिताः शृंखलाभिश्च हस्तयोश्च प्रकीलियाः ।३४
ग्रीवायामर्द्धचन्द्रेण क्षिप्यमाणा इतस्ततः।
शिश्नेन वृषण वद्ध नीयते चर्म रज्जुता ।३५

पापात्मा प्राणी एकाकी (अकेले-पराधीन और वहाँ मित्र तथा बन्धुओं से रहित रहने वाले बार-बार रोते हुए अपने किये हुए कर्मों के विषय में चिन्ता किया करते हैं कि हमने ऐसे बुरे कर्म क्यों किये थे. जिनके कारण अब उनको यह महान् कष्ट भोगना पड़ रहा है ।२९। प्रेत भूत वस्त्रों से हीन (नङ्गे) और सूखे हुए कण्ठ-होठ और तालु वाले दुबले अंगों से युक्त—वहुत डरे हुए मूल की आग से दह्यमान होते हैं ।३०। संकलों से बंधे हुए और कुछ मनुष्य पैरों से उत्तान (ऊँचे उठे हुए) बल से उत्कट यमराज के दूतों के द्वारा जबर्दस्ती से घिसटते हुए खींचे जाया करते हैं ।३१। अन्य लोग फिर नीचे को मुख वाले तथा अन्य रज्जुओं से बँधे हुए केशपाश वाले बहुतही दुःखित

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दशा में घिसटते हुए खींचे जाते हैं।२। बहुत ही पैने अंकुश से ललाट जिन देहधारियों का भिन्न हो रहा है और उत्तान एवं रट लगाते हुए म्रियमाण हो रहे हैं। कहीं पर अंगारोंसे पूर्ण मार्ग में भुजा और कंधोंमें पीछे बँधेहुए और उदरमें पीड़ा प्राप्त करने वाले जाया करते हैं। कहीं सँकलों से पूर्णतया बँधे हुए और हाथों में कीलें लगी हुई हैं ऐसे पापी लोग ले जाये जाते हैं। किसी जगह गरदन में हाथ से पकड़ कर धक्के खाकर फेंके गये इधर-उधर चले जाते हैं। शिश्न और वृषण को चमड़े की रस्सी से बाँधकर ले जाये जाया करते हैं।३३-३५।

एवं पथातिकष्टेन प्राप्ता यमपुर तदा।
प्रजापितास्तदा दूतैर्निवेश्यं यमाग्रतः।३६
तत्र ये शुभकर्माणेस्तांश्च संमानयेद्यसः।
स्वागतासनदानेन पाद्यार्घेण प्रियेण च।३७
धन्या यूयं महात्मनो हितकारिणः।
येनदिव्यसुखार्थाय भवद्भि सुकृतं कृतम्।३८
इदं विमानमारुह्य दिव्यस्त्रीभोगभूषितम्।
स्वर्गं गच्छध्वमतुलं सर्वकामसमन्वितम्।३९
ततो भुक्त्वा महाभोगानते पुण्यस्य संक्षयात्।
मत्किञ्चिदल्पदशुभ तुनस्तदिह भोक्ष्यथ।४०
ते चापि धर्मराजान नराः पुण्यानुभावता।
पश्यन्ति सौम्यवदनं पितृभूतमिवात्मनः।४१
येत पुनः पापकर्माणस्तु पश्यन्ति भयानकम्।
पापविशुद्धं नयना निपरीतात्मबुद्धयः।४२

इस तरह अत्यन्त कष्टप्रद मार्ग के द्वारा बे पापात्मा मनुष्य यमराज के पुर जाकर उस समय प्राप्त होते हुए यमराज के आगे निवेशित किये जाते हैं।३६। वहाँ पर जो सौम्यमार्ग से लाये गये शुभ कर्म वाले प्राणी होते हैं वे तो यमराज के द्वारा सम्मानित होते हैं। उनका वहाँ स्वागत किया जाता है और अर्घ्यपाद्य आदि देकर उन्हें प्रेम पूर्वक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आसन दिया जाता है ।३७। उनसे कहा जाता है–आप महान् आत्मा वाले धन्य हैं जिन्होंने अपनी आत्मा का हित किया है और दिव्य सुख के लिये आपने सुकृत किया है । आपके लिए यह विमान है जोकि दिव्य स्त्री आदि भोगों से भषित है । इस पर सवार होकर आप अतुल और समस्त प्रकार की कामनाओं से समन्वित स्वर्गको जाइये।३८-३९। वहाँ सुखभोग कर फिर भोगों के अन्त में थोड़ा कुछ अशुभ कर्म हो तो उस का फल इसके अन्त में भोग लेना जबकि आपके पुण्यों का क्षय हो जावे ।४०। वे लोग अपने किये हुए पुण्यों के अनुभव से उस धर्मराजको बहुत ही सौम्य मुखवाला अपने पिता के समान देखा करते हैं । जो जहाँ पाप पूर्ण कर्मों के करने वाले होते हैं वे उसी यमराज को पाप के कारण अविशुद्ध नेत्रों वाला तथा विपरीत आत्म बुद्धि वाला बहुत ही भयानक रूप वाला देखा करते हैं ।४१-४२।

दंष्ट्राकरालवदनं भ्रुकुटीकुटिलेक्षणम् ।
उर्ध्वकेशं महाश्मश्रु प्रस्फुरदधरोत्तरम् ।४३
अष्टादशभुजं क्रुद्धं नीलाजनचयोपमम् ।
सर्वायुधोद्यतकरं ब्रह्मदण्डेन तर्जकम् ।४४
महामहिषमारूढं दीप्ताग्निसमलोचनम् ।
रक्तमाल्याम्बरधरं महामेरुमिवोच्छ्रितम् ।४५
प्रलयांबुदनिर्घोषं पिबतमिव सागरम् ।
ग्रसतमिव लोकानामुद्गिरन्तमिवानलम् ।४६
मृत्युश्च तत्समीपस्थः कालानलसमप्रभः ।
कालश्चाजनसंकाशः कृतांतश्च भयानकः ।४७
मारी चोग्रा महामारीं कालरात्रीः सुदारुणा ।
विविधा व्याधयः कष्टाः नानारूपभयावहाः ।४८
शक्तिशूलांकुशधराः पाशचक्रासिधारिणः ।
वज्रदण्डधरा रौद्राः क्षुद्रतूणीरधनुर्धराः ।४९

पापी प्राणियों को वह यमराज दाढ़ों से कराल मुख वाला-तिरछी भौंहों से युक्त नेत्रों वाला–ऊपर को उठे हुए केशों वाला तथा बड़ी–२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाढ़ी मूँछों में फड़फड़ाते हुए होठों वाला दिखाई देता है ।४४-४६। अठारह भुजाओं युक्त क्रोधपूर्ण नीले—कागज के ढेर के समान वर्ण वाला—समस्त आयुधोंसे पूर्ण करो वाला और ब्रह्मदण्डसे तर्जन करने वाला-एक विशाल भैंमे पर सवार तथा जलती हुई अग्निके समान नेत्रों वाला-लाल वस्त्र धारण करने वाला और महान् मेरुकी शिखर के तुल्य ऊँचा दिखाई देता है ।४५। प्रलयकाल के मेघके समान घोष करता हुआ मानों सागर का पापकर रहा हो और समस्त लोकों का ग्राम कर रहा हो तथा अग्नि का उद्वमन कर रहा हो उसका स्वरूप भयानक दिखलाई दिया करता है ।४६। कालानल के समान प्रभा वाला, मृत्यु, उसके समीप में स्थित रहता है। जो काले अंजन के सदृश और, कृतांत अति भयानक होता है ।४७। मारी-उषा-महामारी काल रात्रि सुदारुण अनेक भय देने वाले रूपों को धारण करने वाली व्याधियाँ एवं अनेक प्रकारके कष्ट वहाँ उपस्थित रहा करते हैं ।४८। शक्ति शूल और अंकुश को धारण करने वाले पाश, चक्र और असि को रखने वाले-वज्र, दण्ड-धारी और क्षुद्र तूणीर यथा धनुष लिये हुए महान् रौद्र यम के दूत वहाँ पर उपस्थित रहा करते हैं ।४९।

असंख्याता महावीर्यान्क्रूराश्चञ्जनसम्प्रभाः ।
सर्वायुधोद्यतकरा यमदूता भयानकाः ।५०
अनेन परिवारेण महाघोरेण सम्वृतम् ।
यमं पश्यन्ति पापिष्ठाश्चित्रगुप्त च भीषणम् ।
निभं संयंत चात्यन्तं यमं सदुपकारिणत ।५१
चित्रगुप्तश्च भगवान्धर्म वाक्येः प्रवोधयन् ।
भोमो दुष्कृतकर्माणः परद्रव्यापहारिणा ।
गर्विता रूपवीर्येण परदारविमर्दकाः ।५२
यत्स्वयं क्रियते कर्म तत्त्वयं भुज्यते पुनः ।
तत्किमात्मोपघातार्थं भवद्भिदुष्कृतं कृतम् ।५३
इदानीं किं प्रयप्यध्वं पींड्यमानाः स्वकर्मभिः ।
भुञ्जध्वं स्वानि कर्माणि नात्र दोषोऽस्ति कस्यचित् ।५४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एते च पृथिवीपालाः संप्राप्ता मत्समीपतः ।
स्वकीयैःकर्मभिर्घोरैर्दुत्प्रजा बलगर्विताः ।५५
भोभो नृपा दुराचारी प्रजाविध्वंसकारिणः ।
अल्पकालस्य राजस्य कृते किं दुष्कृतं कृतम् ।५६

ऐसे काजल के समान काली प्रभा वाले–महापराक्रमी—क्रूर—सम्पूर्ण आयुध हाथोंमें लिये भयानक असंख्य दूत वहाँ पर उपस्थित रहा करते हैं ।५०। ऐसे अनेक परिवार से जो कि महान् घोर है वह यमराज सवृतहोता है । ये यमराजको और महाभीषण चित्रगुप्तको महापापीलोग वहाँ देखा करते हैं जोकि सदुपकारी यम राजा अत्यन्त डाट लगाता रहता है ।५१। चित्रगुप्त धर्म युक्त वाक्योंके प्रबोध कराते हुए कहते हैं-हे बुरे पाप कर्म करने वालो ! हे पराये द्रव्य को हरण करने वालो ! आप लोग अपने रूप और वीर्य से बड़ा गर्वित होकर पराई स्त्रियों का विमर्दन करते थे ।५२। अच्छा आप लोगों ने स्वयं ही ऐसे पापकर्म किये हैं उनका अब बुराफल भी स्वयं आप ही भोग रहे हैं । तुमने अपनी आत्मा के उपघात के लिएही ये दुष्कृत किये है । अब इतने प्रतप्त क्यों हो रहे हैं कि अपने किये हुए कर्मों के कारण पीड्यमान हो रहे हैं । अपने कर्मों काही यह तुमकोफल मिल रहा है इसे भोगना ही पड़ेगा । इसमें किसी अन्य का कोई भी दोष नहीं है ।५३-५४। देखा ये पृथिवी के पालक राजा मेरे समीप में सम्प्राप्त हुए हैं । ये भी अपने किए हुए दुष्कर्मों से जो कि अत्यन्त घोर है उससे युक्त महामूढ़ और बल के गर्व से युक्त हैं । इतना कहकर राजाओं को सम्बोधित करके कहा—हे दुराचार वाले राजाओ ! तुम प्रजा के विध्वंस करने वाले हो । तुमने थोड़े से समय तक भोगने के योग्य राज्य के लिए इतना वड़ा दुष्कृत क्यों किया है ? ।५५-५६।

भोभोश्चण्ड महाचण्ड गृहीत्वा नृपतीनिमान् ।
विशोधध्वं पापेभ्यः क्रमेण नरकाग्निसु ।५७
ततः शीघ्रं समुत्याय नृपान्संगृह्य पादयोः ।
भ्रामयित्वातिवेगेन विक्षिप्योर्ध्वं विगृह्य च ।५८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वप्राणेन महता सुतप्ते शिलातले ।
अस्फालयन्ति तरसा वज्रेणेव महाद्रुमम् ।५६
वत: स रक्तस्रोतोभिः स्रवते जर्जरीकृतः ।
स नि:संज्ञस्तदा देही निश्चेष्टः सम्प्रजायते ।६०
ततः स वायुना स्पृष्टः शनैरुज्जीवते पुनः ।
ततः पापविशुद्धयर्थं क्षिप्यते नरकार्णवे ।६१
अष्टाविंशतिरेवाधः क्षितेनरकोटयः ।
सप्तमस्य तलस्याते घोरे तमसि संस्थिताः ।६२
रौरवप्रभृतीनां च नरकाणां सत् स्मृतम् ।
चत्वारिंशत्ससधिकं महानरकमण्डलम् ।६३
येषु पापाः प्रपच्यन्ते नरा कर्मानुरूपतः ।
यातनाभिर्विचित्राभिराकर्मप्रक्षयाद्भृशम् ।६४

फिर यमराज अपने दूतों को आज्ञा देते हैं-हे प्रचण्ड! हे महाचन्ड! इन राजाओं को पकड़कर नरक की अग्नि में क्रम से डाल कर पापों से इनका विशेष शोधन कर डालो।५७। इसके अनन्तर उन दूतों ने शीघ्र ही उठाकर राजाओं के पैर पकड़कर अत्यन्त वेग से घुमाकर ऊपर को फैंक दिया और पकड़ कर पूरे जोर से अच्छी तरह तपे हुए शिला तल पर वज्र से महाद्रूप की भाँति वेग से स्फालन करते हैं अर्थात् पंछाँटते हैं।५८-५९। इसके अनन्तर वह जर्जरी कृत होकर रक्त के स्रोतों से स्रवता है अर्थात् शरीर जर्जर हो जाता है कि उसके खून के सोते चूने लगते हैं। वह राजा संज्ञा से हीन हो जाता है यानी वेहोश होता है और फिर वह प्राणी चेष्टासे रहित जैसा हो जाता है।६०। फिर उसे वायु का स्पर्श होता है तो वह फिर धीरे से उज्जीवित हो जाता है। इसके बाद उसके किये हुए पापों की विशुद्धि करने के लिए उसे नरकों के समुद्र में फैंक दिया जाता है।६१। इस भूमण्डल के नीचे के भाग में अट्ठाईस नरको की कोटियां है जो कि सप्तम तल के अन्त में घोर अन्धकार में संस्थित है।६१। रौरव आदि सौ नरक बताये गये हैं और चालीस अधिक वाला महान् नरकों आ मण्डप होता है।६२। जिन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नरकों में नर अपने कर्मों के अनुरूप विचित्र प्रकार की यातनाओं से पीड़ित किये जाते हैं जब तक कि उनके कर्मों का भय नहीं होता है, बार-बार भोगते रहा करते हैं ।६४।

भृशं बभुक्षया पीड़ा मूर्च्छयातिपिपासया ।
अत्युष्णेनातिशीतेन पापानां स्मरेण च ।६५
एवमादिमहावीरा यातनाः पापकारिणः ।
लकैकें नरके चैव शतशोथ सहस्रशः ।६६
प्रत्येक यामनाश्चित्राः सर्वेषु नरकेषु च ।
कष्टं वर्षशतेनापि सोढुं सर्वश्च नारके ।६७
एते च विविभैर्वीरैर्यात्यमानाश्च कर्मभिः ।
म्रियन्ते नैव पापिष्ठाः विविधाः पापकारिणः ।६८
महाघोराभिघोराख्याः कालाग्निदृशोपमाः ।
श्चुततंरेतैर्महारौद्रे म्रियन्तै मृदुचेतसः ।६९
ततस्तेनात्र कथिताःपापा गच्छति तान्स्वयम् ।
पुत्रमित्रकलत्रार्थं यदा पृण्य त्वपाकृतम् ।७०
एकाकी दह्यते तेन न च पत्यीति तानि सः ।
कात्मना च कृतं पाप भोक्तव्यं ध्रुवमात्मना ।७१

अत्यन्त भूख से पीड़ा और अत्यन्त पियास से मूर्च्छा तथा अति उष्ण और अति शीत पापों के स्मरण से इस प्रकार की महान् घोर यातनायें पाप करने वाले एक-एक नरक में भोगते हैं जो कि सैकड़ों और सहस्रों की संख्या में हैं। प्रत्येक नरक में विचित्र यातनायें होती हैं। समस्त नरकों में सैकड़ों वर्षकष्ट सहन करना पड़ता है और सभी को नरक में इसी तरह से भोगना होता है ।६५-६७। ये नरकी प्राणी नरक में विविध प्रकार के कर्मों से जो कि अत्यन्त घोर होते हैं यातना पाये हुए पाप करने वाले पापी मरते नहीं हैं ।६८। महा घोर और अभिघोर नाम वाले नरक कालाग्नि के सदृश उपमा वाले हैं इ महान् रौद्र के सुनने से ही मृदु चित्तवाले मर जाया करते हैं। इसलि यहाँ पर कहे हुए पाप स्वयं उनके पास जाते हैं। जब पुत्र और क

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के जिए पुण्य अपाकृत होता है ।६६-७०। एकाकी ही पापी उससे दग्ध होता है और वह उनको नहीं देखता है । अपनी आत्मा से किया हुआ पाप निश्चय ही आत्मा के योग्य होता है ।७१।

तत्किमन्योपघातार्थं मूढ़ पापं कृतं त्वया ।
एव दूतंरुपालब्धास्ते पृच्छति ततः पुनः ।७२
कियन्तं केन पापेन कालमन्त्रायते नरः ।
देवद्रव्यविनाशेन गुरुद्रोहादिकर्मभिः ।
पापात्सर्वेषु पच्यते नरकेष्वामहाक्षयात् ।७३
महापातकिनश्चापि सर्वेषु मरकेष्विह ।
आचद्रतारकं यावत्पीड्यन्ते विविधं वेधैः ।७४
महापतिकिनश्चान्ये नरकार्णवकोटिषु ।
चतुर्दशशु पच्यन्ते कल्पार्धं धैवधे ।७५
उपपातकिश्चापि तदर्धं यांति मानवाः ।
वेपपापैस्तदर्धं तु काला चापि तथाविधम् ।७६
तस्मात्पाप न कुर्वीत चञ्चले जीविते सति ।
पापेन हि ध्रुव याति नरकेषु नराः स्वयम् ।७७

हे मूढ़ ! तूने दूसरों को उपघात करने के लिए क्यों पाप किया था इस तरह यमराज के दूतों के द्वारा उपलब्ध किए अर्थात् उलाहना दिए गये थे फिर पूछते हैं ।७२। यहाँ पर मानव किस पाप से कितने समय तक ये यातना भोगता है । देवों के द्रव्य विनाश से और गुरुद्रोह आदि कर्मों से जो पाप होता है उससे समस्त नरकों में जब तक उस पाप का महाशय नहीं होता है यातनाएँ भोगी जाती हैं ।७३। और जो महापातकी होते हैं वे भी यहाँ समस्त नरकों में जब तक चन्द्र और तारागण रहते हैं जब तक विविध प्रकार के वन्धनों द्वारा पीड़ित किए जाते हैं ।७४। अन्यमहापातकी चौदह नरकार्णव कोटियों में विविध वधों द्वारा कल्पार्ध पर्यन्त पच्यमान होते हैं ।७५। जो उपहातका होते हैं वे अनव उसके-आधे समय तक वहाँ जाते हैं । जो शेष पापों के करने वाले हैं वे इसके भी आधे समय तक उसी प्रकार से पच्यमान हुआ करते

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं ।७६। इस कारण से इस मन के चञ्चल होने पर पाप कभी भी नहीं करना चाहिए । पाप करने पर तो उससे निश्चय ही नर स्वयं नरकों में जाया करते हैं ।७७।

य. करोति नरः पापं यस्मात्मा ध्रुवमप्रियः ।
पापस्येह फल दुल तद्भोक्तभ्यामिहात्मना ।७८
कथं त पापनिरता नरा रात्रिषु शेरते ।
मरणांतपित तेषां नरकी तीव्रयाताना ।७९
एवक्लिष्टविशुद्धाश्च शावशेषेण कर्मणा ।
ततः क्षिति समासाद्य जायते देहिनः पुनः ।
स्थावरा विविधाकारास्तृणगुल्मादिभेदता ।८०
तत्रानुभय दुःखानि जायते कीटयोनिषु ।
निष्क्रांताः कीटयो नभ्यो जायन्ते पक्षिणस्ततः ।८१
संलश्ष्टिाः पक्षि भावेन भवन्ति मगजादिष ।
मार्ग दुःखमतिक्रम्य जायन्त पशुयोनिषु ।८२
क्रमाद्गोयोनिमासाश जातन्ते माजवाः पुनः ।
कालांतरवशाद्यांति मानुष्यमतिदुर्लभम् ।८३
व्युतक्रमेणापि मावुष्यं प्राप्ते पुण्यगोचरात् ।
विचित्र गंतयः प्रोक्ताः कर्मणां गुरुलाघवात् ।८४

जो मनुष्य पाप कर्म करता है उसकी आत्मा निश्चय ही अप्रिय होती हैं क्योंकि वहाँ पर पाप का उस आत्माके द्वारा फल भोगने के योग्य होता है ।७८। इस प्रकार से वड़ा क्लिष्टता से विशुद्ध हुए शाव शेप कर्म के द्वारा फिर इसके बाद में देहधारी पुनः भूमण्डल में प्राप्त होकर उत्पन्न हुआ करते हैं । वे पापोंमें निरते रहने वाले मनुष्य रात्रि में कैसे सोते हैं क्योंकि मृत्यु के पश्चात् ही उनके लिए नारकी तीव्र यातना उपस्थित रहा करती है ।७९-८०। भूमण्डल में भी विविध आकार-प्रकार वाले स्थावर-तृण-गुल्म आदि के भेद वाले जीवन प्राप्त होते हैं । इन सबका अनुभव करके जहाँ कि बहुत तरह के दुःख रहा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते हैं फिर वे प्राणी कीट पतंग आदि योनियों में जन्म ग्रहण किया करते हैं। कीट योनियों से निकलकर वाद में पक्षियों के स्वरूप में जन्म लिया करते हैं। पक्षिमात्र से संश्लिष्ट से मृग आदिमें उत्पन्न हुआ करते हैं। इस तरह दुःख का अतिक्रमण करके फिर पशुओं की योनियों से उत्पन्न होते हैं।८१-८२। इस तरह क्रम से गौ योनि को प्राप्त करके फिर मानवका शरीर ग्रहण किया करते हैं। इस तरह समस्त योनियों में क्रम से पूरी परिक्रमा समाप्त करके कालान्तर के वशसे यह अत्यन्त दुर्लभ मनुष्य जीवन की प्राप्ति हुआ करती है।८३। पुण्य गोचर होने से इस नियम के व्युत्क्रम से भी कभी-कभी मनुष्य जीवन प्राप्त किया जाता है ये कर्मोंका जाल बड़ाही अद्भुत होताहै और इनकी गतियाँ भी बहुत विचित्र हुआ करती है। कर्मोंकी वृद्धि और लाघवभी हुआ करता है।८४।

मानुष्य यः सुमासद्य स्वर्गमोक्षशुसाधकम् ।
द्वयोदं साधयत्येकं स मृतस्तप्ने चिरम् ।८५
देवासुराणां सर्वेषा मानुष्यमतिदुर्ल्लभम् ।
तत्तसम्प्राप्य कथाः कुर्यान्न गच्छेन्नरकं यथा ।८६
स्वर्गापवर्गलाभाव याहि नास्ति समुद्यतः ।
स्वर्गस्य मलं मानुष्य तद्यत्नादनुपालयेत् ।८७
धर्ममूलेन मानुष्यं लब्ध्वा सर्वार्थसाधकम् ।
यदि लाभे न यत्नस्ते मूलं रक्षस्व वत्नतः ।८८
मनुष्यत्वे च विप्रत्वं यः सम्प्राप्यातिदुर्ल्लभम् ।
न करोत्यात्मन श्रेयः कोन्यस्तस्मादचेतनः ।८९
सर्वेषामेव देशानां मध्यदेशः परः स्मृतः ।
अतः स्वर्गश्च मोक्षश्च यशः संप्राप्यते नरैः ।९०
एतस्मिन्भारते पुण्य प्राप्य मानुष्यमध्रुवम् ।
यः कुर्यादात्मनः श्रेयस्तेनात्मा रक्षितः स्वयम् ।
यः कुर्यादात्मनः श्रेयस्तेनात्मा वंचितास्वयम् ।९१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुष्य का जीवन ही एक ऐसा है जो स्वर्ग और मोक्ष का प्रदान कराने वाला है इस अति दुर्लभ मनुष्य के जीवन को प्राप्त करके जो स्वर्ग और मोक्ष दोनों का साधन नहीं किया करता है वह मृत होकर बहुत समय तक तप्यमान हुआ करता है अर्थात् पीड़ाप्राप्त किया करता है ।८५। देव और असुर इस सभीको मनुष्य जीवन प्राप्त करना अत्यन्त दुर्लभ है । इस मनुष्य-जीवन को प्राप्त करके कथा करनी चाहिएजिससे नरक में जाना न पड़े ।८६। स्वर्ग और अपवर्ग के लाभ करने के लिए यदि मनुष्य समुद्यत नहीं होता हैं तो नरकगामी होना पड़ता है । स्वर्ग के मूल द्वारा मनुष्य का जीवन होता है इसलिए उसका वह यत्न से अनुपालन करना चाहिए।८७। धर्म के मूल से ही समस्त अर्थों के साधन् करने वाला मनुष्य जीवन प्राप्त हुआ करता है इसे प्राप्त करके भी यदि श्रेष्ठता लाभ करने में कोई यत्न नहीं है तो मूल की रक्षा तो यत्न से करनी ही चाहिए ।८८। मनुष्य के जीवन में भी विप्र का होना और अधिक दुर्लभ होता है । उसे जो प्राप्त कर लेता है अर्थात् ब्राह्मण का शरीर प्राप्त हो जाता है और इसे प्राप्त करके भी अपनी आत्माके कल्याण को नहीं किया करता है उससे अन्य कौन चेतना शून्य होगा? ।८९। समस्त देशों में मध्यदेशको पर अर्थात् श्रेष्ठ कहा गया है । इसमें स्वर्ग और मोक्ष तथा यश मनुष्यों के द्वारा प्राप्त किया जाता है ।९०। इस परम पुण्य मय भारत वर्ष अध्रुव मनुष्य जीवन प्राप्त करके जिस किसी से भी अपनी आत्मा का श्रेय किया है । उसने अपनी आत्मा की रक्षा करली है । जिसने अपनी अपनी आत्मा भा श्रेयसाधन नहीं किया है उसने स्वयं अपनी आत्मा को वंचित एवं प्रतारित कर दिया गया है ।९१।

भोगभूमिः स्मृता स्वः कर्मभूमिरिय मता ।
इह यत्क्रियते कर्म स्वर्गे तदुप्रभुज्यते ।९२
यावत्स्वास्थ्यं शरीरस्य ता वद्धर्मः समाचर ।
अस्वस्थश्चातियत्नेन किञ्चित्कर्तुं त्मुत्सहेतु ।९३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्रुवेण शरीरेण ह्यध्रुव य प्रसादयेत् ।
ध्रुवं तस्य परिभ्रष्टध्रुभं मष्टमेव च ।६४
आयुष खड्खडांनि निपतन्ति तवाग्रतः ।
अहोरात्रापदेशेन किमर्थं नानबुध्यसेः ।६५

यदा न ज्ञायते मृत्युः कदा कस्य भविष्यति ।
आकस्मिके हि मरणे धर्ति विदेत कस्तदा ।६६

परित्प्रज्य यदा सर्वमेकाको यास्यसि ध्रुवम् ।
न ददामि तदा कस्मात्पाथेयार्थमिदं धनम् ।६७

गृहीतदानपाथेया सुखं यांति महाध्वनि ।
अन्यथा क्लिश्यते जन्तुः पाथेयरहितः पथि ।६८

स्वर्ग में समस्त प्रकार के सुखों का साम्राज्य रहता है और पुण्यके प्रभाव से उन सुखों का उपभोग करने के लिए मनुष्य वहाँ आकर सीमित समय तक रहा करते हैं। अतः वह केवल भोगों की ही भूमि होती है। यह भूमण्डल अर्थात् मनुष्य लोक कर्मो के करने का क्षेत्र है इसलिए यह कर्म भूमि कहा गया है। यहाँ शुभ कर्म किए जातेहैं उनका फल ही स्वर्ग में प्राप्त होकर भोगा जाया करता है ।६२। शरीर में रोगादि की अनेक वाधाऐं साथ रहा करती हैं अतएव जब तक इस शरीर की स्वस्थता है तभी तक धर्म का आचरण कर लेना चाहिए । जब यह शरीर रोग एवं वार्द्धक्य आदिसे अस्वस्थ हो जाता है तो फिर अत्यन्त यत्न करने पर भी कुछ भी करने का उत्साह एवं शक्ति नहीं रहा करती है ।६३। यहशरीर तो अध्रुव अर्थात् अनित्यहै, इस अध्रुव शरीर से जो अध्रुव का ही अर्थात् अनित्य नाशवान वस्तुओं का ही साधन कियाकरताहै। उसका ध्रुवमोक्ष आदि तो परिभ्रष्ट हो ही जाता है क्योंकि उसने उनके प्राप्त करनेंका कोई प्रयत्नही नहीं कियाहै। और अध्रुव हैं जिसके प्राप्त करने में सारा जीवन व्यय कर दिया वह तो अध्रुव अर्थात् अनित्य ही है अर्थात नष्ट हो ही जाताहै। तात्पर्य यह है

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि इस तरह उसे जीवनमें कुछभी सार सम्प्राप्त नहीं होता है और वह यों ही चला जाता है ।६४। इस आयु के खण्ड खण्ड तेरे आगे निपतित होते हैं अर्थात् टुकड़े-२ करके वह आयु समाप्त देखते-२ होती रही है। रातदिन के बहाने से वह आयु हो तो समाप्त हुआ करती है किन्तु किसलिए मुझे इनका ज्ञान नहीं होता है ? ।६५। जबकि यह नहीं जाना जाता है कि यह मृत्यु किस समयमें किसकी हो जायेगी तो जब अचानक ही मृत्यु प्राप्त होगी तो उस समय से कौन तुझे धीरज प्राप्त कराएगा ? ।६६। उस समय में तो यहाँ पर ही यह सभी कुछ ठाट-बाट छोड़कर अकेले ही निश्चय रूप से जायगा इसलिए उस समय के वास्ते पाथेय के लिए इस धनको क्यों दान नहीं किया करताहै ।६७। जो तू वहाँदान धर्म करता है वही तुझे उस यमपुर के महामार्ग में पाथेयका काम देता है। जो दान धर्म के पाथेय को ग्रहण करने वाले व्यक्ति हैं वे सुखपूर्वक उस महामार्ग में जाया करते हैं। उनके अभाव में यह जन्तु पाथेय से रहित होता हुआ उस मार्ग में क्लेश प्राप्त किया करता है ।६८।

येषा दिजेन्द्रवाहिनी पूर्णभाँड़ा तु गच्छति ।
स्वर्गदेशस्य पुरतास्तेषा लाभः पदेपदे ।६६

इति ज्ञात्वा नरः पुण्यं कुर्यात्पापं विवर्जयेद् ।
पुण्येन याति देवत्वमपुण्यान्नरकं व्रजेत् ।१००

ये मनागपि देवेशं प्रसन्नः शरणं शिवम् ।
तेपि घोरं न पश्यन्ति समस्त वदन नराः ।१०१
किं पापैर्धहाधारैः किञ्चत्कालं शिवाज्ञया ।
भवतिप्रेत राजास्ततो यांति शिवालयम् ।१०२
ये पुनः सर्वभावेन प्रतिपन्न महेश्वरम् ।
न ते लिप्यन्ति पातेन पद्मपत्रमिवांभसा ।१०३
तस्माद्विवर्धयेद्भक्तिमीश्वरे सततं बुधः ।
तन्माहात्म्यविचारेण भवदोषविरागता ।१०४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पापानि पंच परमार्थतयैव पार्थ
दु:ख प्रदानि सुचिरं पितृ राजलोके ।
अन्यानि यानि चिरकालभयानकानि
वस्तुं न यान्ति किल तानि परिस्फुटानि ।१०५

जिनकी द्विजेन्द्र वाहिनी पूर्ण भण्ड वाली जाती है उनको स्वर्ग देश आगे पद-पद पर लाभ होता है ।९९। यह जानकर मनुष्य को पुण्य ही करना चाहिए और पाप को विवर्जित कर देना चाहिए । पुण्यने मानव देवत्व जो प्राप्त होता है और अपुण्य अर्थात् पापसे नरकमें जाया करता है ।१००। जो थोड़ा भी देवोंके ईपा शिव की शरण में प्रसन्न हो गयेहैं वे मनुष्य भी यमराज के महा घोर मुख को नहीं देखा करते हैं ।१०१। किन्तु महान् घोर पापों से शिव की आज्ञासे कुछ काल पर्यन्त प्रेतराजा होते हैं और इसके पश्चात् शिवके आलयको चले जाया करते हैं ।१०२। जो सर्वतोभावसे भगवान महेश्वर की प्रपतिम प्राप्त हो जाते हैं वे पाप जल से पद्मपत्र की भाँति लिप्त नहीं हुआ करते हैं ।१०३। इसलिये बुध पुरुष को ईश्वर में अपनी भक्ति निरन्तर वढ़ानी चाहिये । यह भव दोषके विभागसे अथवा उसके माहात्म्य को विचार करके शिवमें शक्ति भाव करना चाहिये ।१०४। हे पार्थ ! पाँच पाप परमार्थता के ही पितृ-राज के लोक में अधिक समय तक दुःखप्रद होते हैं अन्य जो भी पाप हैं वे चिरकाल तक भयानक होते हैं वे परिस्फुट रूप से कहने में नहीं आते हैं ।१०५।

———

शकट व्रत माहात्म्य

यदेतत्ते समाख्यातं गंभीर नरकार्णवम् ।
व्रतोपवासनियमप्लवेतीत्तीर्यंते सुखम् ।१
दुर्ल्लभं प्राप्य मानुष्यं विद्युत्पतनचञ्चलम् ।
तथात्मानं समादध्याद्भ्रश्यते न पुनर्यथा ।२
दानव्रतमयी कीर्तिर्यस्व स्यादिह देहिनः ।
परलोकेऽपि स तथा ज्ञायते ज्ञातिवर्द्धनः ।३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञायते नेहं नामुत्र व्रतस्वाध्यायवर्जितः ।
पुरुषः पुरुषव्याघ्र तस्ताद्व्रतपरो भवेत् ।४
अत्र ते कथयिष्यामि इतिहासं पुरातनम् ।
सिद्धेन सह सवादतवंष्यां ब्राह्मशस्य हि ।५
योगर्द्धिसिद्धया संसिद्धः कश्चित्सिद्धो महीतलम् ।
चचार विकृत कृत्वा वपुः परमभीषणम् ।६
निगीर्णदंतो लम्बोष्ठः पिंगाक्षस्तनुमूर्द्धजः ।
त्रुटितैककर्णो दुर्वणः शीर्णवस्त्रो महोदरः ।७
चिपिटाक्षः स्फुटपाज्जघाढ्यः कृशकर्पूरः ।
दिशः पश्यति सहृष्टो वभ्रामोत्भ्रांतचित्तवन् ।८

इस अध्याय में शकट व्रत के माहात्म्य का वर्णन किया जाता है। श्रीकृष्ण ने कहा—आपको यह गम्भीर नरकों के आगर का वर्णन करके बता दिया है। जिस समुद्रको व्रत उपवास और नियमोंके प्लव (नौका) से सुख पूर्वक उत्तीर्ण किया जाता है।१। यह मनुष्य का जीवन अत्यन्त दुर्लभ होता है इसको प्राप्त करके जोकि विद्युतके पतनके समान चंचल हैं उस प्रकारसे अपने आपको सावधान रखना चाहिये जिससे फिर भ्रष्ट न होने पावें।२। इस संसार में जिस देहधारी की व्रत और दानसे परिपूर्ण कीर्त्ति विद्यमान रहा करती हैं वह परलोकमें भी उसके द्वारा ज्ञाति का वर्णन करने वाला जाना जाता है।३। हे पुरुष व्याघ्र ! व्रत और स्वाध्याय में रहित पुरुष इस लोक में और परलोक में ही नहीं जाना जाता है। इस व्रत परायण होना ही चाहिए।४। इस विषयमें मैं तुमको एक अति रमणीय पुराना इतिहास कहता हूँ जो कि अवन्ती पुरी में एक ब्राह्मण का सिद्ध के साथ सम्बाद हुआ था।५। योगाद्धि सिद्धि से संसिद्ध कोई अपने शरीर को अत्यन्त विकृत और परम भीषण बना कर भूतल में विचरण किया करता था।६। निगीर्ण दाँतों वाला, लम्बे त्रुठित—दूर्व-शीर्ण वस्त्रों वाला और महान् उदर वाला एवं चिपिट नेत्रों वाला—स्फुटित पैर और आँखों से युक्त—कृश कर्पूर वाला तथा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिशाओंको देखकर परम प्रसन्न होता हुआ एक उद्भ्रान्त चित्त वालेकी तरह भ्रमण किया करता था।८।

मूलजालिकविप्रेण दृष्ट: पृष्टश्च को भवान्।
कदा स्वर्गात्समायात: केन कार्येण मे वद।९
कच्चिद्दृष्टा त्वया रंभा भाभासितदिगन्तरा।
चित्तसंमोहनकरी देवानामेकसुन्दरी।१०
गत्वा मद्वचनाद्वाच्या निर्वाच्या दोषदर्शिभि:।
आवन्त्यस्त्वा कुशलिनी पृच्छति स्म द्विजोत्तम:।११
सिद्ध: प्रसिद्धं तं विप्रं प्राहेदं विस्मयान्वित:।
कथं त्वयाऽहं विज्ञात: स्वर्गादभ्यागत: स्फुटम्।१२
ब्राह्मणास्तत मथोवाच विज्ञातोऽसि मया यथा।
तथा तेऽहं प्रवक्ष्यामि क्षीणाघौघावधारय।१३
गात्र विरूप स्याद्द्वितीयं वा स्वरूपत:।
दृष्ट्वा सर्वाङ्ग वैरूप्यं विज्ञातोऽसि ततो मया।१४

मूल जालिक नाम वाले विप्र ने उनको देखा तो उससे पूछा—आप कौन हैं? आप स्वर्ग से कब आये हैं आप यहाँ किस कार्य से आये हैं—यह सब मुझे बताइए।८। क्या आपने कहीं पर रम्भा को देखा है? जो कि अपनी दीप्ति से दिगन्तरों को भासित करने वाली है। तथा चित्त के सम्मोहन कर देने वाली है और देवों की एक ही सुन्दरी हैं।१०। आप जाकर मेरे वचन उससे कह देवें जो कि दोषदर्शियों के द्वारा निर्वाच्या है। एक अवन्ती पुरी का रहने वाला ब्राह्मण तुम्हारी कुशलता पूछता था।११। वह सिद्ध विस्मय में भरकर उस प्रसिद्ध विप्र से बोला-आपने मुझे कैसे जान लिया है कि मैं स्वर्ग से स्पष्टतया आया हूँ।१२। इसके अनन्तर उन ब्राह्मण ने उससे कहा कि मैंने जिस तरह से तुमको जान लिया है। अब मैं उसी को आपको ऐ क्षीण पापों के समूह वाले! बताता हूँ अब आप धारण करिए।१३। तीन गात्र को विरूप हैं पर द्वितीय स्वरूप से हैं। आपके सर्वाङ्गों की विरूपता को देखकर मैंने आपको पहिचान लिया है।२४।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्ल्लंघ्या प्रकृतिः साक्षादनुभूतकरी भवेत् ।
प्रकृतेरन्यथाभाव सर्वथा लक्ष्यते जनैः ।१५
विप्रस्यैवचः श्रुत्वा जगामादर्शन शनैः ।
पुनः कैश्चिदहोरात्रैराजगाम स ता पुरीम् ।१६
मूलजालकविप्रेण पृष्टः प्राहमरावतीम् ।
गतोऽहं पृष्ठवांस्तत्र रंभो विभ्रमकारिणीम् ।१७
शक्रस्यावसरे वृत्ते व्रजन्त्याः स्वगृहं मया ।
त्वत्सदेशः समाख्यातः सावदत्को न वेद्मि तम् ।१८
विद्यया कलया चापि पौरुषेण व्रतेन च ।
तमसा वा पुनात्मर्त्यो दिदि विज्ञायते चिरम् ।१९
ब्राह्मणस्तमथोवाच मुग्धा दग्धाग्निसम्भवा ।
न भक्षयामि शकटं ब्रतेनैतेन नेत्ति माम् ।२०
तस्यैतद्वचम् श्रुत्वा स सिद्धः सुविशुद्धधी ।
प्रहस्यामन्त्र तं जगामदर्शन पुनः ।२१

साक्षात् दुर्लंघ्या प्रकृति अनुभूति करने वाली होती है । प्रकृति का जो अन्यथा भाव है वह मनुष्यों के द्वारा लक्षित हो जाया करता है ।१५। विप्र के इस प्रकार के वचनों का श्रवण कर वह सिद्ध धीरे से अदर्शन को प्राप्त हो गया था । फिर कुछ अहोरात्र के पश्चात् उस पुरी में वह आया था ।१६। मूल जालिक विप्र के द्वारा पूछे गए उसने कहा—अमरावती को गया था और वहाँ पर मैंने विभ्रम कारिणी रम्भा से पूछा था ।१७। इन्द्र की सभा के समय समाप्त हो जाने पर जिस समय वह अपने घर जा रही थी मैंने उस समय में आपका सन्देश उससे कहा था । उसने कहा मैं उसको यही जानती हूँ ।१८। विद्या से—कला—से-पौरुष से और व्रत से अथवा तप से मनुष्य पुमान् स्वर्ग में चिरकाल में जाना जाया करता है ।१९। इसके पश्चात ब्राह्मण ने उस सिद्ध से कहा-वह दग्ध अग्नि से उत्पन्न होने वाली मुग्धा में, 'शकट को नहीं खाता हूँ'—इस व्रत से मुझ को जानती हैं ।२०। उस

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्राह्मण के इस वचनको सुनकर सुविशुद्ध बुद्धि वाला वह सिद्ध हँसकर उस विप्र को आमन्त्रित कर फिर अदर्शन को प्राप्त होगया था ।२१।

कदाच्चिरता तेन स्वर्गमार्गं यद्दच्छया ।
दृष्ट्वा रंभा द्विजप्रोक्तं सर्वमेव निवेदितम् ।२२
को जानामि त विप्रं शकटव्रतचारिणम् ।
मूलजालैवर्तपंत महाकालवनाश्रायम् ।२३
दर्शनादर्थं संभाषादुपकारात्जहासनात् ।
चतुर्धा स्नेहनिर्बंधो नृणां जायतेऽधिकः ।४२
न दर्शनं न संभाषा कदाचित्सह तेन मे ।
नामश्रवणमात्रेण स्नेहः संदर्शितो महान् ।२५
इत्येवमुक्त्वा रंभोरू रंभा जगभारिणोनिकम् ।
विमस्यत्फुल्लनयना जगाम गजनामि ।२६
गत्वा निवेदयामास स्नेहवतविचेष्टितम् ।
पुरतो रुद्धहृतया ब्राह्मणस्य च धीमतः ।२७
शक्रः प्रोवाच चावंगी गीर्वाणहृदयगाम् ।
किमानयामि ताथिप्रं समीप तव सुव्रतम् ।२८

किसी समय यद्दच्छा ने स्वर्ग के मार्ग में विचरण करते हुए उसने रम्भाको देखा और उसने द्विजके द्वारा कहा हुआ समस्त वृत्तान्त उससे निवेदन कर दिया था ।२२। रम्भा ने कहा—मैं उस संकट व्रत के करने वाले ब्राह्मण को नहीं जानती हूँ कि वह कौन हैं जो कि मूल जालों का अपवर्त्तन करने वाला है और महाकाल के वन में आश्रय करने वाला है ।२६। दर्शन से—सम्भाषण करने से-उपकार करने से साथ बैठने से चार प्रकार से ही मनुष्यों का अधिक निवन्ध होता है ।२४। न तो कभी दर्शन ही हुआ और न कभी सम्भाषण हुआ तथा किसी समय साथ रहना भी मेरा उससे साथ नहीं हुआ है। केवल नाम के श्रवण से ही ऐसा महान् स्नेह दिखाया है इतना ही कहकर रम्भा के समान उरुओं वाली जगभारिणोऽतिक रम्भा विस्मय से उत्फल्ल नेत्र वाली गज की भाँति गमन करने वाली चली गई थी ।२५-२६। उसने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाकर इन्द्र के आगे रुद्ध हृदय वाली रम्भा ने धीमान ब्राह्मण का स्नेह व्रत का विचेष्टित निवेदन कर दिया था ।२७। इन्द्र ने सुन्दर अङ्गों वाली और देवों की हृदयङ्गमा रम्भा से कहा—क्या उस सुव्रत विप्र को तुम्हारे पास ले आवें ।२८।

दिव्यमाल्यांवरधरं दिव्यस्रगनुलेषनम् ।
विमा वरमोप्य दर्शयामास तं पुनः ।२९
शकटव्रतमाहात्म्योमत्पेतत्त मयोदितम् ।३०
राज्यश्रियं जगयि सर्वजनोपभोग्यामा-
प्नोति शक्रशिवकेशवयोर्निवासम् ।
नाप्राप्यमस्ति भुवने सुदृव्रतानां ।
तस्मात्सदा व्रतपरेणनरेण भाव्यम् ।३१

इसके पश्चात दिव्य माल्य और दिव्य वस्त्र धारण करने वाले दिव्य स्रक्र और अनुलेपन वाले उस विप्र को एक श्रेष्ठ विमान पर चढ़ाकर दिखलाया था ।२९। वह शंकट व्रत का माहात्म्य है । जो कि मैंने तुमको बता दिया है ।३०। व्रत के प्रभाव से मनुष्य सब जनों के उपभोग करने के राज्य श्री को प्राप्त किया करता है । इस व्रत के प्रभाव से इन्द्रशिव और केशव के निवास स्थान की प्राप्ति कर लेता है—जो सुदृढ़ व्रत वाले हैं उनको भवन है कुछ भी अप्राप्त तो होता ही नहीं है इसलिए मनुष्य को सदा व्रत परायण अवश्य ही होना चाहिए ।

तिलक व्रत का माहात्म्य

ब्रह्मेश केशवादीनां गौर्यां गणपतेस्तथा ।
दुर्गासूर्याग्निसोमाना व्रतानि मधुसूदन ।१
शास्त्रांतरेषु दृष्टानि तव बुद्धिगतानि च ।
तानि सर्वाणि मे देव वद देवकिनन्दन ।२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिपदात्क्रमयोगेन विहिता यस्य या तिथि ।
देवस्य तस्यां यत्कार्यं तदशेषेण कीर्तय ।३
वसन्ते किंशुकाशोकशोभने प्रतिपत्तिथिः ।
शुक्ला तस्यां प्रकुर्वीत स्नानं नियमतत्परः ।४
नारी नरो वा राजेन्द्र संतर्प्य पितृदेवताः ।
नद्यास्तीरे तड़ागे वा गृहे वा नियतात्मवान् ।५
पिष्टतकेन विलिखेद्वत्सरं पुरुषाकृतिम् ।
ततश्चन्दनचूर्णेन पुष्पाधूपादिनाचयेत् ।६
दीपैश्चापि सन गेद्यै पूजयेद्वत्सरं तदा ।
मासतुं नामाभिः पश्चान्नस्यारांतयोजितैः ।
पूजयेद्ब्राह्मणान्विद्वान्मन्त्रैर्वेदोदितैः शुभैः ।७

इस अध्याय में तिलक व्रत के माहात्म्य का वर्णन किया जाता है। युधिष्ठिर ने कहा—हे मधूसूदन ! ब्रह्मा—ईश—केशव आदि का तथा गौरी और गणपति का एवं दुर्गा-सूर्य-अग्नि और सोम का व्रत शास्त्रान्तरों में देखा गया है और ये सब व्रत आपके बुद्धिगत ही हैं। हे देवकी नन्दन। हे देव ! उस सबको कृपाकर मुझे बताइये ।१-२। प्रतिपदा तिथि के क्रम से जिस देवता की जो न तिथि हो उस तिथि में देवता का जो भी कार्य हो वह पूर्ण रूप से वर्णन कीजिएगा ।३। श्रीकृष्ण ने कहा-वसन्त ऋतु में जो कि ढाक और अशोक के वृक्षों से परम शोभाशाली ऋतु होती है प्रतिदिन तिथि वह भी शुक्ला हो उनमें स्नान नियम से तत्पर होकर करना चाहिए ।४। हे राजेन्द्र ! नारी हो अथवा नर हो पहिले पितृगण का भली-भाँति तर्पण करे। नियत आत्मा वाला होकर नदी के तट पर-तड़ाग पर अथवा गृह में तर्पण करना चाहिए ।५। सुपिष्ठक से वत्सर को एक पुरुष की प्रकृति वाला लिखना चाहिए । फिर चन्दन का चूरा और पुष्पाक्षत गन्ध आदि पूजन के समस्त उपचारों के द्वारा अर्चन करना चाहिये ।६। उस समय वत्सर की दीप नैवेद्यों के द्वारा पूजा करनी चाहिये। मास-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋतु से नामों से आरान्त योजियों के द्वारा पीछे नमस्कार करके विद्वान् ब्राह्मणों की शुभ वैदिक मन्त्रों द्वारा पूजा करनी चाहिये ।७।

संवत्सरोऽसि परिवत्सरोसीडाबत्सरोऽ
भित्सरोऽसि उषसस्ते कल्पन्तामृत
अहोरात्राम्ते कल्पन्तामर्धमासस्ते
कल्पतां मासास्ते कल्पन्तामृत
वास्ते कल्पत्तां संवत्सरस्ते कल्पताम् ।८
एवमभ्यर्च्य वासोभिः पश्चात्तमभिवेष्टयेत् ।
कालोद्भवमूलफलैर्नैवेद्यमोदकादिभिः ।६
ततस्तं प्रार्थयेत्पश्चात्पुरः स्थित्वा कृतांजलिः ।
भगवस्त्वत्प्रसादेन वर्षं शुभदयस्तु मे ।१०
एवमुक्त्वा यथाशक्ति दत्त्वाद्विप्राय दक्षिणाम् ।
ललाटपट्टे तिलकं कुर्यच्चांदनपकजम् ।११
ततः प्रभृत्यनुदिनं तिलकालंकृतं मुखम् ।
धार्यं सम्वत्सरे यावच्चशिनेव नभस्तलम् ।१२
एवं नरो वा नारी वा व्रतमेतस्सामाचरेत् ।
सदैव पुरुष व्याघ्र भोगान्भुवि भुनवक्त्य ।१३
भूताः प्रेताः पिशाचाश्च दुर्गारा वैरिणो ग्रहाः ।
निरथका भवंत्येने तिलकं वोक्ष्य तत्क्षणात् ।१४

आप सम्बत्सर है—परिवत्सर हैं—इडावत्सर हैं—अभित्सर है—आपके उषा कल्पित होवें। आपके अहोरात्र कल्पित होवें। आप अर्ध मास कल्पित होवें। आपके अहोरात्र, अर्धमास मास और सम्वत्सर कल्पित होवें। इस प्रकार से उसकी अभ्यर्चना करके वस्त्रों से उसको अभिवेष्ठित करना चाहिए। समय पर उत्पन्न होने वाले फल-मूल—नैवेद्य और मोदक आदि को समर्पित करें।८-६। इसके पश्चात् उसकी प्रार्थना करनी चाहिए और उसके आगे हाथों को जोड़कर स्थित होवे। हे भगवान् ! आपके प्रसाद से मुझे यह पूरा वर्ष शुभ देने वाला होवे ।१०। इस प्रकार से कहकर यथा शक्ति ब्राह्मण के लिए दक्षिणा देनी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

चाहिए । ललाट पट्ट में चन्दन पंकज तिलक करे । उस दिन से लेकर अनुदित मुख को तिलक से अलंकृत करना चाहिए ।११। जब तक सम्वत्सर हो तब तक नभस्तल कोशिश की भाँति धारण करना चाहिए इस प्रकार से नर या नारी इस व्रत का समाचरण करे । हे पुरुषव्याघ्र वह व्यक्ति सदा ही भूतल में भोगों का उपभोग करता है ।१२-१३। भूतल-प्रेत और पिशाच दुर्वाह शत्रुगण और ग्रह उसी क्षण में तिलक को देखकर सब निरर्थक हो जाया करते हैं ।१४।

पूर्वमासोन्महीपालो नाम्नां शत्रुञ्जयो जयी ।
चित्रलेखेनि तस्याभूद्भार्या चारित्रभूषणा ।१५
तया व्रतमिद चैत्रे गृहीतं द्विजसन्निधौ ।
संवत्सर पूजयत्वा धृत्वा हृदि जनार्दनम् ।१६
असयुः क्षेप्तुकामो वा ततागच्छति यः पुरः ।
प्रयाति प्रियकृत्तास्या दृष्ट्वा सुखमधोमुखः ।१७
सपत्नीदर्पापहरां वशीकृतमहीतला ।
भर्तुरिष्टा प्रहृष्टा च सुखमास्ते निराकुला ।१८
तात्वत्करेणाभिभूतो भर्ता पुत्रः संवेदनः ।
शिरोऽर्त्या नाशं प्रवातः सुहृदां दुःखदायकः ।१९
धर्मराजपुरं प्राप्तुं स भूतापहारकः ।
तस्मिन्क्षणे महाराज धर्मराज्य किंकराः ।२०
तस्य द्वारमनुप्राप्ताः प्रवेशु गृहमज्जसा ।
शत्रुञ्जायं समानेतु कालमृत्युपुरः सदाः ।२१

पहिले जयशील शत्रुओं को जीतने वाला महीपाल नाम वाला राजा था । उसकी चरित्र भूषण वाली चित्रलेखा नाम भार्या थी ।१५। उसने ब्राह्मण को सन्निधि में चैत्र के महीने में इस व्रत को ग्रहण किया था एक सम्वत्सर पर्यन्त पूजन करके हृदय में भगवान जनार्दन का ध्यान किया था ।१६। कोई भी असूया (निन्दा) करने वाले क्षेप करने की कामना वाला जन उसके आगे आता था तो उसका मुख

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखकर नीचे को मुँह करके उसका प्रिय होकर चला जाया करता ।१७ वह चित्रलेखा अपनी सपत्नियों के दर्प को हरण करने वाली और समस्त महीबल को वशीकृत करने वाली थी । परम प्रसन्न और अपने स्वामी की अत्यन्त इष्ट होकर निराकुल सुख पूर्वक रहा करती थी ।१८। तब तक कर से अतिभूत स्वामी और वेदना से युक्त सत्र शिर को आर्ति (दुःख से नाश को प्राप्त हो गया जो कि सुहृदों को बहुत ही दुःखदायक हुआ था ।१९। उसी क्षण में समस्त प्राणियों के अपहरण करने वाले महाराज धर्मराज सेवक धर्मराज के पुर को प्राप्त करने के लिए उसके द्वार पर आये थे जो कि तुरन्त ही उसके घर में प्रवेश करने वाले थे ।, वे काल मृत्यु को आगे लिए हुए थे और शत्रुञ्जय को लेने को आये थे ।२१।

पार्श्वस्थितां चित्रलेखां तिलकाङ्कितांननाम् ।
दृष्ट्वा प्रनष्टसंकल्पाः परावृत्य गताः पुनः ।२२
गतेषु तेषु सः नृपः पुत्रेण सह भारत ।
नारुजो दुभृजे भोगान्पूर्वकर्मार्जिताञ्छुभान् ।२३
एतद्व्रत महाभाग कीर्तित ते महोदयम् ।
शंकरेण समाख्यातं मम पूर्वं युधिष्ठिर ।२४
एतत्त्रिलोकतिलकालभूशणं ते ।
ख्यातं व्रत सकलदुःख पर च ।
इत्थं समाचारति यः स सुख विहृत्य ।
मर्त्यः प्रायातिः पद्माप दि पद्मयोनेः ।२५

उस समय उसके समीप में स्थित तिलक से अलंकृत मुख वाली चित्रलेखा वहाँ पर थी उसको देखकर वे अपने साथ लिवाने जाने वाले संकल्प को नष्ट करके पुनः वापिस लौटकर चले गये । उनके चले जाने पर हे भारत ! वह राजपुत्र के साथ रोग रहित होकर पूर्व कर्म से अर्जित शुभ भोगों को भोगनें लगा था ।२२-२३। हे महाभाग ! यह महान् उदय वाला व्रत तुमको बतला दिया है । हे युधिष्ठर ! मुझे पहिले शङ्कर ने यह व्रत कहा था ।२४। यह त्रिलोक तिलकालक भूषण मैंने तुमसे कह दिया है । यह व्रत समस्त दुःखों का हरने वाला

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रधान है । जो कोई भी पुरुष, इस व्रत का उच्चारण किया करता है वह मनुष्य सुख पूर्वक विहार करके मृत्यु होने पर भगवान पद्मयोनि के पद को प्राप्त किया करता है ।२५।

अशोक व्रत का माहात्म्य

आश्वयुच्छुक्लपक्षस्य प्रथमेऽह्नि दिनोदने ।
अशोकं पूजये‌द्वृक्षं प्ररूढशुभपल्लवम् ।१
विरूढैः सप्तधान्यैश्च गुण कैर्मोदकं शुभैः ।
फलैः कालोद्भवैर्दिव्यैर्नारिकेरैः सदाडिमैः २
पुष्पधूपादिना तद्वपूजतेत्ताद्विवेऽनघः ।
अशोक पांडवश्रेष्ठ शोक नाप्नोति कुत्रचित् ।३
पितृभ्रातृपतिश्वश्रू श्वशूराणां तथैव च ।
अशोक शोकशमनो भवं सर्वत्र न कुले: ।४
दत्पुच्चार्य ततो दद्यादर्घ्यं श्रद्धासमन्वितम्
पातकाभिरलंकृत्य प्रच्छावशुभवासना ।५
दमयंती यथा स्वाहा यथा वेदवती सती ।
तथाशोकव्रतादस्माज्जायते पतिवल्लभा ६
वने व्रजत्या सद्धर्मः सीतया सप्रदर्शितः ।
दृष्ट्वालोकं वने प्रार्थपल्लवालं कृतांवरम् ।७
कृत्वा समीपे भर्तारं देवरं च तिलाक्षतैः ।
दोपालतनैवेणंधूपमूत्रफलार्चनैः ।८
अर्चयित्वा ह्यथितोऽसौ रक्ताशोको युधिष्ठर ।
मैथिल्या प्राञ्जालिभूत्वा शृण्वतो राघवस्य च ।६

इस अध्याय में अशोक व्रत के महात्म्य का वर्णन किया जाता है । श्रीकृष्ण ने कहा—आश्विन मास के शुक्लपक्ष में, प्रथम दिन में दिन के उदय होते समय में ही प्रारूढ़ शुभ पल्लवों के समन्वित अशोकवृक्ष का पूजन करना चाहिए ।१। विरूढ़ किए हुए सात प्रकार के धान्यों से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुणकों से तथा शुभ कोदको के द्वारा एवं फल—उस समय में समुत्पन्न होने वाले दिव्य नारियलों से जो दाड़ियों के सहित हो पुष्प-धूप—दीप-गन्ध-अक्षत आदि सम्पूर्ण के समुचित उपचारों से हे अनघ ! उसी भाँति उस दिन में उसका पूजन करना चाहिए। हे पाण्डव श्रेष्ठ ! वह अशोक की पूजा करने वाला व्यक्ति कहीं पर भी कभी शोक को को प्राप्त नहीं हुआ करता है अर्थात् उसे कभी शोक होने का अवसर ही नहीं आता है।२-३। अशोक का अर्चन करने से समय में पूजा करने वालें को उससे प्रार्थना करनी चाहिए—हे अशोक ! आप हमारे कुल में शोक के शमन करने वाले सर्वत्र होवें।४। यह प्रार्थना करके अनन्तर फिर अशोक को अर्घ्य देवे जो कि पूर्ण श्रद्धा के भाव से समन्वित होना चाहिए। पताकाओं से खूब अच्छी तरह अलंकृत करके सुन्दर वस्त्र से उसका प्रच्छादान करना चाहिए।५। जिस प्रकार राजा नल की स्त्री दमयन्ती थी और स्वाहा तथा सती वेदवती थी वैसे ही इस अशोक के व्रत से स्त्री पति वल्लभा हो जाया करती है।६। वन में गमन करने वाली जनक नन्दिनी सीता ने सद्धर्म भली भांति दर्शित किया। उसने वन में अशोक वृक्ष को देखकर जो कि पल्लवों से अलंकृत अम्बर था समीप में स्वामी को और देवर को स्थित करके तिल-अक्षत-दीप-अलंकार-नैवेद्य-धूप-सूत्र और फलों से जो अर्चन के उपचार थे अशोक पूजन करके हे युधिष्ठिर ! उस रक्ताशोक से जानकी ने प्रार्थना की थी। श्री राघवेन्द्र के श्रवण करते हुए मैथिली ने हाथ जोड़कर यह प्रार्थना की थी।७-९।

चिरं जीवतु मे वृद्धाः श्वशुरः कौशलेश्वरः।
भर्ता मे देवराश्चैव जीवन्तु भरतादयः।
कौशल्यामपि जीवन्ती पश्येयमिति मैथिली।१०
ययाचे त महाभगा द्रुमं सत्योपयाचनम्।
प्रदक्षिणमुपावृष्य ततस्ते प्रययुः पुनः।११
एवमन्यापि या नारी पूजयेद्भवितद्रुम।
तिलतंडुलसमिश्रै ववगोधूमसर्षपैः।१२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

क्षमाप्य वन्दयेन्मूलं पावनं रक्तपल्लवम् ।
मन्त्रेणानेन कौन्तेयं प्रणम्य स्त्री पतिव्रता ।१३
महावृक्ष महाशाख मकरध्वजमन्दिर ।
प्रार्थय त्वां महाभाग वनोपनभूषण ।१४
एवमाभाष्य तं वृक्ष दत्वा विप्राय दक्षिणाम् ।
सखीभि: सहिता साध्वी यत: स्वभवन व्रजेत् ।१५
यां: शाकनाशनमशोकतरुं तरुण्य:
संपूजयन्त कुसुमाक्षतधूपदीपं: ।
ता: प्राप्य सौख्यमतुलं भुवि भर्तृजातं
गौरीपदं प्रमुदिता पुनरावंति ।१६

हे अशोक कौशल देश के अधीश्वर मेरे वृद्ध श्वसुर महाराज दशरथ चिरकाल पर्यन्त जीवित रहें। मेरे स्वामी और देवर भरत आदि सब अधिकाधिक पर्यन्त जीवित रहें। मैं अपनी सास कौशल्या को भी जीवित अवस्था में रहने वाली देखना चाहती हूँ। यह उस मैथिली ने जो महान भाग्य वाली थी उस सत्य उपयाचन वाले द्रुम से याचना की थी। फिर इसके पश्चात् प्रदक्षिणा करके वे सभी चले गये थे ।१०-११। इसी विधि-विधान से अन्य भी कोई नारी इस भू-मण्डल में उस अशोक द्रुम का पूजन किया करती है जो पूजन तिल तण्डुल से मिले हुए यव-गोधूम (गेहूँ) और सर्षपों से किया जाता है। और उससे क्षमपन की याचना करके रक्त पल्लवों वाले पादप के मूल की बन्दना करती है। हे कौन्तेय! निम्न मन्त्र के द्वारा प्रणाम करके सती पतिव्रता होती है ।१२-१३। हे महावृक्ष शाखाओं वाले! हे मकरध्वज के मन्दिर! हे महान भाग्य! आप वन और उपवन के भूषण मैं आपकी प्रार्थना करती हूं। इस प्रकार से वृक्ष की प्रार्थना करके विप्र को दक्षिणा देनी चाहिए इसके पश्चात अपनी सहेलियों के साथ उस साध्वी को फिर अपने भवन से चले जाना चाहिए ।१४-१५। जो तरुणियाँ शोक के नाश करने वाले अशोक तरु को कुसुम औरअक्षत तथा धूप और दीपों के द्वारा भली-भाँति पूजन किया करती है वे इस

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूतल में स्वामी से प्राप्त होने वाला अतुल सुख प्राप्त करके फिर प्रभु-वित होकर गौरी के पद को प्राप्त किया करती है।।१६।

बृहत्तपोव्रत का माहात्म्य

अथ पापापहं वक्ष्ये बृहद्व्रतमनुत्तमम्।
सुरासुरमुनीनां च दुर्लभं विधिना शृणु।१
पर्वण्याश्वयुजस्याते पायसं घृतसंयुतम्।
नक्तं भुञ्जीत शुद्धात्मा ओदनं वक्षवान्यितम्।२
आचम्याथ शुचिर्भूत्वा बिल्वं दंतधावनम्।
भक्षयित्वा महादेवं प्रणम्येदमुदीरयेत्।३
अहं देवव्रतमिदं कर्तुमिच्छामि शाश्वतम्।
तवाज्ञया महादेव यथा निर्वहते कुरु।४
इत्येवं नियमं कृत्वा यावद्वर्षाणि षोडश।
तिथयः प्रतिपत्पूर्वा भजिस्यामीत्यतुक्रमात्।५
ततो मार्गशिरे प्रतिपद्वरेऽहनि।
पृष्ट्वा गुरुं चोपवास महादेवं स्मरन्मुहुः।६
स्नात्वा देवं समभ्यर्च्य रात्रौ प्रज्वाल्य दीपकान्।
यमुनां च महादेवं नत्वा पश्चान्निमन्त्रयेत्।७
महादेवरतान्विप्रान्सपत्नीकान्यतव्रतान्।
षोडशाष्टौ तदर्धं वा एकं वा शक्त्यपेक्षया।८
आमन्त्र्य स्वगृहं गत्वा महादेवं स्मरन्क्षितौ।
शुचिवस्त्रास्तृतीयां तु निराहारो निशिस्वपत्।९

इस अध्याय में बृहत्तपोव्रत के समय का वर्णन किया जाता है। भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा—इसके अनन्तर में सम्पूर्ण पापों के अपहरण करने वाले सर्वोत्तम बृहत्तपोव्रतके विषयका वर्णन करता हूँ। यह व्रत सुर और असुर और मुनिगण सबके लिए ही अत्यन्त दुर्लभ है। अब इसे विधि पूर्वक श्रवण करो।१। आश्विन मास के अन्त पर्व में घृत से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयुक्त पायस रात्रि के समय में खानी चाहिए। शुद्ध आत्मा वाले को वैक्षवान्वित ओदन का भोजन करना चाहिए।२। आचमन कर और परम होकर विल्व वृक्ष की दाँतुन चबाकर श्री महादेव को प्रणाम करके यह कहे।३। मैं उस शाश्वत देव व्रत को करने की इच्छा करता हूँ। हे महादेव ! आपकी आज्ञा ऐसी है उसी कारण से इसे मैं करना चाहता हूं। जिस तरह से यह व्रत पूर्ण सांग सम्पादन हो जावे और मैं पूरी तरह इसका निर्वाह कर लूं और आप ऐसी कृपा करें।४। इस प्रकार से नियम करके जब सोलह वर्ष हों पहली प्रतिपदा तिथियों को भजन करूंगा—इस अनुक्रम से करें।५। इसके अनन्तर मार्गशीर्ष मास में प्रतिपदा में दूसरे दिन गुरु से उपवास के विषय में पूछकर श्री महादेव का बार-बार स्मरण करे। स्नान करके देवता की अर्चना करे रात्रि में दीपकों को प्रज्वलित करके यमुना और महादेव को प्रणाम करके पीछे निमन्त्रित करना चाहिए।६-७। श्री महादेव में रति रखने वाले-यतव्रत विप्रों को जो अपनी पत्नियोंके सहित हों, सोहल-आठ या इसके भी आधे चार या ऐसी शक्ति हो उसके अनुसार एक ही विप्र को आमन्त्रित करके अपने घर जाये। श्रीमहादेव का स्मरण करता हुआ रात्रि में पवित्र वस्त्र के बिछौने वाली भूमि में निराहार—शयन करना चाहिए।८।

यमाद्वितीया व्रत का माहात्म्य

संत्न्यास्तिथयः पार्थ द्वितीयाद्याः परिश्रु त्वा
मासैश्चतुर्भिश्चत्वारः प्रावृट्छुक्लाः क्लमापाः।१
गोपिताश्च सदा लोके न प्रीस्ताश्च मया क्वचित्।
प्रकाशयामि ताः पार्थ शृणु सर्वा मता हि ता।२
एका तु श्रावणे मासि अन्या भाद्रपदे मथा।
अपराश्वयुजे मासि चतुर्थी कार्तिके भवेत्।३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रावणे कलुषा नाम ओष्ठापादेच गोर्मला ।
आश्विने प्रेमसंचारा कार्तिके च यमा स्मृता ।४
कस्मात्सा कलुषा प्रोक्ता कस्मात्सागीर्मला मता ।
कस्मात्सा प्रेतसंचारा कस्माद्याम्या प्रकीर्तिता ।३
सुरा वृत्रवधे वृत्तो प्राप्त राज्ये पुरंजरे ।
ब्रह्महत्यापनोदार्थमश्वमेधे प्रवर्तिते ।६
क्रोधादिन्द्रेण वज्रेण ब्रह्महत्या निषूदिता ।
षटखण्डा च कृता क्षिप्ता वृक्षे तोये महीतले ।७

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा—हे पार्थ ! द्वितीय से आदि लेकर अन्य तिथियां बहुत ही परिश्रुति हैं । चार मासों के द्वारा वर्षा कालके शुक्ल कलम के अपहरण करने वाले होते हैं ।१। ये सदा लोक में परम गुप्त रक्खे गये हैं और मैंने कहीं भी इनको नहीं कहा है। हे पार्थ !उनकोमैं अब प्रकाश में लाता हूं सबको मेरे द्वारा तुम श्रवण करो ।२। एक तिथि तो श्रावण मासमें होती है अन्य भाद्रपद में है दूसरी आश्विन में होती है एवं चौथी कार्त्तिक मासमें है।२। श्रावणमें जो है उसका कलुषा नाम है । भाद्रपद मासमें गार्मला नाम वाली होतीहै । आश्विन में प्रेत संचारा नाम से युक्त होती है । कार्तिक मास में यमा नाम वाली कही गयी हैं ।५। युधिष्ठिर ने कहा-जिस कारण वह कलुषा कही जाती है और किस हेतु के होने से दूसरी का नाम गीर्मला कहा गया है ? प्रेत संचारा—इस नाम होने का भी क्या कारण हैऔर किस हेतु वश यमा कही गयी है ?।६। श्रीकृष्ण ने कहा प्राचीन काल में वृत्रासुर का वध हो गया था तो इन्द्र ने अपना राज्यान पुनः प्राप्तकर लिया था। किन्तु ब्रह्महत्या का पाप अवश्य ही हुआ था उसके दूर करनेमें लिए अश्वमेध यज्ञ प्रवृत्त हुआ था । इन्द्र ने क्रोध से वज्रा के द्वारा ब्रह्महत्याका निषूदन कर दिया था और उसके खण्ड कर दिए थे तथा उनको क्रम से वृक्ष-जल महीतल नारी ब्रह्महन और अग्नि में डाल दिया था ।७।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नार्या ब्रह्माहने वहनो सविभज्य यथाक्रमम् ।
यत्पाप श्रावणे व्यूह द्वितीययां द्विनोदये ।८
नारीवृक्षनदीभूमिवह्निब्रह्महनेष्वथ ।
निर्मलीकरण जातमतीर्थ कलुषा स्मृता ।६
मधुकैटभयो रक्ते पुरा मग्नेति मेदिनी ।
अष्टांगुला पवित्रा सा नारीणां रजो मलम् ।१०
नद्यः पूरमलः सर्वा वह्नेर्धूमशिखा मलः ।
कलुषाणि चरत्यस्यां तनैषा कलुषा मता ।११
गीर्गिना भारती वाणी वाचा मेघां सरस्वती ।
गीर्मल वहते यस्माद्द्वितीया गीर्मला मता ।१२
देवर्षिपितृर्धाणां निंदका नास्तिकाः शठाः ।
तेषां सा वाग्लव्यूढा द्वितीया तेन गीर्मला ।१३
अनध्यायेष शास्त्राणि पाठयति पठन्ति च ।
शाब्दकास्तिर्किकाः श्रोत स्तेषांशब्दापशजाः ।
मल व्यूढ़ा द्वितीयायामतीथं गीर्मला च सा ।१४

वही पाप श्रवण मास में द्वितीया में दिन के उदय समय में व्यूह रूप में नारी-वृक्ष नदी भूमि वह्न और ब्रह्महन में होता है ।८। निर्मलीकरण अर्थ उत्पन्न हुआ था इसीलिए वह कलुषा कही गयी हैं ।९। पहिले समय में वह मेदिनी मधु कैटभ के रुधिर में मग्न हो गई थी। केवल आठ अंगुल वाली पवित्र रही थी। नारियों का जो रज होताहै वह मल है ।४०। सभी नदियाँ पूरनमल वाली हैंऔर अग्निकी जोधुंआ की शिखा है यही मल होता है। इसमें सभी कलुष चरण किया करते हैं इसी कारण से इसको कलुषा माना गया है ।११। गौ-गिरा भारती-वाणी-वाचा-मेवा और सरस्वती ये सभी उसके नाम हैं। गीः जिससे मल का वहन करती है इसीलिए उसका नाम गीर्मला कहा गया है ।१२। देव ऋषि-पितृगण के धर्मों के जो निन्दक-नास्तिक और शठ लोग होते है वह उनके वाग्मल से व्यूढ़ द्वितीया है। अतएव उसे गीमला कहा गया है ।१३। अनध्या के दिनों में जो शास्त्रों को स्वयं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पढ़ते हैं तथा दूसरों को पढ़ाया करते हैं ऐसे शाब्दिक तार्किक और एक श्रोत है उनके शब्दों के द्वारा अपशब्दों से उत्पन्न मल व्यूढ़ द्वितीयां में होते हैं इसी अर्थ के कारण भी वह कही गयी है ।१४।

प्रेतास्तु पितरः प्रोक्तास्तेषां तस्यां तु संचरः ।
द्वितीयायां च लोकेषु तेन सा प्रेतसंचरा ।१५।
अग्निष्वात्ता बर्हिषद आज्यपाः सोमस्तथा ।
पितृपितामहैप्रेतसचरात्प्रेतसंचरा ।१६
पुत्रः पौत्रश्च दौहित्रैः स्वधामन्त्रैः सुपूजिताः ।
श्रद्धादानमखैस्तृप्ता याप्यतः प्रेतसंचराः ।१७
कार्तिके शुक्लपक्षस्य द्वितीययां युधिष्ठिर ।
यमो यमुनया पूर्वं भोजितः स्वगृहे तदा ।१८
द्वितीयायां महोत्सर्गे नारकीयाश्च तर्पिताः ।
पापेभ्यो विप्रमुक्तास्ते मुक्ताः सर्वे विवधना ।
भ्रामिताः नत्तितास्तुष्टा स्थिताः सर्वे यदृच्छया ।१९
तेषां महोत्सवा वृत्तो य राष्टे सुखावहः ।
ततो यमद्वितीया सा प्रोक्ता लोके युधिष्ठिरः ।२०
अस्यां निजगृहे पार्थ न भोक्तव्यमतो बुधैः ।
स्नेहेन भगिनीपस्ताद्भोक्तव्यं पुष्टिवर्द्धनम् ।२१

जो प्रेत है वे तो पितर ही कहे गये है उनका उसमें संहार होता है इसी कारण वह द्वितीया लोकों में प्रेत सचरा नाम से प्रसिद्ध है ।१५। अग्निष्वात-वर्हिषद आज्याप सोमप और पितृ पितामह प्रेतों के संचारण होने से इसको प्रेत संचरा कहा जाता है ।१६। पुत्रों, पौत्रों-दौहित्रों और स्वधा मन्त्रों द्वारा भलीभाँति समर्चित होकर श्रद्धों के संचरा इस नाम वाली है ।१७। हे युधिष्ठिर ! कार्तिक मास में शुक्लपक्ष की द्वितीया में यमराज बहिन के द्वारा पहिले भोजन कराया गया था और इस समय में अपने गृह में ही उसे खिलाया था ।१८। द्वितीया में महोत्सर्ग में जो भी नारकीय प्राणी थे, वे तर्पित हुए

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे और पापों से विमुक्त होकर भी बन्धनों से रहित होते हुए छुटकारा पागये थे। वे सब स्वच्छन्दतासे भ्रमण करने वाले प्रसन्नतासे नृत्य करते हुए यह कृत से परम सन्तुष्ट होकर स्थित हो गये थे।१९। उनका एक यमराज में राज्य में बड़ा महोत्सव हो गया था जो वहुत ही सुख देने वाला था। हे युधिष्ठिर! तभी से लोक में वह तिथि यमद्वितीया उस नाम से कही है।२०। हें पार्थ! बुध पुरुषों को इस यमद्वितीया में अपने घर में भोजन नहीं करना चाहिए। स्नेह के साथ अपनी बहिन के हाथ से पुष्टि का बढ़ने वाला भोजन करना चाहिए।२१।

दानानि च प्रदेयानि भगिनीभ्यो विधानतः।
स्वर्णालंकारवस्त्राद्यैः पूजासत्कारभोजनैः।२२
सर्वा भगिन्यः संपूज्या अभावे प्रतिप्रत्तिगाः।
पितृव्यभगिनी हस्ता प्रथमायां युधिष्ठिरः।२३
मातुलस्त सुनाहस्ताद्द्वितीयायां पुनर्नृप।
पितृमातृस्वसारौ थे तृतीयायां तयोः कराम्।२४
भोक्तव्यं सहजायाश्च भगिन्या हस्ततः परतः परतः।
सर्वासु भगिनीहस्ताद्भोक्तव्यं बलद्धंनम्।२५
धन्यं यशस्यमापुष्य धर्मकामार्थं वर्द्धनम्।
व्याख्यात सकलं स्नेहात्सरहस्यं मया तव।२६
वस्यां तिथौ यमुनया यमराजदेवः।
सम्भो जितो जगति सत्वरसौहृदेन।
तस्यां स्वसुः करनालदिह यो भुनाक्ति।
प्राप्नोति वित्तमथ भोज्यमुत्तमं सः।२७

फिर बहिनों के लिये विधान पूर्वक दोनों का प्रदान करना चाहिए इनका सुवर्ण-अलंकार और वस्त्र आदि से तथा उत्तम भोजन के द्वारा पूजन एवं सत्कार करना चाहिए।२२। सभी बहिनों का पूजन करना चाहिये। यदि अपनी सभी सहोदर भगिनी न हो तो इस अभावमें इस विधान की प्रतिपत्ति करने वाली अपने पितृव्य (चाचा) की पुत्री बहिनें

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी होती है। उसके ही हाथ से हे युधिष्ठिर ! पहली द्वितीया में या प्रथमा तिथि में भोजनादि करे।२३। मामा की पुत्री के हाथ से फिर हे नृप ! द्वितीमा में करे। जो पिता-माताकी जो बहिनें हैं तृतीया में उनके हाथ से करे।२४। जो सहज भगिनी हो उसके हाथ से भोजन करना परमोत्तम है अतः उसी के हाथ से करे। सवों में भगिनी के हाथ से है पुष्टि के बढ़ाने वाला भोजन करना चाहिए।२५। यह परमधन्य-यश के बढ़ाने वाला—आयु की वृद्धि करने वाला तथा धर्म-काम और अर्थ के वर्द्धन करने वाला है। मैंने रहस्य के साथ स्नेह से इस सबकी व्याख्या है और तुमको बता दिया है।२६। जिस तिथि में यमराज देव को बहिन यमुना के द्वारा भली-भाँति भोजन कराया गया था जगत में सत्वर सौहाद्र के साथ उस तिथि में अपनी बहिन के करतल से जो कोई भोजन करता है वह यहाँ पर उत्तम भोजन धन और सुख की प्राप्ति किया करता है।२७।

अशून्यशयन व्रत का माहात्म्य

भगवन्मता प्रोक्तं धर्मार्थादिः सुलाधनम् ।
गर्हस्थ्य तच्च भवति दम्पत्योः प्रीयमाणयोः ।१
पत्नीहीनः पुमान्पत्नी भर्त्रा विरहिता तथा ।
धर्मकामार्थं ससिद्धो न स्यातां मधुसूदन ।२
तदब्रूहिदेवदेवेश विधवा स्त्री न जायते ।
व्रतेन येन गोविन्द पत्न्याऽविराहतो नरः ३
अशून्यशयनो नाम द्वितीयां शृणुता मम ।
यामुपोष्य न वैधव्यं प्राप्नोति स्त्री युधिष्ठिरः ।४
पत्नीविमुक्तश्च नरो न कदाचित्प्रजायते ।
शेते जगत्पतिर्विष्णु स्त्रिया सर्द्ध यदो किल ।५
अशून्यशयनं नाम तदा ग्राह्य च सा तिथिः ।
उपवासने नक्तेन तथैवा याचितेन च ।६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृष्णपक्षे द्वितीयायां श्रावणे नृपसत्तम् ।
स्नानं नद्यां तडागे च गृहे वा नियतात्मवान् ।७

युधिष्ठिर ने कहा—हे भगवान् ! आपने गार्हस्थ्य को भी धर्म अर्थ आदि का सुन्दर साधन स्वरूप बतलाया है किन्तु वह तभी होता है जब दोनों दम्पत्तियों में परम प्रेम हो ।१। हे मधुसूदन ! जो पुरुष पत्नी से हीन हो या जो स्त्री अपने भर्त्ता से विरहित हो उनको तो धर्म-अर्थ और कामकी सिद्धिही नहीं होगी ।२। हेदेव देवेश ! ऐसाकुछ बतलाइए कि स्त्री कभी विधवा ही न होवे तथा ऐसा कोई व्रत हो जिसके द्वारा पुरुष कभी अपनी पत्नी के विरह वाला न होवे ।३। श्रीकृष्ण ने कहा—अब तुम मुझसे अशून्य शयनी, नाम वाला द्वितीया के विषय में श्रवण करो । हे युधिष्ठिर ! इसका उपवास करके स्त्री कभी वैधव्यके दुःखको प्राप्त नहीं करती है जिस समय में जगत् के स्वामी भगवान् बिष्णु अपनी-स्त्री के साथ में शयन किया करते हैं ।५। वह तिथि अशून्य शयन के नाम से ही ग्राह्य होती है जिसमें उपवास रहा जाये अथवा रात्रि में कृष्णपक्ष में द्वितीया के दिन किया जावे ।६। हे नृपश्रेष्ठ ! श्रावण में कृष्णपक्ष में द्वितीया के दिन किसी नदी में अथवा तालाब में या गृह में नियत आत्मा वाले पुरुष को स्नान करना चाहिए ।७।

कृत्वा पितॄन्मनुष्यांश्च देवान्जन्तर्य्यं भक्तिमान् ।
स्थण्डिल चतुरस्त्रं तु मृन्मयं कारयेत्ततः ।८
तत्रस्थं श्रीधर शीशं भक्त्याभ्यर्च्यं श्रिया सह ।
नैवेद्यपुष्पधूपाद्यै: फलैः कालोद्भवै शुभैः ।९
इममुच्चारयेन्मन्त्रं प्रजम्य जगतः पतिम् ।
श्री वत्सधारिन्छुकांत श्रधीपञ्छोपतेऽव्यय ।१०
गार्हस्थ्यं मा प्रणाशं मे यातु धर्मार्थकादम् ।
अग्नयो मा प्रणश्यन्तु देवताः ।
पितरो मा प्रणश्यतु मत्ता दाम्पत्यभेदतः ।११

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्ष्या वियुज्यते कृष्ण न कदाचित्यथा भवान् ।
तथा कलत्रसम्बन्धो वेघ मा मे प्रणश्यतु ।१२
लक्ष्म्या न शून्यं वरंद तथा शयन सदा ।
शय्या ममाप्यशू न्यास्तु तथा जन्मनिजन्मनि ।१३
एवं प्रसाभं पूजा च कृत्वा लक्ष्म्या हरेस्तथा ।
चन्द्रोदये ननानपूर्व पञ्चगव्येन संयुताम् ।
विप्राय दक्षिणां दद्यात्स्वशक्त्या फलसंयुताम ।१४

भक्तिभाव से समन्वित पुरुष को पितृगण-मनुष्य वृन्द और देवों का भली-भांति तर्पण करके एक चौकोर मिट्टी का स्थण्डिल बनवाना चाहिए ।८। उसमें विराजमान श्री के स्वामी श्रीधर भगवान का श्री के साथ भक्तिभाव पूर्वक अभ्यर्चन करे जोकि नैवेद्य-पुष्प-धूप-फल आदि से करना चाहिए । उस काल में जो भी शुभ फलादि उत्पन्न हों उन्हें ही ग्रहण करे ।९। जगतके स्वामी को प्रणामकरे और इस मन्त्र का उच्चारण करना चाहिए-हे श्रीवत्स के धारण करने वाले ! श्री के कान्त ! हे श्री के धाम ! श्री के स्वामिन् ! अव्यय ! धर्म काम और अर्थ के प्रदान करने वाला मेरा यह गार्हस्थ्य आश्रम कभी नाश को प्राप्त न होवे । वे अग्नियाँ इसका नाश न करें तथा देवगण प्रनष्ट न करे । ये पितृगण इसका नाश न करे और मुझसे कभी श्री मेरे दाम्पत्य जीवन का विछोह न होवे ।१०-११। हे श्रीकृष्ण ! आप जिस प्रकार से लक्ष्मी से कभी भी नियुक्त नहीं हुआ करते हैं हे देव ! उसी भाँति वह मेरा भी कलत्र का सम्बन्ध कभी नष्ट न होवे ।१२। हे वरों के दाता ! जिस तरह आपकी शैया सदा ही लक्ष्मी से शून्य नहीं रहती है वैसे ही मेरी शैया भी जन्म-जन्मान्तर में मेरी पत्नी से शून्य कभी न होवे ।१३। इस प्रकार से लक्ष्मी नारायण को प्रसन्न करके तथा उनकी लक्ष्मी और हरि दोनों की पूजा करके चन्द्रमा के उदय के समय के पहिले स्नान करके जो कि पंचगव्य से संयुक्त हो विप्र को अपनी भक्ति के अनुसार फलों से संयुक्त दक्षिणा देनी चाहिए ।१४।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनेन विधिना राजन्यावमासचतुष्टयम् ।
कृष्णपक्षे द्वितोयायां प्रयुक्तविधिमाचरेत् ।१५
कार्तिक चाथ संप्राप्ते शय्यां श्रीकान्तसंयुताम् ।
सीपस्करां सोदकुम्भां सान्नाँ दद्याद्द्विजातय ।१६
प्रतिमास च सोमाय अर्घ्यं दद्यात्समन्त्रकम् ।
दक्ष्यक्षतैर्मूल फलै रत्नैः सोवर्णभाजर्णः ।१७
गगनाँगणद्दीप दुग्धाब्धिमथनोदभव ।
आभासितदिगभोग रमानुज नमोस्तुते ।१८
एवं करोति यः सम्यङ्नरो मासचतुष्टयः
तस्य जन्मेत्रयं यावद्गृहभङ्गो न जायते ।१९
अशूग्यशयंनश्चैव धर्मंकामाथ साधकः ।
प्रवष्यव्याहतैश्वयः पुरुसो नात्र संशयः ।२०
नारी च पार्थ धर्मज्ञा व्रतमेतद्याविधि ।
या करोति न सा शोच्या बन्धुवर्गस्य जायते ।२१
वैधव्यं दुर्भगत्वं च भर्तृ त्याग च सत्तम् ।
प्राप्नोति जन्मत्रितयं नता पांडुकुलोद्वह ।२२
एषा ह्यशून्यशयना नृपते द्वितीया ख्याता ।
समस्तकलुषापहराऽद्वितीया ।
एतां समाचरति यः पुरुषो वोषिस्प्राप्नो ।
त्यसी शयनममहाग्रवर्हभोग्यम् ।२३

इस विधान से हे राजन् ! जब तक ये प्रबुट काल के चार मास रहे बराबर कृष्णपक्ष की द्वितीय तिथि में पहिले बताई हुई विधि का समाचरण करना चाहिए ।१२। कात्तिक मास प्राप्त हो जाने पर सभी उपस्करों के सहित जलके कुम्भ से युक्त श्री कान्त से संयुक्त शैया को जो कि अन्न के भी सहित हो द्विजाति को दान में देनी चाहिए ।१६ प्रत्येक मास में सोम के लिए दधि-अक्षत-मूल-फल-रत्न और सुवर्ण के पात्रों के द्वारा मन्त्रों के सहित अर्घ्य देना चाहिये ।१७। हे रामानुज ! आप गमन रूपी आगन के सुन्दर एवं समुज्वल द्वीप हैं । आपकी उत्पत्ति

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षीर सागर के मन्थन से हुई है और आप दिशाओं के आभोग को आभासित करने वाले हैं। आपके लिये नमस्कार है ।१८। जो मनुष्य इस प्रकार से भली-भाँति चार महीने तक किया करता है। उसके तीनजन्म पर्यन्त गृह का भङ्ग नही हुआ करता है ।१९। यह अशून्य शयन व्रतधर्म अर्थ और काम का साधक होता है इससे पुरुष अव्याहत वैभव वाला होता है—इसमें कुछ भी संशय नहीं है ।२०। हे पार्थ! नारी धर्म के जानने वाली है वह इसव्रत को यथाविधि किया करती है वह कभी वन्धु वर्ग के लिये शोच्य नहीं होती है ।२१। वैधव्य दुर्भगत्व और भर्त्तत्याग को हे श्रेष्ठ पाण्डुकुलोद्वह। तीन जन्मपर्यन्त नहीं प्राप्त किया करती है।२२। हे नृपते! यह द्वितीया अशून्य शयना नाम वाली प्रसिद्ध है यह समस्त कलुषों के अपहरण करने वाली अद्वितीय होती है। इस का जो भी कोई पुरुष या स्त्री समान्वरण करते हैं वे महान उत्तम भोगने के योग्य शयन को प्राप्त किया करते हैं।२३।

गोष्पद तृतीयःव्रत का माहात्म्य

पार्थं भाद्रपदे मासि शुक्लपक्षे विनोदये।
तृतीयाया चतुर्थ्यां च शुद्धायां प्रतिवत्सरम् ।१
उपवासेन गृह्णीयादव्रतं नाम्ना तु गोपदम्।
स्नात्वा नरो बा नारीं वा पुष्टधुपवित्तपनैः ।२
दध्यक्षतैश्च मालाभिः पिष्टकैवनालया।
अभ्ये जयेदगवां शृंग खुरं पुच्छान्तचेव च ।३
दद्यादगवाह्निकं भक्त्या तासाँपूर्वापराह्णयोः।
अग्निपाक भुञ्जीत तेलक्षारविवर्जितम् ।४
व्रजतीनाँ गर्वा नित्तमायाँतीना च भरत।
पुरद्वारेथ वा गोष्ठे मन्त्र णानेन मन्त्रवित।
अर्घ्यं प्रदद्यगुष्ठयां वा गर्वा पादेषु पाण्डव ।२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माता रुद्राणां दुहिता वसूनाँस्वसादित्यानाकामृतस्य नाभिः।
प्रनुवोच चिकितुषे जनाय मा गामनागदिति वधिष्ट।

श्रीकृष्ण ने कहा—हे पार्थ ! भाद्रपद मास से शुक्ल पक्ष में दिन के उदयकाल में प्रति वर्ष शुद्ध तृतीया या चतुर्थी तिथि में उपवास के साथ गोमद नाम वाले व्रतको ग्रहणकरे। नरहो अथवा नारी हो, स्नान करके पुष्प धूप दीप विलेपन दही अक्षत माला एवं पिष्टक के द्वारा बना लिया गायों के श्रृङ्ग-खुर और पूँछ के अन्त भाग का अभ्यर्जन करना चाहिएं।१-३। भक्तिभाव से उनको पूर्वाह्न और अपराह्न में आह्निक देवे ओर तेल तथा क्षार से रहित अनग्नि पाक का भोजन करना चाहिए।४। हे भारत ! जाती हुई और आती हुई गायों का नित्य ही पुरके द्वार पर-गोष्ठ।निम्न मन्त्र के द्वारा मन्त्र वेत्ता को अर्घ्य अथवा गुष्टया देना चाहिये। हे पाण्डव ! अथवा गोओ के चरणों में देवे।५। यह मन्त्र है—रुद्रों की माता—वसुओं की दुहिता—आदित्यों की स्वसा और आप अमृत की नाभि है। अभीष्टजन के कभी प्रतिकूल मत होओ। अनागा अदिति गाय का वध मत करो।६।

गावो मे अग्रतः सन्तु गावो मे सत् पृष्टतः।
गावो मे हृदये सतु गवाँ मध्ये वसाम्यहम्।७
इत्थ संपूज्य दस्वार्धं ततो गच्छेद्गृहाश्रमम्।
पंचम्यां क्रोधरहितो भुञ्जीत गोरस दधि शोभनम्।८
शालिपिष्टं फलं शाकं तिलमग्नं न शोभनम्।
भुक्तावसाने राजेन्द्र संयतस्ता निशां स्वपेत्।९
प्रभाते गोपदं दत्वा ब्राह्मणाय हिरण्यसम्।
क्षमयेच्च गवाँ नाथं गोविन्द गरुडध्वजम्।१०
अर्च्यतेऽत्र यथा गावस्तथा गोवर्धनो गिरिः।
प्रणम्याच्युतमुददिश्थ श्रृणु यत्फलमाप्नुयात्।११

गोऐं मेरे आगे रहे गौऐं ही मेरे पृष्ठ भाग में होवें, गोयें मेरे हृदय में रहें और गौओं के मध्य में ही मैं सदा निवास किया करूँ।७। इस

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकार से गौओं का भली-भाँति पूजन करके तथा अर्घ्य देकर फिर गृहाश्रम में चले जाना चाहिए। पंचमी तिथि में क्रोधसे रहित होकर गौरस दधि का भोजन करे। शालि पिष्ट-फल शाक तिल और शोभन अन्नका भोजन करे। हे राजेन्द्र! भोजन के पश्चात् संयत होकर उस रात्रि में शयन करे।८-९। प्रभात के समय में ब्राह्मण के लिए हिरण्यमय गोपद का दान करके गौओं के नाथ गरुड़ध्वज गोविन्द के क्षमापन करायें।१०। यहाँ पर किस प्रकार गायों का अर्चन किया जाता है उसी भाँति गोवर्द्धन गिरि का समर्चन होता है। भगवान अच्युत का उद्देश्य लेकर प्रणाम करें। इसका जोभी फल प्राप्त है उसका श्रवण करो।११।

गोभक्तो गोव्रतं कृत्वा भक्त्या शक्त्या च गोष्पदम्।
सौभाग्यं रूपलावण्यं प्राप्नोति पृथिवीतले।१२
गोवत्सकाकुल गेहं गोकुल च समासतः।
धनधान्यसमोपेतशालीशरतमृद्धिताम्।१३
संतान पूजितं लब्ध्वा ततः स्वर्गेऽमरो भवेत्।
दिव्यरूपधरः स्रग्वी दिव्यालङ्कारभूषित।१४
गन्धै गींतवाद्येन सेव्यमानोऽपरोगणैः।
दिव्यं युगशतं छित्वा ततः विष्णुपरं व्रजेत्।१५
यो गोपदव्रतामिदं कुरुते त्रिरात्रंगा।
गोविन्द प्रपूजयति गोरसपूजनाञ्च।
गोविन्दादिपुरुष प्रणतः सावित्रामालोके
मूत्तममूपैतति गवां पवित्रम्।१६

गौ का भक्त भक्तिभाव से व्रत करके और शक्ति से गोष्पद करके इस पृथिवी तल में परम सौभाग्य एवं रूप लावण्य को प्राप्त किया करता है।१२। गौओं के वत्सों से समाकुल गृह और संक्षेप से गोकुल धन धान्य से समुपेत—शाली इक्षु रस की समृद्धि वाला हो जाती है। ।१३। प्रतिष्ठित सन्तति का लाभ होता हैं फिर इसके पश्चात स्वर्ग में अमर हो जाया करता है। जो दिव्यरूप के धारण करने वाला स्रग्धारी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा दिव्य भूषण से विभूषित होता है।१४। वहाँ पर गन्धर्वों के द्वारा गीत वाद्यों से और अप्सराओं के द्वारासेव्यमान हुआ करता है। वहाँ पर दिव्य सौ युग काटकर फिर वह विष्णुपुर को गमन किया करता है।१५। जो इस गोपद व्रत को त्रिरात्र किया करता है और गायों का गोरस पूजन से प्रकृष्ट रूप से पूजन करता है तथा आदि पुरुष गोविन्द प्रणाम किया करता है वह सावित्र उत्तम लोक को प्राप्त करता हैं जो गौओं से परम पवित्र है।१६।

हरताली तृतीय व्रत का माहात्म्य

शुक्ले भाद्रपदष्यैव तृतीयायां समर्चयेत्।
सदधान्यैस्तां विरूढां भूतां भूतां हरितशाद्वलाम् ।१
हरकाली देवदेवी गौरी शंकरवल्लभाम्।
गन्धैः पुष्पैः फलैर्धूपैर्नैवेद्यमोंद्रकादिभिः।
प्रीणयित्वा समाच्छद्य पदमरागेन भास्वता:२
घण्टाबाद्यादिभिर्गीतः शुभैर्दिव्यकथानुगैः।
कृत्वा जागरणं रात्रौ प्रभाते ह्युदगते रवौ।३
सुवासिमीभिः सा नेया मध्ये पुण्यजलाशये।
तस्मिन्विसर्जयेत्पार्थं हरकाली हरिप्रियाम् ।४
भगवन्हरकालीति का देया प्रोच्यते भुवि।
आर्द्रधान्यैः स्थिता कस्मात्पूज्यते स्त्रीजनेन सा।
पूजिता किं ददातीह सर्वं मेब्रहि केशव।५
सर्वपापहरां दिव्यां मत्तः शृणु कथाभिमाम्।
आसीद्दक्षस्य दुहिता कालीनाम्नी त नन्यका।६
वर्णेनापि च सा कृष्णा नवनीलोत्पलप्रभा।
माद दत्ता त्र्यम्बकाय महाडेवाय शूलिन।७

श्रीकृष्ण ने कहा—भाद्रपद मास के शुक्लपक्ष तृतीया तिथि में उस विरूढ़ भूता हरितशाद्वला सवधान्यों से अर्चन करना चाहिए।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिकाली-देव-देवी गोरी शंकर बल्लभा हैं ।१। गन्ध-पुष्प फल धूप और मोदक आदि नैवेद्य से उस देवी को प्रसन्न करके तथा भासमान पद्मराग से उसका आच्छादान करके ।२। घण्टा वाद्य आदि से गीतों से शुभ एवं दिव्य कथानुसारागों से रात्रि जागरण करके प्रभात में अब रवि का उदय होता हैं ।३। उसी समय में सुवासिनियों के द्वारा उसको किसी परम पुण्य जलाशय के मध्य में पहुँचना चाहिए । हे पार्थ ! उस हरकाली हरिप्रिया का उसमें विसर्जन कर देवे ।४। युधिष्ठिर ने कहा—हे भगवान् ! इस भूमण्डल में हरकाली कौनसी देवी कही जाती है ? आर्द्र धान्यों से स्थित वह स्त्री जनों के द्वारा ही क्यों पूजी जाया करती है । जब पूजित होती है तो फिर यह क्या दिया करती हैं ? हे केशव ! यह सभी कुछ मुझे आप वतलाइये ।३। श्रीकृष्ण ने कहा—यह समस्त पापों के हरण करने वाली परम दिव्य कथा है। इसको अब तुम मुझ से श्रवण करो । दक्ष की पुत्री एक काली नाम की कन्या थी । वह वर्ण से भी कृष्ण और नवीन नील कमल के समान आभा वाली थी । वह कन्या त्र्यम्बक शूलधारी महादेव के लिये दी गई थी ।

विवाहिता विधानेन शंखतूयनिनादिन ।
यत्कुर्याद गतैर्देव्राह्मणानां च निस्वनैः ।
निर्वातते विवाहे तु तया सार्धं त्रिलोचनः ।
क्रीडते विविधभोगैर्मनसः प्रीतिबन्धनैः ।९
अथ देवसमानस्तु कदाचित्स वृषध्वजः ।
आस्थानमण्डपे रम्ये आस्ते विष्णुसहायवान् ।१०
तत्रस्थश्चाह्वयामास नर्मणा त्रिपुरान्तकः ।
कालोत्पलश्यामाँ गणमातृगणावृताम् ।११
एह्येहि त्वमितः कासि कृष्णांजनसमन्विते ।
कालसुन्दरि मत्पार्श्वं धवले त्वमुपाविश ।१२
एवमुत्क्षिप्तमनसा देवी संक्रद्धमानसा ।
श्वासयामास ताम्राक्षी वाष्पगदगदया गिरा ।१३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुरोद खस्वरं वाला तत्रस्था स्फुरिताधरा ।
किं देव योगात्ताम्रा गौगोरी चेत्यभिधीयते ।१४

यह शंख और सूर्य के अनुनादी विधान के द्वारा विवाहित हुई थी जिसकी वहाँ पर समागत देवों के द्वारा ब्राह्मणों के निस्वनों के द्वारा किया गया था।८। विवाहके निवासित हो जाने पर त्रिलोचन प्रभु उसके साथ मन की प्रीति को बढ़ाने वाले विविध प्रकार के भोगों के द्वारा क्रीडा करते थे।९। इसके अनन्तर किसी समय में देव के समान वर वृषध्वज विष्णुकी सहायता से युक्त परम रम्य आस्थान मण्डप में स्थित थे।१०। वहाँ पर स्थित त्रिपुरान्तक के गर्भ के द्वारा गण मातृगण से समावृत नीलोत्पलके समान श्याम कालीको बुलाया था।११। तुम इधर आओ-आओ। कृष्ण अंजन से समन्वित हो। कौन हो ! आज सुन्दरी मेरे पार्श्व में तुम आकर बैठो।१२। इस प्रकार से उत्क्षिप्त मन वाली वह देवी में क्रुद्ध हुई थी। ताम्र के तुल्य नेत्रों वाली वह्वाष्प से गद्-गद् वाणी के द्वारा लम्बी श्वाँसें लेने लगी थी।१३। वह वाला वहाँ पर स्थित होती हुई तथा होठों को फड़फड़ाकर स्वर सहित रुदन करने लगी थी। हे देव ! किस योग से ताम्रा गौरी इस नाम से कही जाती है।१४।

यस्यान्ममोपमा दत्ता कृष्णवर्णेनशंकर ।
हरकालीति वाहूता देवर्षिगणसेविता ।१५
तस्माद्देहमिमं कृष्ण जुहोमि ज्वलितेऽनले ।
इत्युक्त्वा वायेमाणा तु हरकाली रुषान्विता ।१६
मुमोच हरिच्छायाकांति हरितशाद्वले ।
चिक्षेप दोष रागेण ज्वलितं हव्यवाहने ।१७
पुनः पर्वतराजस्य गृहे गौरीं वभूव सा ।
दहादेवस्य देहार्द्धे स्थिता सम्पूज्यते सुरैः ।१८
एव सा हरकालीति गौरीशस्य व्यवस्थिता ।
पूजनीया महादेवी मन्त्रणानेन पाण्डव ।१९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरमंसमुत्पन्न हरकाये हरप्रिये ।
मां त्राहींशस्य मूर्तिस्थे प्रणतास्तु नमोनमः ।२०
इत्थं सपूज्यं नैवेद्य दद्यादप्राय पाण्डवं ।
तां च प्रातः जले रम्ये पत्रेणैव विसर्जयेत् ।२१

शंकर ने जिस करण से मेरी उपमा कृष्ण वर्ण से दी है अथवा हरकाली को बुलाया है जो देवर्षिगण से सेवित है । इसलिए मैं अब इस कृष्ण देह को जलती हुई अग्नि में हवन कर डालूँगी । इतना कह कर वह निषिद्ध भी कीगई थी तो भी रोष से युक्त होकर अपने निर्णयपर दृढ़ ही बनी रही थीं ।१५-१६। उसने हर्षित छाया कान्ति को हरित शाद्वल में छोड़ दिया था और जलती हुई अग्निमें दोषको राग से क्षिप्त कर दिया ।१७। फिर वह पर्वतराज के घर में गौरी हुई थी जो महादेव के देह के अर्द्ध भाग में स्थित होती हुई सुरों के द्वारा भली-भाँति पूजित होती है ।१८। इस प्रकार से वह हरकाली—इस नाम से गौरीश को व्यवस्थित हुई । हे पाण्डव ! वह महादेवी इस निम्न मन्त्र से पूजने के योग्य है ।१९। तन्त्रार्थ—हे हर के कर्म से समुत्पन्न होने वाली ! आप तो हर की काया हैं और हर की प्रिया है । ईशकी मूर्त्ति में स्थित रहने वाली ! मेरी रक्षा करो । हम प्रणव हैं । आपको बारम्बार नमस्कार है ।२०। हे पाण्डव ! इस भाँति अच्छी तरह अर्चना करके नैवेद्य विप्र को देवे । और प्रातःकाल में उसका रम्य जल के भीतर इसी मन्त्र के द्वारा विसर्जन कर देना चाहिए ।२१।

अर्चितासिमया भक्त्या गच्छ देवि सुरालयम् ।
हरकाले शिवे गौरि पुनरागमनाय च ।२२
एव यः पाण्डश्रेष्ठ हरकालीव्रतं चरेत् ।
वर्षेवर्षे विधानेन नारी नरपते शुभा ।२३
सा यत्फलमवाप्नोति तच्छृणुष्व नराधिप ।
मर्त्यलोके चिरं तिष्ठेत्सर्वरोगविवर्जिता ।२४
सर्वभोगसमायुक्ता सौभाग्यबलान्विता ।
पुत्रपौत्रसुहृन्मित्रंनप्तृदौहित्रसंकुला ।२५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साग्रं वर्षशतं यावद्भोगान्भुक्त्वा महीतले ।
ततोवसाने देहस्य शिवज्ञानां महामुने ।२६
चिरभद्रा महकालनन्दीश्वरविनायकाः ।
तदाज्ञाकिंकराः सर्वे महादेवप्रसादतः ।२७
सम्पूर्णगणसप्तविरूढशस्यां
तां वै हिमाद्रितनयां हरकाख्याम् ।
सम्पूज्य जागरमनुद्धतगीतवाद्यः
यच्छन्ति या इह भवति पतिप्रियास्ता ।२८

हे देवि ! मेरे द्वारा आप भक्ति सहित पूजित हुई हो, अब आयु सुरालय में गमन करो । हे हरकाले ! शिवे ! हेगौरि ! फिर आगमन करने के लिए ही यह आपका इस समय विसर्जन है ।२२। पाण्डव श्रेष्ठ ! इस प्रकार से जो इस हरकाली व्रतका समाचरण किया करता है । हे नरपते ! प्रतिवर्ष में जो शुभ नारी इसको क्रिया करती है ।२३। हे नराधिप!वह नारीजो इसका फल प्राप्त करती है उसका श्रवण करो । यह इस मनुष्य लोक में चिरकाल पर्यन्तसब रोगों से रहित होकर स्थित रहा करती है ।२४। सभी प्रकार के भोगों से समायुक्त होकर सौभाग्य के बल से गर्व वाली होती है । पुत्र-पौत्र-सुहृत-मित्र-नाती और बेवतों से समाकुल होती है ।२५। वह उत्तम सौ वर्ष पर्यन्त इस महीतल में सभी भोगों का उपभोग करके फिर देह के अन्त में वह शिव के ज्ञान वाली है महामुने चिरभद्रा-महाकाल-नन्दीश्वर-विनायक आदि सब महादेव के प्रसाद से उसकी आज्ञा के किंकर हुआ करते हैं ।२६-२७। सम्पूर्ण सूर्यगण के सप्त से विरुढ़ाशस्य वाली उस हरिकालिका नामसे युक्त हिमादि तनया का पूजन करके जो अनुद्धत गीत वाद्यों के द्वारा जागरण किया करती है वे नारी इस लोकमें पतिकी परम प्रिया होती है ।२८।

—०—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ललिता तृतीया व्रत का माहात्म्य

अथ पृच्छामि भगन्व्रत द्वादशमासिकम् ।
ललिताराधनं नाम मासमासक्रमेण वा ।१
शृणु पांण्डव यत्नेन यथा वृत पुरातनम् ।
शंकरस्य महादेव्याः सम्वाद कुरुसत्तम् ।२
कैलासशिखरे रम्ये बहुपुष्पफलोपगे ।
सहकारद्रु मच्छन्ने चंपकाशोकभूषिते ।३
कदंबवकुलांमीदवशीकृतमधुव्रते ।
मयूररबसंघृस्टे राजहंसोशोभिते ।४
मृगक्षर्गीमिहैश्च दाखामृगगणावते ।
गन्धर्वयक्षदेवर्षिसिद्धकिन्नरपन्नगः ।५
तपस्विभिर्मह भार्ग सेवमान समन्तः ।
सुखासोनं महादेव भूतसंधैः समावृतम् ।६
अप्सरोभिः सरिवृतमुंमा नत्वाब्रवोदिदम् ।
भगवन्देवदेवेश शूलपाणे बृषध्वज ।७

युधिष्ठिर ने कहा—हे भगवान् ! उसके उपरान्त अब मैं बारह मासों में होने वाले व्रत के विषय में पूछता हूँ । ललिता के आराधन नामं वाले व्रत को जो क्रम से मास-मास में होता है ।१। श्रीकृष्ण ने कहा—हे पाण्डव ! यत्न पूर्वक श्रवण करो । हे कुरुश्रेष्ठ ! एक परम पुरातन शकंर और महादेवी का सम्वाद हुआ था ।२। कैलास पर्वत का शिखर परम रम्य है जहाँ बहुत से पुष्प एवं फल वाले वृक्ष हैं । वह शिखर आम के वृक्षों से भी सविभूषित रहता है ।३। कदम्ब-वकुल की गन्ध से मधुकर वहाँ पर वशीभूत रहा करते हैं । चारों ओर भौंरों की ध्वनियों से परिपूर्ण रहता है । राजहंस भी वहाँ उसकी शोभा बढ़ाने वाले हैं ।४। मृग-रीछ-हाथी-सिंह और शांखामृग के समूहों से वह घिरा रहता है । गन्धर्व-यक्ष-देव-ऋषि-सिद्ध-किन्नर और पन्नग तथा महान्

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाग वाले तपस्विगण के द्वारा चारों ओर वह कैलाशका शिखर सेवित रहता है । वहाँ पर भूतगणों के द्वारा समावृत महादेव सुखपूर्वक विराजमान रहा करते हैं ।१-३। अप्सराओं के गण से परिवृत रहने वाले शिव से एक बार उमादेवी ने नमस्कार करके वचन कहा था ।७।

कथयस्व महेशाम तृतीयाव्रतमुत्तमम् ।
सौभाग्यं लभते येन धन पुत्रान्पशू न्सखम् ।८
नारी स्वर्गं शुभ रूपमारोग्यं श्रियमुत्तमाम् ।
एवमुक्तो दयितता भार्यया प्रीतिपूर्वकम् ।
विहस्य शंकरः प्राह किं व्रतेन तव प्रिये ।९
ये कामास्त्रिषु लौकेषु दिव्या भूम्यन्तरिक्षजाः ।
सर्वेपि तैन चायत्ता वश्यस्तेहं ततः पतिः ।१०
सत्यमेतत्सुरेशान त्वयि दृष्टेन दुर्लभम् ।
किचिन्त्त्रिभुनाभोगभूषगे शशिभषणे ।११
भक्त्या स्त्रियो हि मां देव प्रजपन्ति शुभशुभम् ।
विरूपाः सुलभः काश्चिदपुत्रा बहुपुत्रकाः ।१२
सुशीलास्तपसा काश्चिच्छ् वश्रु भिः पीड़िता भृशम् ।
शोचाचारसमा युक्ता न रोचन्तेय कस्यचित् ।१३
एवं बहुविधैर्दु :ख पीड्यमानास्तु दारुणैः ।
शरणं मां प्रपन्नास्ताः कृपाविष्टा ततो ह्यहम् ।१४

उमादेवी ने कहा—हे भगवान् ! देव देवेश ! हे शूलपाणे ! हे वृषध्वज ! आप तो महान् ईश है । मुझे उत्तम तृतीयके वृत को बतलाइये जिसके द्वारा सौभाग्य-धन-पुत्रायश और सुख का लाभ होता है ।८। नारी शुभ स्वर्ग रूप-आरोग्य तथा उत्तम श्री की प्राप्ति हुआ करती भी इस प्रकार से दयिता के द्वारा पूछने पर जो कि भार्या ने बहुतही प्रीति के साथ प्रश्न किया था भगवान् शंकर हंसकर बोले—हे प्रिये ! आपको इस व्रत से क्या प्रयोजन है ।९। तीनों लोको में जो भी कामनायें है वे दिव्य-भूमि और अन्तरिक्षमें उत्पन्न होने वाली वेसभी आपके अधीनही

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, क्योंकि मैं आपका स्वामी ही आपके वंशगत रहता हूँ ।१०। उमा ने कहा—हे सुरेशान ! यह बिलकुल सत्य ही है कि आपके दर्शन प्राप्त करने पर फिर कुछ भी दुर्लभ नहीं रहता है क्योंकि आप तो त्रिभुवन के अंगों के भूषण हैं और शशि के भूषण वाले हैं ।११। स्त्रियाँ भक्ति से हे देव ! शुभाशुभ मेरा जाप किया करती हैं। कुछ विचारी विरूपा हैं कुछ सुलभ है। कोई बिना पुत्र वाली है तो कुछ बहुत पुत्रों से युक्त होती हैं ।१२। कोई सुशीला तप से युक्त हैं और कुछ सासों के द्वारा बहुत ही उत्पीड़न सहने वाली हैं। शौच और आचार से युक्त हैं किन्तु कुछ भी प्रियं नहीं लगा करता है ।१३। इस प्रकार से बहुत तरह के दुःखों से जो कि—में दारुण हैं होती हुई वे मेरी शरणागति ग्रहण किया करती हैं, उन पर मुझे कृपा करने के लिए—विवश होना पड़ता है ।१४।

येन ताः सुखसंभोगरूपलावण्यसम्पदा ।
पुत्रैः सौभाग्यवित्तौर्घयुक्वाः स्युः सुरसत्तम् ।
तन्मे कथय तत्वेन व्रतार्कामुत्तममव्रतम् ।१५
माघं मासि सिते पक्षे तृतीययां यतव्रताः ।
मुख प्रक्षाल्य हस्तौ च पादौ चैव समाहिताः ।१६
उपवास नियमं दंतधावनपूर्वकम् ।
मध्याह्ने तु ततः स्नान विल्वरालकैः शुभे ।१७
स्नात्वा तीर्थजले शुभ्रे वाससी परिधाय च ।
सुगंधैः सुमनोभिश्च प्रभूतैः तुंकुमादिभिः ।१८
अर्चयन्ति सदा देवि त्वा भक्तवत्सले ।
कर्पूराद्यैस्तथा धूपैर्नैवेद्यैः शर्करादिभिः ।१९
तद्वच्छालाभपन्नै धूपदीपार्चनादिभिः ।
नाम्नेशानीं गृहीत्वा नु प्रतीक्षे घटिकां व्रत ।२०
पाशे ताम्रमये शुद्धे जलाक्षतविंतिश्रिते ।
सहिरण्य द्विज कृत्वा मन्त्रपर्व समाधिना ।२१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे सुरसत्तम ! जिसके द्वारा वे सुख-सम्भोग रूप-लावण्य की सम्पदा तथा पुत्र एवं सौभाग्यकी सम्पत्तिके समूहों से युक्त होती है। उन व्रतोंमें अत्युत्तम व्रत को आप तत्त्वपूर्वक मुझे बतलाइए ।१५। ईश्वर ने कहा— माघ मास के शुक्ल पक्ष में तृतीया तिथि के दिन में यतव्रत होकर मुख धोवें ओर समाहित होकर दोनों हाथों पैरों को धो डाले ।१६। दन्त धावन पूर्वक उपवास के नियम को ग्रहण करे। मध्याह्न के समय में विल्व-आँवले के शुभ फलों से फिर स्नान करे ।१७। किसी शुभतीर्थ के जल में स्नान करके वस्त्रों का परिधान करे। इनके अनन्तर गन्ध वाले पुष्पों से तथा प्रचुर कुंकम आदि उपचारों से आपका पूजन करतें हैं ।१८। हे देवि ! आप तो भक्तों पर पूर्ण वत्सलता रखने वाली हैं। फिर भक्तिभाव से सदा आपका अर्चन किया करते हैं। पूजन के उपचारों में कपूर आदि धूप-नैवैद्य और शर्करा प्रभृति सबका ग्रहण किया जाता है ।१९। इच्छा लाभ से जो भी सम्पन्न हों धूप-दीप आदि अर्चनीय चार में से ईशानी के नाम से ग्रहण करके एक घटिका पर्यन्त प्रतीक्षा करे ।२०। परम शुद्ध ताम्रमय पात्र में जो जल एवं अक्षतों से विमिश्रित हो समाधि के मन्त्र पूर्वक सहिरण्य द्विज को करे ।२१।

शिरसि प्रक्षिपेत्तोयं ध्यायती मनसेप्सितम् ।
ब्रह्मवर्तात्समायाता ब्रह्मयोनेर्विनिर्गता ।२२
भद्रेश्वरा ततो देवी ललिता शंकरप्रिया ।
गंगाद्वाराद्वर प्राप्ता गङ्गाजलपवित्रिता ।२३
सौभाग्यरोग्यपुत्रार्थमर्घाथ हरबल्लभे ।
आयाता घटिकां भद्रे प्रतीक्षस्व नमोनमः ।२४
दत्वाहिरण्यं तत्तास्मै प्राशनीयाच्चकुशोदकम् ।
आचम्य प्रयतो भूमिस्था क्षपाम् ।२५
ध्यायमाना उमां देवी हरिते यवसंस्तरे ।
द्वितीयेह्नि ततः स्नात्वा तथैवान्यर्च्य पार्वतीम् ।२६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथाशक्ति द्विजान्पूज्य ततो भुञ्जीत वाग्यता ।
एवं तु प्रथमे मासि पूजनीयासि कालिके ।२७
द्वितीये पार्वती नाम तृतीये शंकरप्रिया ।
भवान्यथ चतुर्थे त्वं स्कंदमाताथ पञ्चमे ।२८

मन में अभीष्ट मनोरथ का ध्यान करते हुए शिरपर जल का प्रक्षेप करे ब्रह्मावर्त के समायत और ब्रह्मयोनि से विनिर्गत भद्रेश्वरा ललिता शंकर की प्रिया देवी गंगाजल से पवित्र होकर गंगाद्वार से भगवान् हर को प्राप्त हुई ।२२-२३। हे हरवल्लभे ! एक घड़ी पर्यन्त प्रतीक्षा करिए । आपको बारम्बार नमस्कार है ।२४। फिर उसको हिरण्य देकर कुशोदक का प्राशन करना चाहिए । आचमन कर प्रयत होवे । तथा भूमि में ही स्थित होकर उस रात्रि को बितावे ।२५। हरित यव संस्तर में उमादेवी का ध्यान करे । फिर दूसरे दिन में यथाशक्ति द्विजों का पूजन करके फिर मौन व्रत पूर्वक स्वयं भोजन करे । हे कालिके ! इसी प्रकार से प्रथम मास में पूजनीय है ।२७। दूसरे मास में पार्वती नाम से तथा तीसरेमें शंकर प्रिया नामसे, चौथे में भवानी और पाँचवे में स्कन्द माता इस नाग से पूजन करे ।२८।

दक्षस्य दुहिता षष्ठे मैनाकी सप्तमे स्मृता ।
कात्यान्यष्टमे मासि तु हिमाद्रिजा ।२९
दशमे मासि विख्याता देवि सौभाग्यदायिनी ।
उमा त्वेकादशे मासि गौरी तु द्वादशे परा ।३०
कुशोदकं पयः सर्प्पिर्गोमूत्रं गोमय फलम् ।
निम्बपत्रं कंटकारी गवां शृंगोदक दधि ।३१
पञ्चगव्यं तथा शाकः प्राशनानि क्रमादमी ।
मासिमासि स्थिता ह्येवमुपवासपरायणा ।३२
ददाति श्रद्धयैतानि वाचके ब्राह्मणोत्तमे ।
कुसुंभमाज्यं लवणं जीरकं गुडमेव च ।३३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दत्तैरेभिः सूर्यस्था त्वं सूर्यस्था तुष्यसि प्रिये ।
मासिमासि भवेन्मत्रो गकारो द्वादशक्षारः ।३४
ओङ्कारपूर्वको देवि नमस्कारात इरितः ।
एभिस्त्व पूजित मंत्रैस्तुष्यसि व्रततः प्रिये ।३५

छठे मास में दक्ष की दुहिता नाम से और सातवें में मैनाकी नाम से बताई गई है। आठवें मास में कात्यायनी नाम से——नवम मास में हिमाद्रिजा नाम से पूजन करे ।२९। दशम मास में हे देवि ! सौभाग्य-दायिनी विख्यात है। ग्यारहवें मास में परा गौरी नामसे भजन करना चाहिए ।३०। कुशोदक-पय धृत गोमूत्र-गोमय-फल-नीम के पत्र कट-कारी-गौओं के शृंग का उदक-दधि-पंचगव्य तथा शाक ये क्रम से प्राशन होते है मास-मास में इस प्रकार से उपवास करने में परायण होकर स्थित रहे ! ।३१-३२। जो वाचन करने वाला ब्राह्मण हो उसे श्रद्धा के सहित कुसुम्भ-आज्य-लवण-जीरा और गुड़ देना चाहिए ।३३। इसके सूर्यलोकमें स्थित होवे । हेप्रिय ! सूर्यस्था आप परम सन्तुष्ट होता है। मास-मास न द्वादशाक्षर गकार मन्त्र होता है ।३४। हे देवि ! उसके पूर्व में ओंकार है और अन्त में नमस्कार बतलाया गया हैं। इस मन्त्रों से पूजित आप हे प्रिये ! परम सन्तुष्ट हो जाती हैं। ३।५

तुष्टा त्वभीप्सितान्नामान्ददासि प्रीतिपूर्वकम् ।
समाप्ते व्रते तस्मिन्ब्राह्मण वेदपारगम् ।३६
सहित भार्यवाभ्यर्च्य गन्धपुष्पपादिभिः शुभैः ।
द्विजं महेश्वरं कृत्वा उमा भार्या तथैव च ।३७
अम्र मदक्षिणं दद्यात्तया शुक्ले च वाससी ।
रक्तं वासोयुग दद्यात्वामद्दिश्य हरप्रिये ।३८
ब्राह्मणे श्रद्धया युक्तस्तस्या फलामिदं शृणु ।
दशवर्षसहस्राणि लोकान्प्राप्य रापरान् ।३९
मोदते भर्तृसहिता यथेन्द्रेण शची तथा ।
मानुषत्वं पुनः प्राप्य स्वेन भर्त्ता सहैव सा ।४०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब पुष्ट हो जाती है तो फिर सभी अभीक्षित कामनाओं को प्रीति के साथ प्रदान कर देती है जब यह व्रत समाप्त हो जावे तो किसी वेदों के पारगामी विद्वान् ब्राह्मण को समाह्वान करे ।६६। उस विप्र का भार्या के सहित शुभ गन्धाक्षत पुष्पादि के द्वारा अभ्यर्चन करे। द्विज को महेश्वर समझ कर तथा भार्या को उमा देवी मानकर अर्चना करनी चाहिए ।३७। दक्षिणा के सहित अन्न देवे तथा दो शुक्ल वस्त्रों को समर्पित करे। हरप्रिय ! आपका उद्देश्य लेकर दो रक्त वर्ण के वस्त्रों का दान करना चाहिए ।३८। ब्राह्मण को श्रद्धा से युक्त होकर ही दान करे। उसमें जो फल प्राप्त होता है उसका श्रवण करो। दश सहस्र वर्ष पर्यन्त पर और अपर लोकों की प्राप्ति करके स्थित रहता है ।३९। वह अपने भर्त्ता के सहित जैसे इन्द्र के साथ शची प्रसन्न रहा करती है उसी भाँति सुखयुक्त हुआ करती है। फिर मनुष्य जन्म प्राप्त करके अपने भर्त्ता के साथ ही सुखोपभोग किया करती है ।४०।

पुण्ये कुले श्रिया युक्ता नीरोगा सुखमश्नुते ।
सप्रजमानि यावच्च नवैधव्यमवाप्नुयात् ।४१
पुत्रान्भोगास्तथा रूप सौभाग्यमेरेग्यच च ।
एकपत्नी तथा भर्तृः प्राणेभ्योऽप्यधिका भवेत् ।४२
शृणयाद्वाच्यमान तु भक्त्या या ललिताव्रतम् ।
मया स्नेहेनकथितं सापि तत्फलं भागिनी ।४३
सम्पूज्य लक्ष ललिता ललितांगयष्टि
गन्धौदकामृतघटी शिरसि क्षिपेद्या ।
सा स्वर्गमेत्य ललितासु ललाभूता ।
भूयधिपं पं तिमवाप्य भुवं भुनक्ति ।४४

वह किसी पुण्य कुल में जन्म धारण करती है। और श्री से युक्त होकर नीरोग रहते हुए सुख प्राप्त किया करती है। सात जन्म पर्यन्त वह कभी भी वैधव्य के दुःख का अनुभव नहीं करती है ।४१। पुत्र प्राप्ति–सुख के भोगों का लाभ–रूप–लावण्य–सौभाग्य–आरोग्य की प्राप्ति करती है। वह एक पत्नी स्वामी के प्राणों से भी अधिक प्रिय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो जाया करती है।४२। जो वाचन किए इस ललिता देवी के व्रत की कथा भक्ति भाव से श्रवण करती है जिसको मैंने स्नेह के साथ कहा है वह भी व्रतोपवास करने के ही फल की भागिनी होती है ।४३। जो ललितांग यष्टि लक्ष ललिता का भली भांति पूजन करके गन्धोदक अमृत घटी को शिर पर प्रक्षिप्त किया करती है वह स्वर्ग में पहुँच कर ललिताओं में ललाम भूता होती है और भूपों के स्वामी पति को प्राप्त कर इस भूमण्डल का सुखोपभोग किया करती है।४४।

—×—

अक्षय तृतीया व्रत का माहात्म्य

बहुनात्र किमुक्तेन किं बहवक्षरमालाया।
वैशाखस्य सितामेकाँ तृतीयाँ शृणु पाण्डव ।१
स्नान दान जपो होमः स्वाध्यायः पितृतर्पणम् ।
यदस्यां क्रियत किञ्चत्सर्वं स्यन्तदिहाक्षयम् ।२
आदौ कृतयुगादिस्तेन कथ्यते ।
सर्वपापप्रशमनी सर्वसौख्यप्रदायिनी ।३
शाकले नगरे कश्चिद्धर्मनामाभवद्वणिक ।
प्रियम्वदः सत्यरतो देवब्राह्मणपूजकः ।४
तेन श्रुत वाच्यमानं तृतीया रोहिणी पुरा ।
यदा स्याद्दुधसंयुक्ता तदा साच महाफला ।५
तस्याँ यद्दीयते किञ्चित्तत्सर्वं चाक्षय भवेत् ।
इति श्रुत्वा गंगाया सन्तप्य पितृदेवताः ।६
गृहमागत्य करकान्सान्नानुदसंयुतान् ।
अम्बुपूर्णान्गृहे कुंभान्क्रमान्निः शेषमस्तदा ।७

श्रीकृष्ण ने कहा—हे पाण्डव ! यहाँ पर बहुत अधिक कथन से क्या लाभ है । जिनमें बहुत अक्षरों की माला का प्रयोग हो ऐसी वाणी से क्या प्रयोजन है । अब वैशाख मास की शुक्ल पक्ष की एक तृतीया के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय में श्रवण करो।१। स्नान-दान-जप-होम-स्वाध्याय-पितृ-तर्पण जो कुछ भी इस तिथि में किया जाता है वह सभी अक्षय हो जाया करता है।२। कृतयुग के आदि में यह तिथि यज्ञ का आरम्भ दिन है। इसी से यह कहा जाता है कि यह सब प्रकार के पापों का प्रशमन करने वाली तथा सभी तरह के सौख्यों के प्रदान करने वाली है।३। शाकल नगर में कोई धर्म नाम वाला वणिक हुआ था। यह प्रिय भाषण करने वाला—सत्य में सदा रति रखने वाला और देवी तथा विप्रों का पूजन करने वाला था।४। उसने वाक्य किया हुआ यह कभी श्रवण किया था कि पहले यह तृतीया रोहिणी तथा बुधवार संयुक्त जब भी होती है तो वह उस समय में महान फल देने वाली होती है।५। उसमें जो कुछ भी दिया जाता है वह सभी अक्षय हो जाता है—यह सुनकर वह गंगा पर पहुँच गया था और वहाँ पितृगण तथा देववृन्द का अच्छी तरह तर्पण किया था।६। फिर वापिस अपने घर में जाकर उदक के सहित अन्न तथा जल से भरे हुए घटों को पूर्णतया प्रस्तुत कर उसी समय में ब्राह्मणों को दिया था।७।

यवगोधूमचणकक्तुदध्यौदन तथा।
इक्षीरविकारांश्च सहिरण्याश्च शक्तितः।८
शुचिः शुद्धेन मनसा ब्राह्मणेभ्यौ ददौ वणिक्।
भार्यया वार्यमाणोपि कुटुम्बासक्तचितया।९
तावत्स च स्थित सत्त्वे सस्वः सर्व विनश्वरम्।
धर्मार्थकामं शक्तस्तु कालेन बहुना ततः।१०
जगाम पञ्चत्वमसौ वासुदेव स्मरन्मुहुः।
ततः स क्षत्रियो जातः कशावत्यां नरेश्वरः।११
वभूव चाक्षया तस्य समृद्धिर्धमनिर्जिता।
इयाज स महायज्ञैः समाप्तवदक्षिणैः।१२
ददौ गोभूहिरण्यादि दानान्यस्यामहर्निशम्।
बुभुजे कामतो भोगान्दोनार्तास्तर्पयन्जनान्।१३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथाप्यक्षिपमेवास्य क्षयं पाति र तद्र्धनम् ।
श्रद्धापूर्ववंतृतीयार्या यत्दत्तं विभवं विना ।१४

यव–गोधूम–वणक–सक्तु–दधि ओधन–ईख और विकार आदि पदार्थ जो कि हरिण्य युक्त थे शक्ति पूर्वक वणिक ने पवित्र और शुद्ध मन से ब्राह्मणों को दान में समर्पित किए थे । भार्या ने उसे रोका भी था क्योंकि वह अपने कुटुम्ब में आसक्त चित्त वाली थी ।९। सब कुछ को नाशवान मानकर तब तक वह सत्व में स्थित रहा था । धर्म-अर्थ और काम में समासक्त रहा फिर जब तक बहुत समय व्यतीत हो गया था ।१०। तो यह बारम्बार वासुदेव का स्मरण करता हुआ मृत्यु को प्राप्त हुआ था । इसके पश्चात् वह कुशावती में ररेश्वर क्षत्रिय होकर समुत्पन्न हुआ था ।११। उसके धर्म से समजित अक्षय समृद्धि हो गई थी । उसने श्रेष्ठ दक्षिणा से समन्वित जिसकी समाप्ति की गई थी ऐसे महान् यज्ञों का यजन किया था । इसमें गौ भूमि और सुवर्ण आदि के अहर्निश बहुत से दान किए थे । दीनजनों को तृप्त करते हुए तथा महान् यज्ञों का यजन किया था ।१२। इसमें गौ भूमि और सुवर्ण आदि दुःखियों के दुःख हटाते हुए कामपूर्वक भोगों का उपभोग किया था ।१३। इतना दानादि सब कुछ करने पर भी उसका धन क्षीण नहीं हुआ था। क्योंकि बिना विभव के भी तृतीया में श्रद्धा पूर्वक दान किया था ।१४।

एतद्व्रत भयाख्यातं श्रूययामत्र यो विधिः ।
उदककुम्भान्सकरकान्स्नानसवरसयुंतान् ।१५
ग्रीष्मिक सचमेवात्र सस्यदान प्रशस्यते ।
छत्रोपानहत्प्रदानं च गोभूकांचनवामसाम् ।१६
यद्यदिष्टतम् छान्यत्तद्देयभविशङ्कया ।
एतत्तो सर्वमाख्यात किम यच्छ्रोतुमिच्छसि ।१७
अनाख्ये न मे किञ्चदस्ति स्वस्त्यस्तु तेऽनघ ।१८
अस्यां तिथौ क्षयसुतैति हुत न दत्त तेनाक्षया
च मुनिभिः कथिता तृतीया ।
उद्देश्य यत्सुरपिदन्क्रियते मनुयस्त
च्चाक्षयं भवति भारत सर्वमेव ।१९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
यह व्रत मैंने बतला दिया है। इसमें जो विधि है इसका श्रवण करो। उदक के पूर्ण कुम्भों को जिसमें करक (ओरा के लड्डू) पड़े हुए हों—स्नान के सब रसों से उनका दान करे। ग्रीष्म के उपयोगी सभी कुछ इनमें दान देवे तथा शस्य दान की भी बहुत प्रशंसा की गई है। छाता उपानह का दान तथा गौ भूमि और सुवर्ण का दान एवं वस्त्रों का दान करे।१५-१६। जो-जो इष्टतम पदार्थ हैं और अन्य पदार्थ हैं उनको विना किसी शंका के देना चाहिये। यह सभी कुछ तुमको बतला दिया है। अन्य तुम क्या श्रवण करना चाहते हो? ।१७। हे अनघ! मुझे तुम्हारे सामने न कहने के योग्य कुछ भी नहीं है। तुम्हारा कल्याण होवे।१८। इस तिथि में हवन किया हुआ और दान दिया हुआ कभी क्षय को प्राप्त नहीं होता है। इसी कारण से मुनियों ने इसको अक्षय कहा है। जो सुर और पितृगण का उद्देश्य करके मनुष्य के द्वारा किया जाता है। हे भारत सभी अक्षय हो जाता है।

विनायक चतुर्थी व्रत का माहात्म्य और विधान

यन्नसिद्धयहन्ति नर्माणि प्रारब्धानि नरोत्तमः।
तत्केन कारणेनैतत्पृष्टो मे ब्रूहि माधव ।१
विनायकोर्धसिद्धयर्थं लोकस्य विनियोजितः।
गणानामधिपत्ये च रुद्रेण ब्रह्मणा तथा ।२
तेनोपमृष्टो यस्तस्य लक्षणानि निवोधत।
स्वप्नेऽवगाहतेऽत्यर्थं जल मुण्डाँश्च पश्यति ।३
काषायवाससश्चैव क्रव्यादाँश्चाधिनोहति।
अत्यजंगर्भैरुष्टः सहैकत्रावतिष्ठते ।४
व्रजमानस्तथास्नानं मन्ये तु गतं परैः।
विमना विभलारभः ससौदत्यनिमित्ततः ।५
पातकी विहीनच्छायो म्लानत्वहेतुलक्षणः।
करभारूढ़मात्मान महिषखरगं तथा ।६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यातुधानाश्रित यन श्मशानस्यांतिक नृप ।
वोक्षेत कुरुशार्दूल स्वप्नांते नात्र संशयः ।
तैलार्द्र मात्रं स्व देह करवीरवभूषितम् ।७

युधिष्ठिर ने कहा—हे माधव ! जो श्रेष्ठ पुरुषों के द्वारा आरम्भ किए हुए कर्म्म सिद्ध नहीं होते हैं इसका क्या कारण है—यह मैं आपसे पूछना चाहता हूँ सो आप कृपया मुझे बतला दीजिए। श्रीकृष्ण ने कहा-लोक के अर्थी को सिद्धि के लिए विनायक को विशेष रूप से नियोजित किया गया हैं। गणों के आधिपत्य पर भगवान् रुद्र तथा ब्रह्मा ने इनकी ही नियुक्ति की है।१-२। उसके द्वारा जो उपसृष्ट होता है उसके लक्षणों को समक्ष लो। स्वप्न में अत्यर्थ जो अवगाहन किया करता है तथा मुण्डों को जो देखता है। ३। काषाय वस्त्र धारियों को देखता है तथा क्रव्यादों का अधिरोहण करता है। स्वप्न में अत्यन्त गर्दभ और राष्ट्रों के साथ एक ही स्थान में अवस्थित होता है ।४। व्रजमान होता हुआ जो परों के द्वारा आत्मा को गण मानता है वह उदास और विफल आरम्भ वाला होता हुआ बिना ही निमित्त के दुःख पाता है।५। पातकी विहीन कान्ति वाला तथा म्लानत्व हेतु के लक्षण वाला होता हैं। करभ पर आरूढ़ अपने आपको देखता है तथा महर्षि और खर से गमन करने वाला देखा करता है।६। यातुधानों के आश्रित यान तथा श्मशान के समीप में हे नृप ! करुणाशार्दूल ! जो स्वप्न के अन्त में देखता है—इसमें संशय नहीं है। तैल से आर्द्र अपने देह को एवं करवीर से भूषित शरीर को देखता है।७।

तेनोपसृटो लभते न राज्यं राजनन्दनः ।
कुमारी न च भर्तारमपत्यं गर्भमंगना ।८
आचार्यत्वं श्रोत्रियश्च न शित्योध्यनं तथा ।
वणिग्लाभ न चाप्नोति कृषिं चैव कृषीवलः ।९
स्नपन तस्य कर्तव्यं पुण्येऽह्नि विधिपूर्वकम् ।
गौरसर्षपकल्केन वस्त्रेणाच्छादितस्य तु ।१०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वौषधैः सर्वगन्धैर्विलिप्तशिरसस्तथा।
शुक्लपक्षे चपुर्थ्यां तु वारे वा विषणस्य तु ।११
पुष्ये च वीरनक्षत्रे यस्यैव मुरतोनृप।
भद्रासनोपविष्टस्य स्वस्तिर्वाच्यिा द्विजैः शुभैः ।१२
चत्वार ऋग्यजु सामाथर्वणविप्रणास्ततः।
व्योमकेशं तु सम्पूज्या पार्वतीं भूमिज तथा ।१३
कृष्णस्य पितर चाथ अवतार सितं तथा।
धिषणं क्लेदपुत्रं च कौण लक्ष्मी च भारत।
विधुतुदं वाहुलेप नन्दकस्य च धारिणम् ।१४

उससे उपसृष्ट राजा का पुत्र राज्य को प्राप्त नहीं करता है। कुमारी स्वामी को और अंगना गर्भ में अपत्य को प्राप्त नहीं किया करती है ।८। श्रोत्रिय पद का तथा शिष्य अध्ययन की वणिक् लाभ को और किसान कृषि प्राप्त नहीं करता है ।९। उसका स्नान किसी भी पुण्य दिन में विधि पूर्वक करना चाहिए। गौर सर्षप (सरसों) के वस्त्रों से आच्छादित होवे ।१०। सर्वौषधों से—स्वयं गन्धों में विलिप्त शिर वाला होवे। शुक्ल पक्ष में चतुर्थी तिथि में अथवा विपण के वार में पुष्य और वीर नक्षत्र हे नृप ! उसके ही आगे स्थित होवे। भद्रासन पर उपविष्ट होवे तथा फिर शुभ द्विजों स्वस्ति वाचन करना चाहिए ।११-१२। चार ऋक् यजु साम और अथर्व के श्रवण विप्र होवे इसके पश्चात् व्योमकेश का तथा पार्वती और भूमिज का भली-भाँति पूजन करें ।१३। कृष्ण के पिता सित अवतार-विषण-क्लेद पुत्र-कोण-लक्ष्मी-विधुतुद-बाहुलेप और नन्दन के धारण करने वाले का हे भारत ! पूजन करे ।१४।

अश्वस्थाक्षद्गजस्थानाद्वल्मीकात्सगमाद्ह्रदात।
मृत्तिकां रोचनां रत्नं गुग्गुलं चाप्स निक्षिपेत् ।१५
यदाहृत ह्य कवर्णैश्चतुर्भिः कलशह्रदात।
चर्मण्यानड्हे सक्ते स्नाप्य भद्रासनं तथा ।१६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहस्राक्षं शतधारमृषिभिः पावनं कृतम् ।
तेन त्वामभिषिचामि पावमान्यः पुनन्तु मे ।१७
ॐ भगं ते वरुणो राजा भग सूर्यो वृहस्पतिः ।
भगमिन्द्रश्च भगं सप्तर्षयो दुदुः ।१८
यत्ते केशेषु दौर्भाग्य सीमते यच्च मूर्द्धनि ।
ललाटे कर्णयोरक्ष्णोरापस्तद्घ्नंतु सर्वदा ।१९
स्नातस्य सार्षपं तैलं स्त्रु वेणौदुबंरेण तु ।
जुहुयान्मूर्ध्नि शकलांन्सव्येन प्रतिगृह्य च ।२०
मितश्च सम्मितश्चैव तथा शालकटकटौ ।
कूष्मांण्डो राजपुत्रश्चेत्यते स्वाहापमन्वितैः ।२१

अश्वों के रहने के स्थान से—गजों के बन्धन के स्थान बाल्मीकि से संगम ह्रद से मृत्तिका लावै उसको रोचना-रक्त और गूगल का जल में प्रक्षिप्त करे ।१५। एक वर्ण वाले चार कलशों से ह्रद से जो आहूत है उसे अनाड्वह चर्म में रात में स्थापित करे तथा भद्रासन लगावे ।१६। सहस्राक्ष शतधार ऋषियों ने पावन किया । उससे ताप का अभिषेचना करता है पयभानी वे मुझे पवित्र करे ।१७। तुझे राजा वरुण ने भग दिया है—सूर्य वृहस्पति ने इन्द्र और वायु से तथा सप्तर्षियों ने भग दिया है ।१८। जो तेरे केशों में दौर्भाग्य है सीमात् में तथा मुर्द्धा में है । ललाट में कानों में और आँखों में दौभाग्य विद्यमान है उसे ये जल सर्वदा के लिये विनष्ट कर देवे ।१९। नव स्नान हो जावे तो औदुम्बर स्रुव से सर्षप तैल की मूर्द्धा में आहुतियाँ देवे और शकलों को सव्य से प्रति ग्रहण करे ।२०। मित-सम्मित-शाल कटकट-कूष्माण्ड और राज पुत्र अन्त में स्वाहा पद से समन्वित मन्त्रों में देवे ।२१।

नामभिर्बलिमन्त्रैश्च नमस्कारसमन्वितैः ।
वद्याच्चतुष्पथे शूर्पे कुशानास्तीर्त सर्वतः ।२२
कृताकृतांस्तंढ् डलांश्च लोवनमेव च ।
मत्स्यान्ह्यपक्वांश्च तथा मांसमेलावदेव तु ।२३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पुष्पान्वित सुगन्धं च त्रिविधामपि ।
मूलकं पूरिका पूपास्तथैवोंडेरकस्रजः ।२४
दध्यन्न पायस चैव गुडवेष्टितमोदकम् ।
विनायकस्य जननीमुपमिष्ठेंत्ततोंविकाम् ।
दूर्वासर्षप पुष्पाणां दत्वार्घ्यं पूर्णमञ्जलिम् ।२५
रूपंदेहि जयं देहि भगंभवति मे ।
पुत्रान्देहि धनं देहि सर्वान्कामांश्च देहि मे ।२६

नमस्कार से युक्त नमों तथा बलि के मन्त्रों के द्वारा चतुष्पथ में सब ओर कुशों को प्रसारित कर शूर्प में बलि देनी चाहिए ।२२। कृता कृत तण्डुल चपल ओदन अपक्व मत्स्य इतना ही मांस होवे ।२३। पुष्पों से समन्वित सुगन्ध— तीनों प्रकार की सुरा—मूलक—पूरिका—पूप—ओंडेरक स्रज–दधि अन्न–पायस–गुडवेष्ठित मोदक हो । इसके पश्चात् विनायक की जननी अम्बिका का उपस्थान करे और दूव–सरसों पुष्पों से पूर्ण अञ्जलि करके अर्घ्य देना चाहिए ।२४-२५। हे देवि ! आप रूप-लावण्य प्रदान करें—भाग देवें—पुत्रों को देवें—धन देवें और मेरी सभी कामनाओं को पूर्ण कर देवें ।२६।

प्रबलं कुरु मे देहि बलविख्यातिसम्भवम् ।
शुक्लमाल्याम्बधरः शुक्लगन्धानुलेपनः ।
भोजयेंब्राह्मणान्दद्याद्वस्त्रयुग्म गुरोरपि ।२७
एवं विनायक पूज्य ग्रहाश्चैव विधानतः ।
कर्मणां फलमाप्नोति श्रियं प्राप्नोत्यनुत्तमाम् ।२८
आदित्यस्य सदापूजां तिलक स्वामिनस्तथा ।
महागणपते श्चैव कुर्वन्सिलिमवाप्नुयात् ।
वैनायकं विनस्यसत्ववतां नराणां ।
स्नान प्रशस्तमिह विघ्नविनाशकारि
कुर्वन्ति ये विधिवदत्र भवति तेषां ।
कार्याण्यभीष्टभलदानि न संशयोऽत्र ।३०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे देवि ! मेरा बल-विख्याति आदि अति प्रबल कर देवें। फिर शुक्ल माल्य और अम्बरधारी तथा शुक्ल गंध का अनुलेपन करने वाला होकर ब्राह्मणों को भोजन करावे और गुरु को भी करावे तथा दो वस्त्र देवे ।२७। इस प्रकार से विनायक का पूजन करके एवं विधि पूर्वक ग्रहों का यजन करके मनुष्य कर्मों का फल प्राप्त किया करता है और उत्तम श्री को भी पा जाता है ।२८। सदा भगवान आदित्य की पूजा तथा स्वामी का तिलक एवं महागणपति को पूजा करने वाला मनुष्य सिद्धि की प्राप्ति करता है ।२९। विनय सत्व वाले पुरुषों का वैनाय का स्नान यहाँ परम प्रशस्त होता है, और विघ्नों के विनाश का करने वाला है। जो मनुष्य यहाँ पर इसको किया करते हैं, उनके कार्य अभीष्ट फलों के देने वाले अवश्य ही होते हैं इसमें बिल्कुल भी संशय नहीं है ।३०।

अथाविघ्नकर राजन्कथयामि व्रतं तव ।
येन सम्यक्कृतेनेह न विघ्नमुपजायते ।३१

चतुर्थ्यां फाल्गुने मासि गृहीतव्यं व्रतं त्विदम् ।
नक्ताहारेण राजेन्द्र तिलान्न पारणं स्मृतम् ।३२

तदेव वह्नौ होतव्यं ब्राह्मणाय च तद्भवेत् ।
शराय वीराय गजाननाय लम्बोदरायैकरदायचैव ।३३

एव तु सम्पूज्य पुनश्च होमं कुर्याद्व्रती विघ्नविनाशहेतोः ।
चातुर्मास्यां व्रतं चैव कृत्वेत्थं पञ्चमे तथा ।३४

सौवर्ण गजवक्त्रं तु कृत्वा विप्राय दापयेत् ।
ताम्रपात्रैः पायसभृतैश्चतुर्भिः सहित नृप ।३५

पञ्चमेन तिलैः सार्द्धं गणेशाधिष्ठतेन च ।
मृण्मयपि पात्राणि वित्तहीनस्तु कारयेत् ।३६
हेरम्ब राजतं तद्वद्विविधानेत दापयेत् ।
इत्थं व्रतमिदं कृत्वा सर्वविघ्नैः प्रमुच्यते ।३७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा—हे राजन् ! इसके अनन्तर अब हम आपको एक विघ्न न करने वाला व्रत बतलाते हैं जिसको भली-भाँति कर लेने पर यहाँ कोई भी किसी प्रकार का विघ्न उठता नहीं है।३१। फाल्गुन मास में चतुर्थी तिथि में व्रत को ग्रहण करना चाहिए। हे राजेन्द्र ! इससे नक्ताहर (रात्रि में भोजन) होता है और तिलान्न को धारण किया जाता है।३२। वही वह्नि में हवन करे और वही ब्राह्मण के लिये होवे।३३। शूर के लिए—वीर के लिये—गजानन के लिए—लम्बोदर और एक वर के लिए है। इस प्रकार से भली-भाँति पूजन करके व्रत धारण करने वाले को विघ्नों के विनाश करने के हेतु से पुनः होम करना चाहिए।३४। इस व्रत को चार मास तक करे और पांचवें मास में एक सुवर्ण का निर्मित्त गजवक्त्र लाकर विप्र को दिलानी चाहिए।३५। हे नृप ! पायस से भरे चार ताम्र पात्रों के सहित एक पाँचवाँ पात्र ग्रहण करें जो तिलों से तथा गणेश से अधिष्ठित होवे।३६। यदि धन की हीनता हो तो मिट्टी के पात्रों से भी इस क्रिया को करा सकता है उसी भाँति राजत हेरम्ब को उसी विधि-विधान से दिलाना चाहिए। इस प्रकार से इस व्रत को करके मनुष्य समस्त विघ्नों से छुटकारा पा जाया करता है।३७।

हयमेधस्य विघ्ने तु संजाते सगरः पुरा।
एतदेव व्रत चीर्त्वा पुनरश्वं प्रलब्धवान्।३८
तथा रुद्रेण देवेन त्रिपुर निघ्नता पुरा।
एतदेव कृतं यस्मात्त्रिपुरस्तेन घातितः।३९
मया समुद्रं विशतां एतदेव व्रत कृतम्।
तेनाद्रिद्रुमसंयुक्ता पृथिवी पुररुद्धृता।४०
अन्यैरपि महीपाजैरेतदेव कृत पुरा।
तपोऽर्थिभिर्यज्ञ सिद्धै निर्विघ्न स्यात्परंतप।४१
अनेन कृतमात्रेण सर्वविघ्नैः प्रमुच्यते।
मृतो रुद्रपुरं यान्ति वराहवचनं यथा।४२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विघ्नानि तस्य न भवति गृहे कदाचि ।
द्धर्मार्थका सुखसिद्धिविधानकानि ।
यः सप्रेन्दुशकलाकृतिकां तदंन्त ।
विघ्नेशमर्चयन्ति नक्तकृती चतुर्थ्याम् ।४३

प्राचीनकाल में हयमेघयज्ञ के काम में विघ्न उपस्थित हो जाने पर राजा सगर ने इसी व्रत का समाचरणं विधिपूर्वक किया था और फिर गुम हुए अश्व की प्राप्ति की थी ।८। पहिले समय में महान् देवरुद्र ने त्रिपुरासुर का हनन के समय में भी इसी व्रत को किया था जिसका फलं यह हुआ कि उन्होंने त्रिपुर का बध निर्विघ्न कर दिया था ।३९। मैंने भी जिस समय में समुद्र में प्रवेश किया था उस समय में यही व्रत किया था। इसके पर्वतों और द्रुमों से संयुत पृथिवी का पुनरुद्धार किया था ।४०। पहिले अन्य वड़े राजाओं ने भी यही व्रत किया था। हे परन्तप ! अर्थियों के द्वारा यज्ञ की सिद्धि के लिए तप निर्विघ्न हुआ करता है ।४१। इस व्रत के करने पर से ही सभी विघ्नों से मनुष्य छुटकारा पा जाया करते हैं। भगवान् वराह का वचन है कि इस व्रत के करने वाला मृत हो जाने पर रुद्रपुर की प्राप्ति करता है ।४२। उस पुरुष के घर में किसी समय में विघ्न नहीं हुआ करते हैं जो धर्म-अर्थ-सुख सिद्धि के विघात करने वाले हैं। जो सप्तमी में इन्दु के खण्ड की आकृति का, चतुर्थी में नक्तव्रती तदन्त विघ्नेश का समर्चन करता है उसे विघ्नों का सर्वथा अभाव होता है ।४३।

—×—

शान्ति व्रत का माहात्म्य

शान्तिव्रत प्रवक्ष्यामि शृणुष्वैकमयाधुना ।
येन चीर्णेन शान्तिः स्यात्सर्वदा गृहमेधिनाम् ।1
पंचम्यां शुक्लपक्षस्य कार्तिके मासि पार्थिव ।
आरम्भ वर्षमेकं तु ह्यश्नीयाम्लवर्जितम् ।२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नक्त देवं च सम्पूज्य हरि शेषोपरिस्थितम् ।
अनंतायेति पादौ तु धृतराष्ट्राम व कटिम् ।३
उदरं तक्षकायेति उरः कर्कोटकाय च ।
पद्मय कर्णौ सम्पूज्य महापद्माय दोर्युम् ।४
शंखमालाय वस्तु कुलिकायेति वै शिरः ।
एवं विष्णुं सर्वगत पृथगेव प्रपूजयेत् ।५

श्री कृष्ण ने कहा—अब हम शान्ति व्रत के विषय में वर्णन करते हैं । आप एकनिष्ठ मन वाले होकर उसका श्रवण करिये । यह ऐसा अद्भुत व्रत है जिससे साग सम्पादन करने पर गृहस्थियों के घर में सर्वदा पूर्ण शान्ति स्थित रहा करती है ।१। हे पार्थिव ! कातिक मास के शुक्ल पक्ष में पञ्चमी तिथि में इस व्रत का आरम्भ करे और फिर एक वर्ष तक अम्ल से रहित ही भोजन करना चाहिए ।२। रात्रि के समय में शेष की शय्या पर विराजमान हरिदेव का समर्चन करे—अनन्त के लिए चरणों का शयन करे—धृतराष्ट्र के लिए कटि का पूजन करे ।३। तक्षक के लिए उदर का करे—कर्कोटक के लिए उर स्थल का अर्चन करे—पद्म संज्ञक सर्प के लिये दोनों कानों का करे—महापद्म के लिये दोर्युग का पूजन करना चाहिये । शंखपाल के लिए वक्षःस्थल का और कुलिक के लिये शिर का पूजन करे । इस प्रकार से सबमें रहने वाले विष्णु का पृथक् ही पूजन करे ।५।

क्षीरेण स्नपन कुर्याद्धरिमुद्दिश्व वाग्यतः ।
तदग्रे होमयत्क्षीरं तिलः सह विचक्षणः ।६
एवं संवत्सरस्यांते कुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् ।
अच्युतं काञ्चन कृत्वा सुवर्णं तु विचक्षणः ।७
गा सवत्सां वस्त्रयुग कांस्यपात्रं सपायसम् ।
हिरण्यं च यथाशक्ति ब्राह्मणोयोपादयेम् ।८
व यः कुरुते भक्त्या व्रतमेतन्नराधिप ।
तस्य शान्तिभवेतन्नित्यं नागानामभयं तथा ।९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेषाहिभोगशयनस्थमयोगसूति
सम्पूज्य यज्ञपुरुष पतंगेन्द्रनाथम् ।
ये पूजयन्ति मधुरैः सितपंचमीषु
तेषां न नागजनित भयमभ्युपैति ।१०

वाग्यत अर्थात् मौन होकर हरि का उद्देश्य लेकर क्षीर से स्नपन-कर और विचक्षण पुरुष को उनके आगे तिलों के साथ क्षीर का हवन करना चाहिए ।६। इस तरह से जब सम्वत्सर का अन्त हो तब ब्राह्मणों को भोजन करावे । कंचन की अच्युत प्रभू की मूर्ति निर्मित करा कर उसे और सुवर्ण ब्राह्मण को देवे ।७। गौ जो वत्स के सहित हो—दो वत्स-कांमी का पात्र-पायम से परिपूर्ण—यथा शक्ति सुवर्ण ब्राह्मण को उप-पादित करे ।८। हे नराधिप ! इस तरह से जो भक्ति भाव से इस व्रत को किया करता है उसको नित्य ही शान्ति होती है और नागों का सदा भय नहीं होता है ।६। शेष नाग के भोग पर शयन में संस्थित—अयोग सूति पतगेन्द्र नाथयज्ञ पुरुष का भली-भाँति पूजन करके शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथियों में उनका मधुरों के द्वारा पूजन किया करते हैं वे नागों से उत्पन्न होने वाले भय को कभी प्राप्त नहीं होते हैं ।१०।

—×—

नागपंचमी व्रत का माहात्म्य

पंचमी दयिता राजन्नगानंदविवर्द्धनो ।
पञ्चम्यां किल नागाना भगतोत्युत्सवो महान् ।१
वासुकिस्तक्षश्चैव कालिको मणिभद्रक: ।
धृतराष्ट्रो रैवतश्च कर्कोटधनञ्जयो ।
एते प्रयच्छस्यभयं प्राणिनां प्राणजीविनाम् ।२
पञ्चम्या स्नपयंतोह नागान्क्षीरेण ये नराः ।
तेषाँ कुले प्रयच्छन्ति अभयं प्राणिनां सदा ।३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शप्ता नागा यदा मात्रा दह्यमाना दिवानिशम् ।
निर्वापिता गवा क्षीरैस्ततः प्रभृति बल्लभाः ।४

मात्रा शप्ताः कथं नागाः किमुद्दिश्य च कारणम् ।
कथं वा तस्य शापस्य वियोशोऽभज्जनार्दन ।५

उच्चै श्रवाश्चराजश्च श्वेतवर्णोऽमृतीद्भवः ।
तं दृत्ट्वा चाब्रवीत्कद्रू नागिनां जननी स्वसाम् ।६

अश्वरत्नमिदं श्वेत पश्यपश्यामृतोद्भवम् ।
कृत्णांश्च वोक्ष्यसे वालान्सवश्वेतानुवाद्य वः ।७

श्री कृष्ण ने कहा—हे राजन् ! दयिता पंचमी नागों को आनन्द को बढ़ाने वाली है । इस पंचमी में नागों का एक महान् उत्सव होता है ।१। वसुकि-तक्षक-कालिक-मणिभद्रक-धृतराष्ट्र-रैवत-कर्कोटक-ये सब प्राणों से जीवी प्राणियों को अभय प्रदान किया करते हैं ।२। जो मनुष्य पञ्चमी तिथि में यहाँ लोक में नागों को क्षीर से स्नपन कराते हैं उनके कुल में मदा प्राणियों को अभय का दान दिया करते हैं ।३। माता के द्वापा जब नागों को शाप दिये गये थे तो वे अहर्निश दह्यमान रहा करते हैं । गायों के क्षीर से जब वे निर्वापित होते हैं तो तभी से लेकर वे विप्र हो जाया करते हैं ।४। युधिष्ठिर ने कहा—माता के द्वारा नागों को क्यों और कैसे शाप दिया था । इस शाप देने का क्या उद्देश्य था और इसका कारण है ? हे जनार्दन ! यह कृपया बतलाइये ।५। श्री कृष्ण ने कहा—उच्चैः श्रवा अश्वों का राजा है । वह श्वेत वर्ण वाला है और अमृत से उसकी उत्पत्ति हुई है । उसको देखकर नागों की जननी कद्रू अपनी बहिन से बोली ।६। इस श्वेत अश्वरत्न को देख-देख । यह अमृत से उद्भव प्राप्त करने वाला है । कृष्ण वर्ण वाले बाल भी सब श्वेत ही दिखलाई देते हैं ।७

सर्वश्वेत हयवरो नायं कृष्णो न लोहितः ।
कथं त्व वीक्षसे कृष्णं विनतोवाच ताँ स्वसाम् ।८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वीक्षेऽहमेकनया कृष्णकेश समन्वितम् ।
द्विनेत्रां च त्वं विनते न पर्य्यसि गणं कुरु ।९
अहंदासी भवित्री ते कृष्णकेशे प्रदर्शिते ।
नचेद्दर्शयते कद्रु मम दासी भविष्यामि ।१०
एवं ते विपणं कृत्वा गते क्रोधसमन्विते ।
सुषुप्ते प्राज्यदोषे तु कद्रूर्जिह्ममर्चियेत् ।११
आहूय पुत्रोन्प्रोवाच बाला भूत्वा हयोत्तमे ।
तिष्ठध्वं विपणौ जेत्ये विनती जयगृद्धिनीम् ।१२
प्रोचस्ते जिह्मबुद्धि तां नागाः कद्रू विगृह्य च ।
अधर्म एष तु महान्करिष्यामो न ते वचः ।
अशपद्रुषिता कद्रूः पावकोः प्रवक्ष्यति ।१३
गते बहुतिथे काले पाण्डवो जनमेजयः ।
सर्पसत्र स कर्ता वै भमावन्यैः सुदुष्करम् ।१४

विनता ने कहा—यह हयवर सभी श्वेत हैं। न तो यह कृष्ण वर्ण वाला कहीं भी है और न लोहित है। तुम इसको कृष्ण वर्ण वाला देख रही हो—विनता ने इस तरह अपनी बहिन से कहा था।८। कद्रू ने कहा—एक नयन वाली मैं इसको कृष्ण वालों से समन्वित देख रही हूँ। हे विनते ! आप तो दो नेत्रों वाली हैं फिर भी देख नहीं रही हो—लाओ कुछ शर्त बद लो ।९। विनता ने कहा- यदि कृष्ण केश इसके दिखला दिये तो मैं आपकी दासी हो जाऊँगी और यदि हे कद्रू ! तुम ऐसा नहीं दिखा सकी तो फिर मेरी दासी तुमको होना होगा।१०। इस प्रकार से वे दोनों शर्त लगाकर क्रोध से समन्वित होती हुई चली गईं थीं। प्रज्यदोष से सुषुप्त हो जाने पर कद्रू ने एक ने जिह्म (कुटिलता) का चिन्तन किया था। अपने पुत्रों को बुलाकर कहा—तुम सब बाल बनकर उस उत्तम अश्व में स्थित हो जाओ। तुम कहीं पर स्थित रहोगे मैं शर्त में जीत जाऊँगी क्योंकि यह विनता जयगृद्धिनी हो रही है।११। ।१२। नागों ने जिह्म बुद्धि वाली उस कद्रू को पकड़कर कहा—यह तो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महान् अधर्म का काम है। हम आपका यह वचन नहीं करेंगे। तब तो कद्रू ने रोष में भरकर उन पुत्रों को शाप दे दिया था कि पावक तुमको जलावेगा ।१३। बहुत समय व्यतीत हो जाने पर पाण्डव जनमेजय सर्प सत्र करेगा जो कि अन्य लोगों के द्वारा महान् कठिन है ।१४।

तस्मिन्सत्रेच तिग्मांशुः पावको भक्षयिष्यति ।
एवं शप्त्वा तदा कद्रूः प्रत्युवाच न किंचन ।१५
माता शापस्तदा नागः कर्तव्यं वान्वपद्यत् ।
वासुकिर्दुःखसंतप्तः पपात भुवि मूर्छितः ।१६
वासुकिं दुःखितं दृष्ट्वा ब्रह्मा प्रोवाच सांत्वयन् ।
मा शुचो वासुकेऽत्यर्थं शृणु मद्वचनं परम् ।१७
यायावरकुले जातो जरत्कारुरिति द्विजः ।
भविष्यति महातेजास्तस्मिन्काले तपोनिधिः ।१८
भगिनीं च जरत्कारुं तस्य त्वं प्रतिदास्यपिः ।
भविता तस्य पुत्रोऽसावस्तीकं इति विश्रुतः ।१९
स तत्सत्रं प्रवृद्धं व नागानाँ भयद महत् ।
निषेधयिष्यति मुनिर्वाग्भिः सम्प्रज्य पार्थिवम् ।२०
तदियं भगिनी नाग रूपोदायगुणान्विता ।
जरत्कारुर्जरत्कारोः प्रदेया ह्यविचारतः ।२१

उन सत्र में तिग्म किरणों वाला पावक खाजायेगा। एवपादि रीति से शाप देकर कद्रू ने फिर कुछ भी नहीं कहा था ।१५। माता के द्वारा शाप दिये गये नाग उस समय में कुछ भी अपना कर्त्तव्य न खोज सके थे। वासुकि तो इसके महान् दुःख से संतप्त होकर मूच्छित होकर भूमि में गिर गया था ।१६। वासुकि को इस भाँति अति दुःखित देखकर ब्रह्माजी ने उसे सात्वना देते हुए कहा—हे वासुके ! इसका तुम अत्यन्त दुःख मत करो और मेरा जो परम वचन है उसका श्रवण करो ।१७। यायावर कुल में जरत्कारु नाम वाला द्विज उत्पन्न हुआ है। उस जरत्कारु को तुम अपनी भगिनी दोगे। उसका एक पुत्र आस्तीक नाम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से प्रसिद्ध होगा ।१९। वह मुनि इस प्रवृद्ध और नागों को महान् भय के देने वाले नश्र का अपनी वाणियों से पार्थिव का सम्पूजन करके वँद्य करेगा ।२०। सो हे नाग ! रूप और औदार्य गुण से युक्त फगिनी को जरत्कारु को बिना कुछ विचार किये अवश्य ही देनी चाहिए ।२१।

यदासौ प्रार्यन्तेऽकरिष्ये यत्किञ्चित्प्रवदिष्यति ।
तत्कर्तव्यमशेषेण इच्छेच्छ्रेयस्तथात्मनः ।२२
पितामहवचः श्रुत्वा वासुकिः प्रणिपत्य च ।
तथाकरोद्यथा चोक्तं यत्नं परमास्थितिः ।२३
तच्छ्रुत्वा पन्नगाः सर्वे प्रहर्षोत्फुल्ललोचनाः ।
पुनर्जातिमिवात्मानं मेनिरे भुजंगोत्तमाः ।२४
अप्लवे निमग्ननां घोरे यज्ञाग्निसागरे ।
आस्तोकस्तत्र भविता प्लवभूतोऽभयप्रदः ।२५
श्रुत्वा स चाग्निराचानमृत्विजस्तदनन्तसम् ।
निवर्तयिष्यति याग नागानां मोहन परम् ।२६
पञ्चम्यां तच्च भविता ब्रह्मा प्रोवाच लेलिहान् ।
तस्मादियं महाराजा पञ्चमी दयिता शुभा ।२७
नागानाँ हर्षजननो दत्ता वै ब्रह्मणा पुरा ।
दत्वा तु भोजन पूर्वं ब्राह्मणानां तु कामतः ।२८

जिस समय में यह अरण्य में प्रार्थ्यमान हो और जो कुछभी कहेगी वह पूर्णतया कर डालनी चाहिए आदि अपना श्रेय तुम चाहते हो ।२२। पितामह के इस वचन का श्रवण कर वासुकिने उनको प्रणाम किया था और परम यत्न में समास्थित होकर वही किया था जो कुछ भी उससे कहा गया था ।२३। यह सुनकर सभी पन्नग हर्ष से उत्फुल्ल नेत्रों वाले हो गये थे । सब भुजंगोत्तनों ने अपने आपको पुनः जन्म प्राप्त करने वाला माना था ।२४। बिना किसी प्लव के घोर यज्ञ की अग्नि रूपी सागर में डूबने वालों को वहाँ पर अस्तीक अभय प्रदान करने वाला प्लव (तरण का साधन) के समान होगा ।२५। वह अग्नि इसे सुनकर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तदनन्तर ऋत्विजगण नागोंका परम मोहन कम को निवृत्त कर देंगे।२६। ब्रह्माजी ने उन सर्पों से कहा—वह पञ्चमी में होगा। महाराज ! इसी कारणसे वह पञ्चमी शुभा दयिता कही जाती है।२७। यह नागोंको हर्ष के उत्पन्न करने वाली है और ब्रह्माजी ने ही पहिले इसे दिया था। कामना से पहिले ब्राह्मणों को भोजन का दान करे।२८।

विसृज्य कागाः प्रीयता ये केचित्पृथिवीतले।
हिमाचले ये वसन्ति येऽन्तरिक्ष दिविस्थता।२९
ये नदीषु महानागा ये सरः स्वभिगामिनः।
ये वापीषु तडागेषु तेषु सर्वेषु वै ममः।३०
नागान्विप्रांश्च संपूज्य विसृज्य च यथार्थंतः।
ततः पश्चाच्च भुज्जीयात्सह भृत्यैर्न्नरोधिप।३१
पूर्वं मधुरमश्नीयात्स्वेच्छया यदन्तरम्।
एवं नियमयुक्तस्य यत्फल यन्निबोध मे।३२
मृतो नागपुरं याति पूज्यमानोऽप्सरोगणैः।
विमानवरमारूढो रमते कालप्सितम्।३३
इह चागत्य राजासौ सर्वराजवरो भवेत्।
सर्वरत्नसमृद्धश्च बासनाढ्याश्च जायते।३४
पञ्चजन्मन्यसौं राजा द्वापरेद्वापरे भवेत्।
आधिव्याधिविनिमुक्तः पत्नीपुत्रसहायवान्।
तस्मात्पूज्य नागश्च घृतक्षीरादिना सदा।३५

बिसर्जन करके समस्त नाग जो भी इस पृथिवी तल में कोई स्थित हैं प्रसन्न होवें। जो हिमालय में निवास करते हैं या अन्तरिक्ष में एवं दिवलोक में स्थित हैं। जो महानाग नदियों में स्थित रहते हैं। और जो सरोवरों में विराजमान हैं।२९। जो वावड़ियों में, तालाबों में स्थित हैं उन सबके लिये नमस्कार है।३०। नागों का और बिप्रों का भली भाँति अर्चन करके फिर उन सबका विसर्जन कर देवे जो कि वास्तविक रूप से किया जावे। उसके पश्चात् हे नराधिप ! अपने भृत्यों के सहित

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोजन करे ।३१। सबसे पूर्व जो पधार पदार्थ हों उनका भक्षणकरे उसके अनन्तर फिर स्वेच्छा से भोजन करे । इस प्रकार से जो नियम में युक्त होता है उसका जो फल प्राप्त होता है उसे भी मुझसे जान लो ।३२। मरने के पश्चात् वह नागपुर को प्राप्त होता है जहाँ पर अप्सराओं के समूहों द्वारा पूज्यमान हुआ करता है। एक परम श्रेष्ठ विमान पर समारूढ होकर अपने अभीष्ट समय पर्यन्त रमण किया करता ।३३। फिर जब भूमि में प्राप्त होता है तो वह समस्त राजाओंमें श्रेष्ठ राजा होता है ।३४। द्वापर में यह पाँच जन्मों तक राजा होता है जो सभी आधि और व्याधियों से विमुक्त होकर पत्नी तथा पुत्रों की सहायता वाला हुआ करता है । इस कारण से नागों का सदा घृत और क्षीर आदि के द्वारा पूजन अवश्य ही करना चाहिए ।३५।

दंशति यंनरं कृष्ण नागाः क्रोधसमन्विताः ।
भवेत्किं तस्य दंष्टस्य विस्तराद्ब्रूहि मां हरे ।३६
नागदंष्ट्रो नरो राजन्प्राप्य मृत्युं व्रजन्त्यधः ।
अधो गत्वा भवेत्सर्पो निर्विषो नात्र संशयः ।३७
नागदंष्ट्रः पिता यस्य भ्राता माता सुहृत्सुतः ।
स्वसा वा दुहिता भार्या किं कर्तव्यं वदस्व मे ।३८
मोक्षाय तस्य गोविन्द दान व्रतमुपोषितम् ।
ब्रूहि मे यदुशार्दूल येन स्वगति माप्नुयात् ।३९
उपोष्या पञ्चमी राजन्नगानां पुष्टिवर्द्धिनी ।
वर्षमेकं तु राजेन्द्र विधान शृणु यादृशम् ।४०
मासे भाद्रपदे या तु शुक्लपक्षे महीपते ।
सा च पुण्यतमा प्रोक्ता ग्राह्या सद्गतिकान्यया ।४१
ज्ञेया द्वादश वर्षान्ते पञ्चम्यो भरतर्षभ ।
चतुर्थ्यामेक भक्तं तु तस्यां नक्तं प्रकीर्तितम् ।४२

युधिष्ठिर ने कहा—हे कृष्ण ! क्रोध से समन्वित होकर जो नाग मनुष्य का दंशन किया करते हैं, उस काटने का क्या होता है ? हे हरे !

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह आप मेरे सामने विस्तार पूर्वक वर्णन कीजिये ।३६। श्रीकृष्ण ने कहा–हे राजन् ! जो मनुष्य नाग के द्वारा दंष्ट होकर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है वह अधोपतित होता है । अधोभाग में जाकर वह निर्विष सर्प होता है–इसमें कुछ भी संशय नहीं हैं ।३७। युधिष्ठर ने कहा–जिसका पिता नाग से दंष्ट्र हो–भाई-माता सुहृत पुत्र-भगिनी-पुत्री भार्या कोई भी हो तो उसका क्या कर्त्तव्य है–यह मुझे बतलाइये ।३८। हे गोविन्द ! उस दुष्ट प्राणी के मोक्ष के लिए कोई दान व्रत का उपवास हो तो हे यदुशार्दूल ! मुझे बतलाइये जिससे वह स्वर्गगति को प्राप्त कर सके ।३६। श्रीकृष्ण ने कहा–हे राजन् ! नागोंके पुष्टि का वर्द्धन करने वाली यही पंचमी है इसी का उपवास उसे करना चाहिए । वह उपवास भी पूरे एक वर्ष पर्यन्त करे । हे राजेन्द्र! इसका जो विधान है उसका आप श्रवण करिये ।४०। हे महीपति ! भाद्रपद मासमें शुक्लपक्ष में जो पञ्चमी है वह पुण्यतम कही गयी है । सद्गति की कामना से इनका ही ग्रहण करना चाहिए ।४१। हे भरतवर्षभ ! वर्ष के अन्त तक बारह पंचमी तिथियाँ जाननी चाहिए । चतुर्थी के एक वार रात्रि में बताया गया है अर्थात् भोजन करे ।४२।

भूरिचन्द्रमयं नागमथवा कलधौतजम् ।
कृत्वा दरुमयं चापि उताही सृन्मयं नृप ।४३
पञ्चम्यामर्चयेद्भक्त्या नाग पञ्चफणं शृणु ।
करबारैस्तथा पद्मैर्जातीपुष्पैः सुशोभनैः ।४४
गन्धपुष्पैः सनैवेद्यैः पूज्य पन्नगसत्तमम् ।
ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चाद् घृतपायसमोदकः ।४५
नारायणबलिः कार्यः सर्पदंष्टस्य देहिनः ।
दाने पिण्डप्रदाने च ब्रह्मणानां च तर्पयेत् ।४६
वृषोत्सर्गस्तु कर्तव्यो गते संवत्सरे नृप ।
स्नानं कृत्वोदक दद्यात्कृष्णोऽत्र प्रीयतामिति ।४७
अनन्तो वासुकिः शेषः कम्वल एव च ।
तथा तक्षक आगश्चाश्वतरो नृपः ।४८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धृतराष्ट्रः शंखपालः कालियस्तक्षकस्तथा ।
पिङ्गलश्च महानागो मासिमासि प्रकीर्तिताः ।
वत्सरांते पारणस्यास्महाब्राह्मणभोजनम् ।४६
इतिहासविदे नागः कांचनेन कृतौ नृपः ।
तथार्जुनी प्रदातव्या सवत्सा कांस्यदोहना ।५०

भूरिचन्द्र मय अथवा सुवर्ण का निर्मित तथा काष्ठ से विरचित या हे नृप । मिट्टी का बनाया हुआ नाग पञ्चमी तिथि में पाँच फण वाले नाग का भक्तिभाव से अर्चन करे—उसका विधान सुनो । करबीर के पुष्प हों—पदमपुष्प हो अथवा परम शोभन जाति के पुष्प होओ जो गन्ध युक्त हों उन्हीं से मनन करना चाहिए ।४३-४४। नैवेद्य भी उनके साथ में लेकर श्रेष्ठ पन्नग का पूजन करके पीछे ब्राह्मणों का घृतपायस से तथा मोदकों से भोजन करावे ।४५। जो मनुष्य सर्प के द्वारा काटा गया हो और उससे उसकी मृत्यु हुई हो उस देहधारी को नारायण बलि अवश्य ही करानी चाहिए । दान में तथा पिण्ड प्रदान के कर्म्म में ब्राह्मणों को तृप्त करे ।४६। हे नृप । जब एक वत्सर समाप्त हो जाय तो उसी के उद्देश्य से वृष का उत्सर्ग करे । स्नान करके उदक देकर यहाँ पर श्रीकृष्ण प्रसन्न होवें—यह कहकर करे ।४८। अनन्त-वासुकि—शेष पद्म—कम्बल तथा तक्षक नाग और हे नृप । अश्वतर काग-धृतराष्ट्र-महानाग मास में कीर्तित किये गये हैं । वर्ष के अन्त में पारण कर तथा महा ब्राह्मण भोजन करावे ।४६-५०।

एष पारणके पार्थ विधिः प्रोक्तो विचक्षणैः ।
कृते व्रतधरे तस्मिन्सद्गतिं यान्ति बान्धवाः ।५१
ये दन्दशूकरदनेदष्टाः प्राप्ता ह्यधागतिम् ।
वर्षमेकं चरिष्यति भकसा ये व्रत मुत्तमम् ।
द्रांष्ट्रिक मोक्ष्यते नेषां शुभ स्थानमवाप्स्यति ।५२
यश्चेद श्रृणुयान्नित्यं पद्भक्त्या समन्वितः ।
न वै कुटुम्बे नागेभ्यो भय भवति कुत्रचित् ।५३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तद्वद्भाद्रपदे मासि पञ्चम्यां श्रद्धयान्वितः ।
यस्त्वालिख्य नरो नागान्कृष्णवर्णादिवर्णकः ।
पूजयेद्गन्धपुष्पैस्तु सर्पिर्गुग्गुलु पायसैः ।५४
यस्य तुष्टि समायांति पन्नगास्तक्षकादयः ।
आसप्तमात्कुयात्तस्य न भयं नागना भवेत् ।५५
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन नागान्सपूजयेद्बुधः ।
तथा चाश्वयुजे मासि पञ्चम्यां कुरुनन्दन ।५६

हे नृप ! इतिहास के ज्ञाता के लिये काञ्चन से निर्मित कराया हुआ नाग तथा अर्जुनी सवत्सा और काँस्यदोहनी प्रदान करनी चाहिये ।५१ हे पार्थ ! विचक्षण पुरुषों के द्वारा यही पारण में विधि बतलाई गई है । इस श्रेष्ठ व्रतके करने पर जो बान्धव सर्प दंष्ट्र होकर दुर्गतिक हों वे सद्गति को प्राप्त हो जाया करते हैं ।५२। जो दन्द शूक के दाँतों से दंष्ट होकर अधोगति को प्राप्त हुए हों उनकी सद्गति के लिये एक वर्ष पर्यन्त भक्तिभावसे जो इस व्रतका समाचरण करेंगे उनका दांष्टिक मोक्ष हो जाया करता है और फिर शुभ स्थान भी प्राप्त होता है ।५३ जो इस महा शुभ व्रत की कथा का नित्य ही श्रवण किया करता है या भक्ति से समन्वित होते हुए पाठ करता है उसके कुटुम्ब में नागों से फिर कहीं पर भी कोई भय नहीं रहता है ।५४। भगवान् ने कहा—इसी भाँति भाद्रपद मास में पञ्चमी तिथिमें श्रद्धा भाव से संयुत होकर जो मनुष्य कृष्ण वर्ण वाले रंगों से नागों का आलेखन करे और फिर गन्धाक्षत पुष्पादि से एवं सर्पि (घृत) गूगल पायस आदिसे पूजन करना चाहिये ।५५। उसके इस पूजन से तक्षकादि पन्नग परम तुष्टि को प्राप्त हुआ करते हैं और उसके सात कुली तक कभी भी नाग से भय नहीं होता है । उस से सब प्रकार के प्रयत्न से बुध पुरुष को हे कुरु नन्दन! आश्विन मास में पंचमी में नागों को भली प्रकार से पूजन करना चाहिए ।५६।

कृत्वा कुशमयान्नागनिन्द्राण्या सह पूजयेत् ।
घृतोदकाभ्यां पयसा स्नपयित्वा विशांपते ।५७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोधूमैः पयसा स्विन्नैर्भक्ष्यैश्च विविधैस्तथा ।
यस्त्वस्यां विविधान्नगाञ्छुचिर्भक्त्या समन्वितः ।५८
पूजयेत्कुरुशार्दूलं तस्य शेषादयो नृप ।
नागा प्रीताः भवन्तीह शांति प्राप्नोति शोभनाम् ।
स शांति लोक मासाद्य मोदते शाश्वतीः समाः ।५९
इत्येतत्कथितं वीर पञ्चमी व्रतमुत्तमम् ।
तत्रायमुच्यते मन्त्रः सर्वदोषनिषेधकः ।६०
(ॐकुरुकुल्ले हुँ फट् स्वाहा)
भक्तेन भक्ति सहिताः शतपञ्चमीषु ये ।
पूजयति भुजंगान्कुसुमोपहारैः ।
तेषां गृहेष्वयदा हि सदैव सर्पाः शश्वत्प्र ।
मोदपरमा रुचयो भवन्ति ।६१

कुशमय नागों का निर्माण करके इन्द्राणी के साथ पूजन करे । हे विशापते ! पहिले घृत-उदक और पय से स्नपन कराकर ही अर्चन करे ।५७। पय से स्विन्न गोधूम तथा अनेक प्रकार से भक्ष्यों से जो पुरुष पञ्चमी में विधि-विधान पूर्वक शुचि होकर भक्ति की भावना से समन्वित होकर पूजा किया करता है । हे कुरु शार्दूल नृप ! उस पर शेष आदि नाग परम प्रसन्न होते हैं और उन्हें परम शोभन शान्ति की प्राप्ति होती है । फिर वह पुरुष शान्ति लोक की प्राप्ति करके शाश्वती सभा पर्यन्त परमानन्द प्राप्त किया करता है ।५८-५९। हे वीर ! यह परमोत्तम पंचमी के व्रत का विधान हमने आपको बतला दिया है । वहाँ पर सर्पों से दोषका निवारण करने वाला यह मन्त्र भी कहा जाताहै-ॐ कुरुकुल्ले हुँ फट स्वाहा—यह मन्त्र का आकार है । जो भक्तिभाव के सहित शत पञ्चमियों में कुसुमों के उपहारों के द्वारा भुजंगों का पूजन किया करते हैं उनके घर में सदा ही सर्व निरन्तर प्रमोद युक्त होकर अति प्रसन्न रुचि वाले अभय देने वाले होते हैं ।६०-६१।

———

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री पंचमी के व्रत का माहात्म्य

कथमासाद्यते लक्ष्मीदुर्ल्लभां भुवनत्रये ।
दानेन तपसा वापि व्रतेन नियमेन वा ।१
जपहोमनमस्कारैः संस्कारैर्वा पृथग्विधैः ।
एतद्वद यदुश्रेष्ठ सर्ववित्त्वं मतो मम ।२
भृगोः ख्यात्वा समुत्पन्ना पूर्वं श्रीः श्रूयते शुभा ।
वासुदेवाय सा दत्ता मुनिना मानवृद्धये ।३
बासुदेवोऽपि तां प्राप्य पीनोन्नतपयोधराम् ।
पद्मपत्रविशालाक्षी पूर्णचन्द्रनिभाननाम् ।४
भाभासितादिगाभोगां साक्षाद्भानोग प्रभामिव ।
नितवाडबरतवती मत्तमांतगामिनीम् ।
रेमे सह तया राजन्विभ्रमोद्भ्रान्तचितया ।५
सा च विष्णुं जगज्जिष्णुं पति त्रिजगतां पतिम् ।
प्राप्य कृतार्थमात्मान मेने मानयशो धना ।६
हृष्टं पुष्टं जगत्सर्वमभवद्भावितं तया ।
लक्ष्म्य निरीक्षितं चैव सांनन्द हि महीतलम् ।७

युधिष्ठिर ने कहा—यह लक्ष्मी जो तीनों भुवनों में महा दुर्लभ है किस प्रकार से प्राप्त की जाया करती है ? इसके प्राप्त करने के लिए कोई दान है तप है व्रत है या कोई नियमों का पालन होता है ? ।१। जप—होम—नमस्कारों के द्वारा या कोई पृथक् के संस्कारों के द्वारा इसकी प्राप्ति होती है ? हे यदु श्रेष्ठ ! आप तो सभी कुछके ज्ञाता हैं । अतएव मुझे यह बतलाने की कृपा करें ।२। श्री कृष्ण ने कहा—पहिले यह परम शुभा श्री भृगु मुनि से ख्याति में समुत्पन्न हुई थी-ऐसा सुना जाता है । उस मुनि ने मान की वृद्धिके लिए उस श्री को बासुदेव भगवान् के लिए दे दिया था ।३। वासुदेव ने भी उस पीन एवं उन्नत स्तनों वाली-पद्म दलों के समान नेत्रों वाली पूर्ण-चन्द्र के तुल्य मुख से सम्पन्न, अपनी कान्ति से दिशाओं के आभागों का भासित करने वाली

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नितम्बों के आडम्बर से पूर्ण—मस्त हाथी के समान गमन करने वाली साक्षात् सूर्य की प्रभा के ही तुल्य उसे प्राप्त करके विभ्रमों से उदभ्रान्त चित्त वाली उसके साथ रमण किया था।४-५। उसने भी जगत् विष्णु तीनों लोकों के स्वामी भगवान् विष्णुको अपना पति प्राप्त करके मान और यश के धन वाली वह आपको परम कृतार्थ मानती थी।६। उसके द्वारा भावित यह सम्पूर्ण जगत् सृष्ट-पुष्ठ हो गया था लक्ष्मी के द्वारा केवल निरीक्षित होने पर यह महीतल आनन्द संयुक्त था।७।

क्षेमं सुभिक्षमारोग्यमनाक्रन्दमनाकुलम् ।
जगदासीनुद्भ्रान्त प्रशांतोमद्रयं तणा।८
दिवि देवा सुमुदिरे दानवा प्रत्यमागिताः ।
विस्फारितफणाभोगा नागाश्चैव रसातले।९
हृदये ब्राह्मणैवह्नौ भुज्यते त्रिदिवैर्हविः ।
चातुर्वर्ण्यमसंकीर्णं पाल्यते पार्थ पार्थिवैः।१०
विरोचनप्रभृतिदृष्ट्वैव दैत्यसत्तमैः ।
तपस्तप्तुमथारब्धमग्निमाश्रित्य संयतः।११
सोमसंस्थाहर्वि संस्थापाकसंख्यादिभिर्मखैः ।
सदाचारैः समारब्धमिष्टं स्वेष्टाभिलाषिभिः।१२
एवं धर्मप्रधानस्तैर्वेदवादरतात्मभिः ।
जगदासीत्समाक्रांतं विक्रमेण क्रमेण तु।१३
लक्ष्मीविलासप्रभवो देवानामभवन्मदः ।
मदाच्छील च शोचं सत्यं सद्यो व्यनीनशन्।१५

उस देवी लक्ष्मी के दृष्टिपात से ही क्षेम-सुभिक्ष-आरोग्य-अनाक्रन्द और अनुकूल, अकदभ्रान्त यथा प्रशांत उपद्रवी वाला यह जगत् था।८ दिशाओं में देवगण परमानन्द पूर्ण हो गये थे और दैत्यगण दीनता को प्राप्त हो गए थे। रसातल में नागवृन्द विस्फारित फण वाले थे।९। हे पार्थ ! हृदय में ब्राह्मणों के द्वारा अग्नि में देवगण हवि का भोग किया करते थे तथा राजाओं के द्वारा चारों वर्णों का अकंकीर्णत से पालन किया जाता था।१२। विरोचन प्रभृति श्रेष्ठ दैत्यों ने इस प्रकार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की अवस्था को देखकर परम सभत होकर तपश्चर्या करना अग्नि का आश्रय ग्रहण करके करा दिया था ।११। अपने अभीष्ट की प्राप्ति की अभिलाषा वाले दैंत्यों ने सोम-संस्था, हवि-संस्था एवं पाक-संख्या आदि मखों के द्वारा सदाचारों से इष्ट करना आरम्भ कर दिया था ।१२। इस प्रकार से धर्म की प्रधानता वाले वेदों के बाद रत आत्मा वाले उन दैंत्यों के द्वारा क्रय से विक्रय से यह सम्पूर्ण जगत् समाक्रान्त हो गया ।१३। लक्ष्मी के विलाससे समुत्पन्न देवों को उग्र मद हो गया था उस मद का ऐसा प्रभाव हुआ कि शील—शौच और सत्य सभी तुरन्त ही विनष्ट हो गये थे ।१४।

सत्यशौचविहीनांस्ताव्देवान्सत्यज्य चञ्चलान् ।
जगाम दानवकुलं कुलवानुरागतः ।१५
लक्ष्म्या भावितदेहैस्ते. पुनरुद्धतमानसैः ।
यवहृतु समारब्धमन्यायेन मदोद्धतैः ।।१६
वयं वेदा वयं यज्ञा वयं विद्या वयं जगत् ।
ब्रह्माविष्णुशङ्कराद्या वयं सर्व दिवौकसः ।१७
अहं कारविमूढास्ताञ्ज्ञात्वा दानवसत्तमान् ।
सागरं सा विवेशाथ भ्रातचिता भृगोः सुता ।।१८
क्षीराब्धिमध्यगतया लक्ष्म्या क्षीणार्थसंचयम् ।
निरानन्दतश्रीकमभवनद्भुवनत्रयम् ।१९
गतश्रीकमथात्मानं मत्वा शबरसूदनः ।
पप्रच्छाँगिरस विप्रब्रूहि किञ्चिदव्रत मम् ।२०
येन सम्प्राप्यते लक्ष्मीलब्धा न चलते पुनः ।
निश्चलापि सुहृन्मित्रैर्भोग्या भवति सा मुने ।२१

सत्य और शौच से जब देवगण विहीन हो गए तो उन चंचल देवों का त्याग करके वह लक्ष्मी कुल देवों के अनुराग से दानव कुल में चली गयी थी ।१५।जबलक्ष्मी संभावित देहोंवाले वे होगए थे तो उन्होंने भी मद से उद्धतता प्राप्त करली थी और यवहरण करना अन्याय से उन मद से उद्धतों ने आरम्भ कर दिया था ।१६। हम ही वेद हैं-हम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही यज्ञ है हम ही विद्याऔर जगत् हैं तथा ब्रह्माविष्णु और शङ्करआदि सब देव भी हम ही हैं ।१७। इस तरह का अहंभाव उनमें लक्ष्मी के विलास से समुत्पन्न हो गया था। तब लक्ष्मी के अहङ्कारसे विमूढ़ उनका दानवों को समझकर वह भ्रान्त चित्त वाली भृगु मुनि की पुत्री सागर में प्रवेश कर गयी थी ।१८। जब लक्ष्मी देवी क्षीर सागर के मध्य में चली गई तो यह प्रभाव हुआ कि उसके यहाँ न रहने पर क्षीण अर्थ के संचय वाला-निरानन्द में प्राप्त-श्री शून्य यह भवन त्रय हो गया था।१९ फिर शम्बर के सूदन करने वाले ने श्री विहीन अपने आपको मानकर आंगिरस विप्र मे पूछा था यह वतलाओ कि इसके लिए मुझे क्या व्रत ग्रहण करना चाहिए ।२०। जिसके करने से लक्ष्मी की प्राप्ति होवे और प्राप्त हुई वह फिर चल न हो सके। हे मुने ! वह निश्चलत होकर रहे जिसको मेरे सभी सुहृत और मित्र भली-भाँति भोग कर सके अर्थात् सब ही भोग के योग्य होवे ।२१।

न स श्रीत्यभिमन्तव्या कन्या स पाल्यते गृहे ।
परार्थं या सुहृन्त्रिमृत्यस्नैवोपभुज्यते ।२२
शक्रस्यैद्वचः श्रुत्वा वृहस्पतिरुदारधीः ।
कथयामास संचित्य शुभं श्रीपंचमीव्रतम् ।२३
यत्पुरा कस्यचित्प्रोक्तं व्रतानामुत्तमम् व्रतम् ।
तदस्मै कथमास सरहस्यमशेषतः ।२४
तच्छ्रुत्वा कर्तुमारब्धं सरेशेन सुरेस्तथा ।
दैत्यदानवगंधर्वैर्यक्षै प्रक्षीणकल्मषैः ।२५
सिद्धैः प्रसिद्धचरितैर्विष्णुना प्रभविष्णुना ।
ब्राह्मणैर्ब्रह्मत्वज्ञैः समर्थैः पार्थिवैः सह ।२६
कंश्चित्सात्विकभावेन राजसिनापरैरपि ।
तामसेन तथा कश्चिस्कृ व्रतमिदतथा ।२७
व्रते समाप्ते भूयिष्ठे निष्ठया परया प्रभो ।
देवानां दानवानां च युद्धमासीदथोद्धतम् ।२८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे ऐसा श्री अभिमन्तव्य नहीं है जो एक कन्या की भाँति अपने ही घर में छाया करती है और दूसरों के अर्थ में न आवे तथा सुहृत एवं मित्रों द्वारा जिसका कोई भी उपभोग न किया जा सके ।२२। शक्र के इस वचन का श्रवण करके उदार बुद्धि वाले बृहस्पति ने भली-भाँति विचार करके यह परम शुभ तथा व्रतों में उत्तम श्री पंचमी को व्रत कहा था । और उस व्रत को रहस्य के सहित पूर्ण रूप से जो कि पहिले किसी का बताया हुआ था इन्द्र के लिए अच्छी तरह से बतला दिया था ।२३-२४। यह श्रवण करके सुरेश ने तथा अन्य सुरों ने और दैत्य दानव गन्धर्व और यक्षों ने इसका आरम्भ कर दिया था जिससे सभी प्रक्षीण कल्मषों वाले हो गए थे ।२५। सिद्धों में जिनके चरित परम प्रसिद्ध थे विष्णु ने जो प्रथा विष्णु थे—ब्राह्मणों ने जो ब्रह्म तत्व के पूर्ण ज्ञाता और समर्थ राजाओं ने भी इसे काला आरम्भ कर दिया था ।२६ इन सभी व्रत के करने वालों में कुछ भी तो ऐसे थे जो इस व्रत को परम सात्विक भाव से कर रहे थे—कुछ राजस भावसे ही इसको करते थे तथा कुछ ऐसे भी थे जो व्रत को करते थे किन्तु उनका तामस भाव ही था ।२७। इस भूयिष्ठ के व्रत के समाप्त होने पर ही हे प्रभो ! जो कि परानिष्ठा से किया गया था देवों और दानवोंका महान् उद्धत युद्ध हो गया था ।२८।

निर्मथ्य भूजवीर्येण सागरं सरिता पतिम् ।
समाहरोमा ह्यमृतं हिताय त्रिदिवौकसाम् ।२६
इत्येव समयं कृत्वा ममथुर्वरुणालयम् ।
मथदानं मन्दरं नेत्र कृत्वा तु वासुकिम् ।३०
मथ्यमानजवाज्जातश्चन्द्रः शीतांशुरुज्ज्वलः ।
अगतरं समुत्पन्नाः लक्ष्मीः क्षीराब्धिमध्यतः ।३१
तया विलोकिता सर्वे दैत्यदानवत्तमाः ।
आलोक्य सा जगाममुविष्णोवक्षः स्थलशुभम् ।३२
विधिनां विष्णुनां चीर्णं व्रत तेनाब्धिसम्भवा ।
शरीरस्था वभूवस्य विभ्रमोदभ्रांतलोचना ।३३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किं च राजसभावेन शक्रेणैयत्कृतं यतः।
ततस्त्रिभुवीन्श्चर्यं प्राप्तं तेन महार्द्धिकम् ।३४
तमसावृतचित्तैस्तु सचीर्णं दैत्यदानवैः।
तेन तेषामथैश्वर्यं हृष्टनष्टमभुत्किल ।३५
एवं सश्रीकभवत्सदेवासुरमानुषम् ।
जरच्च जगतां श्रेष्ठ व्रतस्यास्व प्रभावतः ।३६

भुजाओं के वीर्य के द्वारा सरिताओं के स्वामी इस विशाल सागर का निर्मन्थन करके देवों के हित के लिए अमृत का समाहरण करे--इस प्रकार का परस्पर में समय करके उन्होंने वरुणालय सागर का मन्थन किया था। उस मन्थन की क्रिया में मन्दर गिरिको मन्थान बनाया था और वासुकि नाग को उसकी डोरी (नेत्र) बनाया था ।२६-३०। जब वह सागर मन्थन किया गया तो उसके जल से शीत किरणों वाला अति उज्ज्वल चन्द्रमा उत्पन्न हुआ था। इसके पश्चात् उस क्षीर सागर के मध्य से लक्ष्मी उत्पन्न हुई थी ।१३। उस लक्ष्मी ने वहाँ पर उपस्थित सभी देवों तथा दानवों को देखा था। यह देखकर वह शीघ्र ही भगवान विष्णु के शुभ वक्षःस्थल में चली गई थी ।३२। विष्णु ने विधि पूर्वक उस व्रत को किया था इसी से वह अब्धि से समुत्पन्न होने वाली इनके शरीर से विभ्रम से उद्भ्रान्त चित्त वाली होती हुई संस्थित हो गई थी ।३२। क्योंकि इन्द्र ने इसी व्रत को राजस भाव से किया था इसलिए उसने महान् ऋद्धि से सम्पन्न त्रिभुवन का ऐश्वर्य प्राप्त कर लिया था ।३४। जो तम से समावृत चित्त वाले दैत्य दानव थे उन्होंने इसी व्रतको कियाथा इसी कारणसे उनका सम्पूर्ण ऐश्वर्य-हृष्ट-नष्ट-भ्रष्ट हो गया था ।३५। इस प्रकार से देवासुर मानुष सभी हे जगतों में श्रेष्ठ ! इस व्रत के प्रभाव से श्री से सुसम्पन्न हो गए ।३६।

कथमेतद्व्रतं कृष्ण क्रियते मनुजैः कदा।
प्रारम्भे पार्यंते च सर्वं वद यदूत्तम ।३७
मार्गशीर्षे सिते पक्षे पंचम्यां पतङ्गोदये।
उपवासस्य नियमं कुर्यादाक्ष सुहृदि ।३८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्णरौप्यारकूटोत्था ताम्रमृत्काष्ठजाथ वा ।
चित्रपट्टगतां देवीं लक्ष्मी क्षमापाल कारयेत् ।३९
पद्महस्तां पद्मवर्णा पद्मां पद्मलेक्षेणाम् ।
दिग्गजेन्द्रः स्नाप्यानां कुचिनै कलशोत्तमैः ।४०
ततो यामत्रये जाते निम्नगायां गृहेऽव वा ।
स्नानं कुर्यादसंभ्रातं शक्रवदुपचारतः ।४१
देवान्पितृन्श्च संनप्यं ततो देवगृहं व्रजेत् ।
तत्रस्था पूजयेददेवी पुष्पे स्नत्कालसम्भवे ।४२

राजा युधिष्ठर ने कहा—हे श्री कृष्ण ! मनुष्यों को किस समय में और किस रीति से इस व्रत को करना चाहिए। हे यदूत्तम किस विधि से इनका आरम्भ किया जाता है कैसे परायण किया जाता है यह सभी कृपा करके मुझे बताइए ।६७। श्री कृष्ण ने कहा—मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष में पंचमी तिथि में सूर्योदय हो जाने पर सुहृद की शीघ्र ही इस उपवास का नियम करना चाहिए ।३८। स्वर्ण—रौप्य—और कूट-ताम्र-मृतिका अथवा काष्ठ की या चित्रपट पर रहने वाली लक्ष्मी देवी की प्रतिमा का निर्माण है क्षमापन ! करना चाहिए ।३९। उस प्रतिमा का स्वरूप ऐसा हो हाथों में पद्म-पद्म के समान-पद्ममयी और पद्मके दलों तुल्य लोचन दिशाओंसे स्थित गजेन्द्रों के द्वारा सुवर्ण के सुन्दर एवं उत्तम कलशों से स्नाप्यमान होने वाली हो ।४०। फिर तीन प्रहरों के समाप्त हो जाने पर चौथे प्रहर में किसी नदी में अथवा गृह में ही शक्रकी भाँति उपचारसे सम्भ्रान्ति शून्य होकर स्नान करना चाहिए ।४१। फिर देवगण तथा पितरों का तर्पण करके देवगृह में गमन करे। वहाँ पर विराजमाना लक्ष्मी देवी का उस समय में सम्प्राप्त पुष्पों से पूजन करना चाहिए ।४२।

चपलायै नमः पादौ चञ्चलायै च जानुनी ।
कटि कमलवासिन्यै नाभि ख्यात्यै नमोनमः ।४३
स्तनो मन्मथ वासिन्यै ललितायै भुजद्वयम् ।
उत्कठिमायै कण्ठ च माधव्यै मुखमण्डलम् ।४४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नमः श्रियै शिरः पूज्य दद्यान्नैवेद्यमादरात् ।
फलानि च यथालाभं विरूढान्धान्यसंचयान् ।४५
ततः सुवासिनी पूज्या कुसुमैः कुकुंमेन च ।
भोजयेन्मधुरान्नेन प्रणिपत्य विसर्जयेत् ।४६
ततस्तु तन्डुप्रस्थं घृतपात्रेण संयुतम् ।
ब्राह्मणाय ददातव्यं श्रीशः संप्रीयतामिति ।४७
निवर्त्य तदशेषेण ततो भुञ्जीत वाग्यतः ।
मासानुमासं कर्तव्यं विधिनानेन भारतः ।४८
श्रीलक्ष्मीः कमला सपदुमा नारायणी तदा ।
पदमा घृति स्थितिः पुष्टिश्चर्द्धि सिद्धियथाक्रमम् ।
मासानुमासं राजेन्द्र प्रीयतामिति कीर्तये ।४९

चपला के लिए चरणों में नमस्कार है । चंचला के लिए आयुओं में मेरा नमस्कार है । कमलवासिनी की सेवा में कटिको नमस्कार समर्पित है । ख्याति देवी के लिए नाभि को बारम्बार नमस्कार है ।४३। मन्मथ वासिनी के लिए स्तनों कोमेरा नमस्कार है । ललिता देवी के लिए दोनों भुजाओं को मेरा प्रणाम है। उत्कण्ठित के लिए कण्ठ को मेरा नमस्कार है तथा माधवी देवी के लिए मुख मण्डल को मेरा प्रणाम निवेदित है ।४४। श्रीदेवी के लिए शिरको मेरा नमस्कार है-इस प्रकार से पूजन करने आदरके साथ नैवेद्य समर्पित करना चाहिए । यथा लाभ फल तथा विरूढधान्य संचयोंको निवेक्षित करो।४५। इसके पश्चात्कुसुमों से और कुङ्कुम से सुवासिनियों का पूजन करना चाहिए । उनको मधुर अन्न से भोजन करावे और अन्त में प्रणिपात करके उनका विसर्जन करे ।४६। इसके पश्चात् एक प्रस्थ तण्डुल घृत पात्रसे युक्त करके किसी योग्य ब्राह्मण को देना चाहिए और उस समय में यह कहना चाहिए कि श्री के ईश प्रभु मुझ पर प्रसन्न होवें ।४६। यह सभी कृत्य समाप्त करके पीछे अन्त में मौन व्रत पूर्वक स्वयं भोजन करे । हेभारत ! मासनुमास अर्थात् प्रतिमास में इसी विधान से यह करना चाहिए ।४८। श्री लक्ष्मी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमला-सुपद्मा-नारायणी-पद्मा-धृति-स्थिति-पुष्टि-ऋद्धि और सिद्धि इन नामों का उस समय में यथाक्रम कीर्तन करके हे राजेन्द्र ! आप प्रसन्न होवें-ऐसा मासानुमास में कहना चाहिए ।४९।

ततश्च द्वादशे मासि सम्प्राप्ते पञ्चमे दिने ।
वस्त्रमण्डपिकां कृत्वा पुष्पगन्धाधिवासिताम् ।५०
शय्यायाँ स्थापयेल्लक्ष्मी सर्वोपस्करसंयुताम् ।
मौक्तिकाष्ठसंयुक्तां नेत्रपट्टावृतस्तनीम् ।५१
सप्तधान्यसमोपेता रसचापुसमन्विताम् ।
पादुकोपानहच्छत्रभाजनासनसत्कृताम् ।५२
दद्यात्संपूज्य विधिवद्ब्राह्मणाय कुटुम्बिने ।
व्यासाय वेदविदुषे यस्य वा रोचते स्वयम् ।
सोपस्करां सवत्सां च धेनुं दत्वा क्षमापयेत् ।५३
क्षीराब्धिमथनोदभूते विष्णोवक्ष स्थलाश्रये ।
सर्वकामप्रदेन्देवि ऋद्धि यच्छ नमोऽस्तु ते ।५४

इसके उपरान्त बारहवें मासके प्राप्त होने पर पाँचवें दिनमें वस्त्रों के द्वारा एक मनुष्य की रचना करके जो कि पुष्पों और गन्ध से अधि-वासित किया गया हो ।५०। एक शय्यापर सम्पूर्ण उपस्कारों के सहित लक्ष्मी देवी को स्थापित करे । मोक्तिकाष्टक से समन्वित तथा नेत्र पट्ट से आवृत स्तनों वाली लक्ष्मी देवी होनी चाहिए ।१५। सप्त धान्यों से उपेत एवं आधुओं से संयुक्त-पादुका, उपानह, छत्र, भजन और आसन आदि में संस्कृत देवी को करे ।५१। उस देवी का विधि-विधान से भली-भाँति समर्चन करके किसी कुटुम्बी ब्राह्मण को दे देना चाहिए । वह विप्र व्यास हो--वेदों का विद्वान हो अथवा जो कोई भी सुयोग्य पात्रहो जिसको स्वयं पसन्द किया जावे । उपस्कारोंमे युक्त-वत्स वाला धेनु का भी दान करके अन्त में क्षमापन करना चाहिए ।५३। हे क्षीर सागर के मन्थन करने पर समुत्पन्न होने वाली देवि ! आपका आलय तो भगवान् विष्णु का वक्ष-स्थल है । आप सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
करने वाली हैं। हे देवि ! आप मुझे ऋद्धि प्रदान कीजिए । आपकी सेवा में मेरा नमस्कार हे ।५४।

तत: सुवासिनो: पूज्य वस्त्रैराभरणै: शुभै: ।
भोजयित्वा स्वयं पश्चादभुञ्जीत सह बन्धुभि: ।५५
एवं य: कुरुते पार्थ भक्त्या श्रीपञ्चमीव्रतम् ।
तस्य श्रीभवनं भाति कुलानामेकविशवि: ।५६
नारी वा कुरुतें या तु प्राप्यानुज्ञां स्वभर्तृत: ।
सुभागा दर्शनीया च बहुपुत्रा च जायते ।५७
श्री पञ्चमीव्रतमित दयितं मुवारेर्भभ्या ।
ममाचरति पूज्यभगोस्तनूजाम् ।
राज्यं निज स भुवि भव्यजनोपभोगान् ।
भुक्त्वा प्रयाति भुवनं मधुसूदनस्य ।५८

इसके पश्चात् सुवासिनी नारियों का पूजन करे और वस्त्र तथा आभरण उन्हें समर्पित करे जो परम शुभ हो। उनको भोजन कराकर पीछे बन्धुओं के साथ स्वयं भोजन करना चाहिए ।५५। हे पार्थ ! इस विधि में जो कोई शक्ति से श्री पंचमी का यह व्रत किया करता है उसके भवनमें इक्कीस कुलों तक भी शोभा दिया करती है ।५६। अथवा कोई नारी अपने स्वामी से अनुज्ञा प्राप्त करके इस व्रत को किया करती है, वह परम सुभगा-दर्शन करने के योग्य और बहुतसे पुत्रों वाली होती है ।५७। यह भी पंचमी का व्रत भगवान् मुरारि का अति प्रिय व्रत है। इसका पूज्य भृगु मुनिकी पुत्रीके व्रतको जो कोई भक्तिभावसे समाचरित किया करता है वह मनुष्य इस भूमण्डल में अपना निज का राज्य प्राप्त किया करता है और यहाँ पर वह भव्य जनों के भोगने योग्य उपभोगों का सुख भोगकर अन्त में मधुसूदन प्रभु के भुवन में प्राप्त हो जाया करता है ।५८।

—×—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशोकषष्ठी व्रत का माहात्म्य

षष्ठीविधिनमधुना कथयस्व जनार्दन ।
सर्वव्याधिप्रशमनं सर्वकर्मफलप्रदम् ।१
श्रुतं मया पूज्यमानो भानुः सर्वं प्रयच्छति ।
दिवाकराराधनं मे तस्मात्कथयं केशव ।२
विशोक षष्ठीततुलां वक्ष्यामि मनुजोत्तम ।
यामुपोष्य नरः शोक न कदाचिदिह जायते ।३
माघे कृष्णतिलैः स्नातः पञ्चम्या शुक्लप्रक्षतः ।
कृताहारः कृशरया दन्तधावअपूर्वकम् ।४
उपवासव्रत कृत्वा ब्रह्मचारी भवेन्निशि ।
ततः प्रभाते चोत्थाय कृतस्नानस्ततः शुचिः ।५
कृत्वा तु काश्चनं पदमभर्कोऽयमिति पूजयेत् ।
करबोरेश रक्तेन रक्तवस्त्रयुगेन च ।६
यथा विशोकं भवन त्यैवादित्यसर्वदा ।
तथा विशोकता मे स्यात्वभक्तिजन्मजन्मानि ।७

युधिष्ठिर ने कहा—हे जनार्दन ! अब आप षष्ठी के विभाग का वर्णन कीजिए जो समस्त व्याधियों का प्रशमन करने वाला है समस्त कामनाओं के फलों का प्रदान करने वाला है ।१। मैंने ऐसा सुना हैं कि पूज्यमान भानु सभी कुछ प्रदान किया करते हैं। हे केशव ! अतएव भगवान दिवाकर के करने का सभी विधान मुझे बतलाइए ।२। श्री कृष्ण ने कहा-हे मनुओं में श्रेष्ठ ! इस अतुलनीय विशोकषष्ठी के विषयमें में बतलाता हूँ जिसका हूँ जिसका उपवास करके मनुष्य इस संसार में कभी भी शोक को प्राप्त नहीं होता है ।३। माघ मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी में काले तिलों से स्नान करे और कृशर का आहार दन्त धावन करने के पश्चात् करना चाहिए ।४। उपवास के व्रत को करके रात्रि में ब्रह्मचर्य का पालन करे। फिर प्रभात में उठकर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्नान करके शुचि होना चाहिए ।५। एक स्वर्ण के परम की रचना कराकर उसी को यह सूर्यदेव हैं—ऐसा मानकर पूजित करना चाहिए। रक्त करवीरके पुष्पों से और रक्तदो वस्त्र के द्वारा पूजन करे। जिसमें हे आदित्य देव ! सर्वदा आपकेही द्वारा शोक रहित रहे और मेरी ऐसी विशोकता ही सर्वदा बनी रहनी चाहिए तथा जन्म जन्मान्तर आदि के चरणों में मेरी भक्ति रहे ।६-७।

एवं सम्पूज्य षष्ठयां स्वशक्त्या सम्पूजयेदद्विजान् ।
सुप्त्वा सम्प्राश्य गोमूत्रत्थाय कृतनिश्चयः ।८
सम्पूंज्य विप्रमन्त्रेण गुडपात्रसमन्वितः ।
सूक्ष्मवस्त्रयुगलं ब्राह्मणाय निवेदयेत् ।६
अतैललवणं मुक्त्वा सप्तम्यां मौनसंयुतः ।
ततः पुराणश्रवणं कर्तव्य भूतिमि छता ।१०
अनेन विविना सर्वमुभयोरपि पक्षयोः ।
कुर्याद्यावत्पुनर्माघशुक्लपक्षस्य सप्तमी ।११
व्रतांते कलश दद्यात्सुवर्णकमलान्वितम् ।
शय्या सोमस्कारां सद्वत्कपिलां च पयस्विनीम् ।१२
अनेन विधिना यस्तु वित्तशाड्यविवर्जितः ।
विशोकषष्ठी कुरुते स याति परमां गतिम् ।१३

इस भाँति षष्ठी तिथि में पूजन करके अपनी शक्ति के अमुसार द्विज की भी अर्चना करनी चाहिए। सोकर भली भाँति गोमूत्र का सम्प्राशन करके निश्चय करके उठजावे ।८। गुड़ मात्र से समन्वित होकर मन्त्र के द्वारा विप्र का पूजन करे तथा बारीक वस्त्रों का एक जोड़ा ब्राह्मण के लिए समर्पित करना चाहिए ।६। तेल और लवण से रहित पार्थ का भोजन करके सप्तमी तिथि में मौन रहना चाहिए । इसके पश्चात् भूमि इच्छा वाले पुरुष को पुराणों का श्रवण करनाचाहिए ।१० विधि से दोनों पक्षों से सब करना चाहिए जब तक फिर माघ मास के शुक्ल पक्ष की सप्तमी न आवे ।११। व्रत के अन्त में स्वर्ण कमल से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
युक्त कलश देना चाहिए। उपस्करों से युक्त एक शय्या और पयस्विनी कपिला गौ का भी दान करे।१२। इस विधि से वित्त पाठ्य से रहित होकर अर्थात् धन होते हुए कंजूसी न कर जो पुरुष इस विशोक षष्ठी को करता है वह परम गति को प्राप्त कर धन वान होता है।१३।

यावज्जन्मसहस्राणांग्रकांसोटिशतं भवेत्।
तावन्न शोकमभ्येति रोगदौर्गत्य वर्जितः।।१४
यं यं प्रार्थयते काम तं तं प्राप्नोति पुष्कलम्।
निष्काम् कुरुते यस्तु स परं ब्रह्म गच्छति।।१५
यः पठेच्छृणुयाद्वापि षष्ठी शोकविनाशिनीम्।
सोपीन्द्र लोकमाप्नोति न दुःखो जायते क्वचित्।।१६
ये भास्करं दिनकरं करवी पुष्पैः।
सम्पूजत्यय भनभति कृतोमवासाः।
ते दुःखशोकरहिताः हृहिताः। सुहृदिभर्भू मौ।
विहृत्य रविलो मवानुवति।।१७

जब तक सहस्र जन्म ग्रहण करे और अग्र कोटिशत के सहित होवे तब तक वह पुरुष कभी भी शोक को प्राप्त नहीं होता है तथा रोग एवं दुर्गति से भी वर्जित रहता है।१४। जिस-जिस कामना के पूर्ण होने की प्रार्थना करता है उसी को पुष्कलता के साथ प्राप्त कर लेता है। जो बिल्कुल निष्काम होकर इस विधान को करता है वह तो पर ब्रह्म को प्राप्त कर लेता है।१५। जो कोई भी इस विधान का पाठ करता है या श्रवण किया करता है जो कि यह षष्ठी शोकों के विनाश करने वाली है वह भी इहलोक को प्राप्त हो जाया करता है और कभी भी किसी समय में दुःखित नहीं हुआ करता है।१६। जो लोग दिनकर भास्कर भगवान का करवीर के पुष्पों के द्वारा पूजन किया करते हैं और उपवास करके इनका गर्व करते हैं वे दुःख एवं शोक से रहित होते हुए मित्रों के साथ इस भूमण्डलमें निवास किया करते हैं और जब अन्त में इसका त्याग करते हैं तो फिर सीधे सूर्य लोक को प्राप्त करते हैं।१७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमलषष्ठी व्रत का माहात्म्य

अन्यामपि प्रवक्ष्यामि पद्मषष्ठीं शुभां तथा ।
यामुपोष्य नरः पापविमुक्तः स्वर्ग भाग्भवेत् ।१
मार्गशीर्षे शुभे मासि पञ्चम्यां नियतव्रतः ।
षष्ठीमुपोष्य कमल कारयित्वा सुकाञ्चनम् ।२
शंकरसंयुतं दद्याद्ब्राह्मणाय कुटुम्बिने ।
रूपं च काञ्चनं कृत्वा फलस्यैकस्य धर्मवित् ।३
दद्या प्रायः कृतस्नानो भानुमे प्रीयतामितः ।
यक्त्या तु विप्रान्हपूज्य सप्तम्यां क्षीरभोजनम्ः ।४
कृत्वा कुर्यात्फलत्यागे या च स्यात्कृष्णसप्तमी ।
एतापोष्य विधिवननैव क्रमेण तु ।५
यद्वहैम फलं दत्वा सुवर्ण कमलान्वितम् ।
शर्करापात्रसंयुक्त वस्त्रमालासन्वितम् ।६
षष्ठवोरुभयोमहाराज यावत्सम्वत्सर ततः ।
उपोष्य दद्यात्क्रमशः सूर्यमन्त्रानुदीर येत् ।७

श्रीकृष्ण ने कहा-मैं एक अन्य भी परम शुभव्रतपद्मषष्ठीके विषय में तुमको बतलाता हूँ ! जिसका उपवास करके मनुष्य पापों से विमुक्त हो कर स्वर्गवास का अधिकारी हो जाया करता है ।१। मार्गशीर्ष परम शुभ मास में पञ्चमी तिथि में नियत व्रत वाला रहकर षष्ठी का उपवास करे । एक सुवर्ण का कमल निर्माण करावे । शर्करा से उसे समन्वित करके किसी योग्य कुटुम्बी के लिए दान में देवो । चाहे रूपा का (चाँदीका) हो या सुवर्ण का हो एक ही फल प्राप्त होता है । धर्म के वेत्ता पुरुष को देना चाहिए ।२। प्रातः-काल में स्नान करके इसका दान देवे और भानु देव मुझ पर प्रीतिमान् होवे-यह उच्चारण करके कहे । भक्ति भाव से विप्रों का पूजन करके सप्तमी तिथिमें क्षीर का भोजन करो ।४। क्षीर खाकर फल त्याग करे और जो कृष्णपक्ष की सप्तमीकी होती है । इसी क्रमसे विधि पूर्वक उपवास करना चाहिए ।५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हेम देकर जो कि सुवर्ण के कमल के सहित होवे। शर्करा के पात्र से युक्त तथा वस्त्र एवं माला से समन्वित दान करे।६। हेमराज ! दोनों पक्षों की षष्ठियों में जब तक एक वर्ष पूर्व हो उपवास क्रम से दान करे और सूर्य के मन्त्रों का उच्चारण करना चाहिए।७।

भानुरर्को रविर्ब्रह्मा सूर्यः शुक्रो हरिः शिवः।
श्रीमान्विभावसुस्त्वष्टा वरुणाः प्रायतामिति।८
प्रतिमास च सप्तम्यामेकैकं नाम कीर्तयेत्।
प्रतिपक्षं फलत्यागमेत मेस्कुदन्समाचरेत्।९
व्रतांते विप्रमिथुनं पूजयेद्वस्त्रभूषणैः।
शर्कराशलश दद्याद्धैमपदमफलान्वितम्।१०
यथा फलकरो तासस्त्वदभक्तानाँ सदा रवे।
तथानतलार्प्तिरस्तु जन्मनिजन्मनि।११
इमामनन्तफलदाँ फलषष्ठी करोति यः।
स सर्वपापविनिर्मुक्तः सूर्यलोके महीयते।१२
सुरापानादिकं अिञ्चद्यदत्रामुत्र वा कृतम्।
तत्सर्व नाशमायाति सूर्यलोकं स गच्छति।१३
भूतान्भव्यांश्च पुरुषांस्मारयेदेकविशतिम्।
शृणुयाद्यः पठेद्वापि सोऽपि कल्याणभाग्नभेत्।१४
हैम फल सकमल कलश सितायाः
षष्ठीमुपोष्य विधिवदद्विजपुंगवाथः।
दद्यात्सुरासुरशिरोमणिघृष्टपादं भानु।
प्रणम्य फलसिद्धिमुपैति मर्त्यः।१५

भानु—अर्क रवि-ब्रह्मा-सूर्य-शुक्र-हरि शिव-श्रीमान-विभावसु-त्वष्टा और वरुण प्रसन्न होवे।८। प्रत्येक मास में सप्तमी तिथि में उपर्युक्त नामों से एक नाम का कीर्त्तन करे। प्रतिपक्ष में फल का त्याग करे। और यह करते हुए इस व्रत का समाचरण करना चाहिए।९। व्रत के अन्त में विप्र के जोड़े का वस्त्र-भूषणों से पूजन करे। सुवर्ण के पद्म एवं फल से युक्त शर्करा के कलश का दान करना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिए ।१०। हे रवे ! जिस प्रकार से आपके भक्तों का यह मास सदा फल के करने वाले हैं उसी प्रकार से जन्म जन्ममें अनन्त फल की प्राप्ति होवे । इस अनन्त फलों के प्रदान करने वाली फलषष्ठों को जो कोई भी पुरुष किया करता है वह सभी पापों से छुटकारा पाकर सूर्यलोक में प्रतिष्ठित होता है ।१२। सुरापान आदि जो कुछ भी इस लोक में या परलोक में किया हो उस सबका नाश हो जाता है और वह सूर्य लोक को जाता है ।१६। पहिले हुए और होने वाले इक्कीस पुरुषों का तारण्य कर देता है । जो इसका श्रवण करता है या पाठ किया करता वह भी कल्याण प्राप्त करनेका भागी होता है।१६। शुल्क पक्षकी षष्ठी का उपवास करके सुवर्ण का कलश फल और कमल का विधि पूर्वक किसी श्रेष्ठ द्विज को दान में देने चाहिए । सुरों एवं असुरों के शिरो रत्न से घृष्ट चरण वाले भानु को प्रणाम करके मनुष्य फलों की सिद्धि का लाभ प्राप्त किया करता है ।१५।

—×—

विजय सप्तमी माहात्म्य

सप्तमी च यदा देव केन कालेन पूज्यते ।
किंफला नियमः किश्चद्वद देवकिनन्दन ।१
शुक्लपक्षे तु सप्तम्या यदादित्यदिनं भवेत् ।
सप्तमी विजया नाम यत्र दत्तं महाफलम् ।२
स्नान दानं जपो होम उपवासस्तथैव च ।
सर्वं विजयासप्तम्यां महापातकनाशनम् ।३
प्रदक्षिणां यः कुरुते फलैः पुष्पांदिवाकरम् ।
स सर्वगुणसम्पन्नं पुत्रं प्राप्नोत्यनुत्तमम् ।४
प्रथमा नालिकुरैस्तु द्वितीया रक्तनागरैः ।
तृतीया मादलगैश्च चतुर्थी कदलीफलै ।५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पञ्चमी वरकूष्माण्डैः षष्ठी पक्वैस्तु तंदुकैः ।
वृन्ताकैः सप्तमी देया अष्टोत्तरशतेन च ।६
मौक्तिकैः पद्मरागैश्च नीलः कर्केतनैस्तथा ।
गोमेदैर्वैदूर्यैः शतेनाष्ठाधिकेन तु ।७

युधिष्ठिर ने कहा—हे देव ! जब यह सप्तमी हो तो उसका पूजन किस समय में किया जाता है । इसके पूजन करने का क्या फल होता है और उसके क्या नियम हैं ? हे देवकी नन्दन ! यह सब आप बतलाइये ।१। श्री कृष्ण ने कहा—शुक्ल पक्ष में जब सप्तमी तिथि में आदित्य का दिन हो वह सप्तमी विजय नाम वाली होती है । उस समय दिया हुआ महान् फल वाला होता है ।२। स्नानं-दान-जप-होम तथा उपवास यह सब विजय सप्तमी में जो किया जाता है उससे महापातकों का नाश हो जाया करता है ।३। जो पुरुष फलों और पुष्पों से दिवाकर की परिक्रमा करता है वह समस्त सद्गुणों से सम्पन्न परमोत्तम पुत्र का लाभ किया करता है ।४। प्रदक्षिणा नारिकेरों से देवे, दूसरी रक्त नगरों से तीसरी मातुंग फलों से और चौथी परिक्रमा कदली के फलों से देनी चाहिए ।५। पाँचवीं, वरकूष्माण्डों से—छटवीं पके हुए तन्दुकों से देवे । सातवीं वृन्ताको से प्रदक्षिणा देनी चाहिए तथा अष्टोत्तर शत से देवे ।६। मौक्तिक-पद्मराग-नील-कर्केतन-गोमेद वज्रबैडूर्य इन रत्नों से अष्टाधिक शत देवे ।७।

अक्षोटैर्बदरैर्विल्वैः करमर्दैः सबर्बरैः ।
आम्राम्रातकर्जबीरैज बुकर्कोटिकाफलैः ।८
पुष्पधूपे फलैः पत्रै र्मोदकैगुणकैः शुभैः ।
एभिर्विजयसप्तम्याँ भानोः कुर्यात्प्रदक्षिणाम् ।९
अन्यैः फलैश्च काम्यंऽच ऐक्षवैग्र थिर्वजितैः ।
रवेः प्रदक्षिणा देया फलेन फलमादिशेत् ।१०
न विशेन्न च सजल्पेन्न च कश्चिद्वदेदपि ।
एकचित्ततया भानुश्चिन्तनाय प्रयच्छति ।११

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बसोर्धारा प्रदातव्या भानोर्गव्येन सर्पिषा: ।
चन्द्रातपव वध्नीयाज्ज्यं किंकिणिकायुतम् ।।१२
कुंकुमेन समालभ्य पुष्पधूपैश्च पूजयेत् ।
शुभं निवेद्य नैवेद्यं ततः पश्चात्क्षमापयेत् ।।१३
भोन भास्कर मार्तण्ड चण्डरश्मे दिवाकर ।
आरोग्यमायुर्विजयं पुत्रं देहि नमोऽस्तुते ।।१४

अक्षोट्-बदर-विल्व-करमर्द-सवर्वर-आम्रा-आम्रातक-जम्बीर-जम्बुक कोटिका फल से तथा से पुष्पों से-धूप से-फलों और पत्रों से-मोदकों से एवं शुभ गुणकों से इन सबसे विजय सप्तमी में भानुदेव की प्रदक्षिणा करनी चाहिए ।८-६। अन्य फलों से-काम्य ऐक्षवों से एवं जो ग्रन्थि से रहित हो रविदेव की प्रदक्षिणा देनी चाहिए । फल से फल का आदेश करे ।१। प्रवेश न करे-भाषण भी न करे और किसी से भी बातचीत न करे । एक चित्तता से यह सब करे तो भानु जो भी चिन्तित हो उसे देते हैं ।११। भानुदेव के लिए गाय के घृत से बसोधारा देवे । चन्द्रातपत्र देवे एवं किंकिणिका युत जय सूत बाँधे ।१२। कुंकुम से समालंभन कर पुष्प और धूप से पूजन करना चाहिये । परम शुभ नैवेद्य को निवेदित करके इसके पश्चात् क्षमापन करना चाहिए ।१३। हे भानो ! भास्कर ! हे मार्त्तण्ड ! चण्ड रश्मे ! हे दिवाकर ! आप मुझको आरोग्य-आयु-विजय और पुत्र प्रदान कीजिये । आपकी सेवा में मेरा नमस्कार है ।१४

उपवासेन नक्तेन तथैवाया चिंचेन च ।
कृता नियमयुक्तेन या त्वियं जयसप्तमी ।।१५
रोगी विमुच्यते रोगाद्दरिद्रः श्रियमाप्नुयात ।
अपुत्रो लभते पुत्रं विद्या विद्यार्थिना भवेत् ।।१६
शुक्लपक्षे यदा पार्थ सादित्यसप्तमी भवेत् ।
तदा नक्तेन मुद्गाशी क्षपयेत्सप्त सप्तमीः ।।१७
भूमौ पलाशपत्रैषु स्नात्वा हुत्वा यथाविधि ।
समाप्ते तु व्रते दद्यात्सौवर्णं मुद्गमिश्रितम् ।।१८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुद्गं श्रेष्ठाय विप्राय वाचकाय विशेषतः ।
सप्तिस्यां सप्तिसंयुक्त आदित्येन नरोत्तमम् ।१६
उपोष्य दिधिनानेन मन्त्रप्राशनपूजनैः ।
षडक्षरेण मन्त्रेण सर्वं कार्यं विजानता ।२०
अर्चन वह्निकार्यं च शतमष्टोत्तरं नरः ।
समाप्ते तु व्रते पश्चात्सुवर्णन घटापितम् ।२१

उपवास रात्रि का करे तथा अयाचित भोजन का करना चाहिए। इस तरह नियम से युक्त होकर की हुई यह विजय सप्तमी है । इसका फल यह है कि रोगी रोग से विमुक्त हो जाया करता है—दरिद्र श्री का लाभ प्राप्त करता है–जो पुत्र से रहित है वह पुत्र पाता है और विद्या के अर्थी को विद्या हो जाती है ।१५-१६। हे पार्थ ! शुक्लपक्ष में जबभी यह आदित्य सप्तमी होवे तब रात्रि में मुद्गों का अशन करे । इस प्रकार सात सप्तमी विता देनी चाहिए ।१७। इस व्रत के समाप्त होने पर भूमि में शयन-पलाश के पत्तों पर भोजन-स्नान करके यथाविधि हवन करे मुद्गों से मिश्रित सुवर्ण विरचित का दान करना चाहिए। ।१८। हे नरोत्तम ! किसी श्रेष्ठ विप्र के लिए और विशेष करके वाचक के लिए मुद्ग को सात सप्तमियों से संयुक्त आदित्य के साथ ही देवे । ।१६। इस विधि से उपवास करके जो कि मन्त्र-प्राशन और पूजन से समन्वित हो करे । ज्ञाता पुरुष को छैः अक्षरों वाले मन्त्र से ही सम्पूर्ण कार्य करना चाहिए ।२०। अर्चना-अग्नि का कार्य और अष्टोत्तर शत जप मनुष्य को करना चाहिए । जब कि यह व्रत समाप्त हो जावे तो फिर पीछें स्वर्ण के द्वारा घटापित सुवर्ण का ही सूर्य बनावें ।१२।

सौवर्ण भास्करं पार्थ रुक्मपात्रगत शुभम् ।
रक्ताम्वरं च काषाय गन्धं दद्यात्सदक्षिणाम् ।२२
मन्त्रं णामेन विप्राय कर्मसिद्धये द्विजातये ।
ॐ भास्कराय सुदेवाय नमस्तुभ्यं यशस्कर ।२३
ममाद्य समीहितार्थप्रदो भव नमोनमः ।
दानानि च प्रदेयानि गृहाणि शयनानि च ।२४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्राद्धानि पितृदेवानां शाश्वतीं तृप्तिमिच्छतां ।
यात्राप्रशस्ता यातृणां राज्ञां च जयमिच्छताम् ।२५
विजयो जायतेऽवश्यं यतीनां च नृणां तदा ।
अतीर्थे विश्रुता लोके सदा विजयसप्तमी ।२६
एवमेषा तिथिः पार्थ इह कामप्रदा नृणाम् ।
परत्र सुखदा सौम्या सूर्यलोकप्रदायिनी ।२७
दाता भोगी च चतुरी दीर्घायुनीरुजः सुखी ।
इहगत्य भवेद्राजा हस्त्यश्वधनरत्नवान् ।२८
नारीं वा कुरुते या तु सापि तत्पुण्यभागिनी ।
भवत्यत्र न संदेहः कार्यः पार्थ त्वया क्वचित् ।२९
स्वर्ग्यां समीहितमुखार्थफलप्रदा च या ।
मृग्यते मुनिवरैः प्रवरा तिथिनाम् ।
सा भानुपादकमलार्चनाचिन्तकानां पुंसा
सदैव विजया विजयं ददाति ।३०

हे पार्थ ! उस सुवर्ण के भास्कर को किसी शुभ सुवर्ण के पात्र में स्थित करे । लाल वस्त्र और काषाय तथा गन्ध दक्षिणा के सहित दान करे ।२२। कर्म की सिद्धि के लिए द्विजाति विप्र के लिए इस निम्न लिखित मन्त्र से ही देना चाहिए । हे यशस्कर ! सुरदेव भास्कर को आपके लिए नमस्कार है । यह मन्त्रका अर्थ है ।२३। आज मेरे सम भीप्सित अर्थ के प्रदान करने वाले आप होवें । आपको बारम्बार नमस्कार है । गृह और शयन आदि के दान देने चाहिए ।२४। शांश्वती (सर्वदा) स्थित रहने वाली) तृप्ति की इच्छा रखने वाले पुरुष को पितृगण और होती है तथा जय की इच्छा रखने वाले राजाओं की जय होती है ।२५ यतिगण और मनुष्यों का उस समय में अवश्य ही विजय होती है । इसलिए ही सदा यह विजय सप्तमी-इस नाम से लोक में प्रसिद्ध हुई है ।२६। इस प्रकार से हे पार्थ ! यह तिथि यहां संसार में मनुष्यों की कामनाओं को प्रदान करने वाली है । परलोक में भी सुख देने वाली

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परम सौम्य एवं सूर्यलोक को दिखाने वाली होती है ।२७। दानशील-भोक्ता-दीर्घापुष्प-नीरोग एवं सुख सम्पन्न यहाँ संसार में आकर हाथी-घोड़े धन और रत्नों से परिपूर्ण राजा हुआ करता है ।२८। जो भी कोई नारी इस व्रत को किया करती है वह भी उनके पुण्य की अधिकारिणी होती है-इसमें कुछ भी सन्देह नहीं करना चाहिए । हे पार्थ ! आप इसको सर्वथा सत्य ही समझें ।२९। बड़े-बड़े मुनिवरों के द्वारा स्वर्ग देने वाली समीहित सुख और अर्थों का प्रदान करने वाली— समस्त अन्य तिथियों में परमश्रेष्ठ तिथि की खोज की जाया करती है। वह भानुदेव के पद कमल के अर्चन का चिन्तन करने वाले पुरुषों को यह विजया तिथि सदा ही विजय प्रदान करती है ।३०।

।। आदित्य मण्डल विधान ।।

अथान्यदपि ते वच्मि दानं श्रेयस्कर परम् ।
आदित्यमण्डल नाम सर्वाशुभविनाशनम् ।१
यवपूर्णेन शुभ्रेण कुर्याद्गोधूमजेन वा ।
सुपक्वं भानुबिंबाभ्र गुडगव्याज्यपूरितम् ।२
सम्पूज्य भास्करं भक्त्या तदग्रे मण्डलं शुभम् ।
रक्तचन्दनजं कुर्यात्कुङ्कुमं वा विशेषतः ।३
मण्डलं तत्र संस्थाप्य रक्तवस्त्रैः सुपूजितम् ।
ब्राह्मणाय प्रदातव्यं मन्त्रेणानेन पांण्डव ।४
आदित्यतेजसात्पन्नं राजत विधिनिर्मितम् ।
श्रेयसे मम विप्रत्वं पतिगृह्णेदमुत्तमम् ।५
कामदं धनदं जम्यं पुत्रदं सुखद तव ।
आदित्यप्रीतये दत्तं प्रतिगृह्णामि मण्डलम् ।६
एवं दत्त्वा नरो राजन्यंवद्दिवि राजते ।
सर्वकामसमृद्धार्थी मण्डलाधिपतिर्भवेत् ।७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दातव्य जयसप्तम्यां तदारभ्य दिनेदिने ।
भास्करस्य महाराज शक्त्या भावेन भावितः ।८
गोधूमचूर्णजनितं यवचूर्णजं वा ।
आदित्यमण्डलखण्डगुडाद्यपूर्णम् ।
कृत्वा द्विजाय विधिवत्प्रतिपादयेद्यो ।
भूमौ भवत्यमितमण्डलमण्डितोऽसौ ।९

श्रीकृष्ण ने कहा—इसके उपरान्त एक अन्य भी दान मैं आपको बतलाता हूँ जो परम श्रेष्ठ करने वाला दान है। उस दान का नाम आदित्य मण्डल दान है, जो सभी प्रकार के अशुभों का विनाश करने वाला है।१। परम शुभ जौ के चून से अथवा गेहू के चून से ही करना चाहिए। एक सुपक्व भानु के विम्ब की आभा वाला गुड़-गव्य आज्य से पूरित करे।२। भास्कर देव का भली-भाँति से पूजन करके उसके आगे उस शुभ मण्डलकी रक्त चन्दनसे युक्त अथवा विशेष रूपसे कुंकुम संयुक्त करे।३। वहाँ पर मण्डल को संस्थापित करके रक्त-वस्त्रोंसे सुपूजित करे और फिर हे पाण्डव ! इस मन्त्र से किसी ब्राह्मण को प्रदान कर देना चाहिए।४। आदित्य के तेज से समुत्पन्न राजत एक विधि द्वारा निर्मित हे विप्र ! इस उत्तम मण्डल को जो परम श्रेयस्कर है मेरे श्रेष्ठ सम्पादन करने के लिए आप ग्रहण कीजिए।५। यही दान देने का मन है ब्राह्मण को भी फिर कहना चाहिए—कामनाओं को पूर्ण करने वाला धन दाता-धर्म से युक्त-पुत्र और सुखका प्रदान करने वाला तुम्हारा दिया हुआ यह मण्डल आदित्य देव की प्रीति के लिये मैं अब ग्रहण करता हूँ।६। यही प्रतिग्रह का मन्त्र होता है। हे राजन् ! इस प्रकार से मनुष्य दान करके दिव्य लोक में सूर्य की भाँति ही विराजमान होता है और सम्पूर्ण कामना तथा अर्थों से समृद्ध होकर मण्डल का अधिपति हुआ करता है।७। जय सप्तमी में ही इस दान का आरम्भ करे और फिर दिनोंदिन देना चाहिए। हे महाराज ! भास्कर की शक्ति तथा भाव से भावित होकर ही इसका दान करे।८। गोधूम के चूर्ण से जनित अथवा जो चून से रचित अखण्ड गुड़ आदि से परिपूर्ण यह आदित्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मण्डल बनाकर किसी द्विज को विधि पूर्वक जो देता है वह इस भूमि में अमित मण्डप से मण्डित हुआ करता है ।९।

———

।। अचला सप्तमी व्रत माहात्म्य ।।

अध्रुवेण शरीरेण सुपक्वैनापि किं फलम् ।
माघस्नानानविहीनैन सत्त्युक्तं यदुनन्दन ।१
प्रातःस्नानासमर्थायां शरीर पश्यैदेहिनाम् ।
किं तेन वद कर्तव्य माघे संसारभीरुणा ।२
कायक्लेशसहा नार्यो न भवन्ति यदूत्तम् ।
सौकुमार्यं शरीरस्य अचलत्वात्तथैव च ।३
कथं च ताः सुरूपाःस्युःसुभगाः सुप्रजास्तथा ।
सुकृतस्येह पुण्यस्य सर्व्वमेतत्फल यतः ।४
अल्पायासेन सुमहद्येन पुण्यमवाप्यते ।
स्त्रीभिर्माघेमम ब्रूहि स्नान तत्त्वं रमाधव ।५

युधिष्ठिर ने कहा—हे यदुनन्दन इस अध्रुव अर्थात् अनिश्चितकाल तक रहने वाले सुपक्व शरीर से भी क्या फल प्राप्त होता है यदि माघ स्नान से रहित रहकर ही इसका त्याग कर दिया जाता है ।१। देहधारियों के इस शरीर को देखो जो प्रातःकाल में स्नान करने में असमर्थ है । उस पुरुष के द्वारा जो माघ में स्नान नहीं करता है और संसारसे भीरु भी है क्या करना चाहिए यह बतलाइये ।२। नारियाँ हे यदूत्तम ! काया क्लेश को सहन करने वाली नहीं होती हैं । क्योंकि उनका शरीर सुकुमार होता है तथा उसमें अचलता भी होती है ।३। तो वे फिर किस प्रकार से सुन्दर रूप वाली सुभगः और सुन्दर सन्तति वाली होंगी क्योंकि इस सुकृत पुण्य का ही यह सब फल हुआ करता है ।४। जिस किसी थोड़े परिश्रम से सुमहान् पुण्य की प्राप्ति की जा सके और स्त्रियों के द्वारा माघ मास में वह हो जावे । हे माधव ! वह तत्व स्नान आप मुझे बतला दीजिये ।५।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रूयतां पांण्डवश्रेष्ठ रहस्यमृषिभाषितम् ।
यन्मया कस्यचिन्नोक्तमचलासप्तमीव्रतम् ।
वेश्या चेन्दुमती नाम रूपौदार्य गुणान्विता ।
आसीत्कुरुकुलश्रेष्ठ मगधस्य विलासिनी ।७
तनुमध्या सुजघना पीनोन्नतपयोधरा ।
सम्यग्विभक्तावयवा पूर्णचन्द्रनिभानना ।८
सौन्दर्यं सौकुमार्यं च तस्या कामेन गीयते ।
यस्याः संदर्शनादेव कामः कामातुरो भवेत् ।९
मूर्तिः शशधरस्येव नयनानन्दकारिणी ।
वशीकरणविद्येव सर्वलोक मनोहरा ।१०
एकस्मिन्दिवसे प्रातः सुमुखास्थितया तया ।
चिंतिताहृदये सजन्त्संसारस्यानवस्थिति ।११
सन्निमज्य जगदिदं विषय कायसागरे ।
अजन्ममृत्युजराग्राहं न कचिश्चदवबुद्धयते ।१२
अपाको भूतभाण्डानां धातृणिल्पिविनिर्मितम् ।
वकर्मेधनसंवीत पच्यते बालवह्निना ।१३

श्रीकृष्ण ने कहा—पाण्डवों में परमश्रेष्ठ ! इन ऋषियों के द्वारा कहे हुए परम रहस्य को आप श्रवण करिये जो कि मैंने अब तक किसी से भी नहीं कहा है । वह अचला सप्तमी का व्रत होता है ।६। हे गुरु-कुल में श्रेष्ठ! एक इन्द्रमती नाम वाली वैश्या थी जो रूप लावण्य की विलासिनी थी ।७। उसका सौंदर्य वतलाते हैं—उसका मध्य भाग अर्थात् कटिकृश थी—जघन बहुत ही सुन्दर थे—पीन और उन्नत उसके स्तन थे—उसके सभी अङ्ग भली-भाँति विभक्त एवं सुडौल थे तथा वह पूर्ण चन्द्र के समान मुख वाली थी ।८। उसकी सुन्दरता और सुकुमारता तो ऐसी थी जिसको स्वयं कामदेव भी बखान किया करता है । जिसके दर्शन मात्र से ही कामदेव स्वयं कामातुर हो जाया करता है ।९। चन्द्रमा की मूर्ति के समान नयनों को आनन्द करने वाली उसकी मूर्ति थी मानो वह एक वशीकरण करने की विद्या ही के समान सब लोगों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को परम मनोहर लगती थी ।१०। एक दिन प्रातःकाल में सुखपूर्वक स्थित रहने वाली उसने अपने हाथ में इस संपूर्ण संसार की अनवस्थिति पर विचार किया था । यह सम्पूर्ण जगत् विषयों में काया रूपी समुद्र में डूबता चला जा रहा है । जन्म और मृत्यु तथा बुढ़ापा ये ही इस सागर में ग्राहों के समान हैं जो उसे घेरा रहा करते हैं और यह कोई भी नहीं समझता है ।१२। शिल्पी धाता के द्वारा निर्मित यह भूत रूपी भाण्डों का अपाक अपने कर्म रूपी ईंधन से युक्त होकर वालवह्नि द्वारा पकाया जाता है ।१३।

ये यांति दिवसा पुंसां धर्मकामार्थवर्जिताः ।
न ते पुनरिहायांति हरभक्ता नरा यथा ।१४
स्नानं दानं तपो होमः स्वाध्यायः पित्रतर्पणम् ।
यस्मिन्दिने न क्रियते वृथा स दिवसो नृणाम् ।१५
पुत्राणां दारगृहकसमासक्तं हि मानसम् ।
वृकीवोरणमासाद्य मृत्युर्द्वाराय गच्छति ।१६
इत्येवं चिंतयित्वा तु वेश्या चेन्दमती ततः ।
वशिष्ठस्याश्रमं पुण्यं जगाम गज गामिनी ।१७
वशिष्ठमृषिमासीन प्रणम्य विनतात्ततः ।
कृताञ्जलिपुटा भूत्वा इदं वचनमब्रवीत् ।१८

पुरुषों के जो दिन धर्म-काम और अर्थ से रहित होकर व्यतीत हो जाया करते हैं वे फिर कभी वापिस लौट कर नहीं आते हैं, जिस तरह भगवान् हर के भक्त फिर संसार में नहीं आते ।१४। स्नान, दान—तप-होम-स्वाध्याय और पितृ तर्पण जिस दिन में नहीं भी किये जाते हैं वह पूरा दिन ही मनुष्यों का वृथा होता है ।१५। मनुष्यों का मन पुत्रों-स्त्री और गृह आदि में ऐसा समासक्त रहा करता है कि उरण को प्राप्त करने की भाँति मृत्यु द्वार के लिए जाया करता है ।१६। इस प्रकार से चिंतन करके वह इन्दुमती वेश्या फिर गजगामिनी वहाँ से वसिष्ठ के पुण्य आश्रम को चली गई थी ।१७। वहां पर विराजमान

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वसिष्ठ ऋषि को विनय पूर्वक प्रणाम करके दोनों हाथों को जोड़ कर इन्दुमति ऋषि से यह वचन बोली ।१८।

दक्षसूनासमश्चक्री दशचक्रिभभो ध्वजः ।
दशध्वजसमा वेश्या दश्वेश्यासमा नृपः ।१६
मया न दत्तं हुत नोपवासो व्रतं कृतम् ।
भवत्या न पूतितः शम्भुःश्रितो नै को धनी नर. ।२०
सांम्प्रतं वर्तमानाय ब्रत किंचिद्वदस्य मे ।
येन दुःखांबुपापोधातुरामि भवार्णवात् ।२१
एतदस्याः सुबहुशः श्रुत्वा धर्मं परंतपः ।
वसिष्ठः कथयामास महाकारुणको मुनिः ।२२
माघस्य सितसप्तम्यां सर्वकामफलप्रदम् ।
तपःसौभाग्यजननं स्नानं तव वरानने ।२३
कृत्वा षष्ठ्यामकभक्तं सप्तम्यां निश्चलं जलम् ।
रात्र्यन्ते चालयेथास्त्वं दत्त्वा शिरसि दीपकम् ।२४
माघस्य सितसप्तुम्यामचलं चालित मया ।
जलामलानां सर्वेषां कृत न चलनं तथा २५
वसिष्ठवचनं श्रुत्वा तस्मिन्नहति भूपते ।
सर्वं प्रकारेन्दुमैती स्नान दानं यथाविधि ।२६
श्यहस्तानप्रभावेण भुक्त्वा भोग्यान्यथेप्सितान् ।
इन्द्रलोकेप्सरः संघ नायिकात्वमवाप सा ।२७
अचलासप्तमीस्मानं कथितं च विशांपते ।
सर्वं पाप प्रशमनं सुखसौभाग्यवर्द्धनभू ।२८

इन्दुमती ने कहा—दक्ष सूना के समान चक्री होता है और दश चक्रियों के समान ध्वज हुआ करता है । दशध्वजों के तुल्य एक वेश्या होती है और दश वेश्याओं के तुल्य एक नृप हुआ करता है ।१८। मैंने जीवन में न तो कभीकुछ दान हीदिया है—न हवन किया है । मैंने-भक्ति भाव से कभी भगवान शम्भू का अर्चन नहीं किया है और न कोई धन सम्पन्न पुरुष का ही आश्रय ग्रहण किया है ।२०। हे मुनिवर ! अब ऐसी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दशा में वर्त्तमान रहने वाली मुझको कोई एक व्रत करने का उपदेश दीजिये जिससे दुःखम्बु पारों के समूह वाले इस संसार सागर से मैं पार लग जाऊँ ।२१। परंतप वसिष्ठ मुनि ने इसके बहुत बार कहे हुए धर्म को सुनकर महान् दयालु मुनि ने कहा था ।२२। बसिष्ठ मुनि बोले-हे वरानने ! माघ मास के शुक्ल पक्ष की सप्तमी में समप्त कामनाओं के फल प्रदान करने वाला तथा तप और सौभाग्य जन्माने वाला तुम्हारा एक मात्र स्नान ही होगा ।२३। षष्ठी तिथि में एक बार भोजन करके सप्तमी में जल ,निश्चय होता है। रात्रि में तुम शिर पर दीपक रखकर उसका चालन करो ।२४। माघ मास की सित सप्तमी मैंने अचल चालित किया है तथा सब जल-मालों का चलन नहीं किया ।२५। हे भूपते ! वसिष्ठ के इस वचन का श्रवण करके उस दिन में इन्दुमती ने सभी स्नान दान आदि विधि पूर्वक किया ।२६। तीन दिन के स्नान के प्रभाव से यथेप्सित भागों का उपभोग करके उसने इन्द्रलोक की अप्सराओं के समुदाय में नायिकात्व के पद की प्राप्ति की थी ।२७। हे विशाँपते ! मैंने यह सप्तमी का स्नान वर्णित कर दिया है जो सम्पूर्ण पापों का प्रशमन करने वाला तथा सुख और सौभाग्य बढ़ाने वाला है ।२८।

सप्तमीस्नानमहात्म्यं श्रुतं न च विशेषतः ।
सांम्प्रतं श्रोतुमिच्छामि विधिमन्त्रसमन्वितम् ।२९
एवभक्तेन सतिष्ठेत्षष्ठयां सम्पूज्य भास्करम् ।
सप्तन्यां तु व्रजेत्प्रातः सुगम्भोरं जलाशयम् ।३०
सरित्सं तडाग च देवखातमथापि वा
सुखावगाह्सलिलं दुष्टसत्त्वैर्दू षितम् ।३१
पशुभिः पक्षिभिश्चैव ललजैर्मत्स्यकच्छपैः ।
न जलं चाल्यते यावतावत्स्नानं समाचरेत् ।३२
नमस्ते रुद्ररूपाय रसानां पतये नमः ।
वरुणाय नमस्तेऽस्तु हरितास नमोऽस्तु ते ।।३३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यावज्जन्म कृतं पातं मया सप्तसु ।
तन्मेरोग च शोकं च भाकरी हेतु सप्तमी ।३४
जननी सर्वभूतामां सप्तमी सप्तके ।
सर्वव्याधिहरे देवि नमस्ते रविमण्डले ।३५

युधिष्ठिर ने कहा—मैंने सप्तमी के स्नान का माहात्य तिशेष रूप से नहीं सुना है । अब मैं इसको श्रवण करना चाहता हूं जो कि विधि पूर्वक मन्त्रों से समन्वित हो ।२९। श्रीकृष्ण ने कहा—भगवान् भास्कर देवका पूजन करके षष्ठी तिथि में एक ही बार भोजन करके रहे । सप्तमी तिथि में प्रातःकाल में किसी गम्भीर जलाशय को चला जाना चाहिए।३०वह जलाशय सरिताओंका संगमहोंतालाब हो अथवादेवखात हो । किन्तु सुख पूर्वक अवगाहन करने वाले जल से युक्त होना चाहिए तथा दुष्ट जीवों से दूषित न होवे ।३१। पशुओं के द्वारा पक्षियों से और जल में ही जन्म ग्रहण करने वाले मत्स्य-कच्छप आदि के द्वारा जब तक जल चालित न होवे तभी तक उसमें स्नान करना चाहिए ।३२। वहाँ पर यह प्रार्थना करे—हे रुद्र के रूप वाले ! आपके लिए नमस्कार है । रसों के प्रति के लिए नमस्कार है । वरुण देव के लिए नमस्कार है । हरि भगवान के निवास स्थान आपके लिए नमस्कार है ।३३। जब से मैंने जन्म धारण किया है तब से पूरे जीवन में जो पाप मैंने किये हैं और व्यतीत हुए सात जन्मों में जो पाप किए हैं उसको और मेरे रोग तथा शोक को भाकरी सप्तमी हनन कर देवे ।३४। हे सप्तसप्तिके ! सप्तमी समस्त भूतों की जननी हैं । हे सम्पूर्ण व्याधियों के हरण करने वाली देवि ! रवि मण्डल में आपके लिए मेरा नमस्कार है ।३५।

जलोपतीरं दीपं स्नात्वा संतर्प्य देवताः ।
चंदनेन लिखेत्पद्मष्टपत्र सकर्णिकम् ।३६
मध्य शणै सपप्नोकं प्रणवेन तु पूजयेत् ।
भानुं शक्रे दले पूज्य रवि वैश्वानरे दले ।३७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

याम्ये विवस्वान्नैर्ऋत्ये भास्करस्येतिपूजयेत् ।
पश्चिमे सविता पूज्यः पूज्योर्को वायुना जले ।३८
सौम्ये सहस्र सहस्रकिरणः शेषे सर्वात्मनेति च ।
पूज्याः प्रणवपूर्वास्तु नमस्कारांतयोजिताः ।३९
पुष्पैः सुगन्धधूपैश्च वस्त्रेणाच्छाद्य भास्करम्
विसर्जयेत्ततः पश्चात्स्वस्थानं गम्यतामिति ।४०
ताम्रपात्र सुविस्तीर्णे मृण्मये वा युधिष्ठिरः ।
स्थापयोत्तिलचूर्णं च सघृतं सगुड तथा ।४१
काश्चन तालक कृत्वा ह्यसिक्तस्तिलचूर्णकण ।
संस्थाप्य रक्तावस्त्रैस्तु पुष्पदंधूपैस्तथाचयेत् ।४२

जल के ऊपर इतर दीप रक्खे और स्नान करके देवगण का भली भाँति तर्पण करे फिर चन्दन से आठ दलों वाला कणिका से युक्त पद का लेखन करे ।३६। उस पद्म के मध्य भाग में पत्नी के सहित शम्भु का प्रणव से अर्चन करे। शक्रदल में भानु और वैश्यानर दल में वेदिका पूजन करे ।३७। याम्य दल में विवस्वान् का तथा नैर्ऋत्य दिशा वाले दल में भास्करका पूजन करना चाहिए। पश्चिम में सविता पूजन करने के योग्य है और वायव्य जल में अर्क का यजन करे ।३८। सौम्य दिशा में सहस्र किरण का अर्चन करे शेष में सर्वात्मा से यजन करे। पूजन में प्रणव को आदि में तथा अन्त में नमस्कार लगाकर ही पूजा करे ।३९। पुष्पों से, सुन्दर गन्ध वाली धूपों से यंजन करे और वस्त्र से भास्कर देव का समाच्छादन कर फिर उनका विसर्जन अपने स्थान को जाइये— यह कहकर करना चाहिये ।४०। हे युधिष्ठिर ! एक किसी ताम्र पात्र में अथवा मृण्मय पात्र में घृत और गुड़ के सहित तिलों के चूर्ण को संस्थापित कर रक्तवर्ण के वस्त्रों और पुष्प तथा धूप से उसी भाँति अर्चना करनी चाहिए ।४२।

ततस्तं ब्राह्मणं दद्याद्दत्त्वा मंत्रेण तालकम् ।
आदित्यस्य प्रसादेन प्रातः स्नानफलं भजेत् ।४३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुष्टदौर्भाग्यदुःखेभ्यो मया दत्त पुतालकम् ।
ततस्तत्तालक कृत्वा ब्राह्मणायोपपादयेत् ।४४
सपुत्रपशुभृत्यायमेऽर्कोय प्रीयतामिति ।
ततो व्रतोपदेष्टारं पूजयेद्वस्त्रगोतिलः ।४५
विप्रानन्यान्यथाशशक्त्वा पूजयित्वा गृहं व्रजेत् ।
एतत्तो कथितं कार्यं रूपसौभाग्यकारकम् ।४६
अचलासप्तमास्नानं सर्वकामफलप्रदम् ।४७
इति पठति यं श्रुणोति प्रसंगात्कम् ।
लिकलुषहरं वै सप्तमीस्नानमेतत् ।
मतिमपि नयनानां यो ददाति प्रसगात्सुर ।
भवनगतोऽसौ पूज्यते देवसंघ ।४८

इसके पश्चात् उसको ब्राह्मण को दे देवे । मन्त्र से तालक को देकर फिर भगवान् आदित्य के प्रसाद से प्रातःकाल ही में स्नान के फल का सेवन करे ।४३। दुष्ट दौर्भाग्य के दुःखों से मैंने तालक को दिया है । इसके अनन्तर उस तालक को करके ब्राह्मण के लिए उपपादित करना चाहिए ।४४। पुत्र-पशु और भृत्यों के लिए यह एक ही अर्क प्रसन्न होवे । इसके उपरान्त व्रत के उपदेश देने वाले का वस्त्र गौ और तिलों से पूजन करना चाहिए ।४५। अन्य जो भी विप्र हों उनको भी यथा शक्ति पूजन करके गृह को चला जावे । यह कार्य मैंने आपको बतला दिया है जो रूप और सौभाग्य करने वाला है ।४६। अचला सप्तमी का स्नान समस्त कर्मों के फल को प्रदान करने वाला होता है ।४७। इसको इस प्रकार से जो भी पढ़ता है और जो कोई प्रसंग से इसका श्रवण किया करता है, उसको यह कलियुग के कलुषों का हरण करने वाला सप्तमी स्नान होता है । जो कोई नयनों को मति भी प्रसंग वश देता है वह सुरभवन में जाकर देवों के समुदाय के द्वारा यह पूजा जाता है ।४८।

———

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

।। बुधाष्टमी व्रत माहात्म्य ।।

बुधाष्टमीव्रत भूयो ब्रवीमि शृणु पाण्डव ।
येन चीर्णेन नरकं नरः पश्यति न क्वचित् ।१
पुरा कृतयुगस्या ो इलो राजा वभूव ह ।
बहुभृत्यसुहृन्मित्रमन्त्रिभिः परिवारितः ।२
जगाम हिमवत्पार्श्वं महादेवेन वारितः ।
योऽन्यः प्रविशते भूमौ सा स्त्री भवति निश्चितम् ।३
स राजा मृगसंगेन प्राविशत्तदुमावने ।
एकाकी तुरगोपेतः क्षणात्स्त्रीत्वं जगाम ह ।४
सा बभ्राम बनै शून्ये पीनोन्नपयोधरा ।
कुतोऽहमागतेत्येव न त्वबुध्यत किंचन ।५
तां ददर्श बुधः सौम्यां रूपौदार्यगुणान्विताम् ।
अष्टाम्यां बुधवारेण तस्यातुष्टो बुधो ग्रहः ।६
दधौ गर्भे तुदुदरे इलाया रूपतोषित. ।
पुत्रमुत्पादयामास योऽसौ ख्यातः पुरूरवा ।७

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा-हे पाण्डव ! फिर मैं तुम से बुधाष्टमी के व्रत को बोल रहा हूँ—इसका तुम श्रवण करो। इस के चीर्ण कर लेने से मनुष्य किसी समय में भी नरक का मुँह नहीं देखता है। पहिले समय में कृतयुग के आदि के युग में इल नाम वाला राजा हुआ था जो वहुत से मित्र-भृत-हृत् और मन्त्रियों के द्वारा परिवारित था।२। महादेव के द्वारा जिसका वारण कर दिया गया था उस हिमवान् गिरि के पार्श्वमें वह चला गया था। जो कोई भी अन्य पुरुष वहाँ पर प्रवेश किया करता है वह निश्चित ही स्त्री हो जाया करता है।३। वह राजा भी एक मृग के शिकार के सङ्ग से उस उमा देवी के वन में प्रवेश-कर गया था। वह अकेला ही था। केवल उसके पास एक अश्व था जिस पर वह सवार था। दोनों ही एक क्षण में स्त्रीत्वभाव को प्राप्त हो गये थे।४। वह स्त्री के स्वरूप में पीन एवं उन्नत स्तनों वाली

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री बनकर उस नितान्त शून्य वनमें भ्रमण करने लगी । मैं कहाँसे आयी थी । इस को भी कुछ वह नहीं जान पाया था ।५। उस रूप लावण्य से एवं उदारता से समन्वित परम सौम्या ललना को बुध ने देखा था । बुधवार से युक्त अष्टमी तिथि में उससे वह बुध ग्रह अत्यन्त प्रसन्न हो गया था ।६। इला के रूप से अत्यन्व प्रसन्न उस के उदर में गर्भ धारण कर दिया था । उस ने जो पुत्र उत्पन्न किया था वह पुरूरवा नाम से विख्यात हुआ था ।७।

चन्द्रवंशकरो राज आद्यः सर्वमहोक्षिताम् ।
ततः प्रसृति तूज्ये यमाष्टमी बुधसंयुता ।८
सर्वपापप्रशमनो सर्वोपद्रवनाशिनी ।
अथान्यदपि ते वक्मि धर्मराज कथानकम् ।९
आसीद्राजा विदेहानां स बैरिभिः ।
सग्रामे निहतो वोरस्तस्य भार्या दरिद्रिणा ।१०
ऊर्मिला नाम बभ्राम मही बालकसंयुता ।
अवंता विषयं प्राप्ता ब्राह्मणस्य निवेशने ।११
चकारोदपूत्यर्थं नित्यं कडनपेषशे ।
हृत्वा सा स्तोकगोधूमान्ददौ बालकयीस्तदा १२
कारुण्यान्सातृवात्सल्यान्क्षु धासम्पीड्यमानयोः ।
कालेन बहुता साध्वी पश्वत्वगमच्छुभा ।१२
पुत्रस्यस्या विदेहावां गत्या स्वपितुरासने ।
उपविष्ट सत्त्वयोगाद्भ् भुजे गामनाकुल ।१४

यह राज चन्द्र वंश का करने वाला सब राजाओं में प्रथम राजा था । तभी से लेकर वह बुध से संयुता अष्टमी पूज्य हो गई थी ।८। यह बुधाष्टमी सब प्रकार के पापोंका प्रशमन करने वाली हैं और सम्पूर्ण उपद्रवों का नाश करती है । इसके उपरान्त हे धर्मराज ! एक अन्यभी इस सम्बन्ध में कथानक बतलाता हूं ।६। एक राजा विदेहों का मिथिला में हुआ था । वह वीर उसके शत्रुओं के द्वारा संग्राम में निहत हो गया था । उसकी भार्या दरिद्रिणी थी ।१०। ऊर्मिला नाम वाली वह बालक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से संयुक्त होकर मही मण्डल में भ्रमण किया करतीथी। अवन्ती नामक देश में वह एक ब्राह्मण के घर में पहुंच गई थी।११। वह कण्डन पेषण के कर्म से नित्य ही अपने उदर की पूर्ति किया करती थी। थोड़े से गोधूमों (गेहूँओं) का हरण करके उस समय में उसने बालकों दे दिये थे।१२। उसके हृदय में माता का वात्सल्य होगया था और कुछ करुणा का भाव आ गया था। इसी के वश में आकर यह अपहरण किया था। जो कि बालक क्षुधासे पीड्यमान हो रहे थे। बहुत काल के व्यतीत हो जाने पर वह साध्वी शुभा मृत्यु को प्राप्त हो गई थी।१३। उसका पुत्र विदेह पुरी में जाकर अपने पिता के आसन पर बैठ गया था। सब के योग से उसने अनाकुल होकर भूमि का भोग किया था।१४।

अन्विष्य धर्मराज्ञो वै सा कन्या मिथिवंशजा।
विवाहिता हिमा भर्तुः सा महानायिकाऽभवत्।१५
श्यामला नाम चार्वंगी प्रसिद्धा श्रूयते श्रुतौ।
तामुवाच वरारोहां धर्मराजः स्वयं प्रियाम्।१६
वहस्व सर्वव्यापारं श्यामले त्वं गृहे मम।
कुरु स्वजनभृत्यानां दानक्षेपं यथेप्सितम्।१७
किं त्वेते पंजराः सप्त कीलकैरतियात्रताः।
कदाचिदपि नोद्घाटचास्त्वया वैदेहनंदिनि।१८
एवमस्त्विति साप्युक्त्वा निजं कर्म चकार ह।
कदाचिद्व्याकुलीभूते धर्मराजे विदेहजा।
उद्घाटयित्वा प्रथमं ददर्श जननीं स्वकाम्।१९
सा पच्यमाना क्रदमी भावणैर्यमकिंकरैः।
हेलया क्षिप्यते बद्धा तप्ततैले पुनः पुनः।२०
तथैव तालकं दत्वा व्रीडिता साऽमनस्विनी।
द्वितीये पञ्जरे तद्वत्सा तामेव ददर्श ह।२१

धर्मराजने एक मिथि वंशमें समुत्पन्न कन्या की खोज करके उसने उसके साथ विवाह किया था। वह अपने स्वामी के परम हित चाहने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाली थी और महानायिका हो गई थी ।१५। उसका श्यामला नाम था उसके सभी अङ्ग-प्रत्यङ्ग बहुत ही सुन्दर थे । श्रुति में वह परम प्रसिद्ध सुनी जाती थी । धर्मराज उस वरोहा प्रिया से स्वयं एक दिन बोला था ।१६। हे श्यामले ! तुम अब इस मेरे घर में सब व्यापार का वहन करो । स्वराज और मृत्यों को जैसा भी चाहो दान का क्षेप किया करो ।१७। किन्तु ये सात पंजर कीलकों से यन्त्रित हैं । क्या ये किसी समय में खोलने के योग्य नहीं है ? हे वैदेह नन्दिनि ! जिनको कि तुम्हीं अपने हाथ उद्धरित कर सकोगी ।१८। इसी प्रकार से होगा-यह कह कर उसने अपना कार्य किया था । समय में जबकि धर्मराज व्याकुल भूत हो गया था तब उस विदेहजा ने प्रथम पंजर को खोल कर अपनी जननी को देखा था ।१९। वह बिचारी नरक में पच्यमान हो रही थी और रुदन कर रही थी यम के किंकरों के द्वारा बारम्बार तप्त तैल में बाँध कर हेला से फैंकी जा रही थी ।२०। उसी प्रकार से तालक देकर वह मनस्विनी अत्यन्त पीड़ित हो गई थी । फिर दूसरे पंजर में इसी के समान उसने उसको इसी प्रकार से देखा था ।२१।

सुधावलिलप्यमानां ता शिलातलपेष्टकेन तु ।
तृतीयपञ्जरे तद्वत्तां ददृश स्वमातरम् ।
क्रकचैः पाठतते मूर्ध्नि घण्टायुक्तैः करारुल्वः ।२२
चतुर्थे पञ्जरे स्थान भीषणदारुणाननैः ।
भक्ष्यमाणा श्वापदश्क क्रन्दन्ती तां पुनः पुनः २३
पञ्चमे निहिता भूमौ कण्ठे पादेन पीड़िता ।
सर्दंशत्रनघातैश्च विदार्णा क्रियते रुषा ।२४
षष्ठे चेक्षुयन्त्रगर्ता मस्तके मुद्गराहताम् ।
सम्पीड्यमानामनिश सुदृढामक्षुखण्डवत् ।२५
सप्तमे पञ्जरे चोर्णस्त्रनां पूतिकर्गंधिनीम् ।
दृष्टा तथा गतां तां तु मातरं दुःख कर्षिता ।
श्यामला म्लानवदना किंचिन्नोवाच भामिनी ।२६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथागत यम प्राह सरोषा श्यामला पतिम् ।
किं तवापहृतं राजन्ममात्रा मुदारुणम् ।
येनेयं त्रिविधैर्यातैर्नैध्यते बहुधाष्वया ।२७
यमः प्राह प्रितां दृष्टा भद्रे ह्यु द्धाटितास्त्वया ।
एते पञ्जरकाः सप्त निषिद्धा त्वमया पुरा ।२८

शिलातलपेष्टक से सुधा की भाँति लिप्यमान उसको तीसरे पञ्जर में उसी के समान उस अपनी माता को देखा था । क्रकचों के द्वारा जो कि घण्टा से युक्त औप करोत्वण के उसके मूर्द्धा में पाठित की जा रही थी ।२२। चतुर्थ पञ्जर के स्थान में परम भीषण और दारुण मुखोंवाले श्वापदों के द्वारा भक्ष्यमाण और बार-बार क्रन्दन करती हुई देखा था ।२३। पाँचवें में भूमिमें निहित और कण्ठमें पादसे पीड़ित तथा सदर्शन और वन घातों से क्रोध से विदीर्ण की जा रही थी ।२४। छठवे में इक्षु यन्त्र में लगाई और मस्तक में मुद्गरों द्वारा आहते की गई एवं निरन्तप सम्पीड्यमान तथा ईखकेखण्ड की भाँति सुदृढ़ा देखा नया ।२५। सातवें पञ्जर में जीर्ण स्वप्न वाली एवं पूतिक गन्ध युक्त उस माता को उस दशा में देखकर वह दुःख से अत्यन्त कपित हुई थी वह श्यामला उदास मुख वाली हो गई थी और फिर वह भामिनी कुछ भी नही बोली थीं ।२६। इसके पश्चात् आगत यमको वह रोष से समन्वित होकर श्यामला पति से बोली हे राजन् ! क्या आपने मेरी माता को आहत किया है जो कि सुदारुण पीड़ा सह रही है ! यह यहाँ पर बहुधा आपके द्वारा अनेक प्रकार के बातों से वध्यमन हो रही है ।२७। यम प्रिया को देखकर बोला भद्रे ! क्या तूने इनको उद्धारित कर लिया है । ये सात पञ्जरों के उद्धार न करनेके लिये मैंने आपको पहिले ही निषेध कर दिया था ।२८।

तव माता सुतस्नेहाद्गोधूमा ये हृताः किल ।
किं न जानासि येन तद्भद्रे येन रुष्ठा ममोपरि ।२९
ब्रह्मस्व प्रथयाद्भुक्तं दहत्यासप्तम कुलम् ।
तदेव चौर्यरूपेण दहत्याचन्द्रतारकम् ।३०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोधूमास्त इमे भूताः कृमिरूपाः सुदारुणाः ।
ये पुराब्राह्मणगृहे हृतास्तव कृतेऽनया ।३१
जानामि तदहं सर्वं यन्मे माता कृतं पुरा ।
तथापि त्वः समासाद्य सा च्चाजमातरं शुभम् ।
मुच्यते कृमिराशित्वाद्यथा तदाधुना कुरु ।३२
तच्छ्रुत्वा चिन्तयाविष्टश्चिर स्थित्वा जगाद ताम् ।
धर्मराजः सहासीनां प्रियां प्राणधनेश्वरीम् ।३३
इतश्च सप्तमेऽतोते जन्मनि ब्राह्मणी शुभा ।
आसीस्त्तस्त्विया संग्रत्पखीरां पर्युपासिता ।
बुधाष्टमी सुसम्पूर्णा यथोक्तफलदायिनी ।३४
तत्कल यद्ददास्यौ कृत्वा ममाग्रतः ।
तेन मुच्येत ते माया नरकात्पापसंकटात् ।३५

तुम्हारी माता ने सुत के स्नेह से जो गोधूम का हरण किया था, क्या है भद्रे ! उसे तुम नहीं जानती हो ? जिससे मेरे ऊपर अब ऐसी रुष्ट हो रही हो ।२६। प्रणय से जो ब्रह्मत्व का भोग किया था वह तो सात कुल तक दहन किया ही करता है । वही यदि चोरी के रूप में हरण किया जावे तो जब तक आकाश में चन्द्र और तारे विद्यमान रहते हैं तब तक दहन करता है ।३०। वे ये गोधूम ही सुदारुण कृमि के रूप वाले हैं जिनकी कि आपके लिए ही इसने एक ब्राह्मण के घर में से हरण किया था ।३१। श्यामला ने कहा—मैं इस सर्व को भली-भाँति जानती हूँ जो मेरी माता ने पहिले किया था तो भी आपको परम शुभ जामाता उसने प्राप्त किया था । उस कृमि राशित्व से वह छुटकारा प्राप्त करे अब वैसा ही आप करिये ।३२। यह सुनकर चिन्ता में आविष्ट होते हुए धर्मराज ने चिरकाल तक स्थित रहकर उससे कहा था, जो कि साथ में बैठी हुई प्रिया और प्राण धनेश्वरी थी ।३३। इससे सातवें अतीत जन्म में परम शुभा ब्राह्मणी तुम थी । उससे तुमने सखियों के सङ्ग में बुधाष्टमी का सुसम्पूर्ण पर्युपासना की थी जो यथोक्त फल के देने वाली है ।३४। उसका फल यदि आप इसको देंगी और मेरे आगे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्य करके ऐसा करेंगी यो उससे यह आपकी माता पाप के संकट से मुक्त हो जायेगी ।३५।

तच्छ्रुत्वा त्वरितं स्नात्वा ददौ पुण्यं स्वकंकृतम् ।
स्वमातुः श्यामला तुष्टा तेन मोक्ष जगाम सा: ।
उर्मिला रूपसम्पन्ना दिव्यदेहधरा शुभा ।
विमानवरमारूढा दिव्यमाल्यांबरावृनो ।३६
भर्तुः समीपे स्वर्गस्था दृश्यतेऽद्यापि सा जनैः ।
वुधस्य पार्श्वे नभसि मिथिराजरामोपनः ।
विस्धरन्ती महाराजबुधाष्ठम्या प्रभावतः ।३७
यद्यवं प्रवरा कृष्ण सा तिथिर्वं बुधाष्टमी ।
तस्या एवा विधिं ब्रूहि यदि तुष्टोऽसि मे प्रभो ।३८
शृञ्ज पांठव यत्नेन बुधाष्टम्या विधि शुभम् ।
यदायदा सिताष्टभ्यां बुधवारो भवेद्यदि ।
तदा तदा च ग्राह्या एकभक्ताशनैनृभिः ।३९
स्नात्वा नद्यां तु पूर्वाह्णे गृहीत्वा कलशं नवम् ।
जलपूर्णं तु सद्रव्यं पूर्णपात्रसमन्विताम् ।४०
अष्टवारान्प्रकर्तव्या विधानैस्तु पृथक्पृथक् ।
प्रथमा मोदकै कार्या द्वितीय थेणकैस्तथा ४१
तृतीया घृतपैश्च चतुर्थी वटकैनृ पः ।
पञ्चमी शुभ्रकारैश्च षष्ठी सोलाहकैस्तथा ।४२

यह श्रवण करके तुरन्त ही स्नान करके अपना वह किया हुआ पुण्य उसने अपनी माता को दे दिया था। उससे वह परम सन्तुष्ट हो गई और मोक्ष को प्राप्त हो गई थी। उर्मिला रूप से सम्पन्न होकर दिव्य देह धारण करने वाली होगई थी और शुभा वह एकश्रेष्ठविमान पर समारूढ़ हो गई थी तथा दिव्य माल्य एवं वस्त्रों से समावृत होगई थी।३६। वह अपने स्वामी के समीप में आकाश में अब भी मनुष्यों के द्वारा दिखलाई दिया करती है। बुध के पार्श्व में नभ में मिथिराज के ही समीप में हे महाराज! बुधाष्टमी के प्रभाव से वह विस्फुर्यमाणा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है ।३७। युधिष्ठिर ने कहा—हें श्रीकृष्णं यदि वह बुधाष्टमी इस प्रकार से परम प्रवर है तो हे प्रभो ! यदि परम तुष्ट हैं तो उसकी पूरी विधि बतला दीजिये ।३८। श्रीकृष्णने कहा—हे पाण्डव ! अब आप यत्नपूर्वक बुधाष्टमी की परम शुभ विधि का श्रवण कीजिये । जब-जब भी शुक्ल पक्ष को अष्टमीमें यदि बुधवार का योग होता है, तब-तब ही एक वक्त में भोजन करने वाले मनुष्यों के द्वारा उसका ग्रहण करना चाहिए।३९ पूर्वान्ह में नदी में स्नान करके एक नूतन कलश का ग्रहण करे। वह जल से भरा हुआ द्रव्यों के सहित और पूर्णपात्र से समन्वित होना चाहिए ।४०। आठ बाहों तक पृथक्-पृथक् विधानों से उसे करना चाहिए । प्रथम मोदकों से करे—दूसरी फेणकों से करे ! ।४१। तीसरी घृत के पूपों से करे—हे नृप ! चौथी वटकों से करे—पाँचवीं शुभ्रकारी से करे और छटवीं सुहालियों से करनी चाहिये ।४२।

अशोकवर्तिभिः शुभ्रः सप्तमी खण्डसंतुतैः ।
अष्टमी फलपुष्पैश्च केवलाखण्डफेणिकैः ।
एवं क्रमेण कर्तव्या सुहृत्स्वजनबांधवैः ।४३
सह कृत्वा स्थितभोज्यं भोक्तव्यं स्वस्थमानसैः ।
बपोष्याणामिदं श्रेष्ठं कथयच्छि- शनैः शनैः ।४४
श्रुत्वाष्टमीबुधस्याग्र माहात्म्यं भोजनं त्यजेत् ।
तावदेव न भोक्तव्यं कथा यावत्समाप्यते ।४५
तथा भुक्त्वा बुधस्याग्रे लाचभ्यच पुनः पुनः ।
विप्राय वेदविदेहे तं ब्रुवन्प्रतिपादयेत् ।४६
साक्षातं सहिरण्यं न जातरूपमयं शुभम् ।
अर्चितं विविधैः पुष्पधूपदीपै सुगन्धिभिः ।४७
पीताम्बरस्त्रैः समाच्छन्नं बुध सोमात्मजाकृतिम् ।
माषकेण सुवर्णेन तदर्धार्धेन वा पुनः ।४८
ॐ बुधाय नमः । ॐ सोमात्मजाय नमः ।
ॐ दुर्बुद्धिनाशनाय नमः । ॐ सुबुद्धिप्रदाय नमः ।
ॐ ताराजायाय नमः । ॐ सोम्य ग्रहाय नमः ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ॐ सर्वसौख्यप्रदाय नमः । एतेपूजामन्त्रः ।
अष्टमी तु यदा पूर्णा ददां राजर्षिसत्तम ।
ब्राह्मणान्भोजयेदष्टौ गां तद्याच्च सवत्सिकाम् ।४६

सातवीं शुभ्र खांड से युक्त अशोक वर्तियों से करे। आठवीं फलों और पुष्पों से केवला खण्ड फेणिकों से करे। इसी प्रकार के क्रम से सुहृत-स्वजन और वान्धवों के साथ करनी चाहिये ।४। सबके साथ में मिलकर करे तथा स्वस्थ मन वाले होकर भोज्य का भोजन करना चाहिये तथा उपोष्य माणा को धीरे २ श्रेष्ठ कहते हुयेही भोजन करे। ।४४। इस बुधाष्टमी के व्रत माहात्म्य श्रवण करके भोजन को त्यागकर देवे। दावत ही भोजन करके पुनः पुनः आचमन करके किसी वेकों के वेत्ता बिप्र के लिये उमको बोलते हुये प्रतिपादन करे। १६। तक्षत-हिरण्य के महित-सुवर्णमय-परम शुभ अनेक प्रकार के पुष्पों से अर्चित धूप—दीप और सुगन्धियों से युक्त तथा पीतार्ण के वस्त्रों से समाच्छादित सोम के आत्मज की आकृति वाले बुध को एक मांसा सुवर्ण या उससे आधा अथवा उसका भी आधा भाग से युक्त करके देवे। पूजन करने के मन्त्र निम्न लिखित—ॐ बुधाय नमः अर्थात् बुध के लिये नमस्कार है ॐ सौमात्मजाय नमः—ॐ दुर्बुद्धि नाशाय नमः ॐ सुबुद्धि प्रदाय नमः ॐ तारा जाताय नमः—ॐ सौम्य ग्राह्य नमः—ॐ सर्व सौख्य प्रदाय नमः—ये इतने मन्त्र होते हैं। जब यह बुधाष्टमी का व्रत, हे राजर्षि श्रेष्ठ ! सांग समाप्त हो जावे तो फिर आठ ब्राह्मणोंको भोजन करावे और वत्स के सहित गोदान करे ।४७-४६।

वस्त्रालंकारणैः सर्वभूषणैर्विविधैरपि ।
सपत्नीकं समभ्यर्च्य कणमात्रांगुलीयकैः ।
मन्त्रणानेन कौन्तेय दद्यादेवं समाचरन् ।५०
बुधोऽयं प्रतिगृह्णातु द्रव्यस्वीऽयं बुधः स्वयम् ।
दीयते बुधराजाय तृप्यतां च बुधो मम ।५१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुधः सोम्यस्तारकेयो राजपुत्र इलापतिः ।
कुमारो द्विजराजस्य यः पुरूरवसः पिता ।५२
दुर्बुद्धिवाधजनितं नाशयित्वा च मे बुधः ।
सौख्यं च सौमनस्यं च करोतु शशिनन्दनः ।५३
इत्युच्चार्यं गृहीत्वा तु दद्यान्मन्त्रपुरा सरम् ।
सप्तन्मति राजेन्द्र जातो जातिस्मरो भवेत् ।५४

वस्त्र एवं अलङ्कारों के द्वारा तथा विविध प्रकारके समस्त भूषणों से पत्नी के सहित कर्णमात्रांगुलीयकों से भली-भाँति पूजन करके हे कौन्तेय ! इस अधोलिखति मन्त्र के द्वारा समाचरण करता हुआ दान करे।५०। यह बुध है इसको आप ग्रहण करें। वह बुध स्वयं ही द्रव्यस्थ है बुधराज के लिये दिया जाता है। यह बुध मुझ पर परम तुष्ट होवें ।५१। यही दाम देने का मन्त्र है। यह बुध सौम्य है–तारा का पुत्र है–राजपुत्र है और इला का पति है—द्विजराज का कुमार और पुरुरथा का पिता है ।५२। यही प्रतिग्रहण का मन्त्र होता है। यह बुध दुर्बुद्धि की बाधा से जनित का मेरा नाश करके यह शशि नन्दन परम सौख्य का सोमनस्य भाव करें ।५३। ऐसा उच्चारण मुख से करके ग्रहण करके मन्त्र पूर्वक दान करना चाहिये। हे राजेन्द्र ! वह सात जन्म तक जाति सार जन्म लेने वाला होता है ।५४।

धनधान्यसमायुक्तः पुत्रपौत्रविवर्द्धनः ।
दीर्घायुर्विपुलान्भोगान्भुक्त्वा चैव महीतले ।५५
ततः सुतार्थेमरण ध्यात्वा नारायणं विभुम् ।
मृतोऽसौ स्वर्गमाप्नोति परन्दरसमो नरः ।५६
बसते यावदासृष्टेः पुनराभूतसंप्लवम् ।
एवमेतन्मया ख्यात व्रतानामुतमं व्रतम् ।५७
एषैवं च तयाख्याता गुह्या पार्थ बुधाष्टमी ।
यां श्रुत्वा ब्रह्महा गोघ्नं सर्वपापै प्रमुच्यते ।५८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यश्चाष्टमी बुधयुतां समवाप्य भक्त्य
सम्पूजयेन्दिधुसुत कनपृष्ठसस्थम् ।
पक्वान्नपात्रसहितैः सहिरण्यस्त्रैः
पश्येदसौ यमपुरे न कदाचिदेव ।५६

धन-धान्य से भली-भाँति सुसम्पन्न—पुत्र और पौत्रादि का बढ़ाने वाला—दीर्घ आयु से युक्त—इस महीतल में बहुत से भोगों का उपभोग करके रहता है ।५५। फिर किसी सुन्दर तीर्थ स्थल में विभु नारायण का ध्यान करके ही उसका मरण हुआ करता है। मृत हो जाने पर यह नर इन्दु के समान होकर स्वर्ग की प्राप्ति किया करता है ।५६। वहाँ पर भी सृष्टि से आरम्भ करके पुनः भूत संप्लव जब तक होता है निवास किया करता हैं। यह इस प्रकार से मैंने तुमको बतला दिया है। यह अन्य सभी व्रतों में परम उत्तम व्रत है ।५७। यह इस तरह से पार्थ ! अत्यन्त गोपनीय बुधाष्टमी का मैंने आपके समक्ष मैं वर्णन कर दिया है। इसकी इसकथा एवं विधान का श्रवण करके चाहे कोई ब्रह्म हत्या का पापी हो या मोहल्ला करने वाला ही अपने सभी पापों से छुटकारा पा जाया करता है ।५८। जो कोई पुरुष बुधबार से युक्त अष्टमी के व्रतादि को भक्ति की भावना से समाप्त करके कन पुष्ट पर विराजमान विधु के पुत्र विभुका अच्छी तरहसे पूजन किया करता है वह पक्वान्न के पात्रों के सहित हिरण्य तथा वस्त्रों से युक्त होता है और वह यमपुर को कभी भी नहीं देखा करता है ।५६।

जन्माष्टमी व्रत माहात्म्य

जन्माष्टमीव्रतं ब्रूहि विस्तरेण गमाच्युत ।
कस्मिन्काले समुत्पन्नं किं पुण्यं को विधिःस्मृतः ।१
हते कंसासुरे दुष्टे मथुरायां युधिष्ठिर ।
देवकी मां परिष्वज्य कृत्वोत्सर्गो रुरोद ह ।२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तत्रैव रङ्गवाढेन मचारूढजनोत्सवे ।
मल्लयुद्धे पुरावृत्ते समेते कुकुराऽन्धके ।३
स्वजनैबंधुभिः स्निग्धैः समं स्त्रीभिः समावृते ।
बसुदेवोऽपि तत्रैव वात्सल्यात्प्ररुरोद ह ।४
समाकृष्ण परिष्वज्य पुत्रपुत्रेत्युवाच ह ।
सगद्गदस्वरो दीनो वाष्पपर्याकुलेक्षणः ।५
वलभद्र च मां चैव परिष्वज्य मुदा पुनः ।
अद्य मे सफल जन्म जीवित यत्सुजीवितम् ।६
यदुभाभ्यां सुपुत्राभ्यां समुद्भूतः समागमः ।
एव वर्षेण दम्पत्ये हृष्टं पुष्टं तथा त्यभूत् ।७

युधिष्ठिर ने कहा—हे अच्युत ! अब आप कृपा करके मुझे जन्माष्टमी व्रत का विधान विस्तार पूर्वक बतलाइये । यह व्रत किस समय में उत्पन्न हुआ था—इस व्रत का क्या पुण्य होता है और इसके करने की क्या विधि बतलायी गयी है ।१। श्रीकृष्ण ने कहा—हे युधिष्ठिर ! जिस समय में मथुरा पुरीमें अत्यन्त दुष्ट कंसासुर मारा जा चुका था तो उस समय में माता देवकी ने मुझे अपनी गोद में बिठाकर एवं समालिङ्गन करके रुदन किया था ।२। वहीं पर रङ्ग बाढ़से सभी जनों के मञ्चों पर समारूढ़ होने के उत्सव कुकुरान्धक के समेत मल्ल युद्ध के पहिले हो जाने पर अपने जन वन्धुगण-स्नेही वर्ग और स्त्रियों से समावृत होनेपर पिता वसुदेव भी वहीं रोने लग गये थे ।३-४। मुझे उन्होंने खींचकर मेरा परिष्वजन किया और हे पुत्र—ऐसा कहने लगे थे । उस समय में उनका कण्ठ गद्गद् होगया था, अथवा दीनता के भावसे युक्त थे तथा आँसुओं से उनके नेत्र भर गये थे ।५। बड़े भाई बलभद्रक को और मुझको पुनः पुनः छाती से लगाकर आनन्द मग्न हो गये थे और यह कह रहे थे कि आज मेरा जन्म सफल हुआहै और मेरा जीवन भी सुन्दर बन गया है ।६। इन दोनों यदुकुल में समुत्पन्न पुत्रों के साथ मेरा समागम होगया है इस प्रकार से वर्षभर में वह दम्पति परम हृष्ट पुष्ट हो गये थे ।७।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रणिपत्य जनाः सर्वे बभुवस्ते प्रहर्षिताः
एवं महोत्सव दृष्टा मामाह सकलो जनः ।८
प्रसादः क्रियतां नाथ लोकस्यास्य प्रसादतः ।
यस्मिन्दिने जगन्नाथ देवकी त्वामजीजनत् ।९
तद्दिने देहि वैकुंठ कुर्मस्तेत्र नमोनमः ।
सम्यग्भक्तिप्रपन्न तां प्रसाद कुरु केशव १०
एवमुक्त जनोघेन वसुदेवाऽतिविस्मितः ।
विलोक्य बलभद्रं च मां च कृत्वा रुरोद ह ।
एवमस्त्विवत्ति लोकानां कथयस्व यथातथा ।११
ततश्च पितुपादेशात्तथा जन्माष्टमीव्रतम् ।
मथुरायां जनोघाग्रे पार्थ सम्यक्प्रकाशितम् ।१२
पौरजमा जन्मदिनं वर्षेवर्षे मतोदितम् ।
पुनजन्माष्टमी लोके कुर्वंतु ब्राह्मणादय ।
क्षत्रिया वैश्यजाती शूद्रा येन्येऽप धार्मिकाः ।१३
सिंहराशिगते सूर्ये गगने जलदाकुले ।
मासि भाद्रपदेष्टम्यां कृष्णपक्षेऽर्धरात्रके ।
वृषभराशिस्थिते चन्द्रे नक्षत्र रोहिणीयुते ।१४

सभी मनुष्यों ने प्रणिपात किया था और महोत्सव देखकर सभी जन समुदाय ने उस समय में मुझसे कहा था ।८। हे नाथ ! अब ऐसा प्रसाद हम सब पर कीजिए कि इस लोक के ऊपर प्रसन्नता से हे जगन्नाथ ! जिस दिन में माता देवकी ने आपको जन्म ग्रहण कराया था ।९। उस दिन में बैकुण्ठ लोक को प्रदान कीजिये। वहाँ पर ऐसा ही कुछ हम किया करे आपको बारम्बार प्रणाम है। हे केशव ! भली भाँति भक्ति में प्रसन्न हमारे ऊपर आप अपनी कृपा कीजिए ।१०। इस प्रकार से उस जन समुदाय के द्वारा कहने पर बसुदेव अत्यन्त ही विस्मित हो गये थे । फिर भाई बलभद्र और मेरी ओर विलोक करके रुदन करने लगे थे । लोकों के लिये ऐसा ही होवे—ऐसा यथा तथा आप कथन करिये ।११। इसके अनन्तर पिता के आदेश से मैंने ही हे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पार्थ ! मथुरा पुरी में उस महान जन समुदाय के समक्ष में भली-भाँति प्रकाशित किया था ।१२। पुर के निवासी जन मेरे कहे हुए उस जन्म के दिन को प्रत्येक वर्ष में लोक में पुनः जन्माष्टमी ब्राह्मण आदि सभी लोग करें । चाहे क्षत्रिय हो या वैश्य एवं शूद्र और जो अन्य भी धार्मिक पुरुष है और आकाश एक दम मेघों से समाकुल हो जाता है तब भाद्रपाद मास में कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथिमें अर्धरात्रि के समय में मेष राशि पर चन्द्रमा के उदय होने पर तथा रोहिणी नक्षत्र के योग में मेरा जन्म हुआ था ।१४।

वसुदेवेन देवक्यामहं जातो जनाः स्वयम् ।
एवमतत्समाख्यात लोके जन्माष्टमीव्रतम् ।१५
भगवत्पार्श्वतो राजन्वहु रूपं महोत्सवम् ।
मथुरायास्ततः पश्चाल्लोके ख्याति गमिष्यति ।
शांतिस्तु षुखं चास्त लोकाः सन्तु निरामयाः ।१६
तत्कीदृशः व्रत देव लोकैः सर्वैरनुष्ठितम् ।
जन्माष्टमींव्रतं नाम पवित्रं पुरुषोत्तमः ।१७
येन त्वं तुष्टिमायासि लोकानां प्रभुहव्ययः ।
एतन्मे भगदन्ब्रूहि प्रसादान्मधुसूदम ।१८
पार्थं तद्दिवसे प्राप्ते दन्तधावनपूर्वकम् ।
उपवासस्य नियमं गृह्णीयाद्भक्तिभावितः ।१९
एकेनैवोपवासेन कृतेन कुरुनन्दन ।
सर्वजन्मकृतेः पापैर्मुच्यते नात्र संशयः ।२०
उपावृत्तस्य पापेभ्योयस्तु वासो गुणैः सहः ।
उपवासः स विज्ञेयः सर्वभोगविवर्जितः ।२१

वसुदेव के द्वारा देवकी के उदर में मैं समुत्पन्न हुआ था और स्वयं ही मैंने जन्म ग्रहण किया था । मनुष्यों ने इस प्रकार से कहा था और लोक में जन्माष्टमी का व्रत हुआ था ।१५। हे राजन ! भगवानके पार्श्व से यह वहुतसे रूप वाला महान् उत्सव हो गया था । इसके पश्चात् यह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस मथुरापुरी से सम्पूर्ण लोक में ख्याति को प्राप्त हो गया था । शांति होवे–सुखादय होवें और सभी लोग निरामय होवें ।१६। युधिष्ठिर ने कहा—हे देव ! वह कैसा व्रत है जो सभी लोगों ने किया था ! हे पुरुषोत्तम ! जन्माष्टमी नाम वाला यह व्रत परम व्रत होता है ।१७। हे मधुसूदन ! आप तो अविनाशी समस्त लोकों के प्रभु हुए । जिससे आपकी तुष्टि प्राप्त हो यही विधान मुझे बतलाइये । हे भगवन् ! आपकी परम कृपा होगी ।१८। श्रीकृष्ण ने कहा—हे पार्थ ! जब वह पूर्वोक्त ग्रहगण से युक्त दिन होवे तो दन्त धावन पूर्वक भक्तिभाव से इस उपवास के नियम को ग्रहण करना चाहिये । हे कुरुनन्दन ! यह एक ही उपवास ऐसा अद्भुत गुणों वाला है कि इससे करने पर मनुष्य सपूर्ण जन्मों में किये हुए सभी प्रकार के पापों से छुटकारा पा जाया करता है—इसमें कुछ भी संशय नहीं है ।२०। उपावृत पापों से जो गुणों के सहित वास होता है उसीको उपवास चाहिये । जो सभी भोगों से विशेष रूप से वर्जित हुआ करता है ।२१।

ततः स्नात्वा च मध्वाह्नं नद्यादौ विमले जले ।
देव्याः सुशोभनं कुर्याद् नक्या सूतिकागृहम् ।२२
पद्मरागः पत्रनेत्रैमण्डितं चर्तितं शुभः ।
रम्यं तु वनमालाभी रक्षामणिविभूषितम् ।२३
सर्वं गोकुल वप्कार्यं गोरिजनसमाकुलम् ।
घण्टामर्दलसङ्गीतमाङ्गल्यकलशान्वितम् ।२४
यवाघं स्वस्तिका कुडयेः शंखवादित्रसंकुलम् ।
वद्धासुरा लोहखड्गैः प्रियच्छागसमन्वितम् ।२५
धान्ये विन्स्य मुसलं रक्षित रक्षपालकः ।
षष्ठचा देव्यः च सम्पूर्णनद्यै विविधैः कृतैः ।२६
एवमादि यथाशेषं कवव्यं सूतिकागहम् ।
एन्मभ्ये प्रतिष्टव्या सा चाप्यष्टविधा स्मृता ।२७
काँचनी राजती ताम्रा मृण्मयी तथा ।
दार्वी मणिमयीं चैव र्णिका लिखिताश्च वा ।२८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके अनन्तर मध्यान्हमें किसी नदी आदि तीर्थं एवं शुद्ध जलाशय के विमल जल में स्नान करके फिर देवकी देवी का एक अत्यन्त शोभा युक्त सूतिका-गृह बनावे ।२२। वह सूतिका गृह पद्म रागों तथा शुभ पत्र नेत्रों से मन्डित्त एवं चर्चित करे और वनमालाओं से सुरम्य तथा रक्षा मणियों से भूषित करना चाहिए ।२३। उसमें सभी गोकुल के समान ही गोपीजनों से उसे समाकुल बनाना चाहिए । उसमें घण्टा मर्दन-संगीत एवं मङ्गल कलश भी विद्यमान होवें ।२४। यवार्द्धं स्वास्तिका कुड्योंसे युक्त तथा शङ्ख वादित्रसे संकुल वह सूतिका गृह होवे । वद्धा सुरा लोह खग से संयुक्त एवं प्रिय छाग से समन्वित उसे करे।२५। धान्य में मुसल का विन्यास करके रक्षा पालकों द्वारा उसे रक्षित रक्खे । षष्टी देवी के सम्पूर्ण और विविध कृत से नैवेद्यों से युक्त करे, इस प्रकार से जो कुछ भी शेष हो उस सब से युक्त सूतिका गृह को बना देवे । इसके मध्य में जो वह आठ प्रकार की वताई गई उसको प्रतिष्ठापित करना चाहिए । वह सुवर्ण कीं हो–चाँदी की ताम्र को—पीतल की–मिट्टी की—काष्ठ की कर्णिका अथवा लिखित हो ।२६-२८।

सर्वलक्षणसम्न्न पर्यकेचार्द्ध सुप्तिका ।
प्रतप्तकांचनासामा मया सह तपस्विनी :२६
द्रस्तुता च प्रसूता च तत्क्षणाच्च प्रहर्षिता ।
मां चापि बालकसुप्त पर्यङ्के स्तनपायिनम् ।३०
श्रीवत्सवक्षस पूर्ण नीलोत्पलदलच्छविम् ।
यशोदा चापि तत्रैव प्रसूता वरकन्यकाम् .३१
तत्र देवगृहं नागा यक्षविद्याधरानराः ।
प्रणताः पुष्पमालाग्रव्यग्रहस्ताः सुरासुराः ।३२
संचरन्त इत्राकाशे प्रकारै रुदितादितैः ।
वसुदेवोऽपि तत्रैव खड्गवर्मधर स्थितः ।३३
कश्यपा बसुदेवोयमदितिश्चापि देवकी ।
बलभद्रः शेषनागो यशोदादिष्यजायत ।३४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नन्दः प्रजापतिदक्षो गर्गश्चापि चतुर्मुखः।
एषोवतारो राजेन्द्र कंसोऽयं कालनेमिजः।३५
तत्र कंसनियुक्ता ये दानवा विविधायुधाः।
ते च प्राहारिकाः सर्वे गुप्ता निद्राविमोहिताः।३६

वही देवकी की प्रतिमा सब प्रकार के लक्षणों से सुसम्पन्न होनी चाहिए। एक पर्यङ्क पर अर्ध सुप्तिका दशा में स्थित करे तो प्रकर्ष रूप से तपाये हुये सुवर्ण के समान कान्ति वाली हो और तपस्वनी उसके साथ मुझको भी विराजमान किया जावे।२९। ऐसी प्रस्तृता और प्रसूता उसे वहाँ पर दिखलाया जावे जोकि उसी क्षणमें परम प्रहर्षित हो रही हो। बालक के स्वरूप में पर्यङ्क पर प्रसुप्त ओर स्तन का पान करने वाला मुझे भी दिखलाया जावे।३०। मेरा स्वरूप ऐसा होना चाहिए जिसके वक्षःस्थल में श्रीवत्स का चिन्ह हो। पूर्ण नीलोत्पल दल की छवि याला होना चाहिए। वहीं पर यशोदा भी एक श्रेष्ठ कन्या का प्रसव करने वाली होनी चाहिए।३१। वहाँ पर उस देव गृह को नाग यक्ष, विद्याधार, नरगण, असुर अपने हाथों में पुष्पों की मालाओं की ग्रहण किये हुये प्रणाम करने वाले थे ऐसा बनावे।३२। उदितोदित प्रकारों से आकाश में सञ्चरण करने की भाँति ही सब हो रहे थे ऐसी रचना करे। वहाँ पर ही बसुदेव भी खंग और चर्म को धारण किए हुए स्थित दिखलाने चाहिए।३३। यह बसुदेव कश्यप और देवकी अदिति वलभद्र शेषनाग यशोदा दिति ने जन्म लिया था।३४। नन्द प्रजापति दक्ष थे और चतुर्मुख गर्ग हुये थे। हे राजेन्द्र! यह अवतार है और यह कंस कालनेमिज है।३५। वहाँ पर कंस के द्वारा नियुक्त विविध आयुधों वाले जो दानव थे वे सभी प्राहरिक (पहरा देने वाले) थे, वे सभी निद्रा से विमोहित होकर सो गये थे यह भी वहाँ प्रदर्शित करना चाहिये।३६।

गोधेनुकुञ्जराश्चास्य दानवाः शस्त्रपाणयः।
नृत्यंत्यप्सरसो हृष्टा गन्धर्वा गीततत्पराः।३७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखनीयश्च तत्रैव कालियो यमुनाह्रदे ।
रम्यमेव विधिं कृत्वा देवकी नवसूतिकाम् ।३७
तां पार्थ पूजयेद्भक्त्या गन्धपुष्पाक्षतैः फलः ।
कूष्माण्डैर्नालिकेरैश्च खर्जूरैर्दाडिमीफलैः ।३९
बीजपूरैः पूगीफलैर्लकुचैस्त्रपुसैस्तथा ।
कालदेशाद्भवैर्मृष्टैः पुष्पैश्चापि युधिष्ठिरः ।४०
ध्यात्वावतारं प्रागुक्तं मन्त्रेणानेन पूजयेत् ।४१
गायद्भिः किन्नराद्यैः सततपरिवृता ।
वेणुवीणानिनादैर्भृङ्गारादर्शकुम्भ-
प्रमरकृतकरैः सेव्यमाना मुनीन्द्रैः ।
पर्यङ्के स्वास्तृतीया मुदिततरमनाः
पुत्रिणी सम्यगास्ते सा देवी देवमाता ।
जयति सुवदना देवकी कान्तरूपा ।४२

गौ धेनु कुञ्जर और हाथों में शस्त्र रखने वाले दानव थे । अप्सरायें परम हृष्ट होती हुई नृत्य करती हैं—गन्धर्वगण गीतों के गायन में परायण ऐसा दृश्य विरचित करे । वहीं यमुना के पदय में कालिय नाम भी लिखना चाहिये । इस प्रकार की अति रम्य विधि को करके फिर उस नवीन प्रसन्न करने वाली देवकी का पूजन हे पार्थ ! गन्ध पुष्पाक्षत फलादि के द्वारा भक्तिभाव से करे । फलों में कुष्माण्ड, नालिकेर, खजूर और दाड़िम होने चाहिये ।३७-३९। बीजापुर—पूगफल—लकच और त्रपुस भी होवे । हे युधिष्ठिर ! काल और देश के अनुसार समुत्पन्न हो तथामृष्ट हो इसी भाँति के पुष्प भी हों ।४०। प्रथम वर्णित अवतारका ध्यान करके इस मन्त्रसे अर्चन करना चाहिये ।४१। निरन्तर गायन करने वाले किन्नर आदिसे बराबर परिवृत रहने वाली-वेणु और वीण के निनादों के द्वारा वे लोग गायन करने वाले हैं । भृङ्गार—आदर्श (शीशा) कुम्भ आदि जिनके करों के विद्यमान हैं ऐसे मुनीन्द्रों के द्वारा सेव्यमान है—एक सुविस्तृत पर्यङ्क पर जो अत्यन्त मुदित मन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वाली-पुत्रिणी देव माता वह देवी भली भाँति सोई हुई है। उस कान्त रूप वाली सुन्दर बदन वाली देवकी की जय हो।४२।

पादावभ्यं जयन्तती श्रीर्देवक्याश्चारणातिके।
निषण्णा पङ्कजे पूज्या नमो देव्यै च मंत्रतः ।।४३
एवमादीनि नामानि समुच्चार्यं पृथक्-पृथक्।
पूजयेयुर्गिजाः सर्वे स्त्रीशूद्राणाममंत्रकम् ।।४४
विध्यंतरमपीच्छति केचिदत्र द्विजोत्तमाः।
चन्द्रोदये शशाङ्काय अर्ध्यं दद्याद्धरिं स्मरेत् ।।४५
अनघं वामनं शौरिं वैकुण्ठम् पुरुषोतमम्।
वासुदेव हृषीकेशं माधव मधुसूदनम् ।।४६
वाराह पुण्डरीकाक्ष नृसिंह ब्राह्मणाप्रियम्।
दामोदरं पद्मनाभ केशवं गरुडध्वजम् ।।४७
गोविन्दमच्युत कृष्ण मनपराजितम्।
अघोक्षज जगद्बीजं सर्वस्थित्यंकारणम् ।।४८
अनादिनिधनं विष्णु त्रैलोक्यश त्रिविक्रमम्।
नारायण चतुर्बाहु विष्णुं शंखचक्रगदाधरम् ।।४९

देवकी देवी के चरणों के समीप में उनको पादों का अभ्यर्चनकरती हुई श्रीपंकज में निषण्ण है और पूजन के योग्य है। उस देवी के लिए मन्त्र से नमस्कार है।४३। ॐ देवकी के लिए नमस्कार है—इसी भाँति वासुदेव, बलभद्र श्री, कृष्ण सुभद्रा, नन्द यशोदा के नाम में चतुर्थी विभक्ति लगाकर पूर्व में प्रवण और अन्त में 'नमः, का प्रयोग करे इस प्रकार के नामों को अलग-अलग उच्चारण करके द्विजगण सब अर्चन करे तथा स्त्री और शूद्रों को इन मन्त्रों का पूजन में आवश्यकता नहीं है।४४। यहाँ पर कुछ द्विजोत्तम दूसरी विधि को भी करना चाहते हैं-चन्द्रोदय के समय में शशाक को अर्ध्य समर्पित करके हरि का स्मरण करना चाहिए।४५। उस स्मरण में अधोङ्कित हरि में नामों का उच्चारण करते हुए स्मरण करे—अनघ अर्थात् पाप से रहित, वामन, शौर, वैकुण्ठ, पुरुषोत्तम, वासुदेव, हृषीकेश अर्थात् विषयेन्द्रिय के ईशमाधव,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधुसूदन, वाराह, पुण्डरीकाक्ष अर्थात् पुण्डरीक कमल दल के समान नेत्रों वाले, नृसिंह; ब्राह्मण प्रिय अर्थात् ब्राह्मणों से प्यार करने वाले, दामोदर, पद्मनाभ, केशव, गरुढ़ध्वज, गोविन्द, अच्युत, कृष्ण, अनन्त, अपराजित अधीक्षज, जगत्बीज अर्थात् इस जगत् के कारण स्वरूप; सर्ग (सृस्टि), स्थित (संसार का पालन) और अन्त (संहार) के कारण अनादि निधन अर्थात् आदि और अन्त से रहित—विष्णु, त्रैलोक्येश अर्थात् तीनों के भुवनों स्वामी, त्रिविक्रम् नारायण, चतुर्बाहु, शंख,चक्र, गदाधर ।४६-४९।

पीतांबरधर नित्यं वनमालाविभूषितम् ।
श्रीवत्साङ्क जगत्सेतु श्रीधरे श्रीपते हरिम् ।।५०
योगेश्वराय योगेशवाय योगपते गोविन्दाय नमोनमः ।
यज्ञेश्वराय यज्ञसंभवाय यज्ञ पतेय गोविंदाय नमोनमः ।५१
इत्यनुलेपनाद्यर्घ्याद्यर्चनधूपमन्त्र ।
विश्वाय विश्वेश्वराय विश्वसंभाय ।
विश्वपतये गोविन्दाय नमोनमः ।।५२
धर्मेश्वराय धर्मपतये धर्मसंभाय गोविंदाय नमोनमः ।।५३
क्षीरोदार्णवसंभूत अत्रिनेत्रसमुद्भव ।
गृहाणार्घ्यं शशांकेदो रोहिण्या सहितो सम ।।५४
स्थण्डिले स्थापयेद्देवं सचन्द्रां रोहिणी तथा ।
देवकी वसुदेवं च यशोदां नन्दमेव च ।।५५
बलदेव तथा पूज्यं सर्वपापैः प्रमुच्यते ।
अर्द्धरात्र वसोर्द्धारां पातयेद्गुर्डपिषा ।।५६

पीताम्बरधर, नित्य, वनमाला विभूषित, श्रीवत्सांजगत्सेतु, श्रीधर, श्रीपति, हरि इन भगवन्नामों का स्मरण करते हुए ।५०। योगेश्वर योग भग-योग यति गोविन्द के लिए बारम्बार नमस्कार है—वह स्नान करने का मन्त्र है । इनको कहकर स्नान करावे । योगेश्वर,यज्ञ सम्भव यज्ञपति गोविन्द की सेवा में प्रणाम बारम्बार है । अनुलेपन और अर्घ्य आदि अर्च धूप का मन्त्र है । यह समर्पित करने का मन्त्र है, इसको पढ़ कर समर्पित करना चाहिए । विश्व, विश्वेश्वर, विश्व सम्भव, यहसभी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व के पति के लिए गोविन्द की सन्निधि में बारम्बार नमस्कार है यह नैवेद्य भेट करने का मन्त्र है धर्म के ईश्वर, धर्म के पति, धर्म से समुत्पन्न गोविन्द प्रभु के लिए पुनः प्रमाण है—यह दीपासन का मन्त्र है ।५१-५२। हे क्षीर नगर से समुत्पन्न-अत्रिके नेत्र से समुद्भव वाले ! हे शशांकेन्दो! रोहिणी के सहित आप मेंरा यह अर्घ्य ग्रहण कीजिए।५४ स्थण्डिल में देव को स्थापित करे तथा चन्द्र के सहित रोहिणी की भी स्थापना करे, देवकी,वसुदेव,यशोदा, नन्द बल्देव की स्थापना करे और फिर पूजन करे तो यह सब पापोंसे मुक्त हो जाया करता है। आधीरात में गुड़ और घृत से वसुधरा का पातन करना चाहिए ।५५-५६।

ततो वर्द्धाहनं षष्ठीनामादिकरणं मन ।
कर्तव्यं तत्क्षणाद्राझौ प्रभाते नवमोदिने ।।५७
यथा मम तथा कार्यो भगवत्या महोत्सवः ।
ब्राह्मणान्भोजयेच्छक्त्या तेभ्यो दद्याच्च दक्षिणाम् ।।५८
हिरण्यं काञ्चनं गावो वासांसि कुसुमानि च ।
यद्यदिष्टतमं तत्तत्कृष्णो मे प्रीयतामिति ।।५६
यमेव देवकी देवीं वसुदेवादजीजनत् ।
भौमस्य ब्रह्मणो गुप्त्यै तस्मै ब्रह्मात्मने नमः ।।६०
सुजन्मासुदेवाय गोब्राह्मणहिताय च ।
शान्तिरस्तु शिव चास्तु इत्युक्त्वा तु विसर्जयेत् ।।६१
एवं यः कुरुते देव्या देवक्याः सुमहोत्सवम् ।
वर्षवर्षे भगवतो मदभक्तो धर्मनन्दन ।.६२
नरो वा यदि नारी यथोक्तफलमाप्नुयात् ।।६३

इसके अनन्तर बृद्धापन और मेरी षष्ठी नाम आदिका कर्म्म करना चाहिए जो कि उसी क्षणमें रात्रिमें ही सब करे । फिर प्रभात में नवमी के दिन में जो करना चाहिए-उसे बतलाया जाता है ।५७। जिस तरह से यह मेरा उत्सव करे उसी भाँति भगवती का महोत्सव भी करना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिए । अपनी शक्ति के अनुसार ब्राह्मणोंको भोजन करावे औरउनको दक्षिणा देनी चाहिए ।५८। सुवर्ण काञ्चन गौ, वस्त्र और कुसुमजो-जो भी अभीष्ट हो वह वही देवे और कहे-भगवान कृष्ण मुझ पर प्रसन्न होवें ।५९। जिसकी देवी देवीकी नें वसुदेव को जन्म दिया है और भौम ब्रह्मा की रक्षा करने के लिए समुत्पन्न किया है, उस ब्रह्मात्मा के लिए नमस्कार है ।६०। सुजन्म वासुदेव के लिए और गौ तथा ब्राह्मणों के परम हितैषी के लिए शान्ति होवे, शिव होवे, यह कहकर फिर विसर्जन करना चाहिए ।६१। इस तरह से जो भी कोई देवी देवकी का यह परम सुन्दर महान् उत्सव किया करता है और प्रति वर्ष करता है, हे धर्मनन्दन ! वह भगवान का मेरा भक्त होता है ।६२। चाहे वह कोई पुरुष हो या नारी हो उसे जैसा भी कहा गया है वह फल प्राप्त होता है ।६३।

पुत्रसंतानमारोग्यं धनधान्यादिसद्गृहम् ।
शालीक्षुयवसम्पूर्णमण्डलं सुमनोहरम् ।।६४
तस्मिन्राष्ट्रे प्रभुभुंक्ते दीर्घायुर्मनसेप्सितान् ।
परचक्रभयं नास्ति तस्मिन्नाज्येऽपि पाण्डव ।।६५
पर्जन्यः कालवर्षी स्यादोतिभ्यो न भयं भवेत् ।
यस्मिन्गृहे पाण्डुपुत्र क्रियते देवकीव्रतम् ।।६६
न तत्र मृत निष्क्रांतिर्न गर्भपतनं तथा ।
न च व्याधिय तत्र भवेदिति मतिर्मम ।।६७
ने वैद्यजनयोगो च चापि कलहो गृहे ।
सम्पर्केणापि यः कश्चित्कुर्याज्जिन्माष्टमीव्रतम् ।
विष्णुलोकमवाप्नोनि सोऽपि पार्थ न संशयः ।।६८
जन्माष्टमी जनमनोनयनाभिरामा ।
पापापहा सपदि नन्दितनन्दगोपा ।
यो देवकी सदयितां यजती हतस्यां ।
पुत्रानवाप्य समुपैति पदैः स विष्णोः ।।६९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुत्र सन्तान-आरोग्य धन-धान्य आदि से सुसम्पन्न गृह, शालि, इक्षु यव आदि से सम्पूर्ण मण्डल जो बहुत ही मनोहर हो उसे प्राप्त हुआ करता है।६४। उस राष्ट्र में प्रभु होकर दीर्घायु और मन के सभी अभीष्ट फलों का भोग किया करता है। हे पाण्डव ! उस राज्य मेंफिर परचक्र का कोई भी भय नहीं हुआ करता है।६५। वहां पर मेघ इच्छा के अनुसार वर्षा करने वाला होता है और ईतियों का भी कोई वहाँ पर भय नहीं हुआ करता है जोकि छँ प्रकार की अति वृष्टि-अनावृष्टि आदि मानी गई हैं। हे पाण्डुपुत्र ! जिस घर में इस देवकी व्रतकोकिया जाता है वहाँ पर किसी मृत पुरुष की संक्रान्ति, गर्भ का पतन व्याधियों के उत्पन्न होने का भय कभी भी नहीं होते हैं—ऐसी मेरी मूर्ति या विचार है।६६।५७। न तो उस में वैद्यजनों का संयोग ही होता है और न कोई किसी तरह का कलह होता है। जो कोई सम्पर्क से भी इस जन्माष्टमी के व्रत को कर लिया करता है, हे पार्थ ! वह भी अन्त में विष्णु लोक प्राप्त किया करता है—इसमें लेशमात्र भी संशय नहीं है।६८। यह श्रीकृष्ण जन्माष्टमी जनसमुदाय के मन और नेत्रों कोअति अभिराम है ! यह पापों का अपहरण करने वाली और तुरन्त ही नन्द गोपों को आनन्दित करने वाली है। जो व्यक्ति (वसुदेव) के सहित देवकी देवी का इसमें यजन किया जाता है। वह पुत्रपौत्रादि की प्राप्ति कर अन्त में भगवान विष्णु के पद को प्राप्त करता है।६९।

दशावतार चरित्र महात्म्य

पूर्वं कृतयुगस्यादौ भृगभार्या महासती।
दिव्याश्रमाश्रमे रम्या गृहकार्यैकतत्परा।१
वभूव सा भृगान्नित्यं मृदयेप्सितकारिणी।
तस्यां मुनिमहातेजा अग्निहोत्रं निधाय च।२
विष्णोस्त्रासददानवानां कुलत्राणसमाकुलम्।
मुक्त्वा युद्धस्थितं पार्श्वे समर्प्यंमुनिपुंगवः।३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दत्वा निक्षपेकं सर्वं दिव्यायै सुमहातपाः ।
जगाम हिमवत्पार्श्वे हरं तोषयितुं रहः ।४
सञ्जीवनीकृते नित्यं कणैर्धूममधोमुखः ।
पपौ दानवराजस्य विजयामि पुरोहितः ।५
आजगाम गते तस्मिन्गरुडेनाश्रितो हरिः ।
अभ्येत्यं जल्पनं चक्रेणात्कृत्तकंधरम् ।६
गलद्रुधिरसंपन्नं लोहितार्णवसानिभम् ।
दृट्वासुरवल सर्वं निहतं विष्णुना तदा ।
दिव्या संशप्तुकामन्भूद्विष्णुं सांस्राविवेलेक्षणा ।७

श्रीकृष्ण ने कहा--पहिले कृत युग के आदिकाल में भृगु की भार्या जो महासती थी तथा दिव्य आरामाश्रम में परम रम्य थी और ग्रह के सभी कार्यों में परायण रहा करती थी ।१। वह नित्य ही महर्षि भृगु के हृदय के इच्छित कार्यो के करने वाली थी । महान् तेजस्वी मुनि ने उस अपनी भार्या को अग्नि होत्र के कर्म में नियुक्त कर दिया था ।२। मुनि श्रेष्ठ ने महान् तपस्वी दानवों को विष्णु के त्रास से युक्त कुल को रक्षा के लिए परम आकुल तथा युद्ध में स्थित छोड़कर पार्श्व में सब कुछ समर्पित करके और दिव्य के लिए सब कुछ विक्षेप देकर हिमालय गिरि के पार्श्व एकान्त में भगवान् शम्भू को प्रसन्न करने के लिए चले गये थे ।३-४। नित्यही दानवराजकी संजीवनी एवंविजयके लिएपुरोहित भृगु ने अधोमुख होकर कर्णों से धूम का पान किया था ।५। उसके चले जाने पर गरुड़ पर समारूढ़ होकर भगवान हरि आ गये थे और वहाँ आकर चक्र उत्कृत 'करी हुई) कन्धरा का जल्पन किया था ।६। बहते हुए रुधिर से युक्त लाल सागरके समानसमस्त असुरों की सेना उससमय में विष्णु के द्वारा निहित हो गई थी । उस समय में आँसुओं से मलिन मुख वाली दिव्या विष्णु को शाप देने की इच्छा वाली हो गई थी ।६।

यावन्नोच्चरते वाचं चक्रेण कृतकंधरम् ।
तावन्निपातयाम स शिरस्तस्याः सकुण्डलम् ।

CC-0.Pahini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्य संजीवनी विद्यां यावदायात्यसौ मुनि ।
तावत्स दैत्यान्नापश्यत्पश्यति स्म निपातितम् ।९
रोषाच्छ शाप च हरि भ्रकुठीकुटिलाननः ।
अवश्याभाव भावित्त्वाद्विश्वस्य हितकारणात् ।१०
यस्मात्वया हता दैत्या ब्राह्मणो मत्परिग्रह्हा ।
तस्मात्वं मानुषे लोके दश.वारान्गमिष्यसि ।११
अतोऽर्थे मानुषे लोके रक्षार्थं च महीक्षिताम् ।
अवतारं चकाराहं भूयोभूयः पृथग्विधिम् ।१२
पूर्वक्तैः कारणैः पार्थ अवतीर्णं महीतले ।
मां नरा येऽर्चयिष्यति तेषां वासस्त्रिविष्टपे ।१३

जब तक वह दिव्या शाप देने के लिए मुख से वचनों का उच्चारण नहीं कर पाई थी तब तक तो विष्णुने अपने सुदर्शन चक्रके द्वाराउसकी कन्धरा को काट डाला था और उसका कुण्डलों के सहित शिर काटकर नीचे काट दिया था ।८। यह भृगु मुनि संजीवनी विद्या को प्राप्त करके जब तक वहाँ पर वापिस लौटकर आते हैं तब तक तो वहाँ पर उसने दैत्यों को नहीं देखा था और सबको निपातित देख पाये थे ।९। उनकी यह दशा दैत्यों की देखकर बड़ा रोष उत्पन्न हो गया था तथा टेढ़ी भृकुटियों वाला मुख करके भृगुने हरिको शाप दे दिया था जोकि अवश्य भाव से भावी विश्व के हित के कारणसे ही दिया था।१०। क्योंकि तूने ब्राह्मण के परिगृहीत दैत्यों का हनन कर डाला है इसलिए मैंयह शाप देता हूं कि तुम मनुष्य लोक मैं दश बार जाओगे ।११। इसीलिए मैंने मनुष्य लोक के राजाओं की रक्षाके लिए बारम्बार पृथक् २प्रकार के अवतार लिये थे ।१२। इन पूर्व कथित कारणों से हे पार्थ ! मैं इस मही मण्डल में अवतीर्ण हुआ था जो नर मेरी समर्चना किया करते हैं उनका निवास निश्चय ही त्रिविष्टिय में होता है ।१३।

वतं दशावताराख्य कृष्ण ब्रूहि सविस्तरम् ।
समंत्रं सरहस्यं च सर्वपापप्रणाशनम् ।१४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रोष्ठपदे सिते रक्षे दशभ्यां नियतःशुचि ।
स्नात्वा जलाशये स्वच्छे पितृदेवादितर्पणम् ।१५
कृत्वा कुरुकुलश्रेष्ठ गृहमागात्य मानवः ।
गृह्णीयाद्धान्यचूर्णस्य द्विहस्तप्रसृतित्रयम् ।१६
क्रमेण पावयेत्तां तु पुंसज्ञं घृसंश्रितम् ।
वर्षे वर्षेदिने तस्मन्याबद्वर्षाणि वै दश ।१७
प्रथमे पूरिकान्वर्षे द्वितीये घृतपूरकान् ।
तृतीये शुक्लकांसारं चतुर्थे मोदकाञ्छुमान् ।१८
सोहालकान्पञ्चमेऽब्दे खण्डंष्ठान् ।
सप्तमेऽब्दे कोकरसानपूपांश्च तथाष्टमे ।१९
नवमे कर्णवेष्टास्तु दशमे खण्डकाञ्छुभान् ।
दश धेनूर्दशहरे दशविप्राय पर्येत् ।२०
क्रमेण भक्षयित्वा च यथोक्तं भरतर्षभ ।
अर्द्धार्द्धं गिष्टयेदेवर्द्धार्द्धं वा द्विजातये
स्वतः एवार्धमश्नीयादगत्वा रम्ये जलाशये ।२१

युधिष्ठिर ने कहा—हे कृष्ण ! दशावतार नाम वाले व्रत के मन्त्र एवं रहस्य के सहित विस्तार पूर्वक वर्णन कीजिए कि समस्त प्रकार के पापों का नाश करने वाला होता है । श्रीकृष्ण ने कहा—प्रोष्ठपद मास के शुक्ल पक्ष में दशमी तिथि के नियत एवं पवित्र होकर किसी जलाशय में जो परम स्वच्छ हो स्नान करे और पितृगण देववृन्द का तर्पण करे ।१६। हे कुरुश्रेष्ठ ! यह सब करके मनुष्य को फिर घर में आ जाना चाहिए । वहाँ आकर दोनों हाथों की तीन प्रसृति (पस्सा) धान्य चूर्ण को ग्रहण करे ।१६। उसको क्रम से पाक करे । यह पुंसज्ञा वाला घृत ससिमत है । जब तक दश वर्ष पूरे हों तब तक प्रति वर्ष में उसी दिन में इसे करना चाहिए ।१७। प्रथम वर्ष में पूरिकाऐ करें, दूसरे वर्ष में घृत पूरक करे, तीसरे वर्ष में शुक्ल का सार करे, चौथे वर्ष में परम शुभ मोदक बनावे ।१८। पाँचवे वर्ष में सुहालियाँ, छटवें वर्ष में खण्डवेष्टक सातवें के कोकरस और आठवें में अपूप प्रस्तुत कराके ।१९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवम वर्ष कर्णवेष्ट और दशवें में शुभ खण्डक बनवावे। दश धेनु दश-हरे दश विप्रों को दिलावे।२०। हे भारतवर्षभ ! जो जिस प्रकार बत-लाया गया है उसे क्रम से मिलाकर अर्द्ध का अर्द्ध पीस लेवे और अर्द्धार्द्ध द्विजाति के लिए देवे। स्वतः भी अर्द्ध का अशन करे और किसी रम्य जलाशय पर जाकर करना चाहिए।२१।

दशावतारा नभ्यर्च्यं पुष्पधूपविलेपनैः।
मन्त्रणानेन मेधावी करिमभ्युक्ष्य वारिणा।२२
मत्स्यं कूर्मं वराहं च नरसिंह त्रिविक्रमम्।
श्रीरामं राम कृष्णौ च बुद्धं चैव सकल्किनम्।२३
गतोऽस्मि शरणं देवं हरि नारायणं प्रभुम्।
प्रणतोऽस्मि जंगन्नाथ स मे विष्णुः प्रसीदतु।२४
छिनत्तु वैष्णवीं मायां भक्त्या जातो जनार्दनः।
श्वेतद्वीप नयस्मानसमात्मनि निवेदयेत्।२५
एव यः कुरुते पार्थ विधिनानेन सुव्रत।
दशावतारनामाख्यं तस्य पुण्यफलं श्रृणुः।२६
श्रूयते यास्त्विमालोच्य परुषाणां दशा दश।
ताश्छिनत्ति द संदेहः चक्रप्रहरणैर्हरिः।२७

दश अवतारों का अभ्यर्चन पुष्प धूप लेपन आदि से करे। मेधावी पुरुष को इस मन्त्र से जल के द्वारा हरि का अभ्युक्षण करना चाहिए।२२। मत्स्य, कूर्म, बराह, करसिंह, त्रिविक्रम्, राम, कृष्ण, बुद्ध, और कल्कि देव, हरि, नारायण प्रभु की मैं शरणागति प्राप्त हो गया हूँ। जगत् के नाथ के समक्ष मैं प्रणत होता हूँ। वह भगवान् विष्णु मुझ पर प्रसन्न होवें।२३।२४। भक्ति से जन्म ग्रहण करने वाले जनार्दन प्रभु वैष्णवी माया को छेदन करें। हमको श्वेतद्वीप में ले जाते हैं। समात्मा में निवेदन करे।२५। हे पार्थ ! जो कोई इस प्रकार से करता है, हे सुव्रत ! इस वर्णित विधान से इस दशावतार नाम वाले व्रत को किया करता हैं अब उसके पुण्य के फलों का आप श्रवण कीजिए।२६। पुरुषों की जो ये दशायें हैं उनका आलोचन करके जो वे श्रवण

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

श्रवण की जाती है वे छेदन कर दिया करती है। जिस प्रकार चक्र प्रहरणों से हरि किया करते हैं—इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है।२७।

संसारसागरे घारे मज्जतं तत्र मां हरिः।
श्वेतद्वीपं नयत्वाशु व्रतेनानेन तोषितः।२८
किं तस्य न भवेल्लोके यस्य तुष्टो जनार्दनः।
सोऽहं जनार्दनां राजन्कालरूपी धरासुतः।
मर्त्यलोके स्वयं पार्थे भू भारोत्तारकारणम्।२९
या स्त्रीव्रतामिदं पार्थ चरिष्यति मयोदितम्।
सा लक्ष्म्याऽचलया युक्ता भर्तृ पुत्रसमन्विताः।३०
मर्त्यलोके चिरं स्थित्वा विष्णुलोके महीयते।
विष्णुलोकाद्रुर्लोकं ततो याति परं पदम्।३१
ये पूजयन्ति पुरुषाः पुरुषोत्तमस्य
मत्स्यादिकांस्तु दशासु सुख विहृत्य
ते यांति यानमधिरुह्य सरेशलोकान्।३२

इस व्रत के द्वारा सन्तुष्ट भगवान् हरि संसार में डूबते हुए मुझको वहाँ श्वेन द्वीप में शीघ्र ही ले जावे।२८। भगवान् जनार्दन जिससे परम सन्तुष्ट हो जावे उसको इस लोक में क्या नहीं होता है? अर्थात् सभीकुछ उसे प्राप्त हो जाया करता है। हे पार्थ! इस मनुष्य लोक में भूमि के भार के उत्तारण के कारण से हे राजन्! वह मैं कालरूपी धरासुत जनार्दन हूँ।।२९। हे पार्थ! जो सती मेरे द्वारा कथित इस व्रतको करेगी वह भी अचल लक्ष्मी से युक्त होकर भर्त्ता और पुत्रादिसे समन्वित हुआ करती है।३०। मर्त्य लोक में चिरकाल तक स्थित रह कर वह अन्त में विष्णुलोक में प्रतिष्ठित हुआ करती है। विष्णु लोक से रुद्र लोक में और फिर परम पद को प्राप्त हो जाती है।३१। जो पुरुष इन मत्स्य आदि पुरुषोत्तम के दश अवतारों का दशमी तिथि में पूजन किया करते हैं वे मनुष्य दशों दशाओं में सुख का त्याग करके वे यान में अधिरोहण करके सुरेश के लोकों को जाया करते हैं।३२।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोवत्स द्वादशी माहात्म्य

अक्षौहिण्यौ दशाष्टौ च मद्राज्यार्थे क्षयं गताः।
तेम पापेन मे चित्ते जुगुप्साताव वर्त्तते ।१
तत्र ब्राह्मणराज्यन्वैश्यशूद्रादयो हताः।
भीष्मद्रोणकलिङ्गादिकर्णशल्यसुयोधनः ।२
तेषां वधेन यत्पापं तन्मे मर्माणि कृंतति।
पापप्रक्षालनं कश्चद्धं ब्रूहि जगत्पते ।३
सुमहत्पुण्यजननं गोवत्सद्वादंशीव्रतम्।
अस्ति पार्थं महाबाहो पाण्डवाना धुरंधर ।४
केयं गोद्वादशी नाम विधान तत्र कीदृशम्।
कथमेषा समुत्पन्ना कस्मिन्काले जनार्दन ।५
एतत्सर्वं हरे ब्रूहि पाह मा नरकार्णवात् ।६

युधिष्ठिर ने कहा—मेरे राज्य के प्राप्त करने के लिए अठारह अक्षौहिण सेना क्षयको प्राप्त होगई थी। इस महापाप से चित्त में अत्यन्त जुगुप्सा वर्तमान रहा करती है।१। उस महायुद्ध में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र प्रभृति सभी निहृत हुए थे, जिनमें पितामह भीष्म, गुरुद्रोण कलिङ्गादि, कर्ण, शल्य और सुयोधन थे।२। उस वध से जो पाप हुआ है वह मेरे मर्म स्थलों का कृन्दन किया करता है हे जगत्पते! पापों के प्रक्षालन करने वाला कोई धर्म बतलाइए।३। श्रीकृष्ण ने कहा—एक सुमहत्न पुण्यको उत्पन्न करनेवाली गोवत्स द्वादशीका व्रत होता है। हे महाबाहो! पाण्डवोंमें धुरन्धर हे पार्थ! यह ऐसा ही व्रत है।४। युधिष्ठिर ने कहा-वह गोद्वादशी नाम वाली कौन सी है और उसका विधान किस प्रकार का होता है? यह कैसे उत्पन्न हुई थीं? हे जनार्दन! यह भी बतलाइए यह किस समय में समुत्पन्न हुई है? हे हरे! यह सभी आप बतलाइए और मुझको नरक रूपी सागर से बचाइये।५-६।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

पुरा कृतयुगे पार्थं मुनिकोटि समागता ।
तपश्चचार विपुलं नामव्रतधरा गिरौ ।७
हर्षेण महाताविष्ट देवदर्शनकांक्षया ।
जम्बूमार्गे महापुण्ये नामतीर्थविभूषिते ।८
परियात्रे सिद्धपात्रे रम्ये तंदुलिकाश्रमे ।
टंटाबिरिति विख्याते उत्तमे शिखरे नृपः ।९
तापसारण्यमतुल्यं दिव्यआननमण्डितम् ।
बसिष्ठशुक्रांगिरसक्रतुदक्षादिभिर्वृतम् ।१०
वल्कलाजिनसंवीतभृगोराश्रमण्डलम् ।
नानामृगगणैर्जुष्टं शाखामृगगणैर्यतम् ।११
प्रशान्तसिंहहरिणं सर्ववस्तुगतद्रुमम् ।
गहनं निर्झतं रम्यं लतासतानसंकुलम् ।१२
सिंहव्याघ्रगजैर्भिन्नं हरिणै शबरे शशैः ।
वराहैरुभिश्चत्रैः समतादुपशोभितम् ।१३
तपस्यता तत्रे तेषां मुनिनां दर्शनार्थिनाम् ।
व्याजं चक्रे महीनाथ द्वादशार्धार्धलोचनः ।१४

श्रीकृष्ण ने कहा—हे पार्थ ! पहिले कृतयुग में मुनियों की कोटि समागत हुई थी जो नाम व्रत के धारण करने वाली थी उसने गिरि में विपुल तपश्चर्या की थी । यह मुनि मण्डली महान् हर्ष से समावृष्टि थी और देव के दर्शन की आकांक्षासे ही तप किया था । एक महा पुण्यमय जम्बूमार्ग में जो नाम तीर्थ से विभूषित था ।७-८। वहाँ सिद्ध पात्र रम्य परियात्र तन्दुलिकाश्रम में हे नृप ! एक टटावि—इस नाम से परम विख्यात उत्तम शिखर था ।९। उनमें अनुपम तपोवन था जो दिव्य काननों से समलंकृत था और उसमें वशिष्ट, शुक्र, आङ्गिरस, क्रतुदक्ष आदि सभी विद्यमान थे ।१०। ये सभी मुनिगण वल्कल् और मृगचर्म के धारण करने वाले थे । भृगु का आश्रम मण्डल अनेक मृगकणों के द्वारा सेवित था तथा शाखा मृगों से भी युक्त था ।११। इसमें परम प्रशान्ति वाले सिंह और हरिण रहा करते थे । तथा सर्व वस्तु गतद्रुम थे । यह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अति गहन, निर्भ्रांत और सुन्दर था एवं लताओं के विस्तार से संकुल था ।१२। सिंह गज और व्याघ्रों से भिन्न हरिण, शवर, शश, बराह, रुरु वहाँ पर देव दर्शन के अर्थी उन मुनियों के तप करने पर द्वादशार्धार्थं लोचन महीनाथ ने एक व्याज (छद्म) किया था ।१४

बभूव ब्राह्मणो वृद्धो जरापांडुशमूर्द्धजः ।
श्लथच्चर्मतनुः कुब्जो यष्टिपाणिः सवेपथुः ।
उमापि चक्रं गोरूपं शृणु तत्पार्थं यादृशम् ।१५
क्षीरोदतोयसम्भूता याः तुरामृतमंथने ।
पञ्च गावः शुभा पार्थ पञ्चलोकस्य मातरः ।१६
नन्दा सुभद्रा सुरभी सुशीला बहुला इति ।
एता लोकोपकाराय देवानां तर्पणाय च ।१७
जमदग्निभरद्वाजवशिष्ठासितगौतमाः ।
जगृहुः कामदाः पञ्च गावो तत्ताः सुरेस्ततः ।१८
गोमयं रोचना मूत्रं क्षीर दधि घृत गवाम् ।
षडंगानि पवित्राणि संशुद्धकरणानि च ।१९
गोमयादुस्थितः श्रीमान्विल्ववृक्षः शिवप्रियः ।
तत्रास्ते पद्महस्ता श्रीवृक्षस्तेन स स्मृतः ।
बीजान्युत्पलपद्मानां पुनर्जाजानि गोमयात् ।२०
गोरोचना च मांगल्या पवित्रा सर्वसाधिका ।
गोमूत्रादगुलुर्जातः सुगन्धिः प्रियदर्शनः ।
आहारः सर्वदेवानां शिवस्य च विशेषतः ।२१

वह देवेश्वर एक अति वृद्ध ब्राह्मण हो गये थे । जिसकी वृद्धता के कारण समस्त केश एक पांडुर वर्ण के होगये थे। शरीर चर्म श्लथ था कुब्ज (कुबड़ा) था—हाथ में एक यष्टि (लाठी) का ग्रहण करने वाला और कम्प युक्त था । उस समय में उमा देवी ने भी गोरूप धारण किया था । हे पार्थ ! वह जिस प्रकार का था उसका तुम श्रवण करो ।१५।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहिले अमृत के लिए मन्थन करने के समयमें क्षीरसागर के जलसे जन्म ग्रहण करने वाली पाँच गौयें परम शुभ पाँच लोक की मातायें हुईं थीं ।१६। नन्दा, सुभद्रा, सुरभी, सुशीला, बहुला ये उनके नाम हैं । ये लोकों के उपकार के लिए और देवों के तर्पण के लिए ही समुत्पन्न हुईं थीं।१७ जमदग्नि, भरद्वाज, वशिष्ठ, अत्र, गौतम ने इन पाँच गौओं को ग्रहण किया था और सुरगण ने इनको दिया था ।१८। गोरोचना, मूत्र क्षीर,दधि और गौओं का घृत ये छै अङ्ग परम पवित्र होते हैं तथा संशुद्धि के करने वाले भी हुआ करते हैं ।१९। गोमय से श्रीमान् भगवान शिव का प्रिय विल्व का वृक्ष समुत्थित हुआ था । वहाँ पर पद्म हाथमें लेने वाली श्री विराजमान रहती है अतएव उसे श्रीवृक्ष भी कहा गया है। फिर गोमय से उत्पन्न पद्मों के बीज उत्पन्न हुए थे ।२०। गोरोचना मांगलिक होती है पवित्र है और सबकी साधिका हुआ करती है । गोमूत्र से गुलु उत्पन्न हुआ जो सुन्दर गन्ध वाला और देखने में-प्रिय होता है। यह भी देवों का आहार है तथा शिव का विशेष रूप होता हैं ।२१।

यद्बीजं जनत: किञ्चित्तज्ञे य क्षीरसंभवम् ।
दधु सर्वाणि जातानि मङ्गलाभ्यर्थसिद्धये ।
घृतादमृतमुत्पन्न देवनां तृप्तिकारणम् ।२२
ब्राह्मणाश्चैवगावच्च कुलमेकं द्विधा कृतम् ।
एकश मन्त्रास्तिष्ठति हविरन्यत्र तिष्ठति ।२३
गोषु यज्ञा: प्रवर्तंते गोषु देवा: प्रतिष्ठिता: ।
गोषु वेदा समुत्कीर्णा: सषडङ्गपदक्रमा: ।२४
श्रृङ्गमूले गवां नित्यं ब्रह्मा विष्णूश्च स्थितौ ।
श्रृङ्गाग्र सर्वतीर्थानि स्थावरणि चराणि च ।२५
शिवो मध्ये महादेव: सर्वकारणकारणम् ।
ललाटे संस्थिता गौरी नासावंशे च षण्मुख: ।२६
कबलाश्चतरौ नागौ नासापुटसमाश्रितौ ।
कर्णं योगश्विनी देवौ चक्षुर्म्यां शशिभास्करौ ।२७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दन्तेषु वसवः सर्वं जिह्वायां वरुणाः स्थितः ।
सरस्वती च कुहदे यमयक्षौ च गण्डयोः ।२८

इस जगत् का जो कुछ भी बीज है वह सब क्षीर से संभूत होने वाले हैं । अर्थ की सिद्धि के लिए सभी मङ्गलों को धारण किया था । घृत से अमृत उत्पन्न हुआ जो देवों की तृप्ति का कारण हैं । २। ब्राह्मण और गौ यह एक ही कुल है जो दो प्रकार का कर दिया है । एक में मन्त्र अपनी स्थित रखा करते हैं और दूसरे में हवि स्थित रहताहैं ।२३ गौओं में यज्ञ प्रवृत्त होते हैं और गौओं में देवता लोग प्रतिष्ठित रहते हैं । गौओं में वेद समुत्कीर्ण है । जो षडङ्ग क्रम के सहित होते है ।२४। गौओं के सीगों के मूल में नित्य ही ब्रह्मा और विष्णु समवस्थित रहा करते हैं । शृङ्ग के अग्रभाग में सम्पूर्ण तीर्थं स्थावर और चर विद्यमान हैं ।२५। मध्य में महान देव विराजमान हैं जो सब करणों के भी कारण स्वरूप होते हैं । ललाटमें जगदम्बा गौरी विराजमान हैं, नासा वंश में षण्मुख कार्तिकेय विराजते है ।२६। कम्वलतर दो भाग नासापुट में वर्तमान है दोनों कानों में अश्विनीकुमार देव रहते है और दोनों चक्षुओं में शशि एवं भुवन भास्कर समाश्रित हैं ।२७। गौ के दातों में सब वसुगण हैं एवं जिह्वा में वरुण स्थित रहते हैं । कुहर में सरस्वती तथा गण्ड स्थलों में यम और यक्ष दोनों रहा करते हैं ।२८।

संध्याद्वय तथेष्टाख्या ग्रीवायां च पुरन्दरः ।
रक्षांसि ककुगे द्यौश्च पार्ष्णिकाये व्यवस्थिया ।२९
चतुष्पात्सकलो धर्मो नित्यं जगारु तिष्ठति ।
खुरमध्येषु गन्धर्वाः खुराग्रेषु च पन्नगाः ।३०
खुराणां पश्चिमे भागे राक्षसाः संप्रतिष्ठिताः ।
रुद्रा एकादश पृष्ठे वरुणः सर्वसन्धिषु ।३१
श्रोणीतटस्थाः पितरः कपोलेषु च मानवाः ।
क्षीरपानि गवां नित्यं स्वाहालङ्कारमाश्रिताः ।३२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदित्या रश्मयो वाला पिण्डीभूता व्यवस्थिताः ।
साक्षाद्गङ्गा च गोमूत्रे गोमये यमुना स्थिता ।३३
त्रयस्त्रिंशद्देवकोट्यो रोमकूपे व्यवस्थिता ।
उदरे पृथिवी सर्वा सशैलवनकानना ।३४
चत्वारः सागराः प्रोक्ता गवां ये तु पयोधराः ।
पर्जन्यः क्षीरधारासु मेघा विदुव्यद्यौस्थितः ।३५

इष्टों में दोनों सन्ध्याऐं रहती हैं और ग्रीवा में इन्द्र विराजते हैं गौ के ककुद में राक्षस तथा पार्ष्णिकाय में द्यौ व्यवस्थित है।२६। चारों पादों वाले सम्पूर्ण धर्म नित्य ही गौ की जंघाओं में स्थित रहा करता है खुरो के मध्य में गन्धर्व और खुरों के अग्रभाग पन्नग है ।३०। खुरों के पश्चिम भाग में राक्षस सम्प्रतिष्ठित है। एकादश रुद्र पृष्ट भाग में तथा समस्त सन्धियों में बरुण देव रहा करते हैं।३१। श्रेणी तट में स्थित पितृगण हैं तथा कपालोंमें मानव रहते हैं स्वाहा के अलङ्कार में समाश्रित श्री गौओं के अपान में नित्य रहती है।३२। आदित्य रश्मियाँ-पिंडीभूत होकर वाल व्यवस्थित हैं। गोमूत्र साक्षात् गङ्गा विराजमानहै। गोमय में यमुना विद्यमान है।३३। तेतीस करोड़ देवों की कोटियाँ रोम-कूपों में विशेष रूप से अवस्थित है। गौ के उदर में सम्पूर्ण पृथिवी है-जिसमें शैल-वन और कानन हैं।३४। जो ये गौ के चार स्तन हैं ये ही चार सागर कहे जाते हैं। क्षीर की धाराओं में पर्जन्य तथा विन्दुओं में व्यवस्थित मेघ हैं।३५।

जठरे घार्हरत्योऽग्निर्दक्षिणाग्निर्हृदि स्थितः ।
कण्ठे आह्वनीयोऽग्निः तसभ्योऽनिस्तालुविस्थितः ।३६
अस्थिव्यवस्थिताः शैला मज्जासु क्रतबस्थिताः ।
ऋग्वेदोऽथर्वेदश्च सामवेदो यजुस्तथा ।३७
सुरक्तपीतकृष्णादो गवां वर्णे व्यवस्थिताः ।
तासां रूपमुमा स्मृत्वा सुरभीणां युधिष्ठिरः ।३८
संस्मृत्य तत्क्षणाद्गौरी इयेष सदृशी तनुम् ।
आत्मानं विदधे देवी धर्मराज शृणुष्व ताम् ।३९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

षडुन्नता पञ्चनिम्नां मण्डूकाक्षी सुवालधिम ।
ताम्रास्तानी रौप्यकटि सुखुरी सुमुखीं सिताम् ।४०
सुशीलां च सुतस्नेहां सुशीरां सुपयोधराम् ।
गोरूपिणीमुमां स्पृष्ट्वा स्वामिनीं तां सवत्सिकाम् ।४१
चर्यया प्रतरहृष्टो महादेवः स्वचेतसि ।
शनैः शनैर्ययो पार्थ विप्ररूप' महाश्रमम् ।४२

गौ के जठर में गार्हपत्य अग्नि है और हृदय में दक्षिणाग्नि है। कण्ठ में आह्वनीय अग्नि स्थित है तथा तालु में सभ्य अग्नि है।३। गौ की अस्थियों में सम्पूर्ण शैल व्यवस्थित है और मज्जाओं में ऋतु विद्यमान है। ऋग्वेद-अथर्ववेद-सामवेद और यजुर्वेद सुरक्त-पीत और कृष्ण आदि जो गौओं के वर्ण हैं उनमें ही व्यवस्थित रहते हैं। युधिष्ठिर ! उन सुरभियों रूप को उमा देवी स्मरण किया करती हैं।३८। इस प्रकार से स्मरण करके गौरी ने उसी क्षण में सदृश रूप की इच्छा की थी। हे धर्मराज ! देवी ने जैसा अपने आपको बनाया था उसे अब सुनलो। ।३९। षडुन्नत-पंच निम्न मंडुकाक्षीं सुन्दर पूँछ और ताम्र के स्तनों वाली-रौप्यकी कटिसे युक्त सुन्दर खुरों वाली सुमुखी-सित सुशील-सुन्दर क्षीर वाली-सुत पर स्नेह करने वाली और सुन्दर पयोधरों वाली रूपमें स्थित वत्स से युक्त-स्वामिनी उमा का स्पर्श करके महादेव अपने चित्त में प्रसन्न होकर प्रतार करते हुए हे पार्थ ! शनैः-शनैः वह उस महाश्रम विप्र रूप वाले होकर गये थे ।४०-४२।

दत्त्वा कुलपतेः पार्श्वं भृगोस्ता गा न्यवेदयत् ।
तपस्विनी महातेज स्तां च सर्वेष पाण्डव ।४३
न्यासरूपां ददा धेनुं रक्षित्वा ता दिनद्वयम् ।
यावत्स्नात्वा इतस्तीर्थ्वा जम्बूमार्गं वियाम्यहम् ।४४
रक्षिष्यामः प्रतिज्ञाते मुनिभिः सुरभीमिमाम् ।
अन्तर्द्धिमगमद्देव पुनर्व्याघ्रो वभूव ह ।४५
वज्रचक्रनखो देवो ज्वलत्पिंगललोचनः ।
जिह्वाकरालवदनो जिह्वालांदारुणः ।४६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्प्रयादाश्रमपदं तां च धेनुं सवत्सिकाम् ।
त्रासवामास तां देव मुनीनां दिक्ष्ववस्थितः ।४७
ऋषयोऽपि समाक्रांता आर्तं नादं प्रचक्रिरे ।
ह्राहेत्युच्चै केचिद्‌चहुं कारैस्तथापरे ।४८
तालास्फ़ोटान्ददुः केचदव्याघ्रं दृष्ट्वातिभैरव ।
सापि हुभारवांश्चक्रे गौरुत्प्लव्य सवत्सिका ।४६

कुलपति भृगु के पार्श्व में उस गौ को देकर निवेदन किया था । हे पाण्डव ! वह सब तपस्वियों में महान् तेजस्वी थे । दो दिन तक उसकी रक्षा उसके उस धेनु को न्यास रूप में दिया था । यह कहा कि कि मैं जब तक यहाँ से उतर कर स्नान करके जम्बू मार्ग में जाता हूँ इसको आप रखिए ।४३–४४। मुनियोंके द्वारा इस सुरभी की हम रक्षा करेंगे-ऐसी प्रतिज्ञा करने पर वह देव अन्तर्धान हो गये थे और एक व्याघ्रवल गये थे ।४५। वह वज्र चक्र के समान नखों वाला—दर्वी—जलते हुए पिंगल वर्ग के नेत्रों से युक्त-जिह्वासे कराल मुखाकृति वाला एवं जीभ और लांगूल के अत्यन्त दारुणा था ।४६। वह उसी आश्रम के स्थान में आ गया था और वत्स के सहित उस धेनु को त्रास लगा था । देव मुनियों की दशाओं में अवस्थित हो गया था ।४७। ऋषि गण भी समाक्रांत हो गए थे और सब आर्त्तनाद करने लगे थे । उनमें कुछ तो 'हा-हा' यह कहने लगे और कुछ दूसरे हुंकार 'हुम्-हुम्' ऐसा मुख से कह रहे थे ।४८। कुछ तालिओं की ध्वनि कर रहे थे जिन्होंने कि उस महा भैरव स्वरूप वाले व्याघ्र को देख लिया था । वह वत्स सहित गौ भी उत्प्लवनकरके हंभारकव कर रही थी ।४६।

तस्या व्याघ्रभयार्तयायाः कपिलाया युधिष्ठिर ।
पलायंत्या शिलामध्ये क्षण खुरचतुष्टयम् ।५०
व्याघ्रवत्सकयोस्तत्र वदितं सुरकिन्नरै ।
दृश्यन्तेऽतीव सुव्यक्तं तदद्यापि चतुष्टयम् ।५१
सजलं शिवलिंगं च शम्भोस्तीभं तदुत्तमम् ।
यस्संपृशति राजेन्द्र स गोवध्यां व्यपोहति ।५२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तत्र स्नात्वा महातीर्थे जम्बुमार्गे नराधिपः ।
ब्रह्महत्यादिभिः पापैर्मुच्यते नात्र संशयः ।५३
ततस्ते मुनयः क्रुद्धां ब्रह्मादत्तां महास्वनाम् ।
जघ्नुर्घंटां सुरैर्दत्तां गिरिकन्वपुरणीम् ।५४
शब्देन तेन व्याघ्रोऽपि भुक्त्वा गावं सवत्सिकाम् ।
विप्रैस्तत्र कृतं नाम ढुन्धागिरिरित श्रुतिः ।
तं प्रपश्यति ये पार्थ ते रुद्रा नात्र संशयः ।५५
अक्ष पाणिस्त्रिपुरहा कामघ्ने वृषभे स्थितः ।
शूल पाणिस्त्रिपुरहां कामघ्ने वृषभे स्थितः ।५६

हे युधिष्ठिर ! व्याघ्र के भय से आर्त्त वह कपिला भाग रही थी तो एक क्षण में शिला के मध्य से उसके चारों खुर हो गए थे ।५०। वहाँ पर सुर और किन्नरों से व्याघ्र वत्सक की वन्दना की थी । वह आज भी चतुष्टय अतीव मुख्यक्त दिखलाई देता है ।५१। वह जल के शिवलिंग शम्भुका परमोत्तम तीर्थ है । हे राजेन्द्र ! जो भी कोई उसका संस्पर्श करता है वह गौवध का व्यपोहन कर दिया करता है ।५२।महा-तीर्थ में जम्बू मार्ग में हे नराधिप ! स्नान करके मनुष्य ब्रह्म-हत्यादि पापों से छुटकारा पा जाता है-इसमें लेश मात्र भी संशय नहीं है ।५३। इसके उपरान्तके मुनिगण अति क्रुद्ध होगये थे । और उन्होंने ब्रह्माकी दी हुई महान् ध्वनि वाले घन्टा को बजाया था । जो सुरोंके द्वारा दी हुई और गिरि की कन्दराओं मर कर देने वाली थीं ।५४। उस शब्द से वह व्याघ्र भी सवत्सा उस को छोड़ गया था । वहाँ पर विप्रों ने ढुन्ढा गिरि—यह नाम कर दिया था—ऐसी श्रुति है । हे पार्थ ! जो उसको देखते हैं वे रुद्र ही होते हैं-इस में संशय नहीं है ।५५। इसके अनन्तर श्रेष्ठ देव महेश्वर उनको प्रत्यक्ष हो गए थे । उनके हाथ में त्रिशूल था—त्रिपुर के हनन करने वाले तथा कामदेवको भस्म करने वाले वृषभ पर समारूढ़ थे ।५६।

उमासहायो वरदः सस्वामी सविनायकः ।
सनन्दिः समकालः सभृंगी समनोहरः ।५७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वीरभद्रा च चामुण्डा घण्टाकर्णादिभिर्वृता ।
मातृभिर्भूतसंघातैर्यक्षराक्षसगुह्यकैः ।
देवदानवगन्धर्वमुनिविद्याधरोरगैः ।५८
प्रणम्य देवदेवाय पत्नीभिः सहितैरुमा ।
गोरूपिणी सवत्सा च पूजिता ब्रह्मचारिभिः ।५९
कार्त्तिके शुक्लपक्षे तु द्वादश्यां नन्दिनीव्रतम् ।
ततः प्रभृति राजेन्द्र अवतीर्णं महीतले ।६०
उत्तानपादेन तथा व्रतं चीर्णमिदं श्रृणु ।
उत्तानपादनामासीत्क्षत्रियः पृथिवीपते ।६१
तस्य भार्याद्वयं चासीद्रु चिशुघ्नीति विश्रुतम् ।
शुघ्नोजातो ध्रुवः पुत्रो वामपादधरोऽलसः ।६२
रुच्याः समर्पितः शुन्ध्या ध्रुवोऽयं रक्ष्यतां सखि ।
अहं करिष्ये सुश्रुषां भर्त्तुस्तावत्सदा स्वयम् ।६३

वह वरद प्रभु उमा के साथ थे—स्वामी के रहित—विनायक से संयुक्त-नदी के साथ-समकाल—शृङ्गी सहित और समनोहर थे ।५७। वीरभद्रा चामुण्डा घण्टाकर्ण आदि से समावृत थी—मातृगण, भूत का संघात—यक्ष राक्षस और गुह्यकों के सहित थी एवं देव, दानव, गन्धर्व मुनि विद्याधर और उरगों के साथ थी अर्थात् इन सबसे समावृत था ।५८। देवों के देव के लिए प्रणाम करके पत्नियों सहित उमा देवी और ब्रह्मचारियों के द्वारा गौ रूप वाली वत्स के सहित पूजी गई थी ।५९। कार्त्तिक मास के शुक्ल पक्ष में द्वादशी तिथि के दिन यह नन्दिनी का व्रत होता है । हे राजेन्द्र ! तभी से लेकर यह महीतल में अवतीर्ण हुआ है ।६०। उत्तान पाद राजा ने इस व्रत को किस प्रकार से किया था इसका श्रवण करो । हे पृथिवीपते ! उत्तान पाद नाम वाला एक क्षत्रिय था ।६१। उस राजा की दो भार्याऐं थी । उन दोनों के रुचि और शुघ्नी ये दो नाम विश्रुत थे । शुघ्नी से समुत्पन्न ध्रुव पुत्र वाम-पाद धर असल था ।६२। शुघ्नी ने उसको समर्पित कर दिया था

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि हे सखि ! तू इस पुत्र की रक्षा करना । मैं तब तक सर्वदा स्वयं अपने स्वामी की सुश्रुषा करूँगी ।

रुची रसवती नित्यं प्रत्यहं कुरुते गृहे ।
अकरोद्भर्तृशुश्रुषां शुघ्ना नित्यं पतिव्रता ।६४
अदाचित्क्रोधमात्सर्यात्सापत्न्यं दर्शित तथा ।
स्वयं रुच्या निहत्यासौ शिशुः खण्डलशः कृतः ।६५
तापिकायां तथ स्थाल्यां पक्वसिद्ध सुसंस्कृतः ।
अन्नभोजनवेलायां ददाति नृपभजते ।६६
सं वै भक्षयितुं दुष्टा सामिषं भोजनं किल ।
अथ भोजनवेलायां वब्रे जीवितं माप्तवान् ।६७
तथैव प्रहसन्बालो मातुरुत्संगजोऽभवत् ।
तं दृष्ट्वा महदाश्चर्मं रुचो पप्रच्छ विस्मिता ।६८
किमेतदब्रूहि वृत्तांत कस्येयं व्युष्टिरुत्तमा ।
किं त्या चरितं किश्चिदव्रतं दत्तं हुतं तथा ।६९
सत्यंसत्यं पुनः सत्यं येन जीविति ते सुतः ।
मयायं सप्त वारांस्तु विशल्य शकली कृत ।७०

रुचि नित्य ही रस वाली थी और प्रतिदिन घर में ही आनन्द किया करती थी । पतिव्रता शुघ्नी नित्यस्वामी शुश्रूषा किया करती ।६४। किसी समय में क्रोध मात्सर्य से उसने सपत्नी होने का भाव दिखला दिया था और इसने स्वयं रुचि के शिशु को मारकर टुकड़े-टुकड़े कर दिये ।६५। फिर तापिका में तथा स्थाली में पका कर उसे सिद्ध किया था और भली-भाँति संस्कार युक्त दिया था । जिस समय में अन्न के भोजन का समय समुपस्थित हुआ था उस समय में नृप के पात्र में उसे दे दिया था। दुष्टा उसने उस आमिष से युक्त भोजन के समय में बोला था कि वह जीवित को प्राप्त हो गया था ।६७। उसी प्रकार से हँसता हुआ बालक माता के उत्सगज (गोद में जाने वाला) हो गया था । उसको देखकर महान् आश्चर्य हुआ और अत्यन्त विस्मित होते हुए रुचि ने पूछा था ।६८। यह क्या वृत्तान्त है ? इसे बतलाओ ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

यह किसकी उत्तम व्यष्टि है ? क्या तूने कुछ व्रत-हवन तथा दान किया है ? ।६६। सत्य और पुनः सत्य यही है जिससे तेरा पुत्र जीवित होता है । मैंने उसको सात बार विशल्य करके टुकड़े—२ किए थे ।७०।

पक्वः स्वयं कृतः स्थाल्यां व्यञ्जनै सह भोजनैः ।
परिविष्ममाणः स पुनः कयं जीविमाप्तवान् ।७१
किं ते सिद्धा महाविद्या मृतसंजीवनी शुभा ।
रत्नं मणिर्महारत्न योगाञ्जनमहौषधम् ।७२
कथयस्व महाभागे सत्यं सत्यं भगिन्यसि ।
एवमुक्ते रुचिस्तस्यै व्याचख्यौ वत्सगोव्रतम् ।७३
कार्तिके चैव द्वाद्रश्या यथा चानुष्ठितं पुरा
व्रतस्यास्या प्रभावेण पुनर्जीवति मे सुतः ।७४
वत्सो मे वत्सेवलयाँ मृतोऽर्थ लभते पुनः ।
समागमश्च भवति व्रतैः प्रविसितैरपि ।७५
यथार्थमेतद्व्याख्यातं ते च गोद्वादशींव्रतम् ।
तवापि रुचि तत्सर्वं भविष्यति शुभं प्रियम् ।७६
एवमुक्तं व्रतचीर्णं रुच्यीं पुत्रः निसुखं धनम् ।
सम्प्राप्ता जीवितांते च ध्रुवस्थाने निवेशिताः ।७७
ब्रह्मणा सृष्टिकारेण रुचिभर्त्री सहासिता ।
दशनक्षत्रसंयुक्तोः ध्रुवः सोद्यापि दृश्यते ।
ध्रुवक्षे च यदा दृष्टे लोकः पापैः प्रमुच्यते ।७८

मैंने इसका स्वयं ही पाक किया था और स्थाली में व्यञ्जनों के साथ इसका परिवेष किया गया है वह कैसे जीवन को प्राप्त हो गया है ।७१। क्या आपको कोई महाविद्या या मृत संजीवनी सिद्ध है ? रत्न-मणि या कोई महारत्न तथा योगीजन एवं महोषधि है ? ।७२। हे महाभागे ! सत्त सत्य कहो आप मेरी भगिनी है । इस प्रकार से कहने पर रुचि को उसने वत्स गो व्रत बतलाया था ।७३। कार्तिक मास में द्वादशी तिथि को पहिले मैंने इसका समाचरण किया था । इस व्रत के प्रमाव से मेरा पुत्रपुनः जीवित हो गया है ।७४। वत्स बोला मैं मेरा मृत

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वत्स पुनः अर्थ को प्राप्त करता है व्रतों से जो प्रवासित होते हैं उनका भी समागमन हो जाता है ।७५। मैंने तुमको यह विल्कुल यथार्थ गो द्वादशी व्रत की व्याख्या करदी है । तेरी भी रुचि हो तो सब प्रिय और शुभ हो जायेगा ।७६। इस प्रकार से कहे हुए व्रत को चीर्ण किया गया था और रुचि को पुत्र—सुख धन सब प्राप्त हुए थे तथा जीवित के अन्त होने पर ध्रुव स्थान में निवेशित हुए थे ।७७। नक्षत्र से संयुत ध्रुव आज भी दिखलाई देता ही है और ध्रुव नक्षत्र के देख लेने पर लोक पापों से प्रमुक्त हो जाया करता है ।७८।

क्रीदृश तद्विधानं च तन्मे ब्रूहि जनार्दन ।
यत्कृत शुघ्निवचनाद्रुच्या यदुलोद्भव ।७९
संप्राप्ते कार्तिके मासि शुक्लपक्षे कुरुतम् ।
द्वादश्यां कृतसंकल्प स्नात्वा पुण्य जलाशये ।
नरो वा यदि वा नारी एकभुक्तं प्रकल्पयेत् ।८०
ततो मध्यानह्समये दृष्ठ्वा धेनुं सवत्सिकाम् ।
सुशीलां वन्सलां श्वेता कपिलां रक्तारूपिणीम् ।८१
ब्राह्मणक्षत्रियविशां शूद्राणां स्त्रीजनेश्वरः ।
यथाक्रमेण पूज्यैनां गन्धपुष्पजलाक्षतः ।८२
कुंकुमालक्तकैर्दीपैर्माषान्नवटकैः शुभः ।
कुसुमैर्वत्सकं चापि मंत्रणानेन पाण्डव ।८३
ॐ मात। रुद्राणां दुहिता वसूनाम
स्वसादिष्यनाममृतस्यनाभिः ।
प्रनुवोच चिकितुषे जनाय मा
गामनागाममदिति वधिष्ट नमो नमः ।८४

युधिष्ठिर ने कहा-हे जनार्दन ! वह विधान किस प्रकार का है उसे ही मुझे बतलायें । हे यदुकुलोद्भव ! शुघ्नि के वचन से रुचि ने जिस को किया था ।७९। भगवान श्री कृष्ण ने कहा—हे कुरूत्तम ! कार्तिक मास के समाप्त होने पर शुक्ल पक्ष में द्वादशी तिथि में किस परम पुण्यमय जलाशय में स्नान करके संकल्प करना चाहिए। नर हो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

अथवा नरी हो एक वक्त भोजन करे ।८०। इसके अनन्तर मध्याह्न समय में वत्स के महित धेनु का दर्शन करे। वह धेनु अति सुशीला—वत्सला-श्वेत वर्ण वाली कपिला या रक्त रूप वाली होनी चाहिए ।८१। हे जनेश्वर ! ब्राह्मण-क्षत्रिय वैश्य और शूद्रों की यथाक्रम से गन्ध पुष्प-जल और अक्षतों के द्वारा इसका पूजन करे ।८२। हे पाण्डव!पूजन में कुंकुम-अलक्तक-दीपष्टमाषान्नवटक (उर्द के वटक) और परम शुभ कुसुमों से वत्स का भी इस मन्त्र से अर्चन करना चाहिए ।८३। मन्त्र यह है—अर्थात् जो रुद्रों की माता वसुगण की दुहिता-आदित्यों की स्वसा अमृत को नाभि-करने की इच्छा वाले सेवक मुझको बोल दे। गौं अनाग अदिति का वर्धन कर। आपको बारम्बार नमस्कार है तुम्हारे लिए समर्पित है ।८४।

इत्थं सम्पूज्य गां पृष्ट्वा पश्चातां च क्षमापयेत् ।
ॐ सर्वदेवमये देवि लोकानां शुभनन्दिनि ।
मातर्ममाभिलंषितं सफल कुरु नन्दिनी ।८५
एवतम्यर्चयेदिकां गामेतद्धि गवाह्निकम् ।
पर्युक्ष्य वारि भक्त्या प्रणम्य सुरभी ततः ।८६
तद्दिने तापिकापक्वं स्थालीपाकं च वर्जयेत् ।
भूमौ स्वयं ब्रह्मचारी शयीत फलमाप्नुयात् ।८७
यावति गात्रे रोमणि गवां कौरवनन्दन ।
तावत्कालं स वसति गोलोकं नात्र संशयः ।८८
मेरोः पुयुष्टक रम्यभिद्राग्नियमरत्नसाम् ।
वरेणा निलयक्षणां रुद्रस्य च युधिष्ठिर ।
तासामुपरि रोलोकस्तत्र यास गोव्रती ।८९
ऊर्जे सिते द्विदशतेऽहनि गां सवत्सां
याः पूजयन्ति कुसुमैर्वटकेश्च हृद्यैः ।
ताः सर्वकामसुखभोगविभुगविभूतिभाजो ।
मर्त्ये बसति सुचिरं बहुजीववत्सा ।९०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार से भली भाँति पूजन करके गौ को पूजकर पीछे उससे क्षमापन करना चाहिए । ॐ सर्व देवों से परिपूर्ण देवी! आप लोगों की परम शुभ नन्दिनी हो । हे नन्दिनी ! मेरे अभिलषित मनोरथ का फल करिये ।८५। इस तरह से एक गौ का अभ्यर्चन कर इस गवाह्निक को भक्ति की भावना से जल के द्वारा पर्युक्षण करके फिर सुरभी को प्रणाम करना चाहिए ।८६। उस दिन में तापिका पाक और स्थाली पाक का भर्जन कर देवे । भूमि पर ब्रह्मचर्य व्रत के नियम से रहते हुए शयन करे तो पुण्य को प्राप्त कर लेता है ।८७। हे कौरव नन्दन ! गौओं के गात्र में जितने भी रोम होते हैं तब तक गोलोक मे निवास किया करता है इसमें तनिक भी संशय नही है ।८८। मेरु के ऊपर इन्द्र अग्नि-यम-राक्षसों का अमरपुर है। हे युधिष्ठिर ! वरुण यक्ष और रुद्रों के निलय हैं—इन सब के ऊपर गोलोक है वहीं पर वह गौ व्रत करने वाला पुरुष जाया करता हैं ।८९। ऊर्ज में सित पक्ष में द्वादशी के दिन में जो नारियाँ संवत्सा गौ का कुसुम और शुभ भटकों से पूजन किया करती हैं वे समस्त कामना-सुख भोग और विभूतियों को प्राप्त कर मर्त्यलोक में बहुत से जीव वत्स वाली चिरकाल पर्यन्त निवास किया करती हैं ।९०।

—※—

भीष्मपंचक व्रत माहात्म्य

यदेतमतुल पुण्यं व्रतानासुसमं व्रतम् ।
कर्तव्यं कार्त्तिके मासि प्रयत्नाद्भीष्मपञ्चकम् ।१
विधानं कीदृश तस्य फलं च यदुसत्तम ।
कथयस्व प्रसादान्मे मुनीनां हितमिच्छताम् ।२
प्रवक्ष्यामि व्रत पुण्यं व्रतानामुत्तमं व्रतम् ।
यथाविधि च कर्तव्यफलं चास्य यथोदितम् ।३
मयापि भृगवे प्रोक्तं भृगुश्चोशनसे ददौ ।
उशनपि हि विप्रेभ्यः प्रह्लादाय च धीमते ।४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेजस्विनायथा वह्निः पवनः शीघ्रगामिनाम् ।
विप्रो यथा च पूज्यानां दानानां काश्चनं यथा ।५
भूर्लोकः सर्वलोकानां तीर्थानां जाह्नवी यथा ।
यथाश्वमेधो यज्ञानां मथुरा मुक्तिकांक्षिणाम् ।६

युधिष्ठिर ने कहा—जो यह अनुपम पुण्य पूर्णा समस्त अन्य व्रतों में उत्तम व्रत भीष्म पञ्चक व्रत होता है जो कि कार्तिक मास में प्रयत्न पूर्वक करना चाहिए ।१। उस व्रत का किस तरह का विधान है ? हे यदूत्तम ! उसका क्या फल हुआ करता है ? आप कृपाकर मुझे बतलाइये क्या यह मुनियों का जो इच्छा रखते हैं परम हित प्रद है ? ।२। श्री कृष्ण ने कहा—यह वस्तुतः सब व्रतों में एक उत्तम व्रत है और पुण्य व्रत है इसको मैं बतलाता हूँ। जिस विधि से इस व्रत को करना चाहिए और जो इसका फल कहा गया ।३। मैंने इस व्रत को भृगु से कहा था और भृगु ने इसे उशना को दिया था। फिर उशना ने भी विप्रों को तथा श्रीमान् प्रह्लाद को दिया था ।४। तेजस्वियों की तरह अग्नि महा तेज से युक्त होता है-शीघ्र गामियों में वायु है-पूज्यवर्ग में विप्र दोनों में कंचन-समस्त लोकों में भूलोक-तीर्थों में गंगा-यज्ञों में अश्वमेध मुक्ति की आकाङ्क्षा वालों के लिए मथुरा-शास्त्रों में वेद और सब देवों में जिस प्रकार से भगवान अच्युत ही सर्वोत्तम देव हैं उसी भाँति अन्य समस्त व्रतों में सर्व श्रेष्ठ व्रत यह भीष्म पञ्चक व्रत होता है ।५-६।

वेदो यथैव शास्त्राणां देवानामच्युतो यथा ।
तथा सर्वव्रतानां तु वरोक्तं भीष्मपञ्चकम् ।७
दुष्करं भीष्ममित्याहुर्न शक्यं तदिहोच्यते ।
यस्तत्करोति राजेन्द्र नेन सर्वं कृत भवेत् ।८
बसिष्ठभृगुभर्गाद्यैर्णं कृतयुगादिष ।
नाभागांबरीषाद्यैश्चीर्णं त्रेतायुगादिषु ।९
सीरद्राभिदर्वैश्यै कलौ युगे ।
दिनानि पंच पूज्यानि चीर्णंतन्महाव्रतम् ।१०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्राह्मणैर्ब्रह्मचर्येण जपहोमक्रियादिभिः ।
क्षत्रियैश्च तथा शक्त्या शौचव्रतपरायणैः ।११
पराधिः परिहर्तव्यो ब्रह्मचर्येण निष्ठया ।
मद्यं मांस परित्यज्यैं मैथुनं पापभाषणम् ।१२
शाकाहारैश्चैव कृष्णार्चनपरैं नरैः ।
स्त्रीभिर्वा भतृवाक्येन कर्तव्य सुखवर्द्धनम् ।१३
विधवाभिश्च कर्तव्यं पुत्रापौत्रादिवृद्धिये ।
सर्वकामसमृद्धचर्थ मोक्षार्थमपि पाण्डव ।१४

यह व्रत दुष्कर व्रत है इसी कारण से इसको भीष्म कहा जाता है । यहाँ पर यही कहा जाता है कि वह किया नहीं जा सकता है । हे राजेन्द्र ! जो भी कोई उसे कर लेता है उसने सभी कुछ कर लिया है ऐसा ही मान लेना चाहिए ।८। कृतयुग आदि में इस व्रत को वसिष्ठ भृगु और गर्ग आदि ने किया था । फिर त्रेता आदि युगों में नाभाग और अम्बरीष आदि ने इस व्रत को किया था ।९। सौरभद्र आदि वैश्यों ने अन्य शूद्रों ने कलियुग में इस व्रत को किया है । ये पाँच दिन पूज्य होते हैं । जिनमें यह महाव्रत-चीर्ण होता है ।१०। ब्राह्मणों के द्वारा ब्रह्मचर्य नियमों का पालन करते हुए जप-होम और शौच व्रत के द्वारा इस व्रत को करना चाहिए । क्षत्रियों को शक्ति शौच व्रत में परायण होते हुए इसको करना चाहिए ।११। दूसरों की मन की व्यथा का हरण करना चाहिए—ब्रह्मचर्य के नियमों का पालन और पूर्ण निष्ठा से करना चाहिए । मद्य-मांस-मैथुन-पाप-भाषण का परित्याग कर देवें ।१२। केवल शाक का आहार करे और श्रीकृष्ण के अर्चन में तत्पर रहे इस प्रकार पुरुषों को वह करना चाहिए । स्त्रियों को अपने स्वामी के वाक्य से इस सुख के वर्द्धन करके व्रत को करना चाहिए ।१३। पुत्र पौत्रादि की वृद्धि के लिए विधवा स्त्रियों को इसके करने का विधान है । हे ! पाण्डव ! समस्त कामनाओं की समृद्धि के लिए और मोक्ष की प्राप्ति के लिए भी इस महा व्रत को करे ।१४।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नित्यं स्नानेन दानेन कार्तिकी यावदेव तु ।
प्रातः स्नात्वा विधानेन मध्याह्ने च तथा व्रती ।१५
नद्यां निर्झरगर्ते वा समालभ्य च गोमयम् ।
यवव्रीहितिलैः सम्यक्तर्पयेच्च प्रयत्नतः ।१६
देवानृषीन्पितॄंश्चैव ततोन्यान्कामचारिणः ।
स्नानं मौनं नरः कृत्वा धौतवासा दृढव्रतः ।१७
ततोऽनुपूज्येत्देवं सर्वपापहरं हरिम् ।
स्नापयेच्चाच्युतं भक्त्या मधुक्षीरघृतेन च ।१८
तत्रैव पञ्चगव्येन गन्धचन्दनवारिणा ।
चन्दनेन सुगंधेन कुंकुमेनाथ केशवम् ।१९
कर्पूरोशीरमिश्रेण लेपयेद्गरुडध्वजम् ।
गुग्गुलं घृतसंयुक्तं देहत्कृष्णाय भक्तितः ।२०
दीपकं चदिवौ रात्रौ दद्यात्पञ्चदिना तु ।२१

जब तक कार्तिकी पूर्णिमा हो तब तक नित्य ही स्नान और दान करे । विधान पूर्वक प्रातः काल में स्नान करे तथा व्रत का ग्रहण करके पुरुष को मध्याह्न में भी स्नान करना चाहिए ।१५। नदियाँ हो या कोई निर्झर गर्त हो गोमय का समालिंगन करे तथा यव-व्रीहि और तिलों से प्रयत्न पूर्वक भली-भाँति तर्पण करना चाहिए ।१६। देवों का ऋषियों का और पितृगण का तर्पण करे । स्नान करके मौन-व्रत धारण करे-धुले हुए शुद्ध वस्त्रों को धारण करके और दृढ़ व्रत वाला रहे ।१७। इसके उपरान्त फिर सम्पूर्ण पापों के हरण करने वाले देव भगवान हरि का पूजन करना चाहिए । भक्ति की भावना से मधुक्षीर और घृत से अच्युत का स्नपन करना चाहिए ।१८। वहीं पर पञ्चगव्य से गन्ध एवं चन्दन से युक्त जल से चन्दन सुगन्ध और कुंकुम से केशव प्रभु का यजनार्चन करे ।१९। कर्पूर और उशीर से मिश्रित चन्दन से गरुड़ध्वज प्रभु के अङ्गों से लेपन करना चाहिए । गन्ध-धूप से समार्चित पुष्पों के द्वारा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जो कि अति रुधिर ही अर्चन करे ।२०। घृत से संयुक्त गूगल का भक्ति-भाव पूर्वक भगवान कृष्ण के लिए दान करना चाहिए। दिन में और रात्रि में पाँच दिन पर्यंत दीपकों को दान करे ।२१।

नैवेद्य देवदेवस्य परमान्नं निवेदयेत् ।
ॐ नमो वासुदेवायेति जपेदष्टोत्तरं शतम् ।२२
जुहुयाच्च घृताक्तांश्च तिलव्रीहींस्ततो व्रती ।
षडक्षरेण मन्त्रेण स्वाहाकारान्वितेन च ।२३
उपास्य पश्चिमां संध्यां प्रणम्य गरुडध्वजम् ।
जपित्वा पूर्ववन्मन्त्रं क्षितिशायी व्रतेश्वरः ।२४
सर्वमेतद्विधानं च कार्यं पंचदिनेषु हि ।
[illegible] सान्निध्यपूर्वं शृणुष्व मे ।२५
प्रथमेऽह्नि हरेः पादौ पूजयेत्कमलैर्नरः ।
द्वितीये बिल्वपत्रेण जानुदेशं समर्चयेत् ।२६
पूजयेच्च तृतीयेऽह्नि नाभिं भृंगरसेन च ।
मध्ये विल्वजयाभिश्च ततः स्कंधौ प्रपूजयेत् ।२७
ततोऽनुपूजयेच्छीर्षं मालत्या कुसुमैर्नवैः ।
कार्तिक्यां देवदेवस्य भक्त्या तद्गतमानसः ।२८

परमान्न नैवेद्यों का देवों के देव प्रभु की सेवा में समर्पित करे फिर ॐ नमो वासुदेवाय 'इस मन्त्र का अष्टोत्तर शत जाप करे ।२२। व्रत-धारी पुरुष को फिर घृत से [illegible] तिल और व्रीहियों का 'स्वाहा' लगाकर 'ॐ नमो वासुदेवाय' इस छै अक्षरों वाले मन्त्र से हवन करना चाहिए ।२३। पश्चिम संध्या की उपासना करके गरुडध्वज प्रभु को प्रणाम करे और पूर्व की भाँति मन्त्र का जाप करके व्रती मनुष्य को भूमि पर ही शयन करने वाला होना चाहिए ।२४। यह सम्पूर्ण विधान पाँच दिनों में करना चाहिए। इसमें [illegible] पर [illegible] । इसमें जो अपूर्व है। उसका [illegible] श्रवण करो ।२५। मनुष्यों को प्रथम दिन में कमलों के द्वारा हरि के चरणों का पूजन करना चाहिए। दूसरे दिन [illegible] पत्रों के द्वारा भगवान् के जानु भागों का अर्चन करना चाहिए।२६।
CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तीसरे दिन में भगवान के नाभि देश में भृंग रस से पूजन करना चाहिए। मध्य में विल्व जया में करे और सन्धि में पूजन करना चाहिए।२७। इसके अनन्तर मालती लता के नवीन कुसुमों से भगवान के शीर्ष का पूजन करे। कार्तिकी में देव का पूजन भक्ति भाव में तद्-गत मन वाला होकर ही करे।२८।

अर्चयित्वा हृषीकेशमेकद्वश्यां समाहितः।
सम्प्राश्य गोमय सम्यङ्मंत्रवत्समुपावसेत् ।२६
गोमूत्रः मंत्रवत्कृत्वा द्वादश्यां दाशयेदप्रती।
क्षीरं त्रयोदश्यां चतुर्दश्यां तथा दधि ।३०
सम्प्राश्य कायशुद्धयर्थं लङ्घयेत् चतुर्दिनम्।
पञ्चमे तु दिने स्नात्वा विधित्पूज्य केशवम् ।३१
भोजयेदब्राह्मणान्भक्त्या तेभ्यो दद्याच्च दक्षिणाम्।
तथोपदेष्टरमपि पूजयेद्वस्त्रभूषभूषणेः ।३२
ततो नक्तं समश्नीयास्पञ्चगव्यपुरः सरम्।
एवं समापयेत्सम्यग्यथोक्तं व्रतमुत्तमम् ।३३
सर्वंपापहरं पुण्यं प्रख्यात भीष्मपञ्चकम्।
मद्यपो यस्त्यजैन्मद्यं जन्मनो मरणातिकम् ।३४
तदभीष्म पञ्चकत्यक्त्वा प्राप्नोत्यभ्यधिकफलम्।
ब्रह्मचर्यं नरश्चीर्त्वा सुधोर नष्ठिक व्रतम् ।३५

एकादशी तिथि में पूर्णतया समाहित होकर हृषीकेश भगवान का अर्चन करे और गोमय का सम्प्राशन करके मन्त्रवत् करके अच्छी तरह से उपवास करे।२६। फिर ब्रह्मचारी पुरुष को द्वादशी तिथि में गोमूत्र को मन्त्रवाला करके उसका ही प्राशन करना चाहिए।२६। उसी भाँति त्रयोदशी में क्षीर को अभिमन्त्रित करे और चतुर्दशी में दधि को अभि-मन्त्र करके अशन करना चाहिए।७०। अपने शरीर की शुद्धि के लिये उक्त रूप से सम्प्राशन करके चार दिन पर्यन्त लंघन करे। पाँचवे दिन में स्नान करके विधिपूर्वक केशव भगवान का पूजन करना चाहिए।३१। ब्राह्मणों को भक्तिभाव से भोजन करावे और उनको दक्षिणा देनी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

चाहिए। तथा जो इसका उपदेश देने वाला हो उसका भी वस्त्र-भूषणों Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
से पूजन करे।३२। इसके अन्तर रात्रि में पञ्च गव्य पूर्वक अशन करना चाहिए। इस प्रकार से यथोक्त इस अत्युत्तमस व्रत को भली भाँति समाप्त करना चाहिए ।३३। यह भीष्मपञ्चक सम्पूर्ण पापों के हरण करने वाला है और परम पुण्यमय विख्यात हैं। जो मद्यपान करने वाला हो ऐसे जन्म मरण तक मद्य का त्याग कर देना चाहिए ।३४। इसका त्याग करके उस भीष्मपञ्चक से अधिक फल की प्राप्ति होती है। मनुष्य को ब्रह्मचर्य का चीर्ण करके इस सुधीर नैष्ठिक व्रत को करना चाहिए।३५।

यत्प्राप्नोति महत्पुण्यतस्कृत्वा भीष्मपञ्चकम् ।
गात्राभ्यग शिरोऽम्यं मधु मासं च मैथुनम् ।३६
ब्रह्मलोकमवाप्नोति त्यत्वैकं भीष्मपञ्चकम् ।
संवत्सरे यत्पुण्यं कार्तिकेन च यदभवेत् ।३७
यत्फलं कार्तिकनोक्तं भवेतत्तदमीष्मपञ्चकं ।
व्रतमेतत्सुरैः सिद्धः किन्नरैनगिगह्यकैः ।३८
फलं समोहित प्राप्य कृत्वाभ्यर्च्यं जनार्दनम् ।
पापस्य प्रतिमा कार्या रोद्रवद्रातिभीषणा ।३९
खङ्गहस्तातिविकृता सर्वलोकमयी नृप ।
तिलप्रस्थोपरि-स्थाप्या कृष्णवस्त्राभिवेष्टिता ।४०
करवीरकुसुमापीडा चलत्कांचनकुण्डला ।
ब्राह्मणाय प्रदातव्या कृष्णा मे प्रीयतामिति ।४१
अन्येषामपि दातव्यं यत्कृत्वा वसु वांछितम् ।
कृतकृत्यैः स्थिरो भूत्वा विरक्तः संयतो भवेत् ।४२

गात्रों का अभ्यंग—शिर का अभ्यंग—मद्य—मांस और मैथुन का त्याग करके जो महान पुण्य प्राप्त होता है वही इस भीष्म पञ्चक व्रत के करने से होता है।६३। एक भीष्म पञ्चक का त्याग करके ब्रह्म लोक को प्राप्त होता है। सम्वत्सर में पुण्य होता है और कार्तिक मास में जो पुण्य होता है जो फल कार्तिक में बताया गया है वह भीष्म पञ्चक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
में होता है। सुरों के द्वारा सिद्धों के द्वारा किन्नर और नाग एवं गुह्यकों के द्वारा किया हुआ व्रत है। समीहित फल को प्राप्त करके जनार्दन का अभ्यर्चन करे। एक पाप की प्रतिमा बनवानी चाहिए जो अत्यन्त रौद्र—तथा अत्यन्त भीषण हो।६७-६९। उस प्रतिमा के हाथ में खड्ग होवे और अत्यन्त विकृत तथा सर्व लोकभयी होनी चाहिए। उसको एक प्रस्थ तिलों के ऊपर स्थापन करे और कृष्ण वस्त्र से वेष्ठित होनी चाहिए।४०। उसका आपीड़ करवीर के पुष्पों का होवे। चायमान की वचन के कुण्डल धारण करने वाली होवे। उस प्रतिमा को किस ब्राह्मण को दान कर देना चाहिए और दान के समय में भगवान कृष्ण मुझ पर प्रसन्न होवे यह कहना चाहिए।४१। अन्य लोगों को भी दान देना चाहिए जिसकी जो भी धन व पदार्थ वाञ्छित हो फिर कृत कृत्य होकर स्थिर होवे तथा विरक्त एवं संयत होना चाहिए।४२।

शांत चेता निराबाध परं पद्‌मवाप्नुयात्।
नीलोत्पलदलश्यामश्चतुर्दंष्ट्रश्चतुर्भुजः।४३
अष्टषष्ठैकनयनः शंकुकर्णो महास्वनः।
जटी द्विजिह्वस्ताम्रस्यो मृगराजतनुच्छदः।४४
चिन्तनीयो महादेवो यश्य रूपं न विद्यते।
इदं भीष्मेण कथित शरतल्पगतेन मे।४५
तदेव ते समाख्यातं दुष्कर भीष्मपंचकम्।
व्रतं च रामशार्दूल प्रवर भीष्मपञ्चकम्।४६
यस्तस्मितोषयेदभक्त्या तस्मै मुक्तिप्रदोऽच्युत।
ब्रह्मचारी गृहस्थो वा वानप्रस्थोऽथवा मतिः।४७
प्राप्नोति वैष्णव स्थानं सत्कृत्वा भीष्मपञ्चकम्।
ब्रह्महा मद्यपः स्तेयो गरुगामी सदाकृती।४८

शान्त चित्त वाला तथा बाधा के रहित परम हर्ष को प्राप्त किया करता है। नील उत्पल के समान श्याम वर्णमाला चार दंष्ट्राओं (दण्डों) वाले और चार भुजाओं से युक्त।४३। आठ षष्ठ एक नयन वाला—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शंकु कर्ण और महान ध्वनि से युक्त—जटाधारी—दो जिह्वाओं वाला—तामस्थ—मृगराज सिंह के चर्म से अर्थात् बाघम्बर से शरीर का छेदन करने वाला ।४४। ऐसे महादेव का चिन्तन करना चाहिए जिसका कि कोई भी रूप नहीं होता है। यह पितामह भीष्म ने मुझसे कहा था जिस समय में वे शरों की शय्या पर संस्थित थे ।४५। यह ही यह दुष्कर भीष्म पंचक व्रत मैंने तुमको बतला दिया है। हे राजाओं में शार्दूल के तुल्य! व्रत भीष्म पञ्चक प्रवर व्रत होता है ।४६। जो कोई पुरुष उस में भक्ति की भावना से भगवान अच्युत को परम तुष्ट कर लेना है उस को वे निश्चय मुक्ति का प्रदान कर दिया करते हैं चाहे कोई ब्रह्मचारी हो—गृहस्थ हो—वानप्रस्थाश्रमी हो या यति हो ।४७। भीष्म पंचक को भली भाँति कर करके फिर [illegible] करता है। ब्रह्म हत्यारा—मद्यपान [illegible] गामी और सदाकृती पापों से मुक्त हो जाया करता है ।४८।

*

अनन्तचतुर्दशी व्रत माहात्म्य

अनन्तव्रतमस्त्यन्यत्सर्वपापहरं शिवम् ।
सर्वकामप्रदं नृणां स्त्रीणां चैव युधिष्ठिर: ।१
शुक्लपक्षे चतुर्दश्यां मा स.भाद्रपदे शुभे ।
तस्यानुष्ठानमात्रेण सर्वपाप प्रमुच्यते ।२
कृष्ण कोऽयं त्वयाख्यातो ह्यनंत इति विश्रुत: ।
किं शेषनाग आहोस्विदनतस्तक्षक: स्मृत: ।३
परमात्माथ वानंत उताहो ब्रह्म उच्यते ।
क एषोऽनतसंज्ञो वै तथ्य ब्रूहि केशव ।४
अनन्त इत्यसं पार्थ मम नाम निबोधय ।
आदित्यादिषु वारेषु य: काल उपपद्यते ।५
कलाकाष्ठा मुहुर्यादिदिनरात्रिशरीरवान्
पक्षमासर्तु वर्षादियुगकल्पव्यवस्थाया ।६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री कृष्ण ने कहा–एक दूसरा अनन्त व्रत है जो सब पापों के हरण करने वाला और परम शिव व्रत है हे युधिष्ठिर ! यह व्रत मनुष्यों को और स्त्रियों को समस्त कामनाओं के प्रदान करने वाला होता है ।१। भाद्रपद मास में शुक्ल पक्ष में परम शुभ चतुर्दशी तिथि में उसके अनुष्ठान करने भर से मनुष्य समस्त पापों से मुक्त हो जाया करता है। ।२। युधिष्ठिर ने कहा–हे श्री कृष्ण ! यह कौन सा व्रत है जो आपने अभी बतलाया है तथा अनन्त इस नाम से प्रसिद्ध है ? ।३। अथवा यह नाग है अथवा अनन्त नाम से तक्षक कहा गया है ? क्या यह शेष अनन्त परमात्मा हैं किम्बा ब्रह्मा को भी अनन्त नाम से कहा जाता है यह अनन्त संज्ञा वाला कौन है ? हे केशव ! इसमें जो भी तथ्य हो उसे ही आप मुझे कृपया बतला दीजिए ।४। श्री कृष्ण ने कहा—हे पार्थ ! यह अनन्त मैं ही हूँ और यह मेरा ही नाम आप समझ लो । आदित्य और वारों में जो काल उत्पन्न होता है ।५। जो कला-काष्ठा-मुहूर्त्त से आदि लेकर दिन और रात्रि के शरीर वाला है तथा पक्ष-मास ऋतु-वर्ष प्रभृति युग एव कल्प की व्यवस्था से यह काल स्थित माना जाता है ।५-६।

योऽयं कालोमयाख्यातस्तव धर्मभृतां वर ।
सोऽहं कलोऽवतीर्णोऽत्र भुवो भारावतारणात् ।७
एव समस्तं विस्तार्यव्र ह्यनंतव्रतं हरे ।
आसीत्पुरा कृतयुगे सुमती नाम वै द्विजः ।८
वसिष्ठगोत्रे चोत्पन्नः सुरूश्च भृगोः सुताम् ।
दीक्षां नामोपयेमे तां वेदोक्तविधिना ततः ।९
तस्याः कालेत सजाता दुहितान्नतलक्षणा ।
शीला नाम सुशीला सा वधते पितृसद्मनि ।१०
माता च तस्याः कालेन ह्रदाहेन पीडिता ।
विननाश नदीतीरे सृता स्वर्गपुरं ययौ ।११
सुमतोऽपि ततोन्यां व धर्मपुंस सुतां पुनः ।
उपयेमे विधानेन कर्कशां नाम नामः ।१२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हे धर्म धारियों में श्रेष्ठ ! जो यह काल मैंने आपको बतलाया है वह मैं काल यहाँ पर भूमि के भार उतारने के लिए अवतीर्ण हुआ हूँ ।३। युधिष्ठिर बोले—हे हरे इस प्रकार से इससे पूर्ण अनन्त के व्रत को विस्तार के साथ मुझे बतलाइये । श्रीकृष्ण ने कहा—पहले कृतयुग से सुमन्त नाम वाला एक द्विज था ।८। वह वसिष्ठ गोत्र में समुत्पन्न हुआ था और यह बहुत ही सुन्दर रूप वाला था । इसने भृगु की दीक्षा नाम वाली पुत्री के साथ अपना विवाह किया था । जो कि वेदोक्त विधि से ही किया गया था ।९। समय उपस्थित होने पर उसके अनन्त लक्षणों से सम्पन्न कन्या पैदा हुई थी । उसका नाम तो शीला था किन्तु वह थी बहुत सुशील और वह पिता के घर में वृद्धि को प्राप्त होने लगी थी ।१०। उसकी माता हरदाह काल से पीड़ित होकर एक नदी के तीर में विनाश को प्राप्त हो गई थी और मृग होकर स्वर्ग को चली गई थी ।११। सुमन्त ने भी फिर एक अन्य धर्म प्रदान की पुत्री के साथ विवाह विधान से ही कर लिया था । उसका नाम भी कर्कशा और वैसे भी पूर्ण कर्कशा ही थी ।१२।

दुःशीलां कर्कशा चण्डी नित्य कलहकारिणीम् ।
सोऽपि शीला पितुर्गेहे गृहार्चनिरता विभो ।१३
कुडयस्तभतुलाधारदेहलीतोरणादिषु ।
चातुर्वणकरं वैश्यनीलपीतसितासितैः १४
स्वस्तिकैः शंखपद्मश्च अर्चयन्ती पुनः पुनः ।
पित्रा हृष्टा सुमन्तेन स्त्रीचिह्ना यावने स्थिता ।१५
कस्मै देयामया शीला विचार्यैवसुदुःखितः ।
पिता ददौ मुनीन्द्राय कौडिन्ताय शुभे दिने ।१६
स्मृत्युक्तशास्त्रविधिना विवाहमकरोत्तदा ।
निवर्त्यो द्वाहिकं सर्वं प्रोक्तवान्कर्कशां द्विजः ।१७

यह बहुत ही बुरे स्वभाव वाली कर्कशा चण्डी और नित्य ही कलह के करने वाली थी । वह शीला भी हे विभो ! पिता के घर में अर्चन में रत रहा करती थी ।१३। कुड़व-स्तम्भ-तुलाधार-देहली और तोरण

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि में वैश्य नीलासित और असित वर्णों से चातुर्वर्ण कर तथा स्वास्तिक और शंख पद्मों से बारम्बार अर्चन किया करती थी। सुमन्त ने उसको एक बार देखा था, उसके पूर्ण यौवन में स्थित स्त्री के समस्त चिह्न विद्यमान हो गये हैं ।१४-१५। वह शीला कन्या अब मैं किसको दूँ—ऐसा विचार करके परम दुःखित हो गया था। फिर पिता ने किसी शुभ दिन में मुनीन्द्र कौन्डिन्य के लिए उसका दान कर दिया था ।१६। उस समय में स्मृतियों में बताए हुए शास्त्र की विधि-विधान से उसका विवाह कर दिया था। उव्दाहिक सब कृत्य से निवृत्त होकर फिर द्विज ने अपनी पत्नी कर्कशा से कहा था ।१७।

किञ्चिदायादिकं देय जामातुः पापतोषिकम् ।
तच्छ्रुत्वा कर्कशा क्रुद्धा प्रोद्धूल्य गृहमण्डपम् ।१८
कपाटे सुस्थिरं कृत्वा गम्यतामित्युवाच ह ।
भोज्य वसिष्ठचूर्णेन पाथेय च चकार सा ।१९
कौन्डिन्योऽपि विवाहेन सार्धं गन्तुमना शनैः ।
शीलां सुशीलामादाय अयोक्ता गोरथेन हि ।२०
मध्याह्ने भोज्यवेलायां समुत्तीर्य सरित्तटे ।
ददर्श शीला सा स्त्रीणां समूहं रक्तवाससाम् ।२१
चतुर्दश्यामर्चयन्तीं भक्त्या देवं पृथक्पृथक् ।
उपगम्य शनैः शीला पप्रच्छ स्त्रीकदम्बकम् ।२२
नार्यः किमेतद्भो ब्रूत किंनाम व्रतमीदृशम् ।
ता ऊचुर्योषितः सर्वा अनन्तो नाम विश्रुतः ।२३
साब्रवीदहमप्येवं करिष्ये व्रतमुत्तमम् ।
विधानं कीदृशं तत्र किंदानं कस्य पूजनम् ।२४

इस जमाई के लिए कुछ आमादिक पारितोषिक देना चाहिए। यह सुनकर वह कर्कशा अत्यन्त क्रुद्ध हो गई और उसने गृह-मण्डप को खोद डाल करके किवाड़ों को सुस्थिर कर लिया था और कहा था—जाइए। भोज्य से अवशिष्ट जो चून था, उसका उसने पाथेय मार्ग का भोजन कर दिया था ।१८-१९। कौण्डिन्य भी शीला के साथ विवाह करके मार्ग

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में धीरे-धीरे जाते हुए गोरथ के द्वार उस अपनी नव विवाहित सुशील बती शीला को लेकर चल दिया था।२०। जब मध्याह्न का समय हो गया और भोजन की वेला हुई तो एक नदी के तट उतर कर उस शीला ने रक्त वस्त्र धारण करने वाली स्त्रियों का समुदाय वहाँ पर देखा था। वह चतुर्दशी तिथि थी और उसमें पृथक् भक्तिभाव से अर्चन किए जाने वाले देव के समीप में पहुँच कर शीला ने उस नारियों के समुदाय से पूछा था।२१। हे नारियो ! यह क्या है मुझे भी बतला दो। ऐसा किस नाम वाला व्रत है ? उन सब स्त्रियों ने कहा—यह अनन्त नाम वाला परम विख्यात व्रत हैं।२३। वह बोली—मैं भी इस उत्तम व्रत को इसी भाँति करूँगी। इसका क्या विधान है ? क्या दान है और किसका पूजन यह किया जाता है।२४।

शीले पक्वान्नप्रस्थस्यपुन्नामन: सुकृतस्य तु ।
अर्द्धं विप्राय दातव्यमर्द्धमात्मनि भोजनम् ।२५
कर्तव्यं नु सरित्तीरे कथां श्रुत्वा हरेरिसाम ।
अनन्तानतमभ्यर्च्य मण्डले गन्धदीपकैः ।२६
धूपैः पुष्पैः सनैवेद्यैं पीतालक्तोश्चतुः शतैः ।
तस्याग्रतो दृढं सूत्र कुकुमांक्त सुदोरकम् ।२७
चतुर्दशग्र थिपत वामे स्त्री दक्षिणे पुमान ।
मन्त्रेणानेन राजेन्द्र यावद्वर्ष समाप्यते ।२८
अनन्त संसारेमहासमुद्रे मग्नान्समभ्युद्धर वासुदेव ।
अनन्तरूपे विनियोजितात्मा ह्यनन्तरूपाय नमोनमस्ते ।२९
अनेन दोरकं वद्धा भोक्तव्यं स्वस्थ मानसैः ।
ध्यात्वा नारायणं देवतनन्त विश्वरूपिणाम् ।३०
भुक्त्वा चांते ब्रजेद्वेश्य हीदं प्रोक्तं व्रत तव ।
सापि श्रुत्वा व्रत चक्रे शीला वद्धा सुवीरकम् ।३१

हे शीले ! एक प्रस्थ पक्वान्न और पुन्नाम सुकृत का अर्धभाग विप्र के लिए देवे और आधा आत्मा से भोजन करना चाहिए। सरिता के तीर पर इस हरि की कथा का श्रवण कर और मण्डल में गन्ध दीपक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि अनन्तानन्त भगवान का अभ्यर्चन करना चाहिए।२१-२२। धूप-पुष्प-नैवेद्य और उनके आगे पीतालक्त चतुः शत दृढ़ कुंकुमाक्त मदोरुक सूत्र करे।२७। चौदह ग्रन्थियों से युक्त वाम भाग में स्त्री और दक्षिण भाग में पुरुष हे राजेन्द्र ! इस मन्त्र से वर्ष जब तक समाप्त होता है रक्खे।२८। हे वासुदेव ! इस अनन्त संसार रूपी महासागर में मग्न होते हुए हमारा उद्धार करो। अनन्त रूप में विनियोजित आत्मा वाले अनन्त रूप आपके लिए बारम्बार नमस्कार है।२९। यही मन्त्र है इससे हरेक का बद्धक के स्वस्थ मन वालों को अनन्त विश्व रूपी नारायण देव का ध्यान कर भोजन करना चाहिए।३०। भोजन करके अन्त में घर चले जावें—यही व्रत है जो तुमको बतला दिया है। उसने भी इसका श्रवण करके शीला ने सुदोरक को वृद्ध करके इस व्रत को सविधि किया था।३१।

भर्ता तस्याः समागत्य तां ददर्शमहारथम्।
पाथेयशेषं विप्राय दत्वा भुक्त्वा तथैव च।३२
पुनर्जगाम सा हृष्टा गोरथेन स्वमाश्रमम्।
भर्त्ता सहैव शवकी प्रत्यक्षं तत्क्षणादभुत्।
तेनानंतप्रभावेण शुभगोधनसंकुलः।३३
गृहाश्रमा श्रिया युक्तो धनधान्यसमायुतः।
आकुलो व्याकुलो रम्यःसर्वत्रातिथिपूजनः।३४
सापि माणिक्यकाञ्चीभिर्मुक्ताहारविभूषितां।
दिव्यांगवस्त्रसछन्ना सावित्रीप्रतिमाभवत्।३५
कदाचिदुपविष्टेन दृष्टं बद्धं सुदोरकम्।
शीलाया हस्तमूले तु साक्षेपं त्रोटितं रुषा।३६
तेन कर्मविपाकेण तस्य सा श्रीः क्षयं गता।
गोधनं तस्करपनीतं गृहं चाग्निविदाहितम्।३७
यद्यदेवागतं येहे तत्रतत्रैव न नश्यति।
स्वजनैः कलहो मित्रैर्वंतं न जनैस्तया।३८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके स्वामी ने आकर उस महान् धन वाली को देखा था। जो पाणेय का शेष भाग था उसको विप्र के लिए देकर तथा स्वयं भोजन किया था।३२। फिर उसी गोरथ के द्वारा परम प्रसन्न होती हुई अपने आश्रम को चली गई थी। वह भर्त्ता के साथ प्रत्यक्ष उसी क्षण शावकों के साथ ही हो गयी थी। उस अनन्त भगवान के प्रभाव से यह शुभ गोधन से संकुल हो गया था।३३। वह उसका गृहाश्रम श्री से युक्त तथा धन धान्य से समायुत-आकुल-व्याकुल-सर्वत्र अतिथियों के पूजन वाला अतीव रम्य बन गया था।३४। वह शीला श्रीमाण की कन्चियों से युक्त-मोतियों के हार से विभूषित और दिव्य अंग वस्त्रों से सच्छन्न सावित्री की प्रतिमा के तुल्य हो गई थीं।३५। किसी समय में उपविष्ट ने वह सुदोरक गधा हुआ देखा था। जो शीला के हस्त के मूल में वृद्ध था शेष में आक्षेप के सहित उसको तोड़ दिया।३६। उस कर्म विपाक से उसकी वह क्षय को प्राप्त हो गई थी। गोधन को तस्करों ने लिया था घर अग्नि से दग्ध हो गया था।३९। जो जो भी घर में आया था वह वहाँ पर विनष्ट हो गया था। स्वजनों के साथ कलह होने लगा और मित्रजनों के साथ उस प्रकार को प्रेम पूर्ण बातचीत का व्यवहार नहीं रहा था।३७।

अनन्ताक्षेपदोषेण दारिद्र्यं पतितं गृहे।
त कश्चिद्वदते लोकस्तेन सार्द्धं युधिष्ठर।३९
ततो जगाम कौ डिन्या निर्वं दाद्वनगह्वरम्।
मनसा ध्यायतेनंतं कदा द्रक्ष्यामि केशवम्।४०
व्रतं निरशनं गृह्य ब्रह्मचर्यं जपेन्हरिम्।
विह्वलः प्रययौ पार्थं अरण्य जनवर्जितम्।४१
तत्रापश्यन्महावृक्षक्षं फलितं पुष्पित तथा।
तमपृच्छत्वयानतः कच्चिद्दृष्टो मसाद्रुम।
तत्ब्रू हि सोप्युवाचेदं कांनंतं वेक्यहं द्विज।४२
एव निरीक्षितस्ते गां सवत्सकम्।
तृणमध्ये प्रधावन्तोमिश्चेतश्च पाण्डव।४३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोऽब्रवीद्धेनुके ब्रूहि यद्यनंततस्त्वयेक्षितः ।
गौरुवाचाथ कौण्डिन्यं नानन्तं वेदम्यहं विभो ।४४
ततो जगामाथ वने गोवृष शाद्वले स्थितम् ।
दृष्ट्वा पप्रच्छ गोस्वातिम्ननंतो लक्षितस्त्वया ।४५

भगवान अनन्त के ऊपर आक्षेप के प्रभाव से घर में दरिद्रता आ गयी थी। हे युधिष्ठिर! ऐसी उसकी दशा हो गयी थी कि उससे कोई भी बात नहीं करता था।३९। इसके अनन्तर वह कौण्डिन्य निर्वेद होने के कारण किसी गह्वर वन में चला गया था। मन से अनन्त प्रभु का ध्यान करते हुए कि केशव का मैं कब दर्शन करूँगा।४०। बिना अशन वाला व्रत ग्रहण करके ब्रह्मचर्य धारण किया था और हरि का जाप करता था। हे पार्थ! परम विह्वल होकर जनहीन अरण्य में वह चला गया था।४१। वहाँ पर उसने एक महान वृक्ष को देखा था जो फलित और पुष्पित था उसने उससे पूछा था—महाद्रुम! क्या आपने भगवान् अनन्त को देखा है? यही मुझे बतला दो। वह बोला—हे द्विज! मैं अनन्त को नहीं जानता हूँ।४२। इस प्रकार से वत्स के एक गौ को उसने देखा हे पाण्डव! जो कि तृण के मध्य में इधर से उधर दौड़ रही थी।४३। उसने कहा—हे धेनुके! यह बताओ कि क्या आपने अनन्त प्रभु को देखा है? तब गौ ने कौण्डिन्य से कहा—हे विभो! मैं अनन्त को नहीं जानती हूँ।४४। इसके अनन्तर वह और आगे वन में गया तो उसने शाद्वल पर स्थित गौ वृष का दर्शन किया था और उसे देखकर पूछा था—हे गौ स्वामिन् क्या आपने अनन्त को देखा है?।४५।

गोवृषस्त्वब्रुवाचाथ नानन्तो वीक्षितो मया ।
ततो व्रजन्ददर्शाग्रे पस्यं पुष्करिणीद्वयम् ।४६
अन्योन्यजलकल्लोलवीचिभिः परिशोभितम् ।
छन्नं कुमुदकह्लारैः कुमुदोत्पलमण्डितम् ।४७
सेवितं भ्रमरैर्हंसैश्चक्रैः कारण्डवैर्बकैः ।
ते अपृच्छद्द्विजोऽनन्तो भवदभ्यां नोपलक्षितः ।४८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊचतुः पुष्करिण्यो तं नानतं विद्महे द्विज ।
ततो ब्रह्मन्ददशाग्रे गर्दभ कुञ्जरं तथा ।४९
तावप्युक्तौ सुमतेन तस्यापि विनिवेदितम् ।
नावाभ्यां वीक्षितोनं ततश्छ्रुत्वा निषसाद ह ।५०
तस्मिन्क्षणे मुनिवरे कौण्डिन्ये ब्राह्मणोत्तमे ।
कृपयानंतदेयोपि प्रत्यक्षः समजायता ।५१

गोवृष ने उससे कहा—मैंने अनन्त को नहीं देखा है। इसके आगे जाते हुए उसने परम रम्य दो पुष्करिणियों को देखा था ।४६। वे दोनों परम्परा में जल की तरङ्गों से जो अत्यन्त चंचल थीं परम शोभासे युक्त हो रही थी। कुमुद और वाह्लारके पुष्पों से एकदम छन्न थीं तथा कुमुदोत्पलों से मण्डित थी ।४७। भ्रमर और हंसों के द्वारा-चक्रवात कारन्डव और बकों के द्वारा सेवित थीं। द्विज ने उनसे पूछा था-क्या आपने अनन्त प्रभु को नहीं देखा है ? ।४८। दोनों पुष्करिणियों ने कहा-हे द्विज ! हम उस अनन्त को नहीं जानतीं हैं। इससे उपरान्त फिर ब्राह्मण ने आगे एक गर्दभ और कुञ्जर को देखा था ।४९। सुमन्त ने उन दोनों से भी कहा था और उसने भी उनको यह निवेदन किया था कि हम दोनों ने अनन्त को नहीं देखा है। यह श्रवण करके वह बैठ गया और अनन्त देव स्वयं ही प्रत्यक्ष हो गये थे ।५१।

विभूतिभेदैश्चानन्तसनन्तं परमेश्वरम् ।
तं दृष्ट्वा तु द्विजोयन्तमुवाच परया मुदा ।५२
अद्य मे सफलं जन्म जीवितम् च सु जीवतम् ।
चूतवृक्षो वृषः कस्तु का गौ पुष्करिणीद्वयम् ।
गर्दभं कुञ्जरं चग देव मे ब्रूहि तत्वतः ।५३
चूतवक्षो हि दिप्रोसौ विद्वान्यो वेदगावितः ।
विद्यादानं नोपकुर्वाछिष्येभ्यस्तरुतां गतः ।५४

विभूतियों के भेद से अनन्त एवं उस परम ऐश्वर्य वाले परमेश्वर का दर्शन कर परम प्रसन्नता से वह द्विज अनन्त से बोला ।५२।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे प्रभो ! आज मेरा जीवन सफल हो गया है, और मेरा जीवन भी सुन्दर जीवन बन गया है। आम का वृक्ष कौन है ? गौ तथा दोनों पुष्करिणियाँ कौन हैं ? गर्दभ और कुञ्जर कौन हैं ? हे देव ! यह मुझे आप तत्व पूर्वक बतला दीजिए। ५३। अनन्त भगवान ने कहा– यह आम्र का वृक्ष वह विप्र है जो परम विद्वान था और वेदों का इसको बहुत गर्व था। यह विद्या का दान नहीं करते हुए ही रहा था। अतएव इस योनि को प्राप्त हुआ है।५४।

सा गोर्वसुन्धरा दृष्टा निष्फला य त्वयेक्षिता।
स हर्षोवृषभो दृष्टो लाभार्थं यस्त्वया वृत: ।५५
धर्माधर्मव्यवस्थान तच्च पुष्करिणीद्वयम्।
खर: क्रोधस्त्वया दृष्ट: कुञ्जरो धर्मदूषक:।
ब्राह्मणोसावनतोह गुहासंसारगह्वरे ।५६
इत्युक्तं ते मया सर्वं विप्र गच्छ पुनर्गृहम् ।५७
चरानव्रत तत्व नव वर्षाणि पंच च।
ततस्तुष्ट: प्रदास्यामि नक्षत्रस्थानमुत्तमम् ।५८
भुक्त्वा च विपुलान्सर्वान्कामान्यथेप्सितान्।
पुत्रपौत्रै: परिवृतस्तो मोक्षमवाप्स्यसि ।५९
इति दत्वा वरं देवस्तत्रैवांतर्हिताऽभवत्।
कौण्डिन्योप्यागतो गेहं चचारानतसदव्रतम् ।६०

वह गौ वसुंधरा देवी थी जो निष्फला आपके द्वारा देखी गयी थी। वह हर्ष वृषभ देखा गया था जो नाम के लिए आपने वरण किया था ।५५। धर्म और अधर्म की व्यवस्था ही वे दोनों पुष्करिणियाँ थी खर क्रोध था और कुञ्जर धर्म का था तुमने देखे थे। यह ब्राह्मण मैं ही अनन्त हूँ जो गुहा संसार गह्वर में है ।५६। हे विप्र! मैंने यह सब तुमको बतला दिया है। अब पुन तुम अपने घरको जाओ ।५७। अनन्त के व्रत को चौदह वर्ष तक निरन्तर जाप करो। इसके पश्चात् मैं प्रसन्न होकर उत्तम नक्षत्रों का स्थान तुमको दे दूँगा ।४८। वहाँ पर विपुल भोगों का सुखोप भोगकरके समस्त यथेप्सित कामनाओं की प्राप्ति

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता है। पुत्र पुत्रों से परिवृत होकर फिर अन्त में मोक्ष की प्राप्ति करोगे।६९। इस प्रकार से यह वरदान प्रदान करके वहीं पर अन्तर्धान हो गये। कौण्डिन्य भी गृह में आ गया था और उसने अनन्त के व्रत का समाचरण किया था।७०।

ग्रन्थ परिचय और समाप्ति

व्यासानुगमनं पूर्वं ब्रह्माण्डस्य समुदभवः।
माया च वैष्णवी यस्मात्संसारे दोषकीर्तनम् १
पापभेदस्तस्मःच्छुभाशुभविनिर्णय।
शकटव्रतमाहात्म्यं तिलकव्रतकीर्तनम्।२
अशोककरवीरख्यां व्रतं तस्माच्च कोकिलम्।
वृहत्तपोव्रतं नाम रुद्रोपोषणमेव च।३
द्वितीयाव्रतमाहात्म्यमशून्य शयनं तथा।
जामाख्या तु तृतीया च मेघपालोव्रतं तथा।४
पञ्चाग्निसाधना रम्या तृतीयाव्रतमुत्तमम्।
त्रिरात्रं गोष्पद नाम हरकालीं व्रत तथा।५
ललिताख्या तृतीया च योगाख्या च पथापरा।
उमामहेश्वरं नाम तथा रंभातृतीयकम्।६
सौभाग्याख्या तृतीया च अर्द्धानन्दयकरी तथा।
चैत्रं भाद्रपद माघे तृतीयाव्रतमुच्यते।७

भारती पुस्तकालय तिथी.......... पु०सं०..........

इस अध्याय में ग्रन्थ की समाप्ति का वर्णन किया जाता है। जो वृतान्त इसमें आये हैं उनका विवरण दिया जाता है। सबसे प्रथम व्यास का अनुगमन है। ब्रह्माण्ड का समुदभव का वर्णन है। फिर यह बताया गया है कि इसी ब्रह्माण्ड से वैष्णवी माया होती है। इसके पश्चात् संसार में जो दोष है उनका कीर्त्तन किया गया है।१। इसके अनन्तर पापों में बहुत से भेद तथा प्रभेदों का वर्णन किया जाता है। इसके पश्चात् शुभ और अशुभ का विशेष निर्णय बताया गया है। शकट व्रत

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के माहात्म्य का वर्णन किया गया है। इसके अनन्तर तिलक व्रत के विषय में उसका विधान तथा फल आदि का कीर्त्तन आता है।२। अनन्त अशोर का व्रतका विधान है और उसके पश्चात् करवीर नामक व्रत का वर्णन किया है, इसके अनन्तर कोकिला व्रत के विषय से कहा गया है। इसके बाद में वृत्त तपोव्रत का विधान बताया गया है। फिर रुदोपोषण नामक व्रत का वर्णन इस ग्रन्थ में बताया गया है।३। फिर द्वितीया के व्रत का माहात्म्य वर्णित किया है। तथा अशून्य शयन बताया गया है। कामाख्या और तृतीया तथा मेघपाली व्रत का वर्णन इस ग्रन्थ में किया गया है।४। इसके अनन्तर रम्य पञ्चग्नि साधन के विषय में वर्णन है और उत्तम तृतीया के व्रत का माहात्म्य कहा गया है। इसके पश्चात् तीन रात्रि का गोष्पद नाम व्रत एवं हर काली व्रत का वर्णन किया गया है।५। ललिताख्या तृतीया तथा दूसरी योगाख्या का वर्णन किया है। इसके अनन्तर उमा महेश्वर नाम वाला तथा रम्भा तृतीयक व्रत का वर्णन इस ग्रन्थ में किया है इसके पश्चात् इस ग्रन्थ में सौभाग्या नाम वाली तृतीया तथा अर्द्रानन्दकरी के व्रत का वर्णन किया गया है। तृतीया का वृत चैत्र—भाद्रपद और माघ मास में कहा जाता है।६-७।

अनन्तरी तृतींया च गणशांतिव्रतं तथा।
सारस्वतं व्रतं नस पंचमीव्रत मुच्यते।८
तथा श्रीपञ्चमी नाम षष्ठी शोकप्रणाशिनी।
फलषष्टी च मंदारषष्टीव्रतमथोच्यते।९
ललियाव्रतषष्ठी च षष्ठी कार्तिकसञ्ज्ञिता।
महत्तपः सप्तमी च विभूषा सप्तमी तथा।१०
आदित्यमण्डपविधिस्त्रयोशीति सप्तमी।
कुक्कवाकुंप्लवङ्गा च तथैवाभयसप्तमी।११
कल्याणसप्तमी नाम शर्करासप्तमीव्रतम्।
सप्तमी कमलाख्या च तथान्या शुभसप्तमी।१२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्नपनव्रतसप्तम्यौ तथैवाचल सप्तमी ।
बुधाष्टमीव्रतं नाम तथो जन्माष्टमींव्रतम् ।१३
दूर्वांकृष्णष्टमी प्रोक्ता अनयाव्रतमष्टमी ।
अष्टकांष्टमो चाथ श्रीवृक्षनवमीव्रतम् ।१४

इसके पश्चात् अनन्तरी तृतीया का व्रत तथा गण शक्ति व्रत का वर्णन किया गया है । फिर सारस्वत और फिर पंचमी व्रत कहा जाता है । और श्रीपंचमी नामक व्रत का वर्णन है यथा शोक प्रणाशिनी षष्ठी फलषष्ठी का, मन्दार षष्ठीके व्रतोंका संविधान इस ग्रन्थिमें वर्णन किया गया है ।८-९। फिर ललिता व्रत षष्ठी तथा कार्तिक संज्ञिता षष्ठीकेविषय में बताया गया है । इसके उपरात महक्तय सप्तमी तथा विभूषा सप्तमी का वर्णन किया हुआ है । पश्चात् आदित्य मण्डप की विधि त्रयोदशी का वर्णन है । फिरसप्तमी कुकवाकुप्लवगा और अभयभप्तमी का वर्णन किया गया है ।५-११। कल्याण सप्तमी और सप्तमी के व्रतों का वर्णन किया है । इसके उपरान्त कमला नाम वाली सप्तमी के व्रतों के विषयोंमें विधि-विधान सहित पूर्ण विवेचन बताया गया है ।१२। स्नपन व्रत सप्तमी-और अचल सप्तमी के व्रत का सांगोल वर्णन दिया गया है । सप्तमी व्रतों के अनन्तर फिर इस मन्त्र में बुधाष्ट व्रत का भी वर्णन दिया है । जन्माष्टमी और दूर्वा कृष्णाष्टमी के व्रतके विषयमें वर्णन किया है । जन्माष्टमी व्रत और अर्कोष्टमी व्रत का वर्णन दिया गया है । अष्टमी व्रतों के पश्चात् इस विशाल ग्रन्थ में नवमी के व्रत का वर्णन किया गया है ।१३-१४।

ध्वजाख्या नवमी चैव उल्वाख्या नवमी तथा ।
दशावतारव्रतकं तथाशादशमीव्रतम् ।१५
रोहिणींद्रहरिशंभुब्रह्मसूर्यावियोगकम् ।
गोवत्सद्वादशो नाम व्रतमुत्तमं ततः परम् ।१६
नीराजनद्वादशी च भीष्मपञ्चकमेव च ।
भल्लिकाख्या द्वादशी च भीमा द्वादशीकोत्तमा ।१७

पाणिनि-कन्या-महाविद्यालय ... भारती पुस्तकालय

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रवणद्वादशी नाग संप्राप्तिद्वादशीव्रतम् ।
गोविन्दद्वादशी नाम वृतमुक्तं ततः परम् ।१८
अखण्डद्वादशी नाम तिलद्वादश्यतः परम् ।
सुकृतद्वादशी नाम धरणीव्रतमेव च ।१९
विशोकद्वादशी नाम विभूतिद्वादशीव्रतम् ।
पुण्यर्क्षद्वादशी चैव द्वादशी श्रवशर्क्षगा ।२०
अनङ्गद्वादशी चैव अङ्कपादव्रतं यथा ।
निम्बाककरवीराथा यथा दर्शनत्रयोदशी ।
अनङ्गद्वादशी चापिपालिरभाव्रते तथा ।२१

ध्वजा नाम वाली नवमी-उल्का नाम से कही जाने वाली नवमी के व्रतों का सविवरण वर्णन दिया गया है । इसके अनन्तर दशावतारक व्रत का वर्णन किया है तथा आशा दशमी व्रत का उल्लेख किया गया है । इसके पश्चात् रोहिणीन्द्र-हरि-शम्भु-ब्रह्मा-सूर्य वियोगक का वर्णन है । इसके अनन्तर गोवत्स द्वादशी का कथन किया गया है ।१५-१६। नीराजन द्वादशी-भीष्म-पञ्चक-मल्लिका नाम वाली द्वादशी-सीमा द्वादशी उत्तमी द्वादशी-श्रवण और सम्प्राप्ति द्वादशी व्रतों का वर्णन है । गोविन्द द्वादशी नाम वाले व्रत का वर्णन इन सबके पश्चात् दिखाया गया है ।१७-१८। अखण्ड द्वादशी तिल द्वादशी सुकृत द्वादशी के व्रत तथा धारण व्रत का उल्लेख किया गया है ।१९। फिर विशोक द्वादशी विभूति द्वादशी पुण्यार्क द्वादशी और श्रवर्क्षगा द्वादशी व्रतों का उल्लेख इस ग्रन्थ में किया गया ।२०। इसके अनन्त द्वादशी—अंगपाद व्रत निम्बा के करवीरा-यमा और दर्शत्रयोदशी के व्रतों का वर्णन किया गया है अनंग द्वादशी भी पालिरम्भ व्रत बताई गई है ।२१।

चतुर्दशीव्रतं प्रोक्तं ततोऽनन्तचतुर्दशी ।
श्रावणीव्रतनक्त स चतुर्दश्यष्टमीदिने ।२२
व्रतं शिवचतुर्दश्यां फलत्यागचतुर्दशी ।
वैशाखी कार्तिकी माघावृतमतदनन्तरम् ।२३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्तिक्यां कृत्तिकायोगे कृत्तिकाव्रतमीरितम् ।
फाल्गुने पूर्णिमायां तु व्रतं पूर्णमनोरथम् ।२४
अशोकपूर्णिमा नाम अनन्त व्रतमेवच ।
व्रतं हि सांभरायन्य नक्षत्रपुरुषव्रतम् ।२५
शिवनक्षत्रपुरुष सम्पूर्ण येन मुच्यते ।
कामदानव्रत नाम वृन्ताकविधिरेव च ।२६
आदित्य दिने नक्तं सक्रात्युद्यापने फलम् ।
भद्राव्रतमगस्त्योः नवचन्द्रार्कमेव च ।२७
अर्घः शुक्रवृहस्पत्योः पंचाशीर्ति व्रतानि च ।
माघस्नानं वित्यस्नानं रुद्रस्नानविधिस्तथा ।२८

पाणिनि अनुसंधान ... भारती पुस्तकालय ... विषय ... पुस्तक० 1252

इसके पश्चात् चतुर्दशी व्रतों का वर्णन किया है अनन्त चतुर्दशी व्रन श्रावणी व्रत नक्त और चतुर्दशी अष्टमी दिन में व्रत-शिवं चतुर्दशी व्रत-फल त्याग चतुर्दशी-वैशाखी-कार्तिकी और माघी व्रत का वर्णन दिया गया है । फाल्गुन मास की पूर्णिमा में जो व्रत होता है वह पूर्ण मनोरथ वाला व्रत होता है कार्तिकी में कृतिका नक्षत्रके योग में कुब्जिका व्रत कहा गया है ।२२-२४। अशोक पूर्णिमा नाम वाला व्रत तथा अनन्त वताये गये हैं जिनमें मानव मुक्त हो जाता है । कामदान नामक व्रत तथा वृतान्क विधि वाला व्रत का वर्णन दिया गया हे ।२५-२६। आदित्य के दिन में रात्रि में सकान्ति के उद्यापन में फल होता है । भद्रा व्रत—अयस्त्याघ—नव चन्दार्कम शुक्र और वृहस्पति का अघ इस प्रकार से व्रतों का वर्णन किया गया है ।

चन्द्रार्कं ग्रहणे स्नानं विधिश्चान्नाशने तथा ।
वापीकूपतडागानामुत्सर्गों दक्षयाजनम् ।२९
देवपूजादीपदानवृषोत्सर्गविधिस्तथा ।
फाल्गन्युत्सवक नाम तथान्यः सदनोत्सवः ।३०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भुतमाता च श्रावण्यां रक्षवधविधिस्तथा।
विधिस्तथा नवम्यास्तु तथा चन्द्रमहोत्सवः।३१
दीपमालिकायां तु हामो लक्षहोमयि घस्तथा।
कोटिहोमो महाशीतिर्गयणनाथस्य शान्तिका।३२
तथा नक्षत्रहोमोथ गोदानविधिरेव च।
गुडधेनुघृतधेनु तिलधेनुव्रतं तथा।३३
जलधेनुविधिः प्रोक्तो लवणस्य तथा परा।
धेनुः कार्या सम ज्ञात्वा नवनीतस्य चापरा।
सुवर्णधेनुश्च तथा देवकार्यं चिकीर्षुभिः।३४

चन्द्र ग्रहण और सूर्य ग्रहण में स्नान तथा अन्न के अशन की विधि का वर्णन किया है। बावड़ी-कुआ-तालाब इनका उत्सर्ग और वृक्षों का याजन भी इस ग्रन्थमें वर्णित किया गया है।२९। देवताओं का पूजन दीपों का दान—वृषों का उत्सर्ग—इन सबके जो परम पुण्य के कार्य है, विधि विधान का वर्णन इस ग्रन्थ में किया गया है जिनके करने से महापापों का क्षय होता है। फाल्गुनी का उत्सव तथा अन्य मदनोत्सव-श्रावणी में घूत माता तथा रक्षा सूत्र के बन्धन को विधि नवमी की विधि एवं चन्द्र महोत्सव का पूर्ण विवरण के सहित इस महाग्रन्थ में वर्णन किया है।३०-३१। दीप मालिकामें होम तथा लक्ष होमकी विधि कोटि होम महशोति—गण नाथ का शान्ति का वर्णतया पूर्णतया किया गया है।३२। नक्षत्र होम का वर्णन तथा गोदान की विधि का वर्णन दिया गया है गुड़ धेनु—घृत धेनु—तिल धेनु व्रतों का वर्णन भी इस ग्रन्थ में नर कल्याणार्थ दिया हैं जिनके करने से बहुत से पापों क्षय हो जाता है।३३-३४।

—+—

भविष्य पुराण समाप्त

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
1252

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर्षि-पाणिनि-पञ्चा-अनुसन्धान
तिथी............
पु०सं०..........
भारती पुस्तकालय
1252

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुराणों का वृहद् प्रकाशन

(सरल हिन्दी अनुवाद सहित)

१—शिव पुराण	२ खण्ड (भा.टी.)	...	३८)
२—विष्णु पुराण	२ खण्ड (भा.टी.)	...	३८)
३—मार्कण्डेय पुराण	२ खण्ड (भा.टी.)	...	३८)
४—गरुड़ पुराण	१ खण्ड (भा.टी.)	...	३८)
५—हरिवंश पुराण	२ खण्ड (भा.टी.)	...	३८)
६—देवी भागवत पुराण	२ खण्ड (भा.टी.)	...	३८)
७—भविष्य पुराण	२ खण्ड (भा.टी.)	...	३८)
८—लिंग पुराण	२ खण्ड (भा.टी.)	....	३८)
९—पद्म पुराण	२ खण्ड (भा.टी.)	...	३८)
१०—कूर्म पुराण	२ खण्ड (भा.टी.)	...	३८)
११—ब्रह्मवैवर्त पुराण	२ खण्ड (भा.टी.)	...	३८)
१२—स्कन्द पुराण	२ खण्ड (भा.टी.)	...	३८)
१३—ब्रह्म पुराण	२ खण्ड (भा.टी.)	...	३८)
१४—नारद पुराण	२ खण्ड (भा.टी)	...	३८)
१५—कालिका पुराण	२ खण्ड (भा.टी)	...	३८)
१६—वामन पुराण	२ खण्ड (भा.टी.)	...	३८)
१७—अग्नि पुराण	२ खण्ड (भा.टी.)	...	३८)
१८—ब्रह्माण्ड पुराण	२ खण्ड (भा.टी.)	...	३८)
१९—कल्कि पुराण	(भा.टी.)	...	२०)
२०—सूर्य पुराण	(भा.टी.)	...	१९)
२१—आत्म पुराण (भाषा)		...	१९)
२२—गणेश पुराण (भाषा)		...	२०)
२३ महाभारत (भाषा)		...	१८)
२४—श्रीमदभागवत सप्ताह कथा (भाषा)		...	०३०)

प्रकाशक : संस्कृति संस्थान ख्वाजाकुतुब, वेदनगर,
बरेली-२४३००३ (उ०प्र०)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.